याङ मो
तरुणाई का तराना

तरुणाई का तराना

(उपन्यास)

अंग्रेज़ी अनुवाद : नान यिङ

रेखाचित्र : हाउ यी-मिन

मूल्य : रु. 150.00

प्रथम संस्करण : जनवरी, 2008

परिकल्पना प्रकाशन

डी-68, निरालानगर, लखनऊ-226 006 द्वारा प्रकाशित

कम्प्यूटर प्रभाग, राहुल फ़ाउण्डेशन द्वारा टाइपसेटिंग

क्रिएटिव प्रिण्टर्स, 628/एस-28, शक्तिनगर, लखनऊ द्वारा मुद्रित

आवरण : **रामबाबू**

TARUNAI KA TARANA
Chinese Novel by ***Yang Mo***
Translated from English by Vishvanath Mishra

ISBN 978-81-89760-06-9

प्रकाशकीय

'तरुणाई का तराना' चीन की क्रान्तिकारी लेखिका याङ मो का उपन्यास है जो अर्द्ध-सामन्ती अर्द्ध-औपनिवेशिक चीनी समाज की मुक्ति के लिए संघर्ष कर रहे नौजवान छात्र-छात्राओं की शौर्यगाथा का अत्यन्त सजीव, प्रेरणादायी और रोचक वर्णन करता है।

याङ मो का जन्म पीकिङ में हुआ था। उनके पिता एक निजी विश्वविद्यालय चलाते थे लेकिन जब वह बारह वर्ष की थीं तभी वह बन्द हो गया और उनका परिवार आर्थिक परेशानियों में घिर गया। जब वह स्कूल में थीं तभी उनके पिता ने तंगी से निकलने के लिए एक धनी व्यक्ति से उनकी शादी तय कर दी लेकिन याङ मो ने घर छोड़ दिया और पीकिङ के पास एक गाँव के स्कूल में पढ़ाने लगीं। पीकिङ विश्वविद्यालय में पढ़ने के दौरान ही उन्होंने 1934 में कहानियाँ लिखना शुरू किया। 1936 में वह कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल हो गयीं और एक वर्ष बाद उन्हें उत्तर-पश्चिम के कम्युनिस्ट आधार-क्षेत्रों में महिलाओं के बीच काम करने के लिए भेज दिया गया। उन्होंने 1940 के दशक में कम्युनिस्ट अख़बारों के लिए भी काम किया। 1950 में प्रकाशित उनका उपन्यास 'दि रीड लेक' येनान इलाक़े में छापामार योद्धाओं के अनुभवों पर आधारित है। 1949 में पीकिङ वापस लौटने पर याङ मो को महिला संघ में एक ज़िम्मेदार पद पर नियुक्त किया गया। अस्वस्थता के कारण उन्हें 1952 में केन्द्रीय फ़िल्म ब्यूरो में सम्पादक का काम सौंपा गया।

'तरुणाई का तराना' उपन्यास 1958 में प्रकाशित हुआ था। इसे बेहद पसन्द किया गया और कुछ ही माह में इसकी लाखों प्रतियाँ बिक गयीं। इस पर इसी नाम से एक फ़िल्म भी बनी जो 1959 में चीनी क्रान्ति की दसवीं वर्षगाँठ के अवसर पर रिलीज़ हुई। इसके बाद उपन्यास की लोकप्रियता और बढ़ गयी। 1960 और '70 के दशक में यह चीन में कुछ सर्वाधिक लोकप्रिय साहित्यिक कृतियों में से था। 1976 में प्रतिक्रियावादी तख़्तापलट के बाद जब चीन के नये शासकों ने चीन को पूँजीवादी राह पर आगे बढ़ाना शुरू किया और क्रान्तिकारी विरासत को बदनाम करने और क्रान्तिकारी भावनाओं के स्थान पर व्यक्तिवाद तथा स्वार्थी होड़ की संस्कृति को

स्थापित करने में जुट गये तो ऐसी कृतियों को पृष्ठभूमि में धकेल दिया गया। 1980 में याङ मो ने इसका एक 'सीक्वेल' भी लिखा लेकिन चीन के बदले माहौल में वह ज़्यादा चर्चित नहीं हो सका।

यह उपन्यास सिर्फ संघर्षों का विवरण ही नहीं है, बल्कि क्रान्तिकारी संघर्ष की राजनीति, क्रान्ति की दिशा, सही रणनीति और रणकौशल की सैद्धान्तिक विवेचना और उनके व्यावहारिक प्रयोग का एक अमूल्य दस्तावेज़ भी है। हमें विश्वास है कि हिन्दी पाठक, विशेषकर छात्र-युवा पाठक, इसे पसन्द करेंगे।

–राहुल फ़ाउडेशन

25.1.2008

भूमिका

1930 के बाद वाले दशक का पूर्वार्द्ध चीन के लिए एक अन्धकार-युग था। देश नैराश्यपूर्ण राष्ट्रीय संकट में छटपटा रहा था। जापानी साम्राज्यवादी, 18 सितम्बर 1931 को, चीन के चार उत्तरी-पूर्वी प्रान्तों पर क़ब्ज़ा करके चीनी भूभाग में अन्दर तक घुस आये थे। एक-एक करके उन्होंने शंघाई, चाहार और सुईयुआन पर आक्रमण किया, पूर्वी होपेई पर क़ब्ज़ा कर लिया, और उत्तरी चीन के सभी पाँचों प्रान्तों को हथिया लेने की योजना बना ली... देश विनाश के कगार पर था, लेकिन क्वोमिन्ताङ सरकार ने समर्पण की नीति अख़्तियार कर ली थी, और विभिन्न समझौतों पर हस्ताक्षर करके जापान को सम्प्रभुता का अधिकार दे दिया था। इसने हज़ारों की संख्या में, कभी-कभी एक-एक लाख तक, सेनाएँ भी, उन क्रान्तिकारी आधार-क्षेत्रों और लाल सेना के विरुद्ध भेजी जो चीनी कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा खड़े किये गये थे और जापानी आक्रमण का दृढ़तापूर्वक प्रतिरोध कर रहे थे। आगे चलकर इसने जापान का प्रतिरोध करने के लिए उत्तर की तरफ़ मार्च कर रही लाल सेना का पीछा करने और रास्ता न रोकने के लिए सेना भेजी, और सफ़ेद क्षेत्र में असंख्य कम्युनिस्टों और नौजवान देशभक्तों को गिरफ़्तार और क़त्ल किया। तब, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में अपने देश से प्यार करने वाले नौजवानों ने एक कठिन, संकल्पबद्ध संघर्ष छेड़ दिया। 1935 के जाड़े में, जब जापानियों ने होपेई और चाहार में कठपुतली सरकारें स्थापित कर दीं और समूचे उत्तरी चीन के लिए ख़तरा उत्पन्न हो गया तो पेइपिङ के छात्रों ने "चीन के लोगो, देश बचाने के लिए उठ खड़े हो!" का नारा लगाते हुए नौ दिसम्बर का ऐतिहासिक आन्दोलन शुरू किया, जो जापानी आक्रमण के विरुद्ध चीनी जनता के प्रतिरोध का एक शानदार शुभारम्भ था।

ये ही घटनाएँ **तरुणाई का तराना** की पृष्ठभूमि हैं। मशीनगनों, संगीनों, क़ैद, यातना, यहाँ तक कि मृत्युदण्ड से भी न डरते हुए, असंख्य होनहार नौजवानों और महिलाओं ने दुश्मन के विरुद्ध एक अदमनीय संघर्ष चलाया। जब एक कोई गिर पड़ता तो दूसरा उसकी जगह लेने के लिए उठ खड़ा हो जाता। कुछ ने मुस्कुराते हुए प्राण गँवाये, इस यक़ीन के साथ कि देश का भविष्य उज्ज्वल था, और ज़्यादा से

ज़्यादा लोग शहीद हुए व्यक्तियों के रक्त-स्नात पदचिह्नों पर आगे की ओर चल पड़े... अन्त में, 1949 में, चीन आज़ाद हो गया, उन तमाम लोगों का सपना साकार हुआ जिन्होंने अपने प्राण न्यौछावर किये थे, और चीन ने आश्चर्यजनक पैमाने पर समाजवाद का निर्माण करना शुरू किया। हम जो विजय के ऐसे मनोहर फूल देखने के लिए जीवित थे, उन लोगों को याद किये बिना न रह सके, जिन्होंने उन्हें पोषित करने में अपना ख़ून बहाया था। यही कारण है कि 1950 में, मैंने यह उपन्यास लिखना आरम्भ कर दिया। मैंने क्रान्तिकारियों की जो बहादुरी देखी और सुनी थी, उन सबसे गहराई से आलोड़ित हो उठी थी।

मेरी पुस्तक में जिन वर्षों का विवरण है उस दौरान, मैं एक विद्यार्थी थी, और अपना अध्ययन जारी रखने या कोई नौकरी पाने में असमर्थ थी। मैंने अपने ही अनुभव से जान लिया था कि पुराने चीन में बुद्धिजीवियों की तक़दीर कितनी ख़राब थी, और कि नौजवानों के लिए एकमात्र रास्ता यही था कि वे कम्युनिस्ट पार्टी का अनुसरण करें, और क्रान्ति में हिस्सा लें। इसी को दिमाग़ में रखकर, मैंने लिन ताओ-चिङ के चरित्र का सृजन किया। यह उपन्यास पुराने समाज के विरुद्ध एक नौजवान बुद्धिजीवी का प्रतिवाद है।

प्रकाश अन्धकार से अधिक बलवान होता है, श्रेष्ठता निकृष्टता से अधिक बलवती होती है। निःस्वार्थता स्वार्थपरता पर अवश्य विजयी होती है, और सुख दुख पर...हमें निश्चय ही असली इन्सान की तरह जीना चाहिए। यही वह चीज़ है जिसे मैंने अपने लेखन में व्यक्त करने की कोशिश की है। यदि यह पुस्तक विदेशी दोस्तों को बेहतर ढंग से यह समझने में समर्थ बनाती है कि चीनी क्रान्ति क्यों सफल हुई और किस निर्भीकता के साथ चीनी लोग...ख़ासतौर से नौजवान...संघर्ष करते रहे, तो मैं अपनेआप को भलीभाँति पुरस्कृत समझूँगी।

याङ मो

पीकिङ, मई 1963

भाग 1

अध्याय 1

सुबह-सुबह पेइपिङ-शेन्याङ एक्सप्रेस, हरे-भरे विस्तृत देहाती क्षेत्र से होकर, तेज़ी से चली जा रही थी। हरी-भरी फ़सलें, रुपहली जलधाराएँ, हल्के भूरे मटमैले घर और तार के खम्भे गाड़ी की खिड़कियों के पास बैठे यात्रियों के सामने कौंधकर तेज़ी से पीछे छूटते जा रहे थे। सुबह की ताज़ा हवा को ख़ुशी से अपनी साँसों में भरते हुए वे खेतों को तब तक निहारते रहते जब तक कि देखते-देखते थककर दूसरी ओर नहीं मुड़ जाते। कुछ लोग जम्हाई ले रहे थे, जबकि बाक़ी कुछ गाड़ी के भीतर अपने इर्द-गिर्द कुछ नयी या दिलचस्प चीज़ देखने के लिए नज़रें दौड़ा रहे थे। काफ़ी पहले से ही कुछ लोगों का ध्यान एक विचित्र बिस्तरबन्द पर टिका हुआ था : एक छोटे से बिस्तरबन्द के साथ सारंगी, बाँस की पाइप और बाँसुरी बँधी हुई थी। हरेक सामान महीन, सफ़ेद सिल्क में लिपटा हुआ था। उसके पास ही बैलून-गिटार, मून-गिटार और छोटा-सा रीड ऑरगन रखा हुआ था।... कुछ यात्रियों का अनुमान था कि ये सब चीज़ें ज़रूर वाद्ययन्त्रों के किसी व्यापारी की होंगी। पर ये सब किसी व्यापारी का नहीं, बल्कि अठारह वर्ष की एक स्कूली छात्रा का था जो अपने इन सुरुचिपूर्ण सामानों पर अपलक नज़र गड़ाये हुए थी। वह सफ़ेद मलमल का एक छोटा-सा गाऊन, सफ़ेद सूती मोज़े और सफ़ेद किरमिची जूते पहने हुए थी, और उसके हाथ में एक सादा रूमाल था यानी वह सिर से पाँव तक सफ़ेद परिधान पहने हुए थी। वह गाड़ी के एक कोने में अकेली और एकदम चुपचाप बैठी हुई थी और खिड़की से बाहर देख रही थी। उसका चेहरा पीलापन लिये हुए था, लेकिन आँखें चमकदार थीं। शीघ्र ही इस अकेली, आकर्षक लेकिन सादे परिधान वाली लड़की ने अपने सहयात्रियों, ख़ासकर, पुरुषों में दिलचस्पी जगा दी और उन्होंने आपस में उसके बारे में टीका-टिप्पणी और अटकलबाज़ी शुरू कर दी। फिर भी, वह इन सबसे बेख़बर बनी रही, जैसे अपने आस-पास से पूरी तरह कटी हुई हो। लम्बे समय तक वह ऐसे ही बैठी रही, अपने ख़यालों में खोयी हुई।

उसकी असाधारण भाव-मुद्रा, विचित्र-सी सुन्दरता और ज़ाहिरा तौर पर संगीत में रुचि लोगों की उत्सुकता का कारण बन गयी और शीघ्र ही वह बातचीत का केन्द्रीय विषय बन गयी।

"क्या तुम सोचते हो कि वह प्यार में धोखा खा गयी है?" पश्चिमी ढंग की पोशाक पहने एक छात्र ने अपने साथी से फुसफुसाकर पूछा।

"वाद्ययन्त्रों का यह ज़ख़ीरा कम से कम दस-बीस चाँदी के डॉलर तो दे ही जायेगा।" एक थुलथुल व्यापारी अपने चेहरे पर हिसाब लगाने का भाव लिये उस छात्र के क़रीब पहुँचकर असरदार आवाज़ में बोला। "भला एक जवान लड़की यह सब रखकर क्या करेगी? क्या तुम यह समझते हो कि वह रोज़ी-रोटी के लिए गली-गली गाती फिरती होगी?"

छात्र ने जवाब में कुछ कहना उचित न समझा, फिर भी व्यापारी पर एक नज़र डाली और दूसरी ओर रुख़ कर लिया। इसके बाद वह अपने साथियों में बतियाने लगा, फिर भी वह बार-बार कनखियों से उस सफ़ेद परिधान वाली लड़की को देख लिया करता था। पेईताइहो स्टेशन पर वह लड़की अपने वाद्ययन्त्रों को लेकर उतर गयी; लगभग यही उसका कुल सामान लग रहा था। बाक़ी मुसाफ़िर उलझन और सहानुभूतिभरी आँखों से उसे स्टेशन पार करते हुए देखते रहे।

वह छोटा-सा स्टेशन बहुत शान्त था। किसी ट्रेन के आने पर कभी-कभार उठने वाला शोरगुल रेलवे इंजन के सफ़ेद धुएँ की भाँति ही गुज़र जाता और उस स्थान को फिर शान्त और वीरान छोड़ देता।

उस लड़की की उद्विग्नता दूर नहीं हो पायी थी, जिसके कारण वह सिर झुकाये चुपचाप कुली के पीछे-पीछे चली जा रही थी। थोड़ी ही देर में उन दोनों ने पहाड़ी का घुमावदार रास्ता तय कर लिया, और अब नीले आकाश के शान्त विस्तार के नीचे और खेतों की हरियाली के उस पार क्षितिज तक समुद्र का फैलाव था। लड़की रुकी और उसने समुद्र को ग़ौर से देखा, उसकी आँखों में विस्मय और आनन्द की आभा थी। "आहा।" वह चिल्ला उठी। "मैं पहली बार समुद्र की झलक देख रही हूँ।...कितना भव्य है यह!" शान्त, गहन और मन्द-मन्द लहराती तरंगों के दृश्य से मन्त्र-मुग्ध-सी बिना हिले-डुले वहीं खड़ी हो गयी।

"चलिये बीबी जी! बढ़ते रहिये। आप रुक क्यों गयी हैं?" उसकी भावनाओं से अनजान वह कुली अब तक पहाड़ी से नीचे उतर चुका था।

उसने जैसे सुना ही नहीं, और वैसे ही ठगी-सी खड़ी रही; उसकी आँखें दूर एक सफ़ेद पाल पर टिकी हुई थीं।

ऐ बीबी जी! क्या बात है?" कुली अधीर होकर और ज़ोर से चिल्लाया, और आख़िरकार उसका ध्यान खींच लेने में सफल हो गया। वह अपनी आँखें मलती और मुस्कुराती हुई उसका साथ पकड़ने के लिए ढलान पर दौड़ पड़ी।

कुली अधेड़ उम्र का एक बातूनी आदमी था।

"आप वहाँ पर क्या निहार रही थीं?" अपनी जिज्ञासा को न रोक पाकर उसने पूछ लिया।

"समुद्र! कितना सुन्दर है यह।" उसने कुली की ओर ध्यान से देखा। "तुम कितने भाग्यशाली हो जो यहाँ पर रहते हो! कितना प्यारा है यह!"

"इसमें प्यारा क्या है? अगर हम कोई मछली न पकड़ पायें और भूखे रह जाना पड़े, तो ऐसे नज़ारों का कोई फ़ायदा नहीं होता। मुझे बताइये, आप यहाँ क्या करती हैं?" मुस्कुराते हुए वह सवाल करता जा रहा था। "आप अकेली क्यों हैं? क्या आप यहाँ छुट्टी बिताने आयी हैं?"

जवाब में वह विनोदपूर्वक मुस्कुरायी और तनिक रुककर बोली, "मैं छुट्टी की गुंजाइश नहीं निकाल सकती। मैं अपने मौसेरे भाई से मिलने आयी हूँ।"

"आपका मौसेरा भाई?" उस आदमी की आँखें फैल गयीं। "क्या वह पुलिस ब्यूरो में काम करता है?"

"नहीं।" उसने सिर हिलाकर इन्कार किया। "वह याङचुआङ प्राइमरी स्कूल में अध्यापक है!"

"बस-बस! मैं यहाँ के सभी अध्यापकों को जानता हूँ। कौन है वह?"

"चाङ वेन-चिङ।" उसने अब अधिक उत्साहित होकर भोलेपन से पूछा, "क्या तुम उसे जानते हो? क्या वह गाँव में है? पता नहीं, वह मुझे लेने क्यों नहीं आया..."

यकायक उस आदमी के होंठ मानो सिल गये हों। यद्यपि लड़की ने उसके साँवले, झुर्रीदार चेहरे पर एक खोजभरी नज़र डाली, फिर भी वह उसके सवाल का जवाब देने के बजाय कुछ क़दम आगे बढ़ गया और बात बदलकर सवाल कर बैठा : "आपका नाम क्या है? क्या आप पेइपिङ से आ रही हैं?"

"मेरा नाम लिन ताओ-चिङ है," वह तपाक से बोली। "हाँ, मैं पेइपिङ से ही आ रही हूँ। पर क्या तुम मेरे मौसेरे भाई को नहीं जानते?"

एक बार फिर उस आदमी ने चुप्पी साध ली। एक लम्बे अन्तराल के बाद वह खाँसा और मन ही मन कुछ बुदबुदाया, फिर तो लड़की ने बातचीत बन्द ही कर दी। इसी तरह वे याङचुआङ प्राइमरी स्कूल पहुँचे, जहाँ कुली ने अपना पैसा लिया और चलता बना, और लड़की फाटक की ओर जाने वाली सीढ़ियों पर धीरे-धीरे चढ़ने लगी।

स्कूल, गाँव के एक किनारे, युद्ध के देवता वाले बड़े मन्दिर में स्थित था। अपने सामान को फाटक पर ही छोड़कर, ताओ-चिङ भीतर प्रवेश कर गयी। क्लासरूमों और मन्दिर के हाल में एक भी आदमी नहीं था। यह सोचकर कि सभी समुद्रतट पर चले गये होंगे, वह प्रतीक्षा करने के लिए पुनः फाटक पर लौट आयी।

साँझ घिरती जा रही थी और गाँव की सभी चिमनियों से धुएँ के छल्ले उठ रहे थे। मन्दिर के बाहर स्थित झाड़ियों में झींगुर ज़ोरों से चिचकार रहे थे। ताओ-चिङ उनकी आवाज़ सुनते हुए, जब-तब परेशान हो बाहर की ओर नज़र दौड़ा लेती थी।

अब तक कोई भी प्रकट नहीं हुआ था, और अपने सामान पर नज़र रखते हुए, वह दूर जा भी नहीं सकती थी। जब अँधेरा घना हो गया, तो एक बूढ़ा आदमी सड़क पर लड़खड़ाते हुए आया। ताओ-चिङ पर नज़र पड़ते ही वह बोल पड़ा।

"कौन है?"

ताओ-चिङ उससे पूछने के लिए जल्दी-जल्दी सीढ़ियाँ उतर गयी : "क्या अध्यापक श्री चाङ वेन-चिङ यहाँ पर है?"

"अच्छा, तो तुम श्री चाङ का इन्तज़ार कर रही हो, है न?" उसका चेहरा तमतमाया हुआ था और आवाज़ नशे से लड़खड़ा रही थी। "लेकिन वह तो अब यहाँ पर नहीं है।"

ताओ-चिङ सन्न रह गयी। "कहाँ चला गया?" उसने पूछा। "उसने तो अपने पत्र में लिखा था कि छुट्टियों में यहीं रहेगा। फिर, उसकी पत्नी का क्या हाल है? वह भी यहीं पढ़ाती है..."

"निश्चित तौर पर कुछ नहीं बता सकता।" बूढ़ा नशे में धुत्त, डगमग चाल से सीढ़ियों पर चढ़ गया, फाटक से टकराकर लड़खड़ाया और अपने पीछे भड़ाम से फाटक बन्द कर दिया।

ताओ-चिङ ने अपने मौसेरे भाई को यह बताते हुए पत्र लिखा था कि वह कब आने वाली थी, और यहाँ उसकी अनुपस्थिति ने उसे उलझन में डाल दिया। वह नहीं समझ पा रही थी कि क्या करे। सीढ़ियों पर अकेले खड़े हुए वह किंकर्त्तव्यविमूढ़-सी घने वृक्षों की ओर एकटक देखती रही, जहाँ झींगुर पहले की तरह ही शोर मचा रहे थे। दूर से समुद्र की मर्मर ध्वनि सुनायी दे रही थी। उसने फाटक पर दो बार दस्तक दी, पर कोई उत्तर न मिला। सम्भवतः वह बूढ़ा शराबी सो चुका था। ताओ-चिङ का दिल दुखी था और आँखों में आँसू उमड़ आये। अपनी इस तनहाई में वह काफ़ी देर तक वहीं खड़ी रही।

चमकीला चाँद निकल आया और उसकी रुपहली किरणें इस अकेली लड़की के सुन्दर मुखड़े को चूमने के लिए वृक्षों के पत्तों से छन-छनकर उतरती लग रही थीं। फाटक के पास ही पत्थर की पटिया के सहारे टिककर उसने अपना सिर झुका लिया और दुखी होकर सिसकने लगी।

मुसीबत की घड़ी में आदमी अपने अतीत को याद करता है। ताओ-चिङ की रुलाई फूटते ही उसे घटनाओं का वह सिलसिला याद हो आया जिसने उसे अपने माँ-बाप और घर-द्वार छोड़ने को मजबूर कर दिया था, समुद्रतट पर इस वीरान झाड़-झंखाड़ में ला पटका था जहाँ कोई भी उसका परिचित न था, और जिसने उसके हृदय को गहरी वेदना से भर दिया था।

——:o:——

अध्याय 2

जेहोल प्रान्त के एक सुदूर पहाड़ी गाँव में दो व्यक्तियों, बूढ़ा ली और उसकी पोती सिऊ-नी का परिवार रहता था। बूढ़ा ली बीमार था और दिनभर काङ (बड़ी अँगीठी, जिसके ऊपर जाड़े में सोने की जगह बनी होती है – अनु.) पर पड़ा रहता था जबकि सिऊ-नी दोनों का पेट भरने के लिए जलावन की लकड़ी बीनने या ज़मीन के एक छोटे-से टुकड़े पर खेती करने जाती थी। वह इक्कीस वर्ष की सुन्दर, तन्दुरुस्त और सुयोग्य लड़की थी, जिसकी ओर गाँव के सभी नौजवान आकर्षित थे। लेकिन अभी तक उसकी शादी नहीं हुई थी; क्योंकि ग्यारह वर्ष की उम्र में ही उसे बालिका-वधू के रूप में विदा कर दिया गया था, और जब वह पन्द्रह वर्ष की हुई तो उसके मंगेतर की मृत्यु हो गयी और वह वापस घर चली आयी। इस अनुभव ने उसे गहरे से प्रभावित किया था, और इसके साथ ही अपने दादा की देखभाल की ज़िम्मेदारी के चलते भी वह शादी जल्दी नहीं करना चाहती थी। बीमार बूढ़ा और लड़की एक-दूसरे पर निर्भर थे और वह इसे इतना चाहता था कि जब उसकी विवाहिता बेटी, जो दूसरे गाँव में रहती थी, उसके लिए चावल के आटे के पुए या नमकीन अण्डे भेजती, तो वह इस क़ीमती भेंट का बड़ा हिस्सा पोती के लिए रख छोड़ता था। जिस ज़मीन पर सिऊ-नी खेती करती थी वह एक ज़मींदार की थी, और लगान चुकता कर देने के बाद उनके लिए कुछ न बचता था, सिवाय भूसे के, जो महज़ चन्द दिनों के लिए जलावन का काम दे सकता था। अपने बूढ़े दादा के लिए एक कटोरा चावल के दलिया का जुगाड़ करने की फ़िक्र में, वह खेतों में अपना काम निपटाने के बाद कुल्हाड़ी लेकर जलावन की लकड़ी काटने पहाड़ी पर चली जाती थी। शाम को दिये की रोशनी में वह सीने-पिरोने का भी काम करती थी। गाँव वाले इस अच्छी, मेहनती, सरल-सीधी लड़की की तारीफ़ करते और सोचा करते कि वह किसी नौजवान के लिए कितनी अच्छी पत्नी होगी। लेकिन जिस साल वह इक्कीस वर्ष की हुई, उसी साल उस पर दुर्भाग्य टूट पड़ा। उसी जाड़े में उनका ज़मींदार, लिन पो-ताङ लगान वसूल करने पेइपिङ से आया, उसने सिऊ-नी की ख़ूबसूरती देखी और उसे अपनी रखैल बना लेने का निश्चय कर लिया। वैसे वह पचास से ऊपर का हो चुका था और पहले ही से उसके पास तमाम रखैलें थीं... कुछ तो वेश्यालयों से लायी हुई थीं...जिनमें से अधिक ख़ूबसूरत रखैलों को उसकी पत्नी सू फेङ-यिङ ने खदेड़ दिया था। अब वह इस स्वस्थ, भोली सिऊ-नी पर रीझ गया, और उसे किसी क़ीमत पर पा लेना चाहता था। लगान वसूली के दौरान उसके असामियों द्वारा किये जाने वाले किसी भी प्रतिरोध का दमन करने के लिए उसके पास सैनिक भी थे जो जेहोल के मिलिटरी गर्वनर, ताङ यु-लिन द्वारा भेजे गये थे। सिऊ-नी और उसके दादा ऐसी बर्बर शक्ति के आगे लाचार ही थे, और उसे उठाकर

उसी गाँव में लिन पो-ताङ के पट्टेदारों में से एक घर पर ले जाया गया, जहाँ उसे ज़मींदार की रखैल बना दिया गया। वह फूट-फूटकर रोयी और आत्महत्या करने के कोशिश की, लेकिन उसके सारे प्रतिरोध और विरोध बेकार थे। लिन पो-ताङ अपनी मूँछों पर ताव देकर क्रूरता से मुस्कुराते हुए अपनी बुरी नीयत पूरी कर चुका था।

दो महीने बाद, जब सिऊ-नी को गर्भ ठहर गया, तो लिन उसे अपने घर पेइपिङ ले गया। उसी रात उसका बूढ़ा दादा अपनी लाठी टेकते हुए गाँव के पास वाली पाइहो नदी पर गया और उसमें छलाँग लगाकर मर गया।

सिऊ-नी पेइपिङ में लिन के घर में रहते-रहते एक तेज़-तर्रार, प्रतिभासम्पन्न लड़की से एक नासमझ जीव बन गयी जो सारा दिन बिना एक शब्द बोले पड़ी रहती और खाने या कोई काम करने के अलावा, शून्यभाव से दीवार की ओर देखती रहती। जब लिन की पत्नी ने देखा कि सिऊ-नी गर्भवती है, तो उसने शुरुआत के कुछ महीनों तक उसके साथ बुरा व्यवहार नहीं किया, क्योंकि उसके अपने बच्चों में से कोई जीवित न था, और उसे लिन परिवार के लिए एक बच्चा चाहिए था।

अपनी बच्ची के पैदा होने पर सिऊ-नी की आत्मा में फिर से थोड़ी जान आ गयी, और उसने अपना सारा प्यार इस फूले-फूले गालों वाली बच्ची पर उड़ेल दिया। शिशु के सुन्दर मुखड़े की एक मुस्कान उसकी मानसिक व्यथा को कम कर देती, एक क्षण के लिए उसे अपना अपमान भूल जाने देती, और उसे जीते रहने का साहस प्रदान करती।

काफ़ी देर रात को, जब लिन दूसरी रखैल के पास जा चुका होता तब सिऊ-नी झटपट उठ पड़ती, अपनी बच्ची के तौलिये बदलती या उसे दूध पिलाती और उसके फूले हुए गालों को चूमती। फिर भावविह्वल होकर, वह गुनगुनाती :

"बढ़ो मेरी प्यारी, बढ़ो! जब तक तुम जी रही हो, तभी तक मेरे भी जीने का कोई मतलब है।" आँसू जो लम्बे समय से सूख चले थे, अब फिर से बच्ची के मासूम चेहरे पर झरने लगते। अपनी बच्ची की ख़ातिर ही सिऊ-नी को जीते रहना था।

बच्ची जब सालभर की हुई तो उसकी पुलकभरी बाल-सुलभ तोतली बोली और अपनी माँ के गाल पर स्पर्श करती उसकी नन्ही उँगलियाँ सिऊ-नी के चेहरे को ख़ुशी से भर देती थीं, लेकिन एक दिन सू फेङ-यिङ ने उसे अपने पास बुलाया और बच्ची को उससे छीनकर सख़्ती से कहा :

"यह श्री लिन की बेटी है...मैं इसकी देखभाल करूँगी। दफ़ा हो जा यहाँ से, निर्लज्ज भिखारिन कहाँ की।"

सिऊ-नी तो सकते में आ गयी और, धाड़ मारकर रोती हुई, ज़ोर-ज़ोर से अपना सिर दीवार पर पटकने लगी। बच्ची अपने नन्हे हाथ फैलाये हुई थी और अपनी माँ के लिए चीख़ रही थी; उसे सू फेङ-यिङ के बाहुपाश से छुड़ा लेने की उसने

असफल कोशिश भी की। लिन पो-ताङ जो अब उससे ऊब चुका था, तटस्थ बना रहा। उसके जालिम नौकरों ने सिऊ-नी को पकड़कर एक कार में ठूँस दिया जो उसे कहीं दूर ले जाने के लिए फाटक पर खड़ी इन्तज़ार कर रही थी।

सिऊ-नी की बच्ची को लिन पो-ताङ ने ताओ-चिङ नाम दिया। शुरू-शुरू में तो वह और उसकी पत्नी उसे ख़ूब प्यार करते रहे, लेकिन जब वह तीन वर्ष की हुई और सू फेङ-यिङ ने एक बेटे को जन्म दिया, तब नन्ही बच्ची की परेशानियाँ शुरू हो गयी। मामूली से मामूली ग़लती पर मार खाती हुई, वह नौकरों के साथ सोती थी, जब तक ख़ासतौर पर ज़रूरी न हो तब तक उसे मुख्य कमरों में जाने की इजाज़त नहीं थी। वह अपना समय गलियों में उन लावारिस बच्चों के साथ खेलते हुए बिताती थी जो कूड़ा-करकट के ढेर पर कोयला बीनने जाया करते थे।

जाड़े में एक दिन सू फेङ-यिङ ने, अच्छे मूड में, ताओ-चिङ को अन्दर बुलाया और उसे यह लगा कि बच्ची बहुत बेचैन थी क्योंकि वह उसके सवालों का उत्तर देते हुए काँप जाती थी। हैरत में पड़कर उसने ताओ-चिङ को अपने क़रीब खींच लिया और पूछा कि क्या बात है।

"मुझे बहुत खुजली हो रही है..." ताओ-चिङ ने उत्तर दिया, जो उस समय सात वर्ष की थी। उसकी नाक बह रही थी और वह रोने को हो आयी थी।

एक दुर्लभ दया-भाव सू फेङ-यिङ के मन में उमड़ आया और बच्ची के तार-तार हुए जैकेट के उतारते ही वह यह देखकर सन्न रह गयी कि इसके नीचे वाले कपड़े में चिल्लर रेंग रहे थे। घिन के आवेग में उसने उस छुतहे कपड़े को चूल्हे में झोंक दिया। फिर, अपनी दयालुता के प्रदर्शन पर आत्ममुग्ध होकर उसने खोजभरी नज़र से ताओ-चिङ के चेहरे की ओर देखा, जो ठण्ड के मारे खिंचा हुआ था और नीला हो चला था। पलंग पर अख़बार लिये अलस भाव से पड़े अपने पति की ओर उसने मुड़कर कहा :

"मैं समझती हूँ कि छोकरी देखने में कोई बुरी नहीं है। अगर हम उसे स्कूल भेज दें, तो बड़ी होने पर इससे हम अपनी लागत का अच्छा-ख़ासा इनाम पा सकते है।"

"बेहतरीन ख़याल है।" लिन ने अपनी मूँछें सहलाते हुए सहमति में सिर हिलाया। "तुम हमेशा ही किसी से भी अधिक आगे की बात देख जाती हो, मेरी प्यारी। इस पुरानी कहानी में कोई सच्चाई नहीं है कि गँवार और अनपढ़ औरत ही गुणी पत्नी बनती है। हर हालत में उसे पढ़ने दो।"

इस तरह ताओ-चिङ को स्कूल भेज दिया गया, जहाँ उसने चाव से अपनी पढ़ाई की और एक होशियार छात्रा सिद्ध हुई। वह दूसरी बच्चियों के समान न थी, और इतना कम बोलती थी कि न जानने वाले उसे गूँगी समझ लेते। जब उसका सौतेला भाई, जो अपनी माँ के लाड़-प्यार से बिगड़ चुका था, उसे सताता या पीटता

तो वह कभी नहीं चीख़ती। कभी-कभी तो वह उसे मारने की छूट ही दे देती, लेकिन दूसरों पर वह अपना आपा खो देती और पलटकर वार करती, हालाँकि इसकी हमेशा ही उसे भारी क़ीमत चुकानी पड़ती। उसकी सौतेली माँ उसे मारती तो बहुत कम ही थी, इसके बदले वह उसकी बाँह मरोड़ देती, चिकोटी काटती या दाँत से काट लेती थी। एक रात, ताओ-चिङ नौकरों के क्वार्टर में सोई हुई थी, तभी लड़के ने अपनी माँ के प्रिय फूलदानों में से एक को तोड़ दिया और इसका दोष अपनी सौतेली बहन पर मढ़ दिया। बिस्तर से बेरहमी से खींचे जाते ही ताओ-चिङ समझ गयी कि क्या कुछ होने वाला है और आने वाली कड़ी मुसीबत को झेलने के लिए अपने दाँत भींचकर तैयार हो गयी।

"बेशर्म नन्ही कुतिया। तू दिन-ब-दिन ढीठ होती जा रही है। मैं तुमसे फूलदान की क़ीमत अदा कराकर दम लूँगी, देख लेना, अगर नहीं किया तो!"

उसकी टाँगें घसीटीं और मरोड़ी गयीं और उसकी बाँह में दाँत से काटा गया, लेकिन ताओ-चिङ तो कुत्ते से भी बदतर सलूक किये जाने की आदी हो चुकी थी। वह न तो चिल्लायी, न दया की भीख माँगी, और न उसकी अपलक देखती आँखों से कोई आँसू ही टपका। घर में उसके लिए अगर कोई हमदर्दी जताने वाला था तो वह एकमात्र चाची वाङ थी, एक बूढ़ी दाई जो सू फेङ-चिङ की नज़र बचाकर बच्ची के लिए जो कुछ कर सकती थी, करती थीं। स्वभावत: ताओ-चिङ चाची वाङ से प्यार करने लगी, जब भी उसे भूख या ठण्ड लगती तो वह उसके पास चली जाती, और इस माँ-तुल्य नौकरानी के अलावा कभी और किसी ने उसे आँसू बहाते नहीं देखा था।

जब ताओ-चिङ ने प्राइमरी स्कूल की पढ़ाई पूरी कर ली और इसे पेइपिङ से बाहर पश्चिमी पहाड़ी पर स्थित लड़कियों के एक हाईस्कूल में दाख़िला मिल गया, तो उसकी सौतेली माँ का रवैया बदला हुआ दिखने लगा। ताओ-चिङ एक लम्बी, छरहरी, आकर्षक लड़की बन चुकी थी। उसका मुखड़ा सुघड़ था, उसकी चमड़ी साफ़ और बेदाग संगमरमर जैसी थी और उसकी लम्बी काली भौंहें हौले से उसकी कनपटी की ओर मुड़ी हुई थीं। लेकिन उसकी सर्वाधिक आकर्षक विशेषता थी उसकी आँखें, उदास और अपनी ओर खींचने वाली। वह हमेशा से एक शान्त बच्ची थी जो अधिकांश समय अपनेआप में खोयी रहती, मित्र-मण्डली की कोई ख़ास परवाह न करती। लेकिन सू फेङ-चिङ की दिलचस्पी इसमें नहीं थी। वह यह देख रही थी कि लड़की एक ख़ूबसूरत युवती बनती जा रही है। उसने उसे उस हद तक शिक्षा दिलाने का निश्चय कर लिया जिस हद तक कि एक धनवान और प्रभावशाली आदमी से शादी करने वाली तेज़-तर्रार लड़की के लिए ज़रूरी होता।

जिस दिन ताओ-चिङ ने बोर्डिंग स्कूल के लिए प्रस्थान किया, उस दिन उसके सन्तुष्ट माँ-बाप उसे फाटक तक छोड़ने आये, जहाँ एक रिक्शा खड़ा इन्तज़ार कर

रहा था। लिन पो-ताङ लम्बा रेशमी गाऊन पहने फाटक से बाहर संगमरमर की सीढ़ियों पर खड़ा होकर अपनी मूँछों पर हाथ फेर रहा था। रिक्शे में बैठ चुकी ताओ-चिङ की ओर मुस्कुराते हुए, उसने कहा :

"बधाई हो, नौजवान लड़की! हाईस्कूल में जाना *सिऊत्साई* (यह उपाधि उन्हें दी जाती थी जो पुरानी सरकार की पहली परीक्षा पास करते थे) की डिग्री हासिल कर लेने के बराबर है। हा, हा, हा!"

लिन पो-ताङ, जिसे एक शिक्षाशास्त्री और मानवताप्रेमी की ख्याति प्राप्त थी, चिङ वंश के शासनकाल की दूसरी परीक्षा पास कर चुका था और चू जेन बन चुका था, लेकिन अन्तिम परीक्षा के लिए राजधानी जाने से पहले ही काङ यू वेई और लियाङ ची चाओ ने 1898 को सुधार आन्दोलन शुरू कर दिया था और इम्पीरियल युनिवर्सिटी जो पेइपिङ युनिवर्सिटी का पूर्व-रूप थी, स्थापित कर दी गयी। तब, समय की रफ़्तार के साथ-साथ चलने को आतुर लिन अपनी पत्नी को साथ लेकर राजधानी चला आया और इस नव-स्थापित युनिवर्सिटी में दाख़िल हो गया। फिर गणतन्त्र का ज़माना आया और ज़माने की हवा के साथ-साथ बहते हुए वह एक शिक्षाशास्त्री बन गया, क्योंकि उस समय शिक्षा का ही फ़ैशन था। स्कूल खोलने के बहाने मामूली क़ीमत पर, उसने बड़ी-बड़ी ज़मीनें ख़रीद लीं, जो सम्राट द्वारा मान्चू राजकुमारों को ख़ैरात में मिली हुई थीं। अब समाज के "श्रेष्ठ" लोगों के बीच वह अपने विजिटिंग कार्ड बाँटता था जिन पर चू जेन, इम्पीरियल युनिवर्सिटी का छात्र, मिनान अनाथालय का सुपरिण्टेण्डेण्ट और वूपेन युनिवर्सिटी का प्रेसीडेण्ट, जैसी शानदार उपाधियाँ अंकित थीं। जिन लोगों ने इस आदरणीय और मानद प्रोफ़ेसर लिन पो-ताङ के प्रति अपना आदर-भाव प्रस्तुत किया उनमें से किसी ने कभी उस दुखियारी सिऊ-नी के प्रति उसके नृशंस व्यवहार की चर्चा तक नहीं की।

लिन पो-ताङ 'चार पुस्तकों और पाँच शास्त्रों' में एकदम पारगंत था और पश्चिमी दार्शनिक काण्ट और मौण्टैस्क्यू की भी पुस्तकें पढ़ चुका था, लेकिन उसके लिए हैनलिन अकादमी की सदस्यता से बढ़कर दूसरी और कोई चीज़ न थी। यही कारण था कि उसने अपनी बेटी के हाईस्कूल में दाख़िले की सिऊ त्साई से तुलना की थी।

उसकी सौतेली माँ इस बात का ध्यान रखे थी कि ताओ-चिङ को अपने बाप से कुछ कहने का मौक़ा न मिले। वह इतनी थुलथुल थी कि उतरती गर्मी से भी उसे परेशानी हो रही थी; वह सीढ़ियों पर खड़े होकर एक छोटा-सा रेशमी पंखा झल रही थी। वह भी उसे अपनी सौतेली बेटी समझकर गर्व महसूस कर रही थी।

"एक अच्छी लड़की बनना, मेरी प्यारी बिटिया, और मेहनत से पढ़ना। माँ तुम्हारी हाईस्कूल की पढ़ाई पूरी करने और तुम्हें युनिवर्सिटी तक पढ़ाने के लिए पैसे का इन्तज़ाम करेगी। अगर तुम अपनी स्नातकोत्तर पढ़ाई के लिए विदेश चली गयी,

तो तुम महिला *चुआङयुआन* (एक छात्रा जो अन्तिम सरकारी परीक्षा में प्रथम आयी थी) से बेहतर बनकर वापस आओगी और तब तो तुम्हारी शोहरत और दौलत की कोई सीमा नहीं रहेगी।" वह तमककर अपने पति की ओर मुड़ी और पूछा : "तुम किस पर हँस रहे हो, बूढ़े खूसट? मैंने पाला-पोसा है! जब यह कमाने लगेगी और उसके पास दौलत होगी, तो उसमें से तुमको एक पाई भी नहीं मिलेगी।"

सू फेङ-यिङ ऐसे बड़बड़ायी मानो नाराज़ हो, लेकिन लिन पो-ताङ खी-खी करके हँस दिया और सिर हिलाने लगा, "बहुत अच्छा, मेरी प्यारी, सबकुछ तुम्हारा ही रहेगा। एक-एक पाई। यहाँ तक कि वह सब भी जो तुम्हारा भावी दामाद कमायेगा। कहो ठीक रहेगा न यह, तुम्हारे लिए?"

बारह वर्षीय ताओ-चिङ ने तिरस्कारपूर्वक इस जोड़े को देखा जिसे वह अपना माँ-बाप कहती थी, और आँखों में आँसू भरकर चुपचाप रिक्शे में चल पड़ी।

हाईस्कूल में आकर पहली बार उसने अपनेआप को पिंजरे से आज़ाद हुई एक चिड़िया की भाँति महसूस किया, जो अब आज़ादी की मीठी हवा में साँस ले रही थी। उसे पढ़ाई का शौक़ था और ख़ासतौर से ऐसी साहित्यिक कृतियाँ पसन्द थीं जो उसकी उर्वर कल्पना को विकसित करने में मददगार होतीं या उसे एक शानदार भविष्य का सपना दिखातीं। वह वीरतापूर्ण आदर्शों से लबरेज़ होती जा रही थी, और जितना ही वह पढ़ती और अध्ययन करती, उतना ही अधिक उसका दिमाग़ क्रियाशील होता जाता। लेकिन, बाहरी तौर पर वह अपने आस पास के परिवेश से निर्लिप्त ही रहती, सामान्यत: मितभाषी और चिन्तामग्न। उसकी सबसे अच्छी दोस्त एक स्नेहिल, भावुक हृदय की लड़की थी जिसका नाम चेन वेई जू था, जो उसकी मुसीबतों में उसे दिलासा देना कभी नहीं भूलती, और जिसके सच्चे प्यार और सहयोग पर वह गर्व कर सकती थी।

1931 की बात है। ताओ-चिङ के स्नातक बन जाने में दो महीने रह गये थे कि एक दिन दोपहर को वह घर जाकर वापस आयी और बुरी तरह बुझे मन से लम्बे समय तक कक्षा में बैठी रही। उसकी सहेलियाँ कुतूहलभरी नज़रों से उसे देख रही थीं।

"तुम्हारी माँ ने किसलिए घर पर बुलाया था, ताओ चिङ?" उनमें से एक ने पूछा। "क्या हुआ? तुम इतनी परेशान क्यों हो?"

वेई-जू ने उसकी आस्तीन पकड़कर खींचा और उसके बालों को सहलाकर आहिस्ते-से पूछा : "ताओ-चिङ बताओ, क्या बात है?"

लेकिन उसकी दोस्त बिना हिले-डुले बैठी रही, चुपचाप।

कुछ लड़कियों ने ठिठोली की और ताओ-चिङ अचकचाकर अपनी आँखें मलते हुए उठ बैठी और एक कटु मुस्कान के साथ पूछा, "हँसने की क्या बात है? मुझे सताओ नहीं।" उसके बाद वह उठी और कमरा छोड़कर चली गयी।

थोड़ी देर बाद ही वेई-जू उसको साथ लेकर स्कूल के पास वाली नदी के किनारे टहलने गयी। दोनों लड़कियाँ एक सँकरी पगडण्डी पर आगे-पीछे चल रही थीं। कुछ देर तक चलते रहने के बाद आगे चल रही ताओ-चिङ मुड़ पड़ी और अपनी सहेली को घूरकर देखने लगी।

उसका चेहरा फक पड़ गया था। "मुझे पढ़ाई छोड़नी पड़ेगी, वेई-जू!..."

"क्यों? क्या इसीलिए तुम्हारी माँ ने घर पर बुलाया था, ताओ-चिङ?" नरमदिल वेई-जू स्वयं ताओ-चिङ से अधिक परेशान और दुखी हो गयी।

दूसरी ने कोई जवाब नहीं दिया, और वे टहलती हुई नदी किनारे खड़े पेड़ों तक गयीं, जहाँ वे एक बेदमजनूं पेड़ से टिककर खड़ी हो गयीं। ताओ-चिङ शून्यभाव से टकटकी लगाकर धारा की सुनहरी चमक को देखती रही, और लम्बी चुप्पी के बाद कुछ-कुछ आत्मालाप करती हुई बोली :

"हमारा परिवार दिवालिया हो चुका है। मेरे पिता कुछ जायदाद के चक्कर में अदालत गये थे, लेकिन वह मुक़दमा हार गये और बरबाद हो गये। मेरी सौतेली माँ को बिना कुछ बताये, उन्होंने लम्बी दीवार के उस पार की अपनी सारी ज़मीन बेच दी, और अपनी रखैल को लेकर कहीं चले गये। ले-देकर मैं ही अपनी सौतेली माँ की कुल सम्पत्ति के रूप में बची हुई हूँ।"

"तुम कहना क्या चाहती हो? तुम अपने अपको सम्पत्ति कैसे कहती हो? तुम पैसे से नहीं बनी हो।"

"मेरी सौतेली माँ मुझसे कमाई करना चाहती है। उसने मुझे एक धनी बूढ़े आदमी से शादी कर लेने को राज़ी करने के लिए बुलाया था ताकि वह पहले की तरह ऐशो-आराम से जी सके। मैंने इन्कार कर दिया -- मैंने उससे नाता तोड़ लिया है।"

आँसुओं से डबडबाकर वेई-जू ने कसकर अपनी दोस्त का हाथ पकड़ लिया और बोली, "तब क्या करना चाहिए।" ताओ-चिङ ने आहिस्ते से उसे थपथपाया और दिलासा दिया।

"उद्विग्न मत हो, वेई-जू! मैं हार मानने वाली नहीं हूँ। अगर हालात बहुत बुरे हो जायेंगे तो मैं अपनी जान दे दूँगी।"

इसके तुरन्त बाद ही, सू फेङ-यिङ ने ताओ-चिङ का ख़र्चा देना बन्द कर दिया, इस उम्मीद में कि इसके ज़रिये वह उसे मान जाने के लिए मजबूर कर देगी। लेकिन लड़की अडिग बनी रही। उसने स्कूल छोड़ देने और कोई नौकरी ढूँढ़ लेने का विचार किया, लेकिन सत्र अभी ख़त्म नहीं हुआ था और वह जाती भी कहाँ? उसके साथ की कुछ सहृदय छात्राओं ने उसके रहने के लिए चन्दा करके काफ़ी पैसा इकट्ठा किया, जिससे वह सत्र के आख़िरी दो महीनों तक रुकी रहने में समर्थ हो सकी।

जब छुट्टियाँ शुरू हुईं, तो वह घर जाने की तैयारी किये बिना न रह सकी, और हालाँकि उसका दिल बोझिल था, फिर भी उसने उम्मीद नहीं छोड़ी थी। विश्वविद्यालय में प्रवेश पाने की उसकी बहुत बड़ी लालसा थी, कहीं अगर सौतेली माँ ने रहमदिली नहीं दिखायी तो वह अपनी पढ़ाई जारी नहीं रख सकेगी। लेकिन क्या वह कठोर दिल औरत अपना मिज़ाज बदल देगी?

वह उधेड़बुन में पड़ी हुई थी। ताओ-चिङ जितनी साहित्य की शौक़ीन थी उतनी ही संगीत की भी शौक़ीन थी, और जब उसने घर जाने के लिए रिक्शा किया तो वह अपने साथ वाद्ययन्त्रों का एक चुनिन्दा संग्रह – एक छोटा रीड ऑरगन, एक बाँस का पाइप, एक बाँसुरी, एक मून-गिटार और एक दो तारों वाला बेला...लेती गयी। उसका क़ीमती बटरफ़्लाई माउथ ऑरगन उसकी जेब में था। वह जहाँ कहीं भी जाती, ये वाद्ययन्त्र साथ रहते; इसी कारण तो उसकी सहेलियों ने उसके दो उपनाम रख छोड़े थे : एक ख़ूबसूरत नाम था बाँसुरी परी, और दूसरा सगीत की दूकान, जो उतना ख़ूबसूरत नहीं था। जब वह अकेले में होती तो कोई न कोई वाद्ययन्त्र बजाने लगती, और जो कोई भी उसकी एक झलक देखता, वह उसकी उदास रहने वाली आँखों में सच्ची ख़ुशी देखकर चकित हुए बिना न रहता। ऐसे क्षणों में उसकी गम्भीरता बालसुलभ निश्छलता में परिणत हो जाती। यह बात कम से कम छह माह पहले तक तो सच ही थी। लेकिन जब से उसकी स्थिति में अप्रत्याशित परिवर्तन आया तब से उसे वाद्ययन्त्र बजाने का मन ही नहीं हुआ, और कुछेक लड़कियाँ उस पर फब्तियाँ कसतीं :

"क्या तुम्हारी संगीत की दूकान बन्द हो गयी है, बाँसुरी परी?"

वह फीकेपन से मुस्कुरा देती और बिना कुछ बोले वहाँ से चल देती।

जैसे-जैसे रिक्शा टेकरीदार रास्ते पर हल्के हिचकोले खाता हुआ आगे बढ़ता गया, वैसे-वैसे उसका दिल अधिकाधिक बोझिल होता गया। अपनी सौतेली माँ के साथ उसकी पिछली भिड़न्त की याद उसके दिमाग़ में अब भी वैसे ही ताज़ा बनी हुई थी। सू फेङ-यिङ ने उसके ऊपर वैसे ही बातों के कोड़े बरसाये थे जैसे कोई ज़मींदार एक अभागे असामी की खाल खींचता है, उसे गालियाँ दी थीं, उसकी नमकहरामी पर बुरा-भला कहा था, और धमकी दी थी कि अगर वह उसकी बात नहीं मानेगी तो वह उसे घर से निकाल देगी। इसको याद करके काँपती हुई ताओ-चिङ ने अपने ऑरगन बाजे को अपनी छाती से चिपटा लिया।

जब वह घर पहुँची तो उसकी सौतेली माँ कुछ मेहमानों के साथ माहजोङ खेल रही थी। वह अपनी प्यारभरी अगवानी पर चौंक पड़ी।

"तो तुम लौट आयी, बच्ची।" सू फेङ-यिङ मुस्कुरायी। "क्या सफ़र में गर्मी ज़्यादा थी? आज हमारे यहाँ बहुत से मेहमान हैं, तुम देख ही रही हो, और ये सभी तुम्हारे अच्छे स्कूली नतीजे पर मुझे बधाइयाँ दे रहे हैं।"

ताओ-चिङ ने सोचा, "लगता है अब यह मुझे शादी के लिए मजबूर नहीं करेगी। शायद यह मुझे अपनी पढ़ाई जारी रखने के लिए ख़र्च भी देती रहेगी।" उसने हमेशा ही इस कहावत पर यक़ीन किया था, "पढ़ाई सबसे बढ़कर है," और उसे अपनी पढ़ाई जारी रखने के अवसर के अलावा और किसी भी चीज़ की चाहत नहीं थी। इसलिए उसने थोड़ा झुककर मेहमानों का अभिवादन किया, और हालाँकि वह उन जुआरियों और अफ़ीमचियों से नफ़रत करती थी जिनको उसके माँ-बाप घर पर बुलाते थे, फिर भी वे आज और दिनों की अपेक्षा कम नागवार लग रहे थे, और वह लाजभरी मुस्कुराहट के साथ माहजोङ की मेज़ के पास रुक गयी।

"यह डाइरेक्टर हू हैं," उसकी सौतेली माँ ने विशेष सम्मान के साथ बैठाये गये पश्चिमी पोशाक पहने एक पीले रंग के दुर्व्यसनी व्यक्ति की ओर संकेत करते हुए बताया। "यह मेरी बेटी ताओ-चिङ है," उसने अपनी सूजी हुई आँखों की जी-हुज़ूरिया अदा के साथ, मुस्कुराते हुए, गर्व से कहा। ताओ-चिङ के दिल में यकायक मरोड़-सा उठा और वह झटपट भीतरी कमरे में चली गयी जहाँ वह उनकी बातें सुनने से बच सके।

ताओ-चिङ ने घर पर ही रहने का निश्चय किया, और वक़्त पर उसने नॉर्मल युनिवर्सिटी की प्रवेश परीक्षा दी। उसकी परीक्षा बहुत बढ़िया हुई थी और वह बहुत ख़ुश थी। लेकिन शादी के षड्यन्त्र और जीवन सम्बन्धी चिन्ताएँ रह-रहकर उसे सालती रहती थीं। हर रात माहजोङ के मोहरे सुबह होने के पहले तक खड़खड़ाते रहते, और अश्लील चुहलबाज़ियों और भन्नाता पतनशील संगीत, या जुए की मेज़ों पर अपनी बाज़ियाँ हार चुके क्रुद्ध आदमियों की गाली-गलौज को न चाहते हुए भी उसे सुनना पड़ता।

पचास के क़रीब हो चली सू फेङ-यिङ को सिंगार-पटार करके पुरुषों को आकर्षित करने की कोशिश करते देखकर वह सोचती, "पति और आमदनी के बिना माँ कितना नीचे गिर चुकी है।" ताओ-चिङ दुख और नफ़रत से भर उठती।

कोई एक पखवारा या कुछ अधिक गुज़रा होगा, जब उसकी सौतेली माँ बड़े अच्छे मूड में उसे एक सफ़ेद मलमल का गाऊन और एक जोड़ा सफ़ेद किरमिची जूते ख़रीदने के लिए ले गयी। वह तो अधिक फ़ैशनेबल कपड़े ख़रीदना चाहती थी, लेकिन ताओ-चिङ राज़ी नहीं हुई क्योंकि उसे तो गर्मी में पहनने के लिए सादा सफ़ेद गाऊन और सफ़ेद जूते और मोजे ही पसन्द थे, भले ही उन्हें पहनकर वह एक नर्स ही क्यों न लगती। उसको राज़ी न कर पाने पर उसकी सौतेली माँ को उसी की बात माननी पड़ी। उस शाम उसने ताओ-चिङ के कुछ मनपसन्द पकवान पकाये, और रात का खाना खा लेने के बाद लड़की और उसके छोटे भाई, ताओ-फेङ को गपशप करने के लिए अपने पास बुलाया। अचानक वह उनकी इधर-उधर की बातचीत को रोककर कहने लगी :

"ताओ-चिङ तुम्हारे बाप, उस बूढ़े पाजी ने हमें छोड़ दिया और हमारे लिए एक भी पाई नहीं छोड़ी। हमारी सारी की सारी ज़मीन निकल चुकी है और हम तीनों बेसहारा हो गये हैं। तुम्हारा भाई अभी बहुत छोटा है, और तुम में कोई ख़ास ख़ूबी भी नहीं है। हम कैसे जियेंगे?" उसकी आँखों में आँसू थे, और ताओ-चिङ ने दुखी होकर अपना सिर झुका लिया। फिर उसे ताज्जुब हुआ, जब सू फेङ-यिङ ने दिलासा देते हुए कहा, "एक अच्छी लड़की बनो और हिम्मत न हारो। अगर तुम मेरी राय मानो, तो हम सभी के पास जीने के लिए काफ़ी कुछ हो जायेगा और तुम अपनी पढ़ाई भी करती रहोगी।"

ताओ-चिङ कुछ बोली नहीं, और उसकी सौतेली माँ, एक क्षण तक चिन्तित भाव से अपने नाख़ून कुरेदते रहने के बाद, आगे बोली : "प्रसंगवश मुझे साफ़-साफ़ बता दो कि तुम कैसा पति चाहती हो।"

एक लम्बा लम्हा गुज़र गया लेकिन कोई जवाब नहीं मिला।

"बोलो! मैं तुम्हारे जवाब का इन्तज़ार कर रही हूँ।"

"मैंने इस सवाल पर कभी सोचा ही नहीं है, माँ। क्या तुमने नहीं कहा कि तुम मुझे पढ़ते रहने दोगी? कृपया शादी की बात फिर से मत करो।"

अपने फनफनाते गुस्से पर क़ाबू पाने की कोशिश में भृकुटी टेढ़ी करती हुई, सू फेङ-यिङ ने प्रतिवाद किया :

"तुम बहुत नासमझी कर रही हो। मैंने तो तुम्हारे बाप से सोलह साल की उम्र में शादी की थी। और फिर, शादी से तुम्हारी पढ़ाई में कोई ख़लल तो पड़ेगा नहीं।" वह बिस्तर से उठी, अपनी सूजी आँखें मिचमिचायी, और लड़की का हाथ अपने हाथों में लेकर बोली : "मेरी लाड़ली, मेरे पास तुम्हारे लिए एक बहुत बढ़िया ख़बर है। डाइरेक्टर हू जो अक्सर यहाँ आता रहता है, तुम्हारे ऊपर रीझ गया है और तुम्हारी योग्यताओं के साथ-साथ तुम्हारी शक्ल-सूरत की भी बड़ाई करता रहता है। उसने अब तक शादी नहीं की और अभी तो वह चालीस से कम ही का है। वह धनी और असरदार आदमी है, कमाल की जोड़ी रहेगी!"

चूँकि ताओ-चिङ ने अपना सिर झुका लिया था और कुछ कहा नहीं, इसलिए उसकी सौतेली माँ ने समझ लिया कि वह राज़ी हो गयी है, पर लाज के मारे कुछ नहीं कह रही है। फेङ-यिङ काफ़ी इत्मीनान के साथ, दिल खोलकर हँसी और ऐसी शादी के फ़ायदों के बारे में विस्तार से बोलने लगी :

"अगर तुम राज़ी हो जाओ, मेरी प्यारी, तो हमारे सौभाग्य की कोई सीमा नहीं रह जायेगी। नानकिङ और शंघाई में डाइरेक्टर हू के विदेशी शैली के मकान हैं, पेइपिङ में उसका भरा-पूरा बैंक खाता है और उसके अपने ही ज़िले में हज़ारों मोऊ ज़मीन है। बारह हज़ार मोऊ...ज़रा सोचो तो! शंघाई में उसके ढेर सारे शेयर हैं जिनसे अच्छा-ख़ासा मुनाफ़ा होता हे। वह च्याङ काई-शेक का भी क़रीबी है, और उसका

विश्वासपात्र है। बहुत जल्द ही वह सरकारी महकमे में और भी ऊँची तरक़्क़ी कर जायेगा..."

ताओ-चिङ अब अपनेआप को रोक न सकी। अपनी सौतेली माँ से दूर छिटककर वह फूट-फूटकर रो पड़ी।

"ऐसा मत करो, माँ। मेरे लिए वर खोजने की कोशिश करना बन्द करो। मैं उन युद्ध-सरदारों और ऊँचे-ऊँचे अफ़सरों का खिलौना बनने के बजाय मर जाना बेहतर समझूँगी। इस सोच से कुछ नहीं मिलने को है कि मैं उनमें से किसी एक के साथ शादी कर लूँगी।"

उसकी सौतेली माँ, आँख तरेरती हुई क्रोध से उछल पड़ी। उसके रेशेदार हाथों के पंजे तन गये और काँपने लगे, मानो लड़की पर दे मारने के लिए किसी चीज़ की तलाश कर रही हो।

"कमीनी कहीं की! तू यह समझती है कि तू एक कुलीन लड़की है, हुँह? तुम्हारी घटिया दर्जे़ की माँ सिर्फ़ घटिया दर्जे़ की ही औलाद पैदा कर सकती थी। पहाड़ी खोह की वह भिखारिन कुतिया, एक रखैल या उससे भी बदतर रूप में बेच दी गयी। उसकी औलाद से और उम्मीद ही क्या की जा सकती है? तू नहीं जानती कि तुम्हारी भलाई किसमें है। या तो वैसा ही कर जैसा मैं कह रही हूँ, नहीं तो तूने अब तक जितना चावल खाया है उस सबकी भरपाई के लिए मैं तुझे बेच दूँगी।"

ताओ-चिङ इस हमले से सन्न होकर, चुपचाप खड़ी रही, मानो ज़मीन में गड़ गयी हो। वह जान चुकी थी कि उसकी माँ मर चुकी थी और कि स्वयं उसको भी सौतेली बच्ची होने के नाते काफ़ी कुछ झेलना पड़ा था। लेकिन उसकी अपनी माँ की असलियत को उससे छिपाकर रखा गया था।

"पहाड़ी खोह की वह भिखारिन कुतिया, एक रखैल या उससे भी बदतर हालत में बेच दी गयी..." बदनसीबी की हद पर मिली इस गाली ने उसके हृदय को चीरकर रख दिया। वह खिसककर अपने कमरे में चली गयी और घण्टों गुमसुम बैठी रही।

पौ फटने से पहले वह दबे पाँव चाची वाङ के कमरे में पहुँची और उसकी पतली बाँहों में लिपट गयी।

"बताओ, चाची, मेरी माँ कैसी थी! वह कैसे...कैसे मरी? तुमने क्यों इस सच्चाई को हमेशा मुझसे छिपाये रखा?"

कोई उत्तर नहीं; उस अँधेरे, सीलनभरे छोटे कमरे में सिर्फ़ ख़ामोशी छायी रही।

"मेहरबानी करके बताओ, चाची, बताओ ना...तुम तो हमेशा ही मेरी माँ जैसी रही हो। तुम्हें मुझे बताना ही पड़ेगा। ताओ-चिङ ने चाची वाङ को अपनी बाँहों में भर लिया और फूट-फूटकर रोने लगी।

"बेचारी बच्ची!" चाची वाङ हिचकिचा गयी, मानो अपनी भावनाओं पर क़ाबू पाने की कोशिश कर रही हो, फिर टूटते स्वर में बोली : "तुमको याद है न, जब

तुम इत्ती-सी थी, मैं तुमको एक लड़की की कहानी सुनाया करती थी जो जलावन की लकड़ी काटने जाया करती थी? वह लड़की तुम्हारी माँ थी।"

अपने बचपन के वर्षों में, एकाकी, उदास रहने वाली ताओ-चिङ जाड़े की लम्बी शामें अक्सर चाची वाङ के पास उसकी कोई न कोई कहानी सुनने में गुज़ार देती थी, जिसको वह बहुत भावप्रवण ढंग से सुनाती थी। और इन्हीं कहानियों में से एक कहानी सिऊ-नी के बारे में थी। लेकिन अपनी मालकिन की सख़्त हिदायतों के कारण, चाची वाङ ने कभी यह रहस्य खोला नहीं था कि जो लड़की जलावन की लकड़ी काटा करती थी और जिसे ज़मींदार की रखैल बनने को विवश किया गया था, वह ताओ-चिङ की माँ थी। अब ममता से भरी हुई चाची वाङ इस सच्चाई को और आगे छिपा न सकी और उसने पूरी कहानी ताओ-चिङ के सामने बयान कर दी।

लिन पो-ताङ और उसकी पत्नी के आदेश पर, सिऊ-नी को अपनी बच्ची से अलग कर दिया गया था, और उसे एक कार में ठूँस दिया गया था तथा एक तोहफ़े के तौर पर लिन पो-ताङ के एक दोस्त के यहाँ भेज दिया गया था। वह अपनी बच्ची वापस लेने के लिए पागलों की तरह भाग आयी थी, लेकिन घर का दरवाज़ा उसके लिए बन्द हो गया था, और वह किसी भी तरह प्रवेश न पा सकी थी। वह बदहवास होकर इधर-उधर भटकती रही, उसके बाल बिखर गये थे; सारा दिन बिना कुछ खाये-पिये, यहाँ से वहाँ भागती फिरती और दहाड़ मारकर चीख़ती रहती।

"मेरी बच्ची वापस कर दो। उसे वापस कर दो। क्या तुम्हारे पास दिल नहीं है? इन्साफ़ का कोई अहसास नहीं? तुम तो भेड़ियों से भी बदतर हो...तुम्हारी बोटी-बोटी काट डालनी चाहिए। मेरी बच्ची वापस कर दो! अरे उसे वापस कर दो..."

उसकी पीड़ाभरी चीख़ों और हृदयविदारक विलाप से कइयों की आँखों में आँसू उमड़ आते।

लेकिन लिन पो-ताङ ने पहले तो अपनी लोक-लाज के डर से उसे बाँधे रखा और फिर बलपूर्वक हटा दिया। बेचारी सिऊ-नी जब होश-हवास खो बैठी तो उसे पाइहो नदी के समीप वाले उसके उसी पुराने पहाड़ी घर पर पहुँचा दिया। अपने बचपन की पुरानी स्मृतियों, पहाड़ियों और जलधाराओं की पहली झलक ने उसको पुनः स्वस्थ कर दिया और वह कुछेक अस्पष्ट शब्द बोलने और रोने लगी। अपना बचपन तो वह फिर कभी देख नहीं सकती थी। लेकिन अपने दादा से फिर से जुड़ जाने का विचार उसके मन में घर कर आया...उस सौम्य, दयावान बूढ़े से, जो उस पर उतना ही भरोसा करता था जितना कि वह उस पर करती थी। लेकिन जब वह घर पहुँची, तो जाने-पहचाने बरतन-भाण्डे तो अब भी अपनी पुरानी जगह पर ही रखे हुए मिले, लेकिन उसे पता चला कि उसका दादा मर चुका था। वह न तो रो

सकी और न ही कुछ बोल सकी, और उसी शाम, धैर्य की सारी सीमा तोड़कर वह भी, जोकि अभी जवान ही थी, नदी में कूद गयी।

ताओ-चिङ पछाड़ खाकर सँकरी चारपाई पर जा गिरी, अचेत-सी होती हुई थोड़ी देर बाद, वह उठने की कोशिश करने लगी और अपनी बर्फ़ीली उँगलियाँ चाची वाङ के हाथों पर रखते हुए, आर्त स्वर में पुकार उठी, "माँ!..." वह जिस तरह रोयी उस तरह पहले कभी नहीं रोयी थी।

"मत रो, बच्ची! अगर तुम्हारी सौतेली माँ सुन लेगी तो मुसीबत खड़ी हो जायेगी!" लेकिन भले ही वह बूढ़ी औरत ताओ-चिङ से रोना बन्द करने के लिए कह रही थी, वह स्वयं अपनी आँखें पोंछ रही थी।

ताओ-चिङ अचानक उचककर खड़ी हो गयी। "अब मैं इन लोगों से बिल्कुल नहीं डरती।" वह चिल्लाकर बोली। "मैं यह घर छोड़ने जा रही हूँ।"

"कहाँ जाओगी?" चाची वाङ ने चौंककर पूछा, अब भी वह अपने जैकेट के कोर से अपने आँसू पोंछ रही थी।

"वापस स्कूल में," ताओ-चिङ ने बताया, हालाँकि यह उसका इरादा नहीं था। "मैं कुछ दिन तब तक स्कूल में रुकी रहूँगी जब तक कि मुझे मालूम न हो जाये कि मुझे नॉर्मल विश्वविद्यालय में प्रवेश मिल गया है या नहीं।"

"तुम वापस स्कूल जाओगी? अच्छी बात है। सब जगह भागते-दौड़ते मत रहना। माँ और बेटी के बीच का कलह तेज़ी से फैल जाता है। याद रखना बच्ची, 'नीची छत के नीचे से गुज़रने वाले आदमी को अपना सिर झुकाना ही पड़ता है।'" बूढ़ी औरत ने यह कहावत कहते हुए माचिस की एक तीली जलायी और अपने तकिये के नीचे कुछ टटोलने लगी। ताओ-चिङ ने उसे भोर की मद्धिम रोशनी में देखा, लेकिन अभी वह अपनी जुबान पर आयी बात को कह पाती, इसके पहले ही चाची वाङ ने अपने हाथों में एक छोटा-सा पुलिन्दा ले लिया था। इसे सावधानीपूर्वक खोलते हुए, उसने ताओ-चिङ को एक दूसरी तीली जलाने को कहा, जिसकी रोशनी में रंग-बिरंगे बैंक-नोटों का एक बण्डल दिखायी दिया। इसको पूरी सावधानी से गिनकर उसने इस धनराशि को ताओ-चिङ के हाथों में रखते हुए, शुष्क स्वर में कहा :

"यह मेरी दो माह की तनख़्वाह है जिसको तुम्हारी सौतेली माँ ने अभी-अभी दिया है, कुल नौ युआन है। अब, एक अच्छी लड़की बनो और इसे अपने स्कूल में रहने के ख़र्च के लिए ले लो। धीरज रखो और अगर किसी चीज़ की ज़रूरत हो तो मुझे अभी बता दो। भाग्य ने तुम्हारे और तुम्हारी माँ दोनों ही के साथ क्रूर व्यवहार किया है।"

ताओ-चिङ ने अपनी वेदना को दबाते हुए, पैसे ले लिये। "अच्छा होगा कि

उनके सोये ही सोये मैं यहाँ से चली जाऊँ। मेरी ओर से...अलविदा, चाची!"

अचानक उसकी कल्पना में वह झुर्रीदार बूढ़ी नौकरानी एक सुन्दर बदहवास युवती में बदल गयी, जिसके बाल बिखरे हुए थे और चेहरे पर आँसुओं की धार बह रही थी। वह पागलों-सी विलाप कर रही थी : "मेरी बच्ची वापस कर दो..."

——:o:——

अध्याय 3

ताओ-चिङ वापस स्कूल नहीं गयी, क्योंकि इससे कोई उद्देश्य पूरा होने वाला न था। अपने घृणास्पद घर की दहलीज़ पर फिर कभी न लौटने का मन ही मन संकल्प करती हुई, वह वाङ सियाओ-येन की खोज में चल पड़ी। वह उसकी एक अच्छी दोस्त थी जिसे वह प्राइमरी स्कूल से ही जानती थी। उसके साथ तीन दिन गुज़ारने के बाद वह अपने मौसेरे भाई चाङ वेन-चिङ की खोज में ट्रेन पकड़कर पेइताइहो चल दी। वह सन्तुलित दिमाग़ का एक ईमानदार नौजवान था जिसकी वह बचपन से ही इज़्ज़त करती थी। उसकी पत्नी भी उसकी एक पुरानी स्कूली दोस्त थी, अतः वह उनकी मदद पर भरोसा कर सकती थी। सत्र ख़त्म होने से ठीक पहले ही उसके मौसेरे भाई ने पत्र दिया था कि वे छुट्टियों के दौरान स्कूल में ही रहेंगे; और पेइताइहो के लिए प्रस्थान करने से दो दिन पूर्व ही ताओ-चिङ ने उन्हें इस आशय का एक एक्सप्रेस पत्र भेज दिया था कि वह उनके यहाँ आयेगी और उसने पेइपिङ से अपनी ट्रेन का ब्यौरा भी भेज दिया था। अब ऐसा मालूम पड़ रहा था कि उसने इतनी लम्बी यात्रा व्यर्थ ही की थी -- वे कहीं और जा चुके थे! उस निर्जन, ख़ामोश पुराने मन्दिर की बग़ल में बैठे-बैठे, वह अपने आँसुओं को उमड़ आने से न रोक सकी।

चाँद चुपचाप दक्षिण की ओर सरक आया था, जबकि ताज़ा समुद्री बयार उसके बालों को सहला रही थी जिससे उसके उलझनभरे, उद्विग्न मन को सुस्थिर होने में मदद मिल रही थी। आधी रात बीत चुकी थी। अब रोना-धोना बन्द करके कुछ सक्रिय होना ज़रूरी था। ख़ामोश वृक्षों और मज़बूती से बन्द फाटक वाले पुराने मन्दिर पर नज़र डालती हुई, वह धीरे-धीरे उठ खड़ी हुई। "क्यों न मैं हेडमास्टर का पता करूँ और उससे जानकारी हासिल करूँ?" इस विचार से नयी आशा का संचार हुआ और उसने तय किया कि कुछ खाने की चीज़ तलाशने की कोशिश की जाये, क्योंकि दिनभर बिना खाये रह जाने से उसे भूख और प्यास दोनों ही लगी हुई थी। अपने असबाब को ज़ीने पर ही छोड़कर वह जल्दी-जल्दी झाड़ियों वाले रास्ते पर उतर गयी।

थोड़ी कठिनाई के बाद उसने गाँव की राह पकड़ी और एक ख़ामोश, वीरान लगने वाली गली में प्रवेश किया। अभी वह सोच ही रही थी कि हेडमास्टर कहाँ रहता होगा, तभी एक काली आकृति निकट आ पहुँची। चैन की साँस लेकर, वह उसकी ओर दौड़ पड़ी।

"माफ़ कीजियेगा, क्या आप बता सकते हैं कि हेडमास्टर कहाँ रहते हैं?"

"हेडमास्टर?" वह आदमी अचकचाकर रुक गया। "आधी रात से ज़्यादा वक़्त हो चुका है। आप कहाँ से आ रही हैं?"

"मैं अपने मौसेरे भाई चाङ वेन-चिङ से मिलने आयी थी, जो इस गाँव के स्कूल में अध्यापक हुआ करते थे। लेकिन लगता हे कि वह छोड़कर जा चुके हैं, इसलिए मैं हेडमास्टर से मिलना चाहती हूँ।"

"तो यह बात है।" वह अजनबी मुस्कुराया। "ख़ैर, संयोग से मैं ही हेडमास्टर हूँ। क्या मैं आपका नाम जान सकता हूँ?"

प्रश्नकर्ता लम्बा गाऊन पहने एक दुबला-पतला, ठिगने क़द का अधेड़ आदमी था, जो ठेठ ग्रामीण अध्यापक मालूम पड़ रहा था। ताओ-चिङ को इतनी ख़ुशी हुई कि वह झट पूछ पड़ी : "कृपया मुझे बतायें, मेरा मौसेरा भाई और उसकी पत्नी कहाँ चले गये? मन्दिर के बूढ़े ने तो बताया कि वे यहाँ से छोड़कर जा चुके हैं।"

"श्री चाङ और उनकी पत्नी? अरे, हाँ..." उसने मुस्कुराना बन्द कर दिया, उसकी बदरंग बत्तीसी दिखायी दे रही थी। "बड़े दुर्भाग्य की बात है कि दो दिन पहले उन दोनों ने इस्तीफ़ा दे दिया किसी बेहतर नौकरी के चक्कर में – मेरा ख़याल है, उत्तरपूर्व में किसी जगह... वैसे, आप पहली व्यक्ति नहीं हैं जो रिश्तेदारों के यहाँ जाये और उसे पता चले कि वे तो अन्यत्र जा चुके हैं। मैं समझता हूँ कि इस वक़्त आपके ठहरने का कोई ठौर-ठिकाना नहीं होगा? कोई बात नहीं, आज रात आप हमारे ही गाँव में रह सकती हैं। आप श्री चाङ के बदले मुझे ही अपनी मेज़बानी करने का मौक़ा दें।"

ताओ-चिङ उलझन में थी, क्योंकि उसके पास वापस पेइपिङ जाने का किराया भी नहीं था। घबराहट के मारे वह बोल नहीं पा रही थी। रात की सर्द हवा और बदनसीबी की मार ने उसके चेहरे की सारी रंगत निचोड़ डाली थी, और उसकी टाँगें इतनी काँप रही थीं कि वह खड़ी नहीं रह पा रही थी।

हेडमास्टर ने उसकी व्यथा का अहसास करते हुए, शिष्ट मुस्कान के साथ पूछा :

"आपका नाम क्या है?...कुमारी लिन? हाँ, तो कुमारी लिन, आप किसी तकल्लुफ़ में न पड़ें। आप अपने रिश्तेदारों से मिलने के लिए एक लम्बा रास्ता तय करके आ रही हैं, और यदि आप किसी मुसीबत में हैं, तो कृपया मुझे बतायें। आपके मौसेरे भाई और मैं साथी थे, मैं आपकी मदद करने के लिए कुछ भी उठा नहीं

रखूँगा। मैं यू चिङ-ताङ हूँ, इसी गाँव का निवासी।"

ताओ-चिङ इससे पहले कभी इतनी लाचार नहीं हुई थी, और हेडमास्टर की मेज़बानी ने उसके हृदय को उसके प्रति भावुक बना दिया। कुछ आश्वस्त होकर, वह बोली :

"मैं अपने मौसेरे भाई से मिलने आयी थी क्योंकि...मुझे एक नौकरी की तलाश है। क्या आपके स्कूल में एक अध्यापक की जगह ख़ाली है?"

इस अचानक सवाल से यू चिङ-ताङ चौंक पड़ा और उसे महसूस हुआ कि उसका पाला एक अनुभवहीन लड़की से पड़ गया है।

"जहाँ तक उसकी बात है..." वह हिचकिचाया, फिर मुस्कुराया, अपनी आँखें मिचमिचायीं और बोला, "हाँ, उसका इन्तज़ाम ज़रूर किया जा सकता है। आज रात मेरे ही ग़रीबख़ाने पर ठहरें, कल हम नौकरी के बारे में बातचीत कर लेंगे। कोई न कोई इन्तज़ाम तो किया ही जा सकता है; अरे, हाँ, कोई न कोई इन्तज़ाम तो ज़रूर किया ही जा सकता है।"

ताओ-चिङ को काफ़ी राहत महसूस हुई, हालाँकि श्री यू के बोलने का कुछ भोंड़ा और बनावटी अन्दाज़ उसे यहाँ के स्थानीय जन के तौर तरीक़ों की याद दिला रहा था। लेकिन उससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। यदि उसे एक नौकरी मिल जाती और कहीं रहने की जगह, तो यह उसके लिए सन्तोष से बढ़कर बात होती।

"धन्यवाद श्री यू! मैं आपको तकलीफ़ देना नहीं चाहती। यदि यह सुविधाजनक हो, तो मैं स्कूल में ही ठहर सकती हूँ।"

"हाँ, हाँ, अच्छा रहेगा।" उसने हामी भरी, और उसे वापस मन्दिर ले गया।

बग़ल के एक दरवाज़े से प्रवेश करके, उसने नशे में धुत बूढ़े दरबान को जगाया तथा अध्यापक आवास में ही ताओ-चिङ के लिए एक कमरा दिला दिया। उसके बाद, आँखें मिचमिचाते हुए, उसने पेइपिङ की ताज़ा घटनाओं के बारे में पूछा तथा उसके परिवार के बारे में ढेर सारे सवाल पूछे। अपने घर से भाग निकलने की बात को छिपाते हुए ताओ-चिङ ने बताया कि चूँकि वह पढ़ाई का ख़र्च नहीं उठा सकती, इसलिए वह अपने लिए एक नौकरी की तलाश में अपने मौसेरे भाई से मिलने आयी थी। उसने कहा कि वह प्राइमरी स्कूल में पढ़ाना पसन्द करेगी।

"अहा, तब तो ठीक है, उसका इन्तज़ाम हो सकता है। हाँ, हाँ, बेशक!" उसने फिर मुस्कुराते हुए आश्वस्त किया, "फ़िलहाल तो मेरे स्टाफ़ में कोई जगह ख़ाली नहीं है; लेकिन आप चिन्ता न करें। मैं मजिस्ट्रेट पाओ से मिलने जल्दी ही लिन्यू जाने वाला हूँ, और मुझे विश्वास है कि जब मैं इस मामले को उनके सामने पेश करूँगा तो किसी प्रकार की कोई दिक़्क़त नहीं होगी। मजिस्ट्रेट और मेरे बीच बहुत ही अच्छे सम्बन्ध हैं। वह नौजवानों की मदद करने में दिलचस्पी रखते हैं – अध्यापन के लिए आवेदन तो एक मामूली अनुरोध है, और मुझे पक्का यक़ीन है

कि ज्यों ही मैं इस मामले की चर्चा करूँगा, इसे तुरन्त स्वीकृति मिल जायेगी।"

ताओ-चिङ ने ज़रूरत के वक़्त ऐसे दोस्त को पाकर अपनेआप को ख़ुशनसीब महसूस किया, और नौकरी मिल जाने की उम्मीद से वह मन ही मन खिल उठी।

उस रात उस पुराने, अपरिचित मन्दिर में वह गहरी नींद सोयी। उसके सपनों में लहरों की छप-छप और झींगुरों की चीख़ें मनमोहक संगीत में परिवर्तित हो गयीं।

दूसरे दिन भोर में चट्टानों पर आघात करते समुद्र की आवाज़ से उसकी नींद खुली। इस रूमानी नवयुवती के लिए उत्ताल तरंगों के ओजपूर्ण, लय-तालबद्ध गर्जन के आकर्षण को रोक पाना मुश्किल था। बूढ़े दरबान द्वारा लाये गये नाश्ते को जल्दी-जल्दी खाकर, वह रेतीले समुद्रतट पर जा पहुँची।

समुद्र! रहस्यमय, भव्य समुद्र! भीगी रेत पर खड़े-खड़े, दिल में आह्लादपूर्ण उत्तेजना से भरी ताओ-चिङ ने समुद्र को ग़ौर से देखा। ऊपर आसमान साफ़ था, बस सिर्फ़ क्षितिज पर थोड़े-से सफ़ेद बादल छिटके हुए थे; समुद्र उतना ही नीला और स्वच्छ था जितना कि आकाश, जो रुपहले ज़रीदार कपड़े की शानदार आभा के साथ झिलमिला रहा था। स्थिर, निश्चल जलराशि पर दूर सफ़ेद पाल वाली मछलीमार नावों का बेड़ा था। प्रकृति के इस महाविस्तार और भव्यता ने उसे उस तनाव से मुक्त कर दिया जिससे वह पीड़ित थी। उसने हवा से बिखरे अपने बालों को पीछे की ओर सँवारा तथा जेब से अपना प्रिय ऑरगन निकाल लिया।

> नभ में बादल तैर रहे हैं,
> तारे झिलमिल चमक रहे हैं;
> पवन, ज्वार सागर के ऊपर
> लोरी सुन-सुन झपक रहे हैं...

बचपन में सीखी गयी धुन बजाते हुए, वह रेत-तट पर चहलक़दमी करने लगी।

चलते-चलते वह रुक जाती और कोई ख़ूबसूरत रंगीन सीपी उठा लेती, कभी दायीं तरफ़ से, तो कभी बायीं तरफ़ से। एक बाल-सुलभ चपलता के साथ, वह घुटनों के बल बैठ जाती और फिर उछलकर कोई दूसरी सीपी उठाकर अपनी जेब में डाल लेती, बिना इस बात की परवाह किये कि उसके जूते भीग चुके थे और उसके बालों में रेत भर गयी थी।

याङ-चुआङ समुद्रतट पर बसा हुआ एकाकी गाँव था, जहाँ रेत के टीलों पर छिटपुट उगी घास के अलावा और कोई वनस्पति न थी, लेकिन जब वह रेत-तट पर कुछेक *ली* चल चुकी, तो उसे एक बदलाव नज़र आया। अब वहाँ पर फलों से लदे सेब और आलूबुख़ारा की क़तारों वाले हरे-भरे बाग़ थे, जो पहाड़ी ढलानों और घाटियों को ढँके हुए थे। लाजवन्ती की झाड़ियाँ, नाज़ुक, महकते फूलों से भरी हुई थीं। इन हरे-भरे वृक्षों और तरो-ताज़ा फूलों के बीच, तथा उनसे कुछ-कुछ ढँके

हुए, विदेशी शैली के मकानों और बँगलों के समूह थे। समुद्र के निकट वृक्षों के बीच उनकी नुकीली उठी हुई चमकदार बहुरंगी छतें ताओ-चिङ के लिए एक रोमांचकारी दृश्य प्रस्तुत कर रही थीं, क्योंकि वह या तो पेइपिङ की धूलभरी गलियों को देखने की आदी थी या ऊबड़-खाबड़ पहाड़ों या कुपेईकाऊ के निकट कंगाली की मार से पीड़ित उन गाँवों को देखने की आदी थी जहाँ वह अपनी सौतेली माँ के साथ लगान वसूलने जाया करती थी। इस मुग्धकारी समुद्रतट की चटख धूप में, ये भव्य आवास जो सामने चमचमा रहे थे, उसकी कल्पना से कहीं अधिक मनोहारी थे।

एक छोटी पहाड़ी की चोटी पर खड़े होकर वह एक क्षण तक ख़ामोशी से एकटक निहारती रही। फिर तरुणोचित उत्सुकता में उमगकर वह पानी के किनारे बने छोटे-छोटे लाल स्नानघरों की तरफ़ दौड़ पड़ी।

यहाँ, इस परीकथा जैसी दृश्यावली में, उसकी तन्मयता तब भंग हुई जब उसे उस चिकने, रेत-तट पर आराम कर रहे तैराकों की चिल्लाहटों और ठहाकों का कोलाहल सुनायी दिया। कुछ गला फाड़-फाड़कर चीख़ रहे थे, जबकि कुछ बनावटी अन्दाज़ में ज़ोर-ज़ोर से बतिया रहे थे। अचानक उसने महसूस किया कि वह भटकते-भटकते एक फ़ैशनैबुल समुद्रतटीय सैरगाह में चली आयी है।

एक पुराने चीड़ वृक्ष के नीचे खड़े होकर, उसने उत्सुकतापूर्वक उन लोगों को ग़ौर से देखा जो कुछ ही फासले पर थे। वहाँ विदेशी और अच्छे खाते-पीते चीनी लोगों के झुण्ड थे जो भाँति-भाँति के और तरह-तरह के रंगों वाली तैराकी पोशाकें पहने हुए थे। कुछ रेत पर धूपस्नान कर रहे थे, जबकि कुछ सफ़ेद हंसों की भाँति अपनी बाँहें फैलाये हुए थे और हँसते हुए पानी में गोते लगा रहे थे। रेत पर मौजूद लोगों में अधिकतर वयस्क विदेशी महिलाएँ और शादीशुदा चीनी युवतियाँ थीं, जो बड़ी-बड़ी छतरियाँ तले गोलाई में बैठी हुई थीं। कुछ महिलाएँ अपने साथ छोटे-छोटे कुत्ते लिये हुए थीं। रेत पर बिछी स्वच्छ, सफ़ेद चादरों पर बैठकर वे वहाँ के दृश्य का आनन्द लेती हुई गपशप कर रही थीं। एक महिला ने सफ़ेद तश्तरी में एक कप दूध उड़ेला, और पिल्ले को दे दिया। यह सब देखते हुए, ताओ-चिङ ने एक गुस्से से भरा चीनी स्वर सुना, और आवाज़ की दिशा में मुड़कर उसने देखा कि वह एक युवती थी, जो बेहद सज-धज किये हुए थी, और उसके कानों की मोती की बालियाँ धूप में चमक रही थीं। वह अपने पाँव पटक रही थी और जली कटी सुना रही थी:

"अच्छा ज़रा आ तो जाये वह, मैं उसे पीटे बग़ैर नहीं छोड़ूँगी। वह इधर सारा समय ग़ायब रही है और, मैं अभी तक छतरी का इन्तज़ार कर रही हूँ। सूरज आग बरसा रहा है। कुतिया कहीं की, तुझे इसका मज़ा ज़रूर चखाऊँगी।"

दोपहर हो रही थी, जोकि दिन का सबसे गर्म समय था, और एक लड़की ट्यूनिक पहने उस झुलसती रेत पर तेज़ी से डग भरते इस कर्कशा की तरफ़ चली आ रही थी। वह जितनी ही जल्दी करती उतनी ही अधिक उस तपती रेत में गहरे

धँसती जाती थी, जबकि उसकी मालकिन लगातार गुस्से से पाँव पटकती और चीख़-चीख़कर गालियाँ बकती जा रही थी। आख़िरकार, वह लड़की हाँफती-दौड़ती आ पहुँची और एक गुलाबी रंग की रेशमी छतरी उसे सौंप दी। बदले में उसके दोनों गालों पर ज़ोरदार तमाचे पड़े...

ताओ-चिङ वापस लौट पड़ी। वह आज सारी सुबह बाहर ही रही थी।

अब वह उतनी बाल-सुलभ फुर्ती में न थी, जितनी कि वह यहाँ आने के समय थी। यहाँ टहलना उसका एक नया अनुभव था और उसने सुन्दर दृश्य का आनन्द लिया। गुनगुनाती और जब-तब ठिठककर जंगली फूलों को चुनते हुए वह वापस लौट चली।

"वापस जाओ!" की एक कर्कश ध्वनि से चिहुँककर उसने सिर ऊपर उठाया और देखा कि सामने ऊँची दीवार से घिरी हुई एक भव्य इमारत खड़ी थी। एक सन्तरी उसकी ओर जलती आँखों से घूर रहा था और पास ही के एक विशाल लकड़ी के साइनबोर्ड की ओर संकेत कर रहा था।

ताओ-चिङ बुरी तरह से चिढ़कर रुक गयी, उसने सन्तरी द्वारा इंगित की गयी दिशा की ओर उत्सुकता से देखा, और यह लिखावट पढ़ी :

"चीनियों और कुत्तों के लिए निषिद्ध"

केवल तभी उसने ग़ौर किया कि उस विशाल भवन के सामने ऊँचे ध्वजदण्ड पर सितारों और धारियों वाला झण्डा हवा में लहरा रहा था। उसने एक खीजभरी नज़र उस साइनबोर्ड, ध्वजदण्ड और अमेरिकी झण्डे पर डाली, और उसके बाद बिना कुछ बोले दूर छिटक गयी।

"किस क़िस्म की दुनिया है यह? जिस तरह से विदेशी इसे चीन के ऊपर थोप रहे हैं..." गुस्से के मारे उसकी और कुछ देखने की सारी इच्छा जाती रही और उसने सीधे याङचुआङ गाँव लौट जाने का फ़ैसला कर लिया।

चट्टानों की सतहें और रेत दोपहर की धूप में तपिश उगल रही थीं, और हालाँकि समुद्री बयार से थोड़ी राहत मिल रही थी, फिर भी वह गर्मी से बुरी तरह परेशान थी। लिहाज़ा, जब वह अपनी सीपियों को खोलने और रूमाल से अपना मुँह पोंछने के लिए एक चट्टान पर बैठी, तो उसे अन्यमनस्कता महसूस होने लगी – अपनी नौकरी के सम्बन्ध में श्री यू से मिलने जाने के बजाय उसने एक ग़ैरज़िम्मेदारी बच्ची जैसा व्यवहार किया था और समुद्रतट पर चली गयी थी। हालाँकि उसे इधर-उधर भटकना कभी पसन्द नहीं था, यहाँ तक कि तब भी नहीं जब वह छोटी-सी बच्ची थी, फिर भी ज्यों ही वह पेइताइहो आयी, त्यों ही वह समुद्र के सम्मोहन में फँसकर बाक़ी सबकुछ भूल गयी। अपनेआप को कोसने की मन:स्थिति में उसने चारों तरफ़ नज़र दौड़ायी। वह एक उजाड़, वीरान टीले पर रुकी हुई थी,

और दूर नज़र आ रहा गाँव याङचुआङ नहीं लग रहा था। गाँव से बाहर चले जाना तो आसान था, लेकिन क्या वह वापस लौटने का रास्ता पा सकती थी? अधिकतर शहरी लोगों की तरह, वह भी जब खुले देहात में जाती तो अपना धीरज खो बैठती थी, और अब यहाँ पर उसे कोई रास्ता बताने वाला भी नहीं था।

"कोई बात नहीं। मैं सीधे चलती जाऊँगी।" उसने ऊबड़-खाबड़ टीलों को पार करते हुए अपनेआप को तसल्ली दी। उसे कोई डर नहीं था, क्योंकि वह बचपन से ही अकेलेपन की आदी हो चुकी थी। वह जल्दी-जल्दी चलती जा रही थी कि उसे सामने खाकी रंग के तम्बुओं की भीड़ दिखायी दी। वह उनकी तरफ़ दौड़ पड़ी, लेकिन वहाँ भीतर कोई न था। उनके बाहर कुछ जाल और मछली मारने के साजो-सामान पड़े हुए थे। ढेर सारी टूटी-फूटी नावें सूखने के लिए औंधे पड़ी हुई थीं। ज़ाहिर था कि ये तम्बू किन्हीं मछुआरों के रहे होंगे। निराश होकर, वह इधर-उधर देख ही रही थी कि उसे पास की एक चट्टान के पीछे से एक चीख़ सुनायी पड़ी। उसने ध्यान से सुना, एक क्षण तक अचकचायी, और फिर जल्दी-जन्दी उस आवाज़ की ओर चल पड़ी।

एक दुबली-पतली, पीली-सी महिला, जो अब जवान नहीं रह गयी थी, उस बड़ी चट्टान के किनारे एक बेद वृक्ष के नीचे बैठकर, एक बीमार बच्चे को स्तनपान करा रही थी और जाल की मरम्मत कर रही थी। बच्चा कुछ क्षण दूध पीने के बाद किकियाया, लेकिन माँ ने अपना काम बन्द नहीं किया? न ही उसने इस बात पर ग़ौर किया कि कब ताओ-चिङ उसके सामने आकर खड़ी हो गयी थी।

"कम्बख़्त नन्ही जान, तू मुझे भी मार डालेगा! बन्द करो चीख़ना।" वह बच्चे पर बिगड़ती हुई, कर्कश आवाज़ में बड़बड़ायी। "जब मुझे ही कुछ खाने को नहीं है, तो तुझे भी तो भूखे रहना ही पड़ेगा। अच्छा, अब चुप हो जा..."

बच्चे ने चूसना बन्द कर दिया और पहले से भी अधिक ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा। बच्चे में चमड़ी और हड्डियों के अलावा कुछ नहीं रह गया था क्योंकि इस दुबली-पतली, कमज़ोर माँ के स्तन में दूध कहाँ। महिला ने बच्चे के रोने-चिल्लाने से अपना धैर्य खो दिया, और जिस जाल की मरम्मत कर रही थी उसे एक तरफ़ फेंक दिया।

"कम्बख़्त! क्या तू मुझे मार डालना चाहता है? अच्छा होता कि तू भी अपने ग़रीब अभागे बाप की तरह मर जाता! हे भगवान..." उसने अपना चेहरा बच्चे से कसकर सटा लिया और सिसकियाँ भरने लगी।

ताओ-चिङ, जो रास्ता पूछने आयी थी, ज़मीन में गड़ी हुई-सी खड़ी थी। महिला गन्दे चिथड़ों की एक सँधरी पहने हुए थी जिससे होकर उसके कन्धे और मैले घुटने दिखायी दे रहे थे।

"माफ़ करना। क्या आप मुझे बतायेंगी कि...?" ताओ-चिङ हिचकिचायी

और फिर नरमी से अर्ज़ किया, "रोइये मत! आप तो बच्चे को पीस ही डाल रही है...!" बोलने के लिए शब्द न मिल पाने से परेशान होकर उसने चाहा कि बच्चे की नन्ही छाती पर धँसे उसके उलझे बालों वाले सिर को उठा दे। क्योंकि बच्चा इतना कमज़ोर था कि एक बार रोने के बाद कुछ क्षण तक मुँह बाये रह जाता था, और उसके चौड़े खुले मुँह से कोई आवाज़ नहीं निकल पाती थी।

महिला ने अपना सिर उठाया, ताओ-चिङ की ओर भौचक्का होकर देखा और हकलाते हुए पूछा, "क्या...क्या चाहिए आपको?" उसके उच्चारण में शान्तुङ वाला असर था और वह डरी हुई लग रही थी।

रास्ते पूछना भूल, ताओ-चिङ ने परेशान होकर जानना चाहा, "आप यहाँ की रहने वाली नहीं हैं, है न? क्या बात है?"

महिला ने शून्य नज़रों से उसे घूरकर देखा, मानो कुछ कहने जा रही हो, लेकिन कुछ कहा नहीं और फिर अपने जाल की मरम्मत में जुट गयी। एक लम्बे अन्तराल के बाद उसने सकुचाते हुए अपनी कहानी बयान की।

"हमारा घर शान्तुङ में है। वक्त इतना बुरा था कि मेरे पति और मैं अकाल पीड़ित होकर भाग निकले। हमें बताया गया था कि हम यहाँ पर विदेशियों के लिए काम करके अच्छा पैसा कमा सकते हैं, अतः हम तीनों यहाँ आ गये। तीन महीने से कम समय में ही, जब वह...विदेशियों के लिए एक इमारत के निर्माण में काम कर रहा था, तभी वह...वह ऊँचाई से गिर पड़ा और मर गया।" वह निश्चल बैठी थी, ताओ-चिङ पर टिकी उसकी निस्तेज आँखें, उसकी निश्चलता में जितनी कारुणिक लग रही थी, उतनी यदि वह रोती और विलाप करती तब भी नहीं लगती। "अब मैं घर वापस नहीं जा सकती इसलिए मैं भीख माँगती हूँ और मछुआरों के जालों की मरम्मत करती हूँ..." यह महसूस करके कि उसके सामने खड़ी लड़की ने उसके तार-तार हुए कपड़े-लत्ते पर कोई ध्यान नहीं दिया था और न ही उसकी ग़रीबी को हेय समझा था, उसने एक गहरी साँस ली और अपने बच्चे को झुलाते हुए क्षीण स्वर में कहा, "मैं इस तरह से अधिक दिन नहीं जी सकती, बिटिया। और न ही मेरा बच्चा अधिक दिन तक जी सकेगा। यह बीमार है, बेचारा नन्हा जीव, और मेरी छाती में दूध ही नहीं है। अगर हमें पता होता कि यही होने वाला है, तो हम घर पर ही मर जाना पसन्द करते।"

"सब ठीक हो जायेगा, आपको कोई न कोई रास्ता मिल जायेगा," ताओ-चिङ बुदबुदायी, और उसी क्षण तश्तरी से दूध पीते पिल्ले की तस्वीर उसके दिमाग़ में कौंध गयी। इस मरियल माँ और उसके बच्चे को देखकर उसका दिल बैठ गया कि किसी भी क्षण उनकी जीवनज्योति बुझ सकती है।

"अच्छा होता कि हम मर जाते और सबकुछ ख़त्म हो जाता। विदेशी और धनी लोग मस्ती छानते रहें। क्या आप यहाँ छुट्टी पर हैं, बिटिया? देखिये, वे समुद्रतट

पर कितना अच्छा समय गुज़ार रहे हैं।"

"नहीं मैं उनमें से नहीं हूँ।" महिला के शब्दों से मर्माहत होकर, ताओ-चिङ तेज़ी से दूर चली गयी, उसके दिमाग़ में द्वन्द्वरत संवेदनाओं का तूफ़ान मचा हुआ था। उसके दिमाग़ में उमड़-घुमड़ रहे थे वे जीर्ण-शीर्ण तम्बू, ऊबड़-खाबड़ रेत-टीले, समुद्र का गर्जन-तर्जन और पोपलर वृक्षों की सरसराहट, समुद्रतट पर वह पिल्ला और वे छतरियाँ, परीलोक की हवेलियों जैसे वे मुग्धकारी ग्रीष्मकालीन बँगले, और वह सूचना पट्ट – "चीनियों और कुत्तों के लिए निषिद्ध"।

——:o:——

अध्याय 4

"तो आप वापस आ गयीं, कुमारी लिन। समुद्रतट पर स्थित हमारा यह साधारण-सा गाँव अद्‌भुत दृश्यों वाला है। है कि नहीं? आप यहाँ पर सभी दृश्यों का आनन्द अवश्य उठायें।"

मन्दिर पर ताओ-चिङ की मुलाक़ात यू चिङ-ताङ से हो गयी थी, जो उसके स्वागत में अपने कमरे से बाहर निकल आया था। उसका चेहरा खिला हुआ था, और यहाँ तक कि उसकी पलकें भी, जो कभी बिना मिचमिचाये नहीं रहती थीं, हँसती प्रतीत हो रही थीं।

वह अभी जवाब देती, इसके पहले ही वह बोल पड़ा। "मैं आज ही सुबह मजिस्ट्रेट पाओ से मिलने गया था। वह मेरे पुराने स्कूली दोस्त हैं, उत्तम चरित्र वाले हैं और सभी उनका आदर करते हैं। दुर्भाग्य से वह एक कान्फ्रेंस में भाग लेने प्रान्तीय राजधानी चले गये थे, इसलिए मैं उनसे मुलाक़ात न कर सका। ख़ैर कोई बात नहीं, अगर आप बुरा न मानें तो यहाँ कुछ दिन ठहरकर इन्तज़ार कर लें। उनके आने पर सबकुछ आसानी से तय हो जायेगा।"

ताओ-चिङ ने ख़ामोशी से उसके लम्बोतरे चेहरे की ओर देखा।

वह जल्दी-जल्दी स्पष्टीकरण देने लगा, "कृपया चिन्ता न करें, न ही मुझे कोई अजनबी समझें। बस यहाँ कुछ दिन इन्तज़ार करें। आप इसे भले ही न मानें, लेकिन मैं बहुत सामाजिक आदमी हूँ।"

"मैं आप पर बोझ बनना नहीं चाहती, श्रीमान यू," ताओ-चिङ ने कहा। "यदि यहाँ कोई उम्मीद न हो, तो मैं वापस पेइपिङ चली जाऊँगी।" वह बुरी तरह परेशान थी – उसका मौसेरा भाई दूसरी जगह चला गया था, नौकरी पाना आसान नहीं था और उसके पास पेइपिङ वापस जाने के लिए किराये के पैसे भी नहीं थे। वैसे यदि किसी सूरत से वह लौट भी गयी तो वहाँ पर करेगी भी क्या?..." उसने ख़यालों में खोये-खोये, मेज़ पर पड़ी सीपियों को घूरकर देखा।

"आप किसी भी तरह से मुझे अजनबी न समझें, कुमारी लिन। अगर मैं पेइपिङ जाऊँ, तो आपको भी ऐसी ही तकलीफ़ दूँगा।" यू चिङ-ताङ इतनी शालीनता और सहृदयता से बोल रहा था कि ताओ-चिङ को विश्वास हो गया और उसने अपनी स्वीकृति दे दी।

"धन्यवाद! मुझे उम्मीद है कि मजिस्ट्रेट पाओ जल्दी वापस लौट आयेंगे।"

"बिल्कुल, बिल्कुल! वह जल्दी ही आ जायेंगे! वह अधिक दिन तक बाहर नहीं रहते। हाँ, तो अब। आप काफ़ी समय से बाहर रही हैं और अभी तक आपने खाना भी नहीं खाया है, है न? आपके खाने का ही इन्तज़ार हो रहा है।" उसने चौकीदार को आवाज़ दी, "बूढ़े काओ! यहाँ आओ। कुमारी लिन के लिए खाना लाओ।"

जब वह बूढ़ा खाना लेकर आया, तो यू वहाँ से जाने लगा, उसकी पीठ धनुष की भाँति झुकी हुई थी। चौकोर मेज़ पर बारीक़ सफ़ेद मैदे की रोटियाँ और अण्डों की भुजिया की एक तश्तरी रख दी गयी थी, लेकिन लड़की इतनी परेशान थी कि उसे भूख ही नहीं थी।

पेइपिङ छोड़ने से पहले, जबकि वह वाङ सियाओ-येन के यहाँ ठहरी हुई थी उसने नौकरी पाने में मदद के लिए अपने कुछ अध्यापकों और नज़दीकी दोस्तों से कह रखा था, लेकिन तब से एक हफ़्ता गुज़र चुका था और अब तक उनका कोई जवाब नहीं मिला था, और न ही मजिस्ट्रेट पाओ की ही कोई निश्चित ख़बर थी। अब उसे यू चिङ-ताङ के इस आश्वासन पर शक होने लगा था कि सबकुछ ठीक हो जायेगा।

"कृपया चिन्ता न करें, कुमारी लिन कहीं कोई दिक़्क़त नहीं होगी। मजिस्ट्रेट बहुत जल्दी वापस आ जायेंगे। एक बात पूछने की माफ़ी चाहूँगा – मुझे उम्मीद है कि आप मुझे अशिष्ट नहीं समझेंगी – क्या आप शादीशुदा हैं कुमारी लिन? क्या आप की सगाई हो चुकी है? माफ़ कीजियेगा – बस प्रसंगवश ही पूछ रहा हूँ।"

हर रोज़ हेडमास्टर एक या दो बार उससे मिलने आता था, और हर बार इन्हीं बातों का मनहूस राग अलापता रहता था।

ताओ-चिङ को मन में सन्देह होने लगा और इच्छा होने लगी कि स्कूल छोड़ दे।

वह मुझे यहाँ पर क्यों रोके हुए है? कहता तो यह है कि वह मेरे लिए नौकरी खोजने जा रहा है, लेकिन क्यों वह मजिस्ट्रेट पाओ का इन्तज़ार कर रहा है और क्यों वह यह जानना चाह रहा है कि मैं शादीशुदा हूँ या नहीं?" ऐसा लगता था जैसे इस लम्बी चौड़ी दुनिया में उसके लिए कोई ठौर नहीं है। वह इसके सिवाय और कुछ न कर सकती थी कि अपनेआप को हालात पर छोड़ दे और याङचुआङ गाँव में बनी रहे, चाहे ऐसा करना कितना भी बेकार और ऊबाऊ क्यों न लगे।

दस दिन गुज़र गये और अभी तक उसे अपने उन पत्रों का कोई जवाब नहीं मिला जिन्हें उसने नौकरी के लिए पेइपिङ भेजा था, और मजिस्ट्रेट पाओ के भी जल्दी लौटने की कोई उम्मीद नहीं लग रही थी। जैसे-जैसे दिन गुज़रते जा रहे थे, ताओ-चिङ पीली और चिन्तित होती जा रही थी। वह यु चिङ-ताङ की लगातार बकबक से बचने के लिए अपना सारा समय समुद्रतट पर गुज़ारने लगी और समुद्र के प्रति अधिकाधिक आसक्त होती गयी।

वह हर रोज़ नाश्ता करने के फ़ौरन बाद समुद्रतट पर चली जाती, और समुद्र के गहरे नीले महाविस्तार या किसी सुदूर एकाकी सफ़ेद झिलमिलाते पाल को देखकर राहत महसूस करती। यद्यपि उसे फिर वैसा रोमांच नहीं होता था जैसाकि पहली बार आने पर हुआ था, फिर भी उसके मन में समुद्र के प्रति एक गहरा अनुराग बना हुआ था। वह दिनभर वहाँ बैठी निहारा करती, चाहे वह साटन के कपड़े की भाँति चिकना और रमणीक झलकता या किसी उद्धत जंगली जानवर की भाँति कुछ गर्जना करता और आघात-प्रत्याघात करता। वह समुद्र की ओर वैसे ही खिंच गयी थी जैसे कोई बच्चा अपनी माँ की ओर खिंच जाता है। बेशक, जब वह टकटकी बाँधकर समुद्र की ओर अपनी उदास नज़रों से देख रही होती, तो कभी-कभार वह अपना सिर झुका लेती और बुदबुदा पड़ती, "माँ!" जब से चाची वाङ ने उसकी माँ की दुखभरी कहानी सुनायी थी, तभी से हमेशा उसकी आँखों के सामने सिऊ-नी की तस्वीर तैरती रहती थी।

सफ़ेद लिबास पहने यह लड़की जो सारा दिन चट्टानों पर बैठी रहती थी, वहाँ आसपास के किसानों और बच्चों की जिज्ञासा का केन्द्र बन गयी थी।

एक दिन किसी ने उसका एकाकीपन तोड़ दिया। शाम का धुँधलका हो चला था। और वह चक्कर काटती लहरियों पर नज़र गड़ाये अपने ख़यालों में डूबी हुई थी, तभी निकट से आने वाली एक आवाज़ ने उसकी स्वप्निल तन्द्रा भंग कर दी।

"आपको खाना खाने वापस चले जाना चाहिए। बूढ़ा काओ आपका इन्तज़ार कर रहा है।"

ताओ-चिङ ने मुड़कर देखा कि एक साँवला, दुबला-पतला मुस्कुराता नौजवान उसकी बग़ल में खड़ा था। वह इससे पहले भी उसे समुद्रतट पर देख चुकी थी, लेकिन यह पहला अवसर था जब वह उससे बोला था।

उसने उसकी ओर घूरकर देखा। "जाइये न खाना खाने। आप खाना छोड़कर अपनी सेहत मत ख़राब करें," उसने ख़ुशनुमा लहजे में दोबारा कहा। उसके छोटे-छोटे बाल एक तरफ़ कढ़े हुए थे और वह छात्रों वाली खाकी वर्दी पहने हुए था। उसकी आँखें बड़ी तो नहीं थीं, लेकिन चमकदार और प्रतिभापूर्ण थीं। ताओ-चिङ ने ताड़ लिया कि वह गाँव का रहने वाला नहीं था। बहरहाल, एक नज़र डालकर और धन्यवाद के शब्द बुदबुदाकर, वह मुड़ी और झटपट चल दी।

उसके बाद, उसे हमेशा ही समुद्रतट पर उसकी उपस्थिति का भान होता था। कभी-कभी वह उसके निकट आ जाता था, मानो उससे कुछ कहने को उत्सुक हो। शायद उसका कटा-कटा रहना ही उसे ख़ामोश कर देता था, क्योंकि वह हमेशा ही चुपचाप उसकी बग़ल से गुज़रता था।

जब ताओ-चिङ चट्टानों पर बैठे-बैठे थक जाती थी, तो कभी-कभी रेत पर चहलक़दमी करने लगती थी। वह कई बार छुट्टियाँ मनाते अड्डा जमाये हुए लोगों के पास से गुज़र चुकी थी, और उन मुग्धकारी बँगलों की बग़ल से होकर जा चुकी थी। एक दिन जब वह खाकी तम्बुओं और बड़े बेद वृक्ष के क़रीब पहुँची, तो उसे वह महिला याद हो आयी जो वहाँ जाल मरम्मत किया करती और उसे इस बात की चिन्ता हुई कि उसका और उसके बच्चे का क्या हुआ होगा।

वह महिला अब वहाँ नहीं थी, बल्कि वहाँ तम्बुओं के बाहर दो मछुआरे खाना पका रहे थे। उनके पास जाकर, उनमें से बड़े वाले से उस माँ और उसके बच्चे के बारे में पूछा।

"कौन?" वह आश्चर्य से उसकी तरफ़ देखने लगा। "यहाँ कोई औरत नहीं है। मैं नहीं जानता कि आप क्या पूछ रही हैं।"

ताओ-चिङ ने उस महिला और उसके बीमार बच्चे के बारे में बताया।

"ओह, वह औरत!" उस बूढ़े आदमी ने चूल्हे की तरफ़ रुख करते हुए जवाब दिया। "वह मर चुकी है। समुद्र में कूद गयी... अधिक से अधिक वह यही तो कर सकती थी, आख़िरकार यही किया भी, ग़रीब बेचारी ने। उसके नन्हे बच्चे की तो और भी बुरी हालत थी। बस कुछ ही दिन तो हुए, जब वह अपने बच्चे को गोदी में लिये, समुद्र में कूद गयी। अब तो उसका पूरा परिवार ही ख़त्म हो गया।"

दूसरा मछुआरा, यह जानने की उत्सुकता में कि क्या बातचीत चल रही है, ताओ-चिङ के पास आ गया था। उन्हें यह अजीब लग रहा था कि क्यों एक स्कूली लड़की एक ग़रीब, दुर्भाग्य की मारी महिला में इतनी दिलचस्पी ले रही थी। व्यथा और उलझन में वह वहाँ से चल दी।

जब वह जल्दी-जल्दी नर्म-नर्म समुद्री रेत पर चल रही थी, तो उसके दिमाग़ में उस दुबली-पतली, पीले चेहरे और भावशून्य आँखों वाली उस महिला, और उसकी बाँहों में उसके हुँआते बच्चे, तथा स्वयं उसकी अपनी माँ की तस्वीर थी जो वेदना से पागल बनी चीख़ रही थी, "मेरी बच्ची वापस कर दो।" उसके पाँव घिसट-घिसटकर आगे बढ़ रहे थे और उसके हृदय में शूल उठ रहा था, फिर भी वह थकान से चूर, घिसट-घिसटकर चलती रही, इस प्रबल इच्छा के तहत कि वह घर पहुँचकर लेट और आराम कर सकेगी।

"ऐ, सफ़ेद कबूतरी, रुक जाओ।" क़रीब में ही एक अपमानजनक अट्टाहस फूट पड़ा और जब ताओ-चिङ ने अपना सिर उठाया तो वह यह देखकर भौचक्का

रह गयी कि वहाँ नौजवानों का एक समूह धूप में नंग-धड़ंग लेटा हुआ था। उनके पास में ही खूबसूरत रक्षापेटियों, फ़ैशनेबुल तैराकी के जाँघियों, बड़ी-बड़ी आकर्षक छतरियाँ और शराब की बोतलों का ढेर पड़ा हुआ था।

जब ताओ-चिङ अचकचाकर मुड़ी और उनसे बचकर जाने को हुई, तभी एक दूसरा स्वर सुनायी दिया :

"नर्स! ओ सफ़ेद कपड़ों वाली खूबसूरत नर्स, इधर तो आओ! हम थके हुए हैं और मालिश करवाना चाहते हैं।"

इन शब्दों, और उनके बाद ठहाकों की आवाज़ से ताओ-चिङ ने समझ लिया कि वही उनका निशाना बनी हुई है – वहाँ और कोई दूसरी महिला सफ़ेद कपड़ों में नहीं दिखायी दे रही थी। उसने अपने कन्धे उचकाये और गुस्से में भरकर उनकी तरफ़ चल पड़ी, तथा उनसे दस क़दम की दूरी पर ही ठिठककर अपने होंठ काटने और तमतमाने लगी। उसकी यह चुनौती ऐसी थी मानो झींगुरों पर बारिश की बौछार टूट पड़ी हो – वे नौजवान अवाक हो गये। एक मिनट तक उन पर जलती आँखों से घूरने के बाद, वह बिना किसी हड़बड़ाहट या दुविधा के मुड़ी और वापस चल दी।

वह अभी कुछ ही क़दम गयी होगी कि पीछे से फिर कर्णकटु अट्टहास गूँज उठा।

"झेंपू नहीं है, है न?"

"कटार जैसी आँखों से देख रही थी।"

"हमारी नन्ही सफ़ेद कबूतरी एक पाजी उल्लू में तब्दील हो चुकी है।"

इस बार ताओ-चिङ ने उन पर ध्यान नहीं दिया। अपना रूमाल निकालकर उसने अपनी आँखों में उमड़ आये आँसुओं को पोंछ दिया।

जब वह गाँव के निकट पहुँची, तो अँधेरा हो रहा था, और आकाश में बादल घिर आये थे। वह थर्राकर रेत पर बैठ गयी और एक बार फिर समुद्र को निहारने लगी। तूफ़ान उठ रहा था और दसियों हज़ार सरपट दौड़ते घोड़ों की भाँति गर्जना करती हुई समुद्रतट पर आघात-प्रत्याघात कर रही क्रुद्ध लहरें स्याह काली प्रतीत हो रही थीं। उसके हृदय में तूफ़ानी समुद्र की मनहूसियत प्रतिबिम्बित होने लगी। गीली रेत पर झुककर और अपने ताज़ा अपमान पर सोचते हुए, उसने धीरे-धीरे रेत पर ये शब्द लिखे :

> आँखों में सौन्दर्य भर रहा नदियों और पहाड़ों का,
> फिर भी कपड़े तर हैं मेरे आँसू की बूँदों से;
> चले गये कितनी जल्दी वे धन, यश, और गौरव!
> देखो कैसे। साल दर साल। फेनहो नदी किनारे,
> पतझड़ में कलहंस जंगली उड़ते/और नहीं कुछ बाक़ी।

"यह एक ताङ कविता है, है न?" कोई चुपके से उसके पीछे आ खड़ा हो गया था। उसने मुड़कर देखा कि वही साँवला नौजवान प्रशंसाभरी मुस्कान के साथ उसकी ओर देख रहा था। "क्या आप कविता पसन्द करती हैं? क्या आप स्वयं लिखती हैं? यहाँ तो पूरा समुद्रतट ही कविता की तरह है।"

ताओ-चिङ भीतर ही भीतर लजा गयी। वह झट से उठी, अपने बालों को झटककर रेत झाड़ी और मन्द स्वर में बोली, "नहीं, मैं कविता नहीं लिख सकती।" वह वहाँ से जाने लगी, तभी उस नौजवान ने उसे रोका और सचेत किया, "बारिश होने जा रही है। अच्छा होता कि आप वापस चली जातीं। आख़िर आप क्यों अपना सारा समय समुद्रतट पर बिता देती हैं?"

"आप चिन्ता न करें, धन्यवाद।" बिना यह जाने कि उसने क्या कह दिया था, वह अनमनेपन से दूसरी ओर मुड़ी और झटपट चल दी।

विशालकाय काले-काले बादल सिर के ऊपर उमड़-घुमड़ रहे थे, जो पुरवा हवा के साथ तेज़ी से घिरते चले आ रहे थे। फनफनाती लहरें अलकतरा जैसी काली लग रही थीं और धूलभरा अन्धड़ भीषण बारिश की चेतावनी दे रहा था। लेकिन पता नहीं क्यों उस नौजवान से कतराकर निकल जाने के बाद, ताओ-चिङ फिर धीरे-धीरे चलने लगी थी। समुद्रतट स्कूल से क़रीब एक ली दूर था, और वह झाड़ियों के दूसरे छोर पर पहुँच चुकी थी जबकि आकाश एकदम काला हो गया और बारिश होने लगी। वह दौड़ पड़ी और जल्दी ही मन्दिर में पहुँच गयी। हड़बड़ी में उसने ग़लत रास्ता पकड़ लिया और बग़ल वाले प्रवेश द्वार में घुस पड़ी जो ग्राम्य प्रशासन के लिए सुरक्षित था। अब जबकि वह अन्दर आ ही चुकी थी, उसने तब तक वहीं रुककर इन्तज़ार करने का फ़ैसला कर लिया जबतक कि बारिश धीमी न हो जाये। पूरब वाला कमरा तेज़ रोशनी से जगमगा रहा था, और वह बाहर ड्योढ़ी में खड़े होकर दम लेते और अपने रिसते बालों को पीछे की ओर फिराते हुए वहाँ से माहजोङ के मोहरों की खड़खड़ाहट को सुन सकती थी। अचानक उसे भीतरी कमरे से एक भद्दी हँसी, और एक कर्कश स्वर सुनायी दिया :

"हाँ, तो बूढ़े यू, तुम क्यों इस लड़की को यहाँ रखे हुए हो? क्या तुमको श्रीमती यू का डर नहीं है। यदि ऐसे ही चलता रहा तो वह डाह करने लगेगी?"

"ख़ूबसूरत लड़की और वह भी हाईस्कूल पास। बूढ़ा यू सचमुच बढ़िया चीज़ पर ही नज़र रखता है।"

आदमियों के ज़ोरदार ठहाके और माहजोङ के मोहरों की खड़खड़ाहट कमरे के शोरगुल के साथ घुल-मिल गये, जिससे ताओ-चिङ डरकर काँपने लगी। दीवार से सटकर, उसने कमरे के भीतर झाँककर देखा। वहाँ पर यू चिङ-ताङ था, जो हमेशा की तरह अपनी आँखें मिचमिचाते हुए, तीन गाँववालों के साथ माहजोङ खेल रहा था। थुलथुल चेहरे और बड़े-बड़े कानों वाले, सींग की किनारी का चश्मा लगाये

हुए एक मोटे आदमी ने यू की ओर अपनी उँगली से संकेत किया और अपने होंठों से चटखारा भरा।

"बूढ़े यू, क्या तुम इस लड़की को मुझे रखने दोगे? अगर ऐसा कर दो, तो मैं अपनी क़स्बे वाली दूकान तुम्हें दे दूँगा। यह मत सोचो कि मेरी दो रखैलें हैं, इसलिए मैं एक आधुनिक शिक्षा प्राप्त लड़की नहीं चाहूँगा।"

ताओ-चिङ दीवार से और सट गयी, वह अपने दाँत भींचे और साँस रोके सुनने लगी।

"अरे, तुम तो मज़ाक़ पर उतर आये, दोस्तो। मैं तुमको विश्वास दिलाता हूँ कि इस लड़की को लेकर मेरे मन में कोई छल-कपट नहीं है।"

यू चिङ-ताङ आधा मज़ाक़ और आधी शालीनता के लहज़े में बोल रहा था। "हम सभी भाई-भाई की तरह हैं, इसलिए तुमको यह गुप्त बात बता दूँ कि मजिस्ट्रेट पाओ ने कुछ समय पहले मुझसे अपने लिए एक अच्छी-भली लड़की तलाशने के लिए कहा था। स्वाभाविक है कि वह अपनी पीलियाग्रस्त, गँवारू पत्नी से कुछ बेहतर चीज़ ही चाहेगा! जब यह लड़की लिन, जो ज़ाहिरा तौर पर मुसीबत में है, अपने मौसेरे भाई को खोजती हुई आयी, तो मैंने उस पर दया की और उसे कुछ समय तक रुक जाने को कह दिया..."

बाक़ी तीनों ने माहजोङ के मोहरों को घुमाना-फिराना बन्द कर दिया था, ताकि वे यू चिङ-ताङ के इस चटपटे मसालेदार विवरण को बेहतर ढंग से सुन सकें। "दुर्भाग्य से मजिस्ट्रेट पाओ एक कॉन्फ्रेंस में भाग लेने प्रान्तीय राजधानी चला गया और अब तक नहीं लौटा है। यह लड़की मुझ पर नौकरी पाने के लिए ज़ोर डाल रही है। वैसे, एक लड़की के लिए नौकरी पाना तो आसान ही है -- अगर सिर्फ़ इतना हो कि उसका चेहरा ख़ूबसूरत हो।" वह ठी-ठी करके हँसा। "हाँ, हाँ, नौकरी पाना तो आसान ही है।"

मोटे आदमी ने यू की पीठ पर एक धौल जमायी और आँखें मिचमिचाते हुए उसने मुस्कुराकर याचना की :

"अगर मजिस्ट्रेट उसे न चाहे, तो तुम उसे निश्चय ही मुझे रख लेने देना, बूढ़े यू! आख़िरकार, ज़िन्दगी तो छोटी ही है न। मैं ऐसे मौक़े के लिए अपनी सारी जायदाद दे दूँगा।"

... ...

उस मूसलाधार बारिश और काली रात में किसी तरह गिरते-पड़ते ताओ-चिङ अपने कमरे में वापस आयी। उस घुप्प अँधेरे में, उसके मामूली कपड़े-लत्ते भी भीग चुके थे, वह औंधे मुँह बिस्तर पर गिर पड़ी, वह इतनी निढाल हो गयी थी कि हिल-डुल भी नहीं सकती थी। लम्बे समय तक वह ऐसे ही निःशब्द पड़ी रही, उसका दिमाग़ सुन्न हो गया था।

बाहर मूसलाधार बारिश हो रही थी, क्रुद्ध समुद्र गरज रहा था और ऐसा लगता था कि पूरा ब्रह्माण्ड एक उद्धत उन्माद में फट पड़ा हो। फिर भी ताओ-चिङ को यह सबकुछ बिल्कुल नहीं सुनायी दे रहा था।

धीरे-धीरे उसने अपनेआप को काफ़ी संयत किया और पिछले पखवारे की घटनाओं को फिर से याद करने लगी। जीवन ने क्यों उसके साथ इतना क्रूर व्यवहार किया था? उसने तो अपना सारा साहस एक ऐसे घर से भाग निकालने के लिए बटोरा था जो इतना बुरा और भ्रष्ट था कि वह बरबाद ही हो जाती। लेकिन यह क्या इसीलिए था कि उसे एक ऐसा समाज मिले जो उससे भी अधिक बुरा भ्रष्ट हो – जिसके ख़ूनी जबड़े उसे लील जाने के लिए मुँह बाये हुए थे। ऐसा लगता था जैसे उन आदर्शोवाले युवा लोगों के लिए कोई रास्ता ही नहीं था जो समझौता करने से इन्कार करते थे। क्या इस पूरे फैले हुए संसार में उस जैसी अठारह वर्षीय लड़की के लिए कोई जगह न थी?

उस दिन काफ़ी रात गये वह किसी तरह घिसटकर लैम्प जलाने गयी, और देखा कि मेज़ पर तीन पत्र पड़े हुए थे। काँपते हाथों से उसने उन्हें खोला। पहला पत्र वाङ सियाओ-येन का भेजा हुआ था, और उसमें लिखा था :

> ...तुम्हारे लिए एक शुभ सूचना : तुम नॉर्मल विश्वविद्यालय की प्रवेश परीक्षा में पास हो गयी हो, सूची में ऊँचे स्थान के साथ। लेकिन कुछ बुरी ख़बरें भी हैं : तुम्हारी सौतेली माँ ने किसी जनाब हू से काफ़ी पैसा ले रखा था और जब तुम ग़ायब हो गयी, तो वह बौखला गया; लिहाज़ा वह कहीं छिप गयी है। इन सबकी वजह से, मैं समझती हूँ कि तुम्हारा अभी हाल में वापस लौटना ठीक नहीं रहेगा...

"वापस लौटना ठीक नहीं रहेगा," ताओ-चिङ बुदबुदा पड़ी।

दूसरा पत्र चेन वेई-जू का था, उसने भी अपनी दोस्त के लिए नौकरी तलाशने की कोशिश की थी, लेकिन कामयाबी नहीं मिली थी। उसने लिखा था :

> प्यारी ताओ-चिङ,
>
> निश्चय ही नौकरी ढूँढ़ना आसान नहीं है। मैं कुछेक जगहों पर पता लगाने गयी थी, तुम्हारी कठिनाइयों और तुम्हारे मनपसन्द काम के बारे में बताया लेकिन ढेर सारे लोग मुझ पर हँसकर रह गये, यहाँ तक कि मेरे पिता भी मुझ पर गुस्सा हैं... क्या किया जाये, मेरी प्यारी? तुम वापस क्यों नहीं आ जाती? जब तुम रहोगी तो हम लोग फिर कोशिश कर सकेंगे...

"जब तुम यहाँ रहोगी तो हम लोग फिर कोशिश कर सकेंगे।" लैम्प के मद्धिम प्रकाश में ताओ-चिङ का चेहरा पहले से भी अधिक पीला पड़ गया, और वह

अपनी कँपकँपी न रोक सकी। भूख, ठण्ड और आघात पर आघात का सिलसिला उसे दबाये जा रहा था। वह किंकर्त्तव्यविमूढ़ बनी वहीं बैठी रही। वह अपने हाथ में थामे दोनों पत्रों को हिला-डुला सकने में भी असमर्थ थी और तीसरे पत्र को खोलने का साहस ही न कर सकी। जीवन ने उस पर भयानक वज्रपात करने के सिवा और कुछ भी तो उसे नहीं दिया था; यह आशा करना बेमानी था कि यह उसे खुशी या उत्साह प्रदान कर सकेगा। तीसरे पत्र में शायद और भी भयानक ख़बरें हो सकती थीं।

मूसलाधार बारिश जारी थी, रह-रहकर बिजली की चमक अन्धकार को चीर देती और उसके बाद कान बहरा देने वाली गड़गड़ाहट गूँज उठती थी। ताओ-चिङ इमारत के एक भीतरी कमरे में डेरा डाले हुए थी, और बाहरी कमरे में एक ताबूत पड़ा था जो उस गाँव के किसी धनी परिवार के व्यक्ति का था। आधी रात होते-होते उसका लैम्प बुझ गया, लौ भभकी और कमरा अन्धकार में डूब गया। ताओ-चिङ का सिर भारी था और इतना चकरा रहा था कि वह कुछ भी सिलसिलेवार सोच नहीं पा रही थी। बिजली की एक चमक में वह काला, पॉलिशदार ताबूत दिखायी दिया, उसका दिल धक्-से किया, और फिर ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा।

"माँ! अपनी बच्ची को बचा लो!..."

रोते-रोते, वह ताबूत के पास ढेर हो गयी और एक लम्बे समय तक वहीं निःशब्द पड़ी रही।

· जब उसे होश आया, तो एक ख़ौफ़नाक ख़याल से उसका हृदय टीस उठा और फिर ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा... वह उछलकर खड़ी हो गयी और कमरे से बाहर भाग निकली। तूफ़ान और अन्धकार में वह मन्दिर से दौड़ती हुई सीधे समुद्रतट पर जा पहुँची।

स्याह, फनफनाती लहरें भयानक दृश्य उपस्थित कर रही थीं, लेकिन मनुष्यों की इस बदसूरत दुनिया से तो कम ही डरावनी थीं। वह दौड़कर पानी के छोर तक गयी, ताकि अपनेआप को उन गरजती, लपकती लहरों के हवाले कर दे।

——:o:——

अध्याय 5

रात अँधेरी थी। समुद्र भयानक और मनहूस गर्जना के साथ क्रोधोन्मत्त हो चट्टानों पर चोट कर रहा था। ताओ-चिङ समुद्र में छलाँग लगाने ही जा रही थी, कि एक जोड़ी बाँहों ने उसे कसकर पकड़ लिया और एक मन्द स्वर उसके कानों में सुनायी पड़ा :

"नहीं-नहीं!...ऐसा मत करो। कोई और रास्ता ढूँढ़ने की कोशिश करो।" उसको

बचाने वाला एक नौजवान था जो ठण्ड से ठिठुर रहा था। बारिश इतनी तेज़ थी मानो यह उन्हें समुद्र में बहा ले जायेगी और वह उसे बड़ी कठिनाई से सँभाल पा रहा था।

यह सबकुछ ताओ-चिङ के लिए एक दुःस्वप्न था – उसने मरना क्यों चाहा था? किसने उसे बचाया था? वह इतनी निढाल और घबरायी हुई थी कि इन सवालों के उत्तर नहीं ढूँढ़ पा रही थी, लिहाज़ा वह उस अजनबी से दूर छिटक गयी और फिर थर्राकर रेत पर गिर पड़ी।

"अच्छा हो कि तुम वापस चली जाओ। बारिश हो रही है, और ठण्ड...आओ चलें।" उसका तरुण, व्यग्र स्वर उसे ऐसे लगा मानो वह स्वप्न में सुन रही हो।

कुछ सेकेण्ड के बाद उसने थोड़ा बेहतर महसूस किया और वह अजनबी की तरफ़ देखने के लिए मुड़ी, और तभी बिजली की एक चमक में उसने देखा कि यह साँवला दुबले चेहरे और चमकदार चिन्तित आँखों वाला नौजवान अक्सर समुद्रतट पर दिखायी दे जाता था। इसके पहले उसी शाम तो वह उससे कविता के बारे में कुछ बोला था।

"तो यह वही है..." उसके गर्मजोशीभरे प्रोत्साहन से उसके मरने का पूरा खयाल बसन्त की बर्फ़ की भाँति पिघलकर दूर हो गया। वह धीरे-धीरे उठ बैठी, उसके बालों से वर्षा की बूँदें चू रही थीं और ठिठुरन उसकी हड्डियों में समा गयी थी। बेपनाह काँपती और दाँत किटकिटाती हुई, वह बड़ी कठिनाई से अपने पैरों पर खड़ी हो पायी।

"यहाँ तुम्हारे बरदाश्त के बाहर ठण्ड है," नौजवान ने कहा। "आओ मैं तुम्हें वापस छोड़ दूँ।"

वह जवाब में एक शब्द भी न बोल सकी। चुपचाप, धीमी पड़ रही हवा और बारिश में उसकी बग़ल में चलती हुई वापस स्कूल पहुँची।

उन्होंने इमारत के उस हिस्से में प्रवेश किया जहाँ ताओ-चिङ ठहरी हुई थी। वह जिस तरह से एक दूसरे कमरे से लैम्प लाने गया उसे देखकर उसे मालूम हो गया कि वह उस पुराने मन्दिर से परिचित था। उसने सावधानी से लैम्प को खड़ा कर दिया, क्षणभर के लिए हिचकिचाहट में ठिठका, उसकी ओर देखा और बुदबुदाकर कहा :

"तब तक तुम अपने कपड़े बदल लो, मैं अभी आया।"

ताओ-चिङ बच्चों की तरह आज्ञाकारी बन चुकी थी। उसने झटपट सूखे कपड़े पहन लिये। जब तक वह वापस आये तब तक वह थोड़ा पानी भी पी चुकी थी। हालाँकि वह अभी भी अपनी गीली छात्र-वर्दी ही पहने हुआ था लेकिन उसका चेहरा खिला हुआ था। वह आकर दरवाज़े पर रुका, औपचारिक अभिवादन किया और अपना परिचय दिया :

"तुम मुझे नहीं जानती, लेकिन मैं तो, तुम जबसे यहाँ आयी, तभी से जानता

हूँ कि तुम कौन हो। तुम लिन ताओ-चिङ हो, है न? मेरा नाम यू युङ-त्से है। मैं इसी गाँव में पैदा हुआ। यू चिङ-ताङ, जो इस प्राइमरी स्कूल के हेडमास्टर हैं, मेरे मौसेरे भाई हैं। मैं पीकिङ विश्वविद्यालय में पढ़ रहा हूँ... तुम अभी-अभी बाल-बाल बची हो, लिन..." किसी नाटक में अपना पाठ दोहराने की भाँति, यह कहकर वह मेज़ के पास वाली बाँहदार कुर्सी पर बैठ गया।

ताओ-चिङ भी सिर झुकाये मेज़ के पास ऐसे बैठी हुई थी जैसे किसी गम्भीर बीमारी से निढाल हो चुकी हो। बहरहाल, उसने ऊपर नज़र की और बुदबुदाकर कहा :

"धन्यवाद! अगर आप न होते तो...लेकिन कुछ भी तो नहीं है जिसके लिए मैं ज़िन्दा रहूँ..." उसने सिर लटका लिया और आगे कुछ न बोली।

युङ-त्से क़दम बढ़ाकर उसकी बग़ल में आ गया और कुछ क्षण ख़ामोश रहने के बाद बोला :

"क्या तुम मुझसे नहीं बताओगी कि तुमको क्या परेशानी है? मुझे तुम्हारी मदद करके बेहद ख़ुशी होगी, अगर मैं तुम्हारे किसी काम आ सका तो।"

बारिश थमकर महज़ बूँदाबाँदीभर रह गयी थी। लैम्प उस सर्द, सीलनभरी हवा में पीला प्रकाश छोड़ रहा था। ताओ-चिङ एक मुस्कुराहट के साथ बोलने के लिए सचेष्ट हुई :

"बेशक मैं आपको बताऊँगी। मैं देख रही हूँ कि आप अपने मौसेरे भाई यू चिङ-ताङ से एकदम भिन्न हैं।"

परेशानी और ख़तरे के समय में जब कोई हमदर्द मिल जाता है, ख़ासतौर से ऐसा व्यक्ति जो आपकी जान बचा दे, तो ऐसा लगता है जैसे किसी अजनबी देश में पुराना दोस्त मिल गया हो। लड़की ने उसे खुलकर अपनी कहानी बता दी, बिना कुछ छिपाये अपना दिल खोलकर रख दिया, यहाँ तक कि वह भी नहीं छुपाया जो उसने यू चिङ-ताङ और उसके दोस्तों के बीच बातचीत के दौरान सुना था। जब उसने अपनी कहानी ख़त्म की, तो उसकी बड़ी-बड़ी उदास आँखों में एक कठोर, प्रखर ज्वाला जल रही थी, जो इतने शान्त और अपनेआप में बन्द रहने वाले व्यक्ति के लिए आश्चर्यजनक ही थी।

"मैं उनसे नफ़रत करती हूँ। मैं पूरी दुनिया से नफ़रत करती हूँ – इस समाज से, अपने घर से और अपनेआप से भी... मैं अपना जीवन यूँ ही गँवा देना तो नहीं चाहती – लेकिन मेरे लिए और कोई चारा भी नहीं है।"

"समझा! तुम्हारे बताने के पहले भी मैं अच्छी तरह जानता था कि तुम्हारी परेशानियाँ क्या हो सकती हैं।" युङ-त्से ने सिर हिलाया और एक सहानुभूतिभरी मुस्कुराहट के साथ उसकी आँखों में देखा। "जब तुम मेरे गाँव आयी तभी मैंने तुम्हारे हाव-भाव से, तुम्हारे सारा दिन समुद्रतट पर बिताने से, समझ लिया था कि

तुम्हारे साथ कोई दुखद घटना घट चुकी है। फिर भी, हमें एक-दूसरे से बात करने का कोई मौक़ा नहीं मिला।" उसने अनिश्चय के भाव से उसकी ओर देखा और रुक गया।" मैं नहीं जानता कि तुमने ध्यान दिया या नहीं, लेकिन मैं बहुत परेशान हो गया था कि कहीं कुछ तुम्हारे साथ घट न जाये और इसीलिए मैं दूर-दूर रहकर भी प्रायः तुम्हारी निगरानी करता रहता था। मेरे मन में चैन नहीं था, इसीलिए मैं सामने वाले कमरे में आ गया था। इस शाम जब मैंने तुमको बेहद हताश भाव से गाँव के प्रशासनिक कार्यालय से निकलकर भागते हुए देखा, तो मैं फिर तुम्हारे पीछे लग गया।" वह मुस्कुराया, और उसकी आँखें चमक उठीं।

ताओ-चिङ के लिए यह इलहाम की तरह था। उसे कुछ-कुछ इस बात का आभास तो होता रहता था कि जब से वह पेइताइहो में रह रही थी तभी से एक छायानुमा आकृति उसके आस-पास मँडराती रहती थी। "तो यही है जो हर वक़्त मेरी निगरानी करता रहा है," यह सोचकर उसने एक छुपी नज़र उस पर डाली और लजा गयी।

"लिन..." वह हकला गया। समझ नहीं पा रहा था उसे कैसे सम्बोधित करे। लिहाज़ा उसके उपनाम के सिवा और कोई उपयुक्त सम्बोधन वह न पा सका। "तुम क्या करने की सोच रही हो? यह जान लो कि मैं किस क़दर...हमदर्दी रखता हूँ..."

"मुझे यह जगह छोड़नी होगी क्योंकि यू चिङ-ताङ बहुत कमीना है।"

"कहाँ जाओगी तुम?" उसने पूछा।

सीधे उसकी चिन्तातुर आँखों में देखते हुए, उसने सहज भाव से जवाब दिया। "मैं नहीं जानती। शायद मुझे दर-दर भटकना पड़े। अब तो पूरा संसार ही मेरा घर है।"

"ऐसा मत करो।" युङ-त्से सामने वाली कुर्सी पर बैठ गया, और असहमति में ज़ोर-ज़ोर से अपना सिर हिलाया। "कौवे तो सारी दुनिया में काले ही होते हैं। हो सकता है यहाँ कालिमा और कलुषता हो, लेकिन दूसरे स्थान भी इससे कोई बेहतर नहीं हैं। तुम्हारी जैसी नौजवान लड़की को ऐसे जोखिम नहीं उठाने चाहिए।"

"तब, तुम्हारी समझ से मुझे क्या करना चाहिए?" ताओ-चिङ ने पूछा। उसके जीवन में अचानक प्रवेश कर गये इस नौजवान ने किसी पुरानी प्रेम-कथा के नायक की भाँति ही उसका आदर और विश्वास प्राप्त कर लिया था।

"लिन... किसी तकल्लुफ़ में मत पड़ो। हम तो पहले ही से पुराने दोस्त जैसे है। यू चिङ-ताङ कोई समस्या नहीं बनेगा क्योंकि मेरे पिता इस गाँव के एक प्रभावशाली आदमी हैं...बाहर ज़िला मजिस्ट्रेट रह चुकने के बाद अब वह रिटायर होकर यहाँ आ गये हैं। चिङ-ताङ उनकी बात अवश्य मानेगा। मेरे पिता मजिस्ट्रेट पाओ से भी परिचित हैं। मैं अपने पिता से कह दूँगा और चिङ-ताङ को भी बोल दूँगा ताकि वे तुम्हारे लिए कोई परेशानी न खड़ी करें। और जहाँ तक चिङ-ताङ की

उस कपटपूर्ण योजना का सवाल है, तुम उसकी चिन्ता मत करो, वह सिर्फ़ बेलगाम बातचीतभर थी। तुम्हारे मौसेरे भाई के चले जाने से स्कूल में एक अध्यापक की कमी हो गयी है। तुम यहीं रुककर पढ़ाती क्यों नहीं? क्या यह ठीक नहीं रहेगा?"

ताओ-चिङ ने चुपचाप उसकी बातों को ग़ौर से सुना। वह सोच रही थी कि युनिवर्सिटी में पढ़ने वाला यह छात्र सिर्फ़ दयालु और भावुक ही नहीं था, बल्कि सक्षम भी था। लेकिन उसने मुँह बिचकाया और असहमति में सिर हिला दिया।

"नहीं।" वह हठी बच्चे की तरह चिल्ला पड़ी। "मैं यू चिङ-ताङ जैसे कमीने आदमी के साथ कोई काम नहीं करना चाहती। पाँच ताऊ* चावल के लिए नाक रगड़ने से अच्छा है भूखों मर जाना।"

"तुम इसे नाक रगड़ना नहीं कह सकती। चिङ-ताङ कुछ पढ़ा-लिखा आदमी है।" युङ-त्से सिफ़ारिशी अन्दाज़ में मुस्कुराया।

लेकिन ताओ-चिङ ने टोक दिया :

"तब मैं उसकी पढ़ाई-लिखाई को कुछ नहीं समझती। यहाँ तक कि ऐसे आदमी के क़रीब रहना भी मुनासिब नहीं है।"

युङ-त्से उसके पीले, प्यारे मुखड़े को हैरानी से देखता रह गया। यह बच्ची-सी लड़की, क्या दृढ़निश्चय दिखा रही थी एक अलभ्य आदर्श को पाने की अपनी चाहतभरी, मूर्खतापूर्ण तलाश में। वह उसे उसकी ग़लती का यक़ीन दिलाना चाहता था, लेकिन उसके दुराग्रहपूर्ण दृढ़निश्चय को देखकर कतरा गया। वे चुपचाप एक-दूसरे को देखते रहे।

मुर्गे बाँग देने लगे थे और जल्दी ही सवेरा होने वाला था। ताओ-चिङ के दिमाग़ में उथल-पुथल मची हुई थी और आगे कुछ भी कहने की उसे इच्छा नहीं हो रही थी। उसने अपना बोझिल सिर मेज़ पर टिका दिया, युङ-त्से खिड़की के पास चला गया। बारिश बन्द हो चुकी थी और ऐसा लग रहा था कि दिन बढ़िया होगा। सुबह के झुटपुटे में वह आकर चुपचाप फिर कुछ मिनट के लिए उसकी बग़ल में खड़ा हो गया और उसके बाद बोला :

"अब मैं जा रहा हूँ। तुम्हें थोड़ा सो लेना चाहिए। अगर तुम्हें यू चिङ-ताङ दिखायी दे, तो तुम किसी भी तरह उस पर यह मत प्रकट होने देना कि तुम उसकी योजना के बारे में जानती हो। न ही इस बात की चर्चा करना जो हमने यहाँ की है... तुम अभी कहीं दूर मत जाना। हम बाद में विचार-विमर्श करेंगे कि क्या किया जाये। मैं जानता हूँ कि तुम समुद्र को बेहद प्यार करती हो। तो चलो आज दोपहर के बाद

---

* चावल का पाँच ताऊ, जोकि पाँच पेक के बराबर होता है, प्राचीन काल के चीन में एक छोटे कर्मचारी की तनख़्वाह थी। यहाँ सन्दर्भ त्सिन वंश के कवि युआन-मिङ (365-427) का है, जो अधिकारियों की मातहती स्वीकार करने के बजाय सादे ढंग से अपनी खेती पर ही गुज़र-बसर करना अधिक पसन्द करता था।

टहलने समुद्रतट पर चला जाये, चलेंगे न?"

ताओ-चिङ सहमति में सिर हिलाते हुए उठी। जब युङ-त्से पीछे देखने के लिए ड्योढ़ी में मुड़ा, तो उनकी आँखें मिल गयीं और दोनों बुरी तरह अचकचा गये।

शाम का धुँधलका होते वक़्त मुस्कुराता हुआ-सा समुद्रतट पर आहिस्ता-आहिस्ता छप-छप करते हुए नर्म रेत पर सफ़ेद झाग बनकर बिखर जाता था। छिट-पुट सायंकालीन बादलों के नीचे उड़ान भरते समुद्री पक्षी जब-तब चीत्कार कर रहे थे। डूबते सूरज की रोशनी में ताओ-चिङ और युङ-त्से समुद्र की ओर रुख़ किये एक चट्टान पर बैठे हुए थे। वह झिलमिलाती, स्वर्णिम लहरों को उदासी से देख रही थी, जबकि युङ-त्से उस पीले क्षितिज पर नज़र गड़ाये हुए था जहाँ जल और बादल मिल रहे थे। रह-रहकर वह अपना सिर घुमाकर एक छुपी नज़र उस पर डाल लेता, और अब की बार, उसने ख़ामोशी तोड़कर अपनी ज़ुबान पर आ चुकी बात कह डालने का फ़ैसला किया।

"लिन...मुझे उम्मीद है कि तुम मुझ पर विश्वास कर सकोगी। हालाँकि हम लोग महज़ इत्तिफ़ाक़ से ही मिले हैं, फिर भी मैं समझता हूँ कि तुम बहुत ही निराली लड़की हो जिसका जीवन में एक स्पष्ट उद्देश्य है। इसलिए मैं तहेदिल से... मेरे मन में तुम्हारे प्रति सहानुभूति और आदर का जो भाव है उससे प्रेरित होकर, अन्य किसी भी चीज़ से अधिक, मैं तुम्हारी भलाई चाहता हूँ... कुछ समय तक यहीं ठहरी रहो। मैं तुम्हें वचन देता हूँ कि कोई भी तुम्हें अपमानित करने या छेड़ने का साहस नहीं करेगा। यू चिङ-ताङ तुम्हारे यहाँ पढ़ाने पर पहले ही राज़ी हो चुका है। मुझे विश्वास है कि तुम तीसरी कक्षा के लिए एक शानदार अध्यापिका साबित होगी। तुम क्या कहती हो?"

ताओ-चिङ ने अपना सिर उठाया और अपनी उदास आँखों से युङ-त्से के साँवले चेहरे को देखा।

"धन्यवाद," वह बोली। "अक्सर मैं गोर्की के इन शब्दों पर सोचती रहती हूँ : जीवन में हमारा महानतम, सबसे यशस्वी कार्यभार मनुष्य होना है। मानवीय गरिमा को ऊँचा उठाये रखने के लिए, मुझे अपना जीवन यूँ ही बरबाद करने की कोई इच्छा नहीं है।" बोलते-बोलते उसका स्वर दृढ़तर होता गया, और वह इतनी भावप्रवण हो उठी कि युङ-त्से यह देखकर दंग रह गया कि यह शर्मीली, घुटी-घुटी-सी रहने वाली लड़की किस तरह से सभी कठिनाइयों का सामना करने और उनसे निजात पाने का दृढ़ निश्चय रखे हुए थी।

"अगर मैंने जीवन में विलासिताएँ चाही होतीं तो बहुत पहले किसी धनी आदमी की रखैल और एक फ़ैशनेबुल महिला बन गयी होती। तब मैं इतनी उहापोह में न पड़ी होती, अपनेआप को बचाने की जी-तोड़ कोशिश में इतनी लाचार न हुई होती। जिस तरह के जीवन से मैंने अपना मुख मोड़ा है उसमें कोई आत्मिक मूल्य नहीं है।

वह तो जीते-जी मर जाना है।"

युङ-त्से उसकी ओर एकटक देखता रहा। वह इतना स्तम्भित था कि बोल न सका, और दोनों फिर ख़ामोश हो गये। कुछ देर बाद युङ-त्से ने एक दूसरा विषय छेड़ा।

"तुम्हें साहित्य पसन्द है, है न? तुमने काफ़ी कुछ पढ़ा होगा।"

"मैं पुस्तकों से प्यार करती हूँ, लेकिन मैंने बहुत अधिक नहीं पढ़ा है... मैंने अब तक यह तो पूछा ही नहीं कि तुम पीकिङ विश्वविद्यालय में क्या पढ़ रहे हो।"

"मैं चीनी साहित्य विभाग में हूँ। ऐसा लगता है, हम दोनों की एक ही पसन्द है।"

एक बढ़िया विषय पाकर, युङ-त्से विस्तार के साथ साहित्य और कला पर बोलता गया। उसने तोल्सतोय की 'युद्ध और शान्ति', ह्यूगो की 'द मिजरेबल्स', ड्यूमा की 'कैमेलिया' तथा हाइने और बायरन की कविताओं की चर्चा की; उसके बाद त्साओ सुएह-चिन, तु फु और लू-शुन जैसे चीनी लेखकों की बातें कीं। उसका अध्ययनक्षेत्र स्पष्टतः व्यापक था, और उसकी याददाश्त बहुत बढ़िया थी। जब उसने बेहतरीन रूमानी चरित्रों और कथानकों के बारे में बताया तो ताओ-चिङ उसके होंठों से बहने वाली सुन्दर भावोत्तेजक शब्दों की धारा में डूब गयी। वह विस्फारित नेत्रों से, तन्मय होकर सुनती रही। वह धीरे-धीरे उत्फुल्ल हो उठी और उसके चेहरे पर खुशी चमकने लगी। अन्त में उसने बातचीत को फिर उसकी ओर मोड़ दिया। "लिन, तुम्हें इब्सन के 'गुड़ियाघर' के बारे में अवश्य जानना चाहिए। क्या तुमने फेङ युआन-चुन (तीसरे दशक की एक मशहूर चीनी लेखिका) की 'बन्धनों से मुक्ति' पढ़ी है? दोनों ही की मुख्य विषय-वस्तु घिसी-पिटी परम्परा के विरुद्ध संघर्ष और महिलाओं की आज़ादी है। लेकिन मेरा ख़याल है कि तुम उनकी नायिकाओं से भी कहीं अधिक बहादुर और दृढ़निश्चयी हो। तुम अठारह वर्ष की हो, है न, लिन? मुझे विश्वास है कि तुम बहुत आगे जाओगी, तुम इतनी अच्छी हो..." उसके सावधानीपूर्वक नपे-तुले शब्दों की बाढ़ ने ताओ-चिङ को मन्त्रमुग्ध कर दिया।

अमावस्या के बाद का नवोदित चाँद क्षितिज से ऊपर उठ गया था, और वीरान तट पर सन्नाटा छा चुका था, सिवाय उन लहरों की छप-छप के जो चट्टानों पर टकरा रही थी। फिर भी समुद्र के किनारे ये दो तरुण बातों में मशगूल थे। ताओ-चिङ का हृदय तरुणोचित आशावाद और आह्लाद से धीरे-धीरे भरता गया, उसे एक नयी उम्मीद तब प्राप्त हुई थी जब सबकुछ एकदम समाप्तप्राय लगने लगा था। वह अपनी प्राण-रक्षा और सहानुभूति जताने के नाते युङ-त्से के प्रति दिल से आभारी थी। वह उसका इसलिए भी आदर करने लगी कि उसे अपनी महत्त्वाकांक्षाओं और जीवन के प्रति दृष्टिकोण का भागीदार मिल गया था। बस एक ही दिन में वह उसे अपने सपनों का नायक समझने लगी थी।

दूसरे दिन गोधूलि वेला में वे पुनः उसी तट पर मिले।

चाँद उग आया था जबकि वे अभी भी समुद्र के किनारे चहलक़दमी कर रहे थे।

जब ताओ-चिङ और युङ-त्से सुस्ताने के लिए एक पत्थर पर बैठे, उस समय मन्द बयार काले बादलों के गुच्छों को क्षितिज की ओर बहा रही थी। एक बार फिर युङ-त्से ने साहित्य की चर्चा छेड़ दी, और इतना तन्मय होकर ताओ-चिङ को देखने लगा कि वह अपनी बातचीत का सूत्र ही भूल गया। ताओ-चिङ ने, जो उसके शब्दों में डूबी हुई थी, जब यह महसूस किया कि वह उसे एकटक देखने के लिए चुप हो गया है तो उसने घबराहट में अपना सिर झुका लिया।

युङ-त्से ने अपनी उलझन छिपाने के लिए एक नया विषय छेड़ा। "क्या तुम्हें हाइने की कविताएँ याद हैं, लिन? मैं इस महान जर्मन कवि को अपने हाईस्कूल के दिनों से ही प्यार करता आ रहा हूँ और उसकी कुछेक कविताओं को तो दिल से चाहता हूँ – ख़ासतौर से वे जो समुद्र के बारे में हैं।"

ताओ-चिङ को ऐसा लगा जैसे वह अपनी अस्थिर आवाज़ सपने में सुन रही हो, "क्या तुम अब भी उन्हें गा सकते हो?"

युङ-त्से ने स्वीकृति में सिर हिलाया और मन्द, भावुक स्वर में गाना शुरू कर दिया :

घिर रही है साँझ धुँधली,
ज्वार चढ़ता जा रहा है,
जबकि बैठा मैं यहाँ तट पर निरखता हिम-श्वेत लहरों को,
उफनता है हृदय मेरा महाबलवान सागर सा।
गहन गृह-आतुरता विकल करती तुम्हारी चिन्ता में,
तुम्हारी ही मनोहर छवि यहाँ है मेरे चारों ओर,
बुलाती है मुझे यह हमेशा ही।
यह उपस्थित है यहाँ हरदम
हवा के शब्द में, सागर के गर्जन में,
आह में, मेरे हृदय की।
लिख रहा हूँ रेत में नरकुल की प्यारी वंशी से :
"मैं प्यार करता हूँ तुम्हें, एग्नेस।"
... ...

युङ-त्से अचानक चुप हो गया। ऐसा लगता था जैसे वह कविता सुनाने के बजाय स्वयं अपना ही हृदय उड़ेल रहा था। उसकी धधकती निगाह से सकपकाकर, ताओ-चिङ ने घबराहट के मारे अपना सिर घुमा लिया। आह्लाद के एक उफान ने

उसे अपनी सारी मुसीबतों और मन की कड़ुवाहट को भूलकर ऐसे कल्पना-लोक के सम्मोहन में पड़ जाने को विवश कर दिया जिसे वह पूरी तरह समझ न सकी। जब वे चाँदनी से प्रकाशित तट से होते हुए धीरे-धीरे गाँव की ओर चलने लगे, तो युङ-त्से ने धीरे से कहा :

"लिन, इसी गाँव में रहो। भागो नहीं। देखो तो, समुद्र के किनारे यह सबकुछ कितना सुन्दर है।"

मासूम और विश्वासी ताओ-चिङ ने वादा किया कि वह गाँव छोड़कर नहीं जायेगी।

कुछ दिन बाद प्राइमरी स्कूल का शिशिर सत्र चालू हुआ, और ताओ-चिङ ने युङ-त्से को अपनी पढ़ाई जारी रखने के लिए पेकिङ के लिए विदा किया।

जिस सुबह वह जाने वाला था, वे छोटे-से वीरान स्टेशन पर पूरब से आने वाली ट्रेन की प्रतीक्षा कर रहे थे, और चूँकि ट्रेन अभी नहीं आने वाली थी, इसलिए उन्होंने फ़ैसला किया कि तब तक वे पास के एक खेत को पार कर चहलक़दमी कर आयें।

हालाँकि उनकी दोस्ती हुए अभी थोड़े ही दिन हुए थे तथा वे रेत-तट पर कला, जीवन और समाज के बारे में ही सामान्य चर्चा करते रहे थे, फिर भी बिछोह के इस क्षण में दोनों ही को एक अवर्णनीय मायूसी साल रही थी। ताओ-चिङ की वेदना और विकलता कुछ-कुछ उस बच्चे की वेदना और विकलता जैसी थी जिसे उसकी माँ से जुदा किया जा रहा हो। युङ-त्से के प्रभाव से, यू चिङ-ताङ ने अपनी शरारतभरी योजना छोड़ दी थी; लेकिन ताओ-चिङ को डर लग रहा था कि जब उसका यह नया दोस्त चला जायेगा तो वह फिर असहाय और अकेली हो जायेगी।

कुछ समय तक चहलक़दमी करते रहने के बाद, वे एक जगह चुपचाप खड़े हो गये।

ताओ-चिङ की उदास आँखों और पतझड़ की बयार से उड़कर उलझे हुए उसके कटे बालों को देखकर युङ-त्से का हृदय ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा। वह तो सुन्दर लड़की पर पहली नज़र में ही लट्टू हो गया था, लेकिन बहुत सोच-समझकर वह जल्दबाज़ी में अपना मुँह नहीं खोलना चाहता था वरना उनकी दोस्ती ही चौपट हो जाती। उसने अपनेआप पर नियन्त्रण रखा था और उन्हीं विषयों पर बातें करता था जो ताओ-चिङ को अच्छे लगते थे। अब जबकि वह अपने प्रति उसकी भावनाओं और पूर्ण निष्कपटता को जान चुका था, तो वह अपना हृदय उड़ेल देने के लिए लालायित हो उठा। उसे इस बात का खटका था कि कोई ग़लत प्रयास उसकी सफलता के अवसर पर तुषारापात कर देगा, लिहाज़ा वह हिचक गया, और अपनी बग़ल में खड़ी इस सफ़ेद पोशाक वाली आकृति को निहारता रहा। उसका हृदय इस ख़याल से धधक रहा था :

"यह लड़की तो ऐसी प्यारी है जैसे छुईमुई – काश! यह मेरी होती।"

जब ताओ-चिङ मुड़ी और उसकी आँखों में छाया उल्लास देखा, तो आवेग की एक ताज़ा लहर उसके ख़ून में दौड़ पड़ी और एक जंगली फूल चुनने के बहाने वह जल्दी से नीचे झुक गयी। जब उसने दोबारा उसकी ओर देखा तो वह नौजवान इतने सौम्य ढंग से मुस्कुरा रहा था जैसे सबकुछ सामान्य हो। वह स्टेशन की ओर मुड़ा और बोला :

"अच्छा अब तुम लौट जाओ। ट्रेन जल्दी ही आने वाली है।"

ताओ-चिङ ने बच्ची जैसी मुस्कान के साथ सिर झटका। "नहीं, मैं तब तक नहीं जाने वाली जब तक कि ट्रेन आकर चली न जाये।"

प्लेटफ़ॉर्म पर प्रतीक्षा करते हुए, युङ-त्से ने उसे गम्भीरता से समझाया :

"मुझे उम्मीद है कि तुम धीरज रखोगी, चाहे चिङ-ताङ कुछ भी कहे! अब वह तुम्हारे लिए कोई मुसीबत नहीं खड़ी करेगा क्योंकि..." वह मुस्कुराया, "क्योंकि मैंने उसे बता दिया है कि हम-तुम दोनों अच्छे दोस्त बन गये हैं। क्यों ठीक है न?"

"हम दोस्त हैं या नहीं, यह उसे क्यों बताया?"

"यही बेहतर होगा। तब वह तुम्हारी देखभाल भी करेगा।"

"मैं कोई बच्ची नहीं हूँ। मैं अपनी जीविका खुद कमा रही हूँ, मेरी देखभाल के लिए उसकी कोई ज़रूरत नहीं।"

इस डर से कि वह बुरा न मान गयी हो, युङ-त्से ने प्यारभरी नज़र से उसकी आँखों में देखा और नरमी से कहा :

"इतना अधीर मत हो, लिन! पिछले कुछ दिन मैं थोड़ा परेशान रहा हूँ...हालात को तुम्हारे अनुकूल बनाने में...तुम्हारे ही लिए, हाँ! ख़ैर, अब छोड़ो इस बात को। लेकिन हमारे समाज का चलन जानती हो न, अगर दरबार में तुम्हारे दोस्त हों तो सरकारी नौकर बनना आसान है।" अगर चिङ-ताङ को मालूम हो जाये कि हम दोस्त हैं, तो सब ठीक-ठाक रहेगा। तुम्हें इन बातों को इतनी अधिक गम्भीरता से नहीं लेना चाहिए।"

सिर नीचा किये-किये ही ताओ-चिङ ने जवाब दिया :

"बहरहाल किसी भी क़ीमत पर, मैं उसके लिए नेक बनने के बजाय भूखों मरना ज़्यादा पसन्द करूँगी।"

युङ-त्से ने बहस करना बन्द कर दिया और सोचने लगा : "कितनी ज़िद्दी छोकरी है यह!" वह फिर इस विषय पर आग्रह करने का साहस न कर सका।

ट्रेन स्टेशन के भीतर आ गयी, और ताओ-चिङ युङ-त्से को चढ़ते देखती रही। शोरगुल करती भीड़ के सिरों के ऊपर उसने उसे डिब्बे की खिड़की के पास उदास खड़े देखा। जब ट्रेन चलने लगी तब भी वह उसे एकटक उसकी ओर नज़र गड़ाये लेकिन खोया-खोया-सा देख रहा था।

जब ट्रेन जा चुकी और भीड़ तितर-बितर हो चुकी थी, तब भी ताओ-चिङ उस

प्लेटफ़ॉर्म पर निश्चल खड़ी रही, ख़यालों में खोयी हुई। उसके लिए वह एक महान हृदय वाला बहादुर और तेजस्वी तरुण छात्र था।

——:o:——

अध्याय 6

अन्ततः ताओ-चिङ ने याङचुआङ गाँव के प्राइमरी स्कूल में नौकरी कर ही ली। अब, जबकि वह आत्मनिर्भर बन गयी थी, उसके बेचैन मन को शान्ति मिलने लगी और जल्दी ही वह अपने अध्यापन-कार्य में और छात्रों के बीच व्यस्त हो गयी। कबाब में हड्डी बस यू चिङ-ताङ ही था। जब वह उसके पीले चेहरे और उस पर उसकी बनावटी मुस्कान के साथ साँप जैसी ऐंचती पलकों को देखती, तो नफ़रत से भर उठती थी।

स्कूली बच्चों ने ताओ-चिङ को बताया कि उसका मौसेरा भई चाङ वेन-चिङ स्कूल से बरख़ास्त कर दिया गया था, क्योंकि उसने अध्यापकों के साथ मिलकर प्रधानाध्यापक की अड़ंगेबाज़ी का विरोध किया था। यू उस गाँव का एक बड़ा ज़मींदार, कुलीन वर्ग का एक प्रमुख व्यक्ति और देहाती क्षेत्र के मजिस्ट्रेट का प्रिय पात्र था। गाँव वाले उसे "मुस्कुराता बाघ" कहा करते थे। फिर भी, ताओ-चिङ के प्रति वह नर्म व्यवहार करता था। वह जब कभी उससे मिलता तो ख़ुशी से भावुक हो उठता था और मुस्कुराते हुए उसका स्वागत करता था।

"आप बहुत व्यस्त रहती हैं, हैं न कुमारी लिन? हमारे इस साधारण विद्यालय की साज-सज्जा भी साधारण ही है। मुझे हमेशा यह अखरता रहता है कि यह विद्यालय आपके लायक़ नहीं है।"

ताओ-चिङ ठण्डेपन से सिर हिला देती, पर कुछ बोलने का उसका मन न करता।

लेकिन यू के चेहरे पर कुटिल मुस्कुराहट छायी रहती, और जब वह नमस्ते करके भावुकता का प्रदर्शन करता तो उसकी भोंड़ी नज़र मुस्कुराते बाघ की याद दिला देती।

एक दिन ताओ-चिङ से उसकी भेंट मन्दिर की ऊपरी सीढ़ी पर हो गयी। कुत्साभरी नज़र से देखते हुए वह अपना चेहरा ताओ-चिङ के चेहरे के इतना क़रीब ले आया कि उसकी नाक लगभग छूने लगी थी। उसके बाद वह बोला :

"बधाई हो, कुमारी लिन! युङ-त्से की पत्नी हाल ही में दिवंगत हो चुकी है। बेशक भाग्य ने आपका साथ दिया है। अब आप मज़े से इस स्थिति का फ़ायदा उठा सकती हैं..."

ताओ-चिङ गुस्से के मारे छिटककर पीछे हट गयी। "क्या मतलब? मैं समझी

नहीं, आप क्या कह रहे हैं।"

"अरे, कुछ नहीं, कुछ नहीं। युङ-त्से की पत्नी अभी-अभी मरी है, बस यही बात है। टूटी खटारा राह रोके खड़ी थी, अब विदा हो गयी। मरने वाली बीवी ने अभी आख़िरी साँस भी नहीं छोड़ी कि बरदेखिया नया विवाह-प्रस्ताव लेकर दरवाज़े पर आ जाता है। यही तो दस्तूर है हमारे इस इलाक़े में। लेकिन, ख़ैर छोड़िये इस बात को।"

इतना कहकर वह मन ही मन मुस्कुराता हुआ चला गया।

ताओ-चिङ खिन्न मन से अपने कमरे में चली गयी और देर तक चुपचाप बैठी रही, उसने अपना सिर मेज़ पर टिका लिया था।

दो दिन बाद, जब दोपहर के बाद वाली कक्षाएँ ख़त्म हो चुकी थीं और कुछ अध्यापक, अध्यापककक्ष में बैठे गप-शप कर रहे थे, तभी गुस्से से हाँफता-भुनभुनाता हुआ यू अन्दर आया। उसके हाथ में चिट्ठियों का एक पुलिन्दा था। ताओ-चिङ को अख़बार पढ़ते देखकर वह उसके पास पहुँचा, खँखारकर अपना गला साफ़ किया और बोला, "कुमारी लिन, आपकी चिट्ठी है। लगता है, अब डाकख़ाने को जल्द ही स्कूल में ले आना पड़ेगा। देखिये तो, आपकी कितनी अधिक चिट्ठियाँ आती हैं।"

ताओ-चिङ उठ खड़ी हो, इसके पहले ही वह चिट्ठियों को उसके सिर के ऊपर से लहराते हुए, सहकर्मी अध्यापकों की ओर हँसते हुए मुड़ गया। "कुमारी लिन को तो अपने लिए एक डाकख़ाना खोल लेना चाहिए। इनकी चिट्ठियाँ तो झुण्ड के झुण्ड आती हैं, जो बाक़ी पूरे गाँव की चिट्ठियों से भी अधिक होती हैं।" इतना कहते-कहते उसकी मुख-मुद्रा बदल गयी और वह अपनी पलकें मिचमिचाते और लम्बा-सा थोबड़ा काढ़कर, चिट्ठियों को हवा में लहराते हुए, फुंफकारभरे स्वर में बोला, "मैं आपको सचेत करने आया हूँ, कुमारी लिन, कि कुछ दिनों से आपको लेकर पूरे गाँव में खुसर-फुसुर हो रही है। समझीं? एक अध्यापिका को सार्वजनिक आचार-व्यवहार का ध्यान तो रखना ही चाहिए। फिर स्त्री और पुरुष के बीच सम्बन्ध तो..."

ताओ-चिङ ने झपटकर उसके हाथ से चिट्ठियाँ छीन लीं और गुस्से से फनफनाकर कहा, "श्रीमान यू! मैं यहाँ पर पढ़ाने आयी हूँ, आपका उपदेश सुनने नहीं! मैं एक अध्यापिका हूँ, जो मुझे ठीक लगेगा, उसे करने के लिए मैं आज़ाद हूँ।" इतना कह वह उठी और बिना पीछे देखे ही भागकर अपने कमरे में जाकर धम-से बिस्तर पर जा पड़ी और मुँह बिस्तर में छिपा लिया।

शाम को धुँधलका होते-होते वह अपनेआप को इतना संयत कर चुकी थी कि लैम्प जला सके और अपनी चिट्ठियों को पढ़ सके। क़रीब दर्जनभर चिट्ठियाँ थीं, जिनमें से अधिकतर तो युङ-त्से की थीं। विश्वविद्यालय में पढ़ रहा वह छात्र

स्पष्टत: उसके प्यार में गोते खा रहा था, तभी तो वह हर रोज़ उसे पत्र लिखता था कभी-कभी तो एक दिन में तीन बार – उसकी चिट्ठियाँ भावुकता के ताप से भरी होती थीं। गाँव का डाकिया कई दिन के बाद ही चिट्ठियाँ बाँटता था, इसलिए ढेर सारी चिट्ठियाँ एक ही साथ पहुँचती थीं। इससे यू चिङ-ताङ को ताओ-चिङ के खिलाफ़ एक हथकण्डा मिल गया था। वह ताओ-चिङ को बतौर तोहफ़ा मजिस्ट्रेट के पास पेश करने का सिर्फ़ इरादा ही नहीं बना चुका था, बल्कि इसकी बदौलत अपना उल्लू सीधा करने की आस भी लगाये हुए था, और अपनी इस योजना में युङ-त्से द्वारा खलल डाले जाने से वह कतई खुश न था। अभी वह फल तोड़ने ही वाला था कि बीच ही में एक झपट्टामार हाथ पहुँच गया था और उस फल को पकड़ लिया था। वह खिन्न हुए बिना नहीं रह सकता था, लेकिन युङ-त्से के पिता या स्वयं उस नौजवान को नाराज़ करने का साहस नहीं कर सकता था, क्योंकि विश्वविद्यालय में पढ़ने वाले एक छात्र की हैसियत से उसके मौसेरे भाई की उस गाँव में बड़ी इज़्ज़त थी, और भविष्य में वह कोई महत्त्वपूर्ण पदाधिकारी बन सकता था। नतीजतन, वह अपनी नाराज़गी ताओ-चिङ पर प्रकट करता था, क्योंकि वह बेघर, बेसहारा युवती उसके अधीन थी।

पैराफ़िन लैम्प की मद्धिम रोशनी में, ताओ-चिङ ने युङ-त्से के प्रेम से सरोबार पत्रों को पढ़ा, और उसके चेहरे पर मुस्कुराहट खिल उठी। भावप्रवण मगर संयमित स्वीकार से युक्त अपने सुमधुर मनोभावों से अनुप्राणित उसका तरुण हृदय प्यार से छलछला उठा। अपनी थकान को भूलकर उसने जवाब में एक लम्बा पत्र लिखने के लिए कलम उठाया। पत्र का एक हिस्सा अल्हड़ युवती की अपेक्षा एक परिपक्व नारी की चिन्ता की अभिव्यक्तियों से अधिक भरा हुआ था जिसमें उसके जीवन के दुख-दर्द और बदनसीबी के अलावा और भी बातें लिखी हुई थीं।

> युङ-त्से मुझे कितनी प्रबल इच्छा हो रही है कि मैं इस विकृत, जुगुप्साभरे समाज को नष्ट कर दूँ, लेकिन मेरी स्थिति तो बस उस क्षुद्र कीड़े की भाँति है जो मकड़ी के जाले में फँस गया हो। मैं कितना भी कठिन संघर्ष क्यों न करूँ, अपने इर्द-गिर्द की भयंकरताओं से छुटकारा नहीं पा सकती। मैं बुरे बरताव से बचने के लिए घर से निकल भागी थी, लेकिन पूरा समाज मेरे घर जितना ही पतित हो गया है और उतना ही घृणास्पद भी है। ऐसा लगता है कि तुम्हारे मौसेरे भाई और मेरे पिता एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं : वे बातें तो सारी मानवता, न्याय और नैतिकता की करते हैं, परन्तु उनके दिलों में बस लालच और वासना के सिवाय और कुछ नहीं है। मुझे अपनी स्थिति उस भारवाहक जानवर की भाँति प्रतीत होती है जो रास्ताविहीन रेगिस्तान में अकेले ही घिसटता चला जा रहा हो... ओह, युङ-त्से, क्या मैं कभी नखलिस्तान भी देख सकूँगी? क्या मैं कभी उस शीतल स्फूर्तिदायक बसन्त का आनन्द ले

सकूँगी जिसके लिए मैं इतनी लालायित रहती हूँ?

मैं तुमसे कुछ बातें कहना चाहती हूँ। तुम चाहो तो मेरे ऊपर आवेगहीनता का, अपने प्रति अत्यधिक ठण्डेपन का आरोप लगा सकते हो। ख़ैर, अब से मैं तुमसे प्यार करने का, तहे-दिल से प्यार करने का वादा करती हूँ। काश, तुम बस इतना जान लेते कि आज मेरे हृदय में कैसा-कैसा हो रहा है। मैं यहाँ के अपमानजनक व्यवहार को और नहीं सह सकती। मैं यहाँ से भाग जाना चाहती हूँ, लेकिन कहाँ जाऊँ? मैं पूरे दिल से तुम्हें प्यार करती हूँ।

रात काफ़ी हो चुकी थी, और वह स्वयं भी इतनी थक चुकी थी कि उसे अपनी आँखें खुली रखने में कठिनाई हो रही थी। उसने पत्र समाप्त कर दिया और, इसे बिना दोबारा पढ़े, अपने लिबास समेत ही बिस्तर पर जा पड़ी और अपने प्रेमी के पत्रों को हाथ में लिये हुए ही सो गयी।

ताओ-चिङ के उदास चित्त के लिए इस गाँव, रोज़ाना की सैर और यहाँ तक कि भव्य समुद्र ने भी धीरे-धीरे अपना आकर्षण खो दिया और वे निरर्थक बन गये। उसने युङ-त्से और वाङ सियाओ-येन को जो चिट्ठियाँ लिखी थीं वे निराशा और हताशा से भरी हुई थी। उन्होंने तो उसे हतोत्साहित करने के लिए नहीं, बल्कि जीवन के प्रति एक अपेक्षाकृत अधिक सुखद दृष्टिकोण अपनाने पर बल दिया था। ताओ-चिङ कभी-कभी अपनेआप को ऐसे अस्वास्थ्यकर मनस्ताप के दौरों का शिकार होते देखकर स्तब्ध रह जाती थी। लेकिन जीवन जैसाकि उसने देखा-भोगा था – इतना कलुषित और क्रूर था कि युङ-त्से के प्यार का प्रथम आवेग भी उसे उसकी विषादग्रस्तता से छुटकारा न दिला सका।

बहरहाल, एक दिन एक ऐसी घटना घट गयी कि नींद में सोया वह छोटा-सा गाँव जाग उठा और ताओ-चिङ को अपनी उदासी से मुक्ति मिल गयी।

24 सितम्बर, 1931 का अविस्मरणीय दिन। इसी दिन महान दीवार के उस पार से, शान हाइ कुआन दर्रे से होकर आने वाली ट्रेन रोते-कलपते और भारी मुसीबत में पड़े हुए शरणार्थियों से भरे डिब्बे लेकर आयी थी। पेइताइहो स्टेशन के पास बसे याङचुआङ गाँव के निवासी इस ख़बर से व्यग्र हो उठे थे कि जापानी नौसेना ने निकटवर्ती समुद्रतट के चिनवाङताओ पर अधिकार जमा लिया था। याङचुआङ गाँव में खलबली मची हुई थी। स्त्री, पुरुष और बच्चे चिनवाङताओ से भागे चले आ रहे थे और आस-पास के गाँवों के गली-कूचे इन स्थानीय लोगों की हड़कम्प मचा रही भीड़ से ठसाठस भर गये थे। स्कूली कक्षाएँ बन्द हो गयी थीं; आस-पास के गाँवों में रहने वाले अध्यापक अपने-अपने घर जा चुके थे, जो इसी गाँव के निवासी थे, उन्होंने स्कूल आना बन्द कर दिया था। उस वीरान हो चुके मन्दिर में ताओ-चिङ ही अकेली रह गयी थी।

एक दिन दोपहर के बाद वह अध्यापक कक्ष में अकेले बैठी हुई थी, पतझड़

का सूरज पश्चिम में ढल रहा था, उसकी किरणें अध्यापक कक्ष की पूरब वाली खिड़कियों से बाहर लता-कुँज पर आच्छादित कद्दू की बेलों पर धुँधले-धुँधले चमक रही थीं और खिड़की के बदरंग हो चुके काग़ज़ पर अपनी झिलमिल छाया छोड़ रही थीं। ताओ-चिङ ने एक उपन्यास पढ़ने की कोशिश की मगर मन न लगा, और उसका ध्यान गली-कूचों में व्याप्त अफरा-तफरी और दुर्दशा की ओर खिंच गया। और फिर, महज़ बीस *ली* दूर स्थित उस चिङ वाङताओ की ओर चला गया जिस पर जापानी नौसेना क़ब्ज़ा जमा चुकी थी।

स्कूल का चौकीदार अख़बार लेकर आ पहुँचा। वह मन ही मन कुछ बुदबुदा रहा था, जब उसकी नज़र ताओ-चिङ पर पड़ी तो चिल्लाकर बोला, "कुमारी लिन, सबकुछ ख़त्म हो गया। जापानियों ने हमारे तीन पूर्वोत्तर प्रान्तों पर अधिकार कर लिया है।"

ताओ-चिङ अवाक हो गयी, उसने झपटकर अख़बार छीन लिया। बात सही थी। बड़े-बड़े भयावह शीर्षकों में यह घोषणा छपी थी कि जापानी सेना ने शेनयाङ और पूर्वोत्तर के दूसरे शहरों पर क़ब्ज़ा कर लिया है। वह एक स्टूल पर अवसन्न होकर बैठ गयी, अख़बार उसकी मुट्ठी में भिंचा हुआ था।

मन्दिर या उस अध्यापककक्ष में एकदम मुर्दनी छायी हुई थी; पूरा संसार एक भयानक स्तब्धता में लुप्त हो गया प्रतीत हो रहा था। किसी ने एक प्रश्न कर यह सन्नाटा तोड़ा :

"क्या ख़बर है, कुमारी लिन? ताज़ा हालात क्या हैं?"

ताओ-चिङ ने घबराकर अपना सिर ऊपर उठाया। बूढ़ा चौकीदार जा चुका था, और उसके सामने क़रीब चालीस वर्षीय अध्यापक ली चिह-तिङ खड़ा था। वह चुपचाप आ पहुँचा था और जब ताओ-चिङ को हाथ में अख़बार दबाये, हक्का-बक्का देखा तो पूछ पड़ा था।

ताओ-चिङ उठ खड़ी हुई और अख़बार ली चिह-तिङ के हाथ में थमा दिया। उसकी आँखें, जो सामान्यतः बहुत साफ़ रहती थीं, इस समय लाल और डबडबायी हुई थीं।

ली ने अख़बार लेकर, मुखपृष्ठ की कुछ पंक्तियों को पढ़ा, अपना सिर हिलाया और उसके बाद एक गहरी साँस छोड़ी।

"यह तो भयानक है! अरे, हमारा देश तो एकदम पराजय के कगार पर है! हम मिट रहे हैं! चीन ख़त्म हो गया!"

सामान्यतः बहुत शान्त रहने वाली ताओ-चिङ, आँखों में आँसू भरकर बीच ही में बोल पड़ी :

"ऐसा न कहें, जनाब ली। मैं आपसे यह सुनना बरदाश्त नहीं कर सकती। मुझे विश्वास नहीं है कि चीन कभी ख़त्म हो सकेगा। 'किसी देश का भाग्य उसकी

जनता पर निर्भर है।' हम इसे कैसे ख़त्म होने दे सकते हैं?"

ताओ-चिङ अभी बोल ही रही थी, कि बाहर भारी क़दमों की धमक सुनायी दी और एक नौजवान अन्दर आया। वह फाटक तक आते-आते रुक गया, अनौपचारिक रूप से ताओ-चिङ के अभिवादन में झुका, मुस्कुराया, और बोला :

"आप एकदम ठीक कहती हैं। किसी भी देश का भाग्य उसकी पूरी जनता पर निर्भर करता है। क्या आप यहाँ पर अध्यापिका हैं?"

"हाँ," उसने आश्चर्यचकित हो ली चिह-तिङ की ओर देखते हुए उत्तर दिया, मानो उससे यह जानना चाह रही थी कि यह बेधड़क नौजवान यहाँ क्या करने आया था।

"मैं तुमसे इनका परिचय करा दूँ।" ली ने मुस्कुराते हुए कहा। "यह मेरा साला लू चिआ-चुआन है, पेकिङ विश्वविद्यालय का छात्र। यह अपनी बीमार माँ और बहन से मुलाक़ात करने आया है जब से यह आया है तभी से घूमने-फिरने के लिए बेचैन है, और बार-बार मुझसे घूमने ले चलने के लिए कह रहा है। यह कुमारी ताओ-चिङ हैं, हमारी सहकर्मी। यह पेइपिङ में पढ़ भी चुकी हैं।"

"आश्चर्य है!" नौजवान मुस्कुराया। "ऐसा आम तौर पर देखने को नहीं मिलता कि पेइपिङ की पढ़ी हुई छात्रा गाँव के स्कूल में पढ़ाती हो... आप बैठिये न। जापानी आक्रमण बहुत गम्भीर हालात पैदा कर रहा है। क्या आप इसे मान रही हैं?"

नौजवान का व्यक्तित्त्व काफ़ी प्रभावशाली था और ताओ-चिङ उसके बोलने के जीवन्त लहजे और हँसमुख हाव-भाव से इतनी प्रभावित हुई कि उसने अपना मौन तोड़ दिया और पूछ पड़ी, "आप कहाँ से आ रहे हैं? आपको यह तो मालूम ही हो गया होगा कि जापान ने हमारे तीन पूर्वोत्तर प्रान्तों पर क़ब्ज़ा कर लिया है। क्या आप सोचते है कि चीन उसका मुक़ाबला कर सकेगा?"

मन्द-मन्द मुस्कुरा रहा वह नौजवान जवाब देने की जल्दी में न था। उसकी प्रतिभासम्पन्न, मोहक आँखें बारी-बारी से दोनों चेहरों पर टिक रही थी, ऐसा लगता जैसे वह समय काट रहा हो।

ली चिह-तिङ ने, सिगरेट पीते और चुपचाप लू चिआ-चुआन के उत्तर की प्रतीक्षा करते हुए, ताओ-चिङ को स्पष्ट करते हुए बताया :

"तुम यह जान लो, कुमारी लिन, कि यह मेरा साला राजनीति में इतनी दिलचस्पी रखता है कि एक बार जब यह चीनी या विदेशी, प्राचीन या नवीन, किसी भी विषय पर बोलना चालू कर देता है तब कोई इसे रोक नहीं सकता... अच्छा, चिआ-चुआन, अब तुम बोलो कि तुम यह तो देख ही रहे हो कि कुमारी लिन हमारे देश के भाग्य के बारे में किस क़दर चिन्तित हैं।"

"हाँ, हाँ, ज़रूर बताइये कि क्या कुछ हो रहा है," ताओ-चिङ ने आग्रह किया।

"अख़बारों में जो कुछ आ रहा है, मैं उससे ज़्यादा नहीं जानता।" लू

चिआ-चुआन ने अख़बार के पन्नों पर सरसरी नज़र डालने के बाद सिर उठाया। "एक बात तो स्पष्ट है," उसने धीरे-धीरे कहना शुरू किया, "च्याङ काई-शेक गृह-युद्ध के वक़्त तो बड़ा बहादुर बनता है, लेकिन जब असली दुश्मन से पाला पड़ता है तो भीगी बिल्ली बन जाता है। उसने पूर्वोत्तर में हमारी हज़ारों-हज़ार की फ़ौजों को आदेश दे रखा है कि हमलावरों का प्रतिरोध न किया जाये। इस प्रकार, जापान एक भी गोली दागे बग़ैर ही, शेनयाङ स्थित देश की सबसे बड़ी शस्त्र-फ़ैक्टरी और दो सौ हवाई जहाज़ सहित एक हवाई अड्डे को हथिया चुका है। उसके बाद से, जापानी पेन्की, यिङकाऊ और चाङचुन जैसे शहरों पर हमले करते गये हैं। ऐसी अफ़वाह चल रही है कि वे किरिन पर पहले ही क़ब्ज़ा कर चुके है, चिनवाङ ताओ तो उनके हाथ में जा ही चुका है... लेकिन क्वोमिन्ताङ सरकार ने इस भीषण अपमान से निपटने का महज़ यही तरीक़ा अपनाया है कि इसने जेनेवा स्थित अपने प्रतिनिधि को इस आशय का तार भेज दिया है कि वह लीग ऑफ़ नेशन्स से न्याय की भीख माँगे।"

अपने बयान के इस बिन्दु पर लू चिआ-चुआन ने ताओ-चिङ की ओर उत्सुकताभरी नज़रों से देखा और गम्भीर होकर पूछा, "क्या तुम समझती हो कि इस बेमतलब की आशा से कुछ भी हासिल हो सकेगा? क्या चीन बिना हथियार उठाये जापान को शिकस्त दे सकेगा?"

ताओ-चिङ स्थिर भाव से टकटकी बाँधे लू चिआ-चुआन को देख रही थी। उसकी बातों ने ताओ-चिङ के हृदय में जो आक्रोश पैदा कर दिया था उसमें आश्चर्य का भी पुट मिला हुआ था। ऐसे विश्वविद्यालयी छात्र से वह पहले कभी नहीं मिली थी। लू चिआ-चुआन निश्चित रूप से युङ-त्से से भिन्न था। युङ-त्से तो कला के सुन्दर रूपों और परम्परागत प्रेम-कथाओं के अलावा और कोई बात ही नहीं करता था। लू चिआ-चुआन को ताज़ा घटनाओं की अच्छी समझ थी, और यह पहला मौक़ा था जब ताओ-चिङ ने वस्तुस्थिति का इतना बेबाक वर्णन सुना था।

"मुझे नहीं मालूम।" ताओ-चिङ ने क्षणभर सोचने के बाद स्पष्ट उत्तर दिया। उसके गाल घबराहट के मारे तमतमा रहे थे।

"लेकिन एक ऐसे व्यक्ति को, जो अपने देश के भाग्य के बारे में इतना चिन्तित हो, जानकारी तो रखनी ही चाहिए, क्या तुम ऐसा नहीं सोचती?" लू चिआ-चुआन मुस्कुराने लगा।

"अच्छा..." ताओ-चिङ भी मुस्कुरायी, वह नहीं समझ पा रही थी कि किस तरह इस अजनबी की बातों का जवाब दे।

"चिआ-चुआन, आओ चलें। तुमने बताया था न कि तुम चिनवाङताओ में हालात का जायज़ा लेना चाहते हो? लो चलें।"

ली चिह-तिङ कभी किसी को ठेस पहुँचने देना नहीं चाहता था। जब उसने

देखा कि लू अपनी पहली मुलाक़ात में ही ताओ-चिङ को परेशान करने लगा था, तो वह अपने साले को वहाँ से लेकर चल देने के लिए व्यग्र हो उठा।

जब ताओ-चिङ दोनों को फाटक की ओर जाते देख रही थी, तभी लू चिआ-चुआन ने दोनों अध्यापकों को सम्बोधित करके कहा :

"हमारे इस राष्ट्रीय संकट की घड़ी में, हममें से किसी को भी खड़े होकर तमाशा नहीं देखना चाहिए।"

"हम कर ही क्या सकते हैं?" ली चिह-तिङ ने धीरे-धीरे सिर हिलाते हुए और निःश्वास छोड़ते हुए बुदबुदाकर कहा, "हम लोग पीतमुखी बुद्धिजीवी हैं जिनके हाथों में कोई हथियार नहीं है।"

"ज़रूरी नहीं कि हर देशभक्त अपने कन्धे पर रायफ़ल उठाये और जाकर मैदाने-जंग में लड़े ही। आप लोग प्रचार कार्य करके लोगों को जागृत कर सकते हैं। अगर आप लोग अपने छात्रों को अपने देश से प्रेम करने और उसको सम्मान देने की शिक्षा दें, तो यह हथियार उठाने जैसा ही कार्य होगा।"

ली चिह-तिङ कुछ बोला नहीं और ताओ-चिङ ने भी कोई उत्तर नहीं दिया, लेकिन वह दिली तौर पर जान रही थी कि इस बात में सच्चाई थी। वह इस नौजवान के प्रति, जो अन्य लोगों से आश्चर्यजनक रूप से भिन्न था, एक आदर मिश्रित भावना के अहसास से भर उठी। लू चिआ-चुआन ने अपनी संक्षिप्त बातचीत से ही बहुत-सी चीज़ों के बारे में उसकी आँखें खोल दी थी।

कुछ ही दिनों में यह तूफ़ान ठण्डा पड़ गया और कक्षाएँ फिर शुरू हो गयीं। ताओ-चिङ पहली घण्टी में नियमित रूप से तीसरी कक्षा को पढ़ाती थी। चीन के प्रति उत्कट प्रेम ने उसकी व्यक्तिगत व्यथाओं को पृष्ठभूमि में डाल दिया था और वह पूरी घण्टी बच्चों को अठारह सितम्बर* की कड़ुवाहटभरी ख़बरों और चीन पर जापानी आक्रमण के आपराधिक कृत्य के बारे में बताती रहती। इसके साथ वह उस बात को भी जोड़कर बताती जिसको लू चिआ-चुआन ने क्वोमिन्ताङ की अप्रतिरोध की नीति की चर्चा करते हुए बताया था। वह सहज ढंग से बोलती और प्रायः रुक जाती, लेकिन बच्चे उसकी आँखों में छायी वेदना और उमड़ आये आँसुओं से बुरी तरह विह्वल हो जाते। बिना कोई चुलबुलाहट किये वे चुपचाप कान लगाये सुनते रहते। कई बच्चों की आँखों में आँसू की बूँदें झिलमिला उठतीं, यहाँ तक कि कुछ सयानी लड़कियाँ तो खुलकर रोने भी लगती।

"कुमारी लिन, हम जापान के विरुद्ध क्यों नहीं लड़ते?" एक लड़के ने शुष्क

---

* 18 सितम्बर, 1931 को जापान ने शेन्याङ पर आक्रमण किया था। इस पर च्याङ काई-शेक ने झटपट चीनी फ़ौजों को पीछे लौटने का आदेश दे दिया था, जिसके फलस्वरूप जापान ने तेज़ी के साथ चीन के तीन पूर्वोत्तर प्रान्तों पर क़ब्ज़ा कर लिया।

स्वर में सवाल किया। "क्योंकि हमारी सरकार हमारे देश से प्यार नहीं करती।"

"जापान के विरुद्ध लड़ने के लिए हमको क्या-क्या चाहिए, कुमारी लिन?"

"सेना, रायफ़लें और तोपें।"

"क्या चीन के पास रायफ़लें और बन्दूकें नहीं हैं?" "क्या चीन के पास हवाई जहाज़ नहीं हैं?" ताओ-चिङ को उनके भोले-भाले, पहेलीनुमा सवालों का जवाब देने में बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ता।

"क्वोमिन्ताङ की कुल चिन्ता तो गृह-युद्ध लड़ने की, चीनी जनता से लड़ने की है। जापान से लड़ने की उसकी हिम्मत नहीं है। वह डरी हुई है..."

"हम नहीं डरते! हम लड़ेंगे!"

"हम लड़ेंगे! हम लड़ेंगे!"

बच्चों के नारे कक्षा से बाहर गूँज रहे थे और ताओ-चिङ का बोझिल हृदय खुशी से उछलने लगा था। ऐसे थे, ये होनहार, प्यारे बच्चे। वे सभी अपने देश को प्यार करते थे और जानते थे कि जापान का विरोध ज़रूर होना चाहिए, उसके खिलाफ़ ज़रूर लड़ना चाहिए।

इसके बाद, ताओ-चिङ बच्चों को अक्सर वेन तिएन-सिआङ, युएह फेई और शिह के-फा जैसे देशभक्तों की कहानियाँ सुनाती, या 'दो मछुआरे' और 'आख़िरी सीख' जैसी विदेशी कथाएँ कहती। लड़के-लड़कियाँ इन कहानियाँ को चाव से सुनते और वह स्वयं भी उनको सुनाकर सन्तुष्टि पाती। शिक्षिका और छात्र के बीच एक नज़दीकी रिश्ता बन गया, और अब उसे अपना हृदय सूना-सूना नहीं लगता।

लेकिन एक दिन एक दूसरा तूफ़ान उठ खड़ा हुआ।

यू चिङ-ताङ ने अध्यापककक्ष में पदार्पण किया। हमेशा की तरह अपनी आँखें मिचमिचाते हुए एक कुटिल, बनावटी मुस्कान के साथ, पहले उसने वहाँ बैठे चार अध्यापकों पर नज़र डाली, और फिर ताओ-चिङ की ओर देखने लगा। धीमे स्वर में शुरुआत करके, मानो अपने असली मुद्दे पर आने के लिए उसने सवाल किया।

"सुना आप सबने? पेइपिङ और तिएन्त्सिन में स्थिति बहुत तनावपूर्ण हो चुकी है। अव्यवस्था फैलाने वाले लोग और छात्र प्रदर्शन और हड़ताल करके गडबड़ी पैदा कर रहे हैं। कुछ तो प्रदर्शन करने नानकिङ भी चले गये हैं... कितना घिनौना खेल है यह! वे दिखावा तो जापान के प्रतिरोध का करते हैं, पर असल बात यह है कि कम्युनिस्ट उनको संचालित कर रहे हैं।" अचानक अपना एक हाथ उठाकर उसने गम्भीर भाषण झाड़ना आरम्भ कर दिया। "क्या वे अँधेरगर्दी नहीं मचा रहे हैं? क्या वे इस तरह से देश को बचा सकते हैं और जापान को हरा सकते हैं? याद रखना होगा, महासेनापति च्याङ ने किसी भी प्रकार का प्रतिरोध न करने का आदेश दे रखा है, क्योंकि किसी समस्या से निपटने का उसका अपना एक तरीक़ा है। अब, मैं आप लोगों की जानकारी के लिए बता दूँ कि यह बात मेरे कान तक आ पहुँची है कि

हमारे स्कूल में जापान-विरोधी प्रचार चल रहा है।" उसने कठिनाई के साथ थूक निगला, वहाँ पर बैठे चार अध्यापकों पर निगाह डाली और हरेक पर एक कुटिल दृष्टि डाल देने के बाद, सीधे ताओ-चिङ की ओर देखने लगा। "हाँ, तो कुमारी लिन, आप बहुत अपरिपक्व हैं लेकिन आपको ख़ासतौर पर सचेत रहना होगा। यह क्या तुक है कि आप छात्रों को मछुआरों के बारे में बताती रहती हैं? अगर आप बाहरी लोगों पर यह छाप छोड़ेंगी कि हमारे स्कूल में राजद्रोह का प्रचार करने वाले लाल क्रान्तिकारी हैं, तो मैं फँस जाऊँगा और मेरी गरदन उड़ा दी जायेगी।"

दूसरे अध्यापक चुप्पी साधे बैठे रहे। ताओ-चिङ ने आगबबूला होकर यू की ओर देखा और चीख़कर कहा :

"मुझे इसकी बिल्कुल परवाह नहीं है, जनाब यू कि आपकी गरदन का क्या होगा। क्या ऐसी नाज़ुक घड़ी में हर चीनी को यह आज़ादी नहीं होनी चाहिए कि वह जापान का प्रतिरोध करने की आवश्यकता पर ज़ुबान खोले? क्या जापान का प्रतिरोध करने का आह्वान आपको लाल क्रान्तिकारी बना देगा? कोई क़ानून है क्या इसके लिए?"

ली चिह-तिङ तो पीला पड़ गया, जबकि बाक़ी अध्यापक अवाक् बैठे रहे। वे इस शरमीली शान्तचित्त लड़की को इतनी निडरता से प्रधानाध्यापक को जवाब देते हुए सुनकर आश्चर्यचकित थे।

यू चिङ-ताङ के कृशकाय चेहरे पर कालिख पुत गयी, वह आँखें झपकाना तक भूल गया। कुछ सेकेण्ड तक बिना कुछ बोले वह इधर-उधर डोलता रहा और फिर चलता बना। वह दरवाज़े तक जाकर ठिठका, मुड़ा और अपनी चौड़ी आस्तीनों को ज़ोर से झटकारा। ताओ-चिङ की ओर आँखें मिचमिचाकर वह काँपते हुए व्यंग्यात्मक स्वर में बोला :

"मुझसे मत पूछिये! अगर कोई बात आपकी समझ में नहीं आ रही है, तो मेरी राय है कि आप महासेनापति के पास जाकर पूछ लीजिये।"

"आप चिन्ता न करें!" ताओ-चिङ ने उसको चलते-चलते तपाक से उत्तर दिया। "मेरी ओर से पूछने के लिए पीकिंग विश्वविद्यालय के छात्र नानकिङ जा चुके हैं।"

युङ-त्से के पत्र के ज़रिये ताओ-चिङ को ज्ञात हुआ था कि उसके सहपाठी सरकार की अप्रतिरोध की नीति और चिनचाओ को तटस्थ क्षेत्र बनाने के प्रस्ताव का विरोध कर रहे थे। उनमें से तमाम तो प्रदर्शन करने नानकिङ चले गये थे।

युङ-त्से ने लिखा था कि वह भी जाना चाहता था, परन्तु इन्फ़्लुएंज़ा से पीड़ित होने के कारण न जा सका। उसने यह भी लिखा था कि प्रदर्शनकारियों का उपनेता ली चिह-तिङ का साला लू चिआ-चुआन है।

"लू चिआ-चुआन?..." अपने कमरे में अकेली बैठी बौखलायी, प्रधानाध्यापक

से हुई बात के बाद अब भी भीतर ही भीतर सुलग रही ताओ-चिङ ने लू के साथ हुई अपनी अप्रत्याशित भिड़न्त को याद किया और वह उसके बारे में यह सोचकर मुस्कुरा उठी कि लू चिआ-चुआन क्वोमिन्ताङ से हिसाब-किताब चुकता करने जाने वाले छात्रों के दल का नेतृत्व कर रहा था। कृतज्ञता से भरकर उसने मन ही मन उसका नाम इस तरह बुदबुदाया, मानो उस नौजवान ने उसकी वितृष्णा को कम करने में सहायता की हो।

——:o:——

अध्याय 7

एक सर्द, स्याह रात में, चाँद का पीला प्रकाश विस्तृत देहात से होकर खड़खड़ करती गुज़र रही एक लम्बी ट्रेन पर झिलमिला रहा था। और अधिकतर यात्री असुविधाजनक ढंग से गुत्थमगुत्था बैठे हुए, दौड़ते पहियों के तालबद्ध कोलाहल में ऊँघ रहे थे। फिर भी, कुछ यात्री या तो धीमे स्वर में गर्मजोशी से बतिया रहे थे या डिब्बे की ठण्डी दीवारों से सटकर मन्द स्वर में गीत गा रहे थे।

यह तस्वीर पहले और दूसरे डिब्बों की थी। ट्रेन में कुछ असामान्य मुसाफ़िर सवार थे – पीकिङ विश्वविद्यालय के छात्र क्वोमिन्ताङ सरकार के समक्ष प्रदर्शन करने के लिए नानकिङ की यात्रा पर थे।

पीकिङ विश्वविद्यालय के दो सौ से अधिक छात्र ट्रेन के आखि़र में लगे सामान वाले डिब्बे में सोने के लिए घुस गये थे। लेकिन तीन नौजवान गार्ड के केबिन की मद्धिम रोशनी में बातचीत के लिए एकत्र हो गये।

"हाँ, तो चिआ-चुआन, और ता-फाङ, पार्टी ने इस वक़्त हमारे ऊपर भारी ज़िम्मेदारी सौंपी है। जब नानकिङ सरकार को पता चलेगा कि हम उसकी नीति का विरोध करने के लिए हज़ारों *ली* का सफ़र करके आ पहुँचे हैं और उनकी चिकनी-चुपड़ी बातों में नहीं आने वाले हैं, तो शायद वे बल-प्रयोग करेंगे।" यह बात कहने वाला ली मेङ-यू था जो प्रदर्शन करने दक्षिण की ओर जा रहे दल का नेता था।

"हमको इसका डर नहीं है।" हट्टा-कट्टा, लाल-लाल गालोंवाला नौजवान, लो ता-फाङ जवाब में बोला, वह अपनी मुट्ठी भींचकर मेज़ पर धीरे-धीरे ठुकठुका रहा था। "भले ही इसमें कई लोगों की जानें चली जायें – जैसाकि अठारह मार्च*

---

* 18 मार्च, 1926 को पेइचिङ के कई हज़ार छात्रों और नागरिकों ने तिएन आन मेन में साम्राज्यवाद के खि़लाफ़ प्रदर्शन किया था। युद्ध-सरदार तुआन चि-जुई की फ़ौज ने फ़ायरिंग शुरू कर दी थी, जिसमें लगभग पचास प्रदर्शनकारी मारे गये थे और अन्य कई घायल हो गये थे।

की घटना के समय हुआ था – ताज़ा ख़ून लोगों में ऐसी उत्तेजना पैदा कर देगा जो और किसी अन्य चीज़ से नहीं पैदा हो सकती। जो अभी तक सो रहे हैं, वे भी हमारा ख़ून बहने पर जाग उठेंगे!"

तीन के इस समूह में तीसरा व्यक्ति लू चिआ-चुआन था, जिससे हमारी मुलाक़ात पेइताइहो में पहले ही हो चुकी है। उसकी अधखुली आँखें लो ता-फाङ की ओर घूरकर देखती हुई फैल गयीं, और वह अपना सिर हिलाकर बोला :

"नहीं, ता-फाङ निपट अनाड़ी मत बनो। बुद्धिमान आदमी बड़ी से बड़ी विजय प्राप्त करने के लिए कम से कम सम्भव कुर्बानी देते हैं। हमने तीस नवम्बर को प्रतिक्रियावादी छात्र-संगठन पर विजय प्राप्त की और तमाम छात्रों को अपने साथ गोलबन्द करने और नानकिङ प्रदर्शन में भाग लेने के लिए राज़ी कर लिया था। लेकिन नानकिङ पहुँचकर हम और बड़ी विजय कैसे प्राप्त करेंगे? प्रतिक्रियावादी हमारे साथ कैसा व्यवहार करेंगे? इस पर हमें सोचना ही होगा।" वह आगे कुछ न बोला और विचारों में खो गया।

अठारह सितम्बर की घटना के दूसरे दिन छात्रों ने शंघाई, पेइपिङ, तिएनत्सिन, हाङ चाओ, ताईयुआन, सिआन और अन्य तमाम स्थानों में जापानी आक्रमण का विरोध करने और देश की रक्षा के लिए व्यापक आन्दोलन किया था। कक्षाओं का बहिष्कार करके, उन्होंने इस माँग को लेकर प्रदर्शन किया था कि क्वोमिन्ताङ सरकार जापान के प्रतिरोध में फ़ौजें भेजे लेकिन अपनी अप्रतिरोध की नीति पर डटी हुई नानकिङ सरकार इस माँग पर चुप्पी साधे रही। 25 नवम्बर, 1931 को सरकार ने लीग ऑफ़ नेशन्स में अपने प्रतिनिधि, शिह चाओ-ची को एक तार द्वारा यह निर्देश दिया कि वह लीग से निवेदन करे कि चिनचाओ को अन्तरराष्ट्रीय नियन्त्रण में एक "तटस्थ क्षेत्र" घोषित कर दिया जाये, और यह आश्वासन भी दे डाला कि ऐसा हो जाने पर चीनी फ़ौजें शंघाई-कुआन दर्रे से पीछे हटकर महान दीवार की सीमा के भीतर चली जायेंगी। साम्राज्यवादियों के हाथों में पूर्वोत्तर इलाक़े को सौंप देने की इस विश्वासघाती योजना ने पूरे देश में और भी गुस्सा भड़का दिया, फ़ैक्टरी-मज़दूरों ने हड़ताल कर दी, जबकि छात्रों ने स्कूलों और विश्वविद्यालयों की कक्षाओं का बहिष्कार कर दिया और अपना विरोध प्रकट करने के लिए भारी संख्या में नानकिङ के लिए कूच कर दिया। पीकिङ विश्वविद्यालय के छात्र प्रदर्शनकारियों का जत्था संगठित करने में सबसे आगे थे, और अब तो वे अपनी नानकिङ यात्रा पर थे।

ट्रेन हल्के-हल्के हिचकोले खा रही थी। खुले देहात से आ रहे तेज़ हवा के झोंके उस सर्द डिब्बे को और भी असहनीय रूप से ठण्डा बना रहे थे। लम्बे-तड़ंगे, कद्दावर ली मेङ-यू ने अपनी नोकदार टोपी को आगे की ओर खींच लिया, और लू चिआ-चुआन अपने ठिठुरते हाथों को रगड़ने लगा, लेकिन लो ता-फाङ ठण्ड से

बेख़बर, सिर झुकाये उस बात पर सोच रहा था जो अभी-अभी लू ने कही थी। कुछ देर बाद उसने झटका देकर अपना सिर ऊपर उठाया, मानो झपकी के बाद अचानक जाग पड़ा हो।

"दूसरे छात्र माँग-पत्र भेज रहे हैं, हम प्रदर्शन करने जा रहे हैं," वह बोला। "बेशक यह हमारे मदान्ध शासकों को क्रोधोन्मत्त कर देगा... क्या तुम इस बात से डर रहे हो?" उसने लू चिआ-चुआन पर एक तीखी नज़र फेंकते हुए, असहमति के भाव से अपना सिर हिलाया।

"नहीं, ता-फाङ, तुम भी क्या सोचते हो!" लू चिआ-चुआन मुस्कुराया और अपने इस दोस्त के बड़े से हाथ को कसकर पकड़ लिया। "बुरे से बुरे नतीजे का पूर्वानुमान कर लेना कायरता नहीं है। मत भूलो कि हम मार्क्सवादी हैं।"

"बिल्कुल ठीक," ली मेङ-यू ने कहा। "चिआ-चुआन का दूरदर्शी होना सही है। हमें कभी भी अपने शत्रुओं को कम करके नहीं आँकना चाहिए। अब हम व्यावहारिक समस्याओं पर बातचीत करें। मैं समझता हूँ कि हमें एक नये श्रम-विभाजन की ज़रूरत है। चिआ-चुआन, तुम सतर्क और प्रत्युत्पन्नमति वाले व्यक्ति हो। इस समय प्रतिक्रियावादियों से निपटने का काम तुम्हारे ही ज़िम्मे रहेगा। ता-फाङ और मैं सख़्त हैं और हमारी आवाज़ भी ऊँची है। प्रदर्शन का ज़िम्मा हम ख़ुद सँभालेंगे।" उसकी बात ख़त्म होने से पहले ही बाहर कोलाहल हुआ, दरवाज़ा खुल गया, और ढेर सारे छात्र अन्दर आ घुसे।

"हम सन्देश देने आये हैं। जनता के नाम सन्देश, परचे, झण्डियाँ और बाँह की पट्टियाँ सब तैयार हैं।" एक स्वस्थ, सुन्दर लड़का बग़ल में लाल और हरी प्रचार-सामग्री का बण्डल दाबे अन्दर आते हुए बोला। "क्या और भी कोई निर्देश है, हमारे आदरणीय कमाण्डरो?" ज़िन्दादिल सू निङ ने सबको हँसा दिया।

"तुम सभी लोग ज़रूर थक गये होंगे। सू निङ, क्या काग़ज़ तुम्हारे पास पर्याप्त था," लपककर उसका बण्डल लेने के लिए उसके पास पहुँचते हुए लू चिआ-चुआन ने पूछा, और बण्डल को लेकर सावधानीपूर्वक गार्ड की बर्थ पर रख दिया। लू चिआ-चुआन की आँखें चमक रही थीं, वह उनसे मिलने के लिए आगे बढ़ा, तथा सू निङ और उसके पास ही में खड़े एक दूसरे लड़के से गर्मजोशी के साथ हाथ मिलाया। "तुम लोगों ने हमारे प्रदर्शन की ख़ातिर यह सब बहुत ही उपयोगी हथियार तैयार किया है। बहुत-बहुत धन्यवाद!" इसके बाद वह एक छोटी-सी, दुबली-पतली, कुशल दिखने वाली लड़की की ओर पूछने के लिए मुख़ातिब हुआ, "तुमने नारे तैयार कर लिये हैं, सिऊ हुई?"

"हाँ, तैयार कर लिये हैं। तुम देख लो कि ठीक हैं या नहीं?" वह काग़ज़ लू चिआ-चुआन को देने ही जा रही थी कि सू निङ ने इसे ले लिया।

"तुम बहुत थक गयी होगी, लाओ मैं इन्हें तुम्हारी तरफ़ से पढ़कर सुना देता हूँ।" सू निङ ने एकबार सिऊ हुई की ओर देखा और मुस्कुराते हुए कहा, "तुम पीकिङ विश्वविद्यालय के सबसे अच्छे छात्र-छात्राओं में से एक हो – भला तुम्हारे द्वारा लिखे गये नारों में कोई ग़लती कैसे हो सकती है? हाँ, तो मैं इन्हें पढ़कर सुना रहा हूँ। 'हमारे तीन पूर्वोत्तर प्रान्तों के साथ की गयी ग़द्दारी मुर्दाबाद! हम अन्तरराष्ट्रीय नियन्त्रण में तटस्थ क्षेत्र का विरोध करते हैं! आत्मसमर्पण की नीति मुर्दाबाद। सरकार द्वारा लोकप्रिय जापान-विरोधी आन्दोलन का दमन मुर्दाबाद! देश की उत्पीड़ित जनता, एक हो! जापानी साम्राज्यवाद मुर्दाबाद!...'" सू निङ जैसे-जैसे पढ़ता जाता था, उसकी आवाज़ ऊँची होती जाती थी और वह अपनी तनी हुई मुट्ठी ऊँचे और ऊँचे लहराता जाता था। आख़िरकार वह उछलकर एक स्टूल पर चढ़ गया और अपनी मुट्ठी भाँज-भाँजकर ज़ोर-ज़ोर से नारेबाज़ी करने लगा।

"शान्त हो जाओ, सू निङ!" ली मेङ-यू ने टोकते हुए कहा। "बाक़ी लोगों को जहाँ तक हो सके, आराम तो कर लेने दो। उनको नानकिङ-संघर्ष में अपनी पूरी ताक़त लगाने की ज़रूरत पड़ेगी।"

उस वक़्त, दरवाज़े से बाहर ज़ोर-ज़ोर से लगाये जा रहे नारों की आवाज़ सुनायी दे रही थी।

"जापानी साम्राज्यवाद मुर्दाबाद! चीनी राष्ट्र की मुक्ति ज़िन्दाबाद!"

उत्तेजक स्वर न्यायपूर्ण आक्रोश से भरे हुए थे। वे सामान्य से कहीं अधिक ध्यानाकर्षक और उत्तेजक थे, जो इतनी सर्द रात में, उस ठण्डे, अँधेरे, खिड़की-विहीन डिब्बे से होकर उभर रहे थे।

पौ फटने से पहले ही गार्ड की केबिन में वे तीनों नौजवान जम्हाई लेने और झपकने लगे थे। पुनर्गठित छात्र-संगठन के ये नव-निर्वाचित नेता तीन दिन और तीन रात, बिना सोये, उस प्रतिक्रियावादी छात्र-संगठन और उस विश्वविद्यालय-प्रशासन के ख़िलाफ़ उग्र संघर्ष करते आ रहे थे जिनकी कोशिश यह थी कि इनकी गतिविधियों को रोक दिया जाये। तीनों बुरी तरह से थके हुए थे। लू चिआ-चुआन और लो ता-फाङ अभी-अभी सोये थे कि ली मेङ-यू के इन शब्दों ने उन्हें फिर जगा दिया :

"सुनो! मुझे एक ख़याल सूझा है। जब हम नानकिङ पहुँचे जायें, तो क्यों न सुरक्षा सैनिक मुख्यालय पर जाकर अपनी योजना की सूचना दे दें और अपने प्रदर्शन के दौरान 'सुरक्षा' की माँग करें?"

"क्या?" लो ता-फाङ चिहुँक उठा। "सुरक्षा? जब हम विश्वासघाती सरकार के ख़िलाफ़ प्रदर्शन करेंगे तो पहले सुरक्षा की माँग करेंगे? ये क्या ख़याल है?"

ली मेङ-यू बिना किसी उत्तेजना के मुस्कुराया, और बिना कोई बौखलाहट प्रदर्शित किये उसने कहा :

"कभी हम शान्तिपूर्ण तरीक़े अपनाते हैं, कभी बल-प्रयोग करते हैं। इसी को रणकौशल कहते हैं।"

"तो यह बात है। ठीक कहते हो तुम। यह बढ़िया ख़याल है। अब तुमने मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया है।" लू चिआ-चुआन ने बर्थ पर रखे काग़ज़ के झण्डों वाले छोटे बण्डल को उठा लिया और उसे ऐसे लहराया मानो अपनी नींद भगाने की कोशिश कर रहा हो।

लो ता-फाङ गोल-गोल आँखें लिये उनको घूर रहा था, मानो वह कुछ कहना चाह रहा हो : "क्या बात फँस गयी है तुम दोनों अनुभवी साथियों के बीच?" इसके बाद वह किसी दूसरी जगह सोने के लिए चला गया। लू चिआ-चुआन शायिका पर गुड़ी-मुड़ी होकर तुरन्त सो गया। अब सिर्फ़ लो मेङ-यू बचा था जो एक छोटी-सी मेज़ की बग़ल में एक स्टूल पर बैठा हुआ था। उसे अपने सोने के बारे में आवश्यकता से अधिक सोचना पड़ा। थोड़ी देर बाद वह उठ खड़ा हुआ, गुड़ी-मुड़ी मारकर सोते और नींद में बुदबुदाते लू चिआ-चुआन को ग़ौर से देखा, आहिस्ते-से अपने रुइभरे कोट से उसको ढँका, और वह फिर केबिन से निकल पड़ा।

फ़र्श पर विचित्र स्थितियों में सोये हुए अपने छात्र-साथियों के बीच से होकर अपना रास्ता बनाते हुए, वह बन्द दरवाज़े तक गया। उसका सिर भन्ना रहा था, और वह चाह रहा था कि ताज़ा हवा में साँस लेकर अपने दिमाग़ को कुछ हल्का करे। लिहाज़ा वह दरवाज़े से सटकर तिरछा खड़ा हो गया और उसकी चौड़ी दरार से धुन्धभरे उस विस्तृत देहात पर उसने नज़र दौड़ायी, जिससे होकर वे गुज़र रहे थे। आसमान शीघ्र साफ़ हो जाने वाला था, क्योंकि पूरब दिशा पहले ही से मछली के पेट की भाँति चमकने लगी थी। लगातार परिवर्तित हो रहे देहात का दृश्य जैसे-जैसे कौंधकर पीछे छूटता जा रहा था, वैसे-वैसे उसे ऊपर झिलमिल करते तारों और धूसर क्षितिज के सामने धुँधले दिखायी दे रहे पहाड़ों की एक ऊँची श्रेणी की झलक मिलती जा रही थी। उसने दरवाज़े से होकर आ रही ठण्डी ताज़ी हवा को अपनी साँसों में भरा और जम्हाई ली। जब उसने काफ़ी दूर से आ रही मुर्गों की तानभरी बाँग और कुत्तों के भौंकने की आवाज़ें सुनी, तो उसके हृदय में एक टीस-सी उठने लगी। जैसे-जैसे ट्रेन आगे की ओर दौड़ती हुई बढ़ रही थी, वैसे-वैसे उसके सामने का देहाती क्षेत्र, तेज़ी से पीछे की ओर छूटता हुआ दिखायी देता था। जो दोबारा कभी नहीं दिखायी पड़ता। वह ललचाई नज़रों से एक चमचमाते चश्मे और कौंधकर पीछे छूटते जा रहे पौधों को निहारकर देखता, और तब इस शान्तचित्त, सुस्थिर तरुण की आँखें अचानक ही आँसुओं से सजल हो उठतीं...

पीकिङ विश्वविद्यालय के क्षेत्रों का यह जत्था एक दिसम्बर को पेइपिङ से रवाना हुआ था और तीसरे दिन नानकिङ पहुँच गया। प्रदर्शनकारियों के आगमन से आ

व्यस्त, शान्तिपूर्ण राजधानी का हुलिया ही बदल गया, ऐसा लग रहा था मानो कोई दुश्मन इसके फाटक पर चढ़ आया हो। मुख्य सड़कों पर और गलियों में भारी संख्या में भरी हुई रायफ़लें साधे सैनिक तैनात कर दिये गये थे। उत्तरी क्षेत्र से आये छात्रों ने केन्द्रीय विश्वविद्यालय की व्यायामशाला में अपना डेरा जमाया, और फिर तो इसके तुरन्त बाद ही फाटक से बाहर मोटरकारों की अनवरत पों-पों शुरू हो गयी, क्योंकि क्वोमिन्ताङ के नानकिङ स्थित मुख्यालय के आदमी और पत्रकारों के झुण्ड के झुण्ड "ख़बर" एकत्र करने की ख़ातिर इनके इर्द-गिर्द जमा होने लगे थे। चार तारीख़ की भोर में, राजधानी के सुरक्षा सैनिक मुख्यालय ने छात्रों द्वारा जारी किये गये "जनता के नाम सन्देश" की कई हज़ार प्रतियाँ ज़ब्त कर लीं, और जिस प्रेस ने इसे छापा था उस प्रेस के मालिक को गिरफ़्तार कर लिया। पाँच की सुबह, ली मेङ-यू अपने हाथ में एक अल्टीमेटम लिये हुए आया। दर्ज़नभर प्रदर्शनकारी प्रतिनिधि उसे सुनने के लिए उसके पास एकत्र हो गये।

> तथाकथित "पीकिङ विश्वविद्यालय के प्रदर्शनकारी जत्थे" ने राजधानी में पहुँचकर सारी सतर्कता के बावजूद प्रदर्शन करने की धमकी दी है। यह जत्था तोड़-फोड़ की कार्रवाइयाँ कर रहा है और शरारतभरी अफ़वाहें फैला रहा है। कल इसने कीचड़ उछालने वाले परचे छपवाये जिसमें सरकार के ऊपर "चीनी राष्ट्र को मटियामेट कर देने और बेच डालने" का आरोप लगाया गया था। इस परचे के आख़िरी अंश में खुले तौर पर प्रतिक्रियावादी ऐलान किया गया है कि "हम इस सरकार पर कोई विश्वास नहीं रखते और इसे उखाड़ फेंकने के लिए संघर्ष करेंगे," इसके साथ ही साथ इस तरह के शरारतभरे वक्तव्य भी हैं कि "हम सरकार को आदेश देते हैं कि..." इन वक्तव्यों का लहज़ा कम्युनिस्ट पार्टी के लहज़े से मिलता-जुलता है...

"बस इतना काफ़ी है," लू चिआ चुआन बीच ही में बोल पड़ा और ली मेङ-यू के हाथ से सुरक्षा सैनिक मुख्यालय द्वारा जारी इस फ़रमान को अपने हाथ में ले लिया। "तुम्हें अब और आगे पढ़ने की ज़रूरत नहीं। अब आगे इसके अतिरिक्त और कुछ न होगा कि गुण्डों का एक गिरोह सरकार के ख़िलाफ़ साज़िश रच रहा है, और यह धमकी दी गयी होगी कि देश और जनता की रक्षा के नाम पर वे हमारे ख़िलाफ़ दण्डात्मक कार्यवाइयाँ करेंगे... बहरहाल स्थिति बहुत ही नाजुक है और हमें तुरन्त तय करना होगा कि क्या किया जाये।"

प्रदर्शनकारी प्रतिनिधियों ने तुरन्त ही एक आपातकालीन बैठक की जिसमें यह प्रस्ताव पास किया गया कि अधिकारियों की धमकियों की परवाह किये बिना यह पूरा जत्था आज ही ग्यारह बजे दिन में प्रदर्शन करेगा। उन्होंने जत्थे के उपाध्यक्ष लू चिआ-चुआन को अपनी योजना का विवरण सूचित करने और सुरक्षा की माँग करने

के लिए सुरक्षा सैनिक कमाण्डर कू चेङ-लुन के पास भेजने का भी निर्णय लिया।

जब लु चिआ-चुआन ने यह निर्णय सुना तो वह क्षणभर के लिए सन्न रह गया, उसकी आँखें अचानक उदास हो गयीं। जब वह ली मेङ-यू और दूसरे छात्रों के साथ होता था, तो उसे कोई भय नहीं रहता था। बेशक वह चाहता तो था कि उनके नारों की गूँज नानकिङ के आकाश को चीरती हुई सुनायी दे। परन्तु अब तो उसे बाक़ी साथियों का साथ छोड़ना ही पड़ेगा और अकेले ही इस मरदूद कू चेङ-लुन से मुलाक़ात करने जाना होगा।

"क्या सोच रहे हो, भाई लू?" प्रदर्शनकारी प्रतिनिधि प्रदर्शन हेतु छात्रों को एकत्र करने जा चुके थे, सिर्फ़ ली मेङ-यू और लू चिआ-चुआन उस छोटे-से कमरे में, जो उनके दफ़्तर का काम देता था, रह गये थे।

लू चिआ-चुआन फीकेपन से मुस्कुराया, उसके बाद उठ खड़ा हुआ और ली मेङ का हाथ पकड़ लिया।

"बड़े भाई ली, तुमने ठीक किया। मैं अपनी ज़िम्मेदारी निभाने जाऊँगा। अब प्रदर्शन का निर्देशन करने की पूरी ज़िम्मेदारी बाक़ी तुम्हीं लोगों पर है।"

"नहीं, एक क्षण ठहरो!" ली कुछ सोचकर बोल पड़ा। "तुम्हारा अकेले जाना ख़तरे से ख़ाली नहीं है। अगर कोई बात हो गयी, तो तुम हमें कोई सन्देश नहीं भेज पाओगे। सू निङ तुम्हारे साथ जायेगा। वह समझदार है।"

"ठीक है।" लू चिआ-चुआन ने कहा। "इस बीच मैं तुम लोगों की सफलता की कामना करूँगा।" चलते-चलते उसने पुनः ली मेङ-यू का हाथ पकड़ लिया, ऐसा लग रहा था मानो उसे एक ऐसी लम्बी यात्रा पर भेजा जा रहा हो जहाँ से उसे फिर लौटना न हो।

लू चिआ-चुआन और सू निङ प्रदर्शनकारी जत्थे की बाँह-पट्टियाँ बाँधे, साथ-साथ सुरक्षा सैनिक मुख्यालय की ओर चल पड़े। अपने जत्थे की ओर से लिखित विवरण प्रस्तुत करके उन्होंने सुरक्षा कमाण्डर से मिलने का निवेदन किया।

वे दोनों स्वागतकक्ष में देर तक इन्तज़ार करते रहे परन्तु कमाण्डर नहीं प्रकट हुआ। अन्ततः पश्चिमी लिबास और चमड़े के जूते पहने एक गोरा-चिट्टा अधेड़ आदमी उनसे भेंट करने के लिए आया। वह आदमी पहले मुस्कुराया, फिर एक सिगरेट जलायी, और सोफ़े पर बैठने से पहले इन दोनों नौजवानों को आँखों ही आँखों में तौलते हुए अभिवादन में अपना सिर झुकाया। उसने बहुत ही धीमी आवाज़ में पूछा।

"क्या मैं जान सकता हूँ कि आप लोग यहाँ किस काम से आये हैं?"

"मेरी समझ से आप सुरक्षा सैनिक कमाण्डर नहीं हैं। हम लोग कमाण्डर कू से मिलना चाहते हैं।" लू चिआ-चुआन ने अभी-अभी आये इस व्यक्ति की अपेक्षा

कहीं अधिक शालीनता और भद्रता से पेश आते हुए, एक-एक शब्द सावधानीपूर्वक प्रस्तुत किया।

वह नवागन्तुक, यह अहसास करके, कि उसका पाला एक अच्छे-ख़ासे प्रतिद्वन्द्वी से पड़ा है, थोड़ा नाख़ुश हो गया।

अपनी सिगरेट का कश खींचते हुए, वह सिर झुकाकर बोला :

"मैं सुरक्षा सैनिक कमाण्डर के स्टाफ़ का चीफ़ हूँ, और उसका प्रतिनिधित्व करने का मुझे पूरा-पूरा अधिकार है। कृपया आप बतायें कि आप उनसे क्या कहना चाहते है।"

"हमारे पीकिङ विश्वविद्यालय के प्रदर्शनकारियों के जत्थे ने आज दिन के ग्यारह बजे मार्च करने का निर्णय लिया है। हमारा जुलूस चेङशिएन स्ट्रीट, चुङशान रोड और फूलदार मेहराब से होता हुआ, कन्फ़्यूशियस के मन्दिर के पास से मुड़कर न्याय मन्त्रालय, विदेश मन्त्रालय और क्वोमिन्ताङ के केन्द्रीय मुख्यालय को पार करता हुआ, चुङ हुआ रोड और चुङचेङ गली से होकर गुज़रेगा। हम आपके सुरक्षा सैनिक मुख्यालय से अपनी सुरक्षा की ख़ातिर अतिरिक्त फ़ौज और पुलिस भेजने का अनुरोध करने आये हैं।" लू चिआ-चुआन स्टाफ़ के चीफ़ पर अपनी गहरी दृष्टि गड़ाये हुए, बिना रुके बोलता गया था।

चीफ़ के चेहरे की मुस्कुराहट यकायक ग़ायब हो गयी, उसने अपनी सिगरेट की ठूँठ को फेंक दिया और सख़्त होकर सवाल किया :

"कृपया आप यह बतायें कि क्या वजह है कि जहाँ और सभी स्कूलों के छात्र सिर्फ़ अर्ज़ियाँ लिखकर राजधानी भेज रहे हैं, वहाँ अकेले आपके विश्वविद्यालय के छात्र प्रदर्शन की बात कर रहे हैं? इससे कौन-सा मक़सद पूरा होगा? आप लोग किसके ख़िलाफ़ प्रदर्शन करेंगे?"

"अर्ज़ियाँ देने का वक़्त गुज़र चुका है।" लू चिआ-चुआन ने झट मुस्कुराकर जवाब दिया। "पिछले तीन महीनों में हज़ारों-हज़ार अर्ज़ियाँ भेजी जा चुकी हैं, लेकिन आप लोगों का एकमात्र जवाब 'अप्रतिरोध' ही चल रहा है। यही कारण है कि हम लोग अब प्रदर्शन करने आये हैं। और हम किसके ख़िलाफ़ प्रदर्शन करेंगे? जापानी साम्राज्यवाद के ख़िलाफ़, जो चीनी राष्ट्र को उत्पीड़ित कर रहा है। जापानी साम्राज्यवादियों के तलवे चाटने वालों के ख़िलाफ़, जो चीनी राष्ट्र के हितों को बेच डाल रहे हैं।"

"और आप लोग यह काम किस ढंग से करेंगे?"

"वैसे ही जैसे अभी-अभी मैंने बताया है," लू चिआ-चुआन ने गम्भीरतापूर्वक जवाब दिया। "आपने हमारे पास एक सरकारी पत्र भेजा था, जिसमें हमारे ऊपर यह आरोप लगाया गया था कि हम सरकार के ख़िलाफ़ साज़िश रच रहे हैं और इस पर आपने दण्डात्मक कार्रवाई करने की धमकी दी थी। अत: हम यहाँ पर सुरक्षा सैनिक

कमाण्डर को यह सूचित करने आये हैं कि हम लोग मात्र देशभक्तिपूर्ण कारणों से नानकिङ आये हैं और यह किसी भी प्रकार से गै़रक़ानूनी नहीं है। कृपया आप लोग हमारे मार्ग में कोई मुसीबत न खड़ी करें।"

"आप लोग ग़लती पर हैं।" स्टाफ़ का चीफ़ फिर मुस्कुराने लगा था। "आप लोग दावा तो देशभक्त होने का करते हैं, लेकिन आपके भरचे और नारे पूरी तरह से प्रतिक्रियावादी है। निस्सन्देह, हम लोगों को राजधानी में शान्ति और सुरक्षा बनाये रखने की गरज़ से आप लोगों की गतिविधियाँ रोक देने पर मजबूर होना पड़ सकता है।"

सू निङ ने अपनी मुट्ठी तानी और रोष में भरकर बोला :

"इससे कोई फ़ायदा नहीं होगा। अगर आप बल-प्रयोग पर अड़े रहे, तो निश्चय ही हम भी नहीं दबेंगे। लेकिन अगर कोई दुर्भाग्यपूर्ण घटना घटी, तो इसकी जवाबदेही सरकार पर होगी।"

स्टाफ़ का चीफ़ चुपचाप एक नयी सुलगायी सिगरेट का एक लम्बा कश खींचने में लगा हुआ था, इसी बीच लू चिआ-चुआन ने सू निङ पर समर्थन की नज़र डाली, फिर अपनी घड़ी में देखा कि अब ग्यारह बजने ही वाले थे। वह यह कहते हुए, उठ खड़ा हुआ :

"अब हमारी परेड शुरू ही होने वाली है। कृपया आप तुरन्त अपने कमाण्डर को सूचित करें और उनसे अनुरोध करें कि सेना और पुलिस हमारे रास्ते में कोई व्यवधान न डाले..."

इससे पहले कि वह अपनी बात ख़त्म करता, एक चपरासी ने आकर उसके हाथ में एक काग़ज़ थमा दिया। कृपया आप लोग अपने नाम लिख दीजिये।"

लू चिआ-चुआन ने बिना किसी हीलाहवाली के नाम लिख दिये।

जैसे ही नाम लिख दिये गये, स्टाफ़ का चीफ़ यह कहते हुए वापस चला गया : "बहुत अच्छा, मैं कमाण्डर कू को आप लोगों का सन्देश दे दूँगा।"

उस बड़े, अँधेरे कक्ष में, अकेले बैठे दोनों छात्र एक-दूसरे को देखकर मुस्कुरा दिये और गहरी साँसें खींचीं।

"मार्च तो पहले ही शुरू हो चुका होगा।"

सू निङ ने अपने दोस्त का हाथ कसकर पकड़ लिया, उसकी बड़ी-बड़ी आँखें दमक रही थीं।

"हाँ, ज़रूर शुरू हो चुका होगा।" लू चिआ-चुआन ने सहमति में सिर हिलाया। उसकी आँखें गर्म-गर्म आँसुओं से छलछला उठीं। उसने एक क्षण के लिए अपना चेहरा दूसरी ओर घुमा लिया, फिर एक मुस्कुराहट के साथ सू निङ का हाथ पकड़ लिया।

आधा घण्टा बाद स्टाफ़ का चीफ़ फिर वापस लौट आया। अब वह भद्र नहीं

लग रहा था, जैसे ही उसने कमरे में क़दम रखा, भभक उठा :

"हद हो गयी। अभी-अभी सूचना मिली है कि आप लोगों की परेड पहले ही शुरू हो चुकी है। लाजिमी तौर पर हमें व्यवस्था बनाये रखने के लिए आदमी भेजने पड़े। आप दोनों को यहीं रुके रहना होगा।" इतना कहने के बाद वह पीछे मुड़ा और चलता बना।

दोनों नौजवानों ने कुछ नहीं कहा।

दोनों ही की कल्पना में नारे लगाते, शायद लड़ते और लहूलुहान होते प्रदर्शनकारियों की मज़बूत क़तारें थीं...

"आओ, चलें और जत्थे में शामिल हो जायें।" लू चिआ-चुआन ने सू निङ की बाँह पकड़ी और दोनों बाहर की ओर जाने लगे। लेकिन फाटक पर पहुँचते ही, एक साँवले रंग के मोटे आदमी ने उन्हें इन शब्दों के साथ रोक दिया :

"कहाँ चले? तुम लोगों ने बहुत देर कर दी। वापस अन्दर जाओ। तुम लोगों की अच्छी-ख़ासी ख़ातिरदारी की जायेगी।"

"तुम क्यों हमें रोक रहे हो?"

"बाहर दंगा हो रहा है। अच्छा होगा कि तुम लोग यहीं ठहरो और कुछ देर आराम करो।" और फिर एक हँसी के साथ वह मोटा आदमी चला गया। दूसरे ही क्षण आधा दर्ज़न सैनिक आ धमके – पूरी तरह से हथियारबन्द – और इन दोनों छात्रों को हाँक ले चले।

जब वे दोनों हवालात के चढ़ाईवाले रास्ते पर पहुँचे, तो रायफ़लें लिये आठ सैनिकों ने उनकी सिर से पाँव तक तलाशी ली, और सू निङ की दिलकश टाई झटक ली।

"देखो, हम लोगों की अच्छी-ख़ासी ख़ातिरदारी हो रही है।" लू चिआ-चुआन ने चहककर कहा।

सू निङ अपेक्षाकृत कम शान्त और संयत था। उसने तमतमाहटभरे चेहरे से फुसफुसाकर पूछा :

"ये हमारे साथ कौन-सा सलूक करने जा रहे हैं?"

लू चिआ-चुआन ने अपना सिर हिलाया और इस लड़के के कन्धे को हौले से थपथपा दिया।

"तुम लोग अब भी शैतानी हरक़त में लगे हुए हो? बढ़ते रहो।" एक सैनिक ने बन्दूक़ के कुन्दे से लू चिआ-चुआन को कोंचा और दोनों को एक जालीदार दरवाज़े से ठेलकर एक कोठरी के भीतर कर दिया।

सचमुच उनकी अच्छी-ख़ासी ख़ातिरदारी हो रही थी। उस कोठरी में सिर्फ़ दो आदमी पहले से थे, अब कुल चार हो गये। हवा बहुत बुरी न थी, और वहाँ पर तख़्ते पड़े हुए थे तथा जंगलेदार खिड़कियाँ भी लगी हुई थीं।

जब पहले वाले दोनों क़ैदियों ने इन नवागन्तुकों को देखा, तो वे पहरेदारों के चले जाने का इन्तज़ार किये बग़ैर, उनके स्वागत में दरवाज़े की ओर दौड़ पड़े और पूछने लगे :

"तुम लोग किस कॉलेज से आये हो?"

बातचीत से मालूम हुआ कि पहले वाले दोनों क़ैदी नानकिङ स्थित केन्द्रीय विश्वविद्यालय के छात्र थे। अठारह सितम्बर वाली घटना के बाद उठ खड़े हुए देशभक्तिपूर्ण आन्दोलन में सक्रिय भागीदारी निभाने के फलस्वरूप उनको सुरक्षा सैनिक मुख्यालय में क़ैद कर लिया गया था, जहाँ रहते उन्हें दो माह से अधिक हो रहे थे।

एक लम्बी जुदाई के बाद मिलने वाले दो पुराने दोस्तों की तरह, चारों ही जिज्ञासाभरी बातचीत में मशगूल हो गये। सू निङ जो कुछ अधिक घबराया हुआ था, अब फिर से खिल उठा।

"हम लोग पीकिङ विश्वविद्यालय के प्रदर्शनकारी जत्थे के सदस्य हैं," उसने गर्व के साथ बताया। "पहले तो हम लोगों को रेल की पटरियों पर लेटना पड़ा था, तब जाकर उन्होंने ग़द्दारों की इस सरकार के ख़िलाफ़ प्रदर्शन करने आने के लिए नानकिङ वाली ट्रेन पकड़ने दी। मुझे ऐसा लग रहा है कि इस क्षण यहाँ पर हमारे साथी सदस्यों और प्रतिक्रियावादियों के बीच आमने-सामने संघर्ष चल रहा होगा।"

यह सुनकर वे दोनों उत्तेजना में चिल्ला उठे, और एक साथ पूछ पड़े :

"बाहर क्या हो रहा है?"

लू चिआ-चुआन एक तख़्ते पर बैठ गया और बताने लगा कि किस-किस तरह से पीकिङ विश्वविद्यालय के छात्र नानकिङ पहँचे, और यहाँ पहुँच जाने के बाद मिले अपने अनुभवों का वह ब्यौरा देने लगा। जैसे ही उसने अपनी बात ख़त्म की, उन दोनों ने गर्मजोशी से एक-एक करके उससे हाथ मिलाया, और बताया :

"मेरा नाम याङ सू है। यह वू हुङ-ताओ है। अब मैं तुम लोगों को यहाँ के हालात के बारे में बतलाता हूँ। अरे, नहीं, ज़रा एक क्षण रुको। एक़ बज गया है और मुझे यक़ीन है कि तुम लोगों ने खाना नहीं खाया होगा। पहले मैं तुम लोगों को कुछ खिला दूँ।"

याङ सू हवालात की तरक़ीबों से वाक़िफ़ था, और तुरन्त एक साथी क़ैदी कुछ खाना लेकर आ पहुँचा। अभी लू चिआ-चुआन और सू निङ खाना खा ही रहे थे कि जंगले की जाली से होकर कोई चीज़ अन्दर फेंकी गयी। लू चिआ-चुआन, जो हमेशा चौंकन्ना रहता था, तुरन्त उधर मुड़ा और देखा कि एक पहरेदार संगीन लिये तेज़ी से पास से गुज़र रहा था। याङ सू ने काग़ज़ का वह छोटा-सा मुड़ा-तुड़ा टुकड़ा उठा लिया और उसे खोला, फिर तीनों को एक साथ पढ़ने के लिए बुलाया :

पीकिङ विश्वविद्यालय के बहुत से छात्रों को चेङशिएन स्ट्रीट में अभी-अभी गिरफ़्तार कर लिया गया है। सम्भवत: उनको मिङ मकबरा बैरकों में ले जाया गया है।

लू चिआ-चुआन ख़ामोश रहा, परन्तु सू निङ ने काठ की चौकी पर धम्म-से मुक्का मारा और मुँह के बल गिरकर फफक-फफककर रोने लगा। याङ सू और हुङ ताओ भौचक्के होकर देखते रहे और थोड़ी देर तक कुछ नहीं बोले।

लू चिआ-चुआन ने तुरन्त धीमे स्वर में पूछा, "क्या यह सूचना विश्वसनीय है?"

जाली से होकर बाहर की ओर देख रहे याङ सू ने जब हामी भरी तो लू चिआ-चुआन का चेहरा पीला पड़ गया।

सू निङ शाम होने तक सोता रहा जबकि उसका दोस्त चारपायी पर बैठा रहा। उसकी पीठ दीवार की ओर थी, सिर सोच में लटका हुआ था, वह इस सम्भावना पर विचार कर रहा था कि पूरे जत्थे के साथ क्या-क्या घट सकता है और वह कौन-कौन से क़दम उठायेगा। कितने छात्र गिरफ़्तार हुए होंगे? क्या कुछ मौतें भी हुई होंगी? ली मेङ-यू, लो ता-फाङ और अपने समूह के अन्य नेताओं का क्या हुआ होगा? क्या यह सम्भव था कि जिस आन्दोलन के लिए उन्हें इतनी परेशानियों से होकर गुज़रना पड़ा था, वह इस प्रतिक्रियावादी सरकार द्वारा तोड़ दिया जाये? "नहीं, कभी नहीं!" उसने अपनी आँखें बन्द कर लीं और अस्वीकृति में सिर हिलाया। "चीनी जनता अब और नहीं बरदाश्त करेगी। वह ख़ासतौर से हम नौजवानों के साथ है। अगर कुछ धराशायी होंगे, तो दूसरे उनका स्थान ले लेंगे – यह निश्चित है..." जत्थे की समस्याओं से पूरी तरह चिन्तित होकर वह भूल गया था कि वह स्वयं भी तो सींखचों के भीतर था, ठीक इसी समय एक विचित्र आवाज़ उस अँधेरी कोठरी को भेदती हुई आ पहुँची, और वह बौखला उठा। बग़ल वाली कोठरी से कोई दीवार पर ठकठका रहा था और मद्धिम स्वर में कह रहा था :

"बड़े भाई याङ, ग़ौर से सुनो! वे बाहर नारे लगा रहे है!"

चारों नौजवान उछल पड़े और अपने-अपने कान गड़ाकर सुनने लगे।

लेकिन स्पष्ट कुछ भी नहीं सुनायी दे रहा था, सिवाय बाहर साँय-साँय कर रही हवा के।

"क्या ये परेड-स्थल से वापस लौट रहे सैनिक हैं?" याङ सू ने पूछा।

"हो सकता है कि हमारे पीकिङ विश्वविद्यालय के प्रदर्शनकारी इस तरफ़ से मार्च कर रहे हों।" सू निङ का हृदय आश्चर्यमिश्रित आह्लाद से उछलने लगा।

"ग़ौर से सुनो, बड़े भाई याङ!" बग़ल वाली कोठरी से फिर कोई दीवार पर ठकठका रहा था।

"...मुर्दाबाद!"

"...विरोध करो!"

हाँ, बहुत दूर, नारे लगाये जा रहे थे।

पूरी हवालात में तुरन्त ख़ामोशी छा गयी। लू चिआ-चुआन को महसूस हुआ कि उसका हृदय ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था... "वे आ रहे हैं!... ज़रूर ही वे हमारे छात्र-प्रदर्शनकारी होंगे।" उसने मन में सोचा।

चारों नौजवान अपने-अपने गाल लोहे की जाली पर सटाये हुए थे। धूसर और उदासीभरी शाम अचानक एक असाधारण सौन्दर्य धारण कर चुकी थी।

"जल्लाद कू चेङ-लुन मुर्दाबाद!"

"पीकिङ विश्वविद्यालय के गिरफ्तार छात्रों को रिहा करो!"

आवाज़ें अब बहुत स्पष्ट सुनायी दे रही थीं, जो निर्भीकता और रोष से भरपूर, पत्थर की दीवारों को पार कर, सैलाब की तरह उमड़ती चली आ रही थीं, और इन चारों क़ैदियों के कानों में पड़ रही थीं।

"उनमें से कुछ तो निश्चय ही हमारे केन्द्रीय विश्वविद्यालय के छात्र होंगे"। छरहरे बदन के बालक जैसे दीखने वाले हुङ-ताओ ने सू निङ की ओर अपनी बत्तीसी दिखाते हुए कहा : "पीकिङ विश्वविद्यालय के छात्र तो और अधिक होंगे," सू निङ ने भी जोश में शेखी बघारते हुए कहा।

"प्रशासकों की मौत की घण्टी बज रही है।" लू चिआ-चुआन और याङ सू ने, जो बाक़ी दोनों से अधिक उम्र वाले और अनुभवी थे, एक-दूसरे की ओर देखा, वे नहीं जान सके थे कि किसने ये शब्द कहे थे। क्या सचमुच उनके साथी छात्र यहाँ आ पहुँचे थे? उन्हें इस पर यक़ीन नहीं हो पा रहा था।

ऐसा लग रहा था कि नारे लगाती हुई भीड़ सुरक्षा सैनिक मुख्यालय पर पहुँच गयी थी। आवाज़ें, रोषभरी नारेबाज़ी, क्रुद्ध चीख़ों की अभिव्यक्तियाँ सीधे हवालात में पहुँच रही थी।

स्वयं हवालात के भीतर अचानक खलबली मच गयी थी। याङ सू ने सू निङ को बाँहों में भर लिया और कहा :

"देखो न! मूर्खों ने हवालात की नाम-पट्टी तक उतार दी है।"

चारों खिड़की से बाहर की ओर झाँकने लगे।

सामने चढ़ाई वाले रास्ते पर फ़ौजी अफ़सर और सैनिक गश्त कर रहे थे और कोई आदमी एक लकड़ी का इश्तिहार लिये चुपचाप तेज़ी से उनकी खिड़की की बग़ल से गुज़र रहा था।

"बेघर कुत्तों की तरह बौखलाये हुए हैं।" प्रचण्ड नारेबाज़ी के विस्फोट पर जल्दी से सतर्क होकर लू चिआ-चुआन ने झटपट टिप्पणी की।

"धावा बोलो! घुस चलो!"

"घुस चलो! घुस चलो!"

"आ जाओ! पीकिङ विश्वविद्यालय के छात्रों को छुड़ा ले चलें!"

ये आवाज़ें ऐसी लग रही थीं जैसे घर से बहुत दूर आने पर किसी नज़दीकी और प्रिय व्यक्ति की आवाज़ सुनायी पड़ गयी हो, और तब लू चुआ-चिआन और सू निङ की आँखों में आँसू छलछला आये। उनके हृदय धौंकनी की तरह धड़कने लगे, वे सींखचों से चिपके हुए, कान लगाये रहे।

"जापानी साम्राज्यवाद मुर्दाबाद! यह ग़द्दार सरकार मुर्दाबाद...! पीकिङ विश्वविद्यालय के छात्रों को रिहा करो!..."

नारे स्वरारोह के उत्कर्ष में बार-बार गूँज रहे थे। मुख्य फाटक पर पड़ रही चोटें, चिल्लाहटें, और नारों की चीखें तीव्र से तीव्रतर होती जा रही थीं। अचानक एक ज़ोरदार धमाका हुआ जिसमें कोलाहल और नारेबाज़ी का स्वर विलीन हो गया और भीड़ सुरक्षा सैनिक मुख्यालय के पहले फाटक को तोड़कर अन्दर घुस गयी।

बिना किसी पूर्व सूचना के बिजली गुल हो गयी। हवालात समेत पूरा परिसर अन्धकार और आतंक में डूब गया।

क्षणभर के लिए कोलाहल शान्त हो गया, लेकिन रायफ़लों के बोल्ट चढ़ाने की खटखट, भारी बूटों की धमक और बालू की बोरियाँ पटके जाने की आवाज़ ने और अधिक तनाव का वातावरण पैदा कर दिया। हवा में मौत का आतंक छा गया, समूची हवालात बारूद की गन्ध से भर उठी।

चारों नौजवानों ने एक-दूसरे पर निगाहें डालीं, और अपने मैले-कुचैले हाथों से अपने-अपने माथे का पसीना पोंछा।

बाहर फिर नारेबाज़ी होने लगी।

"हमें तुरन्त उत्तर चाहिए!"

"छात्रों को अभी तक क्यों नहीं रिहा किया गया?"

"उन्हें क्यों नहीं छोड़ा जा रहा है?"

"ऐसे काम नहीं होगा! चलो हम अपने तरीक़े आज़मायें! टूट पड़ो!..."

क़ैदियों को साफ़ तौर पर एक दूसरे फाटक पर धावा बोले जाने का शोर सुनायी दिया, जो नारों की चीख़ों के साथ समवेत हो रहा था।

उन्हें छत पर चढ़ाई जा रही मशीनगनों की खड़खड़ाहट भी सुनायी दी।

छात्रों और प्रशासनिक अधिकारियों के बीच टकराव आसन्न हो गया था।

"जब मामला बहुत गर्म हो जायेगा, तो जान लो कि प्रतिक्रियावादी बल-प्रयोग करेंगे।" याङ सू ने लू चिआ-चुआन की आस्तीन को खींचकर धीरे से कहा।

सू निङ घबराकर चीख़ उठा।

"हाँ स्थिति बहुत नाजुक है," लू चिआ-चुआन बोला, और खिड़की के पास से दूसरी ओर घूमकर कोठरी के भीतर चहलक़दमी करने लगा। वह भरसक अपने

आवेग को संयत रखने की कोशिश कर रहा था ताकि ठण्डे दिमाग़ से इस संकट के बारे में सोच-विचार कर सके। उसे ऐसा मालूम पड़ रहा था जैसे भीड़ लड़ती-भिड़ती हुई आगे की ओर बढ़ रही थी, और सम्भवत: किसी भी क्षण अठारह मार्च के क़त्लेआम की पुनरावृत्ति हो सकती थी... क्या किया जाये? उसके बहुत से साथी छात्र, जिनकी देखरेख का भार पार्टी ने उसके ऊपर सौंपा था, ज़रूर ही उन छात्रों में होंगे जो अब सुरक्षा सैनिक मुख्यालय पर हमले कर रहे थे। कैसे उन्हें जान से हाथ धोने दिया जा सकता था? उसका दिमाग़ चकराने लगा। इस अत्यावश्यक और विकट समस्या को हल करने की कोशिश में वह अपने दिमाग़ की नस-नस पर ज़ोर डाल रहा था।

बाहर नारेबाज़ी लगातार तीखी और गरजदार होती गयी, लगता था कहीं आसमान न फट पड़े।

"धावा बोलो। हम लोगों को अपनी पूरी ताक़त लगाकर हमला करना होगा! पीकिङ विश्वविद्यालय के छात्रों को बचा लेना होगा!"

"अगर उनके पास बन्दूक़ें और गोलियाँ हैं तो हमारे पास अपना गर्म ख़ून है!"

"आगे बढ़ो! हमला करो!..."

क्रोधभरे कोलाहल के बाद एक दूसरा धमाका तब हुआ जब दूसरा फाटक टूट गया, और भीड़ अन्दर की ओर उमड़ चली। चीख़ें और नारों की चिल्लाहटें हवालात के और क़रीब आ पहुँचीं, जहाँ से उन्हें और साफ़-साफ़ सुना जा सकता था।

"चलो देखें।" सू निङ लू चिआ-चुआन को खींचकर खिड़की के पास ले गया। सामने वाले पहरेदार के कमरे में उन्हें टार्च की रोशनी में फुर्ती से अपनी बन्दूक़ें भरते और बोल्ट चढाते, अपनी संगीनें चढ़ातें और हवालात की कोठरियों की ओर घातक निशाना साधते सैनिक दिखायी दे रहे थे।

खिड़की की सलाख़ों से चिपटे, ये चारों छात्र बिना कोई हरक़त किये चुपचाप देख रहे थे।

अचानक, मानो कहीं दूर से आता एक धीमा स्वर उनके कानों में पड़ा :

"हम लोगों को आदेश है कि छात्र जैसे ही तीसरा फाटक तोड़ें, उन पर फ़ायरिंग शुरू कर दी जाये।"

लू चिआ-चुआन स्वर की दिशा में घूम गया, और देखा कि एक पहरेदार अपने कन्धे पर संगीन लगी बन्दूक़ लिये इमारत के किनारे-किनारे चलते हुए ग़ायब हो गया। झट उसने याङ सू से पूछा :

"कौन है वह?"

"एक देशभक्त सैनिक।" याङ सू का चौड़ा चेहरा टार्च की पीली रोशनी पड़ते ही और भी पीला दिखायी देने लगा।

फिर ठक-ठक की आवाज़ हुई, और किसी ने धीमे स्वर में सन्देश दिया :

"छत पर मशीनगनें तीसरे फाटक की ओर लगा दी गयी हैं।"

सू निङ ने लू चिआ-चुआन की बाँहों को कसकर पकड़ लिया। "क्या वे पहले हवालात पर ही फ़ायर करेंगे?"

"मुझे ऐसा नहीं लगता," लू चिआ-चुआन ने झटककर अपने हाथ सू निङ से छुड़ाते हुए जवाब दिया और याङ सू को एक तरफ़ ले जाने के लिए खींचा। कुछ क्षण गम्भीर होकर सोचने के बाद वह बोला : "भाई याङ, इस संकट की घड़ी में हमें फ़ौरन फ़ैसला करना होगा। क्या तुम्हारे पास बाहर छात्रों तक सन्देश पहुँचाने की कोई तरक़ीब है? वे पहले ही इन मरदूदों से ज़बरदस्त टक्कर ले चुके हैं, और हम उन्हें यह सुझाव भेज दें कि वे फ़िलहाल विराम ले लें, जिससे कि अनावश्यक खून-ख़राबा रोका जा सके। कैसा रहेगा यह?"

याङ सू क्षणभर सोचने के बाद जवाब में बोला :

"तुम्हारा मतलब समझौता करने से है? क्या हम इतने शौर्यपूर्ण आरम्भ के बाद अब यही करेंगे? इस पर भलीभाँति सोचना होगा।"

"नहीं।" लू चिआ-चुआन का स्वर दृढ़ था। "यह बहुत ज़रूरी है, हमारे पास सोच-विचार करने का समय नहीं है। तुम केन्द्रीय विश्वविद्यालय के छात्रों को एक सन्देश लिखो, और मैं अपने जत्थे को लिखता हूँ। मेरी समझ से, वह देशभक्त सैनिक, हमारे हित के लिए, उन तक पहुँचा देगा।"

वू हुङ-ताओ और सू निङ खिड़की छोड़कर उनके पास आ गये, और उन्होंने वहीं पर खड़े-खड़े ही एक छोटी-सी आपातकालीन बैठक कर ली। अन्ततः लू चिआ-चुआन का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया।

याङ सू ने एक छोटी-सी पेंसिल और कागज़ का एक टुकड़ा निकाला और लू चिआ-चुआन को दे दिया। वू हुङ-ताओ और सू निङ ने रज़ाई से आड़ कर ली, याङ सू ने माचिस जलायी और लू चिआ-चुआन ने सन्देश लिख दिया। जब उसने सन्देश लिख लिया, तो माचिस की तीली दिखायी और अब याङ सू ने अपना सन्देश लिखा। इतना हो जाने के बाद, याङ सू खिड़की के पास गया और तीन बार खाँसा। तुरन्त एक हाथ अन्दर प्रविष्ट हुआ और कागज़ के दोनों टुकड़ों को ले लिया।

तीसरे फाटक के बाहर भीड़ का कोलाहल पहले से काफ़ी बढ़ गया था।

"मरदूदो! फ़ायर क्यों नहीं करते? तुम्हारे पास बन्दूकें और गोलियाँ हैं, जबकि हमारे पास तो बस अपना गर्म खून है..."

उस काली रात में, हज़ारों तरुण कण्ठों से फूट रहे नारों की चीख़ सिर्फ़ एक सेकेण्ड के लिए रुकी, जिसके तुरन्त बाद एक दूसरा गरजदार धमाका गूँज उठा। पाँवों की धम-धम, चिल्ल-पों और गर्जन-तर्जन की आवाज़ बिजली की गड़गड़ाहट की भाँति तीव्र से तीव्रतर होती जा रही थी। छात्र तीसरे फाटक पर हल्ला बोल रहे थे, जो उनके प्रहार से चर्र-चर्र करने लगा था।

शून्य-प्रहर हो चुका था। छत पर लगी हुई दुश्मन की मशीनगनें लोहे के फाटक के बाहर छात्रों की ओर ऐसे सधी हुई थीं, जैसे शिकार की ताक लगाये शेर हों।

लू चिआ-चुआन और उसके तीनों साथी एक-दूसरे से चिपटकर खिड़की की ओर मुँह करके लेट गये।

> अन्धकार का राज हमेशा नहीं रहेगा,
> बीतेगी यह रात, सवेरा झाँकेगा।

लू चिआ-चुआन मन्द स्वर में गाने लगा था। उसे अपने भेजे गये सन्देशों की सफलता पर विश्वास न था, और वह अन्तिम घड़ी के लिए दिमाग़ी तौर पर तैयार हो रहा था। उसके गाने के साथ बाक़ी भी स्वर में स्वर मिलाकर गाने लगे।

> बीतेगी यह रात, सवेरा झाँकेगा...

क़रीब दस मिनट बाद, वे अपने स्वप्न-लोक से जाग उठे।

"केन्द्रीय विश्वविद्यालय, यहाँ क़तार में खड़ा हो जाये।"

"पीकिङ विश्वविद्यालय, यहाँ क़तार में खड़ा हो जाये।"

अस्तव्यस्तता को ख़त्म करने के लिए बिगुल बजाये जा रहे थे।

हवालात में बिजली फिर आ गयी।

"बाल-बाल बचे!" सू निङ अपने माथे का पसीना पोंछकर, उन्मुक्त भाव से उछलता हुआ, चिल्ला उठा।

याङ सू मुड़ा और लू चिआ-चुआन के हाथों को इतना कसकर पकड़ा कि उनमें दर्द होने लगा।

"इसके लिए हमारी जान भी चली जाती, तो कोई परवाह नहीं थी, क्यों?" लू चिआ-चुआन छलछलायी आँखों से मुस्कुरा उठा।

——:o:——

अध्याय 8

एक दिन ऐसा आया जब ताओ-चिङ याङचुआङ स्कूल में यू चिङ-ताङ के नीचतापूर्ण अत्याचार को और बरदाश्त न कर सकी। शीतकालीन अवकाश की प्रतीक्षा किये बिना ही, वह जल्दी में पेइताइहो से पेइपिङ के लिए उसी प्रकार भाग निकली जिस प्रकार वह एक बार पेइपिङ से पेइताइहो के लिए भाग चली थी।

एक अध्यापिका के रूप में उसकी तनख़्वाह मात्र पन्द्रह युआन मिलती थी जो इतनी कम पड़ती थी कि अपने रहने-खाने, स्टेशनरी, डाक-टिकट और अन्य आकस्मिक ख़र्चों को पूरा करने के बाद वह अपने लिए गर्म कपड़े तक नहीं बनवा सकी थी। वह एक हल्का गद्देदार गाऊन पहने, बिस्तर और कपड़ों के एक छोटे-से

गट्ठर के अतिरिक्त बिना और किसी साजो-सामान के चल दी थी, उसने अपने उन वाद्ययन्त्रों को भी नहीं लिया था, जिनको अपने छात्रों के बीच न बजा पाने का उसे बहुत दुख महसूस हुआ था। ट्रेन में उसको अब यह चिन्ता सता रही थी कि वह पेइपिङ में कहाँ ठहरेगी। कहीं निदेशक हू अब भी उसका इन्तज़ार न कर रहा हो। बेशक, जैसाकि उसने डायरी में लिखा था, वह "अपनी आत्मा को बेचने" के बजाय भूखों मर जाना पसन्द करती; क्योंकि उसने निश्चय कर लिया था कि वह अपनी अस्मिता को किसी भी घटिया, दुनियादारी के विचार से बचाकर रखेगी।

अभी ट्रेन पेइपिङ के पूर्वी स्टेशन के अन्दर पहुँची नहीं थी, तभी उसने अन्तिम रूप से तय कर लिया था कि वह अपनी प्रिय सहेली वाङ सियाओ-येन का पता करेगी।

सियाओ-येन, जो सीनियर हाईस्कूल में तीसरे और अन्तिम वर्ष में पढ़ती थी, ताओ-चिङ की हमउम्र थी। सन्तुलित मिज़ाज और सहृदयता से भरपूर वह एक ऐसी लड़की थी कि उससे बड़े छात्र भी उसे "बड़ी दीदी" कहा करते थे। उसके पिता वाङ हुङ-पिन पीकिङ विश्वविद्यालय में इतिहास विभाग का प्रोफ़ेसर था, उसकी माँ मामूली पढ़ी-लिखी, एक भद्र, उदार क़िस्म की गृहिणी थी। प्यारभरे, ख़ुशहाल शान्त घरेलू वातावरण में पली-बढ़ी सियाओ-येन आवेगशील, और निर्भीक ताओ-चिङ के एकदम विपरीत थी। सुरुचिपूर्ण और परिष्कृत रूप में, उसकी एकमात्र दिलचस्पी मेहनत से पढ़ाई करने में थी ताकि वह आगे चलकर अपने पिता की भाँति ज्ञानसम्पन्न बन सके।

ताओ-चिङ ने जैसे ही सियाओ-येन को देखा, उसका हाथ पकड़ लिया, परन्तु मुँह से शब्द न निकल सके। सियाओ-येन पहले तो उसे पहचान ही न सकी; क्योंकि, ठण्ड के बावजूद, उसकी सहेली बहुत ही हल्का गद्देदार गाऊन पहने हुए थी जो धूल-धूसरित हो गया था और जिस पर जगह-जगह चिपचिपे धब्बे पडे हुए थे। ताओ-चिङ अपनी यात्रा के बाद थकी-थकी-सी दीख रही थी। सियाओ-येन कुछ सेकेण्ड तक उसको अविश्वास-भरी नज़रों से देखती रही, फिर स्वागत की गर्मजोशी में मुस्कुराती हुई उसका नाम पुकार उठी।

"चलो हाथ-मुँह धो लो," सियाओ-येन ने अनुरोध किया, उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह और कैसे अपना स्नेह प्रकट करे। "इसके बाद तुम इन कपड़ों को बदलकर मेरे कपड़े पहन लो – तुम एकदम ठेठ देहाती लड़की लग रही हो।"

"तुम देहाती लड़की को हेय दृष्टि से देखने की जुर्रत मत करो। मेरी माँ..."

ताओ-चिङ ने महसूस किया कि उत्तेजित होने की कोई वजह न थी। और फिर एक मुस्कान के साथ बात बदल दी। "तुम नहीं जानती कि तुम कितनी भाग्यशाली हो। सियाओ-येन, तुम्हारे परिवार वाले कितने भले हैं – पिता, माँ और बहनें,

सभी।" यद्यपि ताओ-चिङ के चेहरे पर मुस्कान थी, फिर भी उसकी आँखें नम हो चली थीं, वह झट एक ओर तौलिया लेने मुड़ गयी।

सियाओ-येन ने सहानुभूतिपूर्वक उसकी ओर देखा। "तुम अपने हमेशा की तरह अफ़सोस करना बन्द करो। तुम यहाँ पर तब तक ठहरो जब तक कि पिताजी तुम्हारे लिए कोई इन्तज़ाम नहीं कर देते।"

"ठीक है।" ताओ-चिङ उदास भाव से मुस्कुरायी और दोनों लड़कियाँ एक-दूसरे की ओर कुछ सेकेण्ड तक देखती रहीं। फिर अपनेआप को और न रोक पाने के कारण ताओ-चिङ ने सियाओ-येन के गले में अपनी बाँहें डाल दीं और फुसफुसाकर बोली : "तुम युङ-त्से को जानती हो? हम दोनों अच्छे दोस्त बन चुके हैं..."

"जैसे मुझे एक लम्बे अरसे से मालूम ही न हो।" और एक सौम्य मुस्कान के साथ सियाओ-येन ने ताओ-चिङ को धकेल दिया। "अच्छा होगा कि तुम जल्दी उसके पास चली जाओ। वह ज़रूर तुमको देखने के लिए बेचैन होगा।"

उस दिन शाम को ताओ-चिङ युङ-त्से से भेंट करने गयी और वे दोनों हॉस्टल में उसके छोटे-से कमरे में देर तक बतियाते रहे। जब वह चलने को हुई तो युङ-त्से ने उसे दोबारा आने के लिए ज़ोर दिया, और दोनों उस ख़ामोश रात में टहलते हुए तिएन आन मेन के सामने वाले जेड गर्डल स्ट्रीम तक गये, जहाँ वे संगमरमर के बने कटहरे की बग़ल में बैठकर विश्राम करने लगे। गली के लैम्पों की मद्धिम रोशनी के क़रीब युङ-त्से ने ताओ-चिङ के सर्द हाथों को कसकर पकड़ लिया और उसकी आँखों को देखता रहा। फिर तीव्र उत्तेजना में भरकर काँपते स्वर में उसने याचना की :

"लिन, क्या तुम मेरी प्रेयसी बनोगी? मैं हमेशा-हमेशा तुमको प्यार करता रहूँगा।"

ताओ-चिङ ने बिना कोई शब्द कहे, अपना सिर झुका लिया। उसका हृदय हर्षातिरेक से सिहर उठा और उसके गाल लाल हो गये। क्या इसी को तरुणाई का प्यार कहते हैं? इसी खुशी को? अपनेआप को और रोक पाने में असमर्थ पाकर ताओ-चिङ ने युङ-त्से का हाथ पकड़ लिया और अपना सिर उसके कन्धे पर टिका दिया...

परन्तु प्यार भी ताओ-चिङ की मुसीबतों का अन्त नहीं कर सकता था। सियाओ-येन और उसके माता-पिता सहृदयता की साक्षात मूर्ति थे, फिर भी वह अनन्त काल तक तो उनके साथ रह नहीं सकती थी। उसे बिना विलम्ब किये, जीविका का कोई न कोई रास्ता तो ढूँढ़ना ही था। इसीलिए पेइपिङ वापस आने के दूसरे दिन से ही वह अपने पुराने स्कूली दोस्तों और अध्यापकों का पता लगाने लगी थी, जो उसे कोई नौकरी दिला सकते थे। जब भी वह अपने कमरे में अकेली होती,

किसी न किसी उपयुक्त नौकरी की उम्मीद में, विज्ञापनों पर नज़र दौड़ाती।

इसी तरह दिन पर दिन बीतते हुए दो सप्ताह गुज़र गये। वह निराश हो चली थी। हालाँकि उसने कोशिश तो बहुत की, परन्तु नौकरी पाने की कोई उम्मीद नज़र नहीं आ रही थी। प्रोफ़ेसर वाङ ने व्यवहारकुशल ढंग से उसे समझाया कि मौजूदा हालात में, विश्वविद्यालय के स्नातक और यहाँ तक कि विशेष योग्यतावालों के लिए भी बिना किसी सिफ़ारिश के नौकरी पा जाना सम्भव नहीं था। फिर ताओ-चिङ जैसी युवती के लिए तो यह और भी कठिन था। और इन्हीं सब कारणों से वह चुप बैठी रही। फिर भी, ताओ-चिङ को विश्वास नहीं होता था, वह सोचती कि पेइपिङ जैसे बड़े शहर में कोई न कोई गुंजाइश ज़रूर निकलनी चाहिए, और इस तरह काम की तलाश में वह इधर-उधर भाग-दौड़ करती रहती थी। एक महीना बीत गया, और अब तक उसे कोई काम नहीं मिल सका। श्रीमती वाङ ने उसे कई बार कहा कि वह बहुत हडबड़ी में न पड़े, वह उसे विश्वास दिलाती रहती थी कि उसका वहाँ उनके साथ रहना अच्छा लगता था; जबकि सियाओ-येन उसे अपने विवेक से काम लेने और ग़लत-सलत लोगों के चक्कर में न पड़ने की सलाह देती रहती थी। यद्यपि उनकी सलाह से उसे तसल्ली मिलती थी, फिर भी इससे उसकी तात्कालिक आवश्यकता का अहसास नहीं मिट पाता था; और वह नौकरी पाने की छोटी से छोटी उम्मीद के पीछे भी भाग-दौड़ करती रहती थी। परन्तु कोई लाभ न था। एक दिन एक स्थानीय अख़बार 'सियाओ शिह पाओ' में एक गवर्नेस के लिए विज्ञापन छपा। यह सोचकर कि यह काम उसके मनमुताबिक़ रहेगा, और इसकी सेवा-शर्तें बिल्कुल स्वीकार करने योग्य थीं, उसने साक्षात्कार देने के लिए अपनेआप को मानसिक तौर पर तैयार कर लिया।

उसने अपनेआप को सावधानीपूर्वक और आकर्षक ढंग से सजाया-सँवारा, सियाओ-येन का हरा ऊनी गाऊन पहना और कन्धे पर एक छोटा-सा हैण्डबैग लटकाकर बाहर क़दम रखा ही था कि स्कूल से घर लौटती उसकी सहेली दिखायी पड़ गयी और वह उसकी ओर दौड़ पड़ी। सियाओ-येन ने उसे रोककर टोका :

"फिर अपनी क़िस्मत आज़माने जा रही हो?"

"नहीं, बस एक चिट्ठी छोड़ने।" नौकरी पाने के विषय में ढेर सारी बयानबाज़ियों के बाद ताओ-चिङ ने तय कर लिया था कि वह सच्चाई नहीं बतायेगी।

फिर भी, सियाओ-येन उसकी बहानेबाज़ी को भाँप गयी, और उसे विनोदपूर्ण ढंग से धकेल दिया। "फिर तो दौड़कर जाओ! मैं तुम्हारी सफलता की कामना करती हूँ। हाँ, घर लौटने में बहुत विलम्ब मत करना।"

ताओ-चिङ उलझनभरी मुस्कुराहट के साथ मुड़ी और चल दी।

जिस ठिकाने पर उसे पहुँचना था, वह पूर्वी मेहराब के पास स्थित, बड़े लाल

फाटक वाला विशाल भवन था। वहाँ पहुँचने पर, उसे एक स्वागतकक्ष में ले जाया गया, जो कुछ-कुछ जापानी शैली में सजाया गया था। एक लम्बे इन्तज़ार के बाद लहरियादार मूँछोंवाला और पश्चिमी शैली का सूट पहने एक आदमी अन्दर आया और विनम्रतापूर्वक चाय और सिगरेट की पेशकश की। ताओ-चिङ की उम्र और वह कहाँ से पढ़ी थी – इस सबके बारे में पूछताछ करते हुए, सारा समय अपनी अलसायी हुई चालबाज़ आँखों से जाँच-परख करता रहा। यद्यपि ताओ-चिङ को चिढ़ हो रही थी, फिर भी विवश होकर जवाब दिया, और इसके फ़ौरन बाद सवाल किया :

"आपका छोटा बच्चा कहाँ है, महाशय? वह कितने वर्ष का है? उसे क्या-क्या सिखाने की ज़रूरत पड़ेगी?"

वह थुलथुल, उजड्ड आदमी अचानक ठहाका मारकर हँसा और अपने दाँतों में भरा सोना चमकाते हुए सोफ़े पर पीठ टिकाकर पसर गया। फिर फुर्ती से अपनेआप को संयत करके, उसने अपनी मूँछें ऐंठीं, टाई सीधी की, और मुस्कुराते हुए जवाब दिया :

"कुमारी लिन, तुम एक बहुत ही कुशल युवती हो। मेरी पत्नी और मेरा बेटा अब भी हमारे महान देश – मेरा मतलब है जापान – में हैं। तुम अपना काम मुझको पढ़ाने से शुरू कर सकती हो। मैं तुमको अच्छा-ख़ासा वेतन दूँगा। मैं तुमको यक़ीन दिलाता हूँ कि तुम ढेर सारा पैसा कमा सकती हो!" वह फिर हँसने लगा।

ताओ-चिङ सन्न रह गयी, और थोड़ा अचकचाने के बाद, विक्षुब्ध हिरनी की तरह भाग निकली। जब वह इस विशाल भवन से कुछ दूर चली गयी तो उसने पीछे मुड़कर इसके ठाठदार लाल फाटक की ओर देखा, और अपनी कँपकँपाती उँगलियों से अपनी दिग्भ्रमित आँखों को मला।

वह वापस सियाओ-येन के घर न जाकर सीधे युङ-त्से से मुलाक़ात करने चली गयी।

ताओ-चिङ ने युङ-त्से को अपनी डेस्क पर लिखते हुए पाया। जब वह उससे हाथ मिलाने के लिए उठा, तो ताओ-चिङ ने अपना सिर हिला दिया और धम्म से कुर्सी पर बैठ गयी। वह अपने दोनों हाथों से अपना मुँह ढाँपकर, ख़ामोश और अविचल बैठी रही।

जब घड़ी की सुई ने टिक-टिक करते कई मिनट बिता दिये तो युङ-त्से घबराकर उसकी बग़ल में आकर खड़ा हो गया।

"क्या बात है, ताओ-चिङ?" उसने शिष्टतापूर्वक पूछा। "क्या तुम मुझसे नाराज़ हो गयी हो?"

"ओह, नहीं! तुम से नहीं! तुम मेरे बारे में चिन्तित मत होओ। मैं अभी एक मिनट में ठीक हो जाऊँगी।"

युङ-त्से आगे कुछ न बोला, परन्तु हताशभरी उलझन के साथ उसकी ओर देखता रहा। वह कमरा तब तक निःशब्द ही बना रहा जब तक कि ताओ-चिङ इतनी स्थिर चित्त नहीं हो गयी कि वह अपना सिर ऊपर कर सके और युङ-त्से की ओर एक फीकी मुस्कान के साथ देख सके।

"अब मैं एकदम ठीक हूँ। हादसे का दौर गुज़र चुका है... अब मैं अधिक स्पष्टता के साथ देख सकती हूँ कि चीन कुत्सा की बलिवेदी पर चढ़ा दिया गया है। चारों ओर दुश्चरित्र, अराजक, आतताई भरे पड़े हैं... युङ-त्से, क्या तुम च्याङ ताई कुङ की कहानी जानते हो? जब मैं बच्ची थी, तो मेरी बूढ़ी दाई अक्सर कहा करती थी : 'तुम्हारी तक़दीर बदल सकती है। च्याङ ताई कुङ सम्राट वेन वाङ से मिलने और प्रधानमन्त्री बनने से पहले जब मछली मारने जाता था तो अपनी कुटिया भूल जाता था, और जब आटा बेचता था तो अपनी टोकरी उलट देता था।' पर मुझे नहीं लगता कि कभी मेरी तक़दीर पलटेगी।" ताओ-चिङ ने अपने मन की कड़वाहट छिपाने की भरसक कोशिश की, लेकिन आँसू उसकी आँखों में उमड़ ही आये। तुरन्त अपनेआप को सहेजकर उसने अपना सिर एक बच्चे की भाँति पीछे की ओर झटका और चीख़ पड़ी, "लेकिन मैं तक़दीर में यक़ीन नहीं रखती। जो भी आयेगा, मैं उसे झेल लूँगी। आख़िरकार कोई न कोई रास्ता ढूँढ़कर ही मैं दम लूँगी।"

ताओ-चिङ ने उससे अपना नया अनुभव बयान किया, और युङ-त्से इसे ध्यानपूर्वक सुनता रहा। जब वह अपनी बात ख़त्म कर चुकी, तो स्वयं युङ-त्से अपनी सहज, स्वस्थ मनःस्थिति में न रह सका, और चहलक़दमी करते हुए कमरे के भीतर दो चक्कर लगा लेने के बाद वह गम्भीर और शालीन मुद्रा में ताओ-चिङ की ओर सम्मान का भाव जताते हुए मुड़ा।

"ताओ-चिङ, मुझे साफ़-साफ़ कह देने के लिए क्षमा करना!" वह कहने लगा। "हमारा एक-दूसरे के प्रति जो भाव है, उसे देखते हुए मेरे लिए अब और चुप बने रहना असम्भव हो रहा है। तुम जिस बेपरवाही से यहाँ-वहाँ दौड़-धूप कर रही हो, वह अत्यन्त ख़तरनाक है। आज के ज़माने में, तुमसे कहीं अधिक योग्य और अनुभवी लोग प्रायः मुसीबत में पड़ जा रहे हैं। लेकिन तब भी तुम जंगली बछेड़ी की भाँति इधर-उधर कुलाँचे भरती फिरती हो। क्या लाभ है इससे? आदर्श तो बहुत अच्छे लगते हैं, लेकिन तुम यथार्थ से तो मुँह नहीं मोड़ सकती। मुझे डर है कि तुम अगर ऐसा ही करती रही, तो जल्द ही टूट-बिखर जाओगी और तब तुम्हारे पास अपने दुखों को व्यक्त करने का कोई चारा भी नहीं बचेगा।"

ताओ-चिङ ने युङ-त्से के दुबले-पतले साँवले चेहरे और उसकी छोटी-छोटी चमकदार आँखों को एकटक देखा, और उसे अहसास हुआ कि वह न तो सुन्दर था और न ही परिष्कृत। फिर भी, वह उसे अपनी विचित्र सलाह दिये जा रहा था। ताओ-चिङ पहले से कहीं अधिक परेशान होकर बिना कुछ कहे चुपचाप उसे

ठण्डेपन से निहारती रही।

"प्रिये!" एक क्षण ख़ामोश रहने के बाद युङ-त्से ताओ-चिङ के क़रीब आ गया और उसे अपनी बाँहों में भरकर धीमे स्वर में बुदबुदाया, "ध्यान से सुनो, ताओ-चिङ! आकर मेरे साथ रहो। यह मैं तुमसे दसवीं बार कह रहा हूँ... ज़रा सोचो तो, जब मैं व्याख्यान सुनकर वापस आऊँगा तो तुम्हारे हाथों से तैयार किये गये स्वादिष्ट भोजन का आनन्द लूँगा। तब मैं और अधिक सक्षम होकर तुमको उस साहित्य के बारे में बताऊँगा, जिसको तुम इतना प्यार करती हो। अगर तुम चाहोगी, तो मैं तुमको किसी विषय पर कविता रचने में मदद दे सकूँगा। हालाँकि यह सच है कि मुझको ख़र्च करने के लिए घर से जो रक़म मिलती है वह बहुत अधिक नहीं है, फिर भी अगर हम थोड़ी किफ़ायत से काम लेंगे, तो इसी में हम दोनों का काम चल जायेगा। तुम इस तरह बौखलाकर इधर-उधर भाग-दौड़ करने के बजाय इस खुशी को क्यों नहीं स्वीकार करती जो तुम्हारी राह में पलक-पाँवड़े बिछाये हुए है? तुम न घर की हो पा रही हो, न घाट की, और सिर्फ़ दूसरों पर जी रही हो।"

"बहुत हो गया।" ताओ-चिङ ने युङ-त्से के मुँह पर अपना हाथ रख दिया, और फिर पीछे हटकर अपनी आँखों को ढाँप लिया। फिर, तुरन्त ही उसने ऊपर की ओर नज़र की और शिकायतभरे स्वर में बोली, "युङ-त्से, तुम बदल गये हो। मैं दूसरों पर जी रही हूँ? अगर मैं तुम्हारे साथ रहूँ, तो क्या यह भी तुम्हारे पर जीना नहीं होगा? कृपा करके हमारी हर मुलाक़ात में सिर्फ़ इसी बारे में बात करना बन्द कर दो। तुम भले ही न कहो, लेकिन मैं जानती हूँ कि तुम मेरी मौजूदा स्थिति का फ़ायदा उठाने की कोशिश कर रहे हो।" ताओ-चिङ के होंठ काँप रहे थे और ज़ाहिर था कि वह अपने क्रोध पर क़ाबू पाने की पुरज़ोर कोशिश कर रही थी।

उसकी बग़ल में घबराहटभरी मुद्रा में खड़े युङ-त्से ने उसे अपनी बाँहों में भर लिया और सफ़ाई देते हुए कहा :

"प्रिय ताओ-चिङ। ऐसा मत कहो! मैं तुमसे प्यार करता हूँ! मैं हमेशा-हमेशा तुमसे प्यार करता रहूँगा! तुम मेरी ज़िन्दगी हो, मेरी आत्मा हो – मैं तुम्हारे बिना ज़िन्दा नहीं रह सकता!"

ताओ-चिङ मुस्कुरा दी। इस तरह के तसल्लीभरे शब्द किसी के भी हृदय को पिघला देने के लिए काफ़ी थे। ख़ासतौर से एक ऐसी लड़की के हृदय को जो पहली-पहली बार प्यार में पड़ी हो।

——:o:——

अध्याय 9

ताओ-चिङ भले ही युङ-त्से को बहुत प्यार करती थी, फिर भी अभी शादी करने

की उसकी कोई इच्छा न थी।

वह बार-बार इसके लिए अनुरोध करता और वह हर बार इन्कार कर देती; अन्ततः युङ-त्से दुखी होकर बिस्तर पर जा पड़ा, रज़ाई से अपना सिर ढँक लिया, और अपनी कक्षाएँ छोड़ दीं। जब ताओ-चिङ ने उसकी यह हालत देखी तो चिन्तित होकर पूछा :

"क्या बात है, युङ-त्से? क्या तुम बीमार हो?" ताओ-चिङ ने उसका माथा छुआ लेकिन उसको कोई बुख़ार न था। उसकी उदास मुख-मुद्रा बता रही थी कि वह बेहद हताशा में डूबा हुआ था।

"बैठो, ताओ-चिङ।" युङ-त्से ने एक कड़वी मुस्कान के साथ ताओ-चिङ की ओर देखा। "मेरे सीने में दर्द है। इसके पहले भी मुझे दिल के दौरे पड़ चुके हैं, दरअसल एक बार तो मैं लगभग मरते-मरते ही बचा था, लेकिन पिछले कुछ वर्षों से मुझे कोई परेशानी न थी। कल ही मुझे एक दूसरा दौरा पड़ा। शायद यह इस वजह से हुआ कि..." उसने अपनी आँखें मूँद लीं और आगे कुछ न बोला।

"किस वजह से हुआ?" ताओ-चिङ ने चिन्तित होकर पूछा।

"छोड़ो, इस पर बात न करें।" युङ-त्से ने पुनः आँखें खोल दीं और अशक्त भाव से अपना सिर हिलाया।

"मेहरबानी करके साफ़-साफ़ बता दो कि क्या बात है?" ताओ-चिङ ने उसे हौले-से हिलाते हुए और घबराहट में बौखलाकर पूछा। "हकलाओ, हिचकिचाओ नहीं, और पहेलियाँ मत बुझाओ। अगर तुमको कुछ कहना हो, तो अच्छा होगा कि कह ही डालो।"

युङ-त्से की आँखें नम हो आयीं और उसके गालों पर आँसू ढुलकने लगे, जबकि उसकी पतली-पतली उँगलियाँ ताओ-चिङ के हाथ को दुखने की सीमा तक कसकर पकड़े हुई थीं। वह चकित होकर उसे तब तक देखती रही, जब तक कि उसने अपनी चुप्पी तोड़ न दी और ग़मगीन होकर बुदबुदाना नहीं शुरू कर दिया।

"ताओ-चिङ, सच-सच बताना! अगर तुम मुझसे प्यार नहीं करती, अगर मैं तुम्हारे प्यार के क़ाबिल नहीं, तो मुझसे सच-सच बता दो।"

कुछ मिनट तक तो ताओ-चिङ की समझ में कुछ न आया – वह एकदम भावशून्य नज़रों से उसे निहारती रही। आख़िरकार जब युङ-त्से का आशय उसकी समझ में आ गया तो उसने कसकर उसका हाथ पकड़ लिया, उसके हृदय में भावनाओं का द्वन्द्व चल रहा था।

"ऐसी बातें मत कहो, युङ-त्से।" वह चीख़ पड़ी। "तुम्हें इस तरह नहीं कहना चाहिए।" ताओ-चिङ ने अपने आँसू पोंछने के लिए अपना सिर दूसरी ओर फेर लिया – तो वह उसके प्यार की ख़ातिर बीमार था।

युङ-त्से के मुँह के कोनों पर मुस्कुराहट के लक्षण उभरने लगे, लेकिन इसे

तुरन्त रोककर उसने ताओ-चिङ को अपनी ओर खींचा और बिस्तर पर बिठा लिया। और फिर उदासीभरे स्वर में कहने लगा।

नहीं, तुम वास्तव में मुझसे प्यार नहीं करती। अगर मैं तुमको अपनी जीवनसंगिनी नहीं बना सका तो मेरा अपना जीवन एक सूखते पीले पत्ते की तरह लगने लगेगा... मुझे बचा लो, ताओ-चिङ! मैं तुम्हारे बिना नहीं जी सकता।"

प्यार के लिए जीवन-मरण का यह उद्‌गार उस व्यक्ति द्वारा प्रकट किया जा रहा था जिसने ताओ-चिङ के प्राण बचाये थे। युङ-त्से की बाँहों में रोती हुई ताओ-चिङ ने उसके साथ रहना स्वीकार कर लिया।

इस तरह एक नये जीवन की शुरुआत हुई।

वाङ परिवार में अपने ठहरने के आख़िरी दिन ताओ-चिङ को ऐसा महसूस हुआ जैसे वह घर से विदा होने वाली कोई वधू हो जिसको तमाम दुश्चिन्ताओं और अनिश्चतताओं ने घेर लिया हो। उसी रात काफ़ी देर में, जबकि उसका थोड़ा-सा सामान बाँधा जा चुका था, उसने सियाओ-येन का हाथ थामा और मन्द स्वर में कहा। सियाओ-येन, कल से मैं एक नये जीवन का आरम्भ करने जा रही हूँ। मुझे कुछ-कुछ डर लग रहा है। लेकिन मैं इसके अलावा और कर भी क्या सकती? मेरे पास दूसरा कोई विकल्प भी तो नहीं हैं। मुझे उम्मीद है कि तुम और अधिक मेहनत से अपनी पढ़ाई करोगी ताकि तुम्हारी आकांक्षा शीघ्र पूरी हो सके। तुम मुझसे अधिक खुशनसीब हो। मुझे मालूम नहीं कि मेरे भाग्य में क्या बदा है...।" उसने उदास होकर अपना सिर लटका लिया।

"लेकिन तुम मुझसे बहुत बहादुर हो।" सियाओ-येन ने मुस्कुराकर कहा। वह जल्दी-जल्दी अपने आँसू पोंछ रही थी जिनसे उसका चश्मा धुँधला गया था। "तुमने अपने जीवन की समस्याओं से निपटने में हमेशा ही काफ़ी दिलेरी दिखायी है। तुमने उन्हें जिस तरह से हल किया है, मैं उसकी तारीफ़ करती हूँ, और जैसाकि तुम जानती हो, मुझे तुम्हारी मुसीबतों के साथ पूरी हमदर्दी है, लेकिन मैं श्री यू के बारे में फ़िलहाल कोई राय नहीं बना पा रही हूँ। क्या तुमको विश्वास है कि तुम उसे अच्छी तरह समझती हो? तुम्हारे प्रति हमेशा वफ़ादार बना रहेगा? क्या तुम सचमुच उस पर पूरा-पूरा भरोसा कर सकती हो?" सियाओ-येन ने अपनी आशंकाएँ एक ऐसी विश्वासपात्र बहन की भाँति प्रकट कीं, जो उसको किसी भी अनिष्ट से बचा लेने की गरज़ से चिन्तातुर हो उठी हो।

ताओ-चिङ ने अपने सिर को ऊपर की ओर झटक दिया, उसकी आँखों में एक बच्चे जैसी चमक और दुराग्रह की भावना थी।

"सियाओ येन, क्या तुम सोचती हो कि सफल विवाह के लिए आदमी को फूलों से सजी कार में सवार होना और तीन बरेखियों और छह गवाहों को साथ रखना ज़रूरी है? मुझे इन भोंड़ी औपचारिकताओं से कुछ भी लेना-देना नहीं है। क्या

तुमने इज़ाडोरा डंकन की आत्मकथा पढ़ी है? वह एक शानदार पुस्तक है। इज़ाडोरा डंकन पश्चिमी जगत की एक महान आधुनिक नर्तकी थी, और उसे बचपन से ही अपना रास्ता स्वयं बनाना पड़ा था। उसके सामने अनगिनत मुसीबतें आयीं, लेकिन कभी उसने हिम्मत नहीं हारी, न ही कभी बुराई की ताक़त के आगे मत्था टेका। उसे सभी पुराने, घिसे-पिटे नैतिक मानदण्डों से नफ़रत थी। जब उसके दो बच्चे राईन नदी में डूबकर मर गये तो उसे इतना दुख हुआ कि उसने सोचा कि उसका एक और बच्चा होना चाहिए – हालाँकि उसका पति नहीं था। लिहाज़ा, वह समुद्रतट पर पड़ी-पड़ी तब तक इन्तज़ार करती रही, जब तक कि एक ख़ूबसूरत नौजवान नहीं आ पहुँचा। तब वह उठी और उसके पास गयी..."

तकल्लुफ़ मिज़ाज और अपने मन की तरंग में रहने वाली सियाओ-येन ने जब आमतौर पर मितभाषिणी ताओ-चिङ को पूरी गम्भीरता से इस रोमानी क़िस्से का उदाहरण देते सुना तो वह हँसी के मारे लोट-पोट होने लगी।

"लेकिन तुम इसे बहुत हल्के ढंग से ले रही हो, शैतान लड़की! कहीं युङ-त्से ने तुम्हें छोड़ दिया तब क्या करोगी?"

"मैं डरती नहीं हूँ!" ताओ-चिङ धीरे-से हँस दी। "मैं पुरुषों पर निर्भर नहीं हूँ। मैं उसके बिना भी जी सकती हूँ। इसके अलावा...तुम नहीं जानती कि वह मुझे कितना अधिक प्यार करता है।" वह इन शब्दों को कहकर लजा गयी और मुस्कुराने लगी।

सियाओ-येन ने चुहलबाज़ी की। "तुम्हारा मतलब क्या है? भला मैं जान भी कैसे सकती थी?"

दरअसल सियाओ-येन को ताओ-चिङ के बारे में मालूम था, वह प्रतिभासम्पन्न और पुस्तकें पढ़ने की शौक़ीन थी। वह जानती थी कि उसकी सहेली के पास उससे कहीं अधिक सामान्य ज्ञान था और उससे कहीं अधिक साहित्य की जानकारी थी। फिर भी वह ताओ-चिङ के लिए दुखी थी और परिवार ने उसके साथ जो सलूक किया था, उसको लेकर वह खिन्नता से भरी हुई थी। इसलिए वह अपनी सामर्थ्यभर उसकी सहायता के लिए कुछ भी करने को तैयार थी। लेकिन वह ताओ-चिङ में आत्मसंयम की कमी, तमाम समस्याओं से निपटने की उसकी हड़बड़ाहटभरी कोशिश और एक लड़की के रूप में ठीक न लगने वाले उसके ग़ैर-रिवाज़ी नज़रिये को कभी स्वीकार नहीं करती थी। फिर भी, वह बहस में ताओ-चिङ को कभी क़ायल न कर पाती, और जब कभी इन दोनों सहेलियों में कोई मतभेद पैदा हो जाता, तो हमेशा यही होता था कि सियाओ-येन हँसकर अपना दावा छोड़ देती थी।

"हाँ तो, ताओ-चिङ, मैं तहेदिल से तुम्हारे सुख की कामना करती हूँ!" सियाओ-येन को फिर अपने आँसू पोंछने के लिए अपना चश्मा उतार लेना पड़ा।

ताओ-चिङ भी भावुक हो उठी। उसने सियाओ-येन का हाथ थाम लिया और बहादुराना मुस्कान के साथ कहा :

"सियाओ-येन, तुम मेरी फ़िक्र मत करो। मैं किसी बुरे रास्ते पर नहीं जाऊँगी – तब तक तो बिल्कुल नहीं जब तक तुम जैसी सहेली के अनुरूप बने रहने की कोशिश करती रहूँगी..."

ताओ-चिङ और युङ-त्से एक अहाते के चारों ओर बने हॉस्टल के दो छोटे साफ़-सुथरे कमरों में साथ-साथ रहने लगे। उनकी पुस्तकों की आलमारी के ऊपर चीनी-मिट्टी का एक पुराना फूलदान सुशोभित था और डेस्क पर एक गमले में रखा हुआ था जिसमें नागदोन का फर्न सुशोभित था। एक दीवार पर तोल्सतोय के बुढ़ापे की एक तस्वीर लटक रही थी, दूसरी दीवार पर युवा दम्पत्ति की फ़ोटो लगी हुई थी, जिसके ख़ूबसूरत फ़्रेम से वे दोनों सभी देखने वालों पर मुस्कुराती हुई मुद्रा में दिखायी देते थे। एक शब्द में कहें, तो ये छोटे, पुरानी शैली के कमरे थे, जो येन-केन प्रकारेण, बसन्तकालीन आवास के लिए सुरुचिपूर्ण और पसन्द आ जाने लायक़, सादे परन्तु आकर्षक और लुभावने ढंग से बनाये गये थे।

युङ-त्से अब एक सुखी आदमी था। उसने अपनेआप को बधाई दी कि उसने एक बहुत ही असाध्य लड़की को हासिल कर लेने का सौभाग्य प्राप्त किया था। एक अत्यन्त ख़ूबसूरत और यौवन से भरपूर प्रेयसी को पा लिया था। बाहर निकलने से पहले वह उसे अपनी बाँहों में भर लेता और उसकी प्यारभरी आँखों में झाँकते हुए बुदबुदा उठता :

"प्रिये, मेरी प्रतीक्षा करना! मैं जल्द ही वापस आ जाऊँगा।"

प्यार में डूबता-उतराता हुआ वह उससे ऐसे विदा लेता, मानो किसी लम्बी यात्रा पर जा रहा हो।

दोपहर के वक़्त जब वह वापस आता, तो उस छोटी-सी मेज़ पर जो उनके खाने के काम के लिए इस्तेमाल होती थी, बैठने से पहले ताओ-चिङ को सीने से लगाकर उसका स्वागत करता। आत्मतुष्ट भाव से अपने जबड़े को रगड़ता हुआ वह मुस्कुराकर उससे पूछता :

"क्या लंच तैयार है? आज हम क्या खाने जा रहे हैं? चिल्ले और भुजिया अण्डे? बहुत बढ़िया, सचमुच मुझे तुम्हारे पकाये भोजन में बड़ा रस मिलता है। हमारा जीवन भरा-पूरा हो गया है। है न, ताओ-चिङ?"

यह सच था कि ताओ-चिङ भी खूब खुश थी। युङ-त्से के निरन्तर लाड़-प्यार और ख़याल रखने ने ताओ-चिङ की प्यार की चाहत को तुष्ट कर दिया था, जिससे वह अपने बचपन से ही वंचित रही थी। वह इस सुहावने घर के प्रति भी कृतज्ञता से भरी हुई थी जो उसकी बदौलत उसे मिला था। हालाँकि घर छोटा और साधारण था, फिर भी इसमें उसे पेइताइहो के उसके अनिश्चितताभरे जीवन के बाद शान्ति

महसूस हुई थी। बहरहाल, समय गुज़रते जाने के साथ-साथ वह बेचैन होने लगी और जब-तब हल्के अन्दाज़ में युङ-त्से से कह दिया करती, "तुम तो एक उपयोगी अध्ययन में लगे विश्वविद्यालयी छात्र हो, परन्तु मुझे तुम क्या कहोगे?"

वह उसे दिलासा देता :

"इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। हमारे कई प्रोफ़ेसरों की पत्नियाँ विश्वविद्यालय से स्नातक हैं, उनमें से कइयों ने तो विदेशों में भी शिक्षा ग्रहण की है, फिर भी वे अपने पतियों की अच्छी सहचरी हैं और अपने बच्चों की ख़ातिर एक अच्छी माँ बनने की गरज़ से घरों में रहती हैं। अगर तुमको ऐसा जीवन ऊबाऊ लगता हो ताओ-चिङ, तो तुम अध्ययन सामग्री जुटाने में मेरी मदद कर सकती हो अथवा कुछ नक़ल लिखने का काम कर सकती हो; तुम खाना पकाना या सिलाई करना सीख सकती हो, तुम तो जानती हो, हम हमेशा दो ही तो नहीं रहेंगे।" युङ-त्से मुस्कुराकर ताओ-चिङ का हाथ थामता और उसे चूम लेता।

"युङ-त्से, तुम क्यों हमेशा इसी तरह की बातें करते हो?" ताओ-चिङ उदास होकर पीछे खिसक गयी। "पेइताइहो में तो तुम्हारे ढेर सारे दिलचस्प विचार थे। मैं जीवन और कला सम्बन्धी तुम्हारे दृष्टिकोण की तारीफ़ किया करती थी। लेकिन अब तो तुम खाने-पीने और बच्चों के अलावा और कोई बात ही नहीं करते... तुम निश्चित तौर पर जानते हो कि मेरे जीवन का मक़सद इससे कहीं ज़्यादा है।"

"तब फिर तुम क्या करना चाहती हो?" युङ-त्से ने मुस्कुराते हुए पूछा।

"मैं आत्मनिर्भर बनना चाहती हूँ। मैं आज़ादी चाहती हूँ।"

"मुझे कोई एतराज़ नहीं है।" युङ-त्से ने तुरन्त अपना लहज़ा बदल दिया।

"मैं हमेशा से महिलाओं को किचन में क़ैद करके रखने के ख़िलाफ़ रहा हूँ। परन्तु यह एक सामाजिक समस्या है। अगर बाहर तुमको कोई काम न मिले तो?"

इसी तरह चलते-चलते एक दिन ऐसा आया, जब ताओ-चिङ ने ख़ुशी के मारे फूली न समाती हुई यह घोषणा कर दी :

"मुझे एक नौकरी मिल गयी है।"

"क्या? नौकरी मिल गयी?" युङ-त्से भौचक्का होकर उसे देखने लगा, लेकिन तुरन्त फिर संयत हो गया और पूछ पड़ा, "तुम्हारे लिए यह नौकरी किसने खोजी है?"

ताओ-चिङ ने विस्तारपूर्वक बता दिया कि उसकी एक सहपाठिनी के पिता ली यू-मेई ने पश्चिमी फाटक के निकट किताबों की एक दूकान खोल रखी है और उसे एक क्लर्क की आवश्यकता है। ताओ-चिङ को यह नौकरी देने की पेशकश की गयी थी और उसने इसे स्वीकार कर लिया था। अगले ही दिन से उसे काम शुरू कर देना था।

युङ-त्से उस शाम पूरी तरह उदास रहा। वह अपनी डेस्क पर अपना सिर हाथों

में थामे बैठा हुआ था। उसका चित्त एकाग्र नहीं हो पा रहा था। ताओ-चिङ ने जो सामान्य दिनों की अपेक्षा कहीं अधिक ख़ुश थी, अपनी पुस्तक पर से अपना सिर उठाकर उसकी ओर देखा और उसकी उदास मुद्रा पर ग़ौर करने लगी। उसने धीरे से छूते हुए युङ-त्से से पूछा :

"तुम इतने उदास क्यों हो, युङ-त्से? क्या तुम नहीं चाहते कि मैं नौकरी करूँ? तुम तो जानते हो कि इससे तुम्हें आर्थिक सहूलियत ही होगी।"

युङ-त्से ने उसका हाथ पकड़ लिया और आवेश से भरकर चिल्लाया :

"ताओ-चिङ, मैं तुम्हारे नौकरी करने के लिए बाहर जाने से नफ़रत करता हूँ। लगभग अगले एक साल मैं स्नातक हो जाऊँगा और मैंने अपने लिए, मेरा मतलब है – हम दोनों के भविष्य के लिए काफ़ी कुछ सोच रखा है। पिछले कुछ वर्षों से हू शिह और दूसरे विद्वान पुराने चीनी साहित्य के अध्ययन की माँग कर रहे हैं, और निश्चय ही, इस क्षेत्र में अनुसन्धान करने वालों का भविष्य उज्ज्वल है। जैसाकि तुम जानती हो, मैं इन दिनों शुद्ध साहित्य सम्बन्धी ढेर सारी पुस्तकें नहीं पढ़ रहा हूँ, बल्कि इस विषय की गहराई में डूबने के लिए पुस्तकालय जाता रहा हूँ। मैंने यही धारणा अपने दिमाग़ में रखकर इस विषय का चुनाव किया था। आजकल बेरोज़गारी बहुत है, लेकिन मुझे उम्मीद है कि स्नातक हो जाने के बाद मुझे एक ठीक-ठाक नौकरी पाने में कोई दिक़्क़त नहीं होगी, और तब हम आसानी से व्यवस्थित हो जायेंगे। यही कारण है कि मुझे अपनी प्रियतमा का बाहरी जीवन की आपाधापी में कूद पड़ना अच्छा नहीं लग रहा है। तुमको एक छोटी-सी किताब की दूकान में सहायक की नौकरी नहीं स्वीकार करनी चाहिए थी। क्या तुम्हें इस बात का ख़ौफ़ नहीं है कि तुम उस निदेशक हू के चुँगल में फँस सकती हो जिसको तुम्हारी सौतेली माँ ने तुम्हारे लिए ढूँढ़ा था?"

"मैंने उसका कोई पैसा नहीं खाया है, मैं क्यों उससे डरूँ?"

बुझे मन से ताओ-चिङ ने अपना हाथ पीछे खींच लिया। "युङ-त्से, सचमुच मैं तुमको नहीं समझ पाती।" वह चीख़कर बोली। "तुम महिलाओं की आत्मनिर्भरता का उपदेश तो झाड़ते ज़रूर हो, लेकिन तुम नहीं चाहते कि मैं बाहर जाकर नौकरी करूँ। फिर भी, युङ-त्से, मैं जाऊँगी ज़रूर! मेहरबानी करके मुझे रोकना नहीं।"

युङ-त्से उसे अच्छी तरह से जानता था, इसलिए दुखी होकर हामी भर देने और चुप्पी साध जाने के सिवाय वह और कुछ न बोला।

दूसरे दिन तड़के ही ताओ-चिङ ने अपनी नयी नौकरी शुरू करने के लिए ख़ुशी-ख़ुशी पूर्वी शहर से पश्चिमी फाटक के लिए प्रस्थान कर दिया। पहले दिन तो सबकुछ ठीक ढंग से गुज़र गया, काम कोई कठिन न था और उसे बहुत-सी नयी पुस्तकों में लीन होने का समय भी मिल गया। फिर भी, दूसरे और तीसरे दिन उसे खिन्नता महसूस होने लगी, और चौथा दिन आते-आते तो उसे ऐसा लगने लगा कि

अब वह और अधिक वहाँ पर नहीं टिक सकती। छठे दिन उसने इस्तीफ़ा दे दिया। दरअसल हुआ यह था कि दूसरे ही दिन कुछ लफंगे और बदमाश दूकान में घुस आये, और कोई ख़रीदारी करने के बजाय भारी हो-हल्ला मचाने लगे। एक ख़ूबसूरत जवान बिक्री-सहायिका के आ जाने से उनकी कुत्सित लालसा तीव्र हो उठी थी और मक्खियों के झुण्ड की भाँति आ-आकर दूकान पर मँडराने लगे थे। छठे दिन सुबह दूकान के फाटक पर यह गन्दी कविता लिखकर चिपका दी गयी थी :

अरे, कुछ भी बुरी नहीं यह किताब की दूकान,
आँखें लड़ाने और बुलाने को है एक सुन्दर लड़की जवान,
दान करो एक चुम्बन का या प्यारभरी नज़रों का,
और दे दूँगा एक पूरा डॉलर दस सेंट की पुस्तक का।

क्रोध के मारे काँपती हुई ताओ-चिङ ने फ़ौरन इस्तीफ़ा दे दिया। उसने उन थोड़े दिनों की अपनी तनख़्वाह भी नहीं ली जिनमें उसे अपमान के इतने घूँट पीने पड़े थे। इस अनुभव से वह कई दिनों तक खिन्न रही, और उसे निराशा होने लगी कि उसे कभी कोई नौकरी नहीं मिल पायेगी। अलबत्ता युङ-त्से यह सोच-सोचकर ख़ुश था कि चलो एक और बाज़ी उसके हाथ लग गयी थी।

इन लम्बे ख़ाली दिनों में ताओ-चिङ को पता चला कि उसकी स्कूल के दिनों की पुरानी सहेली चेन वेई-जू ने अपनी मर्ज़ी से शादी कर ली थी और एक दिन वह प्रसन्न महसूस करती हुई उससे मिलने चली गयी। लेकिन ताओ-चिङ यह देखकर हतप्रभ हो गयी कि उसकी सहेली के बाल अत्याधुनिक फ़ैशन में लहरा रहे थे, उसके चेहरे पर भारी मेकअप था। यह सीधी-साधी स्कूली लड़की एक गुलाबी रंग के रेशमी गाऊन में सज-धजकर और बेल-बूटेदार स्लीपर पहने फ़ैशनपरस्त महिला में तब्दील हो चुकी थी।

अन्यमनस्क भाव से सोफ़े पर बैठते हुए ताओ-चिङ ने चकित भाव से सोचा, "यह क्यों इतने हास्यास्पद रूप में बदल गयी है?"

वेई-जू उसे देखकर बहुत ख़ुश हुई। अपनी पुरानी सहेली का हाथ पकड़कर वह स्नेहपूर्वक उसे एक भीतरी कक्ष में ले गयी :

"आया, ज़रा चाय लाना तो! एक आदरणीय मेहमान आयी हैं!"

ताओ-चिङ ने अपने मनोभावों को दबाते हुए और उस आकर्षक रूप में सजे कमरे का निरीक्षण करते हुए, वेई-जू से जानना चाहा कि पिछले क़रीब एक वर्ष में वह क्या करती रही है।

"बताती हूँ, प्यारी!" वेई-जू ने आत्मतुष्ट भाव से मुस्कुराकर अपने होंठों पर एक महीन रेशमी रूमाल थपथपाया। "हम लोगों के अलग-अलग हो जाने के बाद, मैंने किसी विश्वविद्यालय के लिए प्रवेश-परीक्षा नहीं दी। मेरे मौसेरे भाई ने मेरा

परिचय श्री पान से करा दिया, और उसके फ़ौरन बाद हमारी शादी हो गयी। मेरे पति नानकाई विश्वविद्यालय के स्नातक, और येन येह कमर्शियल बैंक के सहायक प्रबन्धक हैं। हम बड़े मज़े में हैं। उन्होंने यह जगह पिछले वर्ष ख़रीदी थी ताकि हम एक साथ रह सकें – देखो तो, सिर्फ़ फ़र्नीचर की ही क़ीमत दो हज़ार युआन से अधिक है। वह एक अच्छे आदमी हैं, प्यारी, उन तमाम मर्दों जैसे नहीं जो एक बार हाथ में पैसा आ जाने पर नाचनेवाली लड़कियों का चक्कर लगाने लगते हैं। वह अपने दफ़्तर से सीधे घर चले आते हैं। एक महीना पहले मुझे एक स्वस्थ बच्चा हुआ है। हम उसे पेई-पेई कहकर बुलाते हैं। वह बहुत प्यारा बच्चा है, और उसके पिता तो उस पर जान छिड़कते हैं।" वेई-जू ख़ुशी के मारे शेखी बघारती रही, वह जब तब अपने बालों को सहला लिया करती, और फिर अपने पाँवों पर झुककर खड़ी होती हुई पुकार उठी :

"आया! पेई-पेई को यहाँ लाओ। मैं उसे अपने मेहमान को दिखाना चाहती हूँ।"

वेई-जू बच्चे की प्रतीक्षा में बैठ गयी, उसने ताओ-चिङ की ओर देखा और व्यग्र होकर पूछा!

"मेरी प्यारी, क्या अब भी तुम पहले की तरह ही झक्की हो? अपनी अच्छी भली शक्ल-सूरत के चलते तुम मुझसे कहीं अधिक अच्छा पति पा सकती थी।" वेई-जू अपने लिपस्टिक पुते होंठों पर रूमाल रखकर बोलती गयी, "किसी ने मुझे बताया कि तुम विश्वविद्यालय के किसी छात्र के साथ रह रही हो? क्या यह सच है?"

ताओ-चिङ ने बिना एक शब्द कहे हामी भर दी।

"अरे, लेकिन क्यों? मेरी तो समझ में ही नहीं आ रहा..." वेई-जू खिन्न हो गयी और अपनी पतली काली भौंहें कमान कर लीं। "जब हम स्कूल में पढ़ती थीं, तो मैं पढ़ाई में उतनी अच्छी नहीं थी जितनी कि तुम, लेकिन अब... क्या कारण है, आख़िर तुम सोचती क्यों नहीं...पेई-पेई के पापा..." ताओ-चिङ इस बेसिर-पैर की भाषणबाज़ी के दौरान ही बोल पड़ी!

"क्या कारण है, वेई-जू, तुम बहुत बदल गयी हो!" सोफ़े पर बैठे-बैठे ही ताओ-चिङ ने अपनी सहेली की कमान बनी भौंहों को देखा और कहा : "तुम्हें याद है न, उस छोटे चश्मे के किनारे, जो स्कूल से बहुत दूर न था, टहलते हुए हम इस कलंकभरे, विद्रूप समाज की भर्त्सना किया करती थीं और क़समें खाया करती थीं कि चाहे जो कुछ हो जाये, हम हमेशा अपने विचारों के प्रति ईमानदार बनी रहेंगी? जब मेरी सौतेली माँ ने मुझे स्कूल-ख़र्च के लिए पैसे देना बन्द इसलिए कर दिया कि वह मेरी शादी एक धनी आदमी से करना चाहती थी जिसके लिए मैं तैयार न थी, तब तुम इतनी बौखलायी थी कि चिल्लाने लगी थी और तुम्हीं ने मुझे घुटने न

टेकने के लिए प्रोत्साहित किया था। तुमको यह सब याद है न? तब फिर क्यों मुझे किसी धनी आदमी से शादी कर लेने पर ज़ोर दे रही हो? क्या किसी आदमी से प्यार करना सिर्फ़ इसीलिए मुमकिन होता है कि वह धनी है?"

वेई-जू अभी-अभी अपने बच्चे को आया के हाथों से थाम रही थी; परन्तु पुनः उसने उसे उस महिला के पास यह कहते हुए वापस कर दिया, "पेई-पेई को ले जाओ!" चकित दृष्टि से मुड़कर ताओ-चिङ को धुरकर देखा और तमककर प्रत्युत्तर में अधिक तीखे स्वर में बोली :

"क्या हो गया है तुमको? मेहरबानी करके मुझे ग़लत मत समझो! मैं तुम पर किसी धनी आदमी से शादी करने के लिए ज़ोर नहीं डाल रही हूँ। तुम जो चाहो करने के लिए आज़ाद हो।" वेई-जू ने फ़र्श की ओर देखते हुए एक गहरी साँस खींची। "स्कूल में तो हम सभी बचकाने भ्रम पाले हुए थीं, लेकिन तुम अभी तक उनको लेकर गम्भीर हो। यह विचित्र लगता है। आदमी को कुछ अधिक व्यावहारिक होना चाहिए..."

यह देखकर कि ताओ-चिङ जाने के लिए उठ खड़ी हो गयी थी, वेई-जू ने बोलना बन्द कर दिया। इस मनहूस टकराव ने उन दोनों की दोस्ती का अन्त कर दिया।

——:o:——

अध्याय 10

जाड़े का मौसम था। चन्द्र-नव वर्ष से बहुत पहले की बात नहीं है, जब एक रविवार को बर्फ़ पड़ रही थी और युङ-त्से पैकेटों का एक गट्ठर लादे घर आया। उनमें पेइपिङ के सबसे बढ़िया भोजनालय से सुस्वादु भुनी हुई बत्तख और पका हुआ सुअर का माँस, स्वादिष्ट रोल और पेस्ट्रियों के साथ-साथ एक बोतल ब्राण्डी थी। जब ताओ-चिङ ने इन पैकेटों को उससे ले लो, तो उत्सुकतावश पूछा :

"आज तुमने इतनी ढेर सारी महँगी चीज़ें क्यों ख़रीद लीं?"

युङ-त्से ने नज़ाकत से ताओ-चिङ के गालों को चूम लिया और खुश होकर बताया :

"मैंने एक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति को खाने की दावत दी है। चलो, कमरे को झाड़-पोंछ दें और मेज़ लगा दें।"

"वह महत्त्वपूर्ण व्यक्ति कौन है? मैं यहाँ किसी महत्त्वपूर्ण व्यक्ति की ख़ातिरदारी करने के लिए नहीं हूँ।" ताओ-चिङ ने टस से मस होने से इन्कार कर दिया और मुँह फुला लिया।

युङ-त्से ने उसका हाथ अपने चेहरे पर रखा। "मेरे गाल को छूकर देखो, बर्फ़

की तरह ठण्डे हो गये हैं, क्योंकि इस कड़ाके की सर्दी में मैं ख़रीद-फ़रोख़्त करता रहा हूँ, तिसपर भी मेरे लिए सहानुभूति का एक शब्द तुम्हारे पास नहीं है। आओ मुझे थोड़ी गरमी दो।"

ताओ-चिङ ने मुस्कुराकर अपना हाथ पीछे खींच लिया। "बताओ न मुझे, कौन आ रहा है?"

"तुम्हें जल्द ही मालूम हो जायेगा," युङ-त्से ने ताओ-चिङ को चिढ़ाने के अन्दाज़ में कहा। "वह हमारे बड़े काम का सिद्ध हो सकता है। तुम्हें अच्छा मेज़बान बनना पड़ेगा और उसकी अच्छी ख़ातिर करनी होगी... क्या हम ये चीज़ें प्लेटों में सजा दें? बाद में, इन रोलों को तुम स्टीमर में गर्म कर देना। नहीं, ठहरो! पहले उन दो सुङवंशीय प्यालों को बाहर निकाल लो। यही तो मौक़ा है हमारे सबसे बढ़िया और सबसे पुराने चीनी मिट्टी के बरतनों को निकालने का।"

उन्होंने कमरे को ठीक-ठाक करके अभी मेज़ लगायी ही थी कि बाहर से एक आवाज़ आयी : "क्या युङचुआङ गाँव के छोटे सरकार यू यहीं रहते हैं?"

ताओ-चिङ फाटक खोलने दौड़ पड़ी। बाहर एक जरा-जीर्ण, फटेहाल वृद्ध खड़ा था, जो अपने कपड़ों पर से बर्फ़ और धूल झाड़ते हुए, काँपते स्वर में पूछ रहा था :

"कृपा करके...क्या छोटे सरकार यू यही रहते हैं?"

"अन्दर आओ!" इसके पहले कि वह बूढ़े को अन्दर ले जाती, युङ-त्से ही उनके पास पूछते हुए पहुँच गया :

"क्या चाहते हो तुम?"

युङ-त्से पर नज़र पड़ते ही वह बूढ़ा ख़ुशी के मारे आगे की ओर लपका, उसके झुर्रीदार चेहरे पर मुस्कुराहट फैल गयी। "अरे, छोटे सरकार, तो आप यहीं रहते हैं। मुझे तो बड़ी परेशानी उठानी पड़ी आपको ढूँढ़ने में।" बिना किसी इजाज़त की परवाह किये वह अन्दर आने लगा। उसके कन्धे पर दो जेबोंवाला एक थैला था, मेला जा रहे उत्तरी चीन के किसान की तरह।

"कौन हो तुम?" युङ-त्से ने उसे आगे बढ़ने से रोकने के लिए अपनी बाँह उठायी।

"मैं? अरे, मैं ही तो तीसरा चाचा वेई हूँ जो आपके घर के सामने रहता है। क्या आप मुझे पहचान नहीं रहे?" बूढ़े का दबा-पिचका, झुर्रीदार चेहरा स्याह पड़ गया। और वह खोयी नज़रों से युङ-त्से को अपलक देखने लगा।

"ओह, तो तुम हो, तीसरे वेई।" ऐसा लग रहा था जैसे युङ-त्से को अभी-अभी याद हो आया हो। उसने ताओ-चिङ को उसके बारे में बताते हुए, उसका परिचय दिया : "यह गाँव का मेरा एक पुराना असामी है।"

चूँकि बूढ़ा सफ़र करते-करते मैला-कुचैला हो गया था और थक चुका था,

इसलिए ताओ-चिङ ने अनुमान लगाया कि उसे सर्दी लग रही होगी और वह भूखा भी होगा, लिहाज़ा वह झपटकर एक स्टूल लायी और उसे आग के पास बैठा दिया।

"खाना खाया है?" ताओ-चिङ ने पूछा। "तुम भी शामिल हो जाना..." इसके पहले कि वह "हमारी दावत में" कह पाती, युङ-त्से ने भड़ककर उसकी ओर घूरा। मेज़ पर रखे सुस्वादु पकवानों और उम्मीद के मुताबिक़ जल्द ही आ पहुँचने वाले मेहमान का ख़याल करके, ताओ-चिङ ने सिर झुका लिया और बाहर जाकर कुछ मोटी रोटियाँ लायी और उसने उस बूढ़े किसान के हाथों पर रखकर खाने का आग्रह किया।

"आप बहुत अच्छी हैं। कोई तकलीफ़ न करें..." उसने देहाती तहज़ीब के साथ खाने की सामग्री ले ली और खाना शुरू कर दिया। युङ-त्से कपड़े का परदा लगे दरवाज़े से होकर एक भीतरी कमरे में जाकर अन्तर्धान हो गया था, जबकि ताओ-चिङ उस बूढ़े के पास बैठी हुई थी। उसने बेहद भूखे व्यक्ति की तरह खाना खाया और जल्द ही उन रोटियों को चट कर गया; उसके बाद उसने अपनी तम्बाकू की थैली और पाइप निकाली। पाइप सुलगाकर, बूढ़े ने अपनी सिकुड़ी-सिमटी आँखों में कृतज्ञता का भाव लिये मुस्कानपूर्वक ताओ-चिङ की ओर देखा, और गद्‌गद कण्ठ से बोला :

"आप कुमारी लिन हैं न, जो हमारे गाँव में पढ़ाती थीं, क्यों?"

"हाँ, चाचा। तुम अभी तक मुझको याद रखे हुए हो?"

"मुझे याद रखना ही चाहिए। मेरा सबसे बड़ा पोता, पप्पी आपका एक छात्र था। जब वह स्कूल से वापस घर आता था, तो हमेशा कहा करता था कि कुमारी लिन बहुत अच्छी अध्यापिका हैं। वह बताता था कि कुमारी लिन जापानियों से लड़ना चाहती हैं।"

युङ-त्से कुछ किताबें लिये पुनः प्रकट हुआ और बूढ़े की बात को, बीच ही में सवाल करके रोक दिया :

"चाचा वेई, तुम किस काम से मेरे पास आये हो? मुझे जल्दी बताओ। मुझे अभी एक व्याख्यान सुनने जाना है।"

बूढ़ा इतना हक्का-बक्का हो गया कि उसके हाथ का पाइप काँपने लगा। धीरे-धीरे काफ़ी कोशिश करके उसने अपनेआप को सँभाला, राख झाड़ी तथा पाइप और थैली दोनों को वापस अपनी जेब में घुसेड़ दिया, परन्तु सवाल का कोई सीधा जवाब नहीं दिया।

"सरकार यू," उसने कहना चालू किया, "आप पढ़े-लिखे आदमी हैं। आप स्वयं समझ जायेंगे। मैं उस घाटी वाली ज़मीन पर खेती करता हूँ जो आपकी है, लेकिन यह पिछले तीन वर्षों से लगातार बाढ़ में डूब जा रही है। मेरे पास कोई फ़सल नहीं बची है। और मेरी पत्नी भूख से मर चुकी है। भूख ने ही मेरे बेटे, यानी

आपके दोस्त वू-फू, को सेना में भरती होने के लिए दूर खदेड़ दिया। घर पर सिर्फ़ पप्पी और उसकी माँ बचे हुए हैं – मुझे अपने दिल पर पत्थर रखना पड़ा और वू-फू की बहन यू-लाई को बेच देना पड़ा। हमें नहीं मालूम कि अब वह कहाँ है?"

बूढ़े की व्यथा-कथा लम्बी खिंचती हुई मालूम पड़ रही थी, लिहाज़ा युङ-त्से ने मेज़ को ठकठकाया और फिर बीच में ही टोक दिया :

"चाचा वेई, बताओ तुम यहाँ किस मक़सद से आये हो? अगर कोई जल्दी न हो तो तुम मेरे वापस आने तक इन्तज़ार करो, अब मुझे जाना है।"

"मत जाइये, सरकार! अभी मत जाइये। मैं आपको अधिक देर तक नहीं रोकूँगा।" बूढ़ा उठ खड़ा हुआ और टूटती आवाज़ में फफकते हुए ऐसे लपका मानो युङ-त्से को पकड़ लेना चाहता हो।

"हम जैसे ग़रीब जन इन दिनों किसी भी तरह से कोई कमाई नहीं कर सकते। मैं दो वर्षों से लगान नहीं चुका पा रहा हूँ – अपके पिता जो मुझ पर दबाव डाले जा रहे हैं..." बूढ़े ने अपना सिर हिलाया और गहरी साँस खींची। यकायक वह अपनी जेबें टटोलने लगा और थोड़ी देर में एक मुड़ा-तुड़ा लिफ़ाफ़ा बाहर निकाला। लिफ़ाफ़े को ऊपर उठाते हुए, उसने अपने काँपते हाथों से युङ-त्से को दे दिया।" देखिये, यह चिट्ठी आपके दोस्त वू-फू ने सेना से भेजी है। हम बेहद ख़ुश हुए थे इसको पाकर! उसने लिखा था कि वह पेइपिङ से बाहर चाङ सुङ तिएन में ठहरा हुआ है, और मैं उससे मिलने के लिए यहाँ चला आया।"

"इसका क्या तुक था?" युङ-त्से बूढ़े किसान की मूर्खता पर मुस्कुरा उठा।

"आप ठीक कहते हैं, श्रीमान! कोई तुक न था। मैं कई सौ *ली* तय करके यहाँ आया हूँ और इसके लिए बड़ी मुश्किल से चार युआन ट्रेन-भाड़े के लिए क़र्ज़ लिया था; लेकिन जब मैं वहाँ पहुँचा तो वह वहाँ से कूच कर चुका था। उसकी यूनिट कहीं दूर भेज दी गयी है, मुझे नहीं मालूम कि कहाँ... घर पर हम सभी आस लगाये हुए थे कि उससे मुलाक़ात हो जायेगी और हमें कुछ मदद मिल जायेगी। अगर उससे आपके पिता को लगान दे देने की रक़म ही मिल गयी होती, तब भी अच्छा हुआ होता। लेकिन ऊपरवाला अन्धा है; हमें नहीं मालूम कि उसे कहाँ भेज दिया गया है। आजकल जैसे मुसीबत के समय में किसी भी दिन लड़ाई छिड़ सकती है। बस एक गोली, और मेरा बच्चा..." व्यथा के मारे उसाँसें लेते हुए वह थर्राकर एक स्टूल पर बैठ गया। ताओ-चिङ का हृदय उसके लिए द्रवित हो उठा और, जब बूढ़े ने अपनी आँखें अपने मैले-कुचैले हाथ से पोंछी, तो वह उसे एक तौलिया लाकर देने के लिए लपकी, लेकिन वह तौलिया उसके हाथ में दे पाती, इससे पहले ही युङ-त्से ने एक भोंड़ी मुस्कान के साथ उसे झपट लिया और बूढ़े की ओर मुड़ गया।

"ख़ुश हो जाओ, चाचा वेई। तुमने कहा है कि वापस घर जाने के लिए तुम्हारे पास किराया नहीं है? चिन्ता मत करो। मैं इस मद में तुमको एक युआन दे रहा हूँ

और बाक़ी रक़म तुम दूसरों से उधार ले लेना, लेकिन जितनी जल्दी हो सके, तुम घर चले जाओ।" युङ-त्से ने एक युआन का एक नोट अपनी जेब से निकाला और बूढ़े के पास वाली मेज़ पर रखकर ताओ-चिङ की ओर मुस्कुराया। मानो कहना चाहता था, "देखो, मैं कितना उदार हूँ।"

बूढ़े का चेहरा यह संवाद सुनकर खिल उठा था, लेकिन जैसे ही उसने देखा कि उसे महज़ एक युआन देकर टरकाया जा रहा है तो वह टीस से भरकर ऐंठ गया। एक क्षण तक युङ-त्से की ओर एकटक निहारते रहने के बाद, वह पास में खड़ी ताओ-चिङ की तरफ़ मुड़ा।

"मालिक यू, एक उपकार कर दीजिये।" वह गिड़गिड़ाने लगा, उसके होंठ काँपने लगे। "मेरा परिवार भूख के मारे एक-एक करके ख़त्म होता जा रहा है। एक युआन – हाय, इतने में तो मैं घर भी नहीं पहुँच पाऊँगा। मैं जानता हूँ कि आप दयावान हैं, सरकार! जब आप बच्चे थे तो आप वू-फू को भाप में पकायी हुई रोलें दिया करते थे..." उसकी धुँधलायी बूढ़ी आँखें आँसुओं से भर उठीं। "मुझे नौ या दस युआन तो दीजिये श्रीमान, तब तो आप हम लोगों की प्राण-रक्षा कर देंगे। मुझे पप्पी और उसकी माँ के पास ख़ाली हाथ मत लौटने दीजिये सरकार।"

"चाचा वेई, अगर तुम असामी लोग अपना लगान नहीं दोगे, तो मेरे पिता मुझको कैसे रक़म भेज पायेंगे? मैं एक छात्र हूँ, कोई तनख़्वाह तो पाता नहीं। यहाँ तक कि यह एक युआन भी मेरी औक़ात से ज़्यादा ही है।" युङ-त्से ने चोर नज़र ताओ-चिङ पर डाली, लेकिन वह कमरे से बाहर जा चुकी थी, और इससे पहले कि युङ-त्से कुछ और कहता, वह बूढ़ा हिलते-काँपते उठ खड़ा हो गया, और अपना थैला अपने कन्धे पर इस तरह लाद लिया जैसे वह आधा टन भारी हो। बूढ़ा डगमग चाल से दरवाज़े तक पहुँचकर बुदबुदाया :

"ठीक है, ठीक है। जब कोई आदमी विपत्ति में पड़ता है, तो हमेशा यही होता है।"

युङ-त्से ने मेज़ पर पड़ा एक युआन का नोट अपनी जेब में रख लिया और इस आगन्तुक को बाहर जाते हुए देखने तक की भी ज़हमत गवारा नहीं की।

"ज़रा ठहरो, चाचा।" ताओ-चिङ ने बूढ़े किसान को फाटक पर रोक दिया, वह अपने हाथ में एक नोट दबाये हुए थी। "चाचा, यह लो दस युआन! मैं जानती हूँ कि यह भी काफ़ी नहीं है, लेकिन..." वह अचकचायी, मुड़कर अपने कमरे की ओर देखा और फिर बोली, "क्या तुमको स्टेशन जाने का रास्ता मालूम है? इस पैसे को सँभालकर रखना! ट्रेन में जेबकतरे होंगे।"

नोट को किसी सुरक्षित जगह छिपाने की गरज से जब बूढ़ा निराश भाव से अपने कपड़े-लत्ते को टटोलने लगा, तो फिर उसकी आँखों से आँसुओं की धार बहने लगी। आख़िर में वह बुदबुदाते हुए बोला :

"रहमदिल हर जगह हैं। रहमदिल... आपका भला हो, आपका भला हो। हमारा परिवार कभी नहीं जान पायेगा कि कैसे आपका शुक्रिया अदा करें!"

इस दृश्य ने ताओ-चिङ की भी आँखों में आँसू छलछला दिये। अचानक उसे अपने सफ़ेद बालों वाले नाना, और वह सारी परिस्थिति याद हो आयी जिससे होकर उन्हें गुज़रना पड़ा था। ग़रीब जन, ग़रीब काश्तकार – क्या इस दुनिया में इनके दुखों का कोई अन्त न था? – भारी मन लिये वह फाटक के पास खड़ी रही जबकि वह बूढ़ा बार-बार पीछे मुड़कर देखता हुआ धीमी चाल से चला जा रहा था। जब वह आँख से ओझल हो चुका, तो ताओ-चिङ ने अपने कमरे में वापस लौटकर देखा कि युङ-त्से गुस्से के मारे आगबबूला है।

"तुमने उस बूढ़े को पैसा दिया?" युङ-त्से ने शिकायती स्वर में सवाल किया; उसकी भौंहें क्रोध में कमान बनी हुई थीं।

ताओ-चिङ ने निश्चल भाव से उसकी ओर देखा और सिर हिलाकर कहा, "हाँ।"

"कितने?"

"दस युआन।"

"मेरे पैसे से दान की देवी बनी हुई हो? तुम क्या समझती हो?" यह पहला मौक़ा था जब युङ-त्से इतनी रुखाई के साथ उससे बोला था, लिहाज़ा ताओ-चिङ को सहसा अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। "क्या मतलब? तुम तो मानवता और न्याय के अलावा दूसरी कोई बात ही नहीं करते, इसके बावजूद तुम ग़रीबों के साथ ऐसा सलूक करते हो! अपने पैसों के लिए परेशान मत हो -- मैं तुमको वापस कर दूँगी।" ताओ-चिङ जाकर बिस्तर पर लेट गयी, अपना सिर रज़ाई से ढँक लिया और ऐसे रोने लगी जैसे उसका हृदय फट जायेगा। क़िस्मत की मारी और मोहभंग की शिकार वह अपने आँसू न रोक सकी। क्या यह वही आदमी था जिसे उसने इतना प्यार किया था?

जब युङ-त्से ने देखा कि ताओ-चिङ को मर्मान्तक ठेस पहुँची है, तो वह अपनी नाराज़गी भूल गया और अपनी बाँहें ताओ-चिङ के गले में डालकर माफ़ी माँगी। क्षण ही भर में, वह फिर से प्यार और दया का देवता बन गया।

"मुझे माफ़ कर दो, प्रिये!" युङ-त्से गिड़गिड़ाया। "मैं ग़लती पर था। दरअसल मैं अपने बजट के बारे में सोच रहा था। यक़ीनन मैं स्वार्थी नहीं हूँ। इसीलिए तो वह बूढ़ा उधार माँगने मेरे पास चला आया था। उसे मालूम है कि मैं अपने बाप की तरह नहीं हूँ..." कुछ रुककर उसने फिर कहना शुरू किया : "कृपया नाराज़ न हो ताओ-चिङ। तुमको खुश रखने के लिए दस की क्या बात है, मैं वह पूरे पचास युआन भी इसे देकर परेशान नहीं होता जो अभी-अभी मेरे पास घर से आया है।"

ताओ-चिङ उसकी बातों पर ज़्यादा ग़ौर नहीं कर रही थी, फिर भी उसकी

तूफ़ानी मुख-मुद्रा कुछ नरम पड़ गयी और उसके आँसू भी थम चले। युङ-त्से ने उसे उठाकर खड़ा किया, उसके बालों को सहलाया और पाउडर-पफ़ से उसके आँसू से भीगे गालों को थपथपाया। "मैं नहीं समझता कि चाङ चाङ, जो अपनी पत्नी का मन रखने के लिए उसकी बरौनियाँ रँगा करता था, मेरे जैसा प्यारभरा पति रहा होगा," युङ-त्से ने शेखी बघारते हुए कहा। "अब रूठना बन्द करो, तो मैं तुमको एक मज़ेदार कहानी सुनाऊँ। जब मैं बच्चा था, तो बूढ़े वेई के बेटे वू-फू से मेरी दोस्ती थी। हम दोनों के परिवार एक-दूसरे के आमने-सामने रहते थे, और हम अक्सर आस-पास के पोखरों में नहाने और खेलने के लिए साथ-साथ जाया करते थे। जब मैं पैदा हुआ तो मेरे पिता की उम्र पचास वर्ष से अधिक थी, और मेरे परिवार के लोग लाड़-प्यार से मेरा पालन-पोषण करते थे। तैरने की मनाही थी, लेकिन मैं छिपकर चला जाता; और अगर कोई मुझे खोजते हुए पहुँच जाता, तो वू-फू और दूसरे लड़के मुझे पानी में घेरकर खड़े हो जाते और मुझे अपनी ओट में छिपा लेते थे। मैं कभी-कभी अपने किचन से भाँप की सेंकी रोलें अपने दोस्तों के लिए ले आता। एक दिन रोलों की एक ताज़ा ढेरी अभी तैयार ही हुई थी और जैसे ही बावर्ची ने अपनी पीठ उस तरफ़ की, मैंने खिड़की के रास्ते घुसकर वह ढेरी हथिया ली, उन्हें एक थैले में भरा और ले भागा। जब बावर्ची ने चारों ओर नज़र दौड़ाकर देखा कि रोलें नहीं हैं, तब उसे विश्वास हो गया कि कोई लोमड़ी परी वहाँ ज़रूर आयी होगी। क्या यह एक मज़ेदार लतीफ़ा नहीं रहा?"

"शानदार लतीफ़ा रहा।" ताओ-चिङ ने ठण्डेपन से जवाब दिया। "इतने उदार तुम आज क्यों नहीं रहे? क्यों तुमने इन बढ़िया व्यंजनों में उस बूढ़े को नहीं शरीक़ होने दिया?"

"कौन कहता है कि मैं उदार नहीं हूँ?" युङ-त्से ने गर्वीले स्वर में जवाब दिया। जब मेरे पिता मरेंगे और मैं घर का मालिक बनूँगा, तब मैं तोल्स्तोय की तरह आचरण करूँगा – अपनी सारी ज़मीन किसानों में बाँट दूँगा।"

"बाँट दोगे?" ताओ-चिङ ने नाक-भौंह सिकोड़ ली। "इतने सारे वर्षों तक किसानों का ख़ून चूसने के बाद, तुम उनके हितैषी बन जाओगे?"

युङ-त्से जवाब में कुछ नहीं बोला। वह तो उस "महत्त्वपूर्ण" मेहमान के बारे में सोच रहा था, और इसीलिए ताओ-चिङ की बात अनसुनी कर दी।

जैसे ही यह झंझावात ख़त्म हुआ, उनका मेहमान आ पहुँचा। वह हट्टा-कट्टा और मज़बूत क़द-काठी का पहलवान जैसा व्यक्ति था, जो एक ढीला-ढाला पतलून और कवायदी जूते पहने हुए था। उसकी बड़ी-बड़ी आँखें ख़ासतौर पर चतुराई से भरी हुई प्रतीत होती थीं। युङ-त्से ने गर्मजोशी के साथ उसका परिचय ताओ-चिङ से कराया :

"यह लो ता-फाङ है, इतिहास विभाग का एक सहपाठी... और यह लिन

ताओ-चिङ है, मेरी प्रियतमा।"

लो ता-फाङ ने अपना विशाल हाथ बढ़ाकर गर्म जोशी के साथ ताओ-चिङ से हाथ मिलाया और मुस्कुरा दिया।

"तुमसे मिलकर बड़ी ख़ुशी हुई। अब तो तुम न पढ़ रही हो और न कोई नौकरी ही कर रही हो?"

यद्यपि ताओ-चिङ सकुचायी, फिर भी इस पहली मुलाक़ात में ही दूसरों के प्रति लो ता-फाङ के इस बेबाक व्यवहार और लगाव ने उसके मन को छू लिया। वह "किसी महत्त्वपूर्ण" व्यक्ति की अपेक्षा एक दोस्त जैसा व्यवहार अधिक कर रहा था। ताओ-चिङ मुस्कुराकर झटपट चाय पेश करने और शानदार खाना लगाने की तैयारी के दौरान इन दोनों युवकों की बातचीत को भी ध्यानपूर्वक सुन रही थी।

"हाँ, तो भाई यू, मेरा ख़याल है कि तुमने अपना मौलिक अनुसन्धान शुरू कर दिया होगा।"

"हाँ, चीनी साहित्य विभाग में हमें पुरानी पुस्तकों में डूबना ही पड़ता है। मुझे यह बेहद दिलचस्प लग रहा है। तुम्हारा कैसा चल रहा है? क्या तुम अब भी राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन में ही व्यस्त हो?"

"नहीं।" लो ता-फाङ ने संक्षिप्त-सा उत्तर दिया। उसने इस प्रसंग को टाल दिया ताकि वह अपने द्वारा छेड़े गये प्रसंग को आगे बढ़ा सके। "अतीत के अनुसन्धान में लगे रहने वाले तुम शोधार्थी लोग हमें अपनी प्राचीन संस्कृति के बारे में एक बेहतर जानकारी देकर बहुत ही उपयोगी काम कर रहे हो। यह विद्वता में एक महत्त्वपूर्ण योगदान होगा, लेकिन तुम अपनेआप को डॉ. हू शिह की अध्ययन द्वारा देश की रक्षा वाली बातों की अन्धी गली में मत जाने देना। वह तो..." लो ता-फाङ ने अपनी बड़ी-बड़ी दक्ष आँखों को नचाया, और अपने सिर को पीछे की ओर झटकते हुए ठठाकर हँस दिया। "हाँ तो दोस्तो, यह है डॉ. हू की श्रेष्ठ कृति का एक अंश, जिसको मैं सुना रहा हूँ।"

"अरे, अरे! ज़रा ठहरो, मैं एक बात तो पूछ लूँ," युङ-त्से एक अत्यन्त अस्वाभाविक मुस्कान के साथ याद दिलाने के लहजे में बोला। "क्या तुम्हारे पिता हू शिह के एक अच्छे दोस्त नहीं हैं? मुझे बताओ, अब उनके सम्बन्ध कैसे हैं? – मेरा मतलब है, क्या हू शिह इधर हाल में काफ़ी व्यस्त रहने लगे हैं?"

"तो तुम मेरे पिता और हू शिह के बारे में जानना चाहते हो? वे दोनों एक जैसे हैं। दोनों ही डॉ. डेवी के उपयोगितावाद का अध्ययन इसलिए कर रहे हैं कि इसे वे चीनी जनता में बेच सकें। अगर एक बार हम यह मान लेते हैं कि 'जहाँ दूध है वहाँ एक माँ ज़रूर होगी', तो इससे साम्राज्यवादियों और सामन्ती युद्ध सरदारों द्वारा चीन को गुलाम बना देने का रास्ता सुगम हो जायेगा। क्या इरादा है, भाई यू? हू शिह में इतनी दिलचस्पी क्यों?" ऐसा लग रहा था जैसे लो के शब्दों का प्रवाह कभी न

रुकने वाला हो।

"इसका कारण मैं तुमको बाद मैं बताऊँगा। आओ, पहले हम कुछ खा-पी तो लें।" एक सत्कारी मुस्कान के साथ, युङ-त्से ने उसे आसन ग्रहण करने के लिए आग्रह किया। सफ़ेद मेज़पोश बिछी हुई उस छोटी-सी मेज़ के पास बैठने के बाद लो ता-फाङ आश्चर्यचकित होकर बोल पड़ा, "वाह, क्या सजावट है! तुम्हें ये सब व्यंजन और शराब नहीं लानी चाहिए थी, भाई यू!"

"हम पुराने स्कूली दोस्त हैं, तुम्हारी ख़ातिरदारी करके मुझे ख़ुशी होगी। तुमने हू शिह में मेरी दिलचस्पी का कारण पूछा था।" युङ-त्से ने बातचीत को उसी सिरे से उठाया जहाँ पर उन्होंने उसे छोड़ा था। "मैं वाङ कुओ-वेई और लो चेन-यू की पुस्तकें पढ़ता रहा हूँ जिसमें कुछ ऐसी समस्याएँ आ गयी हैं जो मुझे ज़्यादा ही परेशान किये दे रही हैं। मैं इस पर परामर्श लेने के लिए हू के पास जाने की सोच रहा था। हालाँकि, वह कुछ ख़ास बिन्दुओं पर स्पष्टतः ग़लत हैं और काफ़ी आलोचना के पात्र भी बन चुके हैं, लेकिन जहाँ तक मेरा सवाल है, वह अब भी सबसे अच्छे समकालीन चीनी विद्वानों में से एक हैं। हम उनके अनुसन्धान के तरीक़ों से, साथ ही साथ, उनके ज्ञान के विशाल भण्डार से काफ़ी कुछ सीख सकते है। यही कारण है कि ऐसे सवालों पर मैं उनके विचारों की क़द्र करता हूँ। लेकिन, चूँकि वह एक नामी-गिरामी विद्वान हैं, इसलिए उनके पास सीधे जाने में मुझे हिचकिचाहट होती है। चूँकि वह और तुम्हारे पिता परस्पर इतने अच्छे दोस्त हैं कि मैं सोचता हूँ..." एक कृपाकांक्षी मुस्कान के साथ युङ-त्से ने बत्तख का एक रसदार टुकड़ा अपने मेहमान की प्लेट में रख दिया।

लो ता-फाङ की संक्रामक हँसी फिर गूँज उठी। उसने ज़ोर-ज़ोर से अपना सिर हिलाया और जवाब देने के लिए मुख़ातिब हुआ :

"और भी तो ढेर सारे विद्वान प्रोफ़ेसर हैं। क्यों तुम हू शिह के लिए ही माथा मार रहे हो? मेरी राय मानो और उसका चक्कर छोड़ दो। अगर चाहोगे, तो मैं तुम्हारा परिचय दूसरे विद्वानों से करवा दूँगा, लेकिन डॉ. हू शिह से नहीं।"

अपनी निराशा और खिन्नता को छिपाये रखने की पूरी-पूरी कोशिश करते हुए युङ-त्से ने ताओ-चिङ की ओर रुख किया और उससे कहा, "तुम भी आओ न, आओ बैठो!" फिर एक मुस्कुराहट के साथ वह लो ता-फाङ से बोला :

"कहो, भाई लो! उन दूसरे छात्र प्रतिनिधियों का क्या हुआ जो तुम्हारे साथ उस विशाल प्रदर्शन में भाग लेने दक्षिण गये थे? आजकल तुम्हारी गतिविधियों के बारे में क्यों हमें कुछ भी सुनने को नहीं मिल रहा है? ली मेङ-यू कहाँ है? वह तो जन्मजात नेता था!"

"बेशक।" लो ता-फाङ अपना शराब का प्याला नीचे रखते हुए, जवाब में बोला। "तुम जिस तरह पुरानी किताबों में डूबे रहते हो, उससे तो तुम्हें बाहरी दुनिया

की कोई ख़बर नहीं ही सुनायी देगी।" लो ता-फाङ अपने स्टूल पर से उठ गया और कमरे में एक चक्कर लगाया, वह युङ-त्से और ताओ-चिङ की जोड़ी की असलियत भाँपने की कोशिश कर रहा था, और प्रसंगवश बोल पड़ा : "जब हमारे प्रदर्शनकारी छात्रों को सत्रह दिसम्बर को हाथ-पाँव बाँधकर पेइपिङ वापस भेज दिया गया, तो क्वोमिन्ताङ के अधिकारियों ने नानकिङ में छात्रों का क़त्लेआम शुरू करवा दिया – कम से कम यह बात तो तुमने ज़रूर ही सुनी होगी। अपना मुखौटा उतार फेंकने के बाद क्वोमिन्ताङ इतना उद्धत हो चुका था कि हमें मजबूर होकर अपने राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन को कुछ समय के लिए ठप्प कर देना पड़ा। जब ली मेङ-यू उस आन्दोलन का नेतृत्व करने के बाद वापस लौटा, तो मिलिटरी पुलिस ने उसका इतना पीछा किया, इतना पीछा किया कि उसे भूमिगत हो जाना पड़ा।" लो ता-फाङ कुछ-कुछ आरोपभरी नज़र से सीधे युङ-त्से की ओर देखने के लिए रुका। फिर उसकी नज़र ताओ-चिङ पर पड़ी और तब वह पहले से भी अधिक गम्भीर होकर बोला :

"भाई यू, तुम दोनों जवान हो – कुछ संघर्ष में शिरकत करके दिखाओ न! तुम लोग किसी भी ऐसी गतिविधि में शिरकत करो, जो कर सकते हो! क्या तुम यहाँ पेइपिङ में काफ़ी उत्साहित नहीं थे, जिस समय हम लोग प्रदर्शन करने दक्षिण में गये थे?"

"हाँ, था तो," युङ-त्से ने उत्तर दिया। "यहाँ तक कि अब भी हूँ। लेकिन मुझे विश्वास नहीं है कि नारेबाज़ी करने और मुट्ठियाँ भाँजने से कोई विशेष लाभ होगा। मैं देश की रक्षा के लिए अपना ही तरीक़ा आज़मा रहा हूँ। चलो भाई लो, थोड़ा और खाओ।" एक विनीत सत्कारी की भाँति युङ-त्से ने अपने मेहमान से कुछ और खा लेने का आग्रह किया।

"तो तुम्हारा तरीक़ा विदेशी तर्ज़ की किताबों की जगह पुरानी चीनी किताबों को लागू करने का है, छात्र-वर्दी की जगह एक लम्बा चोंगा पहनने का है।" ताओ-चिङ ठहाके की रौ में बातचीत में शामिल हो गयी। हालाँकि वह लो ता-फाङ से पहली बार मिल रही थी, फिर भी उसकी पूरी-पूरी सहानुभूति उसके साथ थी। उसके हाव-भाव से उसे कुछ-कुछ लू चिआ-चुआन की याद हो आती थी, जिससे वह पेइताइहो में मिल चुकी थी।

युङ-त्से पहले छात्र-वर्दी पहना करता था, लेकिन पुरानी पुस्तकों में दिलचस्पी लेने के साथ-साथ उसने एक अपेक्षाकृत अधिक "राष्ट्रीय शैली" की पोशाक पसन्द कर ली। गर्मी के मौसम में वह एक रेशमी या पालिशदार सूती गाऊन और मोटे तल्ले वाला कपड़े का स्लीपर पहनता था; जाड़े में एक सादा नीले गाऊन के नीचे एक गद्देदार रेशमी गाऊन, एक चौड़ी किनारों वाला हैट और नाव जैसे मोटे बूट पहनता था, जो आमतौर से अधिक उम्र वाले लोग पहना करते थे। ताओ-चिङ ऐसे

पहनावे को पसन्द नहीं करती थी जो आदमी को समय से पहले ही बूढ़ा दिखने वाला बना दे; परन्तु युङ-त्से इसी पहनावे पर ज़ोर दिया करता था, इस विश्वास के साथ कि इसमें उसकी देशभक्ति प्रकट होती थी। उसके विचार से क्लासिकीय साहित्य का अध्ययन और राष्ट्रीय परिधान से लगाव उसके देशप्रेम की घनीभूत अभिव्यक्ति थे। युङ-त्से इस तरह के सिद्धान्त अक्सर अपनी बातचीत में बघारता रहता था, जिसके चलते ताओ-चिङ इतनी विचलित हो जाती थी कि जो मन में आता बक दिया करती थी और उसने यही किया भी।

"तुम इसकी बातों पर मत विश्वास करो।" युङ-त्से ने मुस्कुराते हुए लो ता-फाङ को सचेत किया। यह कुण्ठाग्रस्त है, क्योंकि इसे कोई नौकरी नहीं मिल सकी और इसका ख़ामियाज़ा यह मुझ में दोष ढूँढ़-ढूँढ़कर निकालती रहती है। मैं तो मानता हूँ कि यह समाज ही कुण्ठाग्रस्त कर देने वाला है। मैं इसके लिए नौकरी की तलाश में सब जगह दौड़ते-दौड़ते थक गया हूँ, लेकिन कोई नतीजा नहीं निकला। इसलिए इसे अपना समय सिर्फ़ कपड़े धोने और खाना बनाने में ख़र्च करना पड़ता है। वैसे स्नातक हो जाने का मतलब ही है बेरोज़गारी। मैं आजकल स्नातक होने के बाद कोई ठौर-ठिकाना पाने के लिए अभी से चिन्तित हूँ। तुम्हें कोई परेशानी नहीं है, भाई लो – तुम्हारे पिता का अच्छा-ख़ासा प्रभाव है।"

"उनसे मेरा कोई वास्ता नहीं है। मैं अपने पिता से मदद पाने की आस नहीं लगाये बैठा हूँ। सच बात तो यह है कि हम एक-दूसरे से आँख भी नहीं मिलाते और हम दोनों अपनी-अपनी राह चलते हैं।" लो ता-फाङ जाने के लिए उठा खड़ा हो गया। "तुम दोनों को धन्यवाद! अब मुझे जाना है।"

युङ-त्से और ताओ-चिङ दोनों में से किसी ने भी उसे रोकने की कोशिश नहीं की, लेकिन लो ता-फाङ दरवाज़े तक जाते-जाते यह कहते हुए मुड़ पड़ा :

"मैं डॉ. हू शिह की एक श्रेष्ठ कृति का अंश पढ़कर सुनाना चाहता था। जाने से पहले मैं उसे सुना दूँ।"

> "क्या तुम इसे नहीं झेल सकते? क्या तुम बाहरी दुनिया के झकझोर देने वाले प्रभाव को सहन नहीं कर सकते? तुम्हारे सभी साथी हथियार उठाने के लिए ललकार रहे हैं और तुम इसमें शामिल होने का मोह नहीं छोड़ सकते? क्या तुम, अथवा यदि तुम नहीं शामिल होते तो क्या उनका तिरस्कार नहीं कर सकते? क्या तुम पुस्तकालय में अकेले बैठे-बैठे घबराहट महसूस करते हो? क्या तुम्हारा दिमाग़ बेचैन है? – तो फिर मुझे एक या दो कहानी सुनाने दो ..."

लो ता-फाङ वहीं खड़े-खड़े अपनी आँखों से घूर रहा था और उसने गम्भीर मुख-मुद्रा धारण कर ली थी। उसका सिर हिल रहा था। चूँकि, युङ-त्से अपनी नाक

फड़फड़ा रहा था, इसलिए कहना मुश्किल था कि वह कितना सुन सका था। ताओ-चिङ अपनी हँसी रोकने की पूरी-पूरी कोशिश कर रही थी। कुछ ही देर बाद लो ता-फाङ दम मारने के लिए रुका, और फिर चालू हो गया, "जब डॉ. हू ने नौजवानों के लिए अपना शोक-सम्भाषण समाप्त कर लिया तो उसने गोयठे और फ़िख़्टे के उदाहरण पेश किये, और बाक़ी सबसे आग्रह किया कि वे भी वैसा ही आचरण करें। भले ही दुश्मन की फ़ौज नगर-प्राचीर पर चढ़ आयी हो, तुम लोग शान्तिपूर्वक अपना अध्ययन जारी रखो... नहीं, भाई यू, तुम ऐसी बेवक़ूफ़ी मत करो, अकेले अध्ययन करते रहने से देश की रक्षा नहीं हो सकती।"

लो ता-फाङ अभिवादन करके दबी हुई हँसी हँसता चला गया। मुस्कुराती हुई ताओ-चिङ उसे फाटक तक छोड़ने गयी जबकि युङ-त्से अपने आवेश पर नियन्त्रण करने की पूरी कोशिश करता हुआ मुख्य द्वार तक गया। जब वह वापस लौटा तो जाकर बिस्तर पर लेट गया और चुपचाप छत की ओर एकटक देखने लगा।

ताओ-चिङ उसकी हताशा को समझकर मेज़ पर बैठ गयी। फिर धीरे-से उठकर उसकी बग़ल में जा पहुँची।

"तुम इतने परेशान क्यों हो गये लो ता-फाङ की इस मुलाक़ात से? उसने जो सलाह दी उसका आशय तो ठीक ही था।" ताओ-चिङ समझ रही थी कि युङ-त्से शायद इसलिए खिन्न हो गया था कि लो ने उसका उपहास कर दिया था।

युङ-त्से ने बिस्तर पर पड़े-पड़े ही अपना सिर हिलाया। "यह बात नहीं है।" वह बोला। "वह कौन होता है सलाह देना वाला कि मैं उसके कहे मुताबिक़ चलूँ? दरअसल जो चीज़ मुझे साल रही है, वह, जैसाकि तुम देख ही रही हो, यह है कि मुझे एक घर मिल गया है, तुम मिल गयी हो और इसमें कोई सन्देह नहीं कि आगे बच्चे भी होंगे। मैं अपनी उस पीलियाग्रस्त पत्नी को लेकर परेशान नहीं होता जो अब मर चुकी है, लेकिन मैं परेशान हूँ तुमको लेकर। कुछ ही महीनों में मैं स्नातक हो जाऊँगा, लेकिन अभी तक किसी नौकरी की उम्मीद नहीं बन सकी है, और फिर मेरा परिवार तो मुझे ख़र्च देना बन्द ही कर देगा। तब मैं तुमको कैसे रखूँगा?" युङ-त्से ने एक गहरी साँस छोड़ी और, ताओ-चिङ की ओर अपनी छोटी-छोटी चमकदार और चिन्तित आँखों से एकटक देखने लगा। "इसी चक्कर में मैंने तक़रीबन पाँच युआन शराब और खाने पर ख़र्च किया और लो ता-फाङ को बातचीत के लिए आमन्त्रित किया था। मुझे उम्मीद थी कि उसके पिता के माध्यम से मेरी पहुँच हू शिह तक हो जायेगी अथवा उसके पिता मेरे लिए किसी नौकरी का जुगाड़ कर देंगे। मैंने कभी नहीं समझा था कि यह आदमी इतने बड़े मार्क्सवादी सिद्धान्तों से लैस होगा। ख़ैर, कोई चिन्ता मत करो! मैं कोई दूसरा रास्ता तलाश करूँगा। ज़रा, मेरे पास आ जाओ, प्रिये। मुझे थोड़ी राहत दे दो..."

युङ-त्से उठ बैठा और उसने अपनी बाँहें फैला दीं, लेकिन ताओ-चिङ अपनी

आँखों में एक चोट खायी नज़र के साथ पीछे खिंच गयी। उस दिन दो मेहमानों के साथ युङ-त्से के एकदम भिन्न-भिन्न व्यवहार ने उसके असली रंग-ढंग को प्रकट कर दिया था। ताओ-चिङ का हृदय कटुता और मोहभंग से भर गया था।

प्यार और प्यार के इन्द्रधनुषी आभा वाले मायाजाल का हर्षोन्माद धीरे-धीरे अपना आकर्षण खो चुके थे। ताओ-चिङ और युङ-त्से निर्मम यथार्थ के थपेड़े खा-खाकर धीरे-धीरे अपने स्वप्नलोक से जागते जा रहे थे। ताओ-चिङ अपने दो छोटे कमरों से बाहर शायद ही क़दम रखती थी। युङ-त्से और उसके बीच का सम्बन्ध उसे अपनी सहेलियों का पता लगाने जाने में बाधा बन रहा था और यहाँ तक कि वाङ सियाओ-येन से भी वह दूर-दूर ही रहा करती थी। उसकी रोज़मर्रा की ज़िन्दगी धुलाई-सफ़ाई, बाज़ार की ख़रीद-फ़रोख़्त, खाना पकाना, कपड़े धोना और उन पर इस्तरी करना, सिलाई करना और अन्य घरेलू काम-काज के गोरखधन्धे में फँस गयी थी। ज्यों-ज्यों दिन सरकते गये, वह अपने अध्ययन में कम से कम समय देने लगी। उसके भविष्य के वे सपने, जो कभी समुद्र और आकाश की तरह निर्बन्ध हुआ करते थे, अब उसे हताशा और कुण्ठा में धकेलते हुए फीके पड़ चले थे। इस बात का अहसास हो जाने पर कि युङ-त्से वैसा सुसंस्कृत पात्र न था, जैसाकि वह पहले सोचती थी, उसे सबसे अधिक दुर्भाग्यपूर्ण झटका लगा था। युङ-त्से का वह साहस और काव्यात्मक गुण जिसके आधार पर वह ताओ-चिङ की नज़र में अन्य सभी से श्रेष्ठतर प्रतीत हुआ था। अन्ततः फीका पड़ते-पड़ते लुप्त हो चुका था। वह निहायत स्वार्थी, तुच्छ और टुच्ची मानसिकता का, जीवन की अति क्षुद्र चीज़ों से ही मतलब रखने वाला जीव सिद्ध हो चुका था। हाय, भाग्य ने उसे फिर किस अन्धी गली में ला पटका था?

——:o:——

अध्याय 11

पुराने पंचांग के अनुसार यह नववर्ष की पूर्व सन्ध्या थी।

पीकिङ शैली के एक घर, जिसे पीकिङ विश्वविद्यालय के कुछ छात्र छात्रावास के रूप में प्रयोग करते थे, के एक कमरे की जालीदार, काग़ज़-मढ़ी खिड़की में से रोशनी तथा आवाज़ों का शोर आ रहा था। एक दर्ज़न के लगभग नौजवान लड़के-लड़कियाँ किसी ज़ोरदार बहस में उलझे हुए थे।

उस धुएँभरे, ख़ूब गर्म कमरे में सभी की नज़रें चमकीली आँखों तथा हँसमुख चेहरे वाली मेज़बान पाई ली-पिङ पर टिकी हुई थीं। एक चौरस मेज़ के पास खड़े होकर उसने अपना शराब का गिलास उठाया तथा अपने मेहमानों को साथ देने के लिए आमन्त्रित किया – हम बेघर बेसहारा लोग आज रात यहाँ नववर्ष मनाने के

लिए इकट्ठे हुए हैं। चाहे जापानी डाकू हमें आज रात उत्सव मनाने के लिए लोगों से न मिलने दे, परन्तु वे हमें आज रात उत्सव मनाने से नहीं रोक सकते। इसलिए बच्चो, पीओ और मौज करो।"

ली-पिङ कमरे में मौजूद कई लोगों से उम्र में भले ही छोटी थी, परन्तु उसे बड़ी बहन का रोल अदा करने में मज़ा आताथा और आमतौर पर वह अपने मेहमानों को "बच्चो" शब्द से सम्बोधित करती थी। वह किरिन प्रान्त की रहने वाली तथा पीकिङ विश्वविद्यालय में क़ानून की छात्रा थी। वह एक अच्छे स्वभाव तथा खुले दिल की मिलनसार लड़की थी।

अठारह सितम्बर की घटना के बाद, दूसरे उत्तरपूर्वीय छात्रों की तरह वह भी अपने घरवालों से कट चुकी थी, इसलिए उसने नये साल की खुशियाँ मनाने के लिए अपने प्रान्त के कुछ लोगों, कुछ सहपाठियों और दोस्तों को अपने कमरे पर आमन्त्रित किया था।

उसने नववर्ष की बधाइयाँ देने के लिए जैसे ही गिलास ऊपर उठाया, एक सुन्दर-सा दिखने वाला नौजवान तेज़ी से उसकी ओर बढ़ा तथा गिलास उसके हाथ से छीनकर हवा में लहराने लगा।

"मैं...पुरज़ोर विरोध करता हूँ।" वह चिल्लाया "नववर्ष की पूर्व सन्ध्या पर मैं प्रतिक्रियावादी क्वोमिन्ताङ तथा राष्ट्रीय सरकार के ख़िलाफ़ अपनी आवाज़ बुलन्द करना चाहता हूँ। यह च्याङ काई-शेक की प्रतिरोध न करने की नीति ही है, जिसके कारण हम तीन उत्तरपूर्वीय राज्य खो चुके हैं तथा हमारे तीन करोड़ देशवासी गुलामों जैसी नारकीय ज़िन्दगी जी रहे हैं। मैं विरोध करता हूँ, मैं नानकिङ सरकार का पुरज़ोर विरोध करता हूँ।"

वक्ता सू निङ था, जोकि दक्षिण में प्रदर्शन के लिए गये पीकिङ विश्वविद्यालय के छात्रों में से था। दक्षिण की ओर जाते हुए गाड़ी में नारे लगाने वालों में वह सबसे आगे था। ज़ोर-ज़ोर से बोलते हुए उसने अपनी अधखुली आँखों से कमरे का मुआयना किया जैसेकि अपने शब्दों का असर देख रहा हो। नाराज़गीभरी मुस्कान के साथ ली-पिङ ने उसे हल्की चपत दी।

"बेवकूफ़ मत बनो, सू निङ! चिल्ला क्यों रहे हो? च्याङ काई-शेक तक तो तुम्हारी आवाज़ इस समय पहुँचने से रही, परन्त उसके जासूसों तक ज़रूर पहुँच जायेगी। बच्चो, इसकी बातों पर ज़्यादा ध्यान न दो। चलो, हम पियें!"

लगता था ली-पिङ की बातों का किसी पर असर नहीं हुआ था, कुछ प्रतिक्रियावादी सरकार तथा उसकी प्रतिरोध न करने की नीति को अभी भी कोस रहे थे जबकि दूसरे इस त्यौहार के मौक़े पर अपने घरों की याद में आहें भर रहे थे। एक सत्रह वर्षीया पतली-सी लड़की के रोने ने लोगों के दुख को और भी बढ़ा दिया। ली-पिङ उसकी तरफ़ गयी और उसे दिलासा देने लगी।

"रोओ मत सिऊ-यू! क्या माँ की याद आ रही है, आ रही है न? उसकी मृत्यु बहुत दुखभरी थी, हम उसका बदला ज़रूर लेंगे।" वह धीमी आवाज़ में बोलती रही। "रोओ मत! तुम तो एक बहादुर लड़की हो! हममें से और भी बहुत से लोग इन्हीं हालात से गुज़र रहे हैं, और उनके घरबार तथा माँ-बाप की कोई ख़बर तक नहीं। जापानी दरिन्दों ने न जाने कितनी औरतों को विधवा बना दिया है और न जाने कितने बच्चों को अनाथ। किसी दिन हम उनसे हिसाब ज़रूर चुकता करेंगे। तुम्हें मालूम है कि उत्तरपूर्वीय जापान विरोधी वालण्टियर सेना दुश्मन के ख़िलाफ़ ज़ोरदार एवं शानदार लड़ाई लड़ रही है। जल्दी ही या थोड़ी देर से, मुझे पूर्ण विश्वास है जीत हमारी ही होगी।"

हालाँकि ली-पिङ सिऊ-यू से ज़्यादा अनुभवी थी, तथापि दुश्मन के क़ब्ज़े में रह रहे अपने माता-पिता की तकलीफ़ों व अपने घर की याद कर वह अपने आँसू न रोक सकी और अपनी सहेली के साथ स्वयं भी रोने लगी। कमरे में एक दुखभरी चुप्पी छा गयी।

लिन ताओ-चिङ भी मेहमानों में से एक थी।

वह भी उसी छात्रावास में रहती थी तथा लो ता-फाङ ने, जो आमतौर पर ली-पिङ से मिलने आता रहता था, दोनों का आपस में परिचय कराया था।

युङ-त्से नववर्ष की छुट्टियों में घर चला गया था और ताओ-चिङ, जोकि उसके साथ जाना नहीं चाहती थी, छात्रावास में ही रुक गयी थी। इसीलिए मेहमाननवाज़ ली-पिङ ने उसे भी दावत में आमन्त्रित कर लिया था।

वह एक कोने में अकेली बैठी चुपचाप सुन रही थी क्योंकि इस कमरे में ली-पिङ व लो ता-फाङ के अलावा वह किसी को नहीं जानती थी। वह उठकर सिऊ-यू तथा ली-पिङ के पास चली गयी, वह उनको सान्त्वना देना चाहती थी लेकिन उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि कैसे शुरू करे? लो ता-फाङ भी जो आमतौर पर काफ़ी दृढ़ रहता था, चुपचाप खिड़की के पास सिर झुकाये बैठा था। सू-निङ भी अपना गुस्सा प्रकट करने के बाद शान्त बैठा था।

"त्योहार लोगों के दिलों में घर की याद ताज़ा कर देते हैं। आज मेरे माता-पिता में बहुत दूर बैठे अपने बेटे को याद कर रहे होंगे। हाय! सुन्दर सुङहुआ नदी! क्या तुम्हारी निर्मल लहरें अब भी वैसी ही प्यारी लगती हैं?" बोलने वाला, जिसकी भावनापूर्ण बातों ने चुप्पी को तोड़ा था, बिखरे बालोंवाला, छोटे क़द का एक नौजवान था। उसने एक गन्दा-सा पश्चिमी परिधान पहन रखा था, शर्तिया ही उसने ज़रूरत से ज़्यादा पी ली थी।

सभी उसकी तरफ़ देखने लगे और वह अपना गिलास उठाये मेज़ पर पैर फैलाकर बैठा था। ली-पिङ रोने की वजह से भीग गयी पलकों को साफ़ करके उसकी ओर लपकी। उसके हाथ से गिलास छीनकर उसकी आँखों के आगे लहराते

हुए वह चिल्लायी, "शर्म करो, यू यी-मिन कुछ तो शर्म करो। क्या शराब ने तुम्हारा दिमाग़ ख़राब कर दिया है?"

मुश्किल से अभी मेज़बान महिला ने कमरे में शान्ति बहाल की ही थी कि एक और तमाशा खड़ा हो गया। अबकी बार तमाशेबाज़ पुराने रुईभरे कपड़े पहने भद्दे व कठोर चेहरे वाला तीसेक साल का आदमी था। उसके उलझे बालों से लग रहा था कि कई महीने से उसने बाल नहीं कटवाये हैं। "देवियो एवम् सज्जनो, राजनीति की बातें मत करो।"

वह चिल्लाया। "ज़िन्दगी आज़ाद होनी चाहिए...आज़ाद! ज़िन्दगी तो बहते पानी की तरह है जो पल में गुज़र जाती है...मैं यह सब सहन नहीं कर सकता...कि ज़िन्दगी एक स्वप्न की तरह गुज़र जाये जिसमें मौज-मस्ती के लिए समय ही ना हो। मैं यह सब सहन नहीं कर सकता..."

इस बड़बड़ाहट को बरदाश्त न कर पा रहे सिऊ-यू व सू-निङ, दोनों ने इकट्ठे हस्तक्षेप किया। सिऊ-यू उछलकर खड़ी हुई व उसकी ओर बढ़ी, गुस्से से अपनी उँगली से उसकी नाक की तरफ़ इशारा करते हुए उसने कहा : "क्या महान कलाकार ने बहुत ज़्यादा पी ली है?" निस्सन्देह तुम्हारा दिमाग़ इतना ख़राब हो गया है कि तुम में ज़रा भी चीनीपन नहीं बचा है। क्या तुम्हारे भेजे में नहीं आता कि हम कितने कठिन दौर से गुज़र रहे हैं? दुश्मनों ने हमारे घर नष्ट कर दिये हैं, हमारा देश बरबाद हो रहा है और तुम ऐसे गिरी हुई व बेहूदा हरकतें कर रहे हो। मैं तुम्हें विश्वास दिलाती हूँ कि जापानी हमारे देश को गुलाम बनाने पर तुले हुए हैं। हवाई क़िले बनाना बन्द करो। समय आ गया है कि तुम अपनी आँखें खोलो।"

अब सू-निङ की बारी थी। एक अभ्यस्त वक्ता की तरह मेज़ पर एक मुक्का मारते हुए व अपने घने बालों में उँगलियाँ फिराते हुए उसने गहरी आवाज़ में बोलना शुरू किया।

"जागो, वाङ चिएन-फू, क्या तुम्हें नहीं मालूम कि जेहोल (एक जगह का नाम) के लिए भी ख़तरा पैदा हो गया है? और इसका मतलब है कि सारा चीन ख़तरे में है। तुम इस तरह कैसे बोल सकते हो।"

वाङ चिएन-फ़ू अपनी लाल, शराबी आँखों से सू-निङ तथा सिऊ-यू को घूरते हुए, शर्मिन्दगीभरा चेहरा लिये हँसने लगा। और ऐसा लग रहा था जैसेकि कोई पिटा हुआ कुत्ता अपनी पूँछ टाँगों में दबाकर चुपचाप खिसकने के लिए रास्ता तलाश कर रहा हो, यह देखकर कमरे में उपस्थित बाक़ी लोग हँसने लगे। थोड़ी देर बाद बातचीत दोबारा शुरू हो गयी।

यू यी-मिन ने कनखियों से अपनी मेज़बान की तरफ़ देखते हुए अर्ज किया, "ली-पिङ, क्यों न हम उस चीज़ के बारे में बातचीत करें जो हमारे दिल के सबसे नज़दीक है, तुम्हारा घर उस चायख़ाने की तरह नहीं होना चाहिए, जिसकी हर दीवार

पर 'राजनीति की बातें करना मना है' का नोटिस टँगा हो।"

ली-पिङ मुस्कुराकर बोली, "आज की रात मुझे पता है, तुम सभी बहुत कुछ कहना चाहते हो। और ऐसा भी नहीं है कि मैं राजनीति के बारे में बोलने के ख़िलाफ़ हूँ, परन्तु मैं नहीं चाहती कि तुम सभी दुखी महसूस करो..." एक बार फिर उसकी आँखें भर आयीं और उसने जल्दी से अपना चेहरा दूसरी ओर घुमा लिया। परन्तु जल्द ही वह पुनः अपने मेहमानों की तरफ़ मुड़ गयी और कहना जारी रखा :

"अठारह सितम्बर की घटना के बाद से उत्तर पूर्व के हम बेघर नौजवान बहुत मुश्किल में हैं। हमें नववर्ष की खुशियाँ मनानी चाहिए, पर मना नहीं सकते।" थोड़ी देर सोचने के बाद वह फिर बोलने लगी, "ठीक है। तुम्हें खुश करने के लिए मैं एक कहानी सुनाती हूँ। जब मैं ख़त्म कर लूँ, तो तुम सभी बारी-बारी एक-एक कहानी सुनाना। और शैतान सू-निङ, ख़बरदार! अगर बीच में रुकावट डालने या शैतानी करने की कोशिश की तो?" ली-पिङ ने आँख झपकते हुए मुस्कुराकर कहा, जब उसने देखा कि हर कोई उसकी तरफ़ देख रहा है। उसने बात को आगे बढ़ाया, "अठारह सितम्बर की घटना के बाद शंघाई के आठ लाख मज़दूरों ने जापान का प्रतिरोध करने तथा चीन को बचाने के लिए एक सभा बनायी तथा नानकिङ सरकार के पास अपने प्रतिनिधि भेजकर माँग की कि जापानियों से लड़ने के लिए तुरन्त फ़ौज भेजी जाये तथा मज़दूरों को भी शत्रु का मुक़ाबला करने के लिए हथियार दिये जायें। यह उन दिनों की बात है जब हमारे पेइपिङ के छात्र देशभर के छात्रों के साथ सरकार से प्रार्थना करने नानकिङ गये थे। हालात से निपटने के लिए च्याङ काई-शेक ने एक चाल चली। उसने छात्रों को केन्द्रीय सेना अकादमी में बुलाया और भाषण दिया। उसने क्या कहा? सुनो और समझो कि वह कितना बड़ा चालबाज़ था।" ली-पिङ, जोकि शौक़िया अभिनेत्री थी, ने च्याङ काई-शेक के हाव-भाव और बोलने के लहज़े की नक़ल करते समय एक कलाकार की सभी ख़ूबियों का प्रयोग किया। "हमारी सरकार जापान का प्रतिरोध करने के लिए पूरे ज़ोर-शोर से तैयारी कर रही है। यदि – तीन सालों में हम अपना खोया हुआ इलाक़ा पुनः प्राप्त करने में असफल होते हैं तो...मैं...च्याङ काई-शेक – लोगों के गुस्से को शान्त करने के लिए अपनी गरदन कुल्हाड़े पर रख दूँगा।" ली-पिङ ने आँखों में चमक लिये एक हाथ से अपनी गरदन काटने का अभिनय किया।

ली-पिङ द्वारा किया गया च्याङ काई-शेक का जीवन्त अभिनय उसके स्वयं के व्यक्तित्व के इतना विपरीत था कि उसके मेहमान ठहाका मारकर हँसने लगे। यहाँ तक कि वाङ चियन-फू भी, जो सिर झुकाये आहें भर रहा था, हँसे बिना न रह सका। यू यी-मिन गिलास हाथ में लिये उछलकर खड़ा हो गया। इससे पहले कि कोई बोल पाता, सू-निङ ने मेज़ पर मुक्का मारते हुए चिल्लाकर कहा, "च्याङ काई-शेक के झूठों से कौन कभी बेवक़ूफ़ बनता है? कोई नहीं। उस मक्क़ारीभरे

भाषण के कुछ ही समय पश्चात देशभर के छात्रों ने नानकिङ में एक बहुत बड़ा जुलूस निकालने के लिए पहुँचना शुरू कर दिया था। पीकिङ विश्वविद्यालय ने उस प्रसिद्ध पाँच दिसम्बर के आन्दोलन का नेतृत्व किया था। उसके बाद शंघाई तथा पेइपिङ से सैकड़ों छात्र नानकिङ गये थे तथा केन्द्रीय विश्वविद्यालय के छात्रों के साथ मिलकर क्वोमिन्ताङ मुख्यालय का ज़बरदस्त घेराव किया था तथा 'सेण्ट्रल डेली' (सरकारी समाचारपत्र) के कार्यालय को तहस-नहस कर दिया था। जब छात्र सरकारी इमारतों के पास पहुँचे और 'गद्दार सरकार मुर्दाबाद' के नारे लगा रहे थे तो अधिकारी इतने डर गये थे कि उन्होंने अपने लोहे के बड़े-बड़े गेट अच्छी तरह बन्द कर लिये थे। और यह सब आज से दो साल पहले सत्रह दिसम्बर को घटा था। याद है?" यह कहते हुए सू-निङ ने अपना फ़ौलादी मुक्का वाङ चिएन-फू के भद्दे चेहरे के सामने लहराया, जिससे डरकर उसने झटके से अपना सिर पीछे कर लिया और यह देखकर एकबार फिर ठहाके गूँज उठे।

लो ता-फाङ काफ़ी बुझा हुआ दिखायी दे रहा था जैसेकि कोई बोझ उसके दिमाग़ पर पड़ा हुआ हो, परन्तु अब उसने भी उत्साहित होकर शब्दों की बौछार शुरू कर दी थी। "ली-पिङ और सू-निङ, तुम्हारी बातों ने वातावरण को कितना उत्साहजनक बना दिया है। खाना खाने के बाद वैसे हमारे पास इस नववर्ष की सन्ध्या पर करने को कुछ भी नहीं है। फिर भी मैं तुम्हें एक कहानी और सुनाता हूँ।"

"सू-निङ, क्या तुम्हें याद है, जब हमने नानकिङ में जुलूस निकाला था, तुम्हारी व लू चिआ-चुआन की 'अच्छी-ख़ासी आवभगत' हुई थी, जबकि ली मेङ-यू ने अपने साथियों के साथ छावनी मुख्यालय को घेर लिया था। दुर्भाग्य से हम सभी एक सौ पचासी लोगों को पकड़कर पुलिस ने मिङ मकबरे की बैरकों में बन्द कर दिया था। वहाँ हमने पहली बार क़ैद की ज़िन्दगी का स्वाद चखा था। रात को ठण्डी हवा चल रही थी, बाहर बारिश हो रही थी और हम ठण्डे फ़र्श पर पड़े काँप रहे थे। चारों ओर शमशान जैसी मुर्दा शान्ति व्याप्त थी। हम सुसंस्कृत नौजवान विद्यार्थी, अचानक क़ैदी बना लिये जाने पर कैसे सो सकते थे। कुछ गुस्से में अपने दाँत किटकिटा रहे थे, कुछ लम्बी साँसें ले रहे थे तथा दुख और निराशाभरी आहें भर रहे थे, जबकि कुछ तुरन्त तैयार की गयी कविताएँ सुना रहे थे। जैसाकि तुम सभी जानते हो कि मैं भी थोड़ी बहुत कविता कर लेता हूँ, इसीलिए उस निराशाभरी रात को, ठण्ड, भूख एवं अनिन्द्रा से बेचैन साथियों का मन बहलाने के लिए मैंने व साथी सिऊ ने कुछ टूटी-फूटी कविताएँ कीं। जल्द ही हमारी बनायी हुई कविता सभी की जुबान पर थी। अँधेरे में आवाज़ें गूँज उठीं, साथियो! आओ हम सभी पीकिङ विश्वविद्यालय का गीत गाये! एक बार फिर से। इस तरह हमने उन काली, उदास बैरकों को रंगशाला में बदल दिया। उस समय कुमारी जेनेट मैकडोनाल्ड (एक प्रसिद्ध गायिका) की सुरीली आवाज़ भी हमारे बे-सुरे स्वरों का मुक़ाबला

नहीं कर सकती थी।"

"अरे, अरे भाई लो ता-फाङ! वो कलाकृति क्या थी? आख़िर हम भी तो सुनें। हमसे अब और इन्तज़ार नहीं होता।" सिऊ-यू ने ख़ुश होकर कहा, उसकी बड़ी-बड़ी गोल-गोल आँखें हैरानी व उत्सुकता से चमक रही थीं। यह लम्बा भाषण उसकी सहन-शक्ति पर बहुत भारी पड़ रहा था।

लो ता-फाङ पहले तो बड़ी देर तक हँसता रहा, फिर उसने कहा, "मेरे प्रिय दोस्तो, तुम भी बड़ी जल्दी इसकी बातों में आ जाते हो। मैं कोई कवि नहीं हूँ और मैंने जो कुछ भी लिखा था, बड़ा ही टूटा-फूटा था। जैसाकि तुम सभी जानते हो, हम तो केवल समय बिताने के लिए और सभी का हौसला बढ़ाने के लिए गा रहे थे।" तब उसने आँखें सिकोड़ते हुए तथा सिर हिलाते हुए हास्यप्रद लहजे में गाना शुरू किया :

पीकिङ विश्वविद्यालय से आये हम
नहीं किसी से डरने वाले मस्ताने और मतवाले
लाल झण्डा लिये हुए नानकिङ की ओर बढ़ते क़दम,
अपना देश बचायेंगे दुश्मन को मार भगायेंगे
पीकिङ विश्वविद्यालय से आये हम...

जकड़ दिये हाथ-पाँव हमारे ज़ंजीरों और रस्सों से,
पीटा हमको लातों-घूँसों और बन्दूक़ों के कुन्दों से।
भूखा-प्यासा रखा हमको झुकेंगे नहीं कदापि हम
दुश्मन ने आज हमें क़ैद किया पर पीछे नहीं हटते हैं क़दम।
पीकिङ विश्वविद्यालय से आये हम...
नहीं डर हमें दुश्मन का आज

चाहे हो क्वामिन्ताङ का राज।

"ये हुई न बात! एक बार फिर से।" एक नयी आवाज़ आयी। सभी हैरान होकर दरवाज़े की तरफ़ देखने लगे जहाँ एक नौजवान खड़ा था। उसे जानने वाले उसके स्वागत में चिल्लाये :

"साथी लू, आख़िरकार तुम आ ही गये।"

ली-पिङ उसके पास गयी तथा एक मोहक मुस्कान के साथ उससे हाथ मिलाया। "लू चिआ-चुआन तुम्हें देखे कितना अरसा हो गया था।" उसने कहा।

ताओ-चिङ के दिल की धड़कन रुक-सी गयी। क्या यह शानदार व्यक्तित्व चमकीली सोचभरी आँखों, घने काले बालों व दयालु चेहरे वाला दरम्याने क़द का नौजवान वही नहीं था जिसे वह पेइताइहो में पढ़ाते समय मिली थी। चाहे उनकी बातचीत बहुत थोड़े समय के लिए हुई थी परन्तु इस शानदार तथा होशियार छात्र

ने उसके ऊपर एक विशेष प्रभाव डाला था और अक्सर वह उसके बारे में सोचती रहती थी। लू चिआ-चुआन शायद उसके बारे में भूल गया था। और वह ख़ुद अपना परिचय देने में बहुत शर्म महसूस कर रही थी।

सभी से हाथ मिलाकर लू चिआ-चुआन एक मूढ़े पर बैठ गया, और लो ता-फाङ की तरफ़ मुड़कर मुस्कुराते हुए कहा :

"अपनी बात जारी रखो मित्र। जब तुम अपनी बात ख़त्म कर लो, फिर मैं तुम सभी का मनोरंजन करूँगा।"

"ठीक है, तो मैं अपनी कहानी आगे बढ़ाता हूँ।" लो ता-फाङ ने मुस्कुराते हुए कहा और अपना गला खँखारते हुए शुरू हो गया, "जैसे-जैसे रात बीतती जा रही थी, बारिश और तेज़ होती जा रही थी। उत्साहजनक माहौल बन जाने के कारण लोग धीरे-धीरे शान्त हो गये और आधी रात बीतते-बीतते मिङ मकबरे की बैरकों में सिवाय दूरी पर टिमटिमाते इक्का-दुक्का बल्वों की रोशनी को छोड़कर, और कुछ नहीं दिखायी दे रहा था। कीचड़ में सन्तरियों की छप-छप की आवाज़ को छोड़कर और कुछ सुनायी नहीं दे रहा था। अचानक हमारी निगरानी चौकियों ने ख़बर दी : 'सरकार ने तीस से भी ज़्यादा ट्रक तथा एक हज़ार से भी ज़्यादा फ़ौजी हमें ज़बरदस्ती पेइपिङ वापस भेजने के लिए भेजे हैं।' इस आश्चर्यजनक समाचार को सुनकर हम लोग फिर जोश में आकर नारे लगाने लगे।" पहले वह यूँ ही आराम से बोल रहा था, परन्तु अब वह गम्भीर हो गया था और उसकी आवाज़ धीमी होते हुए भी साफ़ एवं दृढ़ थी। "हम इतने ज़ोर से चिल्ला रहे थे जितने पहले कभी नहीं चिल्लाये थे। हम नहीं जायेंगे। हम जाने से इन्कार करते हैं। पहले तुम हमें रिहा करो। तुम्हें तरक़्क़ी, धन, दौलत व लोगों के ख़ून की प्यास है और हमें अपनी मातृभूमि के लिए ख़ुशियाँ तथा आज़ादी चाहिए। आज़ादी। हाँ, आज़ादी चाहिए। हम नहीं जायेंगे।" लो ता-फाङ अपना घूँसा लहराते हुए चिल्ला रहा था और उसका चेहरा लाल हो गया था। श्रोता बिल्कुल चुप थे। उनमें से एक भी नहीं हँसा। हर कोई लो ता-फाङ की तरफ़ उत्सुकता से देख रहा था और कइयों की आँखों में आँसू थे।

कमरे में चुप्पी छा गयी।

भद्दे चेहरे वाला वाङ चियान-फू जल्दी ही चला गया था। थोड़ी देर बाद बाक़ी लोग खाने-पीने और खुलकर बातचीत करने लगे।

"मैं तुम्हें एक मज़ेदार बात सुनाता हूँ।" लू चिआ-चुआन ने साथियों की तरफ़ मुस्कुराकर देखते हुए कहा। "मैंने इसे थोड़ा ही समय पहले सुना था। और मैं सोचता हूँ कि यह भी च्याङ काई-शेक के केन्द्रीय सेना अकादमी में छात्रों के सामने हमारे खोये हुए इलाक़े को तीन साल में पुनः प्राप्त करने की शेखी बघारने के समान ही हास्यप्रद है। कुछ दिन पहले जब जेहोल में स्थिति बहुत ख़तरनाक मोड़ पर पहुँच गयी थी, तब च्याङ का साला टी.वी. सुङ राज्य की राजधानी चेङ तेह गया। जहाज़

से उतरते ही उसने जेहोल छावनी की फ़ौजों के सामने बड़ा भावनात्मक और जोशीला भाषण दिया। उसने कहा, "लड़ाई जारी रखो। मैं तुमसे वादा करता हूँ कि केन्द्रीय सरकार तुम्हारा साथ देगी। जहाँ भी तुम जाओगे, हर समय टी.वी. सुङ को अपने साथ पाओगे। अगर तुम दुश्मन को पृथ्वी के आख़िरी सिरे तक भी धकेल दोगे तो वहाँ भी टी.वी. सुङ तुम्हारे साथ होगा।...परन्तु, जेहोल की लड़ाई के पहले दिन ही जब दुश्मन अभी काफ़ी दूर था, यह महानुभाव सुङ, फ़ौजों के साथ ज़मीन के आख़िरी सिरे तक जाने की बजाय इतने गुप्त रूप से नानकिङ वापस भाग गया कि किसी को पता भी नहीं चला कि वह कहाँ चला गया है।"

परन्तु हैरानी की बात तो यह थी कि ली-पिङ की हँसी छुड़ाने की बजाय लू चिआ-चुआन की सच्ची कहानी ने पुराने घावों को फिर से कुरेद दिया तथा दुखभरी यादों को ताज़ा कर दिया। बाक़ी लोग बिना कुछ बोले एक-दूसरे को देखे जा रहे थे, अन्त में सिऊ-यू ने कुछ मिनटों के बाद धीरे से बोलते हुए चुप्पी को तोड़ा :

"यह तो बहुत भयावह है। यदि जेहोल पर भी क़ब्ज़ा हो गया है तब तो जल्दी ही सारे का सारा उत्तरी चीन भी..." श्यू निङ खुद को ज़्यादा देर तक न रोक सका। सिऊ-यू को एक तरफ़ धकेलते हुए तथा अपनी मुट्ठियाँ भींचते हुए उसने लू से प्रार्थना की :

"लू भाई, क्या हो रहा है, हमें इसके बारे में कुछ और बताओ। जब से ये मुसीबतभरी घड़ी आयी है, मैं किसी भी मीटिंग में नहीं जा सका हूँ।"

"हाँ साथी लू। आगे बताइये।" सिऊ-यू तथा ली-पिङ दोनों ने कहा।

"परन्तु मुझे आप लोगों से कोई ज़्यादा मालूम नहीं है," उसने मुस्कुराकर सिर हिलाते हुए कहा।

लो ता-फाङ ने उसकी तरफ़ अपनत्वभरी निगाहों से देखते हुए कहा, "साथी लू, शुरू हो जाओ और जैसा सभी साथी चाहते हैं वैसा ही करो।"

सभी की लू चिआ-चुआन से यह उम्मीद तथा उसके प्रति सम्मान की भावना ने ताओ-चिङ को उसकी तरफ़ और ग़ौर देने पर बाध्य किया। वह उसके पास जाकर अभिवादन करना चाहती थी, परन्तु शर्मा रही थी। कमरे में मौजूद बाक़ी सभी लोग उससे कहीं ज़्यादा जानते थे तथा उन लोगों से बिल्कुल अलग थे जिनसे वह पहले मिली थी। उन सभी के पास कुछ आदर्श थे जो उन्हें आगे बढ़ने की प्रेरणा देते थे तथा उनमें अपने देश व लोगों के प्रति ज़िम्मेदारी की भावना थी। इस नये माहौल में वह अपनी कमियों के प्रति कुछ ज़्यादा ही सजग हो उठी थी तथा उसने अपनेआप को एक अँधेरे कोने में छिपा लिया व सारा समय चुपचाप बैठी रही।

"आज के हालात देखकर किसी का भी ख़ून खौल सकता है।" लू चिआ-चुआन ने हरेक की तरफ़ ध्यान से देखते हुए शान्ति से बोलना शुरू किया। हर उस चीनी की सहन-शक्ति समाप्त हो चुकी है, जिसमें ज़रा भी ग़ैरत बाक़ी है।

28 जनवरी की घटना* के बाद से यद्यपि सरकार बातचीत के दौरान प्रतिरोध करने का दिखावा कर रही है, परन्तु असलियत में प्रतिरोध न करने की नीति पर चल रही है। थोड़े दिन पहले, हो यू-क्वो को शानहाईक्वान दर्रे पर पाँच दिन से भी कम की लड़ाई के बाद पीछे हटने का आदेश मिला और जेहोल राज्य में केवल सात दिन की लड़ाई के बाद ही उसकी राजधानी चेङ तेह दुश्मनों के हाथों में चली गयी। अब जापानी हमलावर महान दीवार के साथ लगते दर्रों पर हमले की तैयारी कर रहे हैं।

लू चिआ-चुआन ने माथे से पसीना पोंछने के लिए रूमाल निकाला। कुछ क्षण पहले का संयम व सन्तुलन अब उसमें नहीं रह गया था और वह गुस्सेभरी, ऊँची आवाज़ में बोल रहा था।

"चीनी राष्ट्र ऐसी हालत में पहुँच गया है जहाँ पर इसका अपना अस्तित्व ही दाँव पर लग गया है, फिर भी च्याङ काई-शेक अभी भी यही कह रहा है कि हमारे दुश्मन जापानी हमलावर नहीं बल्कि 'कम्युनिस्ट बदमाश' हैं। जापानियों से लड़ने की बजाय दसियों लाख चीनी फ़ौजें, पहले से कहीं अधिक भयंकर रूप से लाल फ़ौज को घेरे हुए हैं और कम्युनिस्टों तथा नौजवान देशभक्तों को मार रही हैं... परन्तु माओ त्से-तुङ तथा चू तेह के नेतृत्व में लाल फ़ौज ने, स्वयं च्याङ काई-शेक के निर्देशन में डाले गये इस घेरे को पहले ही छिन्न-भिन्न कर दिया है। हमें एक बहुत बड़ी जीत प्राप्त हुई है।"

"अच्छा हो कि देश को स्वयं 'अपने गुलामों' के क़ब्ज़े में आने देने की बजाय अपने पड़ोसी मित्र राज्य के हवाले कर दिया जाये," श्यू मिङ मुक्का घुमाते हुए चिल्लाया, "क्या तुम जानते हो इसका मतलब क्या है? वे इसे हमलावरों के बाहर धकेलने से पहले अपने घर में हिसाब चुकता करना कहते हैं।"

कमरे में मौजूद दर्ज़नभर युवक युवतियों गर्मागर्म बहस में उलझे हुए थे। ताओ-चिङ एक कोने में चुपचाप बैठी हरेक बात ध्यानपूर्वक सुन रही थी। उनकी बातें, धान के तपते खेतों पर पड़ती वर्षा की शीतल फुहारों की तरह उसके वीरान व टूटे दिल को ठण्डक पहुँचा रही थीं। अपने लिए इन पूर्णतः नये भावों से प्रभावित होकर उसकी दूसरे साथियों से जान-पहचान करने की तथा उनकी बातचीत में शामिल होने की बड़ी इच्छा हो रही थी। परन्तु अपनी आदत के कारण अकेला रहने की आदत की वजह से तथा शर्मीले स्वभाव ने उसे चुप रहने के लिए और दूसरों की निगाह में न आने के लिए मजबूर किये रखा। "भाई लू!" श्यू निङ ने अचानक लू चिआ-चुआन से कहा, "तुम्हारे ख़याल से हमें क्या करना चाहिए?" इस पर

---

* 28 जनवरी 1932 को जापान में शंघाई पर हमला कर दिया। शंघाई में तैनात क्वोमिन्ताङ की 19वीं सेना और शंघाई की जनता ने अप्रतिरोध की नीति को मानने से इन्कार कर दिया और जमकर मुक़ाबला किया। लेकिन च्याङ काई-शेक और वाङ चिङ-वेई ने उनके साथ गद्दारी की।

ताओ-चिङ समेत सभी लू चिआ-चुआन की तरफ़ इस तरह देखने लगे जैसे उनकी समस्या का हल उसके हाथों में हो। सभी के चेहरों पर चिन्ता के गहरे बादल छाये हुए थे।

लू चिआ-चुआन ने ताओ-चिङ समेत सभी के उत्सुक चेहरों की ओर देखा तथा धीमी पर गहरी आवाज़ में कहा, "तुम्हें रास्ता चाहिए? निस्सन्देह हम सभी रास्ते की तलाश में हैं – समूचा चीनी राष्ट्र इस रास्ते की खोज में है। परन्तु यह रास्ता कहाँ है? मेरे ख़याल में एक रास्ता है और वह है प्रतिरोध एवं संघर्ष का रास्ता। हमारी समस्याओं का समाधान हमारे राष्ट्र तथा जनता के समाधान में ही निहित है। अर्ध-सामन्ती तथा अर्ध-औपनिवेशिक चीन के बुद्धिजीवियों के लिए इसके अलावा और कोई रास्ता नहीं है। वर्तमान में हमारा पहला कर्त्तव्य है चीनी राष्ट्र की मुक्ति, और केवल तभी हमारी व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान निकल सकता है।"

"हमें अपनी समस्याओं का समाधान खोजने से पहले अपने राष्ट्र की समस्याओं का समाधान खोजना चाहिए...केवल यही एकमात्र रास्ता है।" सू-निङ ने मुक्का उठाते हुए लू की बात का अनुमोदन किया।

"हाँ, यही एकमात्र रास्ता है।" सिऊ-यू श्यू निङ की ओर देखते हुए बुदबुदायी।

"परन्तु अभी भी मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा कि क्या करना चाहिए..." एक और बड़बड़ाया।

एक बार फिर शोर मच गया व हर कोई अपने-अपने विचार प्रकट करने लगा। इसी बहस के दौरान लो ता-फाङ उछलकर खड़ा हुआ और मेज़ थपथपाते हुए चिल्लाया, "सुनिये। केवल बातें बनाने से कुछ नहीं होने का। हमें कुछ क्रियात्मक व उद्देश्यपूर्ण काम करना चाहिए।" सभी लोग लो ता-फाङ को घेर खड़े हो गये तथा अपने-अपने सुझाव देने लगे, जबकि लू चिआ-चुआन उठकर ताओ-चिङ के पास चला गया।

"हेलो, लिन ताओ-चिङ! मुझे पहचाना?" उसने अपना हाथ आगे बढ़ाते हुए कहा।

वह उससे हाथ मिलाने के लिए फुर्ती से उठी तथा शर्माते हुए कहा, 'क्यों नहीं...हम पेइताइहो में मिले थे।

अच्छा तो, अब आप वापस पेइपिङ आ गयी हैं। आपने याङचुआङ गाँव कब छोड़ा? लू चिआ-चुआन इतनी गर्मजोशी तथा आत्मीयता के साथ बोल रहा था जैसे वर्षों बाद किसी बिछुड़े हुए पुराने मित्र से बातें कर रहा हो।

"एक साल से ऊपर हो गया है। आप कैसे हैं? क्या आप अभी भी पीकिङ विश्वविद्यालय में हैं?" ताओ-चिङ ने मुस्कुराते हुए पूछा। उसे ऐसा महसूस हो रहा था जैसे लू चिआ-चुआन उसका गहरा मित्र है।

इससे पहले कि वह जवाब दे पाता, ली-पिङ की नज़र उन पर पड़ गयी और वह आकर उनकी बातचीत में शामिल हो गयी।

"अच्छा, मैंने तो कभी सोचा भी नहीं था कि तुम दोनों एक-दूसरे को जानते होंगे।"

"हम एक साल पहले, बहुत ही ख़ूबसूरत जगह पर मिले थे। लेकिन देश के लिए वह बड़ा कठिन समय चल रहा था।" लू चिआ-चुआन ने थोड़ा मज़ाकिया लहज़े में ताओ-चिङ के साथ अपनी पहली मुलाक़ात के बारे में बताते हुए कहा, "कुमारी लिन मेरे जीजा जी से बहस में उलझी हुई थी। उन बातों को अब याद करना अच्छा लगता है।" उसकी तरफ़ मुड़कर लू ने फिर कहा, "वैसे आपने वहाँ पर पढ़ाना क्यों छोड़ा? आजकल आप क्या कर रही हैं?" ताओ-चिङ कानों तक लाल हो गयी। वह उसे यह कैसे बता सकती थी कि उसे पढ़ाना इसीलिए छोड़ना पड़ा, क्योंकि वह युङ-त्से के पास आकर रहने लगी थी तथा उसके साथ शादी भी कर ली थी, कि उसके लिए अब हर चीज़ ख़त्म हो चुकी थी। उसकी जीभ उसके तालू से चिपक गयी थी तथा वह शर्माते तथा मुस्कुराते हुए केवल उसकी तरफ़ देखतीभर रह गयी।

ताओ-चिङ को कठिन तथा शर्मिन्दगीभरी परिस्थिति में पड़ा देख, ली-पिङ ने मुस्कुराते हुए कहा, "तुम उसका हाल जानना चाहते हो तो सुनो, ताओ-चिङ एक अच्छी लड़की है, एक बहुत ही प्यारी लड़की है, परन्तु इसके रास्ते में एक बहुत बड़ी अड़चन है, और वह है इसका रूढ़िवादी पति जो इसे आगे बढ़ने से रोके हुए है।"

"ली-पिङ...यहाँ आओ।" किसी ने उसे पुकारा। "तुम दोनों तो पुराने परिचित निकले, क्यों ठीक है ना?, तुम बातें करो, मैं चलती हूँ।" दोनों पर एक नज़र डालते हुए वह दूसरी ओर चली गयी।

जब वे अकेले रह गये तो लू चिआ-चुआन तथा ताओ-चिङ दोनों को लगा कि जैसे अभी उन्हें एक-दूसरे से काफ़ी कुछ कहना है।

——:o:——

अध्याय 12

पौ फटने से पहले ताओ-चिङ अपने सूने घर में वापस आ गयी। यद्यपि वह बहुत ही थकी हुई व उनींदी थी, फिर भी उसे नींद न आ सकी। नववर्ष की आतिशबाज़ी के धमाके उसे तंग कर रहे थे तथा रात के अनुभव के बाद उसका दिल बुरी तरह धड़क रहा था। अजनबी परन्तु मित्रतापूर्ण चेहरे उसकी आँखों के आगे घूमते थे। लू चिआ-चुआन, लो ता-फाङ, सू-निङ, सिऊ-यू, ली-पिङ... ये सभी अपने प्यारे

राष्ट्र चीन के लिए रास्ता तलाशने को उत्सुक तथा सच्ची एवं उद्देश्यपूर्ण ज़िन्दगी जीने की हार्दिक लालसा लिये कितने मिलनसार तथा प्रसन्नचित लोग थे। उसने सुबह के उजाले से सफ़ेद होती खिड़कियों की ओर देखा तथा रात की दावत व लू चिआ-चुआन के साथ अपनी बातचीत को याद कर मन्द-मन्द मुस्कुराने लगी।

आतिशबाज़ी के धमाके बड़े ज़ोर-शोर से हो रहे थे तथा ली-पिङ के कमरे की अँगीठी दहक रही थी। यद्यपि रात के दो बज चुके थे, फिर भी उसके मेहमान अभी भी बातें करने व अपना मनोरंजन करने में मशगूल थे। सू निङ और सिऊ-यू पटाखे छुड़ाने अहाते में चले गये थे। लो ता-फाङ ओर ली-पिङ बिस्तर पर बैठे ओर धीमी आवाज़ में बातें कर रहे थे। वह शायद उसे समझाने की कोशिश कर रहा था कि ली-पिङ ने रोना शुरू कर दिया और तब वह भी निराश हो गया लगता था। आख़िर में वह एक तरफ़ होकर बैठ गया तथा ली-पिङ उठकर सू निङ व दूसरों के पास चली गयी। लोगों का कहना था कि लो ता-फाङ तथा ली-पिङ एक-दूसरे से प्रेम करते थे परन्तु शायद अब उनमें झगड़ा हो गया था तथा अब वे दोनों एक-दूसरे से खिंचे-खिंचे से रहते थे।

इस पूरे समय ताओ-चिङ तथा लू चिआ-चुआन एक कोने में बैठे बातें करते रहे। ताओ-चिङ अपने इस नये मित्र, जोकि बहुत ईमानदार, होशियार, हँसमुख तथा मिलनसार था, से बेहद प्रभावित महसूस कर रही थी। वह राजनीति के बारे में उसके स्पष्ट और सुलझे हुए विचारों से बेहद प्रभावित था, जोकि उसने इससे पहले कभी नहीं सुने थे। लू चिआ-चुआन बड़े ही स्वाभाविक तथा अपनेपन से उसके पास बैठकर उसके पारिवारिक ज़िन्दगी व अतीत के बारे में पूछता रहा। वह बीच-बीच में देश की वर्तमान स्थिति के बारे में कुछ चौंकाने वाले प्रश्न भी पूछ बैठता था। अन्ततः ताओ-चिङ ने भी अपनी स्वाभाविक चुप्पी की चादर उतार ली तथा दिल खोलकर बातें करने लगी। लू चिआ-चुआन के सीधे-सादे सवालों और सरल स्पष्ट विचारों ने ताओ-चिङ की आँखें खोल दी थीं तथा उसको घटनाओं के वास्तविक मायने समझाने में मदद की थी। लू चिआ-चुआन के समझाने के ढंग से वह अचम्भित थी। यही कारण था कि वह ज़रा भी थकान महसूस किये बिना उसके साथ बातें करती रही।

"भाई लू!" उसने सू निङ की तरह सम्बोधित करते हुए कहा : "क्या आप मुझे लाल फ़ौज तथा कम्युनिस्ट पार्टी के बारे में कुछ बतायेंगे? क्या वे वास्तव में जनता व देश के लिए काम करते हैं? कुछ लोग उन्हें 'बदमाश' क्यों कहते हैं?"

लू चिआ-चुआन ओट में बैठा था। उसने हल्के से ताओ-चिङ की तरफ़ तिरछी आँखों से देखा, और उसकी बड़ी-बड़ी चमकीली आँखों में एक शरारतभरी चमक कौंध गयी।

वह कहने लगा, "एक चोर को सभी व्यक्ति चोर दिखायी देते हैं। तीन-तीन

पत्नियाँ तथा चार-चार रखैलें रखने वाले नैतिकतावादी ही सबसे बढ़कर औरतों पर व्यभिचार का आरोप लगाते हैं। वे चीनी शासक जिन्होंने सैकड़ों-हज़ारों नवयुवकों का क़त्लेआम करवा दिया, दूसरों को हत्यारे, दंगा-फसाद भड़काने वाले, डाकू तथा बदमाश कहते हैं... क्या इसमें कोई हैरानी की बात है?" उसके मज़ाक़िया लहजे़ को महसूस कर ताओ-चिङ मुस्कुरा दी तथा अपनेआप को अधिक निश्चिन्त एवं निडर महसूस करने लगी।

"भाई लू, अभी आपने बताया कि हम नवयुवकों के लिए मात्र एक ही रास्ता है और वह है प्रतिरोध व संघर्ष का रास्ता। परन्तु मुझे इसमें बिल्कुल विश्वास नहीं है।"

उसकी आँखें हैरानी से फैल गयी। "क्यों नहीं? क्या तुम्हारे ख़याल से चुप रहने तथा कुछ न करने से कोई समाधान निकल सकता है?"

ताओ-चिङ ने अपना सिर झुका लिया तथा बेचैनी के साथ अपना सफ़ेद लिनेन का रूमाल मसलने लगी। उसने धीरे से उदासीभरे स्वर में जवाब दिया, "तुम्हें नहीं मालूम...मैंने विरोध भी करके देखा है और संघर्ष भी करके देखा है लेकिन मुझे मुसीबत से निकलने का रास्ता नहीं मिला।"

लू चिआ-चुआन ने उसकी इस बात को हँसी में टाल दिया। उसकी इस हँसी में भी एक ख़ास तरह का अपनापन था।

"अच्छा तो यह बात है। क्यों? ठीक है ना। ताओ-चिङ, मैं तुम्हें एक उदाहरण देता हूँ।" उसने कमरे में मौजूद लोगों पर नज़र डाली जो खुशी में पी रहे थे और बातें कर रहे थे तथा उँगली से एक अक्षर बनाया। "देखो, ताओ-चिङ, यह ऐसे होता है। अक्षर म्यू* केवल एक पेड़ को दर्शाता है, परन्तु जब इसी अक्षर को दो बार लिखा जाये तो इसे 'लिन' कहते हैं, जिसका अर्थ एक जंगल होता है और यदि इसे तीन बार लिखा जाये तो इसका मतलब एक बहुत बड़े जंगल से होता है जिसे आँधी या तूफ़ान भी नष्ट नहीं कर सकते। जब आष अकेले, केवल अपने बूते पर संघर्ष करते हैं तो स्वाभाविक है कि आप किसी मंज़िल तक नहीं पहुँच पाते तथा असफल हो जाते हैं परन्तु जब आप स्वयं को सामूहिक तथा संगठित संघर्ष के साथ जोड़कर चलते हैं, जब आप अपना भविष्य जनता के भविष्य में देखते हैं तो आप अकेले नहीं रह जाते बल्कि एक विस्तृत जंगल का हिस्सा बन जाते हैं।"

इस बातचीत से ताओ-चिङ के चेहरे पर मुस्कान फैल गयी। "आपने यह सबकुछ मुझे कितनी अच्छी तरह समझाया है, मैं बता नहीं सकती। पहले तो मैं केवल अपने अस्तित्व के बारे में ही चिन्तित रहती थी और किसी भी बात के बारे

---

* म्यू.... का मतलब होता हे "लकड़ी" या "पेड़"। *लिन....* का मतलब होता है "वन" या "जंगल"। *शेन...* का मतलब होता है "बड़ा जंगल"।

में तो मैंने कभी सोचा ही नहीं था। परन्तु आज रात आपकी बातें सुनने के बाद मुझे ऐसा महसूस होता है कि मैं...कि मैं...कि मैं भी कितनी बेवक़ूफ़ थी।" उसने बड़ी मासूमियत के साथ कहा। उसे अपनेआप पर हैरानी हो रही थी कि वह ऐसे व्यक्ति से इतना खुलकर बातें कर रही हैं, जिसे वह कुछ ख़ास नहीं जानती थी।

"यह शायद इसीलिए है कि तुम अब तक अपने खुद के ही बनाये दायरे में क़ैद रही हो।" लू चिआ-चुआन ने धीरे से मुस्कुराते हुए कहा। "ताओ-चिङ, इस उथल-पुथलभरे समय में यह बहुत ही ज़रूरी है कि तुम अपने इस संकुचित दायरे से बाहर आओ तथा इस विशाल दुनिया को अच्छी तरह समझो। यह दुनिया दुखदाई होते हुए भी बहुत ख़ूबसूरत है। अपने दायरे से बाहर आओ व इस दुनिया को देखो।"

लू चिआ-चुआन की बातें लोगों को बेहद आकर्षित करती थीं क्योंकि उसमें दूसरों के प्रति चिन्ता, हाज़िरजवाबी तथा समझाने की कला का मिश्रण था। ताओ-चिङ जितना उसके साथ हुई बातों को याद करती थी उतना ही वह खुश तथा तनावरहित महसूस करती थी।

"ताओ-चिङ, तुम भी कितनी भोली तथा सच्ची हो।" उसने बेहद स्वाभाविक ढंग से कहा था। यह अच्छी बात है कि तुम बहुत कुछ जानना चाहती हो, परन्तु केवल एक ही बार में सभी विषयों पर बातें नहीं कर सकते। एक-दो दिन में मैं तुमसे मिलने आऊँगा तथा तुम्हारे लिए कुछ पुस्तकें भी लाऊँगा – मुझे नहीं लगता कि तुमने समाजविज्ञान पर ज़्यादा कुछ पढ़ा है। क्यों? मैं कुछ पुस्तकें लाने की कोशिश करूँगा। कुछ सोवियत साहित्य भी है, जैसेकि 'द आयरन फ़्लड' और 'द नाइनटीन'* तथा गोर्की की 'माँ'। वैसे भी तुम्हें उपन्यास पढ़ना ज़्यादा अच्छा लगता है।"

यह पहली दफ़ा था कि ताओ-चिङ को किसी ने पढ़ने के लिए प्रेरित किया था। ताओ-चिङ ने लू चिआ-चुआन के चेहरे की ओर आभारभरी निगाहों से देखा।

वे अपनी बातचीत में डूबे हुए थे कि ली-पिङ ने आकर कहा :

"साथी लू, ताओ-चिङ एक बहुत ही अच्छी व होशियार लड़की है, परन्तु हमें इसकी गरदन में बँधे चक्की के पाट से छुटकारा पाने में इसकी मदद करनी चाहिए। एक ताज़ा फूल को गोबर के ढेर पर पड़ा देखकर बड़ा बुरा लगता है। वह इसे बरबाद करके छोड़ेगा।"

ताओ-चिङ ने शर्माते हुए, याचनाभरी नज़रों से ली-पिङ की ओर देखा, क्योंकि वह नहीं चाहती थी कि ऐसे समय पर युङ-त्से का ज़िक्र किया जाये। सुबह होने से पहले ताओ-चिङ तथा ली-पिङ ने लू चिआ-चुआन तथा लो ता-फाङ को विदा किया। ली-पिङ, लो ता-फाङ से बातें करती जा रही थी जबकि ताओ-चिङ

---

* सोवियत लेखकों सेराफ़िनोविच तथा फ़देयेव के उपन्यास।

व लू चिआ-चुआन बातें करते हुए उनके पीछे-पीछे चल रहे थे।

"भाई लू, मुझे इस बात का बड़ा दुख है कि मैं क्रान्ति के बारे में कुछ भी नहीं जानती, और न ही यह जानती हूँ कि हमें देश को बचाने के लिए क्या करना चाहिए? कल आप मेरे लिए पुस्तकें ज़रूर लेकर आना।"

"ज़रूर लाऊँगा। अब अलविदा।" उसने दोनों लड़कियों से बड़ी गर्मजोशी से हाथ मिलाते हुए कहा। ताओ-चिङ को जुदा होने में एक अजीब-सी हिचकिचाहट-सी महसूस हो रही थी

"कितने होशियार तथा बुद्धिमान लोग हैं वे।..." जब वह यह सब सोचकर मन ही मन मुस्कुरा रही थी, तब चिड़ियाँ खिड़की से बाहर चहचहाकर सुबह होने की सूचना दे रही थीं। क्षणभर बाद वह युङ-त्से के बारे में सोचने लगी, जो नववर्ष की छुट्टियाँ अपने माता-पिता के साथ बिताने के लिए अकेला ही घर चला गया था। वह उसके साथ इसीलिए नहीं गयी थी क्योंकि वह यू चिङ-ताङ से मिलने से डरती थी। ली-चिङ का नववर्ष की दावत में उसे इसीलिए आमन्त्रित कर लिया था क्योंकि वह अपने कमरे में अकेली थी, परन्तु अब युङ-त्से के बारे में सोचकर उसका दिमाग़ भारी हो गया था।

"उनकी तुलना में मैं कितनी दुर्भाग्यशाली हूँ।" यह सोचकर आह भरते हुए उसने रज़ाई अपने सिर पर खींच ली।

लड़कियों से विदा लेकर लू चिआ-चुआन तथा लो ता-फाङ सुनसान गली में इकट्ठा चलने लगे।

"लो ता-फाङ तुम आज इतने उदास क्यों थे? मेरा ख़याल है कि तुम्हारा ली-पिङ से झगड़ा हो गया है।" लू चिआ-चुआन ने उसे तसल्ली देने के लिए उसके कन्धे पर हाथ रखते हुए मुस्कुराकर कहा।

"बिल्कुल यही बात है।" लो ता-फाङ ने उत्तेजित होते हुए कहा। "वह लड़की इतना क्यों बदल गयी है? या मैं ही शुरू से ग़लती पर था।...उसका मुझे छोड़ देना ज़्यादा मायने नहीं रखता, परन्तु उसे सू-निङ के पीछे नहीं पड़ना चाहिए। सिऊ-यू तथा सू-निङ कई साल से मित्र हैं, और ऐसा लगता है जैसे वे एक-दूसरे के लिए बने हों, परन्तु वह बिल्कुल बेशर्मी से उन्हें अलग करने की कोशिश कर रही है। साथी लू, क्या तुम नहीं मानते कि जब कोई राजनीतिक रूप से पिछड़ जाता है या गिर जाता है तो अपनी निजी ज़िन्दगी में भी शर्तिया उसका पतन हो जाता है। ली-पिङ पहले वास्तव में एक अच्छी लड़की थी, उसके अपने आदर्श थे और यही कारण था कि मैं उसे प्यार करता था। लेकिन अब एक तो उसने पढ़ाई छोड़ दी है, दूसरे किसी भी मीटिंग में नहीं जाती। केवल नाटकबाज़ी करने, फ़िल्म अभिनेत्री बनने व इश्क़-मोहब्बत करनेभर में ही उसकी रुचि रह गयी है। इसीलिए

स्वाभाविक है कि मेरे जैसे लोग अब उसे अच्छे नहीं लगते।"

लू चिआ-चुआन ने चुपचाप सिर हिलाया। सूनसान गली में नज़रें दौड़ाते हुए उसने धीमे से कहा, "साथी, मुझे पूरा विश्वास है कि तुम इस मुश्किल में से निकल आओगे। आख़िरकार, केवल प्यार ही सबकुछ नहीं होता..." होंठों पर एक शरारतभरी मुस्कान लिये उसने लो ता-फाङ पर एक ख़ास नज़र डाली।

लो ता-फाङ ने चलते-चलते उसे एक घूँसा जमाया और बड़बड़ाया : "ठीक है। मैं तुम्हारा मतलब समझता हूँ, पर मुझे यह अजीब लगता है कि एक आदमी जिसे औरतों से कुछ लेना-देना नहीं है, लिन ताओ-चिङ में इतनी रुचि ले रहा है। क्या बात है? तुम उससे कई घण्टे बात करते रहे। क्या तुम्हें मालूम नहीं है, जैसाकि ली-पिङ कहती है, कि उसके गले में चक्की का पाट बँधा हुआ है। मैं उसके प्रेमी के बारे में जानता हूँ। वह हू शिह का एक विश्वसनीय शिष्य है। मैंने उसे समझाने की बहुत कोशिश की थी परन्तु उससे कोई फ़ायदा नहीं हुआ।"

"बकवास मत करो।" लू चिआ-चुआन ने नाराज़ होते हुए कहा, "मुझे उसके बारे में अपने जीजाजी से थोड़ा-बहुत पता चल चुका है। वह बहुत ही न्यायप्रिय व साहसी लड़की है। हमें उसे और ज़्यादा मुसीबतों में फँसने देने की बजाय उसकी तरफ़ सहायता का हाथ बढ़ाना चाहिए। पेइताइहो में अठारह सितम्बर की घटना पर उसकी मेरे जीजाजी से बड़ी ज़ोरदार बहस हुई थी और उसका कहना था कि चीन को कभी गुलाम नहीं बनाया जा सकता। साफ़ बात तो यह है कि मैं उसकी सच्ची भावना तथा बात करने की लहज़े की गम्भीरता से प्रभावित हुआ था। तुम्हें इसे निजी मामला नहीं बनाना चाहिए। अच्छा हो कि तुम अपनी जुबान पर क़ाबू रखो और इस तरह की घटिया बातें आगे से ना करो।"

"अरे भई! यह तो मैं मज़ाक़ में कह रहा था।" लो ता-फाङ मुस्कुराते हुए बोला। "क्या तुम एक मज़ाक़ भी सहन नहीं कर सकते? मुझे ख़ूब पता है कि तुम अपने उद्देश्य के प्रति इस क़दर समर्पित हो कि कभी भी निजी स्वार्थ को अहमियत नहीं देते। चाहे तुम सारा दिन लड़कियों के बीच रहते हो, परन्तु फिर भी तुम पक्के ब्रह्मचारी हो। काश! मैं भी तुम्हारे जैसा बन सकता।" और तभी ली-पिङ की एक मीठी-सी याद उसके ज़ेहन को छू गयी और वह कुछ क्षण के लिए उदास हो गया।

"मैं कोई ब्रह्मचारी नहीं हूँ," अचानक लू चिआ-चुआन के जवाब ने उसकी विचारों की लड़ी तोड़ी। "परन्तु ऐसे हालात में अपनी भावनाओं के लिए मेरे पास कोई समय नहीं है। ता-फाङ वह लड़की – लिन ताओ-चिङ अपने भोलेपन तथा उत्साह के कारण प्यारी लगती है। वह एक विद्रोही है। उसकी मदद करना और उसे सही रास्ता दिखाना हमारा कर्त्तव्य बनता है। क्या तुम इस बात से सहमत नहीं हो?"

लो ता-फाङ उसकी ओर मुड़ा और हँसते हुए बोला : "निस्सन्देह! हमें उसे क्रान्ति का रास्ता दिखाना चाहिए।"

यद्यपि आज नये साल का पहला दिन था, फिर भी इस समय ज़्यादा लोग दिखायी नहीं दे रहे थे। केवल इक्का-दुक्का राह चलते लोग थोड़ी-थोड़ी देर बाद सड़क की मद्धिम रोशनी में दिखायी दे जाते थे। अलग होने से पहले दोनों मित्रों ने अपने काम के बारे में विचार-विमर्श किया। नानकिङ में निकाले गये बड़े जुलूस से लौटने के बाद लू चिआ-चुआन के लिए पीकिङ विश्वविद्यालय में रहना सुरक्षित नहीं रह गया था और इसीलिए पार्टी ने उसे छात्रों के बीच खुफ़िया कार्य करने पर लगा दिया था। उसने लो ता-फाङ को सलाह दी :

''विश्वविद्यालय में जमे रहने के लिए तुम्हें हरसम्भव प्रयत्न करना चाहिए, यहाँ तक कि अपने पिता जी के प्रभाव का भी इस्तेमाल करना चाहिए। जैसाकि प्रतिक्रियावादी हम पर ज़्यादा से ज़्यादा दवाब डालते जा रहे हैं, हममें से ज़्यादातर के लिए खुले में काम करना असम्भव हो गया है। इसीलिए तुम्हें तथा सू हुई को दुश्मन की आँखों में धूल झोंकने की हरसम्भव कोशिश करनी चाहिए ताकि अवसर मिलने पर पूरे ज़ोर से वार कर सकें। और हाँ, एक बात और ली मेङ-यू आजकल ताङशान की खानों में खनिकों के बीच काम कर रहा है।"

"क्या?" यह समाचार सुनकर लो ता-फाङ उत्तेजना से खड़ा का खड़ा रह गया तथा अपने मित्र की ओर उत्सुकता से देखने लगा। "साथी लू, मैं भी वहाँ जाना पसन्द करूँगा। यहाँ बुद्धिजीवियों के बीच काम करना कोई मज़ाक़ नहीं है।"

"अब चुप हो जाओ।" लू चिआ-चुआन ने किसी को दूर से आते हुए देखकर लो ता-फाङ को टोका और उससे अलग होकर चलने लगा। एक शराबी की तरह लड़खड़ाते हुए लू चिआ-चुआन पीकिङ ऑपेरा का एक गीत गाने लगा :

चाँदनी रात हो...
तुम्हारा साथ हो...फिर क्या बात हो।...

वह लड़खड़ाते हुए तथा गाते हुए आगे बढ़ा व एक तंग गली में ग़ायब हो गया।

युङ-त्से नया सत्र शुरू होने से पहले ही पेइपिङ वापस आ गया। घर में दोबारा घुसते ही उसने देखा कि बिस्तर, पुस्तक की आलमारी, फूल, कलाकृतियाँ तथा रसोई तक का सामान यथावत था, परन्तु ताओ-चिङ के व्यवहार में बदलाव आ गया था। वह यह देखकर हैरान था कि चुपचाप, उदास रहने वाली ताओ-चिङ अब दरवाज़े पर बैठी एक हँसमुख जवान लड़की की तरह गुनगुना रही थी। उसे सबसे ज़्यादा हैरान तो उसकी आँखों ने किया जोकि सुन्दर होते हुए भी आमतौर पर बुझी-बुझी तथा दुखभरी दिखायी देती थी, परन्तु अब उनमें से खुशी झलक रही थी तथा वे पतझड़ की उस झील की तरह चमक रही थीं जिसमें प्रसन्नता की लहरें उठ रही हों।

'जवान औरत की आँखें देखकर ही पता चल जाता है कि उसे किसी से प्यार हो गया है।' टॉलस्टॉय की रचना 'आन्ना कैरेनिना' की पंक्तियों को याद करते हुए युङ-त्से को अचानक किसी आने वाली मुसीबत के अहसास ने जकड़ लिया। उसने ताओ-चिङ पर चुभती हुई नज़रें डालीं तथा जैसे ही वह ख़रीदारी के लिए बाहर गयी, उसने आलमारियों, ट्रंकों, दराज़ों यहाँ तक कि कूड़ेदान को भी उलट-पुलट डाला। परन्तु उसे मेज़ तथा उसके तकिये के पास कुछ वामपन्थी पुस्तकों के अलावा और कुछ नहीं मिला। बेचैनी से अपनी नज़रें चारों तरफ़ घुमाते हुए वह अपनेआप में बड़बड़ाया।

"मुझे पूरा विश्वास है कि कोई न कोई ज़रूर उससे प्यार करता है।" अब जबकि युङ-त्से वापस आ गया था, ताओ-चिङ ने बड़ी ख़ुशी से उसके लिए खाना बनाया और जब वह खा रहा था तो उसके पास बैठी रही तथा उसे अपने नये मित्रों के बारे में, अपने विचारों में आये बदलाव तथा अपने को मिली ख़ुशी के बारे में बताती रही। उसने अपने प्रियतम से यह सब छुपाना उचित नहीं समझा। यह सब सुनकर वह पीला पड़ गया और उसने अपनी खाने की थाली नीचे रखते हुए, त्यौरियाँ चढ़ाते हुए कहा :

"ताओ-चिङ मुझे विश्वास नहीं होता कि तुम इतनी जल्दी बदल गयी हो..." एक क्षण चुप रहने के बाद उसने फिर बोलना शुरू किया, "मैं तुमसे विनती करता हूँ कि तुम इस रास्ते पर मत चलो। यह बहुत ख़तरनाक है। एक बार यदि तुम्हें कम्युनिस्ट करार दे दिया गया तो तुम्हारा सिर कभी भी क़लम हो सकता है।"

ताओ-चिङ को बहुत गुस्सा आया। उसने तो सिर्फ़ कुछ नये मित्र बनाने व कुछेक प्रगतिशील पुस्तकें पढ़ने के अलावा कुछ भी नहीं किया था। वह उसे इस तरह डराने की कोशिश क्यों कर रहा है? वह गुस्से में युङ-त्से के हैरान-परेशान चेहरे की ओर घूरने लगी और जैसे ही उसके अन्दर कुछ बोलने की शक्ति आयी उसने अपने नये विचारों को स्वर दिया, जिन्हें वह पहले कभी व्यक्त नहीं कर पायी थी।

"युङ-त्से, तुम इतने अधिक संवेदनशील क्यों हो जाते हो? तुम भी तो इस गली-सड़ी पुरानी व्यवस्था से असन्तुष्ट हो तथा देख रहे हो कि जापानी कैसे हमारे चीन को अपनी पैरों तले रौंद रहे हैं। तो क्यों न तुम भी एक क़दम आगे बढ़ो और अपने देश तथा अपने लोगों के कुछ काम आओ।"

"क्योंकि...क्योंकि मैं सोचता हूँ...कि यह हमारे वश की बात नहीं है – ताओ-चिङ। यह तो हमारी सरकार तथा हमारी सशस्त्र सेनाओं का कार्य है। पीले चेहरों तथा ख़ाली हाथों वाले विद्वान कुछ नहीं कर सकते। निःसन्देह, खोखली नारेबाज़ी करना बहुत आसान है। जैसाकि तुम जानती हो, मैंने भी छात्रों के देशभक्तिपूर्ण आन्दोलन में भाग लिया था, परन्तु यह कुछ समय पहले की बात है।

अब मैं सोचता हूँ कि अपनी पढ़ाई की तरफ़ ध्यान देना ही सबसे अच्छी बात है। हमारा अपना एक घर है, हमारे लिए अच्छा यही होगा कि हम अपनेआप को ख़तरों से बचाकर रखें।"

"तुम इतने धूर्त कैसे हो सकते हो? अब तुम ही तो खोखली नारेबाज़ी कर रहे हो। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि तुम इतने बड़े कायर निकलोगे।"

युङ-त्से हैरान रह गया, कुछ समय तक तो उसकी मुँह से कोई आवाज़ नहीं निकली और वह टकटकी लगाये अपनी छोटी-छोटी चमकती आँखों से ताओ-चिङ की ओर ताकता रह गया। अचानक उसका चेहरा पीला पड़ गया, होंठ काँपने लगे तथा उसने अपना सिर मेज़ पर टिका दिया और ज़ोर-ज़ोर से सिसकने लगा। वह ताओ-चिङ से भी ज़्यादा दुखी दिखायी दे रहा था। यह उसका स्वाभिमान नहीं था जो आहत हुआ था बल्कि यह तो ईर्ष्या का दर्द था जिससे वह तड़प रहा था।

"वह कितनी कठोर हो गयी है? अवश्य ही उसका दिल किसी और पर आ गया है..." यह सोचकर उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। उसकी नज़र में दुनिया में केवल प्यार ही एक ऐसी वस्तु थी जोकि किसी औरत को बदलने की शक्ति रखती थी।

इस भावनात्मक अलगाव के बाद ताओ-चिङ और युङ-त्से में कई दिनों तक बोलचाल बन्द रही, लेकिन वह ज़रा भी उदास नहीं थी, बल्कि इन सारे दिनों वह प्रसन्नचित्त थी। उसकी गहरी काली भौंहें ख़ुशी से गोल हो जाती थीं और खाना बनाते व कपड़े धोते समय वह गुनगुनाते रहती थी। घर का काम ख़त्म होते ही वह पुस्तक लेकर बैठ जाती थी तथा घण्टों बिना हिले-डुले बड़ी तन्मयता से किताब पढ़ती रहती थी। अपनी पढ़ाई में तल्लीनता उसे युङ-त्से की मौजूदगी तथा घर की चारदीवारी में बन्द जीवन के रूखेपन से बेख़बर कर देती थी। वह अपने मन में इस विशाल दुनिया के बारे में ऊँची-ऊँची उड़ानें भरती रहती थी। जहाँ तक युङ-त्से का सवाल था, उसकी अपनी कक्षाओं में जाने की कोई इच्छा नहीं होती थी। ताओ-चिङ पर नज़र रखने के लिए वह दिनभर घर में पड़ा रहता था। हालाँकि उसने उसके भेद जानने की पूरी-पूरी कोशिश की, परन्तु वह उसकी निर्भीकता व खुलेपन को देखकर दंग था। उसे ताओ-चिङ का कोई नया प्रेमी नहीं दिखायी दिया।

शाम को ताओ-चिङ अपनी मेज़ पर झुकी हुई, शान्ति से लेनिन की पुस्तक 'राज्य एवं क्रान्ति' पढ़ती थी, उसकी मुख्य बातें लिखती जाती थी तथा महत्त्वपूर्ण अंशों को रेखांकित करती रहती थी। जब वह थक जाती थी, तब वह गोर्की का उपन्यास 'माँ' पढ़ती थी। एक बेहतर दुनिया की जो तस्वीर यह पुस्तक पेश कर रही थी, वह उसे एक असीम जोश से भर देती थी तथा उसे इतनी ख़ुशी और सन्तुष्टि मिलती थी जितनी उसने पहले कभी भी महसूस नहीं की थी। दूसरी तरफ़ युङ-त्से कमरे में अकेला पड़ा उकताता रहता था और पुराना चीनी-साहित्य, जिसे वह पिछले

एक साल से भी अधिक समय से पढ़ रहा था, दोहराता रहता था और ताओ-चिङ के पास बैठकर उसमें से अपने प्रिय टुकड़ों को ज़ोर-ज़ोर से पढ़ता था। उसकी छोटी-सी मेज़ पर इस तरह की पुस्तकों के धागे से सिले, बिना जिल्द के खण्ड बिखरे पड़े रहते थे और वह तब तक पढ़ता रहता था जब तक कि पुरानी घटनाओं और दुर्लभ संस्करणों में डूबकर वह भूतकाल में कहीं गहरे नहीं चला जाता था। जब उसे थोड़ा आराम करना होता था तो वह हवाई क़िले बनाना शुरू कर देता था। स्वयं से कहता कि वह एक स्कूल की स्थापना करेगा, एक बहुत बड़ा विद्वान तथा जाना-माना लेखक बनेगा और शानो-शौक़त से रहेगा। इस तरह की महत्त्वाकांक्षाएँ उसे अपनी पुस्तकों में और ज़्यादा डूब जाने के लिए उकसाती रहती थीं।

दूसरी ओर क्रान्ति के प्रति ताओ-चिङ का उत्साह उसे और ज़्यादा पढ़ने को प्रेरित करता था। चाहे वह मार्क्स की सभी रचनाएँ समझ नहीं पाती थी और न ही उसे यह मालूम था कि सिद्धान्तों को कार्यरूप कैसे दिया जाता है, फिर भी उसने इस आशा के साथ पढ़ना जारी रखा कि शायद इन पुस्तकों से उसे उस नये संसार तथा सच्चाई की झलक ही मिल जाये जिसकी उसे वर्षों से चाहत थी। इस तरह दो जवान व्यक्ति अपनी-अपनी पसन्द की पुस्तकें देर रात तक बैठे पढ़ते रहते थे। उनमें से एक तो आगे की ओर और दूसरा अतीत की ओर देखता था जो पुराना रूढ़िवादी था। नववर्ष के दिन से, जब से लू चिआ-चुआन ने ताओ-चिङ को यह सामग्री लाकर दी थी, जीवन के प्रति उसका नज़रिया ही बदल गया था। उसकी भावनाओं में भी ज़बरदस्त बदलाव आ गया था। कई साल बाद भी उसे यह अच्छी तरह याद था कि जिस पहली पुस्तक को पढ़ने के बारे में लू चिआ-चुआन ने पढ़ने की सलाह दी थी, वह थी – 'नये समाजविज्ञानों को कैसे पढ़ा जाये।' उसे याद था कि कैसे नये साल की रात को वह देर तक अपनी रज़ाई में सिकुड़ी हुई पढ़ती रही थी। उसे इस बात की भी परवाह नहीं रही थी कि अँगीठी बुझ चुकी थी तथा ठण्डी, तीखी हवा दीवारों की दरारों से अन्दर आ रही थी। भावनाओं तथा ख़ुशी से भरकर वह लगातार सारी रात पढ़ती रही थी तब तक जब तक कि वह पतली-सी पुस्तक समाप्त नहीं हो गयी।

लू चिआ-चुआन ने उसे समाजविज्ञान पर लिखी केवल चार मानक मार्क्सवादी-लेनिनवादी रचनाएँ ही दी थीं, फिर भी उनको पढ़ने में उसे पूरे पाँच दिन लग गये। उसे इस बात का ज़रा भी अहसास नहीं था कि ये पाँच दिन उसके आगामी जीवन पर कितना दूरगामी प्रभाव डालेंगे। इन पुस्तकों से उसे मानवसमाज के आगे बढ़ने की दिशा तथा उसके भविष्य के बारे में पता लगा। इन्होंने उसे सच्चाई की रोशनी दिखायी तथा यह बताया कि कौन-सा रास्ता ठीक है। इन पुस्तकों को पढ़कर ही वह 'तू-फू' (ताङ वंश के महान यथार्थवादी कवि, सन् 712-717) द्वारा लिखी इन पंक्तियों का अर्थ समझ सकी थी :

"उन चमकीले लाल दरवाज़ों के पीछे गोश्त और शराब उड़ाये जा रहे हैं
जबकि बाहर सड़कों पर ठिठुरकर मरे लोगों की हड्डियाँ पड़ी हैं।"

इन पुस्तकों ने उसके मन को हरदम घेरे रहने वाली निराशा तथा उदासीनता को ख़त्म कर उसे उन परिस्थितियों से अवगत कराया जो उसकी माँ की मृत्यु का कारण बनी थीं। इन्होंने उसके हृदय को एक दृढ़ क्रान्तिकारी उत्साह से भर दिया तथा उसे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया।

उसे आशा थी कि लू चिआ-चुआन उसके लिए और पुस्तकें लेकर आयेगा, क्योंकि जो उसके पास थीं, वे उसने पढ़ डाली थीं। परन्तु वह नहीं आया। उसने पाई ली-पिङ तथा सू-निङ से राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र तथा दर्शनशास्त्र की कई पुस्तकें लेकर पढ़ीं तथा साथ ही कुछ साहित्यिक रचनाएँ भी पढ़ीं। उनमें से कई तो वह बिल्कुल भी नहीं समझ पायी। जैसेकि एंगेल्स की रचना 'ड्यूहरिंग मत-खण्डन' तथा मार्क्स की 'दर्शन की दरिद्रता' में से तो उसके कुछ भी पल्ले नहीं पड़ा। परन्तु ज्ञान के लिए उसकी निरन्तर भूख तथा इच्छाशक्ति ने उसे पढ़ते रहने के लिए प्रेरित किया। जिन दिनों एक बार युङ-त्से बाहर गया हुआ था, वह कमरे पर अकेली रह गयी थी। तब वह दिन में पन्द्रह-पन्द्रह, सोलह-सोलह घण्टों तक यहाँ तक कि खाना खाते समय भी पढ़ती रहती थी। जब उसके पास पैसे की कमी पड़ गयी थी तब खाने के लिए वह केवल मक्की के मोटे आटे की रोटीभर जुटा पाती थी। उसको खाना बनाने में समय ख़राब करने की इच्छा नहीं होती थी। मक्की की रोटी हालाँकि कोई स्वादिष्ट भोजन नहीं था, परन्तु वह अपनी पुस्तकों में इतना खोयी रहती थी कि अक्सर उसे पता ही नहीं चलता था कि उसने अपना खाना समाप्त कर लिया है। पुस्तकों के प्रति इस नये आकर्षण की खोज के पश्चात वह कभी ही उनसे अलग होती थी।

"सू निङ, कृपया मुझे बताइये, क्या पराभौतिकी तथा रूपवादी तर्कशास्त्र एक ही हैं?"

"क्या द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के तीन सिद्धान्तों को हर परिस्थिति में लागू किया जा सकता है? निषेध का निषेध का मतलब क्या है?"

"अभी तक सोवियत संघ ने कम्युनिस्ट समाज की स्थापना क्यों नहीं की है? साम्यवादी चीन का स्वरूप कैसा होगा?"

"...?"

ऐसे ही अनेक प्रश्न थे, जिनके उत्तर वह चाहती थी। सू निङ अक्सर ली-पिङ से मिलने आता रहता था और वह ताओ-चिङ से मिलने भी आ जाता था। हर बार वह उससे उन प्रश्नों का उत्तर पूछती रहती थी जो उसे तंग करते थे। तक़रीबन हर बार सू निङ को इन्कार में अपना सिर हिलाना पड़ता था और कई बार वह मुस्कुराकर उसका प्रश्न ही टाल जाता था।
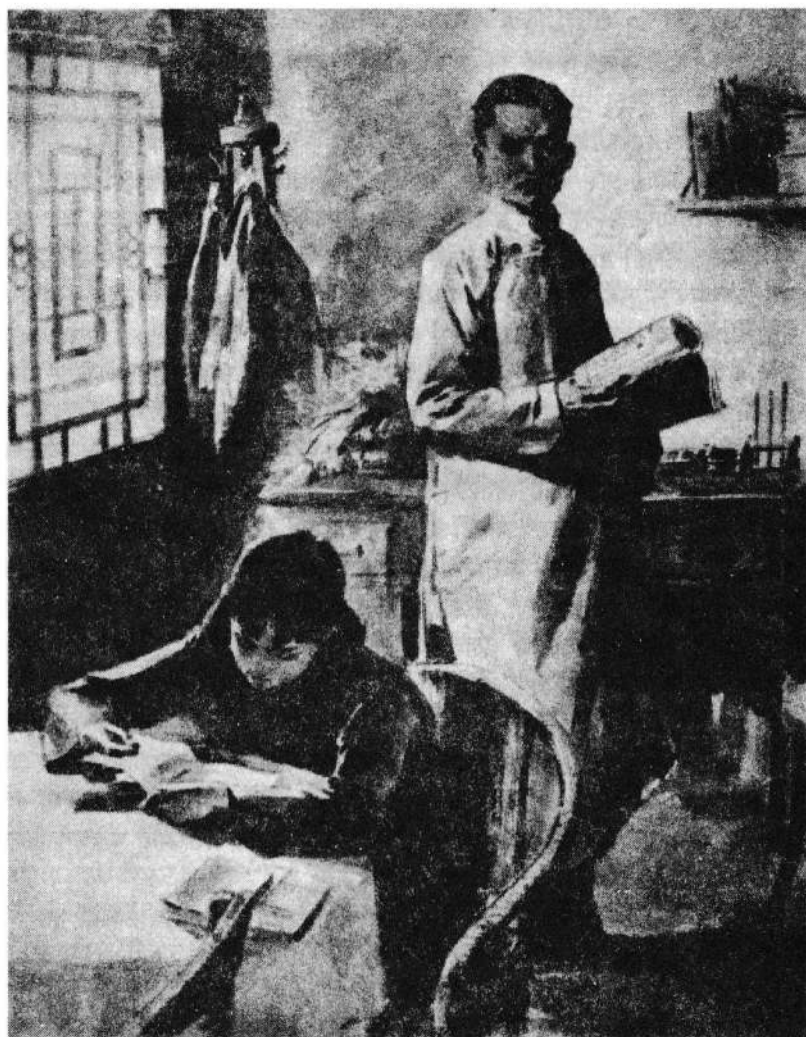
"धीरज रखिये, देवीजी! क्या तुम्हें नहीं लगता कि तुम जितना चबा सकती हो उससे ज़्यादा कौर काट रही हो? कोई भी व्यक्ति इतने कम समय में इतना ज़्यादा कैसे समझ सकता है? मुझे अफ़सोस है कि आपके सभी प्रश्नों का उत्तर देना मेरे वश की बात नहीं है।" फिर भी जब सिद्धान्तों पर बहस की बात आती थी तो सू निङ ऐसे सिलसिलेवार ढंग से व्याख्या करता था कि उसकी हर बात ताओ-चिङ को अच्छी तरह समझ आ जाती थी। ऐसे मित्रों को पाकर ताओ-चिङ असाधारण रूप से खुशी व गर्व महसूस करती थी। उसका खोया हुआ यौवन फिर से लौट आया लगता था। वह अक्सर खुशी के मारे गाती या गुनगुनाती रहती थी और उसका प्रत्येक दिन इतने उत्साह व शक्ति से भरा रहता था जैसेकि उसके अन्दर शक्ति का कोई स्रोत फूट पड़ा हो। यह खुशी युङ-त्से की समझ से परे थी। वह और अधिक शंकालु होता गया तथा ईर्ष्या की अग्नि में जलता रहा।

——:o:——

अध्याय 13

ताओ-चिङ अहाते में दोपहर का खाना बनाने के लिए अँगीठी जला रही थी, तभी उसने अपना सिर उठाया और लू चिआ-चुआन को प्रवेश करते हुए देखा। उसने तुरन्त कोयले की गोलियों को नीचे रख दिया और उसको अपने कमरे में ले चलने के लिए दौड़ पड़ी, वह इस बात को भूल ही गयी थी कि जलावन की लकड़ी अँगीठी में जलना शुरू हो चुकी थी।

"जल्दी क्या है? पहले तुम कोयले की गोलियों को अँगीठी में क्यों नहीं डाल देती? लकड़ी जल्दी ही जलकर ख़त्म हो जायेगी," लू चिआ-चुआन कोयले की गोलियों को आग में झोंककर अँगीठी के पास खड़े-खड़े मुस्कुराते हुए बोला। छोटी अँगीठी से काला धुआँ छल्ला बनाते हुए उठने लगा, और ताओ-चिङ इस तरह का मामूली घरेलू काम करते हुए पकड़े जाने पर कुछ घबरायी हुई-सी थी। लू चिआ-चुआन की कुशल सहायता ने उसकी घबराहट को और बढ़ा दिया।

"भाई लू, मैं तुम्हें लम्बे अरसे से नहीं देख सकी हूँ," उसने एक उलाहनाभरे अन्दाज़ में कहा। "अन्दर आओ। तुम कैसे रहे? तुमको पता नहीं होगा कि मैं कितनी बेसब्री से तुम्हारा इन्तज़ार कर रही थी..." वह अपने भावावेश में एकदम गड़बड़ायी हुई वहीं खड़ी रही। लू चिआ-चुआन ने उससे चुपचाप हाथ मिलाया, और दरवाज़े के पास से एक कुर्सी अपने लिए खींच ली। उसको देखकर मुस्कुराते हुए उसने कहा :

"हाँ, तो तुम कैसे रह रही हो, ताओ-चिङ? मैं कुछ अधिक व्यस्त रहा हूँ -- यही कारण है कि न आ सका।"

ताओ-चिङ ने स्थिरचित्त होने की पूरी कोशिश की, लेकिन सम्मान के आवेग में,

और इस मुलाक़ात की अकथनीय ख़ुशी से उसकी आँखें चमक उठीं। मेज़ पर झुककर अब भी शर्माती और अटपटी महसूस करती हुई, उसने हल्के-स्वर में कहा :

"भाई, लू मैं अच्छा-ख़ासा पढ़ती रही हूँ और काफ़ी कुछ सीख गयी हूँ। इसने मुझे बदल दिया है..." वह लजा गयी, नहीं समझ पा रही थी कि अपने को कैसे व्यक्त करे। एक क्षण बाद यह देखकर कि उसकी घबराहट और उत्तेजना भाँप लिये बग़ैर ही शमित हो चुकी थी, अपनी पढ़ी हुई पुस्तकों के बारे में, अपने ऊपर उनके पड़े प्रभावों के बारे में, और निजी भावनाओं में हुए परिवर्तनों के बारे में बताकर उसे काफ़ी राहत मिली। वह जैसे-जैसे बात करती गयी, वैसे-वैसे संयत होती गयी, अन्ततः उसकी घबराहट का पूरा भाव ग़ायब हो गया। तब उसने अपना सिर एक तरफ़ तिरछा करके दमकते चेहरे से विश्वासपूर्वक कहा : "क्या यह अद्‌भुत नहीं है, भाई लू! इतने कम समय में मैं बिल्कुल एक भिन्न व्यक्ति बन चुकी हूँ – मैं अब पहले से अधिक युवा महसूस करती हूँ।"

"तुम पहले भी बूढ़ी नहीं थी, फिर पहले से अधिक युवा कैसे महसूस करती हो?" उसने अधखुली आँखों से उस पर निरीक्षणभरी नज़र डाली, एक शरारतभरी मुस्कान उसके होंठों के इर्द-गिर्द खेल रही थी।

"तुम यक़ीन मानो, यह सच है।" ताओ-चिङ पूरी तरह गम्भीर थी। "तुम नहीं जानते भाई लू, लेकिन भले ही मैं सिर्फ़ बीस वर्ष की हूँ, मेरी...मेरी पिछली ज़िन्दगी ने मुझे एक बूढ़ी औरत की तरह बना दिया था। जीवन की हर चीज़ बेमतलब और निराशजनक प्रतीत होती थी। मैं इतनी हताशा में थी कि मैंने अपनेआप को ख़त्म तक कर डालने की सोच ली थी...लेकिन नववर्ष की शाम से ही, जब मैं तुम सबसे मिली और तुमने मुझे उन पुस्तकों को पढ़ने के लिए उत्साहित किया, तब से अचानक एक परिवर्तन हो गया है..."

वह युङ-त्से को कमरे के मध्य खड़े देखकर पीछे मुड़ पड़ी, उसकी बिज्जू जैसी आँखें तिरस्कारपूर्वक लू चिआ-चुआन पर टिकी हुई थीं। वह यकायक रुक गयी। इसके पहले कि वह फिर कुछ बोलती, युङ-त्से त्योरियाँ चढ़ाकर उसकी ओर मुड़ा :

"अँगीठी बुझने जा रही है। खाना पकाने पर ध्यान क्यों नहीं दे रही हो? क्या ऊँची-ऊँची बातों से हमारा पेट भरेगा?" उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना ही, वह कमरे से बाहर चला गया और अपने पीछे भड़ाम से दरवाज़ा बन्द कर दिया।

ताओ-चिङ को ऐसा लगा मानो किसी पौधे पर अचानक पाला पड़ गया हो। वह तमतमा उठी और क्षणभर तक के लिए तो क्रोध के मारे बोल ही न सकी। लू चिआ-चुआन उससे अधिक अनुभवी था, और किसी भी नाज़ुक स्थिति से निपटने में कुशल था। उसने दरवाज़े पर नज़र डाली जो भड़ाम से बन्द कर दिया गया था, और शान्तिपूर्वक ताओ-चिङ के व्यथित चेहरे को देखा। उठ खड़े होकर उसके पास

पहुँचते हुए उसने कहा :

"मैं भाई यू से पहले मिल चुका हूँ...। चूँकि उसे खाने की जल्दी है, इसलिए बेहतर होगा कि उसका खाना तुरन्त तैयार कर दो। हमारी बातचीत से उसे असुविधा नहीं होनी चाहिए। क्यों नहीं अँगीठी अन्दर ही ले आती, जिससे कि हम बातचीत भी करते रहें और तुम खाना भी बनाती रहो?"

"बिल्कुल ठीक।" ताओ-चिङ ने प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार किया। वह डर गयी थी कि लू चिआ-चुआन बुरा मान गया होगा और चला जायेगा। अब जबकि वह रुका हुआ था, वह प्रसन्न थी, तुरन्त अँगीठी अन्दर उठा लायी और चावल रख दिये। उसका रोष धीरे-धीरे उदासी में बदल गया। सिर झुकाये वह बोल पड़ी :

"भाई लू, तुम मेरे लिए कोई रास्ता निकालो। मैं इतनी अलग-थलग पड़ गयी हूँ कि साँस भी नहीं ले पाती।..."

फिर वह ऊपर देखने लगी, उसकी आँखें बहुत चमकदार थीं। "क्या तुम मुझे लाल सेना या कम्युनिस्ट पार्टी में भरती होने की सिफ़ारिश करोगे? मैं क्रान्ति में या उत्तरपूर्वी जापान विरोधी वालण्टियरों में शामिल होने के लिए तैयार हूँ।"

वह विस्मय से बोल उठा। यह लड़की सोचती है कि क्रान्ति में शामिल होना बहुत आसान है। उसने उसकी ओर विचारमग्न भाव से देखते हुए पूछा, "क्यों? क्यों तुम लाल सेना में भरती होना चाहती हो?"

"जैसीकि कहावत है, एक पूरी खपरैल होने से बेहतर है जेड का एक टूटा हुआ टुकड़ा होना। मैं अपने जीवन को एक नीरस, अर्थहीन ढंग से बरबाद नहीं करना चाहती। जब मैं अभी बच्ची थी, तभी से मैं कुछ उद्देश्य रखकर जीने के लिए संकल्पबद्ध हूँ। अगर यह दुष्ट समाज मुझे सुख से जीने नहीं देगा, तो मैं मर जाना बेहतर समझूँगी।" उसके गाल गुलाबी हो उठे और काली आँखें दमक उठीं, और उसने कहना जारी रखा, "लेकिन तुम्हारी दी हुई क्रान्तिकारी किताबों को पढ़ने के बाद मैं सच्चाई जानने लगी हूँ और सच्चाई के लिए अपना जीवन समर्पित कर देने का मन बनाने लगी हूँ। मेरा विश्वास है कि जीवन को किसी लायक़ बनाने के लिए हमें उन वीर नायकों की तरह जीना होगा जो अपनी मृत्यु का वैसे ही वरण कर लेते थे जैसेकि वे घर जा रहे हों। भाई लू, मुझे युद्ध की विभीषिका में ज़रूर कूदने दो। मैं इस तरह की ज़िन्दगी नहीं जी सकती।"

लू चिआ-चुआन वहाँ मेज़ थपथपाते बैठा हुआ था, मानो शब्दों के इस प्रवाह में विरामचिह्नों का विधान कर रहा हो। फिर उसने अपना सिर हिलाया, और एक फीकी शरारतभरी झलक पुनः उसकी सजीली आँखों में प्रकट हो गयी।

"ताओ-चिङ पहले हम इस समस्या पर विचार-विमर्श कर लें। इसी बीच, अगर तुमने चावल नहीं चलाया तो यह जल जायेगा। अतीत में तुम्हारा अपने परिवार के साथ कुछ टकराव हुआ था, तुम इस अँधेरे समाज से असन्तुष्ट हो गयी, अब

तुम क्रान्ति में शामिल होने और युद्ध के मैदान में लड़ने की हड़बड़ी में हो। आख़िरकार, तुम्हारा उद्देश्य क्या है?"

ताओ-चिङ उलझन में पड़ गयी और नहीं जान पायी कि क्या जवाब दे। वह विचारमग्न हो अपने होंठ काटने लगी, चावल को भूल गयी, और जलने की गन्ध से कमरा भर उठा। वह सोच में इतना खो गयी थी कि उसे ध्यान तक नहीं आया कि कब लू चिआ-चुआन ने चावल को चलाया और उसे अँगीठी के एक तरफ़ सरका दिया ताकि धीमे-धीमे सीझ सके। कुछ मिनटों के बाद, कुछ अचम्भे से उसकी ओर देखती हुई, वह हिचकिचाते हुए बोली :

"मैंने इस पर बहुत ध्यान देकर नहीं सोचा है... परन्तु मैं नहीं मानती कि मैं स्वार्थपूर्ण इरादों से लाल सेना में भरती होना चाहती हूँ। मैं उन आत्मकेन्द्रित लोगों से घृणा करती हूँ जो अपने व्यक्तिगत हितों के अलावा और किसी चीज़ के बारे में नहीं सोचते।"

"क्या तुम्हें विश्वास है कि तुम्हारे विचार और अभिलाषाएँ व्यक्तिगत इरादों के वशीभूत नहीं हैं?" उसने पूछा।

वह अपने पैरों पर उछल पड़ी। "क्या तुम यह समझते हो कि मैं व्यक्तिवादी हूँ?"

"नहीं, मेरा मतलब यह नहीं है," उसने गम्भीरतापूर्वक उत्तर दिया। "मुझे तुमसे यह सवाल पूछना है : तुम क्यों कभी पूरब तो कभी पश्चिम भटकती थी, कभी इधर उँगली उठाती थी तो कभी उधर मुँह घुमाती थी? मेहनतकश जनगण के लिए या स्वयं अपने लिए? अब तुम लाल सेना और कम्युनिस्ट पार्टी में भरती होना चाहती हो और वीर नायिका बन जाना चाहती हो... तुम्हारा प्रयोजन क्या है? लोगों को उनकी तकलीफ़ों से छुटकारा दिलाना या स्वयं अपनी महत्त्वाकांक्षा को तुष्ट करना. ..एक बहादुराना ज़िन्दगी जीना और वर्तमान नीरस परिवेश से पलायन कर जाना?"

ताओ-चिङ स्तब्ध रह गयी। एक हल्की-सी हिचकिचाहट के बाद वह फिर मुस्कुराये बग़ैर न रह सकी, जब उसे महसूस हुआ कि कितनी अच्छी तरह लू चिआ-चुआन ने उसके अन्तरतम के भेदों को समझा था। कुछ-कुछ शर्मिन्दा महसूस करती हुई और थोड़ा-सा दूसरी ओर मुड़कर उसने हकलाते हुए कहा :

"भाई लू, तुम बिल्कुल ठीक कहते हो। मैं अतीत में जो कुछ चाहती थी वह कुल मिलाकर यही था कि मैं एक बढ़िया व्यक्ति बनूँ – दूसरों से फ़ायदा न उठाऊँ, न ही दूसरे मुझसे फ़ायदा उठायें। मैं मानती हूँ कि मैं सिर्फ़ अपने ही बारे में सोचती थी; यह सच है कि मैं दूसरों के बारे में प्राय: नहीं सोचती थी, लेकिन अब भी मैं पूरी तरह नहीं समझ पा रही हूँ। मैं प्राय: रिक्शावालों और भिखारियों को देने के लिए अपना जेब-ख़र्च बचाकर रखती थी। मैं ग़रीबों की मदद करना पसन्द करती हूँ। क्या तुम कह सकते हो कि यह भी मैं स्वयं अपने लिए ही कर रही थी?"

लू चिआ-चुआन ने हामी भरने के लिए सिर हिलाया और कहा :

"मैं समझता हूँ कि किसी भी व्यक्ति के व्यवहार का... उसके सभी प्रयत्नों और संघर्षों समेत...आकलन करने के लिए हमें सिर्फ़ उसके प्रयोजनों को ही नहीं बल्कि उसके कार्यों के प्रभाव को भी देखना होगा। क्या वह समाज को आगे बढ़ाने में मदद करता है या कि वह इसकी सड़ाँध को सिर्फ़ महिमामण्डित करता है और इसे बनाये रखने में मदद करता है?" एक स्नेहिल, अर्थभरी मुस्कान उसकी आँखों में दमक उठी। उसने सतर्कता से दरवाज़े से बाहर झाँका और फिर पलटकर उस उपेक्षित चावल के भगौने पर नज़र डाली। "तुम थोड़े से रिक्शावालों और भिखारियों की मदद कर सकी होगी, ताओ-चिङ," उसने बोलना जारी रखा। "लेकिन क्या तुम हज़ारों रिक्शावालों और भिखारियों को खाना दे सकती हो? 'अच्छा' बनने की अपनी व्यक्तिगत इच्छा को तुष्ट करने के अलावा, तुम्हारे दान का सम्पूर्ण समाज के लिए और मेहनतकश जनगण के लिए क्या उपयोग है? जहाँ तक लाल सेना में भरती होने और लड़ाई के मैदान में जाने का प्रश्न है, तो तुम्हारे इरादे नेक हैं, लेकिन तुम्हें यथार्थवादी होना होगा। आख़िरकार, क्रान्तिकारी काम कई प्रकार के होते हैं। दुश्मन के ख़िलाफ़ एक तीखी लड़ाई चल रही है और दैनिक जीवन में भी एक संघर्ष चल रहा है, जो इतना साधारण मालूम पड़ता है कि लोग बमुश्किल ही इस पर ध्यान देते हैं।"

चावल फिर जलने लगा था। उसे चलाने के लिए कुछ रुककर उसने ताओ-चिङ पर फिर एक नज़र डाली। "उदाहरण के लिए, घरेलू काम-काज, जैसे खाना पकाना और धुलाई करना ही लो, जो अब तुम कर रही हो। वे मामूली काम हैं और महत्त्वहीन लग सकते हैं, लेकिन मान लो कि हम इसे लोगों के लिए और क्रान्ति के लिए कर रहे हैं, मान लो यह कुछ ऐसा काम है जिसे ज़रूर किया जाना है और यह काम हमें ही करना है, तब हमें इसे करना ही चाहिए। क्रान्ति में शामिल होने का अनिवार्य मतलब युद्ध-स्थल में जाकर लड़ना ही नहीं है... इस पर तुमको क्या कहना है ताओ-चिङ, क्या तुम अब भी मोर्चे पर एक वीर नायक की भाँति मरने पर ज़ोर दोगी?"

वह मुस्कुराया और ताओ-चिङ भी मुस्कुरायी। लहरों पर झटके खाती एक छोटी नौका की भाँति उसकी मनोदशा उसकी कही हुई बातों के साथ ही झटके खाती रही थी। जब उसने देखा कि वह उसे विवेकपूर्ण, निष्कपट और मित्रवत सलाह दे रहा था, तो वह जल्द ही इस आघात से उबरकर अपने आत्मसम्मान की दशा में लौट आयी। उसके प्रसन्नता से भरे हुए ठहाके और उसके प्रति स्नेहिल लगाव से उसका हृदय खिल उठा।

"भाई लू, मैं तुम्हारा बहुत आभार मानती हूँ।" उसने कहा जबकि एक मुस्कुराहट उसके तमतमाये गालों पर फैल चुकी थी और उसकी प्यारभरी आँखें

चमक उठी थीं।

"क्या! लंच अभी तक तैयार नहीं हुआ? दोपहर हो गयी।" युङ-त्से ने कमरे में चुपके से प्रवेश किया। अपना हैट बिस्तर पर फेंककर वह अकड़कर बैठ गया और दहकती आँखों से ताओ-चिङ को घूरने लगा।

वह यकायक पीली पड़ गयी और अचम्भे में उसकी तरफ़ एकटक देखती रही, एक भी शब्द बोल पाने में असमर्थ। वह लू चिआ-चुआन के सामने उससे झगड़ना नहीं चाहती थी।

लू चिआ-चुआन चतुर था, उसने वातावरण में तनाव का अहसास कर अपना हैट उठाया, एक मुस्कुराहट के साथ युङ-त्से का अभिवादन किया और उसी शान्त मुस्कान के साथ ताओ-चिङ से बोला :

"हाँ, तो आज हमारी बातचीत अच्छी रही। अब तुम्हारे लंच का समय हो गया है, मैं चलूँगा।" युङ-त्से को अभिवादन करके वह चला गया। ताओ-चिङ चुपचाप उसके पीछे-पीछे फाटक तक गयी, फिर अपना होंठ काटते हुए वापस लौट आयी। घुमकर उसने देखा तो युङ-त्से उसके पीछे बहुत उदास और खिन्न दिखायी दे रहा था।

ताओ-चिङ उस रात बिना खाना खाये ही बिस्तर पर चली गयी; वह विचारों और भावनाओं में उलझी हुई थी, जिनको वह परिभाषित नहीं कर पा रही थी। वह सो न सकी, और जब उसने युङ-त्से पर नज़र डाली तो देखा कि उसका सिर लटका हुआ था और वह किसी चीज़ के बारे में ध्यानमग्न हो चिन्ता में डूबा हुआ था। उसकी आँखों में आँसू उमड़ने लगे।

"क्या यह वही आदमी हो सकता है जिसको मैंने इतनी गहराई से प्यार किया था और जिसे मैंने अपना हृदय दे डाला था?..." उसने अपनी सिसकियों की आवाज़ दबाने के लिए रज़ाई को अपने सिर के ऊपर खींच लिया।

युङ-त्से गहन चिन्तन में डूबा बैठा रहा। वह कुछ समय से जान चुका था कि लु चिआ-चुआन से ताओ-चिङ का दोस्ताना सम्बन्ध हो गया था, और आज उनकी बातचीत के बेबाक और सुपरिचित लहजे ने उसको और स्पष्टता से यह महसूस करने को मजबूर कर दिया कि वह बदल चुकी थी। उसने अपने गुस्से पर क़ाबू पाने की भरसक चेष्टा की, यह सोचते हुए कि यह एक मर्द की गरिमा से नीचे की बात होगी कि वह एक औरत के द्वारा अपने दिल पर चोट पहुँचने दे। फिर भी, जब वह लू की ओर उस ख़ूबसूरत, चौकस और अपारम्परिक ढंग से एकटक देखती ताओ-चिङ की आँखों की भावपूर्ण चमक को याद करता तो वह दुख, क्रोध और घृणा से सन्तप्त हो उठता था। बेचैन हो वह अपने दिमाग़ को लम्बे समय तक यन्त्रणा देता रहा, लेकिन यह नहीं निर्णय कर सका कि क्या करे। ताओ-चिङ ज़िद्दी और दुराग्रही थी, और अपनी ही राह चलने वाली थी। वह न तो उसे अपनी बुद्धि

से क़ायल कर सकता था और न ही उसे अपने आँसुओं से द्रवित कर सकता था; फिर बलपूर्वक उसे घुटने टेक देने के लिए उसे विवश करना तो उसके लिए और भी कठिन था... तब इसका हल क्या था? अन्ततः उसने एक ऐसा काम करने की ठानी जिसे वह एक बुद्धिमत्तापूर्ण योजना समझता था। उसने लू चिआ-चुआन को लिखा और उसे चेतावनी दी कि यदि उसमें रत्तीभर भी नैतिकता बची हो तो वह चेत जाये।

यह पत्र निम्न प्रकार था :

मार्च 1933

प्रिय श्री लू

इस बात के मद्देनज़र कि हम दोनों विश्वविद्यालय के छात्र हैं, कि तुम्हारे और मेरे परिवार दोनों एक ही गाँव में हैं, और कि तुम्हारे और मेरे बीच एक-दूसरे के प्रति कोई द्वेष-भाव नहीं है, मैं इसे बहुत नागवार समझता हूँ कि तुम कुछ सिद्धान्तों को प्रचारित करने के बहाने मेरी पत्नी के दिमाग़ में इस हद तक विष घोल दो कि वह तुम्हारे कहे मुताबिक़ चलने लगे। अब जबकि वह सारा दिन "क्रान्ति" और "संघर्ष" की ही चर्चा किया करती है, हमारी घरेलू खुशी को बहुत ही अनपेक्षित रूप में धक्का लगा है। यह कितना खेदजनक है कि तुम मेरी परेशानी से खुश होते हो, और मेरे दुख से फ़ायदा उठाते हो, हालाँकि अब तुम्हारी दिली इच्छा पूरी हो सकती है।... हर किसी को कुछ नैतिक शिष्टाचार तो रखना ही चाहिए, और उसे शब्दों का आडम्बर खड़ा करके और लच्छेदार भाषण देकर दूसरों की खुशी नहीं चौपट करनी चाहिए। इसके विपरीत आचरण करना विवेक और नैतिकता के विरुद्ध है। मैं तुम्हें इन शब्दों के द्वारा नेक सलाह देता हूँ और विश्वास करता हूँ कि तुम मेरे बारे में कोई निष्कर्ष निकालने से पहले कि मैं सही हूँ या ग़लती पर हूँ, भलीभाँति सोच-विचार करोगे।

भवदीय, आपके प्रति अत्यन्त सम्मानपूर्वक,

यू युङ-त्से

इसे लिख लेने के बाद उसने कुछ बेहतर महसूस किया, कारण कि उसने अपने मन की भड़ास निकाल दी थी। उसने पत्र को बन्द किया, अंगड़ाई ली, जम्हाई ली और बिस्तर पर सोने चला गया। ताओ-चिङ गहरी नींद में सोयी थी। उसका पीला अण्डाकार चेहरा तराशे गये शुद्ध संगमरमर की तरह स्वच्छ और सौम्य, मुलायम, छोटे बालों के ढाँचे में मढ़ा हुआ प्रतीत होता था। वह शालीनता और सौन्दर्य की प्रतिमूर्ति थी। एक नन्ही-सी मुस्कान उसके मुँह के कोनों में झलक रही थी, गोकि आँसू अब भी उसके गालों पर टिमटिमा रहे थे। "अरे, वह रोती रही है।" उसने

सोचा। तुरन्त उसका क्रोध और सन्ताप ग़ायब हो गया, उसका स्थान कुछ-कुछ दया जैसे भाव ने ले लिया। उसे अचानक ख़याल हो आया कि वह कोई साधारण लड़की न थी बल्कि ऊँचे आदर्शों वाली लड़की थी, और उसे उसको समझना चाहिए और माफ़ कर देना चाहिए।... वह उसे एक क्षण तक निहारते हुए खड़ा रहा, और सोचता रहा : "वह इतनी अच्छी और इतनी ईमानदार है कि मेरे प्रति बेवफ़ा नहीं हो सकती और न किसी दूसरे को प्यार कर सकती है। तब मुझे बरबस क्यों अपनेआप को सन्त्रस्त करना चाहिए?..." उसका दिल पहले से हल्का हो गया, मानो उसके सारे सन्देह दूर हो गये। वह ताओ-चिङ के गाल पर एक हल्का-सा चुम्बन देने के लिए झुका और जी कड़ा करके पत्र को अँगीठी के बुझते हुए अंगारों में फेंक दिया जब एक लपट ने लपककर उसे जला दिया, तो उसे ऐसा महसूस हुआ मानो उसने एक महान कार्य कर डाला हो। अपनी बाँहें उठाकर उसने एक मुक्केबाज़ की तरह कई बार प्रहार करने के अन्दाज़ में चलाया। फिर एक दूसरी जम्हाई लेकर जल्दी-जल्दी अपने कपड़े उतारकर बिस्तर में घुस गया।

——:o:——

अध्याय 14

एक दिन सू निङ पाई ली-पिङ के यहाँ पहुँचा। यह पता चलने पर कि वह घर पर नहीं थी, वह ताओ-चिङ को देखने चला गया। बाहरी कमरे से ही उसने पूछा :

"ली-पिङ कहाँ है? वह क्यों फिर बाहर चली गयी?"

"मैं क्या जानूँ?" ताओ-चिङ मुस्कुरायी। "वह घर पर पड़ी रहने वाली नहीं है।" उसने देखा कि उसके ख़ूबसूरत चेहरे पर निराशा का बादल घिरता जा रहा था।

सू निङ के त्सुई सिऊ-यू के साथ बड़े अच्छे ताल्लुक़ात थे; लेकिन उसके उत्तरपूर्व चली जाने के बाद से वह ली-पिङ के प्रति आसक्त हो गया था, और हाल ही में दोनों एक-दूसरे से ख़ूब मिल रहे थे। चूँकि ली-पिङ मिलनसार थी और वहाँ उसके कई दोस्त थे, अतः कई बार ऐसा हो जाता था कि सू निङ उससे नहीं मिल पाता। ऐसे अवसरों पर वह ताओ-चिङ के पास ली-पिङ की खोज-ख़बर लेने चला आता था।

वि क्षुब्ध होकर, वह बैठ गया और जानना चाहा, "मुझे बताओ, ताओ-चिङ, ली-पिङ का असली मामला क्या है?"

उसने उसके सवाल के जवाब में एक दूसरा सवाल दाग दिया, "तुमने सिऊ-यू के बारे में कुछ सुना है? क्या वह सचमुच जापानियों से लड़ने वाले वालण्टियरों में भरती हो गयी है?"

इन शब्दों पर, सू निङ झेंप उठा और यह ख़ुशदिल, सजीला छोकरा, जिसकी

मित्र-मण्डली में हमेशा हँसी और मौज-मस्ती ही छायी रहती थी, अचानक हताश और ख़ामोश हो गया। वह कुछ समय तक दीवार पर टँगी बीथोवन की तस्वीर को घूरता रहा। फिर अनमनेपन से अपना सिर घुमाते हुए वह कड़ुवाहट से मुस्कुराया :

"ताओ-चिङ, मैं नहीं चाहता कि तुम मुझे ग़लत समझो। सिऊ-यू के प्रति मेरे प्यार का ली-चिङ के प्रति मेरी भावना से कुछ भी लेना-देना नहीं है। मैं वालण्टियरों में भरती होने के लिए सिऊ-यू के साथ उत्तरपूर्व चला गया होता परन्तु अपनी माँ की वजह से, और इस बात से कि मैं बहुत जल्द ही स्नातक हो जाने वाला हूँ... मैं ली-पिङ जैसी लड़कियों को जानता हूँ।..."

"जब इतना जानते हो," ताओ-चिङ ने कहा, वह स्पष्टता से कह डालने में समर्थ न हो सकी, गोकि वह प्रेम के प्रति इस नौजवान के दृष्टिकोण से असहमत थी। "तो सू निङ," उसने निष्कपट भाव से अनुरोध किया, "सिऊ-यू को मत भूलना। वह बेहतरीन लोगों में से एक है।"

"तुम ठीक कहती हो, ताओ-चिङ। तुमसे सच कहूँ, वह तो हमेशा ही मेरे मन में रहती है, और उसका ख़याल ही मुझे बेचैन कर देता है..." ताओ-चिङ की निश्छलता और दोस्ताना अपनत्व से गहरे प्रभावित होकर सू निङ उसके सामने अपना हृदय खोलकर रखने लगा। "देखो, पहले मैं ली-पिङ में बहुत ज़्यादा दिलचस्पी नहीं लेता था। लेकिन...उसका अपना एक ढंग है... मुसीबत यह है कि हमारा काम हमें इतना अधिक एक साथ कर दिया करता है कि और... ख़ैर बन्द करो इस विषय को, मुझे विश्वास है कि मैं अपनी भावनाओं पर बेहतर ढंग से क़ाबू पा लूँगा।" एक क्षण तक ख़ामोशी में सोचते-विचारते रहने के बाद वह जाने के लिए उठ खड़ा हुआ।

"सू निङ!" ताओ-चिङ ने झट रोक दिया। "अगर तुमने भाई लू और भाई लो को कहीं देखा है तो ज़रूर बताते जाओ। क्या हो रहा है..."

"ओह, याद दिलाने के लिए शुक्रिया। भाई लू ने मुझे तुमसे बताने के लिए कहा था कि कल अठारह मार्च की घटना की वर्षगाँठ है। पीकिङ के छात्रों द्वारा एक बड़े स्मृति-समारोह का आयोजन किया जायेगा, और सम्भवत उसके बाद एक प्रदर्शन भी होगा। क्या तुम इसमें शामिल होना चाहोगी?"

"प्रदर्शन किसलिए?"

"क्वोमिन्ताङ की अप्रतिरोध की नीति का विरोध करने के लिए, चीन के विरुद्ध जापान की अगली आक्रामक कार्रवाइयों का विरोध करने के लिए, तथा विदेशी साम्राज्यवाद और उसके चाटुकारों का विरोध करने के लिए। साथ ही समाजवादी सोवियत संघ का समर्थन करने के लिए!"

"मैं शामिल होऊँगी।" तनिक हिचकिचाये बग़ैर ताओ-चिङ बोल पड़ी। "क्या तुम भी जा रहे हो? भाई लू क्या करेंगे?"

"बेशक, वह भी वहाँ रहेगा।" सू निङ की सारी उदासी ख़त्म हो चुकी थी। उसने उसकी ओर अपनी मुट्ठी लहरायी और मुँह बनाया। "और निस्सन्देह मैं भी वहाँ रहूँगा। इसके अलावा ताओ-चिङ तुम अपने दोस्तों को इसमें शामिल होने के लिए तैयार करने की पूरी-पूरी कोशिश ज़रूर करना। भाई लू चाहता है कि हम जनगण को जगायें। मैं अब वहीं जा रहा हूँ। तुमसे कल भेंट होगी। हम आठ बजे पीकिङ विश्वविद्यालय के परिसर में मिलेंगे। आना है, याद रखना।"

ताओ-चिङ अकेले दहलीज़ पर खड़ी होकर सू निङ को जाते हुए तब तक ताक़ती रही जब तक कि वह कुछ दूर नहीं चला गया। वह मुस्कुरा रही थी। उसने कभी किसी सामूहिक समारोह या परेड में भाग नहीं लिया था। यह कैसा होगा, वह व्याकुल हो उठी? एक विचित्र उत्तेजना उस पर छा गयी, और लम्बा समय लगा, जब वह शान्त हुई।

जब युङ-त्से अपनी बाँहों में कुछ किताबें दाबे पैर-घिस्सू चाल से चलता हुआ घर आया, तो ताओ-चिङ उसके पास गयी और फुसलाने के अन्दाज़ में बोली, "युङ त्से, मैं कल अठारह मार्च वाले प्रदर्शन में भाग लेने जा रही हूँ। तुम भी मेरे साथ चलो न।"

"क्या? तुम क्या करने जा रही हो?" उसने भयाक्रान्त होकर उसके चेहरे को घूरा।

"अठारह मार्च, परेड में शामिल होने। क्यों, तुम नहीं चाहते हो क्या?"

युङ-त्से ने अनिच्छापूर्वक अपनी किताबों को नीचे रखा, और वह बोलने की मनःस्थिति में अपने को ला सके इसके पहले कुछ समय यूँ ही बीत गया। वह एक उदास, हताश लहजे में बोला :

"मत जाओ, ताओ-चिङ। मेरी यह बात कान खोलकर सुन लो। मैंने सुना है कि तमाम गिरफ़्तारियाँ की जा रही हैं... देश को बचाना तो बहुत अच्छा है, लेकिन यह हड़बोंग क्यों, अठारह मार्च को ही क्यों, जो क़तई स्मृति समारोह के लिए उचित नहीं है? यदि कोई बात हो जाये... ताओ-चिङ, ज़रा समझदारी से काम करो। किसी भी क्षण कोई तूफ़ान खड़ा हो सकता है, और कौन जानता है कि बिजली कहाँ गिर पड़ेगी..." उसकी एकटक आँखों में एक टोहभरी जिज्ञासा थी और उसके चेहरे पर चिन्ता की रेखा खिंची हुई थी।

"नहीं। हम सभी तुम्हारे जैसे डरपोक नहीं हैं, तुमको तो एक गिरते पत्ते से भी कुचलकर मर जाने का डर सताता है।" ताओ-चिङ आमतौर पर तो ख़ामोश ही बनी रहती थी जब युङ-त्से लेक्चर देता और उसकी नुक़्ताचीनी करता था, परन्तु जब क्रान्ति का सवाल आ जाता तो वह आसानी से भभक उठती और कोई अड़ंगेबाज़ी बरदाश्त नहीं करती। "भूल जाओ इसे," उसने कहा, "मैं चाहती थी कि तुम भी मेरे साथ चलते, लेकिन अब मैं देख रही हूँ कि तुम मुझे भी जाने देना नहीं चाहते। ठीक

है, अब हमें अधिक कुछ नहीं कहना है, लेकिन हरेक को अपने ही अपने काम का ख़याल रखना होगा।" इसके साथ ही वह घर से निकल गयी।

अधिक से अधिक लोगों को परेड में भाग लेने हेतु प्रेरित करने के लिए, जैसाकि लू चिआ-चुआन ने आग्रह किया था, उत्साहित होकर वह अपनी सहेली वाङ सियाओ-येन से मिलने पहुँची।

"प्रदर्शन किसलिए है?" सियाओ-येन ने पूछा।

"जापानी साम्राज्यवादी आक्रमण का विरोध करने के लिए, क्वोमिन्ताङ की अप्रतिरोध की नीति का विरोध करने के लिए, विदेशी साम्राज्यवाद और उसके चाटुकारों का विरोध करने के लिए, तथा समाजवादी सोवियत संघ का समर्थन करने के लिए..."

सियाओ-येन कुछ मिनटों तक ख़ामोश बनी रही, जबकि उसके फ़ैसले का इन्तज़ार करते हुए ताओ-चिङ बेचैनी से उसे एकटक देख रही थी। अन्ततः अपना सिर हिलाते हुए उसने गम्भीरतापूर्वक कहा :

"बुरा मत मानना ताओ-चिङ, अगर मैं साथ न दे सकूँ। डैडी कहते हैं कि नौजवान लोगों को अधिक से अधिक समस्याओं का अध्ययन करना चाहिए और राजनीति की कम बात करनी चाहिए। तुमने अभी तक परेड में भाग नहीं लिया है, लेकिन हर समय राजनीति की बात करती रहती हो... मैं नहीं समझ पाती कि तुम क्या बातें करती हो, वास्तव में मैं नहीं समझती।"

ताओ-चिङ ने भौंहें टेढ़ी कर लीं, कुढ़न और निराशा से कुछ तमतमा गयी। "सियाओ-येन, तुम हू शिह की भाषा बोल रही हो। तुम उसकी शिष्या कब से बन गयी?"

सियाओ-येन की आँखें फैल गयीं और उनमें एक नैसर्गिक आत्मविश्वास झलक उठा। "मुझसे मत पूछो, ताओ-चिङ।" वह कुछ शर्माकर बोली। "डैडी एक आधिकारिक विद्वान हैं और मैं उन पर विश्वास करती हूँ... तुम अपने को वामपन्थी दलीलों का क़ायल मत होने दो। पढ़ाई करना अन्य किसी भी चीज़ से अधिक महत्त्वपूर्ण है। वह एक समाजवादी देश हो या न हो, पर सोवियत संघ को हमसे क्या लेना-देना है?"

सियाओ-येन दिल की अच्छी थी और उसकी यह विनम्र अस्वीकृति, जो अविश्वास पर आधारित थी, युङ-त्से की स्वार्थभरी कायरता से बिल्कुल भिन्न थी। इसलिए ताओ-चिङ को अपनी सहेली के साथ महज़ एक खेदजनक निराशा का अनुभव हुआ, लेकिन उस क्षोभ का नहीं जिसे युङ-त्से ने पैदा कर दिया था। वह यह भी सोचती थी कि एक प्रेमी के प्रति यह तेवर दिखाना तो एकदम ठीक ही था, परन्तु एक सहेली पर नाराज़ हो जाना ग़लत होगा।

दोनों लड़कियाँ ख़ामोशी में एक क्षण तक एक-दूसरे को निहारती रहीं, उसके

बाद ताओ-चिङ उलझन में पड़कर घर चली गयी।

उस रात बिस्तर पर युङ-त्से ने उसे एक मद्धिम, स्नेहभरे स्वर में विश्व के महान कलाकारों और लेखकों के जीवन और प्यार के बारे में बताया – कि कैसे वे प्रकृति के सौन्दर्य में पुलकित होते थे और प्यार की ख़ातिर हर चीज़ क़ुर्बान कर देते थे। उसके बालों को सहलाते हुए वह मुलायमियत से फुसफुसाया :

"ताओ-चिङ, क्या तुम अब भी पेइताइहो के समुद्र रेत-तट के उन दिनों को याद करती हो? याद है वह रात जब हम लहरों की चप-चप को ध्यान से सुनते हुए बैठे थे? समुद्र रुपहली चाँदनी में दमक रहा था। मैंने एकटक तुम्हारी आँखों में देखा था – आँखें जो उतनी ही गहरी, उतनी ही दमकती हुई, उतनी ही सौन्दर्यपूर्ण थीं, जितना कि समुद्र! तुम्हारी ख़ूबसूरती ने मुझे इतना मदहोश कर दिया था कि मैं तुमको अपनी बाँहों में भर लेने और तुम्हें चूम लेने की कामना करने लगा था। मैं उस रात या उस समय को कभी नहीं भूल सकूँगा जिसे हमने साथ-साथ पेइताइहो में गुज़ारा था। काश हम अपनी सारी ज़िन्दगी ऐसे ही ख़ूबसूरत काव्यात्मक वातावरण में बिता सकते।" ख़यालों में खोये हुए उसने अपनी आँखें बन्द कर लीं, फिर तुरन्त ही उन्हें एक दुखभरी नज़र के साथ खोल दिया : "लेकिन जब तुम्हें वास्तविकता का सामना करना पड़ेगा – ऊबाऊपन, तनाव, निजी हितों के विरुद्ध निरर्थक संघर्ष और हर जगह बारूद की गन्ध – तब तुम मन की गहरी कड़ुवाहट के अहसास से कैसे उबर सकोगी?" आँखें बन्द किये, उसने गहरा निःश्वास छोड़ा और धीरे से अपनी बाँहें उसके गले में डाल दी।

युङ-त्से के शब्दों से ताओ-चिङ के मन में उस विराट गौरवशाली समुद्र का चित्र उभर आया, जो चाँदनी में रुपहला तरंगित होता था। उसके हाथों को पकड़कर, उसने उस पर एक प्यारभरी नज़र से एकटक देखा और बुदबुदा उठी, "हाँ, वह बहुत ख़ूबसूरत था!" लेकिन वास्तविक जीवन की कठिनाइयों और ख़तरों पर उसके आख़िर वाले प्रलाप ने उसे संयत कर दिया, और आहिस्ते से अपने हाथों को पीछे खींचते हुए वह फुसफुसायी, "युङ-त्से, कृपाकर तुम चीज़ों को मेरे लिए और दुष्कर मत बनाओ। निश्चय ही तुम मुझे समझ सकते हो...बेशक, मैं पेइताइहो को कभी नहीं भूल सकूँगी, जहाँ हम पहली बार मिले थे।" उसका हृदय उलझे हुए सेवार की भाँति था, कारण कि वह हसरतभरी निगाहों से तो भविष्य की ओर देख रही थी, फिर भी अतीत को भूल नहीं सकी थी। उसके दिल की गहराइयों में अतीत और भविष्य एक-दूसरे के भीषण विरोध में थे, लेकिन वे परस्पर जुड़े हुए भी थे।

"प्रिये!" युङ-त्से ने प्यार से उसके बालों को स्पर्श किया।

"मुझे तुम्हारी न्याय के प्रति कटिबद्धता पर तनिक भी एतराज़ नहीं है। मैं जानता हूँ कि हमें अपना जीवन और सार्थक बनाना ही होगा, परन्तु तुम इस बुरे समाज के अन्धकूपों और छल-प्रपंचों से निपटने के लिए अभी बहुत अनाड़ी हो। बस मुझे यही

चिन्ता सताती है। यदि हम पेइताइहो में नहीं मिले होते, तो भगवान जाने तुम इस समय तक किस मुसीबत में पड़ गयी होती! क्या तुम महसूस नहीं करती कि अकेले पीकिङ विश्वविद्यालय में ही तथाकथित त्रॉत्स्कीपन्थी, राष्ट्रवादी और अराजकतावादी भरे हुए हैं, क्वोमिन्ताङ के अलग-अलग समूहों की कौन कहे? बहुत थोड़े ही सही कम्युनिस्ट हैं, जिनसे तुम कोई आशा कर सकती हो। मैंने सुना है कि छँटनी के बाद उनकी संख्या घटकर लगभग नहीं के बराबर रह गयी है। क्रान्ति अपने वास्तविक अर्थ में है कहाँ? क्या वे लोग जिनके तुम इतने क़रीब हो, विश्वसनीय हैं? क्या तुम्हें विश्वास है कि वे जो कहते हैं, उसके पीछे कोई अर्थ भी है? ताओ-चिङ मैं हठी नहीं हूँ, तुम सोच सकती हो। तुम मुझे ठीक से समझती ही नहीं, जो मुझे स्वार्थी और संकीर्णतावादी समझती हो... इससे मुझे कितनी तकलीफ़ होती है!" उसने एक दुखभरा गहरा निःश्वास छोड़ा।

आरम्भिक बसन्त की ठिठुरा देने वाली बयार उनके छोटे कमरे में समा गयी थी, क्योंकि रात सर्द थी। एक प्रचण्ड रेतीला तूफ़ान, जो उत्तर में आमतौर पर चला करता था, कागज़-लगी खिड़कियों को खड़खड़ा रहा था। ताओ-चिङ अपना सिर युङ-त्से के दुबले कन्धे पर रखे हुए काँप रही थी।

"क्या तुम्हें विश्वास है कि वे जो कुछ कहते हैं, उसका वही अर्थ है? क्या यह लू चिआ-चुआन, लो ता-फाङ और सू निङ के लिए सही हो सकता है? नहीं, असम्भव!" उसने युङ-त्से द्वारा आरोपित शंकाओं को किनारे कर देने की कोशिश की। "मैं इस पर विश्वास नहीं करती! नहीं करती!" उसके दिल ने प्रतिवाद किया, जबकि परस्पर-विरोधी आवेगों ने उसकी आँखों में आँसू ला दिये।

उसने शीघ्रता से अपने को सहेजते हुए दृढ़ स्वर में कहा : "नहीं युङ-त्से, तुम मेरी आस्था को नष्ट करने की कोशिश मत करो। तुम बहुत क्रूर रहे हो – लेकिन मैं उन पर यक़ीन करती हूँ और उन पर यक़ीन करते रहने का इरादा रखती हूँ। यदि मैं ग़लत हूँ, तो नतीजे भी भुगतूँगी। अगर किसी दिन मुझे चोट पहुँची या मैं इसके फलस्वरूप मर गयी, तो मैं इसका दोष और किसी के ऊपर नहीं बल्कि स्वयं अपने ऊपर मढ़ूँगी।"

"मैं इसकी इजाज़त नहीं देता!"

युङ-त्से सहसा उठ बैठा। उसकी बिज्जू जैसी आँखों में ऐसी निराशा भर गयी कि वह पलटकर वार करने को तैयार एक जंगली जानवर की भाँति दिखायी देने लगा। "तुम मेरी हो! तुम्हारी ज़िन्दगी और मेरी ज़िन्दगी एक डोर से बँधी है। हम साथ ही जियेंगे और साथ ही मरेंगे – धरती पर कोई ताक़त ऐसी नहीं जो हमको जुदा कर सके! नहीं, कोई भी चीज़ हमें जुदा नहीं कर सकती! ताओ-चिङ, मैं तुम्हें एक ऐसे आदमी की तरह इधर-उधर भागने की इजाज़त नहीं दे सकता जो एक अन्धे घोड़े पर सवार हो। किसी भी सूरत में कल तुम उस परेड में भाग नहीं लोगी।

समझी? यह पहला मौक़ा है जब मैंने तुम्हारे कामों में हस्तक्षेप किया है, लेकिन यह मेरा कर्त्तव्य है।"

"तुम्हारा कर्त्तव्य! तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई।" ताओ-चिङ चिल्ला पड़ी, वह भी यकायक उठ बैठी थी। "अब मैं समझ गयी कि सोने के समय इसे दिये जा रहे भाषण के पीछे क्या इरादा था! मेरी गतिविधियों में टाँग अड़ाने का तुम्हें क्या हक़ है? क्या मैं आग़जनी करने जा रही हूँ, डाका डालने जा रही हूँ, या व्यभिचार करने जा रही हूँ? तुमने एक क्षण के लिए मुझे उन चिकनी-चुपड़ी बातों से क़ायल तो कर लिया था, लेकिन अब मैं जान गयी हूँ कि तुम क्या करने पर उतारू हो – तुम चाहते थे कि मैं अपना दिमाग़ बदल डालूँ और तुम मुझे पथ-भ्रष्ट कर दो – ओह, तुम तो मुझे बरबाद कर दोगे!"

वे इतना उग्र होकर झगड़ने लगे थे कि पड़ोसियों की नींद खुल गयी, और जब किसी ने इसी बीच प्रतिवादस्वरूप खाँस दिया, तभी वे धीरे-धीरे शान्त हुए।

ताओ-चिङ सारी रात जागती हुई पड़ी रही थी और जैसे ही पौ फटनी शुरू हुई वह चुपके-से बिस्तर से बाहर आ गयी, और युङ-त्से पर निगाह डाली जो गहरी नींद में सो रहा था। बिना हाथ-मुँह धोये वह पंजों के बल चलती हुई घर से बाहर निकल गयी। वह डर रही थी कि यदि वह जाग उठा तो उसे बलपूर्वक रोक लेगा। यह भी ख़तरनाक बात होती, यदि पड़ोसी यह जान जाते कि वह कहाँ जा रही है!

वह पीकिङ विश्वविद्यालय के महिला छात्रावास में सियाओ-येन के कमरे में गयी और वहीं हाथ-मुँह धोया। उसके बाद अपनी सहेली को परेड में भाग लेने के लिए राज़ी न कर पाकर वह अकेले ही लाल भवन के पिछवाड़े की ओर चल दी।

——:o:——

अध्याय 15

बसन्त की सुहावनी सुबह थी। फुर्तीली गौरैयाँ एक हरी डाल से दूसरी पर फुर्र-फुर्र कर रही थीं, और मन्द ताज़ा-ख़ुशबूदार बयार यह यक़ीन दिलाती थी कि बसन्त आख़िरकार आ ही गया था। पीकिङ विश्वविद्यालय के लाल भवन के पीछे का खेल का मैदान सुबह की धूप में नहा चुका था और वहाँ छात्र दो-दो और तीन-तीन के झुण्ड में इकट्ठा होने लगे थे। अठारह सितम्बर वाली घटना के बाद जापान का प्रतिरोध करने के लिए उठ खड़ा हुआ देशभक्तिपूर्ण आन्दोलन, जो दावाग्नि की तरह पूरे देश में फैल रहा था, क्वोमिन्ताङ द्वारा कराये गये ख़ूनी क़त्लेआम के कारण अब रुद्ध हो गया था। चूँकि छात्रों के लिए बड़े पैमाने के प्रदर्शनों का आयोजन करना असम्भव था, इसलिए उन्होंने छोटे पैमाने की मीटिंगें करनी शुरू कर दी थीं जो दिखावटी तौर पर ग़ैर-राजनीतिक होती थीं; ठीक ऐसे ही परेड और प्रदर्शन भी होते

थे जो तेज़ी से आयोजित और तितर-बितर किये जा सकते थे।

ज़्यादा से ज़्यादा युवक-युवतियाँ उस बड़े खेल के मैदान में जमा होते जा रहे थे। विश्वविद्यालय की नीची दीवार के पास बेदमजनूँ की एक क़तार थी, उनकी हरी मुलायम पत्तियाँ हवा में झकोरे खा रही थीं। लो ता-फाङ उनके नीचे आगे-पीछे चहलक़दमी कर रहा था, उसके चौड़े कन्धे कभी सुबह के सूरज की पृष्ठभूमि में नज़र आते तो कभी निर्भीकतापूर्वक उसकी ओर बढ़ते हुए दिखते। रह-रहकर उसकी घनी काली भौंहें चिन्ता में सिकुड़ जातीं, लेकिन जब उसने तीव्र गति से बढ़ती जा रही इस गहमागहमीभरी भीड़ की ओर सिर उठाकर देखा तो उसका चेहरा बाल-सुलभ प्रसन्नता से दमक उठा।

लो ता-फाङ पाई ली-पिङ से पिछली रात मिल चुका था। ली-पिङ ने शरारतभरे अन्दाज़ में उसका हाथ पकड़ लिया था और मुस्कुराकर झिड़की दी थी :

"तुम भी अच्छे साथी हो! लगातार मुझे उपेक्षित कर रहे हो! क्या तुम अतीत को भूल गये? मैं अब भी तुम्हारे प्रति वफ़ादार हूँ।"

उसने अपना सिर हिला दिया था, अपने आवेग को रोक लिया था और एक दूसरा ही विषय छेड़ दिया था। "कल अठारह मार्च की वर्षगाँठ है, ली-पिङ," उसने कहा था। "तुम्हें ज़रूर जाना चाहिए और भाग लेना चाहिए। तुम कैसी हो? क्या तुम पहले जैसी ही व्यस्त हो?"

वह अपनी तराशी भौंहों को कमान करती हुई मुस्कुरायी थी, उसकी सम्मोहनकारी आँखें फैली हुई थीं।

"मेरे प्यारे दोस्त, मैं नाटकों के मंचनों और रिहर्सलों में बुरी तरह से व्यस्त हूँ? तुम जानते हो कि मैं 'लेडी विण्डरमेयर का आशिक' में नायिका की भूमिका कर रही हूँ। तुम शायद नहीं जानते होगे कि मैं जल्द ही फ़िल्मों में अभिनय करने के लिए शंघाई जाने वाली हूँ। इसके अलावा और किसी भी चीज़ में शामिल होने की मुझे फ़ुरसत नहीं है। तुम अठारह मार्च वाली मीटिंग में मेरी तरफ़ से भाग ले लेना, मेरे प्यारे..." उसने फिर उसका हाथ मज़बूती से पकड़ लिया था, एक जादूभरी मुस्कान उसके चेहरे पर खेलती रही थी।

"फ़िल्म स्टार!" उसने अपना सिर हिलाया था और एक कड़ुवाहटभरी मुस्कान के साथ मुड़ा और चल दिया था।

लो ता-फाङ ने उस गाँठदार बेदमजनूँ के तने को बाँहों में भर लिया और घृणा से थूक दिया। फिर उस उमड़ती हुई भीड़ पर नज़र डाली और उसी क्षण उसके कानों को सुनायी दिया :

हमको लड़कर देश बचाना है!

हमको लड़कर देश बचाना है!
जापानी सामराजियों को मार भगाना है।...

झकझोर देने वाले संगीत ने उसके हृदय को उत्साहित कर दिया, और अपनी मुट्ठी लहराते हुए वह बुदबुदा उठा :

"इससे तो अच्छा था कि भाई लू ने मुझे वृद्धाश्रम में भेज दिया होता!"

बात यह थी कि लू चिआ-चुआन, जो अब पीकिङ विश्वविद्यालय में पार्टी के कामों का नेतृत्व कर रहा था, बार-बार लो ता-फाङ को कह चुका था कि वह अपनेआप को अनावश्यक रूप से खुल्लमखुल्ला न ज़ाहिर करे, श्वेत आतंक की इस नाज़ुक घड़ी में अपनी शक्ति बचाये रखने के लिए जहाँ तक सम्भव हो सके, भूमिगत होकर काम करे। और इसके अलावा भी उसने लो ता-फाङ को इस मीटिंग में बोलने से मना कर दिया था और ख़ुद ही बोलने का फ़ैसला किया था। इससे उसके लिए आसानी थी कि जब ज़रूरत पड़े वह छिप जाये, क्योंकि अब वह विश्वविद्यालय में नहीं था और उसका कोई निश्चित पता-ठिकाना भी नहीं था। लो ता-फाङ कुण्ठित और उदास महसूस कर रहा था, कारण कि उसे बोलने की अनुमति नहीं दी गयी थी। उसके शक्तिशाली शरीर में ताक़त कूट-कूटकर भरी हुई थी और सारे दुर्व्यवहारों को तहस-नहस कर देने और जड़-मूल से उखाड़ फेंक देने का जोश भरा हुआ था, फिर भी इन गुणों को प्रकट करने से मना किया जा रहा था।

खेल के मैदान की भीड़ देखकर उसे उस समय का ख़याल हो आया जब दसियों हज़ार छात्र प्रदर्शन करने के दौरान क्वोमिन्ताङ के नानकिङ स्थित मुख्यालय में संघर्ष करते हुए घुस गये थे, केन्द्रीय दैनिक के दफ़्तरों को तहस-नहस कर डाला था और सेना मुख्यालय पर धावा बोल दिया था। अनजाने ही इस सोच पर उसने एक गहरी साँस खींच ली।

"पार्टी अनुशासन!" वह भुनभुनाया। "निर्देश किसी उद्देश्य के तहत दिये जाते हैं। उनका पालन ज़रूर किया जाना चाहिए।" कुछ सोच-विचार के बाद वह भीड़ में चला गया।

अब ताओ-चिङ भी खेल के मैदान पर पहुँच चुकी थी, लेकिन भीड़ में बहुत खोजने के बाद भी उसे सू निङ, लू चिआ-चुआन और लो ता-फाङ दिखायी नहीं दिये। वहाँ बाक़ी सबसे अपरिचित वह अलग-थलग खड़ी रही; वह उत्तेजना से भरी हुई थी परन्तु डरी हुई थी। जल्द ही वहाँ तीन सौ से चार सौ के बीच लोग जमा हो गये, लेकिन वह अब भी अकेले ही भीड़ के किनारे खड़ी थी। तभी यकायक कई तरफ़ से, तेज़ और दमदार, नारे फूट पड़े, जिससे उसके भीतर ख़ुशी की सनसनाहट दौड़ गयी।

"जापानी साम्राज्यवाद के हमले का विरोध करो!"

"देश को बेचनेवाले क्वोमिन्ताङ ग़द्दार मुर्दाबाद।"

"जनता की सरकार बनाओ!"

"अठारह मार्च को याद करो और कार्रवाई में जुट जाओ! जापानी साम्राज्यवाद मुर्दाबाद!"

ये बहादुराना, ललकारती चीखें सभी के दिलों को झकझोर दे रही थीं। कुछ-कुछ छितरायी मुख्य क़तारों से थोड़ा दूर खड़ी ताओ-चिङ ललक रही थी कि वह भी अपनी मुट्ठी उठाये और दूसरों के साथ नारे बोले, लेकिन वह इतना सकुचा रही थी कि अपना मुँह नहीं खोल पा रही थी। जैसे ही उसने अपने पसीने से तर ललाट को एक सफ़ेद रूमाल से पोंछना शुरू किया, उसने ग़ौर किया कि एक लड़की एक फटा-पुराना नीला अस्तर लगे सूती गाऊन पहने उसकी बग़ल में खड़ी थी; वह साँवले रंग की, नाटी और कुछ दुबली-पतली थी। यह छोटे बालवाली छात्रा बिल्कुल चुस्त-दुरुस्त लग रही थी तथा स्पष्टतापूर्वक और जोश-ख़रोश के साथ नारे लगा रही थी; ज़ाहिरा तौर पर वह दूसरों की अगुवाई कर रही थी। "कितनी बहादुर है वह!" ताओ-चिङ ने प्रशंसाभरी नज़रों से उसकी ओर एकटक देखते हुए सोचा। इस दूसरी लड़की ने उसकी उलझन को देखा और उसके अभिवादन में सिर झुकाया।

"क्या यह इस तरह की तुम्हारी पहली मीटिंग है? क्या तुम अकेली हो?"

एकाकीपन टूट जाने की ख़ुशी में ताओ-चिङ उसके और क़रीब खिसक आयी और जवाब में बोली, "हाँ, मैं यहाँ अकेले आयी हूँ, और जिनको मैं जानती हूँ उनमें से अब तक कोई नहीं मिला... तुम किस स्कूल की हो?"

"पीकिङ विश्वविद्यालय की।" उस लड़की ने ताओ-चिङ का हाथ एक सहज, दोस्ताना अन्दाज़ में थाम लिया। "पहली बार जब मैं इस तरह की परेड में शामिल हुई थी, तो ऐसे ही डरी हुई थी, जब मैंने दूसरों के साथ नारे लगाना शुरू कर दिया तो मेरा डर जाता रहा। आओ, हमारे साथ हो जाओ।"

कई जोड़ी नौजवान उत्सुक निगाहें ताओ-चिङ पर पड़ीं; और वे स्नेहिल, दोस्ताना निगाहें उसको अपनी क़तारों में शामिल होने और उनके साथ घुलमिल जाने का आमन्त्रण देती हुई प्रतीत हो रही थीं। उसने तुरन्त साहस बटोर लिया, और उस लड़की के हाथ में हाथ डाले आगे एक मंच की ओर दौड़ गयी जहाँ पर स्टूल रखे हुए थे। वहाँ चश्मा पहने एक नौजवान मुट्ठियाँ भाँजते हुए जोशीला भाषण दे रहा था।

"साथी छात्रो! कॉमरेडो! क्वोमिन्ताङ ध्वस्त होने वाला है! क्रान्ति का ऊँचा ज्वार आ रहा है! हमें जापानी साम्राज्यवाद को परास्त करने के लिए हथियारबन्द होना होगा। क्वोमिन्ताङ मुर्दाबाद! चीनी कम्युनिस्ट पार्टी का समर्थन करो! सोवियत

संघ का समर्थन करो! चीनी सोवियत सरकार का समर्थन करो..." अभी वह ये नारे लगा ही रहा था कि इसी बीच लाल और हरे रंग की पर्चियाँ हवा में फड़फड़ाने लगीं। ताओ-चिङ की प्रखर सुरीली आवाज़ भीड़ की दमदार, दृढ़ निश्चयी नारों के साथ मिलकर उस पुराने शहर के ऊपर बसन्ती हवा में तैरने लगी। जैसे-जैसे वह पीकिङ विश्वविद्यालय की उस लड़की के साथ नारे लगाती गयी, उसकी चमकदार आँखें दमकती गयीं और उसका हृदय उत्तेजना से भरकर ज़ोर-ज़ोर से धड़कता गया। अपने जीवन में पहली बार उसने जनगण की प्रचण्ड शक्ति का अहसास किया और वह अब अकेली या डरी हुई न थी, वह अब इस विशाल जन-समूह का एक अंग थी।

जिस समय ये विचार उसके दिमाग़ में कौंध रहे थे, उसी समय, पुलिस की सीटियाँ सुनायी दीं। वह वक्ता जो नारे लगा रहा था हकलाया और मंच से नीचे कूद पड़ा। ठीक उसी क्षण एक काला सूती गद्देदार गाऊन पहने हुए कोई व्यक्ति इत्मीनान से उसकी जगह लेने के लिए उछलकर मंच पर आ गया। ताओ-चिङ ने ग़ौर से देखा – निश्चय ही वह लू चिआ-चुआन था? झट से अपनी साथिन की बाँह में धक्का मारकर वह फुसफुसा उठी :

"देखो। मेरा दोस्त! वह मेरा शिक्षक भी है – बोलने जा रहा है।"

"तुम्हारा मतलब है भाई लू?" ज़ाहिर था कि वह उसे जानती थी, क्योंकि उसने जवाब में ताओ-चिङ का हाथ दबाया था।

लू चिआ-चुआन एक स्टूल पर चढ़ गया। गर्म बसन्ती बयार उसके छोटे-छोटे बालों को फरफरा रही थी। वह दहकती, चुम्बकीय आँखों से दर्शकों की ओर मुख़ातिब हुआ, और जैसे ही पुलिस की सीटी की कर्कश आवाज़ और नज़दीक आयी, उसने एक धीमे, प्रभावशाली स्वर में बोलना चालू कर दिया :

"साथी छात्रो! कॉमरेडो! अपनी आँखें खोलो, यथार्थ को देखने के लिए, रक्तपात और हत्या का नज़ारा देखने के लिए!"

इस बाँध लेने वाली शुरुआत ने उसके श्रोताओं को अवाक् कर दिया। बातचीत का सारा शोरगुल बन्द हो गया। साँसें थामे कई सौ की उस भीड़ ने उसकी अविचल, प्रभावकारी आकृति को देखने के लिए अपने सिर उचकाये। "हम सभी जो नौजवान हैं, ऊँची महत्त्वाकांक्षाएँ रखते है और चाहते हैं कि हमारा देश समृद्ध और शक्तिशाली हो, जिससे कि हमारा भविष्य महान और उज्ज्वल हो... यही तो था जिसके लिए हमारे पुराने क्रान्तिकारी, एक के बाद एक अपनी ज़िन्दगियाँ क़ुर्बान करते रहे! इसी को लेकर अठारह मार्च की घटना के रणबाँकुरों ने अपनी जानें गँवायीं! अब हम अपनेआप को बड़ी गम्भीरता से अपने अध्ययन में लगाकर, कठिन श्रम कर रहे हैं; हम लोग चीन में एक अच्छे समाज का निर्माण करने के लिए कोई कसर बाक़ी नहीं छोड़ रहे हैं। हम कितने भिन्न हैं अपने शासकों से, जो एक

निर्लज्ज भोग-विलास की ज़िन्दगी जी रहे हैं। वे अपने निजी स्वार्थपूर्ण उद्देश्यों की पूर्ति के लिए देश को बेच डालने की चाह लिये, विदेशियों के आगे घुटने टेकते और नाक रगड़ते हैं; देश के भीतर वे क़ैद, दासता, गिरफ़्तारियों और क़त्लेआम के ज़रिये जनता पर राज कर रहे हैं, जब से क्वोमिन्ताङ सत्ता में आया है, हमारे अपने देशवासी भयानक बदहाली में धकेल दिये गये हैं, जबकि लाखों नौजवान स्त्री-पुरुषों का सामूहिक नरसंहार या क़त्ल किया जा चुका है। अगर ये क़त्ल हुए लाखों लोग यहाँ खड़े होते, तो उनके लिए जगह कम पड़ जाती। भले ही हमारा विश्वविद्यालय परिसर इससे कई गुना बड़ा क्यों न होता। अपने ही देशवासियों के साथ निपटने में तो क्वोमिन्ताङ ने अपनेआप को 'बहादुर' और पाशविक दोनों सिद्ध कर दिया है, लेकिन देखना है कि वे विदेशी शक्तियों के आगे कैसे खड़े होते हैं। अब जापानी हमलावर लेङकोऊ, सिफेङ और कुपेई के दर्रों पर हमले कर रहे हैं। वहाँ तैनात सैनिक टुकड़ियाँ, जो पूरी तरह से देशभक्ति के आवेग में हैं, अपनी ही मर्ज़ी से जापानी हमलावरों का प्रतिरोध करने के लिए हथियार उठा रही हैं? वे इस क्षण दुश्मन से लड़ रही हैं। लेकिन महासेनानायक च्याङ क्या कहता है? वह क्या कह रहा है? उसने पेइपिङ और तिएनत्सिन के निकट और महान दीवार से लगे क्षेत्र में स्थित चालीस डिवीज़नों को आदेश दिया है कि वे जापान का प्रतिरोध न करें, बल्कि हमारी अपनी युद्धरत फ़ौजी टुकड़ियों पर नज़र रखें! जापान का प्रतिरोध करने को आतुर फ़ौजी टुकड़ियों और लोगों को जारी किये गये एक निर्लज्ज फ़रमान में उसने धमकी दी है कि 'जो जापान से लड़ने के लिए गर्मागर्म बातें कर रहे हैं, उन्हें बेरहमी से फाँसी पर लटका दिया जायेगा...'"

"जापानी हमलावर मुर्दाबाद!"

"निर्लज्ज क्वोमिन्ताङ मुर्दाबाद!"

जैसे ही इन क्रुद्ध चीख़ों की वजह से लू चिआ-चुआन के भाषण में विराम हुआ; गोलियाँ दग़ने की गड़गड़ाहट गूँज उठी। छात्र ख़तरे की आशंका में इधर-उधर देखने लगे।

"साथी छात्रो! कॉमरेडो! प्रतिक्रिया का शासन जल्द ही ख़त्म हो जायेगा। लोग उठ खड़े हो रहे हैं।" सीधे खड़े रहते हुए, गरिमायुक्त और बिना घबराये हुए, लू चिआ-चुआन उस प्रचण्ड रायफ़ल-फ़ायर से बेपरवाह प्रतीत हो रहा था और उसने शान्तिपूर्वक अपनी बात ख़त्म की : "हाँ, क्या कवि शेली कहता नहीं कि अगर सर्दियाँ आ गयीं, तो क्या बसन्त बहुत पीछे रह सकता है?"

"अगर सर्दियाँ आ गयीं, तो क्या बसन्त बहुत पीछे रह सकता है?" छात्रों ने विश्वासपूर्वक प्रतिध्वनि की।

"अगर जाड़ा आ गया, तो क्या बसन्त बहुत पीछे रह सकता है?" ताओ-चिङ फुसफुसायी। उसकी आँखें उत्तेजना के मारे आँसुओं से भीग गयी थीं।

रायफ़लों की उग्र तड़तड़ाहट ने आसमान को गुंजायमान कर दिया, मीटिंग को अस्त-व्यस्त कर दिया। कुछ प्रदर्शनकारी गला फाड़-फाड़कर नारे लगा रहे थे, बाक़ी सभी दिशाओं में भाग रहे थे। ताओ-चिङ ने बेचैन होकर अपनी निगाह अपनी बग़ल वाली लड़की पर से हटाकर लू चिआ-चुआन पर डाली, दोनों अब वहाँ शान्तिपूर्वक खड़े थे, मानो किसी संकेत का इन्तज़ार कर रहे हो। इस दृश्य ने उसको स्थिरचित्त किया और वह अनचाहे ही उनके क़रीब खिंच गयी। लू चिआ-चुआन पर दृष्टि डालते ही उसने चिन्तामिश्रित आश्चर्य व्यक्त किया, "वह हट क्यों नहीं रहा है?"

फिर लू चिआ-चुआन ने अपने स्काउटों से प्राप्त ख़बरों को ध्यानपूर्वक सुनकर अपनी बाँहें लहरायीं और आदेशात्मक लहजे में आह्वान किया। "साथी छात्रो, कॉमरेडो!" वह चिल्लाया, "ये हठधर्मी फिर बल प्रयोग कर रहे हैं; हम घिर गये हैं! लेकिन बहादुर योद्धाओं को कभी डराया नहीं जा सकता। यहाँ तक कि ख़ाली मुट्ठियों और पत्थरों से लड़कर हम उन्हें छठी का दूध याद दिला देंगे। आओ हम इस घेरेबन्दी को तोड़ चलें! चलो सड़क की ओर! जुलूस की ओर!"

छात्र, जो एक क्षण पहले घबरा गये थे, अब एकजुट होने लगे, और अपनी जेबों में पत्थर भर-भरकर वे आगे मार्च करने लगे। छोटे बालोंवाली वह लड़की, जो उस झुण्ड के आगे-आगे चल रही थी जिस में ताओ-चिङ स्वयं थी, शान्तिपूर्वक नेतृत्व दे रही थी। ताओ-चिङ उसके क़रीब बनी हुई थी, सिर ऊँचा किये, निर्भीकतापूर्वक आगे की ओर मार्च करते हुए।

उठ जाग, भूखे बन्दी,
अब खींचों लाल तलवार,
कब तक सहोगे भाई

ज़ालिम का अत्याचार।

'इण्टरनेशनल' की जोशीली तानें, रह-रहकर चल रहे रायफ़ल-फ़ायर के बीच से एक बौछार की भाँति उभरती हुई, बसन्त के विस्तृत आकाश में तैरने लगतीं। छात्रों ने जो अब अपने पूरे ओज में थे, पहले की अपेक्षा अधिक नियमित क़तारें बना लीं।

"रुक जाओ! वरना हम फ़ायर कर देंगे।" काली वर्दी पहने पुलिस के जवान रायफ़लें लिये ऐसे व्यवहार कर रहे थे, मानो निहत्थे लड़के और लड़कियाँ किसी दुश्मन की लाखों की तादाद वाली शक्तिशाली सेना हो। अपनी संगीनें, रायफ़लें और डण्डे भाँजते हुए पुलिसवालों द्वारा वे चारों तरफ़ से घेर लिये गये। लो ता-फाङ अब अपनेआप को और ज़ब्त नहीं कर सकता था। मानो कहीं शून्य में से छात्रों के सिरों के ऊपर प्रकट होते हुए उसकी स्वर-गर्जना उभरी जिसने आकाश को गुंजायमान

कर दिया :

"चलते रहो! सड़कों की ओर! अठारह मार्च के शहीदों के पदचिह्नों का अनुसरण करो!"

लेकिन इसके पहले कि उनका हरावल दस्ता फाटकों तक पहुँचता, उन्हें पुलिस और सैनिकों से उलझना पड़ा। नारे लगाते और चीख़ते हुए, दोनों पक्ष बुरी तरह गड्डमड्ड होकर एक-दूसरे से भिड़ गये; रायफ़लों के कुन्दों और संगीनों के जवाब में पत्थरों के निशाने सध गये। पुलिस और सैनिक मार्च करने वालों के बढ़ाव को रोक पाने में असमर्थ होकर भीड़ पर फ़ायर करने लगे, जबकि छात्रों ने इस चुनौती के जवाब में उन पर पत्थर फेंकने शुरू कर दिये। वे इस लड़ाई में भिड़े ही हुए थे कि पीछे की ओर से घात लगाये पुलिस और सशस्त्र सैनिकों ने गिरफ़्तारियाँ शुरू कर दीं।

"पीट-पीटकर मार डालो इन जल्लादों को। क्वोमिन्ताङ मुर्दाबाद!" छात्र गुस्से में भरकर चिल्ला उठे। "रूसी रूबलों के लिए काम कर रहे सभी लाल क्रान्तिकारियों को पकड़ लो!" प्रत्युत्तर में अफ़सर चिल्ला उठे।

इस दंगा-फसाद में ताओ-चिङ की निगाह लू चिआ-चुआन और उस लड़की पर से बहक गयी जो उसकी बग़ल में रह चुकी थी। अपने सारे पत्थरों को फेंक चुकने के बाद, वह परेशान थी कि अब क्या करे। इस समय तक पुलिसवाले बर्बरतापूर्वक इधर-उधर छात्रों पर पिस्तौलें और डण्डे बरसा रहे थे। कई छात्र ज़ख़्मी हो गये थे और उनके सिर की चोटों से ख़ून बह रहा था; कुछ को बाँधा जा रहा था और घसीटकर ले जाया जा रहा था। ताओ-चिङ पर एक डण्डे की चोट पड़ी, लेकिन उसने पुलिसवाले को चकमा दे दिया, जो उसे अब पकड़ने ही वाला था, और छिटककर दूसरे झुण्ड में चली गयी। अगले क्षण उसने दहशत के साथ देखा कि पीकिङ विश्वविद्यालय वाली वह लड़की चौड़े अर्ज़ की ऊनी वर्दी पहने एक मोटे आदमी से हाथापायी कर रही थी। वह दुबली-पतली, कमज़ोर-सी लड़की एक बहादुर योद्धा थी। वह उस मोटे आदमी का कॉलर पकड़कर भिड़ी हुई थी, और रणचण्डी की भाँति उसका मुँह नोच रही थी और उसके हाथों को दाँतों से काट रही थी। बैल की तरह हाँफते हुए उस मोटे आदमी ने पलटवार किया जिससे उसका बदरंग गाऊन उसके कन्धों पर से फट गया।

"येन केङ! हरामज़ादे! छठे भीतरी वार्ड के अभागे प्रधान! तुमने कितने नौजवान देशभक्तों को गिरफ़्तार किया है?" उसकी आवाज़ फटी हुई थी, और वह उस वार्ड-प्रधान का ख़ून कर देने को तैयार दिख रही थी। बात यह थी कि येन केङ जब अपने मातहत कर्मचारियों के कार्यकलापों को निर्देशित कर रहा था तभी उसकी नज़र इस छरहरी लड़की पर पड़ गयी थी, और उसने मन में बिठा लिया था कि वह उसकी इज़्ज़त के साथ खिलवाड़ करेगा। बहरहाल, उसके दुर्भाग्य से उसकी

योजना मिट्टी में मिल गयी थी, क्योंकि यह नाजुक लड़की उस मोटे वार्ड-प्रधान के मुक़ाबले कहीं बीस पड़ी थी। जब उसने महसूस किया कि उसके चमचे उसके साथ नहीं थे और छात्र धमकाते हुए दौड़े चले आ रहे थे, तो वह एक ऐसे सुअर की भाँति किकिया उठा जो जिबह किया जा रहा हो।

"यहाँ आओ! जल्दी करो! इन्हें गिरफ्तार कर लो!"

"कुत्ते! क्या चिल्ला रहे हो? अब देखो कि कैसी फ़ौलादी मुट्ठियाँ हैं लोगों की!" छात्र उस पर पिल पड़े, उसे लात-घूँसों से इतना मारा – इतना मारा कि कुछ ही क्षणों में वह काला पड़ गया। उसकी शरीराकृति ऐंठ गयीं और वह औंधे मुँह उनके पाँव पर गिर पड़ा, और अब उठने में असमर्थ था।

"बचाओ! बचाओ! मैं मर गया।" उसकी दहशतभरी चीख़ें उसके पीटने वालों की क्रुद्ध चीख़ों में विलीन हो गयीं, छात्र ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगे।

उस बहादुर लड़की के पास दौड़कर पहुँचती हुई,ताओ-चिङ ने उसे जा पकड़ा और लड़की के चेहरे से ख़ून पोंछ डालने के लिए रूमाल निकाल लिया; लेकिन उसी क्षण गोलियाँ दगने की गर्जना सुनायी दी, और इसके बाद जो हो-हल्ला मचा उसमें ये दोनों अलग-अलग हो गयीं। सशस्त्र पुलिस येन केङ के बचाव के लिए आ चुकी थी। क्रुद्ध और अपमानित, और अब भी डर से थर-थर काँपते हुए उस मोटे वार्ड-प्रधान ने छात्रों के एक झुण्ड की ओर इशारा किया और टर्राया :

"पहले उसे पकड़ो! पहले उसे पकड़ो! कुतिया कहीं की!"

वह कमज़ोर-सी लड़की एक दूसरे झुण्ड से होकर भाग निकली और हवा की भाँति उड़ चली, पीछा करने वाले भी उसकी पीठ पर ही थे। ताओ-चिङ तब चिन्तातुर होकर देखने लगी, जब पुलिस ने उसे आगे से घेरा, लेकिन अभी वह चकरायी हुई थी कि क्या किया जाये, तभी उस छात्रा ने एक गोल चक्कर लगाया, और अपनी बची-खुची सारी ताक़त समेटकर पीछे मुड़ी और अपना पीछा कर रहे सबसे आगे व्यक्ति के ज़ोर से टक्कर मारी। जैसे ही वह इस टक्कर से लड़खड़ाया, वह साफ़ बच निकलने के लिए मुड़कर, भीड़ को तेज़ी से चीरती हुई दौड़ने लगी, पुलिस और मोटा वार्ड-प्रधान अब भी उसका पीछा कर रहे थे, और बाक़ी किसी पर ध्यान नहीं दे रहे थे। ताओ-चिङ ने उनके पीछे-पीछे दौड़ते हुए देखा कि वह लड़की लाल भवन की ओर जा रही थी।

"उसे रोको! उसे रोको!" लाल भवन के प्रवेश-द्वार पर वह एक पुलिसमैन के भारी-भरकम बेरहम हाथों द्वारा पकड़ ली गयी। ताओ-चिङ ठिठक गयी, भौचक्का-सी। लेकिन ठीक उसी समय, पुलिसमैन पर एक भरपूर वार हुआ जिससे वह लड़खड़ा गया। ताओ-चिङ ने इस दृश्य की तरफ़ दौड़कर पहुँचते हुए देखा कि यह लू चिआ-चुआन का कारनामा था। अपनी ख़ुशी में ख़तरे को भूलकर वह चिल्लाती हुई दौड़ पड़ी।

"भाई लू! भाई लू!!" लेकिन उत्तर देने के बजाय उसने तेज़ी से दायें-बायें देखा, तथा उस लड़की को, ताओ-चिङ को और दो अन्य छात्रों को एक लकड़ी के एक दरवाज़े की तरफ़ इशारा किया। उनको दरवाज़े के भीतर ठेलते हुए वह जल्दी-जल्दी फुसफुसाया :

"जल्दी करो! इसके अन्दर से होते हुए तहख़ाने में चले जाओ, फिर दायें मुड़ जाना। छापेख़ाने में तुम लोग अपनेआप को सुरक्षित हाथों में पाओगे।"

ताओ-चिङ को बोलने का मौक़ा दिये बिना उस दूसरी लड़की ने उसका हाथ पकड़ा और उनको मिले निर्देशों का पालन करते हुए, वे चारों उस लाल भवन के तहख़ाने की ओर अँधेरे में अपना रास्ता टोहते हुए उतर पड़े।

वहाँ नीचे बहुत मामूली प्रकाश था और वे बमुश्किल ही देख सकते थे कि वे कहाँ जा रहे हैं। जिस क्षण वे दायीं तरफ़ मुड़े, उनका सामना एक मुद्रक से हुआ, जो फुसफुसाया :

"यहाँ एक क्षण तक छिपे रहो, जब तक कि सबकुछ फिर से ठीक-ठाक न हो जाये।"

"धन्यवाद!" उस छात्रा ने बिना किसी संकोच के उस कामगार का हाथ थामते हुए कहा। सभी ने एक साथ एक छोटे कमरे में प्रवेश किया जो कबाड़ से भरा हुआ था। उस कामगार ने इन दो लड़कियों को भीतर प्रविष्ट कराकर रोशनी बुझा दी, दरवाज़े पर ताला बन्द किया और उन दो लड़कों को एक दूसरे गुप्त स्थान पर ले गया।

यद्यपि ताओ-चिङ प्रसन्न थी कि अब वे ख़तरे से बाहर थे, फिर भी उसका दिल बैठने लगा, जब उसे लू चिआ-चुआन और लो ता-फाङ का ख़याल आया, जो बाक़ी नारे लगाने वालों का नेतृत्व कर रहे थे। पुलिस उनके पीछे इतना क़रीब थी, वे कैसे बच निकले होंगे? उस अन्धकार में, उसने दूसरी लड़की के हाथ का स्पर्श महसूस किया, और पूछा :

"क्या तुम सोचती हो कि उन्हें कुछ हो सकता है – मेरा मतलब लू चिआ-चुआन और लो ता-फाङ से है?"

"मैं समझती हूँ वे सकुशल रहेंगे," उस लड़की ने ताओ-चिङ का हाथ पकड़कर एक दबे हुए स्वर में जवाब दिया। "आज की पुलिस अधिकतर छठे भीतरी वार्ड से आयी थी और वह उजड्ड मूर्खों का गिरोह थी। भाई लू चालाक, बहुत सावधान रहने वाला है। वह जानता है कि उनसे कैसे निपटा जाये। मुझे विश्वास है कि वह उनकी पकड़ में नहीं आयेगा। तो तुम लो ता-फाङ को भी जानती हो?" वह चकित लग रही थी।

"हाँ, जानती हूँ।" ताओ-चिङ के विचारों में फिर उथल-पुथल मच गयी थी। एक पैकिंग के डिब्बे पर ख़ामोश बैठे हुए उसने उस उग्र संघर्ष को याद किया

जिससे होकर वे अभी-अभी गुज़रे थे, और उसके दिल में एक ऐसी घृणा उभर आयी थी जो उसकी जानकारी में इससे पहले कभी नहीं उभरी थी। अपने जीवन में पहली बार उसने प्रतिक्रियावादियों द्वारा ईमानदार नौजवान देशभक्तों के विरुद्ध अपनाये गये पाशविक तरीक़ों को प्रत्यक्ष देखा था। उसके मन में लू चिआ-चुआन, लो ता-फाङ और उन दूसरों के प्रति एक महान आदर-भाव था जिन्होंने ख़ून बहाया था और बिना किसी घबराहट के मृत्यु का सामना किया था। स्वयं उसकी कायरतापूर्ण हिचकिचाहट से यह कितना विपरीत था। उसने अनचाहे ही अपना सिर अपनी बग़लवाली लड़की को देखने के लिए घुमा दिया। यद्यपि वह अपनी साथिन का चेहरा उस अँधेरे में नहीं देख सकी, फिर भी उसके दिमाग़ में उस संकल्पबद्ध और छोटी आँखों वाली लड़की की एक चमकती हुई तस्वीर थी जिसने वार्ड-प्रधान का मुक़ाबला किया था। एक अयोग्यता और लज्जा का भाव उसको बोझिल करने लगा।

"तुम्हारा नाम क्या है?" इस मुलायमियत से पूछे गये सवाल ने ताओ-चिङ की विचारतन्मयता को बीच ही में तोड़ दिया। उत्तर दे चुकने के बाद उसने इस दूसरी लड़की से उसका नाम पूछा।

"सू हुई?" ताओ-चिङ तुरन्त चौंक पड़ी और ख़ुशी से भर उठी। "मैं तुम्हारे बारे में जानती हूँ। जब छात्र प्रदर्शन करने दक्षिण में गये थे, तो तुम उनके नेतृत्वकर्ताओं में से एक थीं..."

"इतना ज़ोर से मत बोलो! उत्तेजित होने की कोई आवश्यकता नहीं है।" सू हुई ने अपने हाथ से ताओ-चिङ का मुँह बन्द कर दिया और साँस रोककर बोली। "मैं समझती हूँ कि तुमने मेरे बारे में सू निङ से सुना होगा? मैं भी तुमको लम्बे समय से जानती रही हूँ।"

वे एक दोस्ताना ख़ामोशी में डूब गये। अब जबकि संकोच टूट चुका था, उनको ऐसा महसूस हो रहा था मानो वे वर्षों से एक-दूसरे को जानते हो तथा उस अँधेरे में उन्होंने और कसकर एक-दूसरे का हाथ पकड़ लिया।

दो घण्टे से अधिक समय बीत गया। ज़रूर दोपहर से अधिक समय हो चुका था, तभी मुद्रक ने उनके दरवाज़े का ताला खोला और बत्ती जला दी। उसी क्षण ताओ-चिङ ने लू चिआ-चुआन को एक मज़दूर के लिबास में दरवाज़े के पास खड़े देखा। ख़ुशी के मारे उसने उसका हाथ पकड़ लिया और चिल्ला उठी :

"भाई लू, तुम ठीक-ठाक हो?..."

पहले की भाँति ही शान्त और संयत वह मुस्कुराया और हाथ हिलाया।

"बाहर आ जाओ। योग्य पुलिस 'बहादुरीपूर्वक' वापस लौट गयी है।"

सू हुई ने भी उत्सुकतावश उसकी बग़ल में पहुँचकर धीमे स्वर में पूछा :

"कैसा रहा? क्या हताहत ज़्यादा हुए हैं?"

"चालीस गिरफ़्तार हुए, दो की मौत... हमें अभी घायलों की संख्या नहीं मालूम है। लो ता-फाङ गिरफ़्तार..."

"लो ता-फाङ!" लू चिआ-चुआन, कामगार और सू हुई ने बिना कोई शब्द बोले अपने सिर झुका लिये। और ताओ-चिङ का भी सिर झुक गया, वह स्पष्टता से लो ता-फाङ की कद्दावर, साहसी देहयष्टि को याद करने लगी।

"संघर्ष का मतलब ही होता है कि ख़ून बहेगा। यह लड़ते-लड़ते मर मिटने का संघर्ष है..." उसके द्वारा पढ़े गये सिद्धान्त तथ्यों से साबित हो रहे थे।

कुछ समय बाद जब बाक़ी चले गये, तो लू चिआ-चुआन ताओ-चिङ को पीकिङ विश्वविद्यालय के पिछले फाटक से होकर ले गया। छोटी-छोटी गलियाँ पकड़ते हुए वे तिएन आन मेन के बाहरी रास्ते से होकर निकले और शहर के पश्चिमी भाग की ओर चल पड़े। पहले तो वे एक अच्छी-ख़ासी दूरी बनाये बिना बोले चलते रहे, लेकिन जब वे विश्वविद्यालय से कुछ दूर हो गये, तो लू चिआ-चुआन ताओ-चिङ के क़रीब आ गया और पूछा :

"क्या तुम आज जुलूस में अकेले आयी थी।?"

"हाँ।" उसने कुछ सकुचाकर हामी भरी। "सू निङ ने मुझे औरों को लाने के लिए कहा था, लेकिन – उन्होंने इन्कार कर दिया।"

"उन्होंने क्यों इन्कार किया?"

"उन्होंने हमारे सिद्धान्तों को और सोवियत संघ के समर्थन की बातों को सुनकर इन्कार कर दिया। मैं समझती हूँ कि वे बहुत अधिक पिछड़े हुए हैं या जुलूस में शामिल होने से डरते हैं।"

लू चिआ-चुआन ने कोई जवाब नहीं दिया। सोच में गहरा डूबा हुआ वह एकटक सीधे आगे की ओर देखता रहा, किसी कठिन समस्या में तल्लीन बना हुआ। ताओ-चिङ उस पर चोरी से एक नज़र डालकर चिन्तित थी कि कहीं उसने कुछ ग़लत न कह दिया हो।

"ताओ-चिङ तुमने मुझे कुछ याद दिला दिया है।" जैसे ही वे शहीचाहाई के पेइहाइ पार्क स्थित एक ठहरे पानी के पक्के जलकुण्ड के वीरान किनारे से होकर गुज़रे, उसने कहा, "यह सच है कि लोग हमारे सभी नारों को स्वीकार नहीं कर सकते। हर बार जब हम श्रद्धांजलि मीटिंगें या परेड करते हैं, तो बहुत-से गिरफ़्तार और हताहत होते हैं। वास्तविक कारण क्या है?..." वह शान्तिपूर्वक अपनेआप से बतिया रहा था, मानो भूल गया हो कि ताओ-चिङ उसकी बग़ल में है। उसने चकित होकर उसकी ओर देखा, बिना यह जाने कि वह किस चीज़ पर ज़ोर दे रहा था।

पीछे मुड़कर उसने तुरन्त पूछा, "आज का तुम पर कैसा प्रभाव पड़ा?" ताओ-चिङ ने अपने उत्तेजित स्वर को संयत बनाये रखने की पूरी कोशिश की। "मुझ पर कैसा प्रभाव पड़ा? वैसे तो मैं बमुश्किल ही जान पा रही हूँ कि कहाँ से

शुरू करूँ लेकिन मैं महसूस करती हूँ कि मैंने किताबों से जितना सीखा है और तुम सबने मुझे जितना बताया है उन सबसे कहीं अधिक इससे सीखा है। ऐसा लग रहा था, मानो अचानक मेरे पंख उग आये हों और मैं आकाश में ऊँचे उड़ी चली जा रही हूँ, ताकि मैं दुनिया का और विस्तार से अवलोकन कर सकूँ..." वह बहुत भोलेपन से मुस्कुरायी, और कुछ रुककर यकायक पूछ पड़ी, "सू निङ परेड में क्यों नहीं शामिल हुआ? उसने मुझे बताया था कि वह जा रहा है।"

लू चिआ-चुआन दबी हँसी हँसा, "पंख उगा लेना और ऊँचे आसमान में चढ़ते जाना कोई अच्छी बात नहीं है। बेहतर हो कि तुम अपने पाँव ज़मीन पर बनाये रखो और अपनेआप को जन-संघर्ष के दहन-पात्र में तपाकर फ़ौलाद बना डालो। जहाँ तक सू निङ का सवाल है, मुझे कहना पड़ रहा है कि वह पाई ली-पिङ के साथ मौजमस्ती कर रहा होगा। या हो सकता है वह डर गया हो। क्या तुम नहीं डरी थीं, ताओ-चिङ? अगली बार जब हम इस तरह की कार्रवाई करेंगे, तो क्या तुम शामिल होगी?"

ताओ-चिङ ने, जो लू चिआ-चुआन को अपना शिक्षक मानती आयी थी, एक ऐसे बच्चे की भाँति मुँह फुला लिया जो ग़लत समझ लिया गया हो।

"भाई लू, तुम्हें मुझ पर विश्वास करना चाहिए और मुझे समझना चाहिए... मैं इतनी डरपोक नहीं हूँ। मैं अक्सर संकल्प लेती हूँ कि मैं तुम जैसे बहादुर क्रान्तिकारियों से सीखूँगी – मैंने पिछले दो महीनों के दौरान बहुत-कुछ सीखा है, और आज तो और भी अधिक सीखा है... तुम नहीं जानते कि मुझे ऐसी खुशी प्रदान करने के लिए, मैं तुम सभी की कितनी आभारी हूँ।" मोती जैसे आँसू उसकी सुदीर्घ बरौनियों पर चमक उठे, वह इतनी अधिक भावुकता से अभिभूत हो गयी कि आगे न कह सकी।

लू चिआ-चुआन उसके उत्साह, उसके साहस और उसके क्रान्तिकारी जोश से अभिभूत होकर उसकी ओर बढ़ गया और उसके हाथ थाम लेने तक वह बिना कोई शब्द बोले उसे एकटक निहारता रहा।

"ताओ-चिङ, मुझे कुछ काम है," वह फुसफुसाया। "बेहतर है कि मैं तुम्हें यहीं छोड़ दूँ।" वह उसकी भावनाओं की गहराई से जिस तरह भावुक हो उठा था, उससे अब अपनेआप को नियन्त्रित कर लिया था। "जल्दी घर चले जाओ। भाई युङ चिन्ता से बौखला रहा होगा।"

ताओ-चिङ लजा गयी और कुछ अचकचाहट में बुदबदायी : "भाई लू। तुम मुझको सताते क्यों हो? इससे चोट पहुँचती है..." एक क्षण की ख़ामोशी के बाद वह फिर बोली। "अभी मत जाओ। बताओ कि लो ता-फाङ कैसे गिरफ़्तार हुआ? मुझे याद है जब उसने 'इण्टरनेशनल' गाना शुरू किया था।"

"हाँ, तो जब कुछ पुलिस वाले दो छात्राओं को पकड़ ले जाने के लिए जा रहे

थे, तभी भाई लो उनके बचाव के लिए दौड़ पड़ा, और अपनी प्रचण्ड मुट्ठी से दो बार भारी प्रहार करके उसने दोनों को चारों ख़ाने चित्त कर दिया। इसने उसे हमले का मुख्य निशाना बना दिया, और वे दोनों लड़कियाँ तो बच निकलने में कामयाब हो गयीं, जबकि वह गिरफ़्तार कर लिया गया।" यद्यपि लू चिआ-चुआन का लहज़ा शान्त और सामान्य था, फिर भी वह उसके दिल की कचोट को भाँप गयी। बिना उसको उत्तर देने का कोई अवसर दिये, वह झट चल दिया, "माफ़ करना, मुझे कुछ काम करने जाना है। अब हम विदा लें।"

"अलविदा! लेकिन जब तुम्हारे पास समय हो तो मुझसे मिलने ज़रूर आना!"

उसे लू चिआ-चुआन को छोड़ने की इच्छा नहीं हो रही थी, जिसकी उपस्थिति में वह सुरक्षित, निडर और दृढ़ महसूस करती थी, लेकिन उन्हें अपने अलग-अलग रास्तों पर तो जाना ही था। जब उसने पीछे मुड़कर उसके शान्त और व्यथित चेहरे को देखा, तो वह एक मुस्कान के साथ बोला :

"हाँ, मैं वादा करता हूँ कि किसी समय आ जाऊँगा, लेकिन..." वाक्य पूरा किये बिना ही वह चला गया। आज जहाँ इतने छात्र गिरफ़्तार हुए थे, मार डाले या घायल कर दिये गये थे, उसे फ़ौरी मामलों की कार्रवाइयों में शिरकत करनी थी। यही कारण था कि वह ताओ-चिङ का आधे रास्ते तक ही साथ दे पाया, और इतनी हड़बड़ी में उसे छोड़कर चल देना पड़ा था।

एक बेदमजनूँ वृक्ष की छाँव में खड़ी होकर वह उसकी दूर होती जा रही आकृति को देखती रही। वह वहीं खड़ी रही, मानो स्तब्धता में जड़ हो गयी हो, जबकि वह कब का दृष्टि से ओझल हो चुका था।

——:o:——

अध्याय 16

जब युङ-त्से उस सुबह अपने सपनों से जागा तो ताओ-चिङ को अपनी बग़ल में नहीं पाया। जब उसने ध्यानपूर्वक आहट ले ली और आश्वस्त हो गया कि वह अँगीठी नहीं जला रही थी या सफ़ाई नहीं कर रही थी, तो वह बिस्तर से उछल पड़ा, दरवाज़े को थोड़ा-सा खोला, और अहाते में झाँका – वहाँ कोई न था। उसने इतने भड़ाम से दरवाज़ा बन्द किया कि खिड़की का कागज़ खड़खड़ा उठा; फिर उदास हो बिस्तर पर वापस आकर उसने अपनी आँखें मूँद लीं और बुदबुदा पड़ा :

"सबकुछ ख़त्म हो गया! मैं सोचता था कि मैं सुखी हूँ, लेकिन मैं शादी के कपड़ों को बस दूसरों ही के पहनने के लिए बनवा रहा था... उसका कुम्हलाया हुआ चेहरा कुण्ठा की एक भयानक मुखाभिव्यक्ति में ऐंठ गया। उठने या अपने को क्रियाशील बनाने की सम्पूर्ण इच्छा से विरक्त उसने उन सभी उपायों को याद किया

जिनको वह पिछली रात ताओ-चिङ को घर पर रुकने के लिए मनाने के लिए अपना चुका था। उसके सभी सहलाने वाले शब्द बेकार हो गये थे, क्योंकि वह ज़िद्दी लड़की खिसक ही गयी थी। बिना उससे एक शब्द कहे अठारह मार्च की स्मृति में किसी प्रदर्शन में भाग लेने के लिए उसे छोड़कर चली गयी थी। अहंकार को लगी ठेस ने उसे पूरी तरह चिड़चिड़ा और विदीर्ण कर दिया। वह बिस्तर में पड़े-पड़े सोच में पड़ गया कि कैसे वह ऐसी लड़की के साथ जीवन चला सकता है और उनके प्यार का क्या हश्र होने वाला है। तभी लू चिआ-चुआन के मुस्कुराते चेहरे की याद ने उसे क्रोधोन्मत्त कर दिया। बिस्तर के कपड़ों को फेंककर वह कूदकर बाहर आ गया और, हाथ-मुँह धोने या नाश्ते के लिए रुके बग़ैर लाल भवन के पीछे लाइब्रेरी की ओर पैर घसीटता हुआ चल दिया।

अब कुछ महीनों से लाइब्रेरी ही उसका शरणस्थल बन गयी थी। जब कभी भी वह ताओ-चिङ से कुण्ठित होता या उससे निपटने में अपनेआप को असहाय महसूस करता, जब कभी भी यह विक्षुब्धकारी समय आता और यह अहसास होता कि वह यौवन का उत्साह खो चुका है, तो वह द्वन्द्वरत आवेगों या शर्म से भर उठता, और वह दौड़कर लाइब्रेरी में पनाह लेता। इस शान्त और सन्तोषकारी परिवेश में बाहरी दुनिया के संघर्ष और तनाव बहिष्कृत थे। यहाँ लोग पढ़ने में तल्लीन रहते और एक-दूसरे को अकेला छोड़ देते। निरपवाद रूप से वह जब किसी ख़राब मूड में होता, तो वाचनालय में चला जाता और घण्टों अपनेआप को पुस्तकों में दफ़्न किये रहता; क्लासिकीय चीनी साहित्य की मोटी-मोटी पुस्तकों को पलटते रहना उसे प्रत्येक चीज़ को भूल जाने में मदद करता। यदि सौभाग्य से उसे ऐसी पुस्तकें या ऐसे अंश मिल जाते जिनका वह अपने शोधकार्य में इस्तेमाल कर सकता था, तो वह अपनी सारी व्यथाओं को भूल जाता और आश्वस्तकारी ढंग से प्रसन्न हो जाता।

हालाँकि स्मृति-समारोह की बैठक लाल भवन के पीछे ही हो रही थी, और प्रदर्शनकारी उत्तेजित होकर नारे लगा रहे थे या पुलिस और सैनिकों से उग्र संघर्ष कर रहे थे, फिर भी युङ-त्से कठोर-काठ की कुर्सी पर विचारमग्न हो लाइब्रेरी में बैठा रहा। वह पूरी तरह से अपने ही कामों में तल्लीन रहा, मानो बाहरी दुनिया से उसे कोई वास्ता ही न हो। शुरू-शुरू में उसे ध्यान केन्द्रित करने में बहुत गड़बड़ और खीझ महसूस हुई थी, लेकिन जब उसने नज़र उठायी और देखा कि लम्बी डेस्कों पर यहाँ-वहाँ साथी-छात्रों के ही परिचित चेहरे हैं, तो वह क्रमशः शान्त होता गया और अपने अध्ययन में जल्दी ही एकाग्रचित होने में समर्थ हो गया।

"जापानी साम्राज्यवाद मुर्दाबाद! क्वोमिन्ताङ ग़द्दार, जो देश को बेच रहे हैं, मुर्दाबाद!" रह-रहकर ये उत्तेजित नारे लाइब्रेरी में प्रवेश कर जाते, उसकी निस्तब्धता वैसे ही भंग कर देते, जैसे शरारती बच्चों द्वारा शान्त जलस्रोत में कंकड़ फेंक देने से उसकी निस्तब्धता भंग हो जाती है। ये सिहरनें एक झटके से गुज़र जाती और

अध्ययनकर्ता खिन्न होकर महज़ अपने सिर उठा देते, और अपने मन की शान्ति पुन: प्राप्त करने से पहले, एक क्षण के लिए खिड़की से बाहर बेचैनी से देख लेते।

युङ-त्से एक पुस्तक के पन्ने पलट रहा था, तभी उसे त्साओ मेङ-तेह की कुछ पंक्तियों का ख़याल हो आया :

जब तक जियो, पियो और गाओ,
क्योंकि जीवन थोड़ा है;
सुबह की ओस जैसे ही,
जल्दी झर जाना है!

अचानक किसी अनिर्वचनीय मोहभंग के अहसास से बोझिल होकर उसने किताब एक तरफ़ रख दी और उठकर खिड़की के पास चला गया। बाहर शाखाओं पर कोमल हरे-भरे धब्बे थे; आड़ू की पुष्पमंजरी गर्म धूप में खिली हुई थी, और हवा बसन्त की ताज़ी सुगन्ध से मीठी लग रही थी। जैसे ही उसने बाहर की ओर दृष्टि डाली, उसके विचार पुन: ताओ-चिङ की ओर मुड़ चले। इस ख़ूबसूरत बसन्त की सुबह वह क्या कर रही होगी?... जल्द ही वह एक बार फिर सपना देखने लगा। उसकी ताओ-चिङ स्वयं भीड़ में कर्कश चीख़ नहीं रही होगी, अपने आदर्शों के लिए उग्र संघर्ष में हिस्सा नहीं ले रही होगी। अपनी कल्पना में ही उसने देखा कि वह श्वेत त्वचा वाली छरहरी और परी सदृश्य युवती सफ़ेद परिधान में अपनी प्यारभरी बड़ी-बड़ी आँखों के साथ उसका इन्तज़ार करती हुई रेतीले तट पर है... अपनी मानसिक दुश्चिन्ता में उसे ऐसा मालूम पड़ गया था जैसे उसने उसे वर्षों से न देखा हो, मानो वह हमेशा-हमेशा के लिए उससे दूर चली गयी हो।

रायफ़लों से गोली छूटने की तीखी और स्पष्ट आवाज़ उसके विचारों के सेवार जैसे उलझे जालों को काटकर निकल पड़ी। फिर एक उग्र चिल्लाहट और क्षुब्धकारी कोलाहल ने डर के मारे उसके हृदय की धड़कन और तेज़ कर दी।

"क्या हुआ?" उसने एक दूसरे छात्र से पूछा जो स्वयं भी बेचैनी से दूर एकटक देख रहा था। "रायफ़ल-फ़ायर! ध्यान से सुनो। यह खेल के मैदान की तरफ़ से हो रही है..." यह जानकारी कि ताओ-चिङ खेल के मैदान में थी, उसे अब और नहीं खड़े रहने दे सकती थी। तमाम दूसरे छात्र जो अपनी किताबों में खोये हुए थे, अब अपनी सीटों में बैठे नहीं रह सके। यहाँ तक कि लाइब्रेरियन भी बाक़ी लोगों के साथ इधर-उधर देखने और इस हंगामे की वजह का पता करने के लिए बाहर निकल आया।

बन्दूक़ से गोली छूटने का एक और कर्कश विस्फोट सुनायी दिया।

"नहीं, ऐसे नहीं चलेगा। मैं जाऊँगा और उसका पता करूँगा।" बिना किसी और हिचकिचाहट के युङ-त्से दौड़ पड़ा।

विश्वविद्यालय की लाइब्रेरी खेल के मैदान से दूर नहीं थी। फाटक से बाहर होते ही वह कुछ क़दम पूरब की ओर दौड़ा और एक टीले पर चढ़ गया जहाँ से खेल का मैदान दिखायी दे सकता था। उसने पुलिस और छात्रों के बीच मुठभेड देखी – चीखें और क्रुद्ध गालियों, संगीनों की चमचमाहट, डण्डों की सड़ाक-सड़ाक आगे और पीछे की ओर फेंके गये पत्थर के टुकड़े, रक्त-कीच में पड़ी हुई लाशें – इस डरावने दृश्य और हंगामे ने उसे भयाक्रान्त कर दिया। अपनी बौखलाहट को किसी तरह ज़ब्त करके उसने भीड़ में से ताओ-चिङ को पहचान लेने के लिए बारीक़ी से ग़ौर किया। अगर वह सिर्फ़ बाहर आ सकती, तो वह उससे मिलने दौड़ पड़ता, लेकिन वह कहीं नहीं दिखायी दी। वह कहाँ होगी? क्या उसे मार दिया गया? या उससे भी बुरी दशा... वह जितना चिन्तित होता जाता, उसके पाँव उतनी ही अधिक दृढ़ता से ज़मीन में जड़ होते जाते।

उसकी अन्तःचेतना उसे धिक्कारने लगी, और वह शर्मिन्दगी महसूस करने लगा। "अगर इतने सारे लोग नहीं डर रहे हैं, अगर वह नहीं डर रही है, तो मैं ही क्यों डरूँ?" उसने स्वयं से पूछा। उसका मन करता कि वह भीड़ की ओर दौड़ जाये और ताओ-चिङ को वैसे ही बचा ले जैसेकि उसने उसे तूफ़ानी रात को पेइताइहो में समुद्र तट पर बचाया था, परन्तु उसकी स्वभावगत चालाकी ने उसे इस बात से सचेत कर दिया कि इस समय स्थिति बिलकुल भिन्न थी और उसे सावधानीपूर्वक ही जाना होगा। जब एक आवाज़ कड़की और एक गोली भन्नाती हुई उसके सिर के ऊपर से गुज़री तो उसने तुरन्त फ़ैसला कर लिया कि वह हड़बड़ाकर कुछ नहीं करेगा। वह दहशत से जड़ीभूत हो गया, उसका चेहरा फक हो गया और उसकी उँगलियाँ काँपने लगीं। इस डर के मारे कि वह ज़ख़्मी हो गया है और अब गिर पड़ेगा, उसने बौखलाकर आस-पास घूरा मानो यह देख रहा हो कि उसके पाँवों के नीचे की ज़मीन अभी भी दृढ़ बनी हुई है या नहीं। एक कँपकँपाती बाँह को अपने सिर पर उठाते हुए उसने पाया कि वह अभी बचा हुआ है – गोली ने उसकी चमड़ी को भी नहीं छुआ था। उसने अपनेआप को भला-चंगा पाकर राहत महसूस की। तभी उसे पीछे से एक दूसरी गोली के छूटने की सनसनाहट सुनायी दी, और ताओ-चिङ का सारा ख़याल छोड़कर और यह पता लगाने के लिए बिना रुके कि वह ज़ख़्मी हुई थी कि नहीं, वह सिर पर पाँव रखकर भागने लगा। उसका पहला आवेग यह था कि वह विश्वविद्यालय से जितनी दूर भाग सके, भाग जाये, लेकिन यह ख़याल आते ही कि चाहे कोई कितना भी तेज़ क्यों न भागे, गोली की मार के बाहर नहीं जा सकता, वह लाइब्रेरी परिसर में वापस खिसक आया और लड़खड़ाते हुए मुख्य वाचनालय में चला गया।

दोपहर होते-होते उसे बहुत भूख लग आयी। शोरगुल अब शान्त हो गया था और लाइब्रेरी वीरान हो चुकी थी, वह अपनी सीट से उठा, अपनी किताबों और

नोट्स को सहेजकर हटाया और दीन-हीन-सा टहलता हुआ बाहर निकल आया। खेल के मैदान की दिशा में देखने का साहस किये बग़ैर, वह सीधे अपने आवास की ओर चल दिया।

ताओ-चिङ अब भी वापस नहीं आयी थी, और उसे ही अँगीठी जलानी पड़ी। उसके बाद उसने अन्यमनस्कता से फ़र्श बुहारा और उदास कमरे की अस्तव्यस्तता को ठीक किया। जब तक नूडल पकते उसने मेज़ पोंछ डाली, जो धूल से भर गयी थी, और बुदबुदाया :

"बिना घरनी के घर नहीं। जल्दी वापस आ जाओ, प्रिये!"

———:o:———

अध्याय 17

पौ फटने की बेला में पेइहोयेन स्ट्रीट के क़तारबद्ध हरे-भरे भूरे वृक्ष घने कुहरे से ढँके हुए थे, जबकि वह पुराना शहर ख़ामोशी में सोया हुआ था। लेकिन लू चिआ-चुआन जिसने पिछली रात पीकिङ विश्वविद्यालय के तीसरे छात्रावास में बितायी थी, बिस्तर से पहले ही उठ चुका था। वह पहली मंज़िल पर सू निङ के कमरे में अपने दोस्त की लोहे की सँकरी चारपाई में उसके साथ ही कुछ घण्टे की नींद ले चुका था, और अब जाग चुका था, जबकि सू निङ अब भी गहरी नींद में सोया हुआ था। अपने उलझे हुए बालों में अपनी उँगलियाँ फिराते हुए उसने आहिस्ते से दरवाज़े को धकेलकर खोल दिया। ताज़ा हवा का एक झोंका अन्दर आया और पंजे के बल खड़े होकर वह कोई गहरी श्वास-क्रिया वाले व्यायाम में जुट गया। यद्यपि वह थका हुआ था और, उसकी आँखें नींद की कमी से ख़ून जैसी लाल थीं, फिर भी उसका चेहरा बसन्त की सुबह की भाँति जीवन्तता और उल्लास से भरा हुआ था। गलियारे में अकेले खड़े होकर वह पूरी तरह विभ्रान्त प्रतीत हो रहा था, लेकिन उसकी पैनी आँखें विश्वविद्यालय के कुहराच्छन्न परिसर की हर दिशा में छान-बीन कर रही थीं और दीवार के ऊपर भी निगाहें डाल रही थीं। श्वेत आतंक ने उसे लगातार सतर्क रहने की सीख दी थी, और वह दूनी सावधानी बरत रहा था, क्योंकि पिछले कुछ दिनों के दौरान, कुछ कम्युनिस्ट पार्टी संगठनों के अड्डों पर छापे मारे जा चुके थे और काफ़ी कॉमरेड गिरफ़्तार कर लिये गये थे। च्याङ काई-शेक ने मिलिटरी पुलिस की तीसरी रेजीमेण्ट और अपने वफ़ादार चाकर च्याङ सियाओ-सिएन को पेइपिङ भेज दिया था, और स्थानीय क्रान्तिकारी संस्थाओं को भारी नुक़सान उठाने पड़े थे। स्थिति नाज़ुक थी। हर क्रान्तिकारी को प्रत्येक क्षण अपनी सुरक्षा के प्रति सचेत रहना पड़ता था।

उसके ख़ामोश निरीक्षण में कोई गड़बड़ी नहीं दिखायी दी, लेकिन जैसे ही वह

पीछे के कमरे में मुड़ने को हुआ, उसने एक मोटरकार को तेज़ी से तीसरे छात्रावास की ओर आते और वहाँ पर रुकते देखा। एक ही पल में कई पश्चिमी सूट पहने सन्देहास्पद दिखने वाले व्यक्तियों के साथ-साथ कुछ सादे लिबास वाले मिलिटरी पुलिस के लोग मानो शून्य में से प्रकट हो गये। लू चिआ-चुआन को अब और देखने की आवश्यकता न थी। वह एक खम्भे के पीछे खिसक गया और झट सू निङ के कमरे में चला गया। अपने दोस्त को जगाने के लिए झकझोरते हुए उसने कहा :

"सू निङ! ये हरामी मुझको गिरफ्तार करने के लिए आ गये। चीज़ों को थोड़ा ठीक-ठाक कर लो, जल्दी करो! मैं यहाँ नहीं रुकूँगा।"

"तुम कहाँ जा सकते हो? सुरक्षित बाहर निकलने के लिए बहुत देर हो चुकी है।"

सू निङ की दुबली बाँहों ने उसका रास्ता रोक लिया।

"नहीं, मैं यहाँ नहीं ठहर सकता। वे अभी तुम पर सन्देह नहीं करते हैं – मुझे इस कमरे में नहीं पाया जाना चाहिए। अगर वे मुझे पकड़ लें, तो कृपया सू हुई को जितना जल्दी सम्भव हो सके ख़बर कर देना।" ऐसा कह कर, उसने सू निङ को पीछे धकेला और ग़ायब हो गया।

हॉस्टल में जल्दी ही खलबली मच गयी। पिस्तौलधारी मिलिटरी पुलिस का दल दृश्यपटल पर प्रकट हो गया। वू ता-काङ के कमरे में लू चिआ-चुआन को पाने में असफल होकर, जहाँकि वह वहाँ अक्सर रातें गुज़ारता था, उन्होंने अपनेआप को कई झुण्डों में बाँट लिया और इमारत की ख़ानातलाशी शुरू कर दी। उनमें से तीन जिनके पीछे-पीछे एक स्पेशल सर्विस का सादे लिबास वाला आदमी था, सू निङ के कमरे में दौड़ गये और उसे अपनी रज़ाई में लिपटा अब भी सोये हुए ही पाया।

"जागो, पाजी कहीं के! उठो!" एक खुरदुरे हाथ ने सू निङ का गला दबोचा।

सू निङ प्रकटतः अपने स्वप्नों से चिहुँकता हुआ, अपने बिस्तर के सामने खड़ी पुलिस को शून्य नज़रों से घूरकर देखने लगा।

"क्या लू नाम का कोई व्यक्ति तुम्हारे कमरे में है? वह इस विश्वविद्यालय का छात्र नहीं है।"

सू निङ इससे यह नतीजा निकालकर आश्वस्त और अति प्रसन्न हुआ कि लू चिआ-चुआन पकड़ा नहीं गया था। लेकिन उसका होशियार दोस्त कहाँ छिपा होगा? सवाल का बिना जवाब दिये, वह हकलाया, "यह क्या है? क्या तुम लोग समझते हो कि कोई मेरे कमरे में आकर छिप गया है? ठीक है, आगे बढ़ो और उसे ढूँढ़ लो। मैं तुम्हारी मदद करूँगा।" ऐसा कहते हुए वह बिस्तर से कूदकर बाहर आ गया और इधर-उधर मानो पूरी गम्भीरता से खोजने लगा।

पुलिस ने विधिवत छान-बीन की, उसके बिस्तर पर और उसके नीचे झाँका, तब आश्वस्त होकर कि कोई भी इस छोटे कमरे में नहीं छिपा है, वे भरभराकर बाहर

निकल आये, और अपने पीछे भड़ाम से दरवाज़ा बन्द कर दिया।

सीढ़ियों पर ऊपर और नीचे की ओर सबकुछ बेहद खलबली से भरा हुआ था। बूटों की धमक, कर्कश गालियाँ और फ़र्श पर चीज़ों के फेंके जाने की खड़खड़ाहट एक बेसुरी ध्वनि उत्पन्न करती हुई उच्च शिक्षा के इस प्रभावशाली स्थल की शान्ति को भंग और सभी के दिलों में दहशत पैदा कर रही थी। पहली मंज़िल के अवतरण-स्थल पर एक छोटा कमरा था जिस पर "चौकीदार" लिखा हुआ था। दरवाज़ा अधखुला था और वह स्थान निर्जन प्रतीत होता था। एक नौजवान पुलिसमैन ऊपर आया, लकड़ी के नामपट्ट को ध्यान से पढ़ा, ठोकर मारकर दरवाज़े को खोला और अन्दर घुस गया। इसकी खिड़की बन्द थी, और कमरा अँधेरा और दमघोंटू था। जैसे ही पुलिसमैन दरवाज़े को पूरा खोलने के लिए पलटा, उसने तख़्ते पर एक बूढ़े आदमी को देखा। वह अपना चेहरा दीवार की ओर करके पड़ा हुआ था। वह एक छोटी नाइट-कैप पहने, माथे पर एक छोटी गमछी बाँधे, एक भारी रज़ाई से ढँका हुआ कराह रहा था – ज़रूर वह किसी गम्भीर संक्रामक रोग से पीड़ित था। पुलिसमैन ने नाक-भौं सिकोड़ी और थूक दिया, फिर दरवाज़े पर एक दूसरा ज़ोरदार प्रहार करके, वह तेज़ी से बाहर चला गया।

छानबीन सुबह के छह बजे शुरू हुई थी और दस बजे ख़त्म हुई। यद्यपि हॉस्टल का ऊपर से नीचे तक चप्पा-चप्पा छान डाला गया था, फिर भी मिलिटरी पुलिस की तीसरी रेजिमेण्ट और क्वोमिन्ताङ के शहर मुख्यालय के ये "कम्युनिस्ट दमनकारी" विशेषज्ञ लू चिआ-चुआन को गिरफ़्तार करने में असफल ही रहे; जिसकी गिरफ़्तारी से उन्हें कई पुरस्कार या प्रशस्तियाँ मिली होतीं। वे गुस्से से विश्वविद्यालय छोड़कर चल गये, साथ में कुछ छात्रों को भी ले गये।

पहली मंज़िल पर चौकीदार का दरवाज़ा अब भी अधखुला था। चार घण्टों तक, जबकि पुलिस आवाज़ाही करती रही थी, लू चिआ-चुआन बूढ़े वाङ के बिस्तर पर चुपचाप पड़ा रहा था।

जब छात्रों की तिरस्कारपूर्ण कटूक्तियों और क्रोधभरी गालियों की आवाज़ें चौकीदार के कमरे तक पहुँची, तो लू चिआ-चुआन जान गया कि पुलिस और स्पेशल सर्विस के आदमी चले गये हैं। वह बिस्तर से कूदकर बाहर आ गया। अभी वह नाइट-कैप और तौलिया उतारने ही जा रहा था कि बूढ़ा वाङ दौड़कर अन्दर आ गया। एक नौजवान को अपने खाकी गाऊन और नाइट-कैप के विचित्र वेष में देखकर वह बूढ़ा चौकीदार हक्का-बक्का रह गया; लेकिन ज्योंही उसने लू चिआ-चुआन को पहचाना, जो प्राय: उसके परिसर में आया करता था, उसने स्थिति समझ ली। उसने लू को बाँहों में भर लिया और बोला : "कितने बाल-बाल बचे! वे लोग मिलिटरी पुलिस की तीसरी रेजिमेण्ट के थे। शायद तुम उनमें से एक हो जिसको वे खोज रहे थे।"

"शायद! अगर वे अधिक से अधिक आम नागरिकों को न पकड़ें तो मालामाल कैसे हो सकेंगे?" इसके साथ ही लू चिआ-चुआन ने खाकी गाऊन उतारा, रज़ाई को तह किया, फ़र्श बुहारा और खिड़की खोल दी। बूढ़ा वाङ अपने हाथ में एक देगची लिये घबराया हुआ देखता रहा, सोचता रहा, "कितनी तंग जगह है यह रहने के लिए। फिर भी यह नौजवान मुझ पर इतने दोस्ताना ढंग से मुस्कुरा सकता है। और शान्तिपूर्वक कमरे को ठीक-ठाक करने में लगा हुआ है।" बूढ़ा आदमी बेहद प्रभावित था। अपने लम्बे जीवन में उसने बहुत-कुछ देखा था और हर तरह के लोगों से मिला था, लेकिन लू चिआ-चुआन जैसे नौजवान कुछ ही थे। अपनी ड्यूटी भूलकर वह मचलकर आगे बढ़ आया और भुनभुनाया :

"छिः! ये कबाड़ी जो अपने को राष्ट्रीय सरकार और सु यात-सेन के अनुयायी कहते हैं, और भी बुरे हैं – अगर तुम मुझे मन की बात कहने दो तो ये लुटेरों से भी गये-गुज़रे हैं। मैंने एक या दो चीज़ें देखी हैं, मुझे तुमसे कहने में कोई हर्ज नहीं है। अगर कोई ईमानदार नौजवान देश को बचाने और जापान का प्रतिरोध करने के बारे में कोई बात कहता है, या लाल कवर वाली कोई किताब पढ़ता है, तो वे फुफकारने लगते हैं। मानो कोई उनके बाप-दादाओं की क़ब्र खोद रहा हो! तब वे उस पर कम्युनिस्ट लुटेरा, लाल क्रान्तिकारी या विश्वविद्यालय में मुसीबत पैदा करने वाले का लेबल लगा देते हैं। आदमी का बस एक बार सिर फिरा नहीं कि उसका काम तमाम हो जाता है। तमाम होनहार नौजवानों को एक के बाद एक करके धर लिये जाते हुए मैंने अपनी आँखों के सामने देखा है।" एक गहरा निःश्वास छोड़कर वह फिर बोला, "यह बहुत हो चुका! बताओ, बर्खुरदार लू, दुनिया का क्या हश्र होने वाला है?..."

लू चिआ-चुआन वहाँ बूढ़े की बड़बड़ाहट को दिलचस्पी से ध्यानपूर्वक सुनता हुआ तब तक खड़ा रहा जब तक उस चौकीदार ने अपनी आँखें फैलाकर अपना लहज़ा नहीं बदल दिया। "लेकिन तुम बहुत व्यस्त होगे, बर्खुरदार, इसलिए बातचीत में मैं तुम्हारा समय नहीं बरबाद करूँगा। मैं चाहता हूँ कि दुनिया में तुम्हारे ही जैसे आदमी रहें। छात्रों में मेरे बहुतेरे दोस्त हैं, तुम्हारे ही जैसे, लेकिन उनमें से बहुत थोड़े ही गिरफ़्तार हुए हैं... हाँ, मुझे इस तरह से नहीं बकबकाना चाहिए, मैं तुम्हें रोके हुए जो हूँ। अभी मत जाओ। पहले मुझे देख लेने दो कि रास्ता साफ़ हो गया है कि नहीं। अभी उन हरामज़ादों में से कुछ इधर-उधर घूमते-फिरते भी हो सकते हैं। बस एक क्षण ठहरो।"

उस बड़ी देगची को लिये ही, बूढ़ा वाङ कमरे से बाहर सरक गया। लू चिआ-चुआन बूढ़े के वापस लौट आने तक इन्तज़ार करते बैठा रहा। बूढ़े ने उसे बताया कि जासूस अभी भी फाटक के इर्द-गिर्द दुबके हुए हैं, इसलिए उसे शाम तक रुकना होगा। सात बजे वह एक छात्र के कमरे में एक चुस्त पश्चिमी सूट में सजा

हुआ था, फिर, शाम के धुँधलके की चहल-पहल का फ़ायदा उठाते हुए, वह तीसरे हॉस्टल के फाटक से सीटी मारता इठलाता बाहर चला गया। वह आसानी से एक छैल-छबीला नौजवान समझा जा सकता था।

लू चिआ-चुआन होपेई प्रान्त के लोतिङ स्थान में पैदा हुआ था, जहाँ उसके पिता एक गाँव के स्कूल में अध्यापक थे। ली ता-चाओ* की लोकप्रियता की वजह से लू चिआ-चुआन, जब अभी लड़का ही था, तभी क्रान्ति के सम्पर्क में आ गया। बाद में जब वह पीकिङ में एक हाईस्कूल में पढ़ रहा था, तो अक्सर ली ता-चाओ से मिलने जाया करता था, जिसके धैर्यपूर्ण मार्गदर्शन और प्रभाव ने उसकी चेतना को पैना कर दिया था और उसे एक कट्टर क्रान्तिकारी बना दिया था। उसने क्रान्ति के लिए अपने हाईस्कूल में काम किया, और जैसे ही पीकिङ विश्वविद्यालय में दाख़िल हुआ, वह वहाँ कम्युनिस्ट पार्टी-संगठन का एक ज़िम्मेदार सदस्य हो गया। नानकिङ में प्रदर्शन से अपनी वापसी के बाद दुश्मन उस पर जासूसी करने लगा था और उसको गिरफ़्तार करने की कोशिश की जा रही थी, इसीलिए उसे शहर के पूर्वी भाग में हाईस्कूलों और कॉलेजों में क्रान्तिकारी आन्दोलन का नेतृत्व करने के लिए भेज दिया गया था।

1933 की गरमी में पेइचिङ में पार्टी-संगठन को दुश्मन के हाथों भयानक नुक़सान उठाने पड़े थे। वे पार्टी सदस्य जो श्वेत आतंक से किसी तरह बच गये थे, लगातार गिरफ़्तार हो जाने के ख़तरे में थे। नतीजतन लू चिआ-चुआन का कोई निश्चित आवास नहीं था। वह आधी रात चाओ-याङ विश्वविद्यालय में बिताता और बाक़ी कैथोलिक विश्वविद्यालय में। यद्यपि पुलिस के छापे बहुत कुशलतापूर्वक नियोजित किये जाते थे, फिर भी उसकी पटुता और विपरीत स्थितियों में रास्ता निकाल लेने का गुण, तथा सच्चे कम्युनिस्ट की निष्ठा और साहस उसे बार-बार मौत के जबड़ों से उबार लेते थे।

शाम का धुँधलका हो चुका था, जब उसने तीसरे हॉस्टल को छोड़ा। पुराने शहर की गलियाँ चहल-पहल से भरी हुई थीं। भीड़ से होकर अपनी राह चुनते हुए, वह उस स्थान की ओर चल दिया जहाँ शहर की ज़िला कमेटी की एक पार्टी मीटिंग रखी जाने वाली थी। चलते-चलते वह कभी-कभार कनखी से देख लेता और यह जानकर कि कोई उसका पीछा तो नहीं कर रहा है, अपने क़दम तेज़ कर देता। जब वह एक नानबाई की दूकान से होकर गुज़रा तो भूख की टीस ने उसे याद दिला दी कि उस दिन की पूरी गहमागहमी में उसे कुछ भी खाने को नहीं मिला था। वह

---

* ली ता-चाओ (1888-1927) चीन में मार्क्सवाद लेनिनवाद का प्रचार-प्रसार करने वाले सबसे पुराने क्रान्तिकारियों में से एक थे और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के एक संस्थापक थे। उन्हें अप्रैल 1927 में उत्तरी युद्ध सरदार त्साओ-लिन द्वारा फाँसी दे दी गयी थी।

मुस्कुराया और अपने पॉकेट में टटोलते हुए पाया कि उसके पास मात्र बीस सेण्ट थे। इस रक़म से उसे दो दिन तक काम चलाना था, इसलिए उसने अगली दूकान से सिर्फ़ तीन छोटी-छोटी पकी हुई पावरोटियाँ ख़रीदीं। उसने उन्हें जेब में रख लिया, क्योंकि यद्यपि उसका पेट भूख से कुड़कुड़ा रहा था, लेकिन अभी उसके लिए इन्तज़ार करना ज़रूरी था। मुख्य सड़क पर खाना और वह भी अपनी उधार की गयी तड़क-भड़क में एकदम शिष्टाचार से परे की बात होती।

तुरन्त वह तिएन आन मेन के भीतर एक छोटी गली में मुड़ गया और एक फाटक पर रुका, जिसका रंग उतर गया था। जब उसने फाटक के कोने से टिकी हुई एक टूटी ईंट देखी, तो उसके चेहरे पर एक फीकी मुस्कान दौड़ गयी। उसने पकी रोटियाँ निकाल लीं और उन्हें जल्दी-जल्दी चट कर गया।

भीतरी अहाते के उत्तर रुख वाले कमरे में पहुँचकर, उसने अपना हैट लहराया और अपने सिर को उचकाकर चिल्लाया :

"ऐ! माहजोङ खेलने के लिए चार होने चाहिए। क्या मेरी वजह से तुम्हें इन्तज़ार करना पड़ा?" उस क्षण वह फिर एक चहकने वाला नौजवान बन गया था।

सबसे पहले तीस से चालीस वर्ष के बीच के वय वाली एक दुबली-पतली, नाजुक दिखने वाली महिला उठी और उसने उसका हाथ थाम लिया। उसकी ओर साभिप्राय देखते हुए वह फुसफुसाकर बोली :

"कॉमरेड, तुमने देर कर दी! हम सभी ने यह सोच लिया था कि तुम्हारे साथ जरुर कोई घटना घट गयी है।"

"नहीं, बड़ी दीदी लिऊ – यह कैसे हो सकता था?" उसने माहजोङ के मोहरों के साथ उस चौकोर मेज़ को देखा जिसके पास एक महिला और दो पुरुष बैठे हुए थे। उन तीनों ने सिर झुकाकर उसका अभिवादन किया और मुस्कुराये। महिला जो जवान थी और चुस्त कपड़े पहने हुए थी, उठ खड़ी हुई और उसे उसकी जगह पर बैठने का संकेत किया, और दोबारा अभिवादन करके मुस्कुराती हुई वहाँ से चली गयी।

कुछ क्षणों तक माहजोङ के मोहरे खड़खड़ाते रहे। जब खड़खड़ाहट बन्द हो गयी तो लू चिआ-चुआन ने अपने कॉमरेडों पर नज़र डाली और धीमे स्वर में बोला :

"हरेक चीज़ वैसी ही है जैसी होनी चाहिए। क्या अब हम बातचीत शुरू करें?"

ज़िला कमेटी का पार्टी-सेक्रेटरी क़रीब पच्चीस वर्ष का नौजवान था। उसका नाम ताई यू था। यह वही था जो अठारह मार्च वाली घटना की स्मृति समारोह वाली मीटिंग में सबसे पहले बोला था। उसके चश्मे के भीतर उसकी आँखें गोल्डफ़िश की आँखों की भाँति उभरी हुई थीं। उसने औपचारिक घोषणा की :

"अब मीटिंग शुरू हो रही है।"

पहले उन्होंने इस पर विचार-विमर्श किया कि पहली मई को अन्तरराष्ट्रीय

मज़दूर दिवस कैसे मनाया जाये। लेकिन किसी अन्तिम निर्णय पर पहुँचने से पहले ही ताई यू ने अपनी नज़रें लू चिआ-चुआन पर गड़ा दीं और कठोरता से कहा :

"कॉमरेड फेङ शेन (लू चिआ-चुआन का पार्टी नाम) की ग़लतियाँ बढ़कर गम्भीर हो चुकी हैं। मैं प्रस्ताव करता हूँ कि अब इस सवाल पर बहस की जाये। हम सभी जानते हैं कि क्वोमिन्ताङ का प्रतिक्रियावादी शासन पिछले किसी भी समय से अधिक गम्भीर संकट का सामना कर रहा है, और कि क्रान्ति का उच्च ज्वार निकट आता जा रहा है। हमें बड़े पैमाने की कार्रवाई की तैयारी करनी होगी, मसलन जनगण को हथियारबन्द करना, छात्रों, फ़ौजी टुकड़ियों के और कामगारों के बीच हड़तालें आयोजित करना, और ऐसी जीतें हासिल करना जो हमारी पार्टी ने, जैसाकि सब को मालूम है, हासिल की हैं। हमें अपनी सदस्यता भी बढ़ानी होगी। फिर भी इन चीज़ों को करने के बजाय हम कोरे सिद्धान्तों और विचारधारात्मक सवालों पर निम्न-पूँजीवादी बुद्धिजीवियों के साथ बहस कर रहे हैं। हमें जानना चाहिए कि ये मध्यमार्गी तत्त्व सर्वाधिक अविश्वसनीय और ढुलमुल होते हैं। वे पूँजीपति वर्ग की आरक्षित सेना हैं।" उसने अपना चश्मा उतार लिया और माहजोङ के मोहरों को आगे बढ़ाने से पहले खड़खड़ाहट के साथ फेंटा। "हमें चीज़ों को ऐसे चलते रहने की अनुमति नहीं देनी चाहिए। फेङ शेन का दक्षिणपन्थी अवसरवाद असहनीय अनुपात में बढ़ चुका है। इसके अलावा, मेरे कानों तक यह बात पहुँची है कि वह एक प्रतिक्रियावादी विश्वविद्यालयी छात्र की पत्नी तक साम्यवाद का प्रचार कर रहा है। उसका नाम लिन ताओ-चिङ है, क्या यह सच नहीं है? मैं यहाँ कॉमरेड फेङ शेन के कार्य की कड़ी निन्दा करता हूँ..."

बड़ी दीदी लिऊ अपना सिर झुकाये और अपनी आँखें बचाती हुई, अपने हाथों में माहजोङ के मोहरों को रगड़ती रहीं। दूसरा गोल-मटोल और पीले रंग वाला वू फाङ भी ख़ामोश था। लू चिआ-चुआन ने ताई यू के चेहरे पर उसी स्थिर भाव से देखा जिस तरह से वह सावधान होकर सुनता रहा था। जब ताई यू बोल चुका, तो लू का चेहरा गम्भीर और सख़्त हो गया।

"कॉमरेड ताई यू," उसने धीरे से कहा, "तुम्हारे विचार एकतरफ़ा और मनोगत हैं। मैं आशा करता हूँ कि तुम अपनी आँखें खोलोगे और हमारे देश के हालात पर शान्ति से नज़र डालोगे, और उनको उनकी सही रोशनी में देखोगे। वर्तमान में सम्पूर्ण राष्ट्र जापान के प्रतिरोध की माँग कर रहा है, इसलिए पार्टी का फ़र्ज़ बनता है कि वह जापान के प्रतिरोध का नेतृत्व करे। कोई भी नारा या माँग जो ज़रूरत से ज़्यादा अग्रवर्ती हो, हमें जनगण से अलग-थलग कर देगा।" उसकी भावभंगिमा ने उसकी पीड़ा को प्रतिबिम्बित कर दिया, वह पीला पड़ गया और उसका स्वर बहुत गम्भीर हो गया। "तुम्हें समझना होगा कि लोग सबसे अधिक क्या चाहते हैं और सबसे अधिक किस बात से सरोकार रखते हैं... जहाँ तक बुद्धिजीवियों के बीच प्रचार कार्य

करने का सवाल है, तो इस काम को तो पार्टी ने ही मुझे सौंपा है। 'चीनी समाज में वर्गों का विश्लेषण' वाले अपने निबन्ध में कॉमरेड माओ त्से-तुङ बताते हैं कि हमें दोस्तों और दुश्मनों के बीच फ़र्क़ अवश्य करना होगा। वह कहते हैं कि निम्न-पूँजीपति वर्ग हमारा निकटतम दोस्त है और कि मध्यम वर्ग के वाम पक्ष को भी अपने समर्थन में लिया जा सकता है... और मत भूलो, कॉमरेड ताई यू, कि न तो तुम और न ही मैं मज़दूर वर्ग में पैदा हुए हैं।"

जहाँ तक लिन ताओ-चिङ का सवाल था, उसने उसके बचाव में कुछ न बोला, यह सोचते हुए कि यह पूरा मामला अप्रासंगिक था।

"क्या?" ताई यू का पीला चेहरा गुस्सा से तमतमा उठा। "यह अवसरवाद है। तुम कहते हो कि मध्यम वर्ग भी हमारा दोस्त हो सकता है? कितना भयानक विचार है।" उसने दम मारने के लिए फू-फू किया, अपनी चढ़ी हुई आँखों को नचाया, फिर बुद्धिजीवियों को शिक्षित करने के लू चिआ-चुआन के धैर्यपूर्ण और सचेत प्रयासों के विरोध में अपनी ऊँची लगने वाली वक्तृता झाड़नी शुरू कर दी। वह लगातार एकरस आवाज़ में बोलता रहा, मानो वह भूल गया था कि वे पाशविक श्वेत आतंक के तहत जी रहे थे और कि यह अनिवार्य था कि समय की बचत की जाये और समस्याओं को हल किया जाये। जब लू चिआ-चुआन और न बरदाश्त कर सका, तो उसने माहजोङ के मोहरों को एक तरफ़ धकेल दिया और यकायक अपने पैरों पर उठ खड़ा हो गया।

"कॉमरेड ताई यू, एक क्षण।" वह भरे स्वर में चिल्लाया। "क्या तुम मेरे विचार को ग़ौर से सुनना गवारा करोगे?" अपनी बाँहों को लहराकर वह पुनः अपनी जगह बैठ गया। "मैं कुछ मामलों में तुम से सहमत हूँ।" वह नर्मी से बोलने की भरसक कोशिश कर रहा था। "यह सही है कि हमें ऊपरी पार्टी संगठनों द्वारा सौंपे गये कार्यभार को पूरा करने के लिए दृढ़तापूर्वक कार्य करना चाहिए। मसलन, अधिक से अधिक सदस्यों को भरती करना चाहिए। लेकिन अब जैसी परिस्थितियाँ हैं, हम कितने नये पार्टी सदस्य भरती कर सकते हैं? जब से मिलिटरी पुलिस की तीसरी रेजीमेण्ट आयी है, तभी से श्वेत आतंक अधिकाधिक उग्र होता गया है। और च्याङ काई-शेक ने जर्मन और इतालवी फ़ासिस्टों की मदद से इन सारे स्पेशल सर्विस वाले आदमियों को भेदिया कुत्तों की तरह हम लोगों का शिकार कर लेने के लिए प्रशिक्षित कर दिया है। लोगों के बीच पूरी तरह खलबली मची हुई है। पार्टी के अधिकतर नज़दीकी संगठन भंग हो चुके हैं; बाक़ी इतने असंगठित हैं कि उनका विस्तार करना भी उतना ही कठिन है। ऐसी हालत में मैं समझता हूँ कि पार्टी को फ़िलहाल एक अपेक्षाकृत सुरक्षित और सुस्थिर नीति अख़्तियार करनी चाहिए। अनावश्यक रूप से अपने को पूरी तरह खुल्लमखुल्ला करके अलगाव में डाल देने के बजाय, इसे अपनी ताक़त बचाये रखने की कोशिश करनी चाहिए। लेकिन

अठारह मार्च के क़त्लेआम में ही हमने ढेर सारे कॉमरेड खो दिये।"

"लेकिन क्या?" ताई ने उसे बीच ही में टोक दिया। "कॉमरेड फेङ शेन, वर्तमान तनाव सिर्फ़ अस्थायी है जबकि विजय की सम्भावना सभी क्रान्तिकारियों को आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करती है... क्या हमें अपने जीवन गँवा देने के डर से अपने क़दम रोक देने चाहिए?"

"एक क्षण, कॉमरेड ताई यू! मुझे कुछ शब्द कहने की अनुमति दो!" बड़ी दीदी लिऊ अब अपने को और ज़ब्त न कर सकी। उसका कृश, झुर्रीदार चेहरा तमतमा उठा था और उसकी साँस फूल रही थी। "बस कठमुल्ला सूत्र मत उद्धृत करो, कॉमरेड। मैं समझती हूँ कि फेंग शेन के दृष्टिकोण विचारणीय हैं।" माहजोङ के मोहरों को ताई यू और वू फाङ की ओर, जो चुपचाप बैठा हुआ था, ठेलते हुए उसने दृढ़तापूर्वक कहा, "मुख्य रूप से, मैं फेङ शेन से सहमत हूँ। कॉमरेड ताई यू बिना वास्तविक स्थिति समझे सिर्फ़ जड़सूत्रवादी वक्तव्य दे रहे हैं। लम्बे समय से मैं उतनी ही परेशान रही हूँ जितना फेङ शेन। लम्बे समय से हम एक ही तरह की भवनाओं के भागीदार रहे हैं। यद्यपि हमारे पार्टी नेतृत्व ने उतावले, साहसवादी ली ली-सान की लाइन* पर क़ाबू पा लिया है, फिर भी क्या यह वर्तमान लाइन अब भी बहुत प्रभावी नहीं है? जापान का प्रतिरोध करना और देश बचाना ही तो वह काम है जिसे लोग अपने समूचे हृदय से चाहते हैं। लेकिन हम जो नारे देते हैं, वे प्राय: इतने आगे के होते हैं कि कुछ थोड़े-से उत्साही व्यक्तियों को छोड़कर जगगण उन्हें अस्वीकार ही कर देते हैं। इस कारण मेरा विश्वास है..." उसकी आवाज़ धीमी होती गयी जब तक कि सुनायी देने लायक़ नहीं हो गयी, और तब उसने अपनी बाक़ी दलीलें बिना बोले ही छोड़ दीं।

चारों ख़ामोश पड़ गये। यहाँ तक कि चिड़चिड़ा ताई यू भी अपना मुँह बन्द किये रहा। कुछ भी नहीं सुना जा सकता था, सिवाय माहजोङ के मोहरों की रह-रहकर हो रही खड़खड़ाहट के। ख़ामोशी तोड़ने के लिए बड़ी दीदी लिऊ ने नज़र घुमायी और मृदुता से बोली, "ताई यू, मैं तुमको उस लड़की के बारे में बता सकती हूँ जिसके बारे में तुम फेङ शेन से कोई सरोकार न रखने को कहते हो। मैं

---

* "वामपन्थी" अवसरवादी लाइन का सन्दर्भ जिसका थोड़े समय के लिये पार्टी ने 1930 में अनुसरण किया था और जिसका प्रतिनिधित्व ली ली-सान ने किया था, जो उस समय पार्टी में सबसे अधिक प्रभावशाली नेता था। इसने जनगण की ताक़त निर्मित करने की आवश्यकता से इन्कार किया था और क्रान्तिकारी विकास की असमानता को नामंज़ूर किया था। इसने माओ त्से-तुङ के इस विचार का विरोध किया था कि एक लम्बे समय तक पार्टी को अपना ध्यान मुख्य रूप से ग्रामीण आधार क्षेत्रों पर केन्द्रित करना चाहिए, इन ग्रामीण क्षेत्रों को शहरों की घेराबन्दी करने में इस्तेमाल करना चाहिए और इस तरह देशव्यापी विजय हासिल करनी चाहिए, और इसने बड़े शहरों में तुरन्त संघर्ष खड़े करने की वकालत की थी।

उसे जानती हूँ। वह प्रगतिशील है, जिसने पुराने समाज के विरुद्ध बग़ावत की है और कम्युनिस्ट पार्टी की मदद चाह रही है। हमारा यह कर्त्तव्य है कि हम उसकी मदद करें, उसे शिक्षित करें। मैं समझती हूँ कि फेङ शेन सही है।"

"यह सब तो इस बात पर निर्भर करता है," वू फाङ जो अब तक ख़ामोश था, अन्ततः बोल पड़ा। "अगर उसने एक प्रतिक्रियावादी छात्र से शादी की है तो उसके नज़रिये पर स्वाभाविक रूप से सवाल उठेगा। हमारी पार्टी की वर्ग-लाइन बहुत महत्त्वपूर्ण है। इसलिए मैं भी फेङ शेन को तब ख़ासतौर से चौकस रहने की चेतावनी देता हूँ जब वह निम्न-पूँजीवादी बुद्धिजीवियों से बातचीत चला रहा हो। वामपन्थ की ओर भटकाव दक्षिण की ओर भटकाव से बेहतर है।"

"हाँ, दक्षिणपन्थ के बजाय वामपन्थ की ओर रुख कर लेना बेहतर होता है।" ताई यू ने झट हामी भर दी।

माहजोङ के मोहरों को उँगली से फिराते हुए लू चिआ-चुआन ने शान्तिपूर्वक अपना सिर हिलाया। "दक्षिणपन्थ के बजाय वामपन्थ? नहीं, कहने का यह कोई तरीक़ा नहीं है। मार्क्सवाद-लेनिनवाद को चीन की वास्तविक दशाओं के साथ एकाकार होना चाहिए। सिर्फ़ इसी ढंग से पार्टी का काम विकसित हो सकता है। बहरहाल, मैं तुम्हारी चेतावनी स्वीकार करता हूँ। मैं और अधिक सतर्क रहूँगा। अगर अब और कोई महत्त्वपूर्ण बातचीत का विषय न हो, तो हमें अपनी उस चर्चा पर आना चाहिए कि मई दिवस पर क्या किया जाये।"

"हाँ, मई दिवस मनाने पर बातचीत करें।" वू फाङ खिल उठा। "जहाँ तक यह सवाल कि क्या 'वामपन्थी' अवसरवाद है और क्या दक्षिणपन्थी अवसरवाद, मैं समझता हूँ कि यहाँ हमारे लिए किसी निष्कर्ष पर पहुँचना कठिन है। आख़िरकार पार्टी सदस्यों के रूप में पार्टी नेतृत्व द्वारा लिये गये निर्णयों को लागू करने की भरसक कोशिश तो करनी ही चाहिए।"

फ़ैशनेबल ढंग की पोशाक पहने उस लड़की ने दोबारा प्रवेश किया, और उन चारों पर नज़र डालती हुई बुदबुदायी, "सबकुछ ठीक-ठाक है। जारी रखो!" वह पुनः चली गयी।

ताई यू पहले की अपेक्षा अब काफ़ी संयत लग रहा था, लेकिन उसने यह कहकर अपनेआप को सन्तुष्ट किया, "ठीक है। हम लोग इस सवाल पर किसी दूसरे समय विचार कर लेंगे।"

तब फिर उन्होंने मई दिवस मनाने पर विचार-विमर्श शुरू किया। ताई यू का विचार था कि कम्युनिस्ट पार्टी, कम्युनिस्ट युवा लीग, समाजवादी लीग और वामपन्थी लेखक संघ जैसे प्रगतिशील संगठन अपने सभी सदस्यों को एक विशाल परेड के लिए तैयार करें। कुछ सोच-विचार के बाद लू चिआ-चुआन ने ताई यू पर नज़र डाली और कहा :

"कई रोज़ पहले, कॉमरेड ली ता-चाओ की शवयात्रा* के अवसर पर हमारे कई लोग गिरफ्तार कर लिये गये। हम अब एक नाजुक स्थिति में हैं। मुझे विश्वास है कि मई दिवस पर दुश्मन पहले से अधिक सावधानियाँ बरतेगा और पहले से कहीं अधिक सख़्त तरीक़े अपनायेगा। मैं आशा करता हूँ कि तुम इस मसले पर विस्तारपूर्वक शहर कमेटी के साथ बात करोगे। मुझे डर है कि..."

"यह एकदम कायरता है।" तमतमाहट में अपना चश्मा उतारते हुए ताई यू ने टोक दिया। "फेङ शेन, क्या तुम कामों में तोड़-फोड़ की कोशिश कर रहे हो? – यह एक पवित्र कार्य है जिसे पार्टी ने हमारे ऊपर सौंपा है। इस लक्ष्य से सम्बन्धित कोई सन्देह निर्लज्ज ढुलमुलयक़ीनी है!" माहजोङ के मोहरों को परे फेंक देने से पहले उसने एक रूमाल से अपने मुँह के कोनों को थपथपाया। जब बाक़ी ने उसके उदाहरण का अनुसरण किया, तो उनकी गर्मागर्म बहस की जगह एक तीव्र खड़खड़ाहट ने ले ली। जब यह शोर ख़त्म हो गया, तो लू चिआ-चुआन के पीले चेहरे ने फिर से अपनी प्राकृतिक रंगत पा ली। ताई यू की उभरी हुई आँखों में देखते हुए उसने अपने सामान्य, नपे-तुले लहजे में कहा :

"कॉमरेड ताई यू, तुम्हें मेरे बारे में चिन्ता करने की कोई ज़रूरत नहीं। पार्टी जो भी कार्यभार मुझ पर सौंपेगी मैं उसे बिना किसी हुज्जत के करूँगा। लेकिन तुम मुझे अपने विचार रखने की अनुमति तो दो। हो सकता हो कि वे ग़लत हों। हो सकता है, मेरा अनुमान पूरी तरह से ग़लत हो, लेकिन कम से कम तुम्हारा दिमाग़ इतना साफ़ तो होना ही चाहिए कि देखो कि मैं सचमुच एक स्वार्थी कायर हूँ या नहीं।" और आगे बोलने में असमर्थ उसने अपना सिर झुका लिया।

"हाँ तो, आओ हम लोग शहर कमेटी के निर्देशों पर अमल करें," वू फाङ बाला। "आओ हम लोग जितने अधिक हो सके उतने लोगों को जागृत करने की जी-जान से कोशिश करें, बस यही तय रहा।"

"लोगों को जागृत करना तो बहुत अच्छा है," बड़ी दीदी लिऊ ने चिन्ता के भाव से तुरन्त कहा। "लेकिन एक बार उनके जागृत हो जाने पर उन्हें जेल चले जाने देना उतना अच्छा नहीं है।"

ख़ामोशी छा गयी, जिसके दौरान उनकी दहकती आँखों में एक मौन बहस तब तक जारी रही जब तक कि ताई यू ने इसे यह कहकर काफ़ी कुछ शान्त नहीं कर दिया :

"ठीक है, अगर फेङ शेन और बाक़ी तुम लोग बड़े पैमाने पर प्रदर्शन पर एतराज़ नहीं करते हो, तो हम जनगण को मई दिवस के अवसर पर हैवेन के ब्रिज

---

* इससे छः वर्ष पहले ली ता-चाओ की अन्त्येष्टि के अवसर पर पेइपिङ में पार्टी के भूमिगत संगठनों द्वारा अप्रैल 1933 में एक शवयात्रा निकाली गयी थी।

पर एकत्र होने के लिए जगायेंगे। तुम्हें बाद में ब्यौरा सूचित कर दिया जायेगा।" और इस तरह मीटिंग बरख़ास्त हो गयी।

जैसे ही वे जाने के लिए उठे, वह चुस्त लिबास वाली लड़की फाटक तक गयी और यह देखकर कि आस-पास कोई सन्देहास्पद व्यक्ति नहीं है, मुस्कुराती हुई वापस आयी, और उनसे बोली कि रास्ता साफ़ है। ताई यू और वू फाङ ने पहले कूच किया। उनके चले जाने के बाद लू चिआ-चुआन और बड़ी दीदी लिऊ नवचन्द्र की मद्धम रोशनी में धीरे-धीरे टहलते हुए फाटक तक गये। प्रवेशद्वार पर, बड़ी दीदी लिऊ रुकी और लू चिआ-चुआन का हाथ पकड़ लिया।

"ढाढ़स रखो, नौजवान फेङ!" उसका स्वर धीमा और नपा तुला था। "पार्टी तुमको समझती है। हम सभी तुमको समझते हैं... मई दिवस पर तुम्हें अधिक चौकन्ना रहना होगा। और याद रखो, तुम अपनी सामर्थ्यभर अधिक से अधिक लोगों को जागृत करने की कोशिश करो।"

एक क्षण के लिए लू चिआ-चुआन अपना सिर नीचा किये एक शब्द न बोला। जब उसने अपना सिर उसकी ओर देखने के लिए उठाया, तो उसकी आँखें नम थीं।

"शुक्रिया, प्रिय कॉमरेड!" उसने उसकी पतली उँगलियों को कसकर दबा दिया। "तुमको मेरे बारे में फ़िक्र करने की ज़रूरत नहीं, बड़ी दीदी। मेरे ख़याल से, एक कम्युनिस्ट का अपनेआप को पूरी तरह से पार्टी के प्रति निष्ठापूर्वक लगा देने का निश्चय ही हानि या लाभ, यश या अपयश की सभी व्यक्तिगत धारणाओं को निर्मूल कर देता है। अभी-अभी जो कुछ हुआ है उससे मैं कोई अन्तर नहीं पड़ने दूँगा। अच्छा, अलविदा!"

ढलवाँ फाटक से तिरछे टिककर बड़ी दीदी लिऊ उसको दृढ़, सुस्थिर क़दमों से जाते हुए देखती रही, और उसकी आकृति गली के अँधेरे कोने पर घूमकर ग़ायब नहीं हुई कि उसने आहिस्ते से फाटक बन्द कर दिया। वह इतने धीमे-से बुदबुदायी कि और कोई नहीं बल्कि सिर्फ़ वही सुन सकी :

"नौजवान फेङ एक बढ़िया कॉमरेड है। लेकिन ताई यू क्यों नहीं अपनी आँखें खोलता और हालात को ज़रा ग़ौर से क्यों नहीं देखता?"

——:o:——

अध्याय 18

एक सुबह रोलों को भाप पर गर्म होने के लिए रखकर ताओ-चिङ खिड़की के पास 'द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद का संक्षिप्त अध्ययन' पुस्तक पढ़ने के लिए बैठ गयी, तभी पन्नों के बीच छिपी हुई लाल कपड़े की एक पट्टी मिली, और वह पढ़ना जारी न रख सकी। किताब को एक तरफ़ रखकर वह चमकीले लाल कपड़े की इस पट्टी

पर चिन्तन-मनन करने लगी। मानो यह कोई ख़ज़ाना हो; एक मुस्कुराहट उसके चेहरे पर खिल गयी और वह स्वयं से बुदबुदायी :

"आह, मई दिवस! क्या दिन था वह!"

मई दिवस, उस महान दिवस पर लू चिआ-चुआन ने उसे एक और प्रदर्शन में शामिल होने के लिए कहा था। वह और उसी समूह के कई और भी लोग हैवेन ब्रिज के निकट एक गली में छिपे हुए थे। लू चिआ-चुआन ने उनके पास पर्चियों का एक गट्ठर देने के लिए आते हुए पूछा था कि क्या वे छोटी झण्डियाँ और चूने का पाउडर लाये हैं, और जैसे ही उसे हाँ में उत्तर मिला, वह उन्हें उस गली में कुछ समय के लिए मटरगश्ती करते रहने के लिए छोड़कर अपनी राह चलता बना था। अन्त में एक सम्पर्क अधिकारी आदेश लेकर आया था कि वे तुरन्त हैवेन ब्रिज वाली सड़क पर क़तार में खड़े हो जायें। वे दौड़ पड़े थे और उनके साथ-साथ दूसरी गलियों से उमड़कर आते हुए दूसरे समूह भी शामिल हो गये थे, और जल्दी ही उन्होंने एक प्रभावशाली दल बना लिया था। ताओ-चिङ लू चिआ-चुआन के निकट हो जाना चाहती थी, क्योंकि वह उसके साथ सुरक्षित और शान्त महसूस करती थी, लेकिन उसे तमाम चीज़ों को निपटाने में शिरकत करनी थी, और अगले क्षण उसने देखा कि वह पुनः उस जत्थे का प्रधान था। वह सटी हुई क़तारों के साथ-साथ मार्च कर रही थी, तभी अचानक एक विशाल लाल बैनर आकाश में फहरा दिया गया, मानो एक चमकीला लाल सूरज कुहरे और धुन्ध को चीरकर उग आया था। अपने सिर को पीछे झटक कर, उसने बैनर पर काली स्याही में लिखावट को देखा था :

दुनिया के मज़दूरो, एक हो!

उसका हृदय ज़ोर-ज़ोर से और तेज़ धड़कने लगा। उत्साह में बोले गये नारे, हवा में उछाली गयी पर्चियाँ, लहराती मुट्ठियाँ और हवा में फड़फड़ाती असंख्य झण्डियाँ ऐसी लगती थीं, मानो वे उनके पाँव तले की धरती को कँपकँपा दे रही हों... यह केवल कुछ ही क्षणों तक चला था। पुलिस की सीटियों की कर्कश गूँजें, मोटर-साइकिलों की घरघराहट और रायफ़ल-फ़ायर की चीख़ती आवाज़ें हवा में गूँज उठी थीं। एक बार फिर सैनिकों और पुलिस ने पूरी तरह से हथियारबन्द हो हर तरफ़ से धावा बोल दिया था।

ताओ-चिङ ने भौंहें सिकोड़कर कपड़े की पट्टी पर उँगली फिरायी। पुनः लू चिआ-चुआन का बहादुराना ख़ूबसूरत चेहरा उसके सामने उद्दीप्त हो उभरा। सेना और पुलिस ने भीड़ को तितर-बितर कर दिया था और गिरफ़्तारियाँ करने लगी थी। यह लू चिआ-चुआन की ड्यूटी थी कि ध्वजवाहक की रक्षा करे, और वह दौड़ पड़ा था जब ध्वजवाहक का डण्डा तोड़ डाला गया था और वह पकड़ लिये जाने

के कगार पर था। उसने उस पाजी पर, जो उसे तंग कर रहा था, एक भरपूर वार किया था और ख़ूब चूना छिड़क दिया था। इसने एक तरह का धूम्र-जाल रच दिया था जिसके आवरण के नीचे वह ध्वजवाहक बचकर निकल गया था, लेकिन फ़ौजी टुकड़ियों ने तुरन्त अपना ध्यान लू चिआ-चुआन की ओर मोड़ दिया था। ताओ-चिङ उसके पीछे-पीछे दौड़ती रही थी – उसने उसे दूर हो जाने का इशारा किया था, लेकिन उसने इस संकेत की उपेक्षा कर दी थी, और उसी दिशा में जितना तेज़ दौड़ सकती थी, दौड़ती गयी थी। लू चिआ-चुआन एक गली में मुड़ा ही था कि एक खाकी वर्दीधारी सशस्त्र पुलिस ने उसके सिर पर दो फ़ायर कर दिये थे। ऐसा प्रतीत हुआ था कि कुछ ही सेकेण्डों में वह पकड़ लिया जायेगा, लेकिन उसने झपटकर पैंतरा बदला था और ज़ोर से एक पोटली हवा में ख़ाली कर दी थी। फिर चूने ने कमाल दिखाया था, क्योंकि दमघोंटू सफ़ेद धुन्ध जो उससे उठी, उसने सैनिकों और पुलिस को अपनी आँखें मूँद लेने पर मज़बूर कर दिया था, और इसी की बदौलत वह उनको ठेंगा दिखा देने में सफ़ल हो गया था। ताओ-चिङ ने स्वयं अपने बच निकलने के लिए उसी उपाय का इस्तेमाल किया था। इसके बाद वह उससे, जैसाकि पहले से तय था, जॉयस पैवेलियन पार्क में मिली थी जहाँ प्रेमियों की भाँति बाँह में बाँह डाले चहलक़दमी करने और कुछेक शब्दों का आदान-प्रदान करने के बाद वे झटपट एक-दूसरे से अलग हो गये थे। जब वे साथ-साथ टहल रहे थे, तभी उसने उसकी जेब में फटे हुए लाल बैनर का एक टुकड़ा देखा था और उसे उस गौरवशाली दिन की स्मारिका के तौर पर रख लिया था।

"वह कितना बहादुर है, और कितना हाज़िरदिमाग़ है।" अठारह मार्च समारोह और साथ ही मई दिवस के दौरान लू चिआ-चुआन के कारनामों के विचार ने उसकी गहनतम प्रशंसानुभूति को जगा दिया; निसन्देह उसके प्रति दूसरी और अपेक्षाकृत अधिक जटिल अनुभूतियाँ भी उसके दृष्टिकोण में प्रविष्ट हो चुकी थीं। वह इन अनुभूतियों को विश्लेषित न कर सकी; जो कुछ वह जानती थी कि वह बस यही था कि वह उसे अधिक से अधिक देखना चाहती थी और उससे अधिक से अधिक सीखना चाहती थी।

लंच के बाद युङ-त्से एक व्याख्यान सुनने चला गया और ताओ-चिङ यह सोचकर कि पाई ली-पिङ घर पर ही होगी, बातचीत के लिए उसके यहाँ जा पहुँची।

ली-पिङ ने एक शरारतभरी मुस्कान के साथ उस पर आँख मारी। "हेलो! क्या कल तुमने मई दिवस वाली परेड में भाग लिया था?"

"हाँ, लिया था। तुम क्यों नहीं आयी, ली-पिङ?"

"मैं? ओह। मुझे दूसरे काम करने थे।" ली-पिङ ने यकायक विषय बदलकर, मुस्कुराते हुए एक बाँह ताओ-चिङ के कन्धों के चारों ओर डाल दी। तुमने अपने बुढ़ऊ से पिछली रात झगड़ा किया था, क्यों, नहीं किया था, ताओ-चिङ? मुझे

बताओ, मूर्ख लड़की, तुम क्यों अपनी ज़िन्दगी में उस जैसे व्यक्ति के साथ हिस्सेदारी कर रही हो? क्या तुम्हें कोई और बेहतर नहीं मिल सकता?" ली-पिङ हमेशा ही युङ-त्से को "बुढ़ऊ" कहकर सम्बोधित करती थी क्योंकि वह जो लम्बा गाऊन पहनता था उससे वह एक उम्रदराज़ पण्डित जैसा लगता था।

"तुम अपने काम की फ़िक्र करो।" ताओ-चिङ अपने दाँत दिखाती हुई मुस्कुरायी। "हम सभी तुम जैसे नहीं हैं। जब तुम अपनी पसन्द का कोई एक आदमी देख लेती हो तो तुम उसे प्यार करने लगती हो; जब तुम दो को देखती हो, तो तुम उन दोनों ही को प्यार करने लगती हो। तुम प्रेम में माहिर हो!"

"ठीक है, ठीक है! क्या तुम्हारे भले के लिए तुमको बताने का यही तोहफ़ा है जो मुझे मिल रहा है? ज़रा सोचो तो, वह कितना बेढब दिखायी देता है। उसमें क्या है जिसके लिए उसे प्यार किया जाये? मुझे बताओ ताओ-चिङ, तुम भाई लू के बारे में क्या सोचती हो? वह ओजस्वी है, बहादुर है, योग्य है और प्रतिभावान है। क्या तुम मुझे इस मामले में मध्यस्थ की भूमिका निभाने देना पसन्द करोगी?"

ताओ-चिङ का दिल धक से कर उठा, जब ली-चिङ ने उसका नाम उस व्यक्ति के साथ जोड़ दिया जिसका वह इतना आदर करती थी, और जिसे इतना प्यार करती थी। वह शर्म से लाल हो गयी, उसकी बड़ी-बड़ी आँखें खोयी-खोयी-सी हो गयीं। हँसी के एक फव्वारे के साथ ली-पिङ ने उसे चिपटा लिया, और उसके कान में फुसफुसायी :

"क्यों हिचकिचाती हो, बच्ची? बूढ़े प्यार को अलविदा, नये पर फ़िदा! याद कर सकती हो कि यह किसने कहा था? ईमानदारी से कहूँ, वह तुम्हारा बुड्ढा विद्याडम्बरी बिल्कुल तुम्हारे क़ाबिल नहीं है। निर्भीक बनो और एक नयी शुरुआत करो।"

"नहीं। वह मुझसे प्यार करता है। उसे छोड़ना क्रूरता होगी!" ताओ-चिङ ने अपना सिर हिलाते हुए धीरे से जवाब दिया। वह इस विषय को मज़ाक़ में नहीं ले सकती थी, जबकि उस की दोस्त इतनी स्पष्टता से अपना अभिमत प्रकट कर रही थी।

"क्या तुम इन्तज़ार कर रही हो कि युङ-त्से तुम्हारे सतीत्व का एक स्मारक खड़ा करे?" ली-पिङ ने गम्भीरतापूर्वक सवाल उठाया, यद्यपि उसके मुखड़े पर एक मसखरी करने वाली मुस्कान खिल गयी। "तुम क्रान्ति में हिस्सा लेने की बात करती हो, फिर भी इन जैसी मामूली चीज़ों से बग़ावत करने की हिम्मत नहीं रखती – आख़िरकार व्यक्तिगत मामलों का क्या मतलब है?"

इन आकस्मिक टिप्पणियों ने ताओ-चिङ को खिन्न कर दिया और अपनी दोस्त के हाथ को परे हटाते हुए वह बिना एक शब्द बोले ख़ामोश बैठी रही। उसका सिर झुका हुआ था। वह जानती थी कि उसके और युङ-त्से के बीच एक तनातनी थी,

जिसको उसके नये जीवन का आग्रह रोज़-ब-रोज़ चौड़ा करता जा रहा था, और इसके बावजूद वह उस पर तरस खा रही थी। करुणा का एक गहरा अहसास उसको उस से बाँधे हुआ था। यह विश्वास करते हुए कि किसी भी क्रान्तिकारी को अपनी निजी समस्याओं से अत्यधिक सरोकार नहीं रखना चाहिए, उसने दिल का दर्द सह लिया था जो इस तरह के परस्पर टकराते मनोभावों की वजह से पैदा हुआ था, और अपने असन्तोष को पी जाने की कोशिश की थी, इस उम्मीद में कि इस ढंग से वह युङ-त्से के साथ बेहतर ढंग से जी लेगी। लेकिन पाई ली-पिङ द्वारा "मामूली चीज़ों" के दिये गये सन्दर्भ ने उसकी आँखें इस तथ्य की ओर खोल दीं कि अपनी निजी समस्याओं को हल्का बनाना तो दूर, वह उनको अपने ऊपर और छा जाने दे रही थी – उसकी उदासीनता एक ढोंग के अलावा कुछ न थी।

वह शून्य नज़रों से चिन्तामग्न होकर खिड़की से बाहर नीले आकाश को एकटक तब तक देखती रही, जब तक कि ली-पिङ ने यह नहीं सोच लिया कि वह ज़रूर बुरा मान गयी होगी और उसे छाती से लगाने और लाड़-प्यार नहीं करने लगी, मानो वह कोई बच्ची हो :

"ताओ-चिङ, नाराज़ मत हो! अगर भाई यू तुम्हारे प्यार के क़ाबिल हो, तो प्यार करती रहो! मैं तुम्हारे बीच दरार डालने से तौबा कर रही हूँ। सिर्फ़ एक चीज़ याद दिला दूँ..." उसने उठ खड़ी होने के लिए ताओ-चिङ का हाथ परे हटाया और गम्भीरता से कहा, "तुम जानती हो, क्या नहीं जानती कि सिऊ-यू जापान-विरोधी वालण्टियरों में भरती होने के लिए उत्तरपूर्व चली गयी है? वह चाहती थी कि सू निंग भी उसके साथ जाये, कारण कि वे एक-दूसरे को बेहद प्यार करते थे। लेकिन सू निङ ने – जो ऊँचे लगने वाले भाषण देने में तो अच्छा है लेकिन जब काम करने की नौबत आती है तो वह फिसड्डी हो जाता है – जाने से इन्कार कर दिया। वह अपनी माँ को अकेला छोड़ना या अपनी पढ़ाई छोड़ना गवारा न कर सका। बेशक, मैं भी उसे किसी न किसी तरह से रोके रखने के दोष की भागी हूँ। फिर भी, मैं सिऊ-यू की तारीफ़ किये बग़ैर नहीं रह सकती। वह भी पढ़ रही थी और प्यार में डूबी हुई थी, लेकिन उसने यह सबकुछ क्रान्ति के लिए त्याग दिया और उत्तरपूर्व की ओर चली गयी। तुम सू निङ या मुझसे नसीहत मत लो, ताओ-चिङ। बेहतर होगा कि सिऊ-यू के उदाहरण का अनुसरण करो। प्रसंगवश मैं समझती हूँ कि तुम जानती होगी कि वह एक कोरियाई है।"

"एक कोरियाई!..."

ताओ-चिङ ने अचम्भे में इन दो शब्दों को दोहराया, और आगे कुछ न कहा।

वह कुछ खिन्नता से भरी हुई अपने कमरे में वापस लौट गयी और बिस्तर पर पड़कर तुरन्त विचारों में खो गयी।

शाम का धुँधलका घिर आया और अब भी वह रात का खाना बनाने के लिए

नहीं उठी।

"ताओ-चिङ तुम कितनी प्यारी हो। जंगली सेब के फूल या बसन्त में स्वप्न से जाग रही सुन्दरी के समान..." युङ-त्से, जो चुपचाप कमरे में घुस आया था, उसकी लेटी हुई सौम्य देहयष्टि को निहार रहा था।

ताओ-चिङ ने उसकी उपेक्षा करते हुए एक किताब उठायी और उसमें अपना चेहरा गड़ा लिया। वह उसके पास गया और उसके हाथ से किताब लेकर 'पूँजी' शीर्षक देखकर मुँह बना लिया।

"कार्ल मार्क्स की यह महान शिष्या किन समस्याओं पर अध्ययन कर रही है?" उसने एक मुस्कान के साथ पूछा।

"तुम मेरा मज़ाक़ क्यों उड़ाते हो?" वह चिल्लायी। उसकी निगाह उस पर एक क्षण के लिए इस विश्वास के साथ टिकी रही कि यह युङ-त्से जिसको उसने प्यार किया था, किसी बिल्कुल भद्दे घृणास्पद व्यक्ति में बदल चुका था। क्रोध और निराशा के बीच रेशा-रेशा तनी हुई, उसने मुँहतोड़ उत्तर दिया : "लेकिन, कार्ल मार्क्स की शिष्या हू शिह के शिष्य से कहीं बेहतर है।"

"क्या कहा?" अब युङ-त्से के क्रुद्ध होने की बारी थी। "हू शिह का शिष्य होने में क्या ख़राबी है?"

"ओह, यह तो एक प्रशंसनीय बात है। वह सत्ताधारी वर्ग और साम्राज्यवादियों के तलवे चाटता है, और च्याङ काई-शेक की छात्रों के बर्बर दमन के लिए मदद करता है। क्या ख़राबी है उसमें?" अपनी किताब को बिस्तर पर पटककर, ताओ-चिङ ने नफ़रत में भरकर उसकी ओर अपनी पीठ फेर दी।

युङ-त्से अपने हाथों में अपना सिर पकड़े डेस्क पर झुक गया, अपने को ज़ब्त करने की कोशिश करता रहा; लेकिन झट उसने अपना सिर उठाया और हँसी उड़ाने के लहजे में बोला :

"क्रान्ति! संघर्ष! कितने ऊँचे लगने वाले फ़िकरे हैं। मैं देखना चाहूँगा कि इन नौजवान देवियों और सज्जनों में से, जो क्रान्तिकारी होने की डींगें हाँकते हैं, ऐसा कौन निकलेगा, जो ख़ान के भीतर काम करने जायेगा! नहीं, यही बहुत सुखकर है कि बस सर्वहारा और बुर्जुआ वर्ग के बारे में चीख़-पुकार मचाते रहो!"

"तुम्हारी हिम्मत कैसे पड़ रही है!" ताओ-चिङ उस पर क्रुद्ध आँखों से देखती हुई उछल पड़ी "मैं तुम से भर पायी। मैं इसे एक मेहरबानी समझूँगी कि तुम मुझे चले जाने दो!"

तुरन्त ही तनाव का वातावरण विगलित हो गया। मानो उसका दम निकलने वाला हो, युङ-त्से ने भर्रायी आवाज़ में विनती की :

"मेरी प्यारी। मेरी ज़िन्दगी! मुझे मत छोड़ो!"

उस रात आराम करने से पहले उनमें सुलह हो गयी। ताओ-चिङ के चेहरे को

निहारते हुए युंग-त्से खिल उठा और बोला :

"मैं आज बड़े उत्साह में वापस आया, क्योंकि मेरे पास तुम्हारे लिए एक अच्छी ख़बर थी। दुर्भाग्य से हम व्यर्थ में लड़ पड़े। अब और झगड़ा मत करो प्यारी... बहुत हो चुका। क्या तुम जानती हो कि मैं स्नातक हो जाने के बाद नौकरी पा जाने के लिए आश्वस्त हो चुका हूँ। क्या यह शानदार समाचार नहीं है?"

"कैसी नौकरी? अभी तुम दो महीने के पहले स्नातक नहीं होगे?"

"हाँ, लेकिन बेहतर है कि पहले से ही अच्छी तरह योजना बना ली जाये। तुम तो जानती हो कि आजकल नौकरियों के लिए कितनी होड़ है।" एक ऐसे स्वर में, जिसमें विजय के साथ चोट पहुँचाने का भय भी मिला हुआ था, वह धीरे-धीरे बोलता रहा, "ली कुओ-यिङ हू शिह को अच्छी तरह जानता है – अब, कृपया नाराज़ मत हो। ऐसा नहीं है कि मैं हू शिह को आदर्श मानता हूँ, लेकिन मुझे अपनी आजीविका के बारे में तो सोचना ही है। मेरे अनुरोध पर, ली ने मूलपाठ विषय में अनुसन्धान पर मेरे शोधपत्रों में से एक को हू शिह हो दिखाकर बड़ा उपकार किया और क्या तुम यक़ीन करोगी, कि डॉ. हू इतना ख़ुश हुआ कि उसने ली को मुझसे मिलाने के लिए लाने को कह दिया। आज सुबह मैं उनसे मिलने गया। उसने मुझे कठिन मेहनत करके अध्ययन करने के लिए प्रोत्साहित किया और मुझे कुछ सुझाव भी दिये कि शोधकार्य कैसे किया जाये। अन्त में उसने मुझसे मेरे स्नातक हो जाने के बाद नौकरी दिलाने का वादा किया।" उसका हाथ दृढ़ पकड़ में लेते हुए, ख़ुशी से अपनी नन्ही आँखों को चमकाते हुए, युङ-त्से ने निष्कर्ष में कहा, "प्यारी, मैंने सुना है कि वह जिस किसी छात्र की तारीफ़ कर देता है, उसका उज्ज्वल जीवन और होनहार भविष्य सुनिश्चित हो जाता है।"

"हूँ..." ताओ-चिङ ने उसकी आत्मतुष्ट मुखाभिव्यक्ति को देखकर अपने होंठ काट लिये। "तुम सचमुच डॉ. हू शिह का एक महान शिष्य बन चुके हो।"

"प्रिये!" अपना हाथ उसके मुँह पर रखे, दिखावटी गम्भीर लहजे में वह झिड़की दी, "तुम्हें अपने को इन क्रान्तिकारी भ्रमों के सम्मोहन में नहीं डालना चाहिए। आख़िरकार तथ्य तथ्य ही होते हैं। हू शिह की विद्वता चार मई आन्दोलन के समय से ही स्वीकृत है। वह हमारे नौजवान लोगों को कैसे हानि पहुँचा सकता है? तुमने पिछले दो वर्षों से मेरे साथ भागीदारी करके कठिन समय गुज़ारा है। मैं अक्सर महसूस करता हूँ कि मैंने तुम्हें मँझधार में छोड़ दिया है। मेरे कुछ दोस्त कह चुके है, भाई यू, तुम्हारी पत्नी बहुत अच्छी दिखती है। तुम उसे भड़कीले कपड़े क्यों नहीं पहनाते? अगर स्नातक हो जाने के बाद वाक़ई मुझे एक अच्छी नौकरी मिल जाती है, तो पहली चीज़ मैं यह सोचता हूँ कि तुम्हारे लिए दो मख़मली गाऊन और कई रेशमी गाऊन, और साथ ही साथ एक चुस्त ओवरकोट ले दूँ। तुम कौन-सा रंग पसन्द करोगी? मैं हल्के पीले या हल्के हरे रंग में तुम्हारी तरुणाई और विशिष्टता

को देखकर बहुत मुग्ध होऊँगा। तब हर कोई देखेगा कि मेरी ताओ-चिङ कितने अद्भुत रूप से आकर्षक लग रही है... वह इतना उत्तेजित हो गया था कि वह उसे रोशनी में ले आया और उसको एकटक देखने के लिए पीछे हट गया, मानो उसे पहली बार देख रहा हो। अपना सिर एक तरफ़ किये और आँखें सिकोड़े उसने आत्मतुष्ट भाव से उसका निरीक्षण किया। "तुम एकदम पूर्ण हो, ताओ-चिङ, सिर्फ़ कसर यही है कि तुम्हारे कन्धे थोड़े-से अधिक चौड़े हैं, और तुम्हारा मुँह थोड़ा-सा फैला हुआ है। पुराने समय की सभी सुन्दरियाँ संकीर्ण कन्धों और छोटे मुख वाली होती थीं। तुम्हें वह कविता याद है – 'मुँह छोटा और लाल जैसे चेरी, कमर पतली और लचकदार जैसे बेंत?' मत कहो कि तुम फिर नाराज़ हो! तुम मुँह क्यों बना रही हो? आओ, अब बिस्तर पर चलें। तुम चाहो तो मुझे चपत लगा लो, लेकिन हर समय रूठो नहीं!"

ताओ-चिङ अपना आपा लगभग खो चुकी थी, क्योंकि वह इस विवेकहीन ढंग से अपने साथ गुड़िया जैसा व्यवहार किया जाना बरदाश्त नहीं कर सकती थी, लेकिन वह इतनी थकी हुई थी कि प्रतिवाद न कर सकी। वह व्याकुल निद्रा में सो गयी, और सिर्फ़ दुःस्वप्नों की एक श्रृंखला के बाद ही जागी। अँधेरे में वह अपनी बग़ल में लेटे आदमी को देखने के लिए मुड़ी, उसे बमुश्किल ही विश्वास हो सका कि उसने उसे कभी अपने पूरे दिल से सम्मान दिया था और प्यार किया था। इस व्यक्ति ने उसे बचाया था, उसकी मदद की थी, उसे प्यार किया था – लेकिन स्वार्थपूर्ण कारणों से। स्मृति की एक कौंध में, पाई ली-पिङ के शब्द उसे याद हो आये और उसने लू चिआ-चुआन के बारे में सोचा... क्रान्तिकारी...साहसी। "वह है एक असली इन्सान!" वह खुद-ब-खुद मुस्कुरायी। खिड़की से बाहर अँधेरी शाखें हल्के-हल्के झूम रही थीं। "क्या वह जानता है कि मैं उसकी कितनी सराहना करती हूँ?" वह विस्मित हो उठी। एक कड़वी-मीठी भावना उसके हृदय को आप्लावित कर गयी और उसने एक निराशा-मिश्रित उत्कट आह्लाद का अनुभव किया।

उस रात उसने एक विचित्र सपना देखा।

आकाश के अँधेरे वितान के नीचे वह फ़ेन-मण्डित, तूफ़ान-मर्जित समुद्र पर एक नाव खे रही थी। हवा और वर्षा, विशाल तरंगें और क्रोधातुर बादल उसकी छोटी नौका के विरुद्ध आपस में गुत्थमगुत्था हो गये थे, और उस पर आतंक छा गया था। वह इस डरावने सागर में एकदम अकेली थी। उत्ताल तरंगें उसके ऊपर हिमस्खलन की भाँति टूट पड़तीं; बादल उसको भीमकाय दैत्यों की भाँति दबोच लेते; वह सिहर उठती और थर-थर काँपने लगती। उसकी नाव इधर से उधर थपेड़े खाती हुई, निश्चय ही अगले क्षण अटल गहराइयों में डूब जाने वाली थी। पतवारों पर कसकर खिंची हुई उसने अपना सिर घुमाया और अग्रभाग में एक परिचित आकृति देखी, एक आदमी लम्बा गाऊन पहने उस पर मन्द-मन्द मुस्कुरा रहा था।

निराशा के आगोश में उसने अपशब्द कहा : "भाड़ में जाओ। क्या तुम मुझे डूब जाने देना चाहते हो?" तब भी वह वहीं पर शान्त बैठा रहा, और उसने अपनी तम्बाकू की थैली भी निकाल ली। उन्माद में आकर उसने पतवार गिरा दिया और उसके ऊपर झपट पड़ी; लेकिन जब उसने उसकी गरदन पकड़ी, तो पाया कि वह एक बलिष्ठ ख़ूबसूरत नौजवान था जिसकी उन्मत्त आँखों ने उसे सम्मोहित कर दिया; वह मुस्कुराया। जब उसने अपनी पकड़ ढीली की, तब तक तूफ़ान ख़त्म हो चुका था और समुद्र एक बार फिर नीला हो चुका था। वे आमने-सामने ख़ामोश बैठे थे, एक-दूसरे को निहारते हुए। यह लू चिआ-चुआन था। अपने विस्मय में उसने एक पतवार गिरा दिया और वह उसके पीछे समुद्र में कूद पड़ा, परन्तु वह तरंगों में तिरोहित हो गया। एक बार फिर आकाश बादलों से घिरकर अन्धकारपूर्ण हो गया। ज़ार-ज़ार रोती और पुकारती हुई वह स्वयं भी पानी में कूद गयी...

जब वह जागी तो देखा कि युङ-त्से उसे हल्के-से हिला रहा था।

"क्या बात है, ताओ-चिङ? तुम चीख़ क्यों रही हो? मैं अपने दूसरे शोध-निबन्ध के बारे में सोचते रहने के कारण सो न सका, जब यह पूरा हो जायेगा तो इसे मैं डॉ. हू को दिखाऊँगा। इससे मुझे ग्रीष्मावकाश के बाद एक बेहतर नौकरी पा जाने में मदद मिलेगी।"

किंकर्त्तव्यविमूढ़ता में, ताओ-चिङ अपने सपने को याद कर रही थी। करवट बदलती हुई, उसने अस्पष्टता से जवाब दिया।

"चलो सो जायें। मैं बुरी तरह थकी हुई हूँ।"

लेकिन युङ-त्से की भाँति वह भी अपने विचारों में इतनी डूबी हुई थी कि सारी रात सो नहीं सकी।

——:o:——

अध्याय 19

एक छोटे बग़ीचे में स्थित एक छोटे-से अध्ययनकक्ष में, हल्की धूप बाँस की चिक से छनकर आ रही थी और ख़ूबसूरत किताबों से भरी आलमारियों पर धब्बेदार चमक रही थी। लो ता-फाङ, जो अभी-अभी जेल से छूटकर घर आया था, बाँस की चारपाई पर पड़ा हुआ, अपने हाल के अनुभवों को लू चिआ-चुआन को बता रहा था। वह डेस्क के सामने एक घूमने वाली कुर्सी पर बैठा हुआ, ख़ामोशी से ध्यानपूर्वक सुन रहा था; उसकी आँखें अपने दोस्त पर टिकी हुई थीं।

"जिस रात मैं वापस आया, उसी रात मेरा अपने पिता से झगड़ा हो गया।" लो ता-फाङ हँसा और अपनी बड़ी-बड़ी मुट्ठियाँ लहराते हुए बताया, "उन्होंने अपनी मूँछें ऐंठीं और अपनी उत्तरपूर्वी नकियाहट के साथ मुझ पर मिमियाये, 'मोटू – हँसो

मत, वह मेरा दुलार का नाम है – मैंने तुम्हें ज़मानत पर रिहा कराने के लिए कोई कसर बाक़ी नहीं रखी, अपने सभी दोस्तों से मदद ली और सौदेबाज़ी में एक हज़ार चाँदी के डॉलर ख़र्च कर डाले। अब से तुम मुसीबत से बचा करो और अपनेआप को अपने अध्ययन में लगाओ। मेरे पास तुम्हारे लिए एक बढ़िया ख़बर है : मैं तुम्हें अध्ययन के लिए जापान भेजने जा रहा हूँ या अगर तुम चाहो, तो संयुक्त राज्य अमेरिका जा सकते हो। लेकिन जाने से पहले, तुम कम्युनिस्टों से कोई वास्ता रखने की जुर्रत मत करो। अगर तुम उन बदमाशों से मिलते रहे – ' उन्होंने अपनी सुनहरी किनारी वाले चश्मा उतारकर मूझे घूरा, मानो वह मेरा क़त्ल करना चाहते हो। अनुमान लगाओ कि मेरा जवाब क्या था, भाई लू। मैंने उनसे कहा, 'पिताश्री' आप इस सौदे में घाटे में रहे! मैं एक हज़ार चाँदी के डॉलरों के लायक़ नहीं हूँ, न ही तुम्हारे दोस्तों की छलछलाती दया के क़ाबिल हूँ, मैं मुलम्मासाज़ी के संस्कार के लिए अमेरिका भेजे जाने के तो और भी नाक़ाबिल हूँ। सड़े काठ पर कशीदा नहीं काढ़ा जा सकता, जैसीकि कहावत है। बेहतर होगा कि तुम मुझे फिर वापस जेल भेज दो। इससे वह इतना आगबबूला हो गये कि मुझे बुरा-भला कहते हुए एक ऐसा कुपात्र, नालायक़ बेटा बताया जो आँखें तो रखता है लेकिन कम्युनिस्ट मतान्धता के कारण देख नहीं सकता, और देर-सवेर कटखना कुत्ता बनकर रह जायेगा... मैंने अपना आपा नहीं खोया। मैं उन पर भद्रतापूर्वक मुस्कुराया और बोला, "यह कहना अभी बहुत जल्दबाज़ी होगी, पिताश्री कि हममें से कौन कुत्तों के पास जायेगा।" वह इतना क्रुद्ध हुए कि अपना बोरिया-बिस्तर उठाया और गरमीभर के लिए लूशान चले गये, साथ में मेरी सौतेली माँ को भी ले गये।" वह हँसी में फूट पड़ा। लो ता-फाङ को सुरक्षा सैनिक मुख्यालय से ज़िला-अदालत के हवालात में स्थानान्तरित कर दिया गया था जहाँ उसे तीन माह तक रखा गया था। यद्यपि उसका चेहरा अब पहले जैसा उत्फुल्ल और रक्ताभ नहीं रह गया था, फिर भी यह उत्पीड़न उसे निराश नहीं कर पाया था। उसके हौसले वैसे ही बुलन्द थे जैसे पहले थे और जब वह बोलता तो उसकी बड़ी-बड़ी आँखें चमक उठतीं और वह अपनी मुट्ठियाँ हिलाने लगता।

"तुम बात समझते हो, लड़के।" हँसते हुए लू चिआ-चुआन उछला और उसके कन्धे पर मुक्का मारा – दोस्ती दिखाने की यह उनकी आम अदा थी। "तो अब तुम क्या करने जा रहे हो? शरीफ़ नौजवान की भाँति घर पर रहोगे?"

"नहीं, वह मेरी लाइन नहीं है।" किताबों की एक काँच की आलमारी के सहारे तिरछे टिककर लो ता-फाङ मुस्कुराया और अपना सिर हिला दिया। "मेरा बूढ़ा बाप सरकारी महकमे में ऊँचे से ऊँचे चढ़ता जा रहा है। वह जल्द ही प्रशासनिक युआन के किसी विभाग का अध्यक्ष बनकर नानकिङ जाने वाला है। मैंने अपनी भलाई के लिए अपने परिवार से सम्बन्ध तोड़ लेने का निश्चय कर लिया है, और मैं पेइपिङ में पढ़ाई जारी नहीं रख सकूँगा। भाई लू, मैं निष्ठापूर्वक चाहता हूँ कि पार्टी मुझ पर

यक़ीन करे और जहाँ लड़ाई सबसे अधिक उग्र है वहाँ भेजकर मेरी परीक्षा ले।"

दृढ़ संकल्प ने उसके चेहरे की मुस्कान का स्थान ले लिया था, और वह अपनी आँखें शान्तिपूर्वक और सुस्थिरतापूर्वक लू चिआ-चुआन पर टिकाये हुए था।

लू चिआ-चुआन गहरी सोच में डूबा हुआ पालिशदार फ़र्श पर चहलक़दमी करता रहा, कभी-कभार वह अपने दोस्त पर निगाह डाल लेता था।

बाहर, ताज़े सींचे गये बग़ीचे के रास्तों के किनारे अनार और कनेर पूरी तरह खिले हुए थे, और उनकी भरपूर गन्ध हवा के साथ उड़कर, जालीदार खिड़कियों से होकर आ रही थी। उमसभरे मौसम में, इस आलीशान इमारत का यह छोटा बग़ीचा ख़ासतौर से शीतल, शान्त और सुसज्जित मालूम पड़ता था। और बाल-बिखराये मैली-कुचैली सूती शर्ट पहने लो ता-फाङ से कहीं अधिक, भली प्रकार बाल छँटाये, हल्के रंग का विदेशी सूट पहने लू चिआ-चुआन ही इस घर का मालिक मालूम पड़ रहा था। कुछ समय तक इस मामले पर सोच-विचार करने के बाद वह एक निर्णय पर पहुँचा और दृढ़तापूर्वक कहने के लिए अपना सिर ऊपर उठाया।

"भाई लो, यह है तुम्हारी स्थिति, तुम पेइपिङ में अब और नहीं ठहर सकते। अब जापान-विरोधी उत्तर चाहार मित्र सेना हमलावरों के ख़िलाफ़ एक बहादुराना संघर्ष में आगे बढ़ रही है। हम लोग उस सेना में भरती होने के लिए आदमियों को भेजते रहे हैं। तुम क्या सोचते हो? क्या तुम जाने के लिए तैयार हो?"

"अति सुन्दर!" लो ता-फाङ ने उसे पकड़ लिया, मानो वह उसे निकल भागने से रोकना चाहता हो। "हार्दिक धन्यवाद, कॉमरेड! कृपया पार्टी से अनुरोध करो कि इसे जल्दी तय करें।"

पसीने की बड़ी-बड़ी बूँदें लो ता-फाङ के ललाट पर ऐसे दीख रही थीं मानो वह लम्बी दूरी का धावक हो, जो तमतमाया हुआ और पसीने से तरबतर हो, लेकिन दौड़ जीत जाने के विजयोल्लास से भरा हुआ हो। उसने साम्यवाद के लक्ष्य के लिए अपना समूचा हृदय समर्पित कर दिया था, और उसका एक मात्र डर, रिहाई के बाद, यही था कि कहीं जेल की सीखचों ने उसे पार्टी से जुदा न कर दिया हो। अब जबकि लू चिआ-चुआन ने उसे विश्वास दिला दिया था कि सबकुछ ठीक-ठाक था, तो वह इतना उल्लसित हो गया था कि कोई भी और मज़ाक़ नहीं कर सकता था। उसने जापान-विरोधी उत्तर चाहार मित्र सेना की स्थिति के बारे पूछा, और वे सैन्य-स्थिति पर विचार-विमर्श करने लगे।

1933 के मई में, क्वोमिन्ताङ और जापानी हमलावरों के बीच हुई "ताङकू सन्धि" चीन की सम्प्रभुता के साथ ग़द्दारी थी और इसने पूरे देश में इतना क्षोभ पैदा कर दिया था कि लोग और निकटता से गोलबन्द होते गये और अधिकाधिक प्रचण्डता से कार्रवाई में अपने को झोंकने लगे। 26 मई को, जापान विरोधी उत्तर

चाहार मित्र सेना जो जनता द्वारा संगठित की गयी सेना थी, चाङचिऊकाऊ में तैनात कर दी गयी। कम्युनिस्ट पार्टी के एक सदस्य, ची हुङ और जापान-विरोधी जनरल फेङ यू-सिएङ और फाङ चेन-वू के नेतृत्व में, तथा उत्तरपूर्वी जापान विरोधी स्वयंसेवकों और स्थानीय सशस्त्र इकाइयों के साथ इस सेना में उत्तरी चीन से आये छात्रों का एक दल शामिल था। ज़्यादा से ज़्यादा देशभक्त बुद्धिजीवी कम्युनिस्ट पार्टी के आह्वान पर आते जा रहे थे और अपने देश को बरबादी से बचाने के लिए महान दीवार के पार रणक्षेत्रों की ओर उत्साहपूर्वक मार्च करते जा रहे थे।

लू चिआ-चुआन ने तत्काल टिप्पणी की :

"सू-निङ कहता था कि वह भी उत्तरी चाहार जाना चाहता है, लेकिन वह अब भी ढुलमुलपन का शिकार है। नानकिङ प्रदर्शन से वापस आने के बाद से वह कुछ कार्रवाइयों में शामिल हुआ है लेकिन दूसरे अवसरों पर नहीं पहुँचा है। वह एक टिपिकल निम्न-पूँजीवादी क्रान्तिकारी है जो क्रान्ति में शिरकत करना तो चाहता है लेकिन उसमें पड़ने वाली कठिनाइयों और ख़तरों से डरता है।"

"क्या पाई ली-पिङ भी ठीक वैसी ही नहीं है? मैं कहता हूँ...क्या जब मैं गिरफ़्तार हुआ, तभी से वे एक-दूसरे के क़रीब होते गये हैं। बताओ लू?"

"हाँ, कुछ समय के लिए वे बहुत नज़दीकी थे। सू निङ पाई ली-पिङ से प्रभावित हो गया होगा। लेकिन अब जबकि वह शंघाई चली गयी है, वह सुधर सकता है बशर्ते कि हम उसकी काफ़ी मदद करें।"

"मुझे एक कोशिश करने दो?" लू चिआ-चुआन ने डेस्क पर झुके-झुके ही उसको थोड़ा अचम्भे में घूरा। "हाँ यह बढ़िया है। क्या तुम्हें विश्वास है कि इससे तुम्हारा मनोबल नहीं प्रभावित होगा?"

लो ता-फाङ बिना कुछ बोले कूदा औरउसके कन्धे पर प्रहार किया। "तुम मुझे क्या समझते हो? प्यार – प्यार हमारे क्रान्तिकारी ध्येय की बराबरी कैसे कर सकता है?"

लू चिआ-चुआन ने कुछ कहा नहीं; क्योंकि अचानक उसकी कल्पना में युङ-त्से की छोटी आँखें दिखायी दे गयीं जो ईर्ष्या की आग में दहक रही थी और ताओ-चिङ का पीला उदास चेहरा... वह उसे और अधिक देखना तथा अधिक मदद पहुँचाना चाहता था, लेकिन लम्बे समय से जा नहीं पाया था; वह नहीं चाहता था कि उसके और उसके पति के बीच में रोड़ा बने। अपनी भावनाओं से उबरकर, उसने उसके साथ अपना सम्पर्क कम करके न्यूनतम सीमा तक कर लिया था।

लो ता-फाङ अब चमड़े की घूमने वाली कुर्सी पर डेस्क के सामने बैठा था, और इसकी एक दराज़ में से उसने एक सोने की घड़ी निकाली जिसे उसने खोला और उसकी मरम्मत करने लगा। जब लू चिआ-चुआन वहाँ ख़ामोशी में खड़ा रहा तो लो ने पूछने के लिए अपना सिर उठाया :

"तुम्हारे दिमाग़ में क्या चल रहा है?"

लू चिआ-चुआन ने मानो सुना ही नहीं। विचारों में खोया वह खिड़की से बाहर बाँस के एक छोटे झुरमुट को एकटक देख रहा था। एक क्षण के बाद वह मन ही मन बुदबुदाया, "उसको देखे युग बीत गये..."

"क्या वह – लिन ताओ-चिङ – तुम्हारी परेशानियों का कारण है?"

यद्यपि लो ता-फाङ कुछ मामलों में असावधान और बेपरवाह रहता था, फिर भी वह किसी भी प्रकार से संवेदनारहित न था। वह जिस घड़ी की मरम्मत कर रहा था उस पर से नज़र उठाकर कुछ कहने के लिए उसे देखा, "मुझे लगता है, तुम उससे प्यार करते हो – उससे साफ़-साफ़ कह क्यों नहीं देते?"

लू चिआ-चुआन बाँस की चारपाई पर पुनः लेट गया, उसके हाथ उसके सिर के पीछे थे और एक अन्तराल के बाद उसने उसे डपट दिया :

"बको मत! क्या तुम नहीं जानते कि उसका पति है?"

"यू युङ-त्से? उसकी चिन्ता मत करो। वह इतनी बुरी जोड़ी है कि लम्बे समय तक एक साथ नहीं रह सकते। नहीं, भाई लू, तुम अपने पत्ते ठीक से नहीं खेल रहे।"

"मैं किसी के लिए भी परेशानी नहीं पैदा करना चाहता। ऐसी बात कभी मेरे दिमाग़ में नहीं आयी ... यही कारण है कि मैं जहाँ तक सम्भव हो, उससे कम ही मिलता रहा हूँ।"

घड़ी को नीचे रख लो ता-फाङ अपने दोस्त को गम्भीरता से देखने तथा शालीनता और स्पष्टता से कहने के लिए मुड़ा :

"तुम चीज़ों को स्वयं अपनी ख़ातिर इतना सख़्त क्यों बना लेते हो? मैं नहीं समझ पाता कि इसका नैतिक मुद्दों से कोई लेना-देना है। भले ही तुम उसे प्यार नहीं करते फिर भी युङ-त्से जैसे व्यक्ति के साथ वह लम्बे समय तक नहीं टिक सकती।"

"तुम फिर बकवास करने लगे। तुम एकदम नहीं समझते," लू चिआ-चुआन ने मन्द स्वर में प्रत्युत्तर दिया, उसकी आँखें मुँदी हुई थीं। "वे एक-दूसरे से गहरे जुड़े हुए हैं...इसके अतिरिक्त...हाँ, मैं उनके बीच में नहीं आना चाहता।"

"अगर तुम पुराने को नष्ट नहीं करते, तो नये का निर्माण कैसे कर सकोगे? क्या तुम इस लड़की को युङ-त्से द्वारा बरबाद कर दिये जाने दोगे? तुम्हें तो जो मृत हो चुका है या मर रहा है उस पर वज्र की तरह प्रहार करना चाहिए। कन्फ्यूशियस के शिष्य की तरह व्यवहार मत करो।"

लू चिआ-चुआन ने आँखें खोलीं और हँस दिया।

"ये चीज़ें उतनी सरल नहीं हैं।... ख़ैर इस पर बहुत बात हो चुकी, इससे हमें कोई नतीजा नहीं मिलने वाला है।" उसने पुनः अपनी आँखें बन्द कर लीं और आगे

कुछ न बोला।

लो ता-फाङ अपने मरम्मत कार्य को फिर चालू करने के लिए अपनी डेस्क पर वापस लौट आया, वह जब-तब अपने दोस्त के उदास चेहरे पर नज़र डाल लेता। वह ख़ामोशी तोड़ने के लिए कोई उपयुक्त विषय न पा सका।

"भाई लू, तुमने अपनी घड़ी गिरवी रख छोड़ी है, है न?" उसने तुरन्त पूछा। "वैसे यह बहुत पुरानी थी। कल मुझे यह सोने की घड़ी अपने पिता के एक दराज़ में मिल गयी। यह अच्छी बनी है लेकिन ज़ाहिर है कि उसने इसे वहीं छोड़ दिया, इसलिए कि उसने इसे अपने काम लायक़ नहीं समझा। मैं इसे ठीक करने की कोशिश कर रहा हूँ, ताकि तुम इसे इस्तेमाल कर सको।" यह देखते हुए कि उसका दोस्त ख़ामोश ही था, उसने बोलना जारी रखा, "तुम उस सलाह को याद करो जिसे तुमने मुझे पाई ली-पिङ के सम्बन्ध में दिया था, भाई लू? तुमने कहा था, 'प्यार ही सबकुछ नहीं है।' अब मैं तुमको वही सलाह देने जा रहा हूँ। तुम्हारे जैसे एक सख़्त बोल्शेविक को प्रेमरोगी बनना नहीं शुरू करना चाहिए।"

"दफ़ा हो जाओ। कौन माँगता है तुमसे सलाह?" लू चिआ-चुआन अपनी आँखें मलते हुए और अपनी निराशा को झटककर दूर करते हुए खड़ा हो गया। "तुम्हें मेरे बारे में फ़िक्र करने की ज़रूरत नहीं," उसने हँसते हुए कहा। "आख़िरकार, इससे मतलब क्या है... भाई लो, आओ एक गीत गायें। मुझे याद है कि तुम *मार्सईएज* बढ़िया गाते हो। चलो शुरू करो।"

"नहीं, हम में से कोई गाने के मूड में नहीं है।"

इसके बदले वे दुनियाभर की चीज़ों पर बात करने लगे। लू चिआ-चुआन ने अपना जैकेट उतार लिया क्योंकि उसे गरमी लग रही थी और तभी उसने अपनी शर्ट की आस्तीनों में दो बड़े-बड़े सुराख देखे। अपने दोस्त की तरफ़ मुख़ातिब होकर आँख मारकर उसने पूछा :

"क्या मैं यहाँ नहा सकता हूँ? यह सूट, जिसे मेरे एक दोस्त ने दिया था, काफ़ी चुस्त-दुरुस्त लगता है, लेकिन मेरी शर्ट, पैण्ट और मोज़े घिस चुके हैं। क्या तुम मुझे बदलने के लिए कपड़े दे सकते हो?"

"निश्चित!" लो ता-फाङ ने घण्टी का बटन दबाया, जिससे भीतरी अहाते से एक गृहरक्षिका आ गयी। चालीस से ऊपर की वह थुलथुल महिला, लहरदार बालों से युक्त, अपने सफ़ेद ऐप्रन में साफ़-सुथरी और प्रवीण दिख रही थी। उसके प्रवेश करने से पहले ही लू चिआ-चुआन ने अपनी फटी शर्ट को ढँकने के लिए जैकेट पहन ली थी।

गृहरक्षिका एक ट्रे में चाय की केतली और कुछ नाश्ते की चीज़ें लेकर आयी। जैसे ही उसने इन्हें मेज़ पर रखा, लो ता-फाङ उसकी तरफ़ भद्रतापूर्वक मुड़ा, और बोला :

"धन्यवाद, चाची। बस उन्हें वहीं छोड़ दो। पहले मैं तुम्हारा परिचय कराऊँ। यह श्री लू है, मेरे पिता के छात्रों में से एक। यह संयुक्त राज्य अमेरिका में पढ़कर अभी-अभी आया है और जल्द ही पेइपिङ में एक विभाग में ऊँचे पद पर आसीन होने वाला है।"

महिला ने झट अभिवादन किया और एक सम्मान मिश्रित मुस्कुराहट से पूछा, "क्या आप यहाँ लम्बे समय से हैं, श्रीमान लू? यहाँ तो बहुत गर्मी है, है न?"

अपनी हँसी रोकते हुए, लू चिआ-चुआन ने प्रत्युत्तर में अभिवादन किया, अपने दोस्त पर एक उड़ती नज़र डाली, जो पूरी तरह, इस स्वांग में शामिल हो चुका था।

"बहुत गर्मी है। चाची, श्री लू को जूड़ीताप हो गया है। मैंने इससे यहाँ आरामदायक स्नान करने के लिए आग्रह किया है। कृपया तुम, हर चीज़ तैयार कर दो और मालिक की कुछ सबसे अच्छी शर्ट, अधोवस्त्र और मोज़े ला दो जिससे कि श्री लू कपड़े बदल सकें। वह अमेरिका में सबसे अच्छे ढंग से रहते थे, इसलिए बढ़िया से बढ़िया कपड़े जो तुम्हें मिल सकें, ले आओ।" उसके द्वारा दिखायी जा रही श्रद्धा को देखकर, उसने अन्त में कहा, "श्री लू मेरे पिता का प्रिय छात्र है, तुम्हें इसकी अच्छी ख़ातिरदारी करनी है।"

मुखर स्वीकारोक्ति करके वह गृहरक्षिका वापस चली गयी।

जब वह सुनायी दे सकने की सीमा से बाहर हो गयी, तो दोनों नौजवान ठठाकर हँस पड़े। अपनी आँखों में उमड़ आये उल्लास के आँसुओं को पोंछते हुए लू चिआ-चुआन ने अपने मुट्ठी लहरायी और चिल्लाया :

"पाजी! ये सब चालबाज़ियाँ तुमने कहाँ सीखीं?"

लो ता-फाङ ने खीसें निपोर दीं। "जब तक मेरा बूढ़ा बाप वापस लौटेगा, मैं जा चुका हूँगा। वह मुझे नमकहराम की औलाद, जालसाज़, नालायक़, लाल लुटेरा, या जो कुछ चाहे कह सकता है। तुम इस आया को कम करके मत आँको। मेरे माँ-बाप उस पर पूरी तरह से यक़ीन करते हैं। उन्होंने उसे मुझ पर नज़र रखने को कहा है, इसीलिए मुझे उसे बात रखवाने के लिए कुछ कारगुज़ारी करनी ही थी।"

जब वे चाय पी चुके, तो लो ता-फाङ ने एक शेल्फ़ से एक ख़ूबसूरत ग्रामोफ़ोन उठाया और बोला, "आओ, तुम्हारे नहाने से पहले कुछ संगीत सुन लें।" उसने एक रिकॉर्ड रख दिया और कमरा एक मधुर, भावुक स्वर से गूँज उठा :

> विश्वास करो, प्यारे,
> मैं वफ़ादार हूँ!
> तेरे लिए,
> सिर्फ़ तेरे लिए!

"क्या फालतू बकवास है!" लो ता-फाङ ने रिकॉर्ड उतार दिया और इसे फ़र्श

पर फेंक कर चूर-चूर कर दिया। रिकार्डों के एक पूरे पुलिन्दे का मुआइना कर लेने के बाद उसने ऐलान किया, "कोई फ़ायदा नहीं! यह सब अमेरिकी जैज़ संगीत है। अच्छा, आओ जीन मैकडोनाल्ड को सुनें।" वे 'दि लव परेड से एक गीत, मुस्कुराते हुए सुनते रहे, जबकि लो ता-फाङ रह-रहकर सिर झुका-झुकाकर दाद देता रहा। जब यह ख़त्म हुआ तो उसने कहा :

"काश, हम 'इण्टरनेशनल' उतना तेज़ बजा सकते जितना तेज़ हम चाहते हैं, या अपने मज़दूर और किसान योद्धाओं के बारे में गीत बजा सकते! ख़ैर वह दिन भी आयेगा!"

——:o:——

अध्याय 20

एक रात देर तक सू निङ और लो ता-फाङ उस दीवार के किनारे-किनारे टहलते रहे, जो पीकिङ विश्वविद्यालय के परिसर को घेरती थी। वे बातचीत करते हुए चलते जाते; लो ता-फाङ की बलिष्ठ बाँह सू निङ के गले में थी, जिसका सुन्दर मुखड़ा चाँदनी में आवेश से दमक रहा था। लो ता-फाङ अपने आम मज़ाक़िया मूड में नहीं था, बल्कि एक ऐसे गम्भीर, बड़े भाई की तरह लग रहा था, जो एक ज़िद्दी, ग़ैर-ज़िम्मेदार कमसिन लड़के को अपनी बातों से लायक़ करने की कोशिश कर रहा हो। गरमी की रात इतनी अधिक हो चली थी कि प्रेमी और दोस्त जो दो-दो और तीन-तीन के समूहों में मटरगश्ती करते रहे थे, ऊब चुके थे, फिर भी ये दो नौजवान उत्साह के साथ बतियाते चले जा रहे थे।

"मुझे अपने साथ ही मानो, भाई लो। मैं तुम्हारे साथ आ जाऊँगा। मैं अपनी माँ को राज़ी कर लूँगा। मैं जानता हूँ कि सही क्या है..."

"अच्छी बात है सू निङ। मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ... मैं नहीं जानता कि तुम कैसा महसूस करते हो, लेकिन मैं जब कभी मोर्चे की शानदार ज़िन्दगी के बारे में सोचता हूँ तो कामना करने लगता हूँ कि काश मेरे पंख होते और मैं सीधे उड़कर महान दीवार के उस पार चला जाता। तुम यह कहावत जानते ही हो : एक बहादुर आदमी रणक्षेत्र में मरने, और अश्वचर्म में लिपटा हुआ घर ले जाये जाने के लिए तैयार र ता है। हाँ, काम की घड़ी आ पहुँची है।" लो ता-फाङ ने अपनी नज़र उस विस्तृत, वीरान विश्वविद्यालय परिसर पर दौड़ायी, जहाँ लाल भवन रात्रिकालीन आकाश के सम्मुख एक विराट परदे की भाँति लग रहा था। अपने भावावेश में उसने सू निङ का हाथ कसकर पकड़ लिया।

सू निङ भी अपने दोस्त के उत्साह से भावप्रवण हो चला था। उसके चौड़े स्नेहिल चेहरे पर नज़र गड़ाकर देखते हुए, वह लो ता-फाङ में कोई भव्य चीज़

पाकर विस्मित हो गया था। उसने नानकिङ स्थित मिङ मकबरा बैरकों में अपने दोस्त की उस रात वाली वीरता को याद किया, विश्वविद्यालय में अपने काम के प्रति उसकी निष्ठा को याद किया और एक बुर्जुआ घर के आराम-आराईश को उसके द्वारा संकल्पबद्ध होकर दुत्कार दिये जाने को याद किया। पर सबसे अधिक वह इस बात से विस्मित था कि जिस व्यक्ति ने उसकी प्रेमिका उससे छीन ली थी उससे भी लो ता-फ़ाङ बिना ईर्ष्या के बड़े भाई जैसा व्यवहार कर रहा था । सू निङ कुछ समय तक उसे निहारता रहा, प्रशंसा और शर्म के बीच रेशे-रेशे तना रहा, फिर उसके बाद एक विक्षुब्ध स्वर में बुदबुदाया :

"मुझे ज़रूर जाना होगा और अपनी माँ को राज़ी करना होगा। मैं नहीं जानता कि तुम्हारा कैसे शुक्रिया अदा करूँ, भाई लो!"

"मेरे प्यारे दोस्त, यह कितना शानदार होगा अगर हम कन्धे से कन्धा मिलाकर लड़ें।"

इस बातचीत के बाद सू निङ ने अपनी माँ को और साथ ही साथ स्वयं को राज़ी करने की पूरी-पूरी कोशिश की। लेकिन चूँकि वह कम उम्र में ही बेसहारा विधवा हो गयी थी और वह उसका इकलौता बेटा था, इसलिए उसे मोर्चे पर जाने देने के लिए उसको राज़ी कर लेना कठिन था। अपने दोस्तों के कूच करने के दिन के ठीक पहले तक वह आश्वस्त नहीं था कि वह उनके साथ जा पायेगा या नहीं।

शाम के धुँधलके में वह अपनी माँ से मिलने घर गया।

वह हताश और अशान्त था। यह उसका आख़िरी मौक़ा था। उसे राज़ी कर लेने की आख़िरी कोशिश करनी ही होगी।

वह एक स्टूल पर उदास बैठी हुई, मोज़े रफ़ू कर रही थी। अपने बेटे को अपना मुँह खोलने का बिना कोई अवसर दिये, उसने शिकवा-शिकायत शुरू कर दी। उसके सफ़ेद बाल लहरा रहे थे और वह हाथ जिसमें वह सुई थामे हुए थी, काँप रहा था।

"जाने के बारे में और कुछ मत कहो, बच्चे। मैं क्यों नहीं मर जाती और इस मुसीबत से मुक्ति पा जाती? जब तुम तीन वर्ष के थे, तुम्हारा बाप मर गया, तुमको वंश-परम्परा चलाने के लिए अकेला छोड़कर। तुम्हारे लिए ही मैंने तेईस वर्ष तक जीने के लिए संघर्ष किया, तुम्हारी देखभाल करती रही और तुमको पालने-पोसने की जुगत करती रही। अब तुम इतनी दूर चले जाना चाहते हो? नहीं तुम नहीं जाओगे।" उसके गालों पर से आँसू ढुलकने लगे और, उन्हें पोंछने के लिए अपनी जैकेट का एक कोना उठाती हुई, वह उसके टोकने के पहले ही जल्दी-जल्दी बोल पड़ी : "अब तुम बड़े और ऊँचे क़द के हो गये हो, लेकिन जब तुम बच्चे थे, तब तुम अधिकतर बीमार रहते थे। हर माह बीस या अधिक रातें ऐसी होती थीं जब मुझे तुम्हारे बिस्तर के पास बैठकर निगरानी करनी पड़ती थी और मैं सो नहीं पाती थी।

तुम नहीं जानते कि कितनी बार मैंने बुद्ध के आगे दण्डवत किया है, या तुम्हारी ख़ातिर अगरबत्ती जलायी है। एक बार तुम्हारी बीमारी इस क़दर बिगड़ गयी कि हर किसी ने तुमको मरा समझ लिया, और अपनी निराशा में मैंने थोड़ी अफ़ीम घोंट ली..."

सू निङ और अधिक ज़ब्त न कर सका। अपना हाथ लहराकर उसने उसके विलाप को बीच ही में रोक दिया।

"मैं यह सब सौ बार सुन चुका हूँ, माँ! अब मैं और नहीं सुन सकता। तुम क्यों हमेशा शिकवा-शिकायत करती रहती हो? आख़िरकार मैं भूला नहीं हूँ कि मैं तुम्हारा कितना ऋणी हूँ! लेकिन बात यह है माँ कि एक ऐसे समय में जब हमारा देश ऐसे सर्वनाश के संकट में हो, तो एक नौजवान आदमी बिना किसी काम के घर पर बैठे नहीं रह सकता... और ऐसा नहीं है कि मैं किसी ख़तरे में ही हूँ। मेरे तमाम साथी छात्र जा चुके हैं, वे सभी लिख-लिखकर भेज रहे हैं कि वहाँ सबकुछ ठीक-ठाक है..."

अपने आँसू पोंछते हुए बेहद क्रोधोन्मत्त हो उसकी माँ बिफर पड़ी :

"तुम नाहक बतियाकर अपने को थका रहे हो बेटे। मैं तुम्हें जाने देने वाली नहीं हूँ। अगर तुम चले जाते हो, तो मैं...मैं आत्महत्या कर लूँगी।" उस पर अपनी नज़र गड़ा देने के लिए अपने सिर को पीछे झटकते हुए वह वेदना से चीख़ उठी, "चीन में इतने सारे लोग हैं – उसे तुम्हारी ज़रूरत नहीं है।"

सू निङ ने महसूस किया कि और आगे बोलना व्यर्थ था। वह खिन्न होकर उछकर खड़ा हो गया और दरवाज़े की तरफ़ बढ़ा, लेकिन दो क़दम के बाद वह पीछे मुड़ा और रुखाई से बोला :

"माँ, अब और मत चिल्लाओ! अगर मैं न जाऊँ तो क्या तुम खुश होगी? हूँ, अगर मैं सचमुच जाना चाहता, तो तुम मुझे रोक नहीं सकती थी! क्या झंझट है! मुझे राय लेने के लिए पूछना ही नहीं चाहिए था।"

वह अकेले ही पेइहाई पार्क की ओर दौड़ पड़ा और उसकी पहाड़ियाँ चढ़ने-उतरने में शाम गुज़ार दी। एक उमसभरी बयार चीड़-वृक्षों को खड़खड़ा रही थी, और उसकी आवाज़ उसके कानों को खटक रही थी। कुछ सैलानी आस-पास में थे। शून्य नज़रों से तारों के झुण्ड को घूरते हुए, जो धुँधले धूसर आकाश में टँके हुए थे, उसने अपनी अन्तर्दृष्टि में त्सूई सिऊ-यू की छरहरी तरुणाईभरी आकृति देखी – क्या वह चाङपाई पहाड़ियों में थी या हेइलुङकिआङ के विशाल जंगलों में? इस लड़की ने, जिसको भूल जाने की उसने पुरज़ोर कोशिश की थी, पिछले कुछ दिनों से उसकी आत्मा को अभिभूत कर दिया था, जिससे वह स्वयं के प्रति विरक्ति और अपने आचरण के प्रति पश्चाचाप से भर उठा था।

वह ज़रूर उसे, उस जैसे कायर को भूल गयी होगी... उसने अपनी उँगलियों

को अपनी कनपटी पर गड़ाया और वह अपने कानों में लो ता-फाङ के झनझनाते स्वरों को सुनने-सा लगा, "प्यारे दोस्त, यह कितना शानदार होगा अगर हम कन्धे से कन्धा मिलाकर लड़ें!" एक अवरुद्धकारी संवेदना का अहसास करते हुए उसने अपनी शर्ट खोल डाली और थर्राकर बैठ गया, अपना सिर अपने हाथों में थामकर।

सू निङ का पिता, जो एक मामूली सरकारी मुलाजिम था, जवानी में ही मर गया था और उसकी माँ ने दोबारा शादी नहीं की थी, बल्कि विरासत में उसे जो थोड़ी सम्पति मिली थी, उसी से अपने बेटे को पालने-पोसने और उसे स्कूल भेजने का जुगाड़-जतन करती रही। अपनी पूरी ज़िन्दगी में सू निङ एक निम्न-पूँजीवादी परिवार के आरामदायक, सुखकर वातावरण का आदी हो गया था, और उसकी माँ के अति-अनुराग ने उसे कमज़ोर बना दिया था। नतीजतन, यद्यपि वह स्वस्थ और खूबसूरत लड़का क्रान्ति की तरफ़ खिंच गया था और मार्क्सवादी सिद्धान्तों को पढ़ने और लू चिआ-चुआन जैसे लोगों को दोस्त बना लेने के बाद निर्णायक क्षणों में क्रान्तिकारी गतिविधियों में भाग लेने लगा था, फिर भी जब आगे बढ़ने के लिए उससे कुर्बानी देने की अपेक्षा की गयी, तो वह ऐसे असहाय बन गया जैसे कोई नवजात पौधा किसी झंझावात को रोक पाने में असमर्थ हो जाता है।

जब त्सुई सिऊ-यू जापान-विरोधी उत्तरपूर्वी स्वयंसेवकों में अपने घर और अपनी दूसरी मातृभूमि की प्रतिरक्षा के लिए भरती हुई, तो उसे आशा थी कि सू निङ उसके साथ आयेगा। लेकिन उसका प्रेमी अपनी पढ़ाई छोड़ने के लिए इच्छुक नहीं था। क्योंकि वह दो वर्षों की अवधि में स्नातक हो जाने वाला था और उसे अपनी माँ की देखभाल करनी थी। इसके अतिरिक्त, यद्यपि उसने अपनी भावना को कभी मुखर रूप से नहीं प्रकट किया था, फिर भी उत्तरपूर्व उसके लिए उसके गृहप्रदेश किआङसू की तुलना में अजीब, वीरान स्थान लगता था और सबसे बड़ा तो पाई ली-पिङ का आकर्षण था... इसलिए अन्ततः, सू निङ को अपनी पढ़ाई जारी रखने और अपनी माँ की देखभाल करने के लिए घर पर छोड़, कुछ दूसरे साहसी छात्रों के साथ अपनी यात्रा पर रवाना हो गयी। बाद में जब श्वेत आतंक ने अपना फन्दा कसा, तो वह क्रान्तिकारी गतिविधियों में भाग लेने की हिम्मत तक न कर सका। अब जापान विरोधी उत्तर चाहार मित्र सेना के दुश्मन के ख़िलाफ़ एक बहादुराना संघर्ष छेड़ दिया था और लू चिआ-चुआनः और ली ता-फाङ से प्रेरणा पाकर और अपनी पिछली ग़लतियों को सुधारने के लिए कमर कसकर, सु निङ ने अपनी माँ से जाने की अनुमति पाने के लिए बार-बार परन्तु निष्फल कोशिश की। निराश होकर उसने एकदम कोशिश करनी ही छोड़ दी। इसका मतलब यह था कि जब सेना में भरती होने का आन्दोलन उसके साथी छात्रों के बीच पूरे उफान पर था, तो वह असहाय रूप से अनिर्णय की स्थिति में बना हुआ था। अन्त में घर पर शान्तिपूर्ण ज़िन्दगी की आरामतलबी ने उसे न भरती होने का बोध करा दिया। इस पर भी जब

वह पहाड़ी से नीचे दौड़ रहा था तो उसकी टाँगें काँप रही थीं, उसकी आँखें शर्म के आँसुओं से नम थीं।

क्वोमिन्ताङ के ध्यान में आने से बचने के लिए छात्र वॉलण्टियर पश्चिमी फाटक से बाहर एक छोटे-से स्टेशन पर उत्तर की ओर जाने वाली एक ट्रेन पर सवार हुए थे। सू निङ ने उनको विदाई देने का इरादा किया था, लेकिन शर्म के एक अहसास ने उसे आधे रास्ते से ही वापस लौटा दिया। उसने सारा दिन हॉस्टल में अपनी चारपाई पर बिताया और शाम को दुबककर घर चला आया, यह इत्मीनान करने के लिए कि उसकी माँ के साथ सबकुछ ठीक-ठाक था या नहीं। जब उसने बाँस के दरवाज़े का परदा उठाया तो उसने उसे एक बौद्ध प्रतिमा के आगे घुटने टेकते हुए पाया।

"बोधिसत्व। दया की देवी!" वह प्रार्थना कर रही थी। "मेरे बच्चे को हानि और अनिष्ट से बचाये रखो, मैं तुमसे भीख माँगती हूँ। उसे दूर मत जाने दो। उसका मन बदल दो और उसे उसकी माँ के पास में ही रहने दो, ठीक उन्हीं खुशहाल दिनों की भाँति, जब वह बच्चा था..."

सू निङ दबी जुबान में हँसा और उसकी माँ चौंककर पीछे मुड़ती हुई, उसे दहलीज़ पर देखकर अति प्रसन्न हो उठी, मानो उसकी प्रार्थनाओं का प्रतिफल मिल गया हो। वह झट अपने पैरों पर उठ खड़ी हुई और उसकी बाँह पकड़ ली। ख़ुशी के अतिरेक में वह बुदबुदा उठी।

"तो तुम आख़िर नहीं ही गये, बच्चे ठीक है, ईश्वर की यही मर्ज़ी है। मुझे दया की देवी का शुक्रिया अदा करने दो!" एक बार फिर वह प्रतिमा के आगे दण्डवत हो गयी। "दया की महान देवी! अपनी विनम्र सेविका के पुत्र की रक्षा के लिए उसकी कृतज्ञता स्वीकार करो। वह माँस से परहेज़ करेगा और रोज़ाना धर्मग्रन्थों का पाठ किया करेगा..."

सू निङ ने एक कटु मुस्कान के साथ बीच में टोक दिया :

"ये मूर्खतापूर्ण बातें बहुत हो चुकीं माँ! क्या तुम रात का खाना नहीं बनाओगी? मैं भूखा हूँ।"

उसकी कटाक्षभरी टिप्पणियों के बावजूद ख़ुश होती हुई वह लज़ीज़ खाना तैयार करने में जुट गयी, वह जब-तब नज़र बचाकर बिस्तर पर पड़े अपने बेटे को देख लिया करती थी, मानो डर रही हो कि उसका दुलारा कहीं भाग न जाये।

रात के खाने के दौरान उसने बिना किसी खटके के पूछा :

"तुम्हारे दोस्त जो मोर्चे पर चले गये हैं, क्या उनके घरबार हैं?"

"बिल्कुल हैं। हरेक के माँ-बाप हैं।"

"कैसे उनकी माँएँ उनका बिछोह बरदाश्त कर सकीं? मैं इसे समझ नहीं पाती।" उसने खाना रोक दिया, कटोरा उसके हाथों में ही रुका रहा, और वह उसकी तरफ़

उत्कण्ठित होकर देखती रही।

"दूसरी माताएँ तुम जैसी नहीं हैं।" उसने वितृष्णा के भाव से प्रत्युत्तर किया, "उनका कर्त्तव्य है और वे असली माँ बनना चाहती हैं... आख़िरकार, जब दुश्मन आ जायेगा तो सबकुछ ख़त्म हो जायेगा – बच्चे, घरबार और सभी कुछ।"

वह कुछ बोली नहीं, बल्कि अपना सिर हिलाया और एक भारी साँस खींचकर हाथ मुँह धोने चली गयी। रात का खाना खा चुकने के बाद, सू निङ कुछ देर तक पढ़ता रहा और फिर अपनी माँ की ओर ध्यान दिये बग़ैर उदास मन से बिस्तर पर चला गया। आधी रात के क़रीब वह एक स्वर सुनकर जाग पड़ा और अपने कानों पर ज़ोर डालते हुए, उसने पुनः प्रार्थना करने की आवाज़ सुनी।

"बोधिसत्व! दया की देवी! उन नौजवान लोगों की रक्षा करो जो जापानियों से लड़ने गये हैं। उनका कोई अनिष्ट न होने दो। उन्हें जल्दी घर वापस ला दो, सुरक्षित और भला-चंगा। मुझे माफ़ कर दो, देवी, मैं अपने बेटे का विछोह नहीं सह सकती!..."

सू निङ मन ही मन हँस पड़ा। "तो वह ऐसा महसूस करती है!" वह उसे पुकार उठने ही वाला था कि अचानक दरवाज़े पर एक प्रचण्ड प्रहार ने दोनों को चौंका दिया। दूसरे ही क्षण पुलिस और सशस्त्र सैनिक घर में उमड़ पड़े, घर जल्द ही पिस्तौल और रायफ़ल लिये दुश्चरित्र दीखने वाले आदमियों से ठसाठस भर गया। सू निङ की माँ डर के मारे अपने बेटे से चिपट गयी, जो हक्का-बक्का दरवाज़े की बग़ल में खड़ा था। एक सादे लिबास वाला मोटा आदमी ऊँची टोपी लगाये उससे पूछने के लिए मुड़ा :

"क्या तुम सू निङ हो?"

"हाँ!" अपने पर क़ाबू रखते हुए सू निङ ने सिर झुकाकर हामी भरी।

उसकी माँ और भी हताश होकर उसकी बाँह से चिपट गयी, वह क़रीब-क़रीब होश गँवा देने की सीमा तक डर गयी।

पुलिस और सशस्त्र सैनिकों ने ख़ानातलाशी लेनी शुरू कर दी, वे सन्दूकों और आलमारियों को उलटते-पुलटते रहे पर कुछ न मिला। तब उनमें से एक उस मोटे आदमी की तरफ़ मुड़ा, निर्देश पाने के लिए अपना सिर हिलाया और आँखों को मटकाया। मोटे आदमी के सोने के दाँत एक धूर्तताभरी मुस्कान में चमक उठे।

"कुछ मिला? मुझे कोशिश करने दो!"

उसने अपना हाथ एक डेस्क की दराज़ में घुसेड़ दिया और 'उत्तरी चीन में लाल ध्वजा' की एक प्रति निकाल ली। "यह क्या है?" वह ख़ुशी से चिल्लाया। "इसके बारे में कोई शक नहीं – यह लाल क्रान्तिकारी है।"

यह जानते हुए कि एक कम्युनिस्ट की गिरफ़्तारी उन्हें पाँच सौ युआन का पुरस्कार दिलायेगी, स्पेशल सर्विस वाले आदमी ने इस पत्रिका को वहाँ पर सू निङ

के विरुद्ध एक झूठा आरोप बनाने के लिए रख दिया था।

"यह रहा सबूत!" बाक़ी मिमिया उठे। "वह एक कम्युनिस्ट है, बहुत ठीक, उसे गिरफ़्तार कर लो!"

"ले चलो उसे!"

यह देखकर कि ये बन्दूक़धारी ठग उसके बेटे पर हाथ डालकर और उसे खींचकर ले जा रहे थे, उसकी माँ धाड़ मारकर चीख़ उठी और उसकी बाँह नहीं छोड़ी। "तुम इसे क्यों ले जा रहे हो? उसने क्या जुर्म किया है?" एक उन्माद में, उसने पुलिस वालों पर अपने सिर से प्रहार किया। तनाव और बौखलाहट के उस क्षण में सू निङ के दिमाग़ में एक गम्भीर विचार कौंध गया :

"अगर आज अपने कॉमरेडो के साथ चले जाने की मुझमें हिम्मत रही होती, तो यह सब घटित नहीं हुआ होता!"

अपनी ख़ुद की कायरता के प्रति उसकी जुगुप्सा ने उसे साहस प्रदान किया। उसने अपनी माँ की पकड़ से तेज़ी से अपनेआप को मुक्त कर लिया और सख़्ती के साथ कहा :

"माँ, मुझे छोड़ दो! हमने जो कुछ किया है, उसके लिए हम दोनों को अफ़सोस करना चाहिए!"

फिर उसके कटु रुदन के प्रति बहरा बन वह तनकर खड़ा रहा, अपने ऊपर सशस्त्र सैनिकों के भारी-भरकम मुक्कों के वार का इन्तज़ार करता रहा।

——:o:——

अध्याय 21

युङ-त्से एक शाम खाने के बाद ताओ-चिङ को मेज़ साफ़ करने और बरतन धोने के लिए छोड़कर बाहर चला गया। गृहस्वामिनी ने रेडियो चालू किया और एक लोकप्रिय भावुक गीत ताओ-चिङ के कानों में गूँज उठा।

हल्की बारिश
बरस रही अब भी;
घटाटोप आकाश
पवन शीत लहरी...

अनमनेपन से ताओ-चिङ ने मेज़ साफ़ की। संगीत जितना ही भावोत्पादक होता जाता, गृहस्वामिनी और उसका पति, लगता था, उसे उतना ही तेज़ करते जाना पसन्द करते थे। उसने एक गहरी साँस खींची और बैठने ही वाली थी कि कन्धे पर एक थपकी महसूस की। पीछे मुड़ते ही उसने पाया कि यह तो लू चिआ-चुआन था,

जिसको उसने महीनों से नहीं देखा था। उत्तेजना में रकाबी के कपड़े को एक तरफ़ फेंककर वह आरक्त हो उठी और अधीरता में चिल्लायी :

"भाई लू! युग बीत गये तुमको देखे हुए! इस सारे समय में तुम कहाँ रहे?..."

वे मई दिवस के बाद से नहीं मिले थे। इस बीच पाई ली-पिङ शंघाई चली गयी थी और यद्यपि सू निङ अब भी यदा-कदा आ जाता था, फिर भी वह हमेशा हड़बड़ी में ही रहता था। एक बार फिर ताओ-चिङ का जीवन घरेलू कामकाज के गोरखधन्धे में मनहूस बनकर रह गया था। उसकी बड़ी-बड़ी आँखें, जो कभी उल्लासपूर्ण और उद्दीप्त थीं, अपनी चमक खो चुकी थीं और वह फिर से निराशा और उलझन की शिकार हो चुकी थी; अब वह घर के आस-पास कभी नहीं गाती थी। इस अप्रत्याशित आगमन ने उसे प्रसन्न और उत्तेजित कर दिया।

"पहले न आने के लिए मुझे माफ़ कर देना – पिछले कुछ महीनों के दौरान मैं सामान्य से ज़्यादा व्यस्त रहा हूँ," लू चिआ-चुआन ने कहा। उसने अपना ब्रीफ़केस मेज़ पर रखा और बैठ गया, लेकिन दूसरे ही क्षण उठ पड़ा और पूछा, "तुम कैसी रही ताओ-चिङ? फिर उदासी महसूस करती रही?"

"हाँ, मैं उदास हूँ।" ताओ-चिङ ने अपने आँसू पोंछ डालने के लिए अपना सिर नीचे कर लिया। "मेरा जीवन एक ठहरा हुआ तालाब है – इसमें झगड़ों और न ख़त्म होने वाले अध्ययन के अलावा और कोई चीज़ ख़लल नहीं डालती... भाई लू, मुझे बताओ कि क्या करूँ!" चेहरा नीचे किये, काँपते होंठों से उसने गमगीन होकर उसे देखा।

"मैं तुमसे आस लगाये हुए थी – पार्टी से आस लगाये हुए थी – अपने उद्धार के लिए..."

रह-रहकर कमरे में चारों तरफ़ और अहाते में निगाह डाल लेने के बाद लू चिआ-चुआन मेज़ की बग़ल में बैठ गया और मुस्कुराया।

"मैं जानता हूँ कि तुम कैसा महसूस करती हो ताओ-चिङ। लेकिन धैर्य मत खोओ। हम तुम्हारी सहायता करने की पूरी-पूरी कोशिश करेंगे..." उसका स्वर गम्भीर था, उसकी आँखें सदा की भाँति शान्त और स्नेहिल थीं। "श्वेत आतंक अधिकाधिक ख़ौफ़नाक बनता जा रहा है। च्याङ सियाओ-सिएन के नेतृत्व में मिलिटरी पुलिस की तीसरी रेजीमेण्ट पेइपिङ में हर जगह नौजवान देशभक्तों को गिरफ़्तार कर रही है। क्या तुम जानती हो कि सू निङ गिरफ़्तार हो चुका है?"

"नहीं। सू निङ के बारे में नहीं?" ताओ-चिङ आतंकित हो गयी। "उन्होंने कब उसे गिरफ़्तार किया?"

"वह उसी शाम गिरफ़्तार हुआ जब लो ता-फाङ और कुछ दूसरे छात्र सेना में भरती होने के लिए उत्तर चाहार के लिए प्रस्थान कर रहे थे। सू निङ भी जाने वाला था, परन्तु वह इसे टालता रहा और गिरफ़्तार कर लिया गया। हम क्रूर समय में जी

रहे हैं ताओ-चिङ, और संघर्ष तीखा होता जा रहा है। क्या तुम कभी इन चीज़ों के बारे में सोचती हो?"

"जितना कह सकती हूँ उससे कहीं अधिक ही।" ताओ-चिङ लजा गयी और डेस्क पर झुक गयी। "मैं किसी चीज़ से भयभीत नहीं हूँ, यहाँ तक कि मौत से भी नहीं! मुझे हमेशा ही लगता है कि एक फालतू फीका जीवन जीने से कहीं बेहतर है बहादुराना मौत मर जाना!"

जैसे ही लू चिआ-चुआन की आँखों ने उसके ख़ूबसूरत चेहरे को निहारा, जो उत्तेजना में आरक्त और भोलेपन से परिपूर्ण था, उसने महसूस किया कि वह इस लड़की पर पूरा-पूरा भरोसा कर सकता था, जिसके जीवन में इतने अन्तरविरोध थे। एक क्षणिक विराम के बाद उसकी आँखों में देखते हुए उसने सवाल किया, "क्या तुम अब भी रणक्षेत्र में बहादुराना मौत मरना चाहती हो?" वह उसके बाद बोला। "यह ग़लत है, ताओ-चिङ। हम क्रान्ति में शामिल होते हैं मरने के लिए नहीं, बल्कि जीने के लिए – अपेक्षाकृत अधिक सार्थक जीवन जीने के लिए और करोड़ों उत्पीड़ितों की ख़ुशहाली लाने के लिए। बिना कोई सार्थक काम किये ही तुम मरने की क्यों सोचती हो? यह एक भ्रान्त धारणा है।"

"अच्छा, भाई लू, तब मुझे बताओ कि क्रान्ति में कैसे शामिल होऊँ। मेरे जीवन में अब कुछ भी क्रान्तिकारी नहीं है।"

"ठीक है, अगर तुम दरअसल यही चाहती हो, तो अब मैं तुमसे मदद के बारे में पूछूँगा।"

वह अचानक गम्भीर हो गया। "कृपया इन पर सोचो और देखो कि तुम मदद कर सकती हो या नहीं। पहले, मेरे पास कुछ काग़ज़ात हैं जिनको मैं यहाँ दो दिनों के लिए सुरक्षित रखने के लिए छोड़ जाना चाहूँगा। दूसरे, मैं चाहता हूँ कि तुम आज रात मेरा एक सन्देश पहुँचाओ। तीसरे..." वह विचारमग्न हो उस पर नज़र डालने के लिए रुका। "तीसरे, मैं यहाँ कुछ देर ठहरना चाहूँगा – अगर सम्भव हुआ, तो रातभर। जासूस पिछले दो दिनों से मेरे पीछे लगे हुए हैं – मुझे उनमें से एक को यहाँ आने के लिए चकमा देना पड़ा है।"

इस कार्यभार में ताओ-चिङ की ख़ुशी के साथ-साथ लू चिआ-चुआन के लिए चिन्ता भी मिली हुई थी। वह इतने हल्के दिल से उसके दैनिक जीवन और दृष्टि के बारे में बात करता रहा कि उसके संकट का कोई विचार ही उसके मन में नहीं उठा था। उसने उसकी शान्तिप्रियता और प्रसन्नता से विस्मित होकर उसे एकटक निहारा, और एक क्षण के बाद स्पष्टतापूर्वक कहा, "जो तुम चाहते हो वही मैं करूँगी, भाई लू। बेशक, तुम यहाँ ठहर सकते हो – यह एकदम ठीक रहेगा, मैं अभी जाती हूँ और युङ-त्से को बता देती हूँ।" इस नाम के उल्लेख ने उसे लजा दिया।

लू चिआ-चुआन एक पैर स्टूल पर और एक हाथ अपने ललाट पर रखकर आगे की ओर झुका हुआ था। उसका ख़ूबसूरत, विश्वसनीय चेहरा गम्भीर था, और उसकी भौंहें विचार-मग्नता में खिंची हुई थीं। एक क्षण की ख़ामोशी के बाद उसने अपना सिर हिलाया और मेज़ को थपथपाया।

"नहीं, बेहतर होगा कि तुम भाई यू को न बताओ, ताओ-चिङ। मैं यहाँ रात बिताने के लिए नहीं रहूँगा... समझ लो कि हम इसे ऐसे व्यवस्थित करेंगे : मुझे कुछ लेखन-कार्य करना है और मैं यहाँ कुछ अधिक देर तक रुकना चाहूँगा। क्या तुम भाई यू को सामान्य से कुछ अधिक विलम्ब करके आने के लिए कह सकती हो?" उसने अपना ब्रीफ़केस उसे थमा दिया। "इसमें कुछ गोपनीय प्रचार-पर्चियाँ हैं। इन्हें एक सुरक्षित जगह रख दो और ध्यान रखो कि भाई युङ-त्से इन्हें देखने न पाये।"

"ठीक है!" ताओ-चिङ ने यह घिसा हुआ ब्रीफ़केस अपनी बाँहों में ले लिया। उसका हृदय इतनी शक्तिपूर्ण और प्रेरणास्पद प्रसन्नता से आप्लावित था कि इसने उस चिन्ता को दूर भगा दिया जिसने उसे जकड़ रखा था। ब्रीफ़केस को छाती से चिपटाये हुए, उसने दमकती आँखों से उसकी ओर देखा। "भाई लू, रात यहाँ बिताओ न! अगर तुम भाई यू से नहीं मिलना चाहते, तो वह और मैं कहीं अन्यत्र रह लेंगे और तुम इस जगह पर स्वयं रह लेना। मैं वादा करती हूँ कि..." वह उसे अनिष्ट से बचाये रखने का वादा करना चाहती थी, लेकिन शब्द बिना बोले ही रह गये।

इतनी नादान और बच्ची जैसी होकर वह कैसे एक माँ की ज़ुबान पर आने लायक़ शब्द एक ऐसे आदमी के लिए इस्तेमाल कर सकती थी जिसे वह अपने शिक्षक के रूप में देखती थी?

"इसकी कोई ज़रूरत नहीं!" ताओ-चिङ की स्पष्ट चिन्ता ने उसके चेहरे पर एक तुष्टिकारी मुस्कान ला दी। "मैं तुम्हें किसी दूसरे के पास भेजना चाहता हूँ, ताओ-चिङ," वह बोला। "चूँकि वह कुछ दूरी पर रहती है, इसलिए तुम्हारा तुरन्त चल देना बेहतर रहेगा। वह दीदी ली के नाम से जानी जाती है। बस उससे यही पूछना, 'क्या छोटे ताई और छोटे वू सिनेमा से वापस आ गये?' फिर कहना, 'नौजवान फेङ का हालचाल बहुत अच्छा है।' अगर वह कहती है कि वे वापस आ गये है, तब ठीक है। अगर तुम उसे न पा सको और कोई दूसरा तुमसे पूछे कि तुम क्या चाहती हो, तुम कह देना कि तुम एक रिश्तेदार को खोज रही हो, या कि तुम ज़रूर किसी ग़लत नम्बर पर आ गयी हो। बस वही करो जो सर्वोत्तम लगे। होशियार रहना, और शान्त बनी रहना..." उसने तब उसे भूमिगत काम के बारे में कुछ मशविरा दिया और धैर्यपूर्वक सभी आवश्यक विवरणों को विस्तार से बताया।

"छोटे ताई और छोटे वू जो सिनेमा गये थे – उसका क्या मतलब है?" ताओ-चिङ की आँखें विस्मय से खुली हुई थी।

"जिसे तुम्हें जानने की ज़रूरत नहीं, उसे मत पूछो – वह हम लोगों के कायदे-क़ानून में से एक है," उसने स्नेहपूर्वक परन्तु दृढ़ता से कहा।

ताओ-चिङ ने स्वीकृति में सिर झुकाया और अपने जैकेट का छोर मरोड़ती हुई खड़ी रही। यद्यपि वह घबरायी हुई और चिन्तित थी, फिर भी रहस्य के इस नये तत्त्व ने उसके मिशन को उत्तेजनापूर्ण बना दिया। उसे काफ़ी-कुछ पूछना था, फिर भी वह अपने को बोलने की स्थिति में न ला सकी।

वे एक-दूसरे के सामने ख़ामोश थे।

देर न करना चाहती हुई वह जाने के लिए उठी, और लू चिआ-चुआन का अभिवादन करके दरवाज़े की ओर बढ़ चली। उसने अचानक सोचा कि दुष्ट जासूस उसके इन्तज़ार में बाहर खड़े हो सकते हैं। शायद वह उसी क्षण गिरफ़्तार हो जाये जब वह उसे छोड़कर चली जाये। भय ने उसे ज़मीन में जड़ कर दिया और वह वहीं दरवाज़े के सहारे खड़ी हो गयी, उसे खोयी-सी निहारती रही, वह उसे छोड़कर जाने की अपनी अनिच्छा को, उसके प्रति अपने नेक रोष को व्यक्त करने में असमर्थ था।

"साढ़े आठ बज चुके हैं, ताओ-चिङ। बेहतर होगा कि तुम चली जाओ।" उसने इस पूरे समय में अपनी नज़र उस पर से हटायी नहीं थी।

"ठीक है, भाई लू, मैं चली। तुम यहाँ मेरा इन्तज़ार करना।" अपने होंठ काटती हुई वह जाने के लिए मुड़ी। लेकिन इसके पहले कि वह दहलीज़ पार करे वह उसे पुकार उठा :

"इतनी हड़बड़ायी हुई और इतनी जल्दबाज़ी में मत दिखो। शान्त बनी रहो। घबराहट हर चीज़ को चौपट कर सकती है। यहाँ जितनी देर तक सम्भव हो सकेगा, मैं तुम्हारा इन्तज़ार करूँगा। अगर तुम वापस लौटने पर यहाँ मुझे न पाओ, तो तुम्हें चिन्तित होने की ज़रूरत नहीं है। मैं तीन दिनों के भीतर अपने सामान के लिए वापस आ जाऊँगा।"

"तुम ज़रूर मेरा इन्तज़ार करना। चले मत जाना..." ताओ-चिङ वापस दौड़ी और उसका हाथ थाम लिया, उसकी लम्बी बरौनियाँ आँसुओं से चमक रही थीं।

लू चिआ-चुआन की भावनाएँ उस क्षण असाधारण रूप से जटिल थीं। लड़की की उत्कट आकांक्षाएँ और उसके प्रति आदरभाव, जिनको वह कभी-कभी छिपा पाने में असमर्थ हो जाती थी, उसको इतनी गहराई से मथ रहे थे कि वह उसके सामने अपना हृदय खोल पर रख देने की कामना करने लगा। लेकिन इसका तो कोई सवाल ही न था। उसे ज़रूर आत्मनियन्त्रण का अभ्यास करना होगा। उसके हाथों को अपने हाथ में लिये उसने एक भाई की भाँति प्यार से और गम्भीरता से कहा :

"ताओ-चिङ, तुम कभी किसी कड़े संघर्ष से नहीं गुज़री हो और अभी भी इसकी गम्भीरता और जटिलता को नहीं महसूस करती... मान लो, अगर मैं तीन दिन बाद नहीं आया..." उसने अपनी चमकदार, स्नेहिल आँखों को पूरा खोल दिया।

"...तब बेहतर होगा कि तुम इन चीज़ों को जला देना, जिनको मैंने यहाँ छोड़ रखा है। भविष्य में – अगर तुमने हमारे लक्ष्य में आस्था बनाये रखी और आने वाले अच्छे, खुशहाल दिनों के लिए संघर्ष कर सकी, तो मैं जानता हूँ कि तुम अपनी मंज़िल पा लोगी और तुम्हारा सपना साकार होगा। इसे कभी न भूलना ताओ-चिङ। कम्युनिज़्म को कभी मिटाया नहीं जा सकता। वे हमारे सभी कॉमरेडों को मार डालने में कभी सफल नहीं होंगे – हम लोग रक्तबीज हैं! आशा है हम फिर मिलेंगे..."

ताओ-चिङ उसके और क़रीब आ गयी और उसकी ओर निहारा, ताकि वह उसके द्वारा बोले गये प्रत्येक शब्द को पकड़ सके। उसके लिए उसकी वक्तृता प्रभावी थी। यह सीधे उसके हृदय में उतर जाती थी। जब उसने उसके अन्तिम शब्दों के अर्थ-भाव को ग्रहण किया तो वह स्तब्ध रह गयी और उसकी आँखों से आँसुओं की धारा बह चली। वह निराश कामना करती रही कि काश उसके पास कोई अच्छी छिपने की जगह होती जहाँ वह उसे उन प्रतिक्रियावादियों से दूर सुरक्षापूर्वक तालाबन्द कर देती, जो उसे गिरफ़्तार करने की फ़िराक़ में थे। लेकिन ऐसा आश्रय कहाँ मिल सकता था? वह विचारों में खोयी वहीं खड़ी रही, फिर याद आया कि यह जाने का समय था – उसे फिर से याद दिलाये जाने के लिए इन्तज़ार नहीं करते रहना चाहिए। अतः अनिच्छुक क़दमों से वह जाने लगी, लेकिन लू चिआ-चुआन ने उसकी बाँह पकड़ ली और एक अन्तिम चेतावनी दी :

"सबकुछ जो मैंने कहा है, उसे याद रखना ताओ-चिङ। तुम निश्चित तौर पर दीदी ली को मेरा सन्देश शब्दशः दे देना, और सड़क पर सावधान रहना। अगर कोई तुम्हारा पीछा करे, तो सीधे वापस मत आना – एक चीज़ और! कृपया भाई यू को बहुत जल्दी घर न आने के लिए कह देना।"

"मैं तुम्हारा कहा सबकुछ करूँगी। चिन्ता मत करो।" ताओ-चिङ बाहर निकल गयी और धुँधलके में ग़ायब हो गयी।

लू चिआ-चुआन दरवाज़े के फ़्रेम से सटकर शान्त अहाते को एक मुस्कान के साथ देखता रहा, माने वह अब भी वहीं खड़ी हो।

ताओ-चिङ सीधे पूर्वी हॉस्टल में ली कुओ-यिङ के कमरे में गयी, जहाँ उसे युङ-त्से से मिलना था। उसने उसको बाहर आने के लिए इशारा किया और गम्भीर भाव में फुसफुसायी :

"मुझे आज रात काम से बाहर जाना है। तुम कुछ देर से घर जाओ तो बुरा तो नहीं मानोगे?"

युङ-त्से की सन्देहशील आँखें सिकुड़ गयीं। "मामला क्या है? मैं न चाहते हुए भी क्यों बाहर ठहरा रहूँ? अगर मैं घर पर ही तुम्हारा इन्तज़ार करूँ तो इससे क्या फ़र्क़ पड़ जायेगा?"

ताओ-चिङ एक धर्मसंकट में थी और उसने तय किया कि उससे कोई बात नहीं छिपायेगी, ख़ासतौर से जबकि शर्मिन्दा होने की कोई बात न थी। उसने उसे यक़ीन दिलाया, "युङ-त्से, जासूस लू चिआ-चिआन के पीछे पड़े हुए हैं। उसने अभी-अभी हमारे कमरों में शरण ली है। घर तब तक मत जाओ जब तक कि सामान्य तौर से कुछ अधिक विलम्ब न हो जाये। क्या तुम वैसा करोगे जैसा मैं कह रही हूँ? मैं अभी उसका एक सन्देश लेकर जा रही हूँ।"

युङ-त्से माटी की मूरत की तरह निश्चल खड़ा सोचता रहा : "इस फूलों की महकभरी ख़ूबसूरत रात में वह अवश्य... यही कारण है कि वह अपने पति को घर जाने देना नहीं चाहती..." उसने एक टेढ़ी नज़र ताओ-चिङ पर डाली और फुफकार उठा :

"तो तुम्हारा यार तुम्हारा इन्तज़ार कर रहा है। लेकिन वह घर मेरा है, और जब भी मेरा मन करेगा मैं वापस चला जाऊँगा।" वह मुड़ा और वापस ली के कमरे में घुसकर भड़ाम से अपने पीछे दरवाज़ा बन्द कर दिया।

ताओ-चिङ पूरी तरह बेज़ार और खिन्न हो गयी। कुछ सेकेण्डों के लिए वह उस मद्धिम प्रकाश वाले गलियारे में खड़ी रही, मानो ज़मीन में गड़ गयी हो। उसकी नैसर्गिक इच्छा तो अन्दर घुसकर युङ-त्से से झगड़ पड़ने की हो रही थी, लेकिन लू चिआ-चुआन के ख़याल ने उसे शान्त कर दिया। उसने अपने दाँत भींच लिये और अपना सिर झटका। उसके चेहरे पर संकल्प की रेखाएँ खिंच गयीं। "नहीं, मेरा जाना ही बेहतर रहेगा। उससे बहस करने से कोई फ़ायदा नहीं!"

ताओ-चिङ के यहाँ पहुँचने से दो घण्टे पहले लू चिआ-चुआन ताई यू और कुछ दूसरों के साथ पूर्वी शहर के एक सिनेमा घर में गया था। फ़िल्म शुरू होने के ठीक पहले ताई यू और उसके कुछ दूसरे साथियों ने थियेटर का दरवाज़ा बन्द कर दिया और लू चिआ-चुआन जैसाकि पहले से ही इन्तज़ाम कर लिया गया था, स्टेज पर चढ़ गया और कम्युनिज़्म पर, लाल सेना की विजयों पर, और जापान का प्रतिरोध करने और देश को बचाने पर भाषण देना शुरू कर दिया। इस बीच बाक़ी लोगों ने परचे बाँट दिये। दर्शक घबराहट में पड़ गये। स्वाभाविक रूप से, लू चिआ-चुआन अपने भाषण के आख़िर तक पहुँचे, इसके पहले ही वह स्थान पुलिस और सैनिकों द्वारा घेर लिया गया। प्रत्युत्पन्नमति से उसने अपना हैट उतारा, अपने साथ लाया हुआ दूसरा लिबास पहना और भीड़ के साथ निकल गया। उसने ताओ-चिङ को अपने मुख्यालय पर यह पता करने के लिए भेजा था कि उसके दोस्तों के साथ क्या घटित हुआ।

लेकिन वह निशाने पर था। खुफ़िया पुलिस नज़दीकी से उस पर निगरानी रख रही थी और कई आदमियों द्वारा उसका पीछा किया जा रहा था। सौभाग्य से उसने

ताओ-चिङ के घर के रास्ते में जासूसों से पिण्ड छुड़ा लेने का उपाय कर लिया। वह जानता था कि वह वहाँ अधिक सुरक्षित रहेगा क्योंकि वह युङ-त्से के साथ रह रही थी जिस पर कोई भी कम्युनिस्टों से हमदर्दी रखने का शक नहीं कर सकता था। बेशक, उसने महसूस किया था कि युङ-त्से उसे ठहरने देना नहीं चाहेगा, परन्तु स्थिति नाज़ुक थी और वह कुछ समय के लिए अपनेआप को बाहर दिखाने की स्थिति में नहीं था। एक छिपने की अस्थायी जगह की उसकी तात्कालिक आवश्यकता अन्य सभी विचारों पर भारी पड़ रही थी।

यद्यपि वह अभी-अभी एक उग्र संघर्ष से होकर गुज़रा था और सारा दिन कुछ नहीं खाया था, फिर भी लू चिआ-चुआन एक फ़ौरी पत्र लिख डालने के लिए चुपचाप युङ-त्से की डेस्क के पास बैठ गया। अभी वह ध्यान केन्द्रित करने की कोशिश ही कर रहा था, कि ताओ-चिङ की छोटी जालीदार आलमारी में कुछ सफ़ेद सेंके गये रोलों पर नज़र पड़ते ही उसके मुँह में पानी भर आया, परन्तु उसे खाने की फ़ुरसत न थी। उसका कार्यभार फ़ौरी था, और वह नहीं चाहता था कि कार्य समाप्त होने से पहले ही युङ-त्से पहुँच जाये।

लू चिआ-चुआन लिख ही रहा था कि दरवाज़ा खुआ और युङ-त्से पुरानी चीनी किताबों का पुलिन्दा बाँह में दबाये धड़ाक से आ पहुँचा। उसने जब अपनी डेस्क के पास एक निश्चिन्त मालिक जैसी मुद्रा में इस आगन्तुक को देखा तो वह क्रोध से नीला हो गया। उसकी नन्ही आँखें लू चिआ-चुआन पर दहक उठीं, मानो वह कोई अजनबी हो, जो उसके घर में घुस आया हो, लेकिन उसने गुस्सेभरी गालियों को अपनी जिह्वा पर ही रोक लिया, कारण कि उसने महसूस किया कि गाली बकना अशोभनीयता और अभद्रता होगी। वह एक भद्र और चुभोने वाली भर्त्सना सोच सके इससे पूर्व ही लू चिआ-चुआन मुस्कुराया और उसके अभिवादन में सिर झुकाया।

"तो तुम वापस आ गये, भाई यू! मैंने तुम्हें महीनों से नहीं देखा।" जिस काग़ज़ पर वह लिख रहा था, उसे शान्तिपूर्वक मोड़ते हुए उठा और सीधे युङ-त्से की ओर देखा।

युङ-त्से ने भरसक अपने आक्रोश को दबाते हुए ठण्डेपन से पूछा :

"तुम मेरे घर में क्या कर रहे हो?"

"ताओ-चिङ ने मुझे यहाँ अपना इन्तज़ार करने को कहा था।"

"तुम्हें अपना इन्तज़ार करने को कहा था?" इस जवाब ने युङ-त्से को और भी भड़का दिया। उसने गुस्से से भीतर ही भीतर धधकते हुए दहकती आँखों से घूरा, लेकिन उसकी भर्त्सना करने से किसी तरह खुद को रोके रहा। वह झट घूम पड़ा, अपनी पीठ उसकी ओर फेर दी और रूखाई से बोला :

"लू चिआ-चुआन! कृपया ताओ-चिङ पर अपने उन महान मार्क्सवादी

सिद्धान्तों का जादू डालने की कोशिश करना बन्द कर दो। मैं तुम्हें याद दिला दूँ कि वह मेरी पत्नी है। कोई भी घटिया चालों से हमारी खुशी को बरबाद नहीं कर सकता।"

लू चिआ-चुआन ने शान्तिपूर्वक युङ-त्से के हड़ियल, झुके हुए कन्धों को देखा – अपनी उत्तेजना में उसने अपनी टोपी तक उतारने की तकलीफ़ गवारा नहीं की थी और उसके सिर की दीवार पर पड़ रही छाया एक बड़े काले कुकुरमुत्ते की भाँति लग रही थी, और उसकी क्षीण काया उसके डण्ठल की भाँति लग रही थी।

"क्या तुमको इस भाँति बात करते शर्म नहीं आती, भाई यू?" उसने युङ-त्से को स्थिर भाव से देखकर गम्भीरतापूर्वक कहा। मत भूलो कि ताओ-चिङ का पति होने के साथ-साथ तुम एक विश्वविद्यालयी छात्र हो, जिसने एक बार ऊँचे स्वर से देशभक्ति का इज़हार किया था। अगर तुम्हारी खुशी बरबाद हो चुकी है, तो इसके लिए दोषी तुम खुद हो।" इन शब्दों के साथ उसने शान्तिपूर्वक दरवाज़ा खोला, एक आख़िरी नज़र युङ-त्से पर डाली, जो अब भी दीवार की ओर रुख किये हुए था और बाहर निकल गया।

जब वह चला गया, तो युङ-त्से उस कुर्सी में धँस गया जिसको अभी-अभी लू चिआ-चुआन ने ख़ाली किया था, मानो सुन्न हो गया हो, और अपना सिर बाँहों में छुपा लिया। निराशा ने उसके गुस्से को काफ़ूर कर दिया था। जब पुनः उसने अपना सिर उठाया तो बिजली की रोशनी में, जो रात के इस समय में मद्धिम थी, उसका लम्बोतरा चेहरा पहले से कहीं अधिक मरियल और मनहूस दिख रहा था।

"औरतें सारी बुराई की जड़ हैं..." उसने एक रूमाल निकाला और अपने गालों पर प्रवाहित हो रहे आँसुओं को पोंछ डाला।

दीदी ली को बिना किसी कठिनाई के पा लेने, और उसे लू चिआ-चुआन का सन्देश दे देने के बाद ताओ-चिङ ने घर के लिए एक रिक्शा किया। वह अपना मिशन पूरा कर लेने पर उत्तेजित और खुश थी, लेकिन इस समय वह अपने दोस्त पर मँडराते खतरे की आशंका से ऊब-चूब हो रही थी, और अवर्णनीय रूप में बेचैनी महसूस कर रही थी। जैसे ही वह रिक्शे में बैठी, उसके विचार भटकने लगे, और यह क्रम तब तक नहीं टूटा जब तक कि वह अपनी गली के प्रवेशद्वार पर नहीं पहुँच गयी जहाँ उसे उसकी वह चेतावनी याद पड़ गयी कि उसे देखना चाहिए कि कोई उसका पीछा तो नहीं कर रहा है। अपनेआप को अपनी असावधानी के लिए कोसती हुई उसने सभी दिशाओं में नज़र दौड़ायी। फिर से आश्वस्त होकर यह देखकर कि अँधेरी सड़क वीरान थी, वह खुश हो गयी और एक चक्करदार रास्ता तय करती हुई अपने आवास पर वापस गयी। उसका हृदय आशंकाओं से भरा हुआ था।

आधी रात हो चुकी थी और कमरे में घुप अँधेरा था। जैसे ही उसने प्रवेश

किया, उसने काँपती उँगलियों से बत्ती का स्विच ऑन किया। लू चिआ-चुआन का कोई निशान तो न था, और युङ-त्से, जो दीवार की ओर अपना चेहरा किये पड़ा हुआ था, उसकी ओर घूरने के लिए मुड़ा, परन्तु बोला कुछ नहीं। बिना यह ध्यान दिये कि वह किस मूड में था, उसने झट सवाल किया :

"तुम कब वापस आये? लू चिआ-चुआन कहाँ है?"

"मुझे क्या पता? यह मेरा काम नहीं है कि मैं तुम्हारे आदरणीय दोस्त की देख-रेख करता फिरूँ।"

"तुम्हें अपनेआप पर शर्म महसूस होनी चाहिए युङ-त्से। अगर लू चिआ-चुआन आज रात गिरफ़्तार हो गया, तो मैं समझूँगी कि यह तुम थे जिसने उसके साथ गद्दारी की।" ताओ-चिङ ने यह टिप्पणी बिल्कुल सहज-स्फूर्त ढंग से कर दी थी, बिना यह अहसास किये कि किस चीज़ ने इसके लिए उसे उकसा दिया था, और इस तरह घूरा, मानो वह कोई दुश्मन हो।

युङ-त्से यकायक उठ बैठा, उसे विश्वास था कि इस समय उसकी सचमुच एक वाजिब शिकायत थी। उसने उससे बहस करने की कोशिश नहीं की। लेकिन एक ठण्डी मुस्कान के साथ ताना मारा :

"अभी मैं उस हद तक नहीं बढ़ा हूँ। लेकिन अगर कोई मेरी पत्नी मुझसे चुरा लेगा, तो मैं वह भी कर सकता हूँ।"

उन दोनों के चेहरे वैसे ही पीले थे जैसे मद्धिम लैम्प का प्रकाश।

एक क्षण की ख़ामोशी के बाद ताओ-चिङ, यह सोच-विचार करके कि हर क़ीमत पर उसे लू चिआ-चुआन का अता-पता करना ही होगा, कुछ नरम पड़ गयी, उसने अपने गुस्से को दबा लिया, और एक अपेक्षाकृत मधुर लहज़े में बोली :

"युङ-त्से, हम एक-दूसरे को ग़लत न समझें। कोई तुम्हारी पत्नी चुराने नहीं जा रहा है। स्थिति निराशाजनक है – मुझे बता दो कि वह कहाँ गया है।"

"मैं जैसे ही घर आया वह चला गया – दस बजे।" युङ-त्से ने एक कटुतर मुस्कान के साथ अपना सिर झटक दिया। "वह टिक कैसे सकता था? वह मेरे जैसे पिछड़े हुए व्यक्ति के साथ कैसे टिक सकता था। स्वभावतः जैसे ही उसने मुझे देखा, वह चला गया। फ़िक्र मत करो। मेरी अन्तरात्मा अब भी इतनी नाजुक है कि मैं किसी के ख़िलाफ़ सूचना नहीं दे सकता।"

ताओ-चिङ का दिमाग़ उधेड़बुन में पड़ा हुआ था – वह नहीं समझ पा रही थी कि खुश हो या अफ़सोस करे। उसे राहत मिली कि लू चिआ-चुआन उसके घर में गिरफ़्तार नहीं हुआ था, लेकिन यह तथ्य कि वह उसे रातभर अपने घर पर टिकाये रखने में असफल रही, यह आशय रखता था कि अगर यहाँ से जाने के बाद वह गिरफ़्तार हो गया तो वही ज़िम्मेदार होगी। विचारों में गहरे डूबी, सिर लटकाये, वह वहीं कुछ समय तक बैठी रही। फिर यह महसूस करती हुई कि कमरा वैसा ही

घुटनभरा था जैसाकि उसका हृदय बोझिल था, वह अहाते में चली गयी और एक बेर के वृक्ष के नीचे खड़ी होकर, तारोंभरे आकाश को एकटक देखने लगी। इस पीड़ादायक विचारों ने कि उसका कार्यभार अधूरा रह गया था, उसके गालों को तमतमा दिया और उसका हृदय सन्ताप से जल उठा।

"ताओ-चिङ, क्या तुम अब बिस्तर पर नहीं आओगी? क्या तुम सारी रात वहीं खड़ी रहोगी?" युङ-त्से ने कमरे में से पुकारा। प्रकटत: वह उसका इन्तज़ार कर रहा था और सो नहीं सका था। लेकिन उसने वैसे ही वहाँ खड़े-खड़े कोई ध्यान नहीं दिया; अब वह अँधेरे क्षितिज को निहार रही थी। एक लम्बे अरसे के बाद उसने एक गहरा नि:श्वास छोड़ा, मानो जाग पड़ी हो।

"मैं यूँ ही घबरा रही हूँ," उसने स्वयं से कहा। "मैं इन्तज़ार कर सकती हूँ। आख़िरकार तीन दिन बहुत जल्दी बीत जायेंगे।"

——:o:——

अध्याय 22

हड़बड़ी में सिनेमा छोड़कर ताई यू एक सँकरी गली में मुड़ गया – और खुफ़िया विभाग के जासूसों द्वारा धर लिया गया, जो उसकी टोह में लगे हुए थे।

उसे एक पूरी तरह से परदा लगी कार में एक भयावह दिखने वाले कम्पाउण्ड में ले जाया गया। उसके बन्दीकर्ता फिर उसे दो अहातों से होकर ले जाते हुए एक अप्रत्याशित रूप से ख़ूबसूरत कमरे में ले गये, जहाँ पश्चिमी सूट पहने एक नौजवान आदमी ने उसे सोफ़े पर बैठने की जगह निर्देशित की और फिर वापस चला गया। ताई यू ने अब कमरे में अकेला हो जाने पर अपनी बेचैनी के बावजूद, चप्पे-चप्पे का बारीक़ी से निरीक्षण किया। अद्भुत! यह स्थान बिल्कुल ही कारागार या तहक़ीक़ात के कमरे जैसा नहीं लग रहा था... यह स्पष्ट तौर पर किसी धनी-मानी परिवार का अध्ययन और बैठककक्ष था। पीले-हरे रेशमी परदे बड़ी खिड़कियों पर लटके हुए थे; किताबें दीवार के सहारे क़तारबद्ध काँच के फाटक लगी आलमारियों में भरी हुई थीं। एक पुरातन शैली का चीनी मिट्टी का कलश, जिसमें चिरस्थायी फूल लगे हुए थे, कमरे के बीचोबीच एक मेज़ पर रखा हुआ था, जिसके चारों ओर चुनिन्दा शराबों – माओताई, ह्वाइट वाइन और ब्राण्डी की बोतलें रखी हुई थीं। ताई यू ख़ासतौर से ढेर सारे आरामदायक सोफ़ों और बाँहदार कुर्सियों, सफ़ेद दीवारों पर सुलेखों और पेण्टिंग की चित्रावलियों को देखकर स्तब्ध रह गया था। समूचा स्थान उसे भौचक्का और विस्मित किये हुए था। कुछ क्षण पहले वह उफनती भीड़ के बीच चीख़ रहा था और संघर्ष कर रहा था, परचे बाँट रहा था और अब वह यहाँ एक शान्त, ठाठदार कमरे में विराजमान था। यह उन सीलनभरी, अँधेरी कोठरियों

और क्रूर प्रताड़ना से एकदम भिन्न था जिसकी उसने कार में ठूँसे जाते समय कल्पना की थी। फिर भी यह अप्रत्याशित परिवेश अपरिचित नहीं था। वह ऐसी ही एक दुनिया में एक लम्बा अरसा पहले रह चुका था। अठारह वर्ष के अन्त में क्रान्ति में शामिल होने से पूर्व उसके पास भी ऐसा ही शान्तिमय घर, किताबों से भरी आलमारियाँ और उसका प्रिय पेय – माओताई – प्रचुर मात्रा में था। उसके पिता ने जो एक भूस्वामी और सरकारी अहलकार था, उसको आराम और आराईश में पाला-पोसा था। लेकिन बाद में जब उसने अपने एक स्कूली दोस्त द्वारा, जो एक कम्युनिस्ट था, बतायी गयी क्रान्तिकारी सच्चाइयों को स्वीकार कर लिया, तो वह एक नयी दुनिया में प्रवेश कर गया, जो कड़ी मेहनत, संघर्षों, कठिनाइयों और ख़तरों की दुनिया थी। तब से एक लम्बा समय गुज़र चुका था, जब वह धूल-गर्द से बचाव के लिए पल्लों वाली पुस्तक-आलमारियों के बारे में सोचता था; शराब के बारे में सोचता था, ख़ूबसूरत परदों और ख़ूबसूरत पेण्टिगों के बारे में सोचता था। फिर भी आज अपनी गिरफ़्तारी के एक घण्टे के भीतर ही जब उसने फिर इन विलास-सामग्रियों को देखा, तो उसका लम्बे समय से विस्मृत हो गया अतीत उसे पुनः याद हो आया। उसे लगा, मानो वह एक स्वप्न-लोक में है।

मख़मली सोफ़े पर बैठकर, चारों ओर चुपचाप नज़र डालते हुए, वह बहुत घुली-मिली संवेदनाओं से भरा हुआ था। तभी एक चमकदार दरवाज़ा खुला और चुस्त पोशाक पहने भारी मेकअप किये एक महिला अन्दर आयी, उसके पीछे-पीछे पश्चिमी शैली का सूट पहने एक अधेड़ उम्र का मर्द था। इसके पहले कि वह तय करे कि उसे क्या दृष्टिकोण अपनाना चाहिए, उन्होंने उसकी बग़ल में आकर अभिवादन में ऐसे हाथ बढ़ाये, मानो वे पुराने दोस्त हों।

"तुम कैसे हो, श्री ताई!" मर्द ने उसका हाथ थामने की कोशिश की, लेकिन ताई यू ने उस पर एक घबराहटभरी दृष्टि डालते हुए, उसे रोक दिया। वह एक तरफ़ मुड़ा कि महिला उसकी तरफ़ मुख़ातिब हुई, जिसने एक लाड़भरी मुस्कान के साथ अपना हाथ उसकी तरफ़ बढ़ा दिया। घबराहट में अपना सिर नीचा किये, वह उसके रूबरू होने से कन्नी काट गया।

ये क्वोमिन्ताङ एजेण्ट बारी-बारी से धमकियों और "नरम" चालों का प्रयोग करने लगे, और जल्द ही ताई यू डगमगाने लगा। अतीत की आरामदेह सुपरिचित दुनिया और उसके वर्तमान ठाठदार परिवेश ने उसे एक चुम्बक की तरह आकर्षित कर लिया और उसके कमज़ोर प्रतिरोध को तोड़ डाला। आधा घण्टा बीतने से पहले ही वह अपने मेज़बानों के साथ गोल मेज़ के पास माओताई पीते हुए बैठा था। उसे इसके तुरन्त बाद ही छोड़ दिया गया। इस आरामदेह और मनपसन्द ढंग से सुसज्जित कमरे से बाहर निकलने के ठीक पहले, उसके मेज़बान ने एक प्रशंसाभरी मुस्कान के साथ कहा :

"तुम एक होशियार आदमी हो, श्री ताई। अगर तुम अपना ध्यान रखो तो तुम बहुत आगे जाओगे। मैं नहीं समझता कि तुम जानते होगे कि मैं कौन हूँ? मेरा नाम हू मेङ-एन है। मैं क्वोमिन्ताङ के पेइपिङ मुख्यालय की कमेटी में हूँ। भविष्य में हमें ज़रूर एक-दूसरे से नज़दीकी सम्पर्क बनाये रखना चाहिए।"

महिला भद्रतापूर्वक मुस्कुरायी और धीरे-से बोली, "मैं वाङ फेङ-चुआन हूँ। हम अक्सर मिलते रहेंगे, श्री ताई।"

इस तरह यू क्वोमिन्ताङ के पेइपिङ मुख्यालय से बाहर चला आया। इस तथ्य का फ़ायदा उठाते हुए कि कम्युनिस्ट पार्टी में कोई भी उसकी गिरफ़्तारी और उसकी बाद की कारगुज़ारियों के बारे में नहीं जानता था, उसने इस तरह का भाव प्रदर्शित किया जैसे कुछ हुआ ही नहीं था, और पार्टी से पुनः सम्पर्क कायम कर लिया। जल्दी ही उसके एक समय के कई क्रान्तिकारी दोस्त गिरफ़्तार हो गये और उनके मुख्यालयों पर बार-बार छापे पड़े। लू चिआ-चुआन उनमें से एक था जो इस गद्दार द्वारा दी गयी सूचना के आधार पर गिरफ़्तार कर लिये गये थे।

जब लू चिआ-चुआन युङ-त्से द्वारा घर से बाहर निकाल दिया गया, तो वह अपने एक दोस्त के आवास पर लौट गया जिसके साथ वह ठहरा करता था, और चौखट लाँघने से पहले ही गिरफ़्तार कर लिया गया। वह इस घटना के बनिस्पत बहुत पहले से ही तैयारी कर चुका था, और सभी आवश्यक सावधानियाँ बरत चुका था। दुश्मन उसके पास से कोई आरोपकारी दस्तावेज़ नहीं पा सका था, न ही उसके दोस्त के कमरे की ली गयी तलाशी में क्रान्तिकारी गतिविधियों से सम्बन्धित कोई रहस्योद्घाटन हो पाया था। वह मिलिटरी पुलिस की तीसरी रेजीमेण्ट के मुख्यालय में, हिरासत में, रखा गया था, लेकिन वे उससे कोई बात मनवा लेने में समर्थ नहीं हुए थे। इस तरह लू चिआ-चुआन के उस कठिन संघर्ष की शुरुआत हुई जो जिसे सभी कम्युनिस्टों को कारावास और अदालतों में करना पड़ता है।

पहले-पहल तो दुश्मन ने उसे उन तरीक़ों से तोड़ने की कोशिश की जो ताई यू के साथ सफल सिद्ध हो चुके थे। उनके प्रयास बेकार सिद्ध हुए, और जिस दौरान वे उसको क़ायल करने की कोशिश कर रहे थे उस समय का सदुपयोग करते हुए उसने एक पार्टी शाखा गठित कर डाली और जेल अधिकारियों के ख़िलाफ़ संघर्ष चलाने लगा। जब दुश्मन ने महसूस किया कि वह इतना दृढ़संकल्प है कि उसे गद्दार नहीं बनाया जा सकता, तो उन्होंने अपना रणकौशल बदल दिया और उसे अमानवीय यन्त्रणाएँ देने लगे।...

आधी रात को लू चिआ-चुआन की चेतना लौटी और उसने पाया कि वह अपनी कोठरी के फ़र्श पर पड़ा हुआ प्यास की पीड़ा से छटपटा रहा है। उसके सूखे, फटे होंठ, जिन पर ख़ून के थक्के थे, जल रहे थे और उसके मुँह में एक कड़ुवा,

नमकीन स्वादभरा हुआ था।

"पानी...पानी..." वह कराह उठा। उसने करवट लेने की कोशिश की, लेकिन शूल की तरह उठ रहे दर्द ने उसे बेज़ार कर दिया, और अपने दाँत पीसते हुए वैसे ही पड़ा रहा।

"पानी..." लगभग अचेत अवस्था में वह सिर्फ़ असहनीय प्यास के बारे में ही सचेत था। तथापि, इससे उसे यह महसूस हुआ कि वह अभी जीवित था। उसने कोशिश करके अपनी आँखें खोलीं और उस अँधेरी कोठरी में चारों ओर देखा। सलाख़दार खिड़की के उस पार दीवार से ऊपर की ओर उसने कुछ तारों की झलक देखी जो गहन आकाश के एक टुकड़े में टिमटिमा रहे थे। दूर एक सन्तरी के चलने की भारी धमक सुनायी दे रही थी। कुछ क्षुधातुर चूहे उसके निकट भागदौड़ कर रहे थे, ऐसा लग रहा था कि वे उसके ख़ून से लथपथ अंगों पर टूट पड़ने को आतुर थे।... जैसे ही,धीरे-धीरे और कष्टसाध्य रूप से ही, उसने अपनी मन:शक्ति पर फिर से क़ाबू पा लिया, तो एक विचार उसके मन में सर्वोपरि हो गया, जिसने उसे उसकी कष्टदायक प्यास और वेदनाकारी पीड़ाओं को भूल जाने में समर्थ बना दिया।

"मुझे ज़रूर बताना होगा...अपने कॉमरेडों को..." अपने दर्द को क़ाबू में करते हुए उस सीलनभरे फ़र्श पर उसने अपने को और कड़ा कर लिया। "मुझे बताना ही होगा...उन लोगों को..."

वह पेइपिङ के सशस्त्र पुलिस के कारागार में दो माह से अधिक अवधि से पड़ा हुआ था। क्रूर यातनाएँ उसके संकल्प को कमज़ोर करने में सफल नहीं हो सकी थीं। उसने डटकर उनका मुक़ाबला किया था, यद्यपि उसे मरने की सीमा तक पीटा गया था। उसने सार्वजनिक मुक़दमे और राजनीतिक बन्दियों के साथ बेहतर व्यवहार के लिए जेल के भीतर भूख-हड़ताल कर दी थी। हड़ताल के तीसरे दिन लू चिआ चुआन को उसकी कोठरी से ठीक तभी एक दूसरी जिरह के लिए बाहर घसीट लाया गया, जब वे राजनीतिक क़ैदियों को दी गयी निर्मम यातनाओं और अमानवीय व्यवहार के बारे में एक विवरण तैयार कर रहे थे, जिसको एक "सूत्र" के द्वारा भेजा जाना था और आम जनता को इससे वाक़िफ़ कराना था। उसके बाद जो यातना दी गयी उसके दौरान, उसकी दोनों टाँगें तोड़ दी गयीं और उसकी दसों उँगलियों में तब तक सुइयाँ चुभोयी जाती रहीं जब तक कि उनसे ख़ून नहीं बहने लगा। उस पर तब तक कोड़े बरसाये जाते रहे जब तक कि उसके शरीर में कोई हरक़त बाक़ी रही, जो इतना काट-फाड़ और धुन दिया गया था कि उसकी शिनाख़्त नहीं की जा सकती थी। उसके होंठों से सूचना की कोई चूँ तक नहीं निकली। ली ता-चाओ का विचार, जिसने उसे पार्टी के लिए शिक्षित और प्रशिक्षित किया था, उसका अटल प्रेरणा-स्रोत था। वह जिस उद्देश्य के लिए समर्पित था उसके लिए अपने ख़ून का आख़िरी कतरा भी बहा देने को तैयार था... चालाक दुश्मन जानबूझकर उसे मार नहीं

डाल रहा था। एक दिन फ़र्श पर वह लगभग अचेत ही था, कि उसने अपने दो भावी जल्लादों को कहते सुना, "यह आदमी तो ख़त्म हो चुका। अब उसे क्यों तकलीफ़ दी जाये? आसान तो यही होगा कि उसे गोली दाग दी जाये और काम तमाम कर दिया जाये।"

"उसके लिए एक आसान रास्ता? नहीं, हमारा कमाण्डेण्ट उससे भारी आस लगाये बैठा है। ज़्यादा सम्भावना है कि वह पुरस्कार पाने के लिए उसे नानकिङ भेज देगा।"

जब लू चिआ-चुआन की चेतना लौटी और उसने एक बार फिर मौत पर विजय पा ली, तो अपने कॉमरेडों को उनके ख़तरे से सचेत करने के उसके दृढ़संकल्प ने उसकी समस्त पीड़ा को पीछे छोड़ दिया।

एक प्रयास में उसने अपनी सूजी हुई आँखों को खोल दिया और उस अन्धकार में ग़ौर से देखा – यह पुरानी कोठरी न थी! वह एक क़तार के अन्तिम छोर पर एक छोटी-सी कोठरी में था, जिसके छोटे-से लोहे के दरवाज़े में एक छोटा-सा सूराख था। इस सूराख से वह भूरी दीवार का एक टुकड़ा और कँटीली तारों को देख सकता था। लेकिन इस कोठरी की खिड़की से बाहर तारांकित आकाश था, स्पष्टत: दुश्मन ने त्वरित कार्रवाई की थी। उन्होंने उसे हटा दिया था और शायद कुछ दूसरों को भी, ताकि राजनीतिक क़ैदियों के पार्टी-संगठन और दुराग्रहपूर्ण भूख-हड़ताल को तोड़ा जा सके। उन्होंने उसे इस कोठरी में लाकर बन्द कर दिया था जिससे कि इसके कॉमरेडों से किसी भी प्रकार के सम्पर्क को रोका जा सके... वह अपनी स्थिति पर विचार करता हुआ, चुपचाप पड़ा हुआ था। उसने सोचा कि शायद उसे जल्दी ही हटा दिया जायेगा अथवा बाहर ले जाया जायेगा और शूट कर दिया जायेगा। जो कुछ भी घटित हो, उसे कोई उपाय ढूँढ़ना ही होगा, अब भी उसमें जीवन की एक इतनी चिनगारी शेष है, कि वह अपने कॉमरेडों को सन्देश दे सके।

वह अपने शरीर पर ज़ोर देने लगा, जिस पर वह नियन्त्रण लगभग खो चुका था।

उसकी टाँगें तोड़ दी गयी थीं, और हड्डियों को सँभालने वाली मांसपेशियों की धज्जी-धज्जी उड़ गयी थी, और उनसे ख़ून बह रहा था। उसकी पीठ और बाँहें उसके द्वारा झेली गयी यातना से अर्द्ध-लकवाग्रस्त हो चुके थे। उसके सूखे हुए, ख़ून-सने हाथ भारी-भरकम हथकड़ियों से बोझिल थे। फिर भी वह कुछ करने के लिए संकल्पबद्ध था। उसने तय किया कि उसकी एकमात्र कोशिश होगी दीवार तक पहुँच जाना, और इस तरह अपने कॉमरेडों से सम्पर्क स्थापित करना।

उसने अपनी आँखें बन्द कर लीं और एक क्षण के लिए ख़ामोश रहा, ताकि वह अपनी बची-खुची सामर्थ्य को समेट सके। उसने लुढ़ककर जाने की कोशिश की, परन्तु यह असम्भव साबित हुआ। अपने दाँत किटकिटाते हुए उसने अपनी पूरी

शक्ति से कोशिश की, लेकिन एक बार फिर हरक़त करने में असफल रहा। मर्मान्तक पीड़ा की एक झुरझुरी उसके बदन में दौड़ गयी, और वह फिर चेतना खो बैठा।

जब देर रात गये उसकी चेतना लौटी और उसने आकाश के उस टुकड़े और धुँधले तारों को देखा, तो उसकी मानसिक पीड़ा उसकी शारीरिक पीड़ा से कहीं अधिक बढ़ गयी।

"...क्या जल्द ही सवेरा हो जायेगा?...जब दिन का प्रकाश हो जायेगा... क्या वे मुझे दिन का प्रकाश रहने तक ज़िन्दा रहने देंगे?" उसने उस रात की घटनाओं को याद किया। दस बजे के क़रीब, जब अधिकतर क़ैदी सो रहे थे, उसे अप्रत्याशित रूप से पूछताछ के लिए बाहर ले जाया गया। उसकी पूछताछ एक बुरी तरह से रौशन कमरे में, मोटे पीले चेहरे वाले एक व्यक्ति द्वारा की गयी, जो एक भारी-भरकम भूरी डेस्क के पीछे बैठा था। इस आदमी ने धूर्तताभरी मुस्कान के साथ उसका स्वागत किया।

"तुम एक होशियार नौजवान हो, है न, फेङ शेन! यह बहुत ही बुरा है कि तुम अपने कारनामे जारी नहीं रख सकते... मुझे तुम अपने नये पार्टी संगठन के सदस्यों के नाम बताओ। जल्दी अभी!...तो तुम नहीं बोलोगे? अब भी नहीं, जबकि तुम्हारी यह गत बना दी गयी है?...जेल के भीतर कम्युनिस्ट पार्टी की शाखा गठित करना, अपने तथाकथित अधिकारों के लिए भूख-हड़ताल का नेतृत्व करना...तुम्हीं इन सबके सरगना हो। अब तुम तथ्यों को हमसे छिपा नहीं सकते... ठीक है, मैं देख रहा हूँ कि तुम अपने सभी कॉमरेडों की बलि चढ़ा देने पर तुले हुए हो। लेकिन मैं तुमको बता दूँ कि हम उन सब के नाम जानते हैं और तुम्हारी सभी योजनाओं को भी जानते हैं। और इससे भी बड़ी बात तो यह है कि तुम बाहर किसी को सन्देश भेज सको, इससे पूर्व ही हम तुम्हारे पूरे गिरोह को शूट करने जा रहे हैं।"

लू चिआ-चुआन ने अपने दिमाग़ को स्थिर बनाये रखा और इस थुलथुल बदमाश की धमकियाँ और रिश्वतों के बावजूद ख़ामोश रहा। वह जानता था कि अगर दुश्मन के पास सचमुच ही जानकारी होती जिसका कि वे दावा करते थे, तो वे उस पर समय ज़ाया नहीं करते। वे सिर्फ़ उसे झाँसा दे रहे थे। उसने यह भी अनुभव किया कि, यह भी हो सकता है कि उसके संगठन की गतिविधियों और योजनाओं के साथ ग़द्दारी की गयी हो। अब हालात ऐसे हो गये थे कि कुछ क़ैदी शुबहे में मारे जा सकते थे। इस वर्तमान आपालकाल में, चूँकि उसके कॉमरेड इस अचानक हमले से बेख़बर थे, इसलिए जितना जल्दी हो सके उसे इस कुचक्र का परदाफ़ाश करना ही होगा, ताकि वह इस त्रासदी को निष्फल कर सके और संघर्ष को अन्तिम विजय तक चलाते रहने के योग्य बना सके।

एक बार फिर उसने अपने अकड़े शरीर को हिलाने-डुलाने की कोशिश की।

उसने अपना सारा भार अपनी बाँहों पर डाल दिया और अपने दाँत पीसते हुए, तनी बाँहों का सहारा लेकर अपनेआप को उठा लिया। ख़ून और पसीने की धार उसके शरीर से बह चली।

हाँफते और सन्निपात जैसी हालत में वह अब भी भयानक प्यास से दग्ध था जो उसकी शक्ति के बचे-खुचे अंश को निचोड़े जा रही थी। वह मूर्छा में डूब रहा था। उसने अपने फटे हुए, सूजे होंठों को चाटा और लार से अपना गला तर करने की कोशिश की, लेकिन उसका मुँह पूरी तरह सूखा हुआ था। वह अपनी उँगलियों से ज़मीन खरोचने लगा, इस कोशिश में कि कुछ नम मिट्टी अपने मुँह में डाल लेने के लिए उठा सके, लेकिन वह ऐसा कर सके, इसके पहले ही उसके शरीर में दर्द की सनसनाहट दौड़ गयी।

आस-पास में मद्धिम स्वरों और भारी बूटों के चलने की धमकभरी आवाज़ सुनायी दी। पिछले दो महीनों या अधिक के उसके अनुभव के आधार पर लगाये गये अनुमान के अनुसार भोर के ज़रूर तीन बज गये होंगे, इसी समय पिछली रात पहरेदार ड्यूटी पर आये थे। एक घण्टे में या इसी के आस-पास सवेरा हो जायेगा, और तब – लेकिन नहीं, उसे किसी भी क्षण बाहर घसीटकर ले जाया जा सकता है... उसका अपना जीवन, उसकी व्यक्तिगत चिन्ता कोई मायने नहीं रखती, लेकिन पार्टी के हित की, समष्टिगत हित की...हर क़ीमत पर रक्षा की जानी चाहिए। पीड़ा के सामने अपनी कमज़ोरी के लिए उसने अपनेआप को धिक्कारा। जब तक उसमें साँस है, जब तक उसकी शिराओं में ख़ून की एक बूँद भी शेष है, तक तक उसे दुश्मन और अपने स्वयं के "विद्रोही" शरीर के ख़िलाफ़ लड़ते जाना है। घायल शेर की भाँति एक तीव्र ऐंठन के साथ वह उलट पड़ा, लेकिन फिर चेतना खो बैठा।

जब वह होश में आया तो उसके होंठ चिपचिपे फ़र्श से सटे हुए थे। वह फीकेपन से मुस्कुरा दिया। उसने अपनी आँखें बन्द कर लीं, वह अपने हृदय की उग्र धड़कन और शरीर को भेद रही पीड़ा से बेपरवाह हो गया, और स्वयं को अपनी कोहनियों के बल पर इंच दर इंच आगे की ओर घसीटने लगा।

वह दीवार तक पहुँचने से पूर्व दो बार मूर्च्छित हुआ। लेकिन जिस क्षण वह पुन: होश में आया, उसने एक अत्यधिक प्रयास किया और मानो अक्षय जीवन्तता से भरकर वह दीवार तक पहुँच गया और काठ की खूँटियों की तरह भोथरी और सख़्त बन गयी उँगलियों से उसने ठक...ठक...ठक किया।

कई मिनट बीत गये। कोई उत्तर नहीं। उसकी बेचैनीभरी ठकठकाहट का एकमात्र उत्तर फ़र्श पर इधर-उधर लड़ते-भिड़ते चूहे दे रहे थे।

जल्दी ही पौ फटने वाली थी। खिड़की से बाहर तारे धूमिल होने लगे थे। उसका समय तेज़ी से बीतता जा रहा था, फिर भी वह जेल में अपने अन्तिम कार्यभार को पूरा नहीं कर पाया था।

"मनुष्य सिर्फ़ एक बार जीता है..." उसने अपनेआप से कहा और एक फीकी, खुद की खिल्ली उड़ाने वाली मुस्कान उसके चिथड़ाये, नीलाभ चेहरे पर खिंच गयी। "क्या! क्या मुझे ऐसे ही ख़त्म हो जाना है? सिर्फ़ उन कसाइयों का इन्तज़ार करते हुए कि वे मुझे बाहर ले जायें और शूट कर दें? अपने कॉमरेडों को फँसा हुआ देखते हुए और कुछ न करते हुए? हरगिज़ नहीं..."

किसी तरह वह अपनेआप को दूसरी ओर की दीवार तक घसीट ले गया। फिर उसने खटखटाया, और फिर कोई उत्तर नहीं मिला। अगर अब भी कोई उत्तर नहीं मिला; तो उसके सारे प्रयत्न बेकार होंगे। इसका मतलब होगा कि पास में कोई कॉमरेड न था। तक क्या हो? वह आगे कुछ सोचना गवारा न कर सका।

ठक-ठक-ठक। ख़ून एक बार फिर उसके घावों से रिसने लगा था परन्तु इसकी परवाह किये बिना वह बार-बार ठकठकाता रहा।

दूसरी ओर से हुई ठकठकाहट ने उसे ख़ुशी से पागल बना दिया। उसने अपने ही लोगों में से एक से, एक अचूक उत्तर प्राप्त कर लिया था। अत्यधिक उत्तेजित होकर, वह फिर मूर्छित हो गया। जब वह फिर से होश में आया, तो बहुत अशक्त हो गया था, लेकिन आश्वस्त होकर कि उसके संकेत में व्यवधान डालने के लिए आस-पास कोई और दूसरी आवाज़ नहीं थी उसने मोर्स कोड में एक सवाल ठकठकाया।

"तुम कौन हो?"

"नम्बर आठ...ली लिआङ।"

"नम्बर एक...लू..." उसने अपनी आँखें बन्द कर लीं और फिर चालू होने से पहले एक सेकेण्ड के लिए सुस्ताया। "फ़ौरी सन्देश। जल्दी से सम्प्रेषित करो। जेल की हालत बदतर हो चुकी है। दुश्मन हमारी योजना को जानता है। लेकिन संघर्ष अवश्य जारी रहना चाहिए। हमारी भूख-हड़ताल और क़ैदियों की हत्या कर डालने की दुश्मन की स्कीम की ख़बर बाहर की दुनिया में ज़रूर पहुँच जानी चाहिए। जल्दी करो। जेल के कॉमरेड ज़रूर चौकस रहें और पहले से अधिक निकटता के साथ एकबद्ध हो जायें..."

वह जो कहना था, कह चुका था। उसके शरीर से सारा ख़ून निचुड गया प्रतीत होता था, लेकिन लू चिआ-चुआन का चेहरा एक ऐसी मन्द मुस्कान से देदीप्यमान था जो एक ऐसी ख़ुशी से फूट पड़ी थी जिसे वह पहले कभी नहीं जानता था। अब, अन्त में उसके मन पर से यह बोझ उतर जाने पर वह शरीर के भारी बोझ को ज़मीन पर डाल सकता था। उसका सिर ज़मीन पर धस्स से पड़ गया और वह पूरी तरह से जड़ हो गया।

——:o:——

अध्याय 23

तीन दिन गुज़र गये, लेकिन लू चिआ-चुआन नहीं प्रकट हुआ। दस दिन बीत गये, फिर एक माह, परन्तु तब भी वह नहीं आया।

क्या हो सकता था?

ताओ-चिङ ने उसके आश्वासन को स्पष्ट याद किया कि वह तीन दिनों में ही अपने सामानों के लिए वापस आ जाने वाला था। लेकिन उसका कोई अता-पता न था। हर गुज़रते दिन के साथ वह निराश होती जाती, और जैसे ही उसकी चिन्ता बढ़ती जाती, वैसे ही वह अपने को धिक्कारती और युङ-त्से पर झल्लाती जाती। वह लू चिआ-चुआन की ख़बर पाने को बेकरार थी, लेकिन नहीं जानती थी कि किससे सम्पर्क करे। उनके परस्पर सम्पर्क का माध्यम सू निङ गिरफ़्तार हो चुका था और लो ता-फाङ उत्तर चाहार चला गया था। वह दीदी ली के पुराने पते पर गयी परन्तु दीदी ली भी कहीं अन्यत्र जा चुकी थी और उसके पड़ोसियों में से कोई भी नहीं जानता था कि वह कहाँ गयी।

जैसे-जैसे दिन बीतते गये ताओ-चिङ अधिकाधिक चिन्तित महसूस करने लगी और उसकी अनिष्ट की आशंका गहरी होती गयी।

"क्यों नहीं मैं उसे यहीं ठहरने देने का मन बना सकी। मैं क्यों उसकी और अधिक सहायता नहीं कर सकी?... माना कठिनाइयाँ थीं, लेकिन क्या मैं उनसे पार नहीं पा सकती थी?" इसको उसने एक कॉमरेड के साथ गद्दारी समझा, जिसके पश्चाताप से बिंधकर और उस दुर्बलता और ढुलमुलेपन से खीजकर, जिसके चलते वह एक ऐसे व्यक्ति के प्रति चूक कर गयी थी जिसकी वह इतनी गहराई से सराहना करती थी। वह युङ-त्से के पिछड़ेपन और स्वार्थपरता से घृणा करने लगी। वेदनापूर्ण विचारों से घिरी वह सारा दिन खिड़की के पास बैठकर, अहाते में बेर के एकाकी वृक्ष की पन्ने जैसी पत्तियों को मनहूसियत से निहारती रहती। दुनिया धुँधली बन गयी मालूम पड़ती थी और खुशी के दरवाज़े, जो उसकी दस्तक पर खुल चुके थे, फिर से उसके प्रवेश करने से पहले ही बन्द हो चुके थे। जब कोई आस-पास न होता, तो वह लू चिआ-चुआन द्वारा छोड़े गये ब्रीफ़केस को निकालती और उस पर उँगली फिराती – उसने उसके निर्देशों के अनुसार इसे जलाया नहीं था – इस उम्मीद में कि वह इसे माँगने वापस आयेगा। पश्चाताप और चिन्ता ने उसे विवर्ण और मरियल बना दिया।

"बात क्या है? क्या कोई बात तुम्हारे दिमाग़ में है?" एक दिन युङ-त्से ने उसमें हुए बदलाव को ग़ौर करते हुए पूछा। उसने सिर्फ़ सिर हिला दिया। लेकिन वह अपने सवालों पर तब तक ज़िद्द करता रहा जब तक कि उसने धैर्य न खो दिया और फूट न पड़ी :

"कोई भी विवेक रखने वाला चैन से नहीं रह सकता। कौन जाने उसके साथ विश्वासघात हुआ है या नहीं..."

युङ-त्से ने अपनी संकीर्ण आँखों से उसकी ओर घूरकर देखा, उसके चेहरे पर हँसी उड़ाती हुई दर्पभरी मुस्कान थी।

"तो यह सब तुम्हारे आदरणीय दोस्त श्री लू की वजह से है... इस मामले में मैं तुमको सलाह देता हूँ कि उसे भूल जाओ। उसकी तरह का कोई भी दुस्साहसी कभी अच्छे नतीजे पर नहीं पहुँचा।"

ताओ-चिङ बिना एक शब्द बोले एक क्षण के लिए सीधे उसकी ओर देखती रही। फिर उसकी बाँह कसकर पकड़ते हुए, वह निराशा में चिल्ला उठी : "क्या यह सच है? तुमने कैसे सुना?...क्या वह गिरफ़्तार हो चुका है?"

युङ-त्से ने एक गुस्ताख़ीभरे विश्वास के भाव के साथ हामी भरी। वास्तव में युङ-त्से को कुछ भी जानकारी न थी कि लू चिआ-चुआन के साथ क्या हुआ था। उसने सिर्फ़ यही सोचा था कि ताओ-चिङ की उसके प्रति दिलचस्पी को ख़त्म करने का यही सर्वोत्तम तरीक़ा था।

ताओ-चिङ अपने अवलम्ब के टूट जाने पर मेज़ के पास थर्राकर बैठ गयी, अपना सिर हाथों में थाम लिया और रोने लगी। दुर्भाग्य ने, जो एक ऐसे कॉमरेड पर टूट पड़ा था जिसको उसने प्यार किया था और आदर दिया था, उसको युङ-त्से की ईर्ष्याभरी व्यंग्योक्तियों के प्रति बेख़बर बना दिया। वह अपने पतले होंठ कसकर भींचे हुए, उसकी बग़ल में तब तक खड़ा रहा, जब तक कि उसका गुस्सा बरदाश्त से बाहर नहीं हो गया।

"मैं यक़ीन नहीं कर सकता कि तुम्हारे कम्युनिज़्म ने तुमको इतना बेज़ार बना दिया है।" वह चिल्लाया, "कितनी दुखद बात है कि वह पकड़ लिया गया है और तुम्हारे मीठे सपने व्यर्थ हो गये... लेकिन मत चिन्ता करो। तुमको अब भी ढेर सारे दूसरे 'कॉमरेड' मिल जायेंगे..."

"चुप रहो।" ताओ-चिङ उछल पड़ी, वह गुस्से से काँप रही थी। "मेरी मुसीबत का मज़ाक़ उड़ाने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई।" एक क्षण के विराम के बाद वह सिसक पड़ी, "तुम इतने हृदयहीन कैसे हो गये। एक होनहार नौजवान गिरफ़्तार हो गया – उसका जीवन ख़तरे में है – लेकिन तुम तो बस मज़ा ले सकते हो और मज़ाक़ उड़ा सकते हो...बस मुझे अकेला छोड़ दो।" युङ-त्से को एक तरफ़ धकेलकर वह कमरे से निकल भागी।

जब वह उस रात घर आयी तो दोनों ने आँसू बहाये – दोनों ही ने अपने दुखी दाम्पत्य का रोना रोया।

ताओ-चिङ के लिए जीवन एकदम नीरस हो चुका था। उसे महसूस होता था, मानो वह एक वीरान टापू है, जो दोस्तों, रिश्तेदारों या ऐसे हर किसी से भी दूर है,

जो उसकी पीड़ाओं और आकांक्षाओं को समझ सके। लेकिन एक बात स्पष्ट थी। दो भिन्न दृष्टिकोण रखने वाले और दो भिन्न राह चलने वाले ये दो लोग अब एक साथ नहीं रह सकते थे। यह कल्पना करना खुद को धोखा देना था कि "प्रेम" स्वयं उनको बाँधे रखने के लिए पर्याप्त था – वे दोनों एक-दूसरे के मन की शान्ति नष्ट करने के लिए विवश थे।

एक दिन उसने लू चिआ-चुआन का ब्रीफ़केस पुनः बाहर निकाला, ताकि सामाग्रियों को जला दे, कारण कि अब उसके लौटने की कोई सम्भावना नज़र नहीं आती थी। कुछ बेचैनी से उसे खोलते हुए उसे लाल, हरी और सफ़ेद पर्चियों के लपेटे हुए पुलिन्दे मिले, जिससे उसके मन में एक टीस उठी जो असंगत रूप से खुशी से मिश्रित हो गयी। "दोस्त!" उसने स्वयं से कहा, "मैं महसूस करती हूँ कि तुम यहाँ एक बार फिर मेरे साथ हो।"

जब लू चिआ-चुआन ने उसे ब्रीफ़केस दिया था तो उसने, उसके भीतर क्या है, यह जानने की उत्सुकता दबाये रखी थी, और ब्रीफ़केस को फटे-पुराने सूती गद्दे के एक बण्डल में छुपा कर रख दिया था। लेकिन आज उसने दरवाज़ा बन्द किया, पर्चियों को मेज़ पर फैलाया और चाव से उन्हें पढ़ने लगी। उनमें बारीक़ काग़ज़ पर छोटे किन्तु पठनीय अक्षरों में नारे लिखे हुए थे।

क्वोमिन्ताङ के चौथे "घेरेबन्दी और दमन" अभियान के ऊपर लाल सेना की महान विजय का उत्सव मनाओ!

चीन के लोगो, हथियार उठाओ! जापानी साम्राज्यवाद मुर्दाबाद!

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ज़िन्दाबाद!

चीनी सोवियत सरकार ज़िन्दाबाद!

... ...

उनमें चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की पेइपिङ शहर कमेटी और पेइपिङ जापान विरोधी लीग द्वारा जारी किये गये दो लम्बे वक्तव्य भी थे।

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी! जैसे ही ताओ-चिङ ने इस प्यारे, प्रेरणास्पद नाम को पढ़ा, उसकी उँगलियाँ पर्चियों के चारों ओर कस कर बन्द हो गयीं और उसके सारे डर-भय और चिन्ताएँ विगलित हो गयीं। उसे महसूस हुआ मानो वह किसी नज़दीकी और प्रिय व्यक्ति से एक लम्बे विछोह के बाद मिल रही हो। किसी भी हालत में वह इतनी क़ीमती चीज़ों को जला नहीं सकती थी। उनको अपने सीने से चिपटाये, उसे अपने मन की तरंग में लगा कि सभी प्रतिक्रियावादियों को चुनौती देने वाली इन लाल और हरी पर्चियों ने उसकी स्वयं की तकदीर को कम्युनिस्ट पार्टी की तकदीर से जोड़ दिया था। और निश्चय ही वे फिर कभी जुदा नहीं हो सकेंगे।

उसने इसे एक अत्यधिक सम्मान और ख़ुशी माना कि उसे वे पर्चियाँ रखने के लिए दी गयी थीं जो उसे रखने के लिए दी गयी थीं... उसके हौसले बुलन्द हो गये, जीवन में उसकी आस्था पुनर्जीवित हो उठी।

"मैं इनका क्या करूँगी अगर इनको नहीं जला देती?" उसने उस रात स्वयं से पूछा। वह वापस नहीं आयेगा। और इन पर्चियों को रखना ख़तरनाक था। उसे गोर्की की 'माँ' व्लासोवा का ख़याल हो आया, जो एक फ़ैक्टरी में पर्चियाँ ले जाती थी और उन्हें मज़दूरों में बाँटती थी। "हाँ, मुझे भी यही करना चाहिए।" उसने ख़ुद से कहा। हमले की एक बढ़िया योजना बना रहे एक सैनिक की भाँति, वह इतनी उत्तेजित हो गयी थी कि सो न सकी। लेकिन वितरण कैसे किया जाये? वह अनुभवहीन थी, लेकिन इसमें निहित ख़तरों को जानती थी। रात के अधिकांश समय तक इसी मामले पर सोचते रहने के बाद, उसने वही करने का निश्चय किया जो एक बढ़िया योजना प्रतीत हुई।

तीन दिन बाद, वह कार्रवाई में लग गयी।

गरमी की रात थी। निरभ्र तारा-टँके आकाश के आर-पार आकाशगंगा बारीक़, चमकती रेत की भाँति लग रही थी, जबकि नीचे धरती सोयी पड़ी थी। वीरान हो चुकी गलियाँ ख़ामोश थीं, सिवाय हवा की फुसफुसाहट और कभी-कभार भौंक रहे कुत्तों के। इस भुतहा मुर्दा ख़ामोशी को चीरकर, और पीकिङ विश्वविद्यालय के लाल भवन के पास की सँकरी गलियों में घुसते और बाहर निकलने हुए, एक फ़ैशनेबुल युवती बढ़िया सफ़री हैण्डबैग लिये हुए चल रही थी। वह आगे बढ़ती गयी, हल्की से हल्की आवाज़ पर भी चौंकन्ना हो उठती हुई। दूर से आने वाली पगध्वनियों या किसी भी दूसरी ध्वनि से वह ठिठक जाती और अपनी छरहरी आकृति को दीवार से सटाकर, कान लगाकर, साँस रोककर सुनने लगती। उसकी विस्फारित आँखें अँधेरे में झिलमिल करतीं, और उसका हृदय इतने ज़ोर से धड़कता कि वह उसे सुन सकती थी। जब वह आश्वस्त हो जाती कि ख़तरे की कोई बात नहीं, तो वह राहत महसूस करती और एक निश्छल, बालसुलभता से मुस्कुरा देती। फिर साँस लेने के लिए एक क्षण विराम लेकर वह थिरकती हुई अँधेरी छाया की भाँति आगे बढ़ जाती।

यह ताओ-चिङ के लिए एक असाधारण अनुभव था। अपने जीवन में पहले कभी वह ऐसी दुविधा और उत्तेजना से परिचित नहीं हुई थी। उसका हृदय तभी से धुक-धुक कर रहा था, जबसे उसने इन पर्चियों को चोरी-चोरी रात में चिपकाने का फ़ैसला किया था। वह रँगेहाथ पकड़ लिये जाने के ख़याल पर एक से अधिक बार काँप चुकी थी, लेकिन फिर वह अपने संकल्प में दृढ़ हो जाती थी, जैसे ही उसे लू चिआ-चुआन का विदा होने के समय वाला आदेश याद आ जाता : "हमारे उद्देश्य में आस्था रखो। एक सुखद भविष्य के लिए संघर्ष करते रहो।" उसे इन

अविस्मरणीय शब्दों को अवश्य दिमाग़ में रखना था, और निडर होकर संघर्ष करते जाना था। अतः उसने अपनेआप को उन आवश्यक तैयारियों में व्यस्त कर लिया था, जिनमें गोंद की तीन छोटी बोतलों और उन नरम तल्ले वाले जूतों की ख़रीद शामिल थी, जो कोई आवाज़ न करते। एक उपयुक्त छद्‌मवेष का सवाल उसे तब तक उलझाये रखा जब तक कि वह एक छोटा ब्रश उधार लेने के लिए अपनी मकान-मालकिन के पास नहीं गयी, और अपने को रंग-रोगन से ख़ूब शोख़ बनाकर, पाउडर पोतकर, और एक गिलाफ जैसे गुलाबी गाउन में सजा नहीं लिया। उसने एक पतुरिया की तरह सजधज कर चलने का निर्णय लिया। उसने अपनेआप से कहा कि अगर कोई ग़लती से उसे पतुरिया समझ भी लेगा तो वह इसका बुरा नहीं मानेगी। उस शाम इस डर से कि युङ-त्से उसे देख लेगा तो जाने से रोकेगा, वह मकान-मालकिन के कमरे में कपड़े बदलने और एक पीला हरा रेशमी गाऊन पहनने चली गयी। फिर उसने अपने होंठों पर रोगन लगाकर उन्हें शोख़ बनाया, त्वचा के रंग के मोज़े पहने और एक बढ़िया सफ़री हैण्डबैग लेकर अपनेआप को एक छैल-छबीली युवती में रूपान्तरित कर लिया। मकान-मालकिन नें मुँह बा लिया, क्योंकि अब तक तो ताओ-चिङ की पोशाक सादी और सरल हुआ करती थी।

"वह ज़रूर अपने प्रेमी से मिलने जा रही होगी," मकान-मालकिन ने अपने निजी अनुभव के आधार पर कटाक्ष किया। एक अर्थभरी मुस्कान के साथ, वह फुसफुसायी, "श्रीमती यू, क्या तुम जा रही हो?...ठीक है, मैं एकदम समझ गयी...तो तुम्हारा और भी कोई है..."

इस नज़रिये से उसके व्यवहार को देखकर ख़ुश होती हुई, ताओ-चिङ ख़ूब विनोदपूर्ण ढंग से मुस्कुरायी और प्रस्थान करने से पहले बोली :

"अगर युङ-त्से मेरे बारे में पूछे, तो कृपया उसे बता देना कि मैं जल्द ही वापस आ जाऊँगी। क्या तुम मुझ पर यह अहसान करोगी?"

वह घबरायी हुई-सी बाहर निकल गयी, वह ऐसा अनुभव कर रही थी, मानो वह रणक्षेत्र में एक अनाड़ी रंगरूट हो जिसे अकेले ही आगे बढ़ना है। उसने एक ग्राहक खोजती वेश्या की भाँति गलियों में चोर-निगाहों से अन्दर-बाहर झाँक लिया। जब उसे इत्मीनान हो गया कि कोई आस-पास नहीं था, तब उसने अपना साहस उस कार्यभार की ओर लगाया जिसके लिए उसने अपनेआप को तैयार किया था। गोंद-पुती पर्चियों के सिरों को अपनी जीभ की नोक से नम करके, उसने उनमें से कई को एक दीवार पर चिपका दिया। उसके हाथ काँप रहे थे, और उसकी टाँगें तब बमुश्किल ही उसको सँभाल पा रही थीं, जब उसने पहली पर्ची चिपकायी... उस क्षण, उसने उन सभी युवकों और युवतियों को याद किया जिनसे वह नववर्ष की शाम वाली पार्टी में मिल चुकी थी... अगर वे यहाँ होते, तो यह कार्य तुरत-फुरत में हो जाता। लेकिन उसे तो इसे रात की गहनता में अकेले ही करना था, एकाकी

और डर के साथ। वह सिर्फ़ पुलिस का ही अन्देशा नहीं कर रही थी बल्कि उन आदमियों से भी सशंकित थी जो उसे एक वेश्या समझ सकते थे। कुछेक पर्चियों को चिपका लेने और कुछ को दरवाज़ों की दराज़ों में फेंक देने के बाद, अब वह आगे नहीं बढ़ी, बल्कि झटपट घर की ओर वापस चल दी। घर पहुँचकर वह एकदम निढाल पड़ गयी।

अगली रात वह वही कार्यभार पूरा कर रही थी, लेकिन पहले से अधिक इत्मीनान के साथ पौ फटने से ठीक पहले निकलकर, जब रात की ड्यूटी वाले पुलिस हरारत के मारे झपकी ले रहे होते थे, तब वह पर्चियाँ चिपका देती या उन्हें तमाम गलियों के दरवाज़ों में डाल आती। फिर अपना कोटा पूरा हो जाने पर, वह सुरक्षित घर लौट आती।

क़स्बे के लोग-बाग इन पर्चियों को देखकर ऐसे स्तब्ध हो जाते मानो कोई झंझावात बिना किसी पूर्वसूचना के ही टूट पड़ा हो। नौजवान लोग उसे जिज्ञासा के रूप में इधर-उधर सम्प्रेषित करते रहते, और बूढ़े और डरपोक लोग बौखला उठते थे।

"क्या कम्युनिस्टों की संख्या अब बढ़ रही है?" वे विस्मयभरी फुसफुसाहट में एक-दूसरे से पूछते।

कई हाईस्कूलों और विश्वविद्यालयों के छात्र संगठनों को डाक से अख़बार प्राप्त होते, जिनको खोलने पर कम्युनिस्ट पर्चियाँ निकलतीं, जो ताओ-चिङ द्वारा भेजी गयी होती थीं। कुछ छात्र उत्साहित और साथ ही साथ अचम्भित होकर कई दिनों तक भेजने वाले का परिचय मालूम करने के लिए खोजबीन करते रहे। बहरहाल, उन्हें यक़ीन हो गया था,कि कम्युनिस्ट पार्टी पुन: सक्रिय हो उठी थी और वे सोचते कि क्रान्ति का दूसरा ज्वार आने ही वाला था।

पुलिसवालों ने जब इन कम्युनिस्ट पर्चियों को चकित होकर दीवारों पर देखा तो वे क्रुद्ध और भयभीत हो गये। वे जल्दी-जल्दी उन्हें फाड़ने के लिए झपट पड़े।

ताओ-चिङ, युङ-त्से के बिना जाने ही, पर्चियाँ बाँटने और उनमें से कुछ को अपनी जानकारी के मुताबिक़ प्रगतिशील लोगों के पास डाक से भेजने के लिए हर सम्भव तरीक़े अपनाती थी। बहुत कम समय में ही उसने अधिकतर पर्चियाँ खपा दी थीं। बाक़ी को उसने अपने पास ही रख लिया क्योंकि वह सभी को इतनी जल्दी अपने पास से अलग नहीं कर देना चाहती थी।

आश्चर्य ही कहिये, कि इन छोटी लाल और हरी पर्चियों ने उसे निराशा के कगार पर से बचा लिया था। कभी ऐसे दिन भी थे, जब वह महसूस करती थी कि उसका सबकुछ ख़त्म हो चुका है, जब लू चिआ-चुआन के मार्गदर्शन और पार्टी की देखरेख के बिना वह एक बार फिर युङ-त्से के साहचर्य के रूप में एक संकीर्ण दमघोंटू अस्तित्व में सिमट गयी थी, जहाँ से आगे कुछ नहीं दिखायी देता था,

सिवाय उस दिन के जब वह उसके लिए मख़मली गाऊन और एक ऊनी ओवरकोट ख़रीद देने में समर्थ होता... ऐसा भविष्य इतना भयानक था कि उसका विवेचन नहीं किया जा सकता था। पर्चियों के वितरण ने उसके अन्दर मुक्ति का अहसास भर दिया था। वह जितनी अधिक पर्चियाँ बाँटती, उतनी ही अधिक प्रसन्नचित महसूस करती, कारण कि अब वह सिर्फ़ नारेबाज़ी ही नहीं कर रही थी, जिसका युङ-त्से ने यह कहते हुए मज़ाक़ उड़ाया था कि सभी निम्न-पूँजीवादी बुद्धिजीवी बस इतना ही कर सकते थे। अपनेआप को किसी सार्थक काम में लगा देने की इस चेतना ने उसे ख़ुशियों से भर दिया।

गरमी की छुट्टियों का समय आ गया। ताओ-चिङ पर्चियों के प्रभाव के बारे में पता करना चाहती थी और वह वाङ सियाओ-येन के यहाँ जा पहुँची, जो पीकिङ विश्वविद्यालय में दूसरे वर्ष में थी।

उसने अपनी सहेली की बाँहों को आवेश में पकड़ लिया। "सियाओ-येन, कल सवेरे मुझे एक बहुत ही अजीब चीज़ मिली!"

"क्या थी वह?" सियाओ-येन ने आहिस्ते से अपने हाथ की किताब को बन्द करके उसकी ओर घूरकर देखा।

"देखो!" ताओ-चिङ ने तीन पर्चियाँ अपनी जेब से निकालीं। "कल सवेरे मैं टहलने जाने की तैयारी में थी। अभी मैंने दरवाज़े से बाहर क़दम भी नहीं रखा था कि मेरी नज़र इन पर पड़ी..." उसने अपने स्वर को धीमा करके फुसफुसाहट में बदल दिया। "क्या तुम नहीं समझती? ये चीनी कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा रखी गयी थीं।"

सियाओ-येन ने उन्हें ले लिया, उनको उलट-पलटकर देखा और लापरवाही से डेस्क पर फेंक दिया। "मैंने समझा था कि तुम वास्तव में कोई ख़ास बात बताने वाली हो... लेकिन इनके बारे में तो कुछ भी नया नहीं है। मैं इनको पहले ही देख चुकी हूँ।"

"ताज्जुब है! तुम्हें ये कहाँ देखने को मिलीं?"

सियाओ-येन ने तुरन्त उत्तर नहीं दिया, बल्कि एक दराज़ खोला और मिठाइयों का एक डिब्बा निकाला।

"मिठाई खाओ, ताओ-चिङ। मेरे पिता इसे अभी-अभी लेकर शंघाई से लौटे हैं। मुझे बताओ, तुम इन पर्चियों में क्यों इतनी दिलचस्पी ले रही हो? क्या आज तुम इसीलिए आयी हो?"

"पूरी बात तो मेरी भी समझ से बाहर है। क्या इतने कम्युनिस्ट अभी भी हो सकते हैं?"

"मैं समझती हूँ ख़ासी संख्या होगी," सियाओ-येन ने ताओ-चिङ की बग़ल में बैठते हुए कहा। अपने मुँह में मिठाई लिये वह धीरे-धीरे बोलती रही, "कुछ दिन पहले, सत्र ख़त्म होने से ठीक पहले, हमारे छात्र संगठन को अख़बार की एक प्रति

डाक से प्राप्त हुई। इसके भीतर ऐसी ही पर्चियाँ थीं जैसी तुम्हारी। कुछ लोग अचम्भित और उत्तेजित हो गये, बाक़ी डर गये, और कुछ ने सलाह दी कि इन्हें बुलेटिन बोर्ड पर चिपका देना चाहिए, लेकिन कुछ ने इसके बुरे नतीजों के डर से इस विचार को मंज़ूरी नहीं दी।"

"तुम्हारा क्या ख़याल है? क्या तुम डर रही थी? तुम तो संगठन के लिए कुछ काम करती हो, है न?"

"मैंने इसके पक्ष या विपक्ष में कोई राय नहीं बनायी, लेकिन वे पर्चियाँ अगले दिन ज़रूर बोर्ड पर लग गयी थीं। इन्होंने एक भारी खलबली मचा दी... बेशक, विश्वविद्यालय प्रशासन ने उन्हें फड़वा देने में देरी नहीं की। अध्यक्ष च्याङ मेन-लिन यह जानकर बहुत बिगड़ा हुआ था कि हालात अब भी सामान्य नहीं हो पाये थे।"

सियाओ-येन ने अपने घने काले बालों को झटका और एक फीकी, गम्भीर मुस्कान बिखेर दी। ताओ-चिङ अति प्रसन्न हो गयी। उसका चेहरा ऐसे दमक रहा था जैसे कोई फूल। उसने अपनी सहेली को छाती से लगा लिया।

"सियाओ-येन! तुमने मुझे कितना प्रसन्न कर दिया है।"

"अब क्या बात है? तुम इतनी उत्तेजित क्यों हो?... क्या तुम नहीं बताओगी कि तुमको इससे क्या लेना-देना है?"

ताओ-चिङ अब और ख़ामोश न रह सकी, और उसने जो कुछ किया था सब उगल दिया।

"ध्यान रखो कि तुम किसी को इसकी हवा तक न लगने दोगी, सियाओ-येन! यह मैं ही थी जिसने उन सारी पर्चियों को डाक से भेजा था।"

"क्या! क्या तुम सच कहती हो?... तुम कम्युनिस्ट पार्टी में कब भरती हो गयी?" सियाओ-येन ने उसको अविश्वासपूर्वक घूरते हुए पूछा।

"मैं कम्युनिस्ट नहीं हूँ।" ताओ-चिङ ने उदास होकर अपना सिर हिला दिया। "लेकिन मेरे दोस्त हैं जो... याद करो कि मैंने लू चिआ-चुआन के बारे में क्या बताया था? वह गिरफ़्तार होने से पहले इन पर्चियों को मेरे पास छोड़ गया था। उसके बाद मेरा उससे सम्पर्क टूट गया – मैं तब तक नहीं समझ सकी कि इन पर्चियों का क्या करूँ जब तक कि उन्हें इस ढंग से वितरित करने का विचार मेरे मन में नहीं आ गया।"

सियाओ-येन ने उसकी ओर ऐसे देखा मानो वह उसे पहली बार देख रही हो। "लेकिन तुमने उन्हें जला क्यों नहीं दिया? क्या तुम नहीं जानती की कि इस तरह की सामग्री को डाक से भेजना कितना ख़तरनाक होता है"

"नहीं सियाओ-येन, तुम नहीं समझती!" एक बाँह अपनी सहेली के गले में डालकर ताओ-चिङ ने ज़ोरदार ढंग से घोषणा की : "मैं पिछले वर्ष से बदल गयी हूँ। अब मुझे इस तरह की चीज़ें कर डालने में ख़ुशी होती है... हालाँकि, मैं चिन्तित

हूँ, कारण कि मेरे वे सभी दोस्त क्वोमिन्ताङ द्वारा गिरफ़्तार कर लिये गये हैं... लेकिन कोई फ़िक्र नहीं कि वे कितनों को जेल में डालते हैं। क्रान्तिकारी तो मैदान की घनी घास की तरह होते हैं – 'कोई भी आग इसे पूरी तरह नहीं जला सकती; बसन्ती हवा इसमें फिर से प्राण फूँक देती है।' मुझे विश्वास है कि वे देर-सवेर वापस आ ही जायेंगे।" उसने खिड़की से बाहर ऊँचे तैर रहे बादलों की ओर देखा और फिर अपनी क्षति से उदास होकर, अपना सिर नीचे कर लिया।

अपनी सहेली के उत्साह और उमंग से प्रभावित होकर सियाओ-येन ने उसका हाथ दबाया और वेदनाभरी उत्तेजना और सहानुभूति के कश्मकश में पड़ गयी।

"मैं तुमको समझती हूँ ताओ-चिङ, तुम एक ज्वाला की भाँति हो। लेकिन अपने भविष्य पर तो सोचो। क्या भविष्य होगा क्रान्ति में शामिल हो जाने पर?"

"क्या भविष्य होगा अगर अपनेआप को सारा दिन किताबों में धँसाये रखो?" ताओ-चिङ पूरी तरह गम्भीर थी। "यह एक राष्ट्रीय संकट की घड़ी है, जबकि पूरा देश उमड़ रहा है। क्या तुम यह कहावत नहीं जानती : जब घोसला उजड़ने लगे तो कोई भी अण्डा टूटे बिना नहीं रहता?" सियाओ-येन ने हुँकारी भरी लेकिन कुछ भी बोली नहीं, वह अपने विचारों में खो गयी।

"होश में आओ, सियाओ-येन! हम तभी से एक-दूसरे को जानती हैं जब बच्ची थीं। अगर तुम मुझसे नाराज़ नहीं हो, तो क्या तुम मेरी थोड़ी-सी मदद नहीं करोगी?" ताओ-चिङ ने सियाओ-येन की बाँहें थाम लीं, उसके दिमाग़ में एक नया विचार प्रवेश कर रहा था। "मेरे पास अब भी कुछ पर्चियाँ बची हुई हैं। उनको रखे रहना ख़तरनाक होगा। क्या तुम उनको बाँटने में मेरी मदद करोगी?"

सियाओ-येन एकदम स्तब्ध रह गयी और नहीं जान पायी कि क्या जवाब दे। एक लम्बी ख़ामोशी के बाद उसने अपना सिर हिला दिया। "नहीं, मैं नहीं कर सकती!"

"और तुम अपनेआप को दोस्त कहती हो!" जाने के लिए मुड़ती हुई ताओ-चिङ ने तिरस्कारपूर्वक बुदबुदा कर कहा।

सियाओ-येन ने अनिच्छापूर्वक ताओ-चिङ को वापस खींच लिया। "ठीक है। उन्हें मुझे दे दो। मैं उन छात्रों से सम्पर्क करने की कोशिश करूँगी जो इनको बुलेटिन बोर्ड पर लगाने के पक्ष में थे। तुम से सच कहूँ, मैं तुम्हारी इस सनक को पसन्द नहीं करती।"

ताओ-चिङ अन्तिम वाक्य को सुनकर बेहद ख़ुश हुई। उसने सियाओ-येन का हाथ मरोड़ा और उत्तेजित होकर कहा :

"यह तो अद्‌भुत है। तुम एक सच्ची दोस्त हो सियाओ-येन! जब लू चिआ-चुआन बाहर आयेगा, तो मैं वादा करती हूँ कि तुम्हारा उससे परिचय कराऊँगी।"

——:o:——

अध्याय 24

लगातार कई दिनों तक ताओ-चिङ रंग-रोगन लगाकर, पाउडर पोतकर और चुस्त-दुरुस्त ढंग से सजधज कर सारा समय बाहर-भीतर आती जाती रही – कभी-कभी आधी रात के बाद तक नहीं लौटती, बाक़ी समय में पौ फटने से ठीक पहले ही बाहर निकल जाती। युङ-त्से के क्रोध की कोई सीमा न थी; और चूँकि ताओ-चिङ ने उसे अपने विश्वास में नहीं लिया था, इसलिए उसे इसकी कोई जानकारी नहीं थी कि वह कहाँ जाती या क्या करती थी। एक बार उसने पूछने का साहस किया, लेकिन उसने डाँट दिया, "अपने काम से काम रखो!" वह अन्ततः अपने धैर्य की पराकाष्ठा पर पहुँच गया, अतः एक रात जब वे बिस्तर पर थे, तो उसने उसकी बाँह पकड़ी और दाँत भींचकर पूछा :

"यह सब क्या है, ताओ-चिङ? क्या तुम्हें शर्म नहीं आती कि तुम कैसा रवैया अपना रही हो?"

वह चुपचाप पड़ी रही और कुछ समय तक बोली नहीं। देर तक सोचने-विचारने के बाद वह अपने भविष्य सम्बन्धी एक निर्णय पर पहुँच गयी, और इस से शान्त बने रहने में मदद मिली। लाइट का स्विच ऑन करने के लिए उठ बैठती हुई, उसने खुश्क स्वर में जवाब दिया :

"युङ-त्से, तुम जानते हो कि हमारे बीच कितनी बड़ी खाई है। यह हम दोनों को दुखी बना रही है। चूँकि हम अभी जवान हैं, क्या तुम नहीं सोचते कि यही बेहतर होगा कि हम अलग हो जायें?"

जिस विचारशील लहजे और शालीन ढंग से उसने कहा था, वह अतीत की तूफ़ानी बदमगज़ी से इतना भिन्न था कि इसने युङ-त्से को यह महसूस करने पर मजबूर कर दिया कि अब स्थिति को बचाया नहीं जा सकता था। वह उसे रखे रहने की आशा नहीं कर सकता था। उसके प्रति उसकी उदासीनता उसके घमण्ड पर एक वज्रपात थी। वह उठ बैठा और कुछ मिनट तक सोचता रहा। अन्ततः, खिसियाहट में उसने रूखाई से कहा :

"तब, ठीक है। चलो हम अपनी-अपनी राह चलें।"

अगली सुबह युङ-त्से ने घर छोड़ दिया। दोपहर के तुरन्त बाद ताओ-चिङ किसी दूसरे हॉस्टल में चली जाने के लिए अभी अपना सामान बाँध लेने का काम ख़त्म ही कर रही थी कि एक आगन्तुक आ पहुँचा। वह एक छोटा-सा चश्मा पहने, पीले चेहरे वाला आदमी था। यद्यपि वह उसे याद नहीं कर पा रही थी, फिर भी उसने एक पुराने दोस्त की भाँति उसका अभिवादन किया। उससे हाथ मिलाने के लिए तेज़ी से आगे बढ़ते हुए उसने धीमे स्वर में पूछा :

"क्या तुम लिन ताओ-चिङ हो? मैं लू चिआ-चुआन का दोस्त हूँ – ताई यू।" यह सोचकर कि वह शायद लू के बारे में उसके लिए ख़बर लाया होगा, उसने आगन्तुक को हर्ष और विस्मय की मिली-जुली मनःस्थिति में अन्दर बुला लिया। उसको बैठने की जगह देकर उसने उत्सुकतावश पूछा।

"यह एक सुखद आश्चर्य है। क्या भाई लू सचमुच गिरफ़्तार हो गया है। वह अब कैसा है?"

ताई यू ने तुरन्त जवाब नहीं दिया। उसने कमरे में चारों ओर नज़र दौड़ायी और शान्त होकर जवाब देने से पहले ताओ-चिङ के चेहरे को स्थिरचित होकर देखा, "हाँ, यह सर्वाधिक दुर्भाग्यपूर्ण था।" वह तीन महीने पहले गिरफ़्तार हो गया था। शुरू-शुरू में उसे मिलिटरी पुलिस के मुख्यालय में रखा गया था। मैं नहीं जानता कि अब वह कहाँ है।" उसका स्वर टूट गया और उसने देखा कि ताओ-चिङ का चेहरा पीला पड़ गया था और उसने बिस्तर की पटिया को कसकर पकड़ लिया था।

"क्या तुम उससे बहुत क़रीब हो, कॉमरेड लिन?" वह भद्रता से उस पर मुस्कुराया।

ताओ-चिङ विस्मित और हर्षित थी कि उसे "कॉमरेड" कहकर सम्बोधित किया गया था। यद्यपि लू चिआ-चुआन उसका दोस्त था, फिर भी उसने कभी उसे इस ढंग से सम्बोधित नहीं किया था। उसने लू चिआ-चुआन की गिरफ़्तारी की इस पुष्टि पर अपने आवेग को दबा लिया और मृदुता और गर्मजोशी से जवाब दिया।

"मुझे तुमसे मिलकर बहुत ख़ुशी हुई। यद्यपि हम पहले कभी मिले नहीं हैं – नहीं, यह सच नहीं है, मुझे याद आ रहा है कि तुम वही हो जिसने अठारह मार्च वाली रैली में सबसे पहले भाषण दिया था। फिर भी मैं समझती हूँ कि भाई लू ने तुमको ज़रूर मेरे बारे में बताया होगा। मैं बहुत अनुभवहीन हूँ और आशा करती हूँ कि तुम अक्सर मेरी सहायता करते रहोगे..."

"बेशक, मैं करूँगा। क्या तुम नहीं जानती की कि भाई लू और मैं नज़दीकी दोस्त हैं?"

"ओह..." वेदना और उल्लास के समुच्चय से अभिभूत होकर ताओ-चिङ परेशान हो गयी कि क्या जवाब दे।

ताई यू ने एक सिगरेट जलायी और प्रसंगवश पूछ लेने से पहले कई कश खींचे? "अच्छा क्या भाई लू ने कोई चीज़ तुम्हारे पास नहीं रख छोड़ी थी? आख़िरी बार जब वह यहाँ पर था तो उसने तुम्हें क्या कार्य सौंपा था?"

उसने उसे लू चिआ-चुआन से हुई अपनी आख़िरी मुलाक़ात का पूरा विवरण बता दिया और यह भी कैसे उसने पर्चियों को वितरित किया।

ताई यू ध्यानपूर्वक सुनता रहा, फिर स्वीकृति में सिर झुकाया और बोला :

"बहुत अच्छा किया! वह बहुत बहादुराना काम हुआ। लेकिन क्यों नहीं तुमने

मदद में और कुछ दूसरे कॉमरेडों को पूछा? तुम जानती हो कि अकेले इस तरह काम करना कितना ख़तरनाक है।"

"मैं किसी ऐसे को नहीं जानती, जो पूछती। भाई लू! सू निङ और थोड़े-से दूसरे क्रान्तिकारियों को मैं जानती थी, जो सभी गिरफ़्तार हो चुके थे।"

"मैं समझ गया।" ताई यू की चौकस आँखें उसके चश्मे के पीछे से ध्यानपूर्वक उसको निहार रही थीं, और एक मुस्कुराहट की छाया उसके आडम्बरपूर्ण, मरियल चेहरे पर मँडराने लगी। "अच्छा, तो तुम संघर्ष कैसे चलाने की सोचती हो?" उसके उत्तर की प्रतीक्षा नहीं की बल्कि स्वयं ही बोलता गया, "वामपन्थी विचारों वाले ढेर सारे प्रगतिशील नवयुवक हैं। तुम्हें अपने दोस्तों और परिचितों का दायरा बढ़ाने के लिए हरसम्भव कोशिश करनी चाहिए..."

"लेकिन," ताओ-चिङ ने उदासी मिश्रित स्वर में बीच में ही टोक दिया, "मेरा एक भी प्रगतिशील दोस्त नहीं है, भाई ताई, क्या तुम कुछ से मेरा परिचय कराओगे? मैं लू की गिरफ़्तारी के बाद से ऐसी व्यर्थ की ज़िन्दगी जी रही हूँ कि मैं कुएँ के मेंढक की भाँति हो गयी हूँ। अब मैं अपने पति को छोड़ने जा रही हूँ – शायद तुम उसके बारे में जानते होगे – क्योंकि वह बहुत ही कूढ़मगज़ है। हम लोगों के दृष्टिकोण भिन्न-भिन्न हैं और मेरे आज़ाद होने का एक मात्र रास्ता उसको छोड़ देना ही है। मैं ऐसा करके अपने जीवन को और अधिक अर्थपूर्ण बनाना चाहती हूँ, उस ढंग से जीना चाहती हूँ, जैसे तुम और दूसरे कॉमरेड जीते हैं। मुझे तुम्हारे समृद्ध, संघर्षशील जीवन से कितनी ईर्ष्या होती है।"

"हाँ, बिल्कुल..." अपने होंठों के बीच सिगरेट दबाये ताई यू उठ खड़ा हुआ और कमरे में यहाँ-वहाँ निरीक्षण करते हुए एक चक्कर लगाया। जब उसने दीवार पर फैली एस्परेगस फ़र्न की बारीक़ पत्तियों को और पुस्तक की आलमारी पर एक सुन्दर पुरातन चीनी मिट्टी के दो कलश देखे, तो वह एक शिकायती मुस्कान के साथ ताओ-चिङ की ओर मुड़ा।

"कॉमरेड लिन, बुर्जुआज़ी के ये खिलौने जो तुमने यहाँ सजा रखे हैं, वे क्रान्तिकारी को शोभा नहीं देते। सर्वहारा का एक क्रान्तिकारी योद्धा इन ओछी चीज़ों का संग्रह नहीं करता क्योंकि, जैसीकि कहावत है : 'तुच्छताओं में मरते रहना मनुष्य की इच्छाओं को कमज़ोर कर देता है।' अच्छा, अब मैं चलूँगा। कृपया, तुम मुझे अपना नया पता दे दो ताकि जब मुझे समय मिले तो मैं वहाँ पहुँच सकूँ। जैसे ही मुझे भाई लू की ख़बर मिलेगी, मैं तुम्हें बता दूँगा... तुम्हारे लिए महत्त्वपूर्ण बात अब क्रान्तिकारी संघर्ष में भाग लेना है और क्रान्तिकारी संगठनों से सम्पर्क बनाये रखने की अधिक से अधिक कोशिश करना है। बेशक, हम दोनों एक तरह का सम्पर्क तो स्थापित कर ही चुके हैं।"

उसको विदा करने के बाद ताओ-चिङ कमरे में वापस लौटी और बिस्तर के

कोर पर बैठ गयी। क्रान्तिकारियों से पुनर्नवीनीकृत इस सम्पर्क और एक अपेक्षाकृत अधिक सक्रिय जीवन की सम्भावना की उत्तेजना के चलते वह भूल गयी कि यह उसके नये कमरों में चले जाने का वक़्त था। लू चिआ-चुआन के ख़्याल ने उसके हृदय को फिर से बोझिल कर दिया। कुछ समय तक वह वहीं निश्चल बैठी रही, शून्य नज़रों से खिड़की से बाहर नीलाभ आकाश को निहारती रही, वह अपने दिवास्वप्न से तब तक नहीं जागी जब तक कि उसकी निगाहें युङ-त्से के फ़ोटो, और रैक पर उसके लम्बे नीले गाऊन पर न जा पड़ी। वह उठ खड़ी हुई और चारों ओर नज़र दौड़ाई, स्वयं से सवाल करती रही कि क्या वह सचमुच उस आदमी को छोड़कर जा रही है जिसको उसने एक बार इतने उत्कट रूप से प्यार क्या था? क्या वह कभी इस छोटे कमरे में वापस नहीं आयेगी जहाँ उसने इतने सारे सुखद दिन गुज़ारे थे?... उसका बिस्तरबन्द बँध चुका था, छोटा-सा सूटकेस पैक हो चुका था और बाक़ी सारी चीज़ें युङ-त्से के लिए छोड़ दी जायेंगी। उसकी आँखें नम हो आयीं। "मुझे तुरन्त चले जाना चाहिए!" अपनी हिचकिचाहट और भावुकता पर लज्जित होकर वह अपने पैरों पर उछल पड़ी, और अपना बिस्तरबन्द उठा लिया, लेकिन दरवाज़े पर पहुँचकर वह पीछे मुड़ी और एक नोट लिखा :

सितम्बर 20, 1933

युङ-त्से,

मैं जा रही हूँ। मैं वापस नहीं आऊँगी। अपना ठीक से ख़्याल रखना। एक व्यापकतर दृष्टिकोण अपनाने की कोशिश करना और अत्यधिक दुराग्रही मत बनना। मैं तुम्हारी हर सफलता की कामना करती हूँ।

ताओ-चिङ

मानसिक संघर्ष और कुछ यन्त्रणादायी आत्मभर्त्सना के बाद ताओ-चिङ ने अन्ततः अपना बिस्तरबन्द फिर उठाया और वह कमरा छोड़ दिया जहाँ उसे ख़ुशियाँ और बेपनाह मुसीबतें दोनों ही मिल चुकी थीं।

——:o:——

अध्याय 25

वह शान्त छोटा कमरा मन्द, मधुर संगीत से भर गया जब अँगीठी के भाप-पात्र के सामने एक स्टूल पर बैठे-बैठे, उसने मन्द स्वर से उस गीत को गुनगुनाया शुरू किया जिसे उसने अभी अभी रचा था।

काले जेल के फाटक,
तुम कभी न रोक सकोगे

सूरज का प्रखर प्रकाश!
प्यारे कॉमरेडो,
सूहज, फूल, औ चातक
और प्यारी-प्यारी बालाएँ
सभी सुना रहीं तुमको गीत –
हाँ, सभी सुना रहीं तुमको गीत,
कारा की मनहूस दीवारों का भेदन कर अपने गीतों से।

उसने मन्द स्वर में इसे कई बार गाया। अपने स्वप्निल मूड से जागकर उसने भाप-पात्र का ढक्कन हटा दिया, और बड़ी-बड़ी सफ़ेद रोलों को निकाल लिया। "ये तैयार हो चुकी हैं!" अपने हस्तकौशल पर सन्तुष्टि की एक मन्द मुस्कान के साथ उसने हर्षित होकर कहा। उसने सावधानीपूर्वक प्रत्येक रोल को बारी-बारी से जाँचा, और सोचती रही, "इनमें से किसके भीतर पेन्सिल की लीड है? सू निङ और उसके कॉमरेड इसे पाकर कितने ख़ुश होंगे!"

युङ-त्से को छोड़ देने के बाद ताओ-चिङ विश्वविद्यालय के निकट एक छोटे हॉस्टल में चली गयी। अब वह क्रान्तिकारियों से सम्पर्क स्थापित करने के लिए अपनी पूरी ऊर्जा और समय लगा देने के लिए कहीं अधिक आज़ाद थी और सू निङ की माँ के पास उसकी ख़बर पाने के लिए एक बार जा चुकी थी। उसे ज्ञात हुआ कि सू निङ पेइपिङ की स्थानीय अदालत के हवालात में था और स्वयं उसकी बहन बनकर वह श्रीमती सू के साथ उसे देखने गयी। वह स्वयं अपने तईं तथा साथ ही साथ सू निङ के लिए भी अपने इस आगमन पर बेहद ख़ुश थी। सू निङ ने अपने निजी रूप-रंग के प्रति जेल में होने के बावजूद लापरवाही नहीं बरती थी, बल्कि वह कटा-छटा और चुस्त दीखता था, यद्यपि वह पहले से दुबला और कमज़ोर दोनों हो गया था। उसने उदासी का कोई लक्षण नहीं दर्शाया। लगता था कारावास ने उसे आदमी बना दिया था।

"मैं एकदम ठीक हूँ और पर्याप्त खाना पा जाता हूँ..." उसने ताओ-चिङ को बताया, जो उसकी कोठरी की लोहे की सलाख़ों से बाहर खड़ी थी। "वे मेरी दोबारा पेशी करवा चुके हैं। जज कहता है कि मेरा केस गम्भीर नहीं है और कि वे मुझे छोड़ सकते हैं बशर्ते कि मैं अख़बारों के ज़रिए सार्वजनिक तौर पर मुकर जाऊँ।"

"सार्वजनिक तौर पर मुकर जाऊँ – इसका क्या मतलब?" ताओ-चिङ ने उसे घूरते हुए पूछा। सू निङ जेलर की ओर देखने के लिए मुड़कर इधर-उधर चहलक़दमी करते हुए धीमे क़दमों से कुछ दूर तक गया, और उसकी मुस्कान कुछ अधिक मर्मभेदी हो गयी।

"इसका मतलब है आत्मसमर्पण।"

"तब तुम क्या करने जा रहे हो, दूसरे भाई? क्या तुम मुकर जाने का इरादा रखते हो?"

"नहीं, कभी नहीं!" सू निङ ने अपना सिर हिलाया और दृढ़तापूर्वक जवाब दिया। "यहाँ सभी राजनीतिक बन्दी मुकरने से साफ़ तौर पर इन्कार कर चुके हैं। अगर वे इस मामले में दबाव डालेंगे तो हम भूख-हड़ताल कर इसका प्रतिवाद करेंगे..." सू निङ फुसफुसाकर बात कर रहा था, लेकिन जब उसने जेलर को निकट आते देखा तो अपना स्वर तेज़ कर दिया और उस पर अर्थपूर्ण ढंग से मुस्कुराया। "तो तुम्हारा स्कूल जल्द ही खेल-कूद दिवस मनाने जा रहा है, मनायेगा न, चौथी बहन? यह बढ़िया है..."

जैसे ही जेलर फिर सुनायी देने की सीमा से बाहर गया, सू निङ धीरे-धीरे बोलने लगा, "मैं कुछ लिखना चाहता हूँ, लेकिन मेरे पास पेंसिल नहीं है। क्या तुम भाप से पकायी गयी कुछ रोलों के भीतर पेन्सिल की लीड छिपाकर भेज दोगी..." उसने एक समझभरी मुस्कान के साथ सिर झुकाकर हामी भर दी।

जैसे ही उसने इसे याद किया, ताओ-चिङ ने पुनः सावधानी से अपने हाथ की रोलों को देखा, और तरुणाई की उमंग में धधकती हुई, मन्द स्वर में गाने लगी :

लीड, क़ीमती छोटी लीड,
छुपी हुई नर्म, सफ़ेद रोलों में,
जैसे स्वर्ण-धूलि छिपी हो रेत में।
लीड, क़ीमती छोटी लीड,
बचकर चली जाओ गार्ड की धूर्त आँखों से
पहुँचो हमारे कॉमरेडों के हाथों में।
लीड, क़ीमती छोटी लीड,
तलवार जैसी तेज़, कटार जैसी पैनी,
तुम लिखो क्रुद्ध प्रतिवाद जनता का
और रेत दो गला प्रतिक्रियावादियों का।

अपने हाथों में अब भी एक रोल पकड़े खिड़की से बाहर एकटक देखती हुई, वह अपनेआप ही मन्द-मन्द गुनगुनायी, बिना इस चेतना के कि उसने क्या गाया था। वह सू निङ और उसके साथी क़ैदियों की उस समय की ख़ुशी को चित्रित कर रही थी जब वे इस लीड को प्राप्त करेंगे और किस तरह से वे अपनी पुस्तकों के हाशियों को भर देने में कोई समय नहीं गँवायेंगे। प्रतिक्रियावादी प्रशासन ने क़ैदियों को क़लम और काग़ज़ से वंचित कर दिया था जिससे कि वे जनता के प्रतिवादों को लिख न सकें। फिर भी, वे उसके द्वारा चोरी-चोरी पहुँचायी गयी लीड से अनवरत लिख-लिखकर भेजते जायेंगे।

...इस तरह की सुखद कल्पनाओं ने उसे पूरी शाम प्रसन्नचित्त बनाये रखा, और उसने उस निराशा से निजात पा ली, जिसने लू चिआ-चुआन की गिरफ़्तारी के बाद उसे अभिभूत कर दिया था। वह प्रसन्न थी कि उसने अपनी पुरानी मनःस्थिति पर विजय प्राप्त कर ली थी, और वह ख़ुश थी कि वह एक नया जीवन शुरू कर रही थी।

रात का खाना खाने के बाद जब उसने कमरा ठीक-ठाक कर लिया, तो उसने जल्दी-जल्दी कुछ किताबें छाँट लीं और उन पर काग़ज़ का कवर लगाने लगी। वह जानती थी कि इन किताबों की जेल में बेहद आवश्यकता थी और वह आशा कर रही थी कि वह इन पर भूरा काग़ज़ चढ़ाकर और तीन लोगों के सिद्धान्त, राष्ट्रीय पुनर्निमाण के मूल सिद्धान्त, सात नायक और पाँच वीर, तथा पश्चिमी जगत की तीर्थयात्रा, जैसे शीर्षक लिखकर इन क्रान्तिकारी किताबों को चोरी-चोरी पहुँचा आयेगी। जैसे ही उसने लिखा, उसे चिन्ता हुई कि यदि जेलरों ने पता लगा लिया तो क्या होगा। "कोई परवाह नहीं, डरने की कोई बात नहीं।" उसने विश्वासपूर्वक ख़ुद से कहा कि सबकुछ मज़े से हो जायेगा कि भाग्य उसकी इच्छा के आगे नतमस्तक हो चुका था, और कि वह अब ख़ुद अपने पैरों पर खड़ी हो सकती थी।

उस रात ताई यू, उसके लिए कुछ गुप्त प्रकाशित सामग्री लेकर आया। वह बहुत हँसमुख और धीमे, सधे हुए स्वर में बोलता था। उसके नये आवास का निरीक्षण करते हुए उसने एक फीकी मुस्कान के साथ टिप्पणी की :

"बिल्कुल बढ़िया स्थान है, सादा और सुरुचिपूर्ण... क्या तुम किन्हीं कॉमरेडों के सम्पर्क में रही हो? अब आगे से तुम्हें अपनेआप को पूरी तरह से क्रान्तिकारी काम में लगा देना चाहिए।"

"भाई ताई, मैंने सू निङ से मुलाक़ात की है।" ताओ-चिङ ने प्रसन्न मुद्रा में कहा। उसने उसे आगे बताया कि कैसे उसने सम्पर्क स्थापित किया था। "यद्यपि अब वह जेल में है, फिर भी मैं देख रही हूँ कि क्रान्ति की ताक़त स्वयमेव हर जगह महसूस हो रही है। जेल ने सू निङ को पहले से दृढ़ बना दिया है – क्या यह क्रान्ति की ताक़त का लक्षण नहीं है?"

ताई यू एक के बाद एक सिगरेट फूँकता रहा। जब-तब ताओ-चिङ की गतिविधियों के ब्योरे चाव से सुन लेने के लिए अपना सिर उठा लेता। जब वह कह चुकी, तो उसने शालीनता से सिर हिलाकर हामी भर दी, और बोला :

"उत्तम! मैं सू निङ को जानता हूँ। और मुझे विश्वास है कि वह और भी बेहतर बन जायेगा। क्या तुम नहीं जानती कि जेल में भी तुम्हें कम्युनिस्ट पार्टी का नेतृत्व मिलता है?"

"नहीं, मैं इसे नहीं जानती।"

ताओ-चिङ ने 'उत्तरी चीन में लाल ध्वज' खोला, जिसे ताई यू उसके लिए

लाया था, और धीरे-धीरे पढ़ा, "उत्तरी चीन में सोवियतें* स्थापित करने के लिए लड़ो।" उसने उत्सुकतापूर्वक इसे ले लिया और पूछा :

"ओह, तो क्या पार्टी उत्तरी चीन में सोवियतें स्थापित करने के लिए हमारा आह्वान कर रही है? अब क्या स्थिति है, भाई ताई? मैं ज़्यादा नहीं जानती कि क्या चल रहा है..."

"यह पत्रिका कुछ समय पहले प्रकाशित हुई थी। तुम वर्तमान स्थिति के बारे में जानना चाहती हो? ठीक है, चीनी क्रान्ति का उच्च ज्वार निकट से निकटतर आता जा रहा है, अतः हमें और भी भारी विजयें हासिल करने के लिए काफ़ी ताक़त जुटानी चाहिए..." वह धीरे-धीरे क्रान्तिकारी सिद्धान्तों पर विस्तारपूर्वक बोलने लगा, और यद्यपि ताओ-चिङ उनके बारे में पहले सुन या पढ़ चुकी थी, फिर भी वह चाव से सुनती रही, वह एक नया नेता पाकर प्रसन्न थी। बाद में जब वह उसे दरवाज़े तक विदा करने आयी, तो उसने प्रसंगवश पूछ लिया :

"मैं कल सू निङ को देखने जा रही हूँ। क्या तुम मेरे साथ चलोगे?"

ताई यू ने अपना इन्कार में अपना सिर हिला दिया। "जब तुम उससे मिलो तो मेरे बारे में मत बताना।"

अगला दिन मुलाक़ात का दिन था। सू निङ को भाप में पकायी गयी रोलें देने के बाद ताओ-चिङ वाङ सियाओ-येन के घर चली गयी। सियाओ-येन, जो अपनी सहेली की आजीविका कमाने में मदद करने के लिए चिन्तित थी, सलाह दे चुकी थी कि ताओ-चिङ उसकी दो छोटी बहनों की प्राइवेट ट्यूटर बन जाये; अतः वह प्रत्येक अपराह्न वहीं बिताती थी। वाङ परिवार पश्चिमी शहर में रहता था, उनके साथ रात का खाना खाने के बाद वह घर जाने लगी। अँधेरा तो था, लेकिन उसने पैदल चलने और किराया बचा लेने का निश्चय किया। अभी उसने पेइहाई ब्रिज और पैलेस म्युज़ियम पार ही किया था कि एक कार पूर्वी चिङशान स्ट्रीट से होकर मुड़ी और चीख़कर उसके आगे रुक गयी। बिना कोई ध्यान दिये, वह चलती रही। कार का दरवाज़ा खुला, दो आदमी कूदकर बाहर आये, और बिना किसी पूर्वाभास के उसने अपनी बाँहों को उन आदमियों के शिकंजे में दोनों तरफ़ से जकड़ा पाया। दूसरे ही क्षण, एक तीसरा आदमी प्रकट हुआ और इससे पहले कि वह चिल्लाती, उसने उसके मुँह को कपड़ा ठूँसकर बन्द कर दिया। पलक झपकते ही उसे कार में खींच लिया गया, जो पूरी रफ़्तार में भाग चली।

——:o:——

---

* दूसरे क्रान्तिकारी गृह-युद्ध के दौरान, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में मुक्त क्षेत्रों में सोवियतें स्थापित की गयी थीं।

अध्याय 26

ताओ-चिङ के लिए यह एक दुःस्वप्न की भाँति था। इसके पहले कि वह महसूस करती कि इस अपहरण का आशय क्या था, दो खुरदुरे हाथों ने उसकी आँखें बन्द कर दीं और उन पर एक काले कपड़े की पट्टी बाँध दी गयी। उस भयानक अन्धकार में वह इतनी घबरायी हुई थी कि कुछ भी स्पष्ट नहीं सोच पा रही थी। जैसे ही कार ने रफ़्तार पकड़ी उसका दिल धक-से कर उठा, और उसे ऐसा महसूस हुआ, मानो वह किसी अतल खाई में गिर रही है।

आख़िरकार, उसे कार से बाहर निकाला गया, उसकी आँखों से पट्टी खोल दी गयी, उसके मुँह से कपड़ा निकाल दिया गया, और उसके हाथ मुक्त कर दिये गये। उसने जो कुछ घटित हुआ था उसे महसूस करना शुरू किया, क्योंकि उसे याद था कि क्वोमिन्ताङ सन्दिग्ध व्यक्तियों को अक्सर इन्हीं धूर्ततापूर्ण उपायों से पकड़ता था, और कि इस तरह से अपहृत नौजवान कदाचित ही वापस लौटते थे।

"अगर लक्ष्य के लिए अपनी कुर्बानी देने का समय आ गया है तो मैं मरने के लिए तैयार हूँ।" अभी वह यह संकल्प कर रही थी, कि उन आदमियों ने उसे एक दरवाज़े के भीतर ढकेल दिया। वह इस बुरी जगह को देखने से परहेज़ करती हुई, अपनी आँखें बन्द किये रही। उसने ऐसी मुद्रा बना ली, मानो वह मरने के लिए अभिशप्त हो और आख़िरी साँस लेने के इन्तज़ार में हो।

"ऐ लड़की। तुम यहाँ क्या कर रही हो?"

"तुम यहाँ किस अपराध में आ गयी?"

"तुम अपनी आँखें क्यों नहीं खोलती? यह बूढ़ी मठवासिनियों के ध्यान लगाने की जगह नहीं है। तुम अपनी आँखें क्यों बन्द किये हो?"

कई महिलाओं द्वारा उत्कंठावश पूछे जाने पर, ताओ-चिङ ने आख़िरकार अपनी आँखें खोल दीं। उस अँधेरे, गीले और ठसाठसभरे हवालात और उसकी बदबू ने उसे महसूस करने पर मजबूर कर दिया कि वह कारागार में थी, न कि किसी राक्षसी गुफा में या किसी फाँसी-स्थल पर। किसी ने उसे बैठने की जगह दी, और वह बिस्तर के कोने पर बैठ गयी, जबकि दूसरी बन्दिनियाँ उसके चारों ओर जमा हो गयीं।

"तुम किसलिए अन्दर आ गयी?" उनमें से कई ने कौतूहलवश पूछा! "मैं नहीं जानती।" ताओ-चिङ ने अपनी बाँहों को मला, जो अब भी उस बदसलूकी के कारण दुख रही थीं जो उसके साथ की गयी थीं, और फिर अपने इर्द-गिर्द के अजनबी चेहरों पर नज़र डाली। "मुझे अध्यापन-कार्य से घर लौटते समय रास्ते में पकड़ लिया गया और बलात एक मोटरकार में डाल दिया गया। कुछ आदमियों ने मेरी आँखों पर पट्टी बाँध दी और मेरे मुँह में कपड़ा ठूँस दिया और मुझे यहाँ ले

आये।"

"ओह, तुम ज़रूर एक राजनीतिक क़ैदी हो! मुझे ताज्जुब है कि वे तुम्हें यहाँ क्यों लाये? तुम्हारे लिए यह जगह नहीं है।" बोलने वाली दुबली-पतली नशेड़ी फूहड़ औरत थी जिसकी आँखों के नीचे स्याह घेरे पड़े हुए थे; जब वह बोलती तो उसकी भौंहों पर बल पड़ जाते थे।

ताओ-चिङ ने उदास होकर झट पूछा, "तुम सब पर क्या आरोप है?"

इससे पहले कि नशेड़ी औरत जवाब देती, एक सोनाभरे हुए दाँतों वाली मोटी महिला अपनी उँगलियों पर अपराध गिनने लगी। 'हम क्या हैं? हर अपराध दिन दहाड़े – वेश्यावृति, जुआ खेलना, नशीली दवाओं का अवैध व्यापार करना, डकैती, अपहरण, हेरोइन लेना।" अन्तिम अपराध का ज़िक्र करते ही उसने उस दुबली-पतली औरत पर नज़र डाली, और फिर अपने सोने के दाँत दिखाती हुई ही-ही करके हँसने लगी।

दुबली औरत क्रोध से तमतमा गयी और अपने अपमान का बदला लेने के लिए बोलती हुई आगे बढ़ी :

"तुम नहीं जानती। हमारे यहाँ वेश्याएँ हैं। कुटनियाँ हैं और भड़ुए हैं – छिनालों की तो एक पूरी जमात है जो किसी भी चीज़ के लिए तैयार रहती हैं। वे सोचती हैं कि उनके चेहरों पर सुज़ाक के घाव कोई ऐसे लक्षण हैं जिन पर गर्व किया जाये..."

मोटी औरत ने आपा खो दिया, दुबली औरत के चेहरे पर थप्पड़ मारा, उस पर थूका, और एक ऐसी चीख़-पुकार मचायी कि उस अँधेरी बदबूदार कोठरी की छत जैसे हिलने लगी। रोना-धोना, चीख़ें और गालियाँ तब तक वातावरण में चलती रहीं जब तक की वार्डरक्षिका तेज़ी से दौड़कर इस तमाशे को देखने नहीं चली आयी, और गन्दी भाषा की बौछार के साथ व्यवस्था नहीं स्थापित कर दी। ताओ-चिङ ने पतित पेशा करनेवालियों के लिए घृणा महसूस की और उसकी इच्छा हुई कि काश उसे राजनीतिक क़ैदियों के साथ रखा जाता। उसने कोठरी में ठसाठस भरी हुई औरतों पर नज़र डाली उनमें से कुछ, जो ग्रामीण वेषभूषा में थी, हताशा में अपने सिर लटकाये हुए थीं; कुछ जो रंगीन और जीर्ण-शीर्ण रेशमी और साटन के कपड़े पहने हुए थीं, एकदम बेफ़िक्र थीं और अश्लील गीत गुनगुना रही थीं; दूसरी अफ़ीम चबा रही थी या पटरे की चारपाइयों पर लेटकर सिगरेट से धुएँ के छल्ले उड़ा रही थीं और अपनी आँखें नचा रही थीं।

"इस तरह के लोगों को मैंने पहले कहीं देखा है, कहाँ देखा है?" ताओ-चिङ ने एक कोने में खड़े होकर सोचा। अचानक उसके मानस-पटल पर अपने पिता की रखैलों की और अपनी सौतेली माँ की घृणास्पद तस्वीरें उभर आयीं; वह अश्लील गीत और माहजोङ की खड़खड़ सुन चुकी थी, और उसे बहुत पहले के कई

भूले-बिसरे दृश्य और चेहरे याद हो आये। उसने अपने मन को इनसे मुक्त करने के लिए घृणापूर्वक फ़र्श पर थूक दिया। जब उसने देखा कि किसी भी चारपायी पर उसके सोने के लिए जगह नहीं थी, तो वह अपने कोने में उकड़ूँ हो गयी, और अपना सिर अपने हाथों से ढँककर सोने का स्वाँग करने लगी।

कोठरी का फ़र्श सीलनभरा और सर्द था। जब उकड़ूँ बने रहना बेहद थकाऊ हो गया तो वह उठकर बैठ गयी। सोने में असमर्थ, उसने अपने दिमाग़ पर यह जानने-समझने के लिए ज़ोर देने की कोशिश की कि कैसे क्वोमिन्ताङ ने उसे पकड़ा था, और वह क्यों इस कोठरी में लायी गयी थी। अगर यह पर्चियों के वितरण के कारण या उसके क्रान्तिकारी दोस्तों के कारण था, तो निश्चय ही उसे राजनीतिक क़ैदियों के साथ रखा गया होता। अब भी उसके ट्रंक में, कुछ कपड़ों की जेबों में कुछ पर्चियाँ पड़ी हुई थीं और इसके नीचे ताई यू द्वारा दी गयी प्रतिबन्धित प्रकाशन सामग्री रखी हुई थी। पुलिस उसके ट्रंक की तलाशी ले सकती थी और उन्हें पा सकती थी; और क्वोमिन्ताङ इसके लिए उसे शूट कर सकता था। इस रात, वह बारी-बारी से सर्द-गर्म होती रही। आँखें फैलाये, वह सोने की कोई इच्छा नहीं महसूस कर रही थी। और लगभग पौ फटने तक उसे नींद नहीं आयी।

अगले दिन दोपहर बाद उसे पूछताछ के लिए बाहर ले जाया गया। जज ने सिर्फ़ उसका नाम, उम्र और जन्म-स्थान पूछा था, उसी समय उस मनहूस अदालत के पीछे की अँधेरी कोठरी से एक लम्बा, छरहरा आदमी पश्चिमी सूट पहने प्रकट हुआ। वह जज के पास पहुँचा और उससे फुसफुसाकर कुछ मिनट तक बातचीत करता रहा। जज बार-बार स्वीकृति में सिर हिलाता रहा। इस आदमी का चेहरा ताओ-चिङ को जाना-पहचाना लगा, लेकिन वह उसे ठीक-ठीक न पहचान सकी। अभी वह इस उधेड़बुन में अपने विस्मय से उभर भी नहीं पायी थी कि जज ने उसे सूचित किया :

"लिन ताओ-चिङ, तुम्हारा केस क्वोमिन्ताङ के शहर मुख्यालय को हस्तान्तरित कर दिया गया है। तुम्हें श्री हू मेङ-एन द्वारा दी गयी ज़मानत पर रिहा किया जाता है।"

"हू मेङ-एन कौन है? उसे मेरा ज़मानतदार बनने की क्या गरज़ आ पड़ी?" भारी मन और गम्भीर आशंका से वह इमारत से बाहर निकली, मनहूस गहरी धूसर दीवार को पार किया, और पीछे देखने के लिए मुड़ने पर महसूस किया कि उसने रात पब्लिक सिक्योरिटी ब्यूरो के हवालात में बितायी थी। उसने सीधे अपने आवास पर पहुँचने के लिए एक रिक्शा किया। एक बार वहाँ पहुँचकर वह चारों ओर देखने लगी कि कहीं कोई चीज़ ग़ायब तो नहीं है। दरवाज़ा खुला और उसकी रिहाई के लिए ज़िम्मेदार व्यक्ति अन्दर आया।

"मुझे शंका है कि तुम्हें बुरी तरह डरा दिया गया है। कुमारी लिन! मैं यह देखने चला आया कि तुम कैसी हो!" एक मुस्कान के साथ उसने अपना धूसर फ़ेल्ट हैट

उतार लिया, और झुककर उसका अभिवादन किया।

ताओ-चिङ उछल पड़ी, मानो किसी बिच्छू ने डंक मार दिया हो। वह इतनी भयभीत हो गयी कि बोल नहीं पायी, वह हू के दुबले-पतले पीले चेहरे और उसकी चमकती सफ़ेद आँखों को घूरकर देखते ही एक कोने में दुबक गयी। यह निदेशक हू था जिसने उससे शादी करने के लिए उसकी सौतेली माँ के साथ मिलकर जाल रचा था। ज़ाहिर था कि वह क्वोमिन्ताङ के शहर मुख्यालय का एक स्पेशल एजेण्ट था।

"अब डरो नहीं, कुमारी लिन!" वह दबी हुई हँसी हँसा। "मैंने तुमको लम्बे समय से नहीं देखा है, और मैं ख़ासतौर से तुम्हारे ही बारे में पता लगाने आया हूँ। कृपया बैठ जाओ।" आगन्तुक ने अपने इस मेज़बान को बैठने के लिए इशारा किया। ताओ-चिङ बैठी नहीं, लेकिन वह एक बार फिर अभिवादन करके बैठ गया।

ताओ-चिङ ने अपनी बौखलाहट को और इस आदमी के प्रति अपनी घृणा को छिपाने की पूरी-पूरी कोशिश की। वह धीरे-धीरे चलती हुई दरवाज़े तक गयी और वहीं खड़ी हो गयी।

"समय कितना जल्दी बीत जाता है। जब हम आख़िरी बार मिले थे तब से दो वर्ष से अधिक हो गये।" हू मेङ-एन एकदम बेतकल्लुफ़ होकर एक के बाद एक सिगरेट फूँक रहा था और एक विद्वताभरे भद्र स्वर में आरोह-अवरोह के साथ बोल रहा था। "जब तुमने घर छोड़ दिया, तो तुम्हारी माँ लगभग विभ्रान्त हो गयी। मैं भी बहुत चिन्तित हो गया... क्या तुम जानती हो कि मैं तुम्हारी कितनी तारीफ़ करता हूँ, कुमारी लिन? – तुम्हारे चले जाने से मुझे इतनी चोट पहुँची कि मैंने तब से शादी के बारे में कभी सोचा ही नहीं..." उसने अपनी सिगरेट बुझा दी और आशाभरी नज़रों से ताओ-चिङ की ओर देखा, जो बेजान-सी होकर पीली पड़ गयी थी। लेकिन इस लड़की ने न तो उसकी ओर देखा और न कोई शब्द ही उच्चारित किया।

जब उसने देखा कि वह जवाब देना नहीं चाहती, तो हू ने दूसरी सिगरेट जला ली। अपनी कड़ी कुर्सी से हो रही असुविधा के चलते, उसने इसे थोड़ा आगे सरका लिया, और इसके शीर्ष को दीवार से टिका लिया। ताकि वह इसे एक आरामकुर्सी की भाँति पीछे की ओर झुका सके।

"मैं नहीं समझता कि तुम्हें वह सब पता होगा जो तुम्हारे परिवार के साथ घट रहा है।" उसकी आँखों में एक बनावटी अनुराग था, वे अब लगभग दरार की भाँति संकुचित हो गयी थीं। "तुम्हारी माँ मर चुकी है, और तुम्हारा पिता नानकिङ चला गया है। मैंने तुम्हारे भाई ताओ-फेङ की देखभाल करनी चाही, और चाहा कि उसे यहाँ पेइपिङ में पढ़ने के लिए ले आऊँ, लेकिन उसने अपने पिता के साथ दक्षिण जाना पसन्द किया। दोनों अब सम्भवतः नानकिङ में हैं। हाँ, तो कुमारी लिन, मैं सुन रहा हूँ कि तुमने एक मनपसन्द पति चुन लिया है। वह यहाँ क्यों नहीं है?"

ताओ-चिङ के रोंगटे खड़े हो गये, उसे आश्चर्य हुआ कि कैसे वह उसके बारे में इतना कुछ जान गया। अपना पहलू बदलते हुए, उसने ठण्डेपन से जवाब दिया :

"हाँ, हम बहुत मज़े में हैं।"

"हा, हा, हा!" उसकी कर्कश हँसी ऐसे ध्वनित हुई जैसे अँधेरे छोटे कमरे में एक सीटी का तूर्यनाद। "मुझे बेवक़ूफ़ बनाने की कोशिश मत करो! मज़े में हो? – वैसे, कुमारी लिन, मुझे अन्दाज़ है कि तुम आर्थिक तंगी में हो। हम पुराने दोस्त हैं। कोई तकल्लुफ़ मत करो। मुझे अपनी देखभाल करने दो। दो वर्षों के दौरान स्थितियाँ मेरे लिए बहुत अच्छी हुई हैं। मेरे पास इतनी आमदनी है कि एक कुँआरे के लिए तो बहुत ही ज़्यादा है..."

ताओ-चिङ अब अपनेआप को और ज़ब्त न कर सकी। उसने दाँत भींचकर नफ़रत से भरकर अपना जवाब उगल दिया।

"अगर तुमको मुझसे कोई काम हो, तो साफ़-साफ़ कहा। तुमने मुझे गिरफ़्तार क्यों करवाया? तुमने मेरी ज़मानत क्यों ली? मैं अतीत के बारे में कुछ भी सुनना नहीं चाहती। परिवार और तुम मेरे लिए कोई मायने नहीं रखते।"

ताओ-चिङ को बोलने के लिए उकसा देने की खुशी में हू मेङ-एन तनकर सीधा हो गया, अपनी सिगरेट रख दी, और ध्यानपूर्वक सुनने के लिए अपना सिर झुका लिया। जब वह बोल चुकी, तो वह शान्तिपूर्वक मुस्कुराया और अपनी सिगरेट पुनः उठा ली।

"इन सवालों का जवाब आसान है। तुम गिरफ़्तार इसलिए हुई कि मिलिटरी पुलिस की तीसरी रेजीमेण्ट को पता था कि तुमने कम्युनिस्ट गतिविधियों में भाग लिया था। सौभाग्य से जब मैंने इसे सुना, तो क्वोमिन्ताङ मुख्यालय के नाम पर मैं तुम्हारी ज़मानत लेने में समर्थ था। अब बचपना मत करो, मेरी प्यारी तरुणी! अपनेआप को शान्त करो! तुम जानती हो, मैंने यह कार्य करने का बीड़ा इसलिए उठाया कि मैं युवा लोगों से प्यार करता हूँ और उन्हें बचाना चाहता हूँ..." उसने एक आत्मतुष्ट दृष्टि से हामी भरते हुए सिर झुकाया, फिर एक प्यारभरे लहज़े में धीरे-धीरे बोला, "मुझे मालूम है कि कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा छले गये नौजवान लोगों की संख्या कम नहीं रही है। लेकिन मैंने कभी नहीं सोचा था, कुमारी लिन कि जब तुमने इस दुनिया में अपना रास्ता स्वयं बनाने के लिए घर छोड़ा था, तुम उनकी चपेट में आ जाओगी। मैंने तुम्हारे बारे में यह कभी नहीं सोचा था।" उसने कई बार निःश्वास छोड़ा और अधिक राहत पाने के लिए अपनी कुर्सी को पीछे झुका लिया। "तुमको कोई चिन्ता नहीं करनी है, कुमारी लिन," वह धीरे-धीरे कहता गया। "मेरी मदद से तुम्हारा कुछ भी नुक़सान नहीं होगा। यहाँ तक कि अगर तुम गणतन्त्र के लिए नुक़सानदेह गतिविधियों में भी हिस्सा लोगी तब भी, जब तक तुमको मेरी मदद मिलती रहेगी, मैं तुमसे वादा करता हूँ..."

"मैंने राष्ट्र का कभी कोई नुक़सान नहीं किया है। मुझे तुम्हारी मदद की ज़रूरत नहीं है।" ताओ-चिङ गुस्से से लगभग अटकती हुई बोली, उसकी आँखें आग की तरह दहक रही थीं।" मैंने तुम्हारे बारे में बहुत पहले ही जान लिया था। मैं जानती हूँ कि तुम क्या हो! तुम्हारे और मेरे बीच कोई साम्य नहीं है। मुझे तुम्हारे वायदों की ज़रूरत नहीं है। मैं तुम्हारी दया नहीं चाहती। अधिकारी जैसा चाहें, वैसा सलूक मेरे साथ कर सकते हैं।"

हू की मुस्कुराहट ग़ायब हो गयी, और उसका दुबला-पतला चेहरा ऐसे मरोड़ खा गया, मानो किसी ने उसे थप्पड़ मार दिया हा। लेकिन अनुभव का धनी होने के नाते उसने झट एक समझौतावादी मुद्रा अख़्तियार कर ली। नज़रें गड़ाकर ताओ-चिङ को देखते हुए, जिसकी पीतवर्णता उसे पहले से कहीं अधिक ख़ूबसूरत बना रही थी, उसने शान्तिपूर्वक आगे कहा :

"कृपया मुझे ग़लत मत समझो, ताओ-चिङ! पुराने दोस्तों की तरह हम खुलकर बातें कर सकते हैं। तुम्हें पता है कि तुम्हारे ख़िलाफ़ अभियोग कितने गम्भीर है? वह कौन थी जिसने पेइपिङ की गलियों में उन सभी कम्युनिस्ट प्रचार पर्चियों को चिपकाया था? किसने कई स्कूलों में पर्चियाँ भेजी थीं? किसने पेइपिङ में विद्रोही कम्युनिस्ट दंगों में भाग लिया था? किसके ट्रंकों में कम्युनिस्ट प्रकाशन सामग्री और दस्तावेज़ थे? तुम्हें जानना चाहिए कि ये सारे अभियोग कितने गम्भीर हैं, और ज़्यादा कुछ कहने की आवश्यकता नहीं। कमाण्डेण्ट च्याङ सियाओ-सिएन बेहद निर्मम है – वह बिना पलक झपकाये लोगों को मार डालता है। तुम्हारे बारे में यह सारी सूचना एकत्र करके वह तुम्हारे केस का खुद फ़ैसला करना चाहता है। अतः तुम देख लो कुमारी लिन, तुम्हारी स्थिति बड़ी नाज़ुक है। मैं शुक्रिया नहीं माँगता, लेकिन सच्चाई यह है कि मुझे तुम्हारा केस क्वोमिन्ताङ मुख्यालय में हस्तान्तरित कराने के लिए भारी मुसीबत उठानी पड़ी। केस को निपटाना आसान हो सकता है या मुश्किल, यह तुम्हारे नज़रिये पर निर्भर करता है। मुझे विश्वास है कि तुम इतनी समझदार हो कुमारी लिन कि तुम अपना सिर ईंट की दीवार पर नहीं दे मारोगी। निश्चय ही, तुम अपना बेशक़ीमती जीवन गँवाना नहीं चाहोगी?" इस गम्भीर आग्रहकारी वक्तव्य के पीछे एक अचूक धमकी छिपी थी, जिसके अन्त में उसने एक गहरा निःश्वास छोड़ा मानो अपनी हार्दिक सहानुभूति प्रकट कर रहा हो।

ताओ-चिङ अपनी कार्रवाइयों की इस गिनती के दौरान ख़ामोश बनी रही, दुश्मन द्वारा उसके गोपनीय कामों का पता लगा लेने के कारण उसकी मुसीबत और आशंका दूनी हो गयी। उसने ज़ोर से अपना होंठ काट लिया, और न सिहरने की कोशिश के साथ, निराशापूर्वक सोचती रही, "वे कैसे जान गये?"

"फ़िक्र मत करो प्यारी, तुम मुझ पर भरोसा कर सकती हो..." हू मेङ-एन घुरघुराया और शान्तिपूर्वक उठकर उसके पास गया। और अपने हाथ उसके कन्धों

पर रख दिये।

"मुझे छूने का साहस मत करो।" ताओ-चिङ मेज़ की दूसरी ओर छिटकती हुई, चिल्लायी। आँखों-आँखों में उसकी ओर देखकर हाँफती हुई, उसने उसे चुनौती दी : "तुम कम्युनिस्ट पार्टी की पर्चियों की बात कहते हो, दंगों की बात कहते हो – यह सब एक कुत्सित झूठ है! क्या सबूत है तुम्हारे पास?"

हू मेङ-एन ने बिना जवाब दिये उसकी ओर देखा, और उसके बाद मेज़ पर पड़े चमड़े के बड़े ब्रीफ़केस को उठाया। उसने धीरे-धीरे कई लाल और हरी पर्चियों और तमाम पत्रिकाएँ इसमें से निकालीं और गर्वपूर्वक इन्हें उसके सामने छितरा दिया। "ये क्या हैं, मैडम?" उसने एक मुस्कान के साथ पूछा।

जैसे ही उसने इन जानी-पहचानी पर्चियों पर नज़र डाली, "चीनी कम्युनिस्ट पार्टी" की चटख लिखावट ने उसकी आँखों को आकृष्ट कर लिया, और उसने देखा कि ताई यू द्वारा उसको दिया गया 'उत्तरी चीन में लाल ध्वज' भी दुश्मन के हाथों में पड़ चुका था। उसका हृदय जल रहा था, और वह रोने-रोने को हो आयी। अपने जीवन में पहले कभी भी उसने घृणा के ऐसे आवेग को नहीं जाना था। अपने बाप और सौतेली माँ के प्रति, उस समाज और उन लोगों के प्रति, जिन्होंने उसकी माँ और स्वयं उसको सताया और अपमानित किया था, चली आ रही उसकी समस्त घृणा इस आदमी के ऊपर केन्द्रित हो गयी जिसने उसकी पर्चियाँ चुरा ली थीं। उसने स्थिर भाव से उसे घूरा, उसका चेहरा तमतमा कर लाल हो उठा, गुस्से के मारे वह भूल गयी कि उसका एक धूर्त दुश्मन से पाला पड़ा था। अपने भोलेपन में वह बेतहाशा चिल्ला उठी, "ये पर्चियाँ मेरी हैं। मैंने ही इन्हें विभिन्न स्कूलों में भेजा था... मैं तुमसे नफ़रत करती हूँ। तुम जितना बुरा चाहो, कर लो!"

हू मेङ-एन का चेहरा फिर ऐंठ गया, लेकिन एक उदासीन भाव दिखाते हुए वह हँसा और बोला :

"मैं सचमुच तुम्हारे लिए बहुत दुखी हूँ, कुमारी लिन! तुम्हारी जैसी समझदारी रखने वाले को क्या अचानक पूरा दिमाग़ी सन्तुलन खो देना चाहिए? इतनी हठी मत बनो। तुम बहुत थक गयी हो। ठीक से आराम करने की कोशिश करो। अब मैं जा रहा हूँ, लेकिन मैं किसी दूसरे समय वापस आऊँगा।"

उसने अपना ब्रीफ़केस बन्द किया और अपना हैट पहन लिया। बाहर जाते हुए उसने अलविदा में ताओ-चिङ का अभिवादन किया, जो खिड़की के पास स्तब्ध खड़ी थी।

"इस पर अच्छी तरह सोच लो। समझदारी से काम लो, मेरी प्यारी तरुणी। अब मैं तुम्हें और ज़्यादा परेशान नहीं करूँगा।"

——:o:——

अभ्यास 27

अगले दिन सुबह, एक नींदरहित रात के बाद, थकी हुई ताओ-चिङ जागी। अभी वह जगी ही थी कि हू मेङ-एन एक चुस्त भूरा सूट पहने, एक हाथ में अपना बड़ा ब्रीफ़केस और दूसरे हाथ में गुलाब के फूलों का एक गुलदस्ता लिये आ पहुँचा।

"शुभ प्रात: कुमारी लिन! तुम पहले ही जग गयी!" उसने बहुत अदब से झुककर अभिवादन किया, गुलदस्ते को काँच के एक कलश में रखा, और एक सिगरेट जलाकर दरवाज़े के पास खड़े होकर उसे तिरछी नज़रों से देखने लगा।

ताओ-चिङ का चेहरा बहुत लाल हो उठा, जब उसने गुलदस्ते पर नज़र डाली। वह इस घृणित व्यक्ति के फूलों को उठाकर बाहर फेंक देना चाहती थी, लेकिन उसने अपने को नियन्त्रित रखा और अपने हाथों को अपने पीछे कसकर भींच लिया।

वे ख़ामोशी में एक-दूसरे को निहारते रहे।

"कल मैंने देखा कि तुम अच्छे मूड में नहीं थी," हू ने अन्ततः चुप्पी तोड़ी। मानो खड़े-खड़े ऊब जाने से, उसने एक कुर्सी दीवार के सहारे टेढ़ी करके टिका दी, और बैठ गया। नज़दीक से ग़ौर करते हुए, उसने विस्तार से बोलना चालू किया, "तो मेरी बात ख़त्म नहीं हुई थी, जो कहना चाहता था। आज तुम्हें अपेक्षतः शान्त रहना चाहिए ताकि हम इस पर ठीक से बातचीत कर सके।" उसने एक दूसरी सिगरेट जला ली और चिन्तनशील मुद्रा में आँखें झपकायीं, फिर एक मुस्कान के साथ ताओ-चिङ की ओर मुड़ा, जो तनिक भी हिली-डुली नहीं थी। "ताओ-चिङ एक पुराने पारिवारिक दोस्त के नाते मैं सचमुच तुम्हारे बारे में बहुत चिन्तित हूँ। हमारे दरम्यान जो कुछ हुआ मैं उसे बताने की ज़रूरत नहीं समझता – मैं प्रेम की स्वतन्त्रता में यक़ीन रखता हूँ, और तुम पर कोई दबाव नहीं डालूँगा। लेकिन मुझे ज़रूर स्पष्ट कर देना चाहिए कि मैं तुमसे कितना प्यार, और तुम्हारी कितनी क़द्र करता हूँ। पिछले दो वर्षों के दौरान में हर रोज़ तुम्हारे बारे में सोचता रहा। तुम शायद इसे सुनना न पसन्द करो, इसलिए मैं अभी इस पर कोई और बात नहीं करूँगा। मैं विश्वास करता हूँ कि पूर्ण निष्कपटता एक पत्थर के हृदय को भी समय आने पर द्रवित कर देती है, तुम्हारे हृदय की क्या बात करूँ! इस क्षण, आओ हम सबसे ज़रूरी मसले पर बातचीत करे। पिछली रात, च्याङ सियाओ-सिएन ने तुम्हारे केस के बारे में फिर पूछने के लिए टेलीफ़ोन किया था। वह इस पर ख़ासतौर से ध्यान दे रहा है और चाहता है कि जितना जल्दी हो सके इसे निपटा दिया जाये। मैंने सबसे अच्छा यही समझा कि तड़के ही चलकर तुम्हें सचेत कर दूँ। उसने अपनी सिगरेट का गहरा कश खींचा और इसे बिना आधा ख़त्म किये ही फेंक दिया। एक ख़ामोशीभरी विचारमग्नता में एक क्षण के लिए अपनी आँखें बन्द किये रहने के बाद उसने उन्हें पुनः एक मुस्कुराहट के साथ, यह कहते हुए खोल दिया। "ताओ-चिङ!

तुम निश्चय ही एक नाजुक स्थिति में हो। तुम मुझ पर ज़रूर विश्वास और [illegible] रखो कि मैं तहेदिल से तुम्हारे हित के लिए चिन्तित हूँ। तुम अभी भी एक बच्ची से कुछ ही अधिक बड़ी हो, और इस समाज की जटिलता और विद्रूपता को नहीं समझती। कम्युनिस्ट पार्टी हमारे देश, हमारी जनता और समूची दुनिया को बचाने का स्वांग रचकर नौजवानों को बहका रही है। कितने नवयुवक और नवयुवतियाँ इसकी चपेट में आ चुके हैं। क्या दुनिया को एक क्षुद्र अन्धे उत्साह द्वारा बचाया जा सकता है? एक समाज को, जो इतना सड़ चुका है, जैसाकि हमारा चीन का समाज, क्या तुम जैसे उत्साही अनाड़ियों द्वारा बचाया जा सकता है? आँखें खोलो कुमारी लिन! मैं तुमसे याचना करता हूँ। जीवन को और क़रीब से देखो! तब तुम उस ग़लत रास्ते से मुँह फेर लोगी जिसको अख़्तियार किये हुए हो।"

इस तरह की बातों ने ताओ-चिङ के कानों को भन्ना दिया और उसके हृदय को पीड़ा से मरोड़ दिया। वह प्रतिवाद में चीख़ी, बिना जाने ही कि वह क्या कह रही है :

"बकवास मत करो। मैं कुछ नहीं सुनना चाहती।"

वह अब भी उसी तरह पीठ टिकाये, मानो कुछ भी गड़बड़ नहीं हुई, मुस्कुराहट के साथ कहता गया :

"अब, कुमारी लिन। इतनी बेपरवाह मत बनो! इससे क्या फ़ायदा? बहुत से नौजवान, जो पहले-पहल गिरफ़्तार होते हैं, इसे बहादुरी समझने की कोशिश करते है। ऐसा करना फ़ैशनेबल लगता है। लेकिन वे मूर्ख हैं, हद दर्ज़े के मूर्ख।" उसने दयाभाव से अपना सिर हिलाया और अपनी बात को असरदार बनाने के अन्दाज़ में, अपना एक पाँव पटका। किसी प्रत्युत्तर की व्यर्थ आशा में इन्तज़ार करने के बाद वह आगे बोला, "यह आदमी च्याङ सियाओ-सिएन एकदम निर्मम है। पिछली रात उसने और पन्द्रह कम्युनिस्टों को शूट करवा दिया। वे सभी प्रसन्नचित जीवन की बसन्तकालीन उठान के होनहार नौजवान थे, उनमें से तीन लड़कियाँ थीं। कृपया सोचो, ताओ-चिङ क्या यह उचित है? तुम अपना बहुमूल्य जीवन क्यों अनावश्यक नष्ट करोगी? क्या सिर्फ़ तुम लोगों में से कुछ के मर जाने से यह दुनिया धरती का स्वर्ग बन जायेगी?"

"कमीने, क्षुद्र प्राणी कभी भी बहादुराना मक़सद को नहीं समझ सकते! असली मतलब पर आओ, श्रीमान हू। अगर च्याङ सियाओ-सिएन ने तुम्हें मेरी गिरफ़्तारी करने के लिए भेजा है, तो मैं तुम्हारे साथ चले चलूँगी।" ताओ-चिङ अपनी नज़र खिड़की से बाहर की ओर फिराती हुई, अब पहले से अधिक नरमी से बोल रही थी।

"अब देखो ताओ-चिङ यह मज़ाक़ की बात नहीं है। भला मैं ऐसा करूँगा! अगर मेरे चार्ज में होता, तो यह बहुत आसान होता। दुर्भाग्य से तुम च्याङ

सियाओ-सिएन के हाथों पड़ गयी, जिसने तभी तुमको रिहा किया, जब मैंने तुम्हारी ज़मानत की पैरवी की। मैं चाहता हूँ कि, हर हालत में, तुम्हें बचाने का कोई तरीक़ा निकाल लूँ!" वह मेज़ के पास गया जहाँ उसका ब्रीफ़केस पड़ा हुआ था, और बैंक-नोटों की एक गड्डी निकाल ली। धीरे-धीरे ताओ-चिङ के निकट पहुँचकर उसने नोटों को हाथ में लेकर आगे की ओर बढ़ाया। और उससे विनती की, "यह रक़म ले लो और अपने लिए कुछ अच्छे कपड़े बनवा लो ताओ-चिङ। जीवन तेज़ी से भाग रहा है। मैं कई सुन्दरियों को जानता हूँ, लेकिन कोई भी तुम्हारे मुक़ाबले में नहीं है... अब बुरा मत मानो, यह महज़ एक छोटी रक़म है।"

ताओ-चिङ वहाँ एक सफ़ेद फलक की भाँति निश्चल खड़ी रही, मानो कोई मूरत हो।

"कृपया इसे ले लो। कृपया इसे अपने जेड जैसे सफेद हाथों में ले लो।" उस पर एक तिरछी नज़र डालते हुए हू ने उसका हाथ पकड़ लिया।

चटाक! नोटों की गड्डी उसके कृश मरियल चेहरे के सामने उछल कर फ़र्श पर बिखर गयी। वह एक क्षण के लिए हक्का-बक्का हो गया।

उसके बाद कुछेक फुर्तीले क़दमों से ताओ-चिङ ने हू मेङ-एन के फूलों को अहाते में फेंक दिया, और सामने वाले फाटक की ओर दौड़ पड़ी। एक बदशक्ल-दिखने वाले आदमी ने गुर्राते हुए उसका रास्ता रोक दिया :

"जहाँ हो, वहीं रुकी रहो।"

वह सादी पोशाक में एक सशस्त्र एजेण्ट था जो उस फाटक पर तैनात किया गया था, ताकि ताओ-चिङ भागने न पाये। वह हताशा में घिर गयी, और अपने को पुनः संयत करने के लिए अहाते के प्रवेशद्वार की जाली के सहारे टिककर खड़ी हो गयी। जब वह कुछ संयत हुई तो वह एक लाइलॅक वृक्ष के नीचे चली गयी। उसकी आँखें अहाते के दूसरे कमरों की ओर कोई शरण-स्थल तलाशती हुई दौड़ती रहीं; लेकिन हर दरवाज़ा पूरी तरह से बन्द था। उनमें रहने वाले स्पष्टतः जान गये थे कि कुछ गड़बड़ थी और उन्होंने चुपचाप अपने को भीतर बन्द कर लिया था।

जब उसने महसूस किया कि बचने की कोई गुंजाइश नहीं, तब वह नतीजे भोगने के लिए तैयार होने लगी।

"वैसे ही खड़ी रहो! हिलो नहीं!" मेङ चिल्लाया और अपने बैंक नोटों को बटोर लेने के बाद दौड़कर अहाते में प्रवेश कर गया। एक क्षण पहले तक की उसकी चिन्ता काफ़ूर हो चुकी थी। एक रहजन की भाँति उसने पिस्तौल उस पर तान ली। उसकी आँखें दहक रही थीं और उसका स्वर गुस्से से काँप उठा, जब वह गुर्राया, "तुम बुरी से बुरी नियति के क़ाबिल हो।" उसने अपने दाँत पीसे, अपनी पिस्तौल लहरायी और गाली दी, "कुतिया! क्या तुम नहीं समझती कि तुम एक शातिर कम्युनिस्ट अपराधी हो? क्या तुम्हें शर्म का कोई अहसास नहीं? मैं तुम्हें अपने हृदय

की उदारता के नाते बचाने की कोशिश कर रहा था – लेकिन तुम पछताने से भी इन्कार करती हो – निर्लज्ज कुतिया।"

ताओ-चिङ चुपचाप उस लाइलक वृक्ष के नीचे खड़ी रही। भोर का सूरज उसके पीले, भावहीन चेहरे को प्रदीप्त कर रहा था। वह न भयभीत थी और न क्रुद्ध। वह चिन्ता या भावुकता से परे थी। अगर बदमाश ने फ़ायर कर दिया होता, तो भी उसने बचने की कोशिश नहीं की होती। लेकिन हू मेङ-एन सिर्फ़ धौंस-पट्टी दिखा रहा था। जब उसने उसकी प्रकट बेपरवाही को देखा, तो वह गुस्से से दो बार हँसा और बोला, "तुम निर्भीक हो, है न? तुमने मुझ पर प्रहार किया। तुमने मुझ पर प्रहार करने की जुर्रत की! – तुम्हारी जवानी के मद्देनज़र मैं तुम्हें एक मौक़ा और दूँगा। तुम तीन दिन और इस पर सोच-विचार कर लो। उसके बाद, अगर तब भी तुम पश्चाताप का कोई संकेत नहीं देती..." उसने उस पर भद्दी नज़र डाली और घृणा से थूक दिया। "तो जवान लड़की, जो कुछ होगा उसके लिए हू मेङ-एन को दोष मत देना!" इसके साथ ही वह पैर पटककर अपना ब्रीफ़केस अपनी बाँह में दबाये चला गया।

यह महसूस करके कि वह दुष्ट चला गया, ताओ-चिङ अपने कमरे में वापस लौट आयी, और लड़खड़ाकर एक कुर्सी में ढेर हो गयी, वह खुद पहले से अधिक अकेली और कमज़ोर महसूस करने लगी। उसका छोटा-सा क्वार्टर विराट और अनिष्टकारी रूप से साँय-साँय करता प्रतीत हुआ। सिगरेट के ठूँठ पूरे फ़र्श पर फैले हुए थे और हर चीज़ अस्त-व्यस्त थी। वह अपना सिर मेज़ पर टिकाये बिफर पड़ी और रोने लगी।

"ऐसे मत रोओ! धौंस देने वाला कौन था वह, जो अभी-अभी यहाँ पर था?" ताओ-चिङ ने एक सहलाती हुई स्नेहिल बाँह का स्पर्श महसूस किया और अपनी आँखें उठाकर विस्मय से देखा कि उसके चार-पाँच पड़ोसी, पीकिङ विश्वविद्यालय के छात्रगण उसको घेर कर खड़े थे। उससे बोलने वाली एक ख़ूबसूरत, छरछरी लड़की थी जिसको वह नाम से नहीं जानती थी। उन सभी के चेहरे भी गहनता से अभिभूत थे।

"कौन था वह धौंस देने वाला? वह क्या चाहता था?" लड़की ने जिज्ञासावश पूछा, जबकि चार नौजवान उसको भारी चिन्तातुर भाव से देख रहे थे। ताओ-चिङ गहराई से अभिभूत हो गयी। नयी शक्ति सहेजकर वह उन्हें बैठने को कहने के लिए उठी। फिर अपने आँसू पोंछती हुई, उसने वह सबकुछ बयान कर दिया जो पिछले कुछ दिनों में घटित हुआ था। दूसरी लड़की नफ़रत से चीख़ उठी, "जानवर कहीं के! कितने कमीने हैं।"

चश्मा लगाये लम्बा गाऊन पहने तीस वर्ष के युवक ने अपना सिर हिलाया और गुस्से से भरकर अपने होंठ सिकोड़े। "बेहूदा!" वह ऐलानिया स्वर में बोला। "तुमको

पिस्तौल से धमका रहा था! तुम इस केस को कोर्ट में ले जा सकती हो, और उस पर मुक़दमा दायर कर सकती हो!"

"तुम उस पर यक़ीन मत करो, भाई तेङ! तुम तो अपना सारा समय पुराकालीन चीज़ों पर ही गँवा देते हो, और तुम नहीं जानते कि आज की दुनिया कैसी है," एक कम उम्र के छात्र ने मुस्कुराकर प्रत्युत्तर दिया। "तुम्हें इस मामले को कोर्ट में ले जाने से कुछ न मिलेगा। भले ही तुम नानकिङ सरकार के पास चली जाओ, इससे कोई फ़ायदा न होगा – वे सभी एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं। इस वर्तमान सामाजिक व्यवस्था में कोई इन्साफ़ नहीं है।"

ये नौजवान लोग एक-दूसरे को देखने लगे। यद्यपि वे अपनी इस बदनसीब पड़ोसिन के प्रति हमदर्दी दिखा रहे थे, फिर भी वे कोई रास्ता नहीं सोच पा रहे थे।

"तुम सभी का शुक्रिया," ताओ-चिङ ने मुलायमियत से कहा। "मैं ही अकेले नहीं फँसायी गयी हूँ..."

"हाँ यह तो है ही!..." जाते हुए उनमें से किसी ने ठण्डेपन से सहमति जतायी। जब वे चले गये, तो लड़की ने सहानुभूतिपूर्वक ताओ-चिङ का हाथ दबाया और राय प्रकट की :

"क्या मैं जाकर वाङ सियाओ-येन को ले आऊँ, ताकि तुम उसके साथ इस मसले पर बातचीत कर सको? मैं जानती हूँ कि तुम दोनों जिगरी दोस्त हो। हाँ, मैं ली हुआई-यिङ हूँ, सियाओ-येन की सहपाठिन।"

"मैं ख़ुद जाऊँगी।"

"नहीं बेहतर होगा कि तुम न जाओ। बाहर तुम्हारी फ़िराक़ में भेदिये हो सकते हैं। फाटक से बाहर कुछ ही मिनट पहले काफ़ी संख्या में वे लोग थे।" अपने हाथ को हल्केपन से लहराकर ली हुआई-यिङ अबाबील की भाँति तेज़ी से चली गयी।

ताओ-चिङ ने लंच नहीं लिया था और रात का खाना भी नहीं खाया था। शाम का धुँधलका घिर आया, तब भी वह बिस्तर पर ही पड़ी रही, उसका दिमाग़ उथल-पुथल में पड़ा हुआ था और चिन्ता के मारे फटा जा रहा था। उसने महसूस किया कि वह भारी मुसीबत में थी। स्थितियाँ उतनी सरल न थीं जितनी कि उसने रात में हवालात में समझा था। वहाँ वह मृत्यु की आशा कर रही थी, जिसने उसको सभी तकलीफ़ों से छुटकारा दिला दिया होता लेकिन वह उससे बच गयी थी और अब उसे एक जटिल परिस्थिति का मुक़ाबला करना था। ऊब, मृत्यु की कामना करने के बजाय वह हू मेङ-एन से स्वयं बदला लेने और उस जैसे दूसरे कुचक्री पाजियों से बदला लेने की आग से दहकने लगी। वह इस बात से वाक़िफ़ थी कि वह कमज़ोर और अशक्त थी और एकदम अकेली भी, जिसकी मदद में कोई कॉमरेड या परिवार नहीं था। लू चिआ-चुआन और सू निङ गिरफ़्तार हो चुके थे, जबकि वह बिल्कुल नहीं जानती थी कि ताई यू के आने की कब उम्मीद थी और

उससे सम्पर्क करने का कोई चारा भी न था। वह क्या करती?

दरवाज़ा खुला और उसने ली हुआई-यिङ के हल्के पद्‌चापों और पूछने की आवाज़ को सुना।

"तुमने बत्ती क्यों नहीं जलायी? क्या तुम इन्तज़ार करते-करते थक गयी थी?"

ताओ-चिङ ने बत्ती जला दी और हुआई-यिङ के नन्हे हाथों को अपने हाथों में ले लिया।

"मैं वाङ सियाओ-येन से मिली थी!" ली हुआई-यिङ ने मन्द स्वर में बताया। "वह तुम्हारे बारे में बुरी तरह चिन्तित थी परन्तु कोई उपाय न सोच सकी। हम साथ-साथ सू हुई से मिलने गयी, जो हमारे छात्र-संगठन की कमेटी में बैठा करती थी, और उसने एक योजना पर विचार किया। वह कल सुबह तुमसे मिलने के लिए तुम्हारे कमरे पर आ रही है। यह तुम्हारे लिए एक पत्र है सियाओ-येन का।"

"सू हुई? मैं उसे जानती हूँ।" इस जानकारी से खुश होकर ताओ-चिङ ने धन्यवाद दिया, और सू हुई के बारे में और समाचार पूछा, लेकिन ली हुआई-यिङ ने बस इतना ही कहा :

"मैं अपने कमरे में वापस जा रही हूँ। लगता है सारे समय गुप्तचर विभाग के आदमी लगे रहते हैं। सू हुई ने कहा है कि जब हम एकत्र होकर बातचीत करें तो इसके बारे में सतर्क रहना होगा, और हमें बहुत अधिक साथ-साथ नहीं रहना चाहिए। बेहतर हो कि तुम बाहर न निकलो, न ही सियाओ-येन के घर जाओ।"

दूसरे दिन दोपहर के बाद पाँच बजे, जब छात्र अपनी कक्षाओं के बाहर-भीतर आ-जा रहे थे, हुआई-यिङ के यहाँ फ़ैशनेबल पोशाक पहने एक छरहरी, ज़िन्दादिल लड़की पहुँची। जैसे ही ताओ-चिङ ने अपने दरवाज़े की सूराख से देखा कि यह तो वहीं सू हुई है जो अठारह मार्च की स्मृति समारोह की मीटिंग में छठे भीतरी वार्ड के प्रधान से भिड़ चुकी थी, तो वह उससे मिलने के लिए ली हुआई-यिङ के कमरे की ओर झपट पड़ी। सू हुई झट उठ खड़ी हुई, मुस्कुरायी और उसके हाथों को कसकर पकड़ लिया।

"लिन ताओ-चिङ।" वह हर्ष से चिल्लायी। "मैंने एक लम्बे अरसे से तुमको नहीं देखा है। कितना सुखद आश्चर्य हो रहा है तुमको यहाँ पाकर..."

हुआई-यिङ ने दरवाज़ा बन्द किया, और कुछ खाने का सामान ख़रीदने बाहर चली गयी।

सु हुई का हाथ पकड़े ताओ-चिङ इतनी भावुक थी कि बोल नहीं सकी। सू हुई उस पर मुस्कुरायी और और बोली, "ताओ-चिङ क्या यह सच है कि तुमने कुछ पर्चियाँ बाँटने में मदद करने के लिए वाङ सियाओ-येन से कहा था?"

ताओ-चिङ की आँखें चमक उठीं और उसका चिन्तित चेहरा खुशी से भर उठा। उसने धीमे से हामी भर दी।

"हाँ, क्या इसमें तुमने भी मदद की थी?"

"अभी उसके बारे में बात न करें। कृपया यह बताओ कि तुम्हारे साथ क्या घटित होता रहा है।" सू हुई की आँखों में चमक और भारी जिज्ञासा थी?

ताओ-चिङ ने विस्तारपूर्वक बताया कि कैसे वह गिरफ़्तार हुई और कैसे हू मेङ-येन से मिली। सू हुई ने ध्यानपूर्वक सुना, कभी-कभी वह एक पसन्दीदा मुस्कान के साथ अपना सिर हिला देती थी, कभी-कभी उत्तेजित हो जाती थी और ताओ-चिङ का कन्धा थपथपा देती थी। अन्त में उसने एक पुराने दोस्त की भाँति अपना विचार प्रकट किया।

"ताओ-चिङ, तुम बुरा मत मानना, अगर मैं अपने मन की बात कहूँ। जब लड़ने का मौक़ा आता है तो तुम काफ़ी बहादुरी दिखाती हो, और मैं तुम्हारे खुलेपन और ईमानदारी को पसन्द करती हूँ, लेकिन तुम्हारे रणकौशल ठीक नहीं हैं। तुमने क्यों उस कपटी से सच्चाई बता दी? वह वास्तव में बहुत मूर्खतापूर्ण था। तुम्हें कभी स्वीकार नहीं करना चाहिए था कि तुमने उन पर्चियों को बाँटा था! और मुझे बताओ, कैसे वे तुम्हारे बारे में वास्तव में वाक़िफ़ हुए? जानती हो?"

शर्म के मारे ताओ-चिङ ने सू हुई का हाथ पकड़ लिया और जैसे ही उसकी उद्धीप्त आँखों में देखा, वह चीख़ पड़ी।

"बड़ी दीदी सू! अब मैं देख रही हूँ कि मैं कितनी बड़ी बेवक़ूफ़ रही हूँ। अब तक मैं अपनी गिरफ़्तारी को समझ नहीं सकी थी। मैं इससे एकदम भौचक्का हूँ। तुम मुझे क्या करने की सलाह देती हो?"

"हूँ..." सू हुई विचारमग्न दिखने लगी। "तुम क्या करने की सोच रही हो?"

"मैं भाग जाना चाहूँगी, लेकिन मैं नहीं जानती कि कैसे।"

सू हुई दबी-सी मुस्कुरायी।

"तुम ठीक सोचती हो! तुम्हें निकल भागना चाहिए! बस दिमाग़ी रूप से तैयार हो जाओ और हम लोग तुम्हारी मदद कर देंगे।" उसी क्षण हुआई-यिङ कुछ मूँगफली, तरबूज़ के बीज और जँगली सेब लेकर लौटी। फिर अन्दर ही वह ताओ-चिङ से धीमे फुसफुसायी :

"कोई बाहर तुमसे मिलने का इन्तज़ार कर रहा है।"

"कौन है वह?" ताओ-चिङ चौंकी।

"मैं उसे नहीं जानती।" हुआई-यिङ ने अपना सिर हिलाया।

ताओ-चिङ उछल पड़ी और सू हुई को चिन्तित आँखों से देखा, मानो पूछ रही हो, "मैं क्या करूँ?" सू हुई ने उसे फुसफुसाकर कुछ सलाह दी, जिससे उसके चेहरे पर मुस्कुराहट फैल गयी।

——:o:——

अध्याय 28

अहाते में तेज़ी से यह देखने जाती हुई कि बाहर कौन उससे मिलने आया था, ताओ-चिङ ने पाया कि वह एक साफ़ रंग का अजनबी नौजवान था, जो पश्चिमी शैली की पोशाक पहने, उसके दरवाज़े के बाहर खड़ा था। वह उसके क़रीब आया, उसे ग़ौर से देखा और उसका हाथ पकड़ कर कहने लगा :

"दीदी, क्या तुम मुझे नहीं जानती?"

"ताओ-फेङ।" ताओ-चिङ ने अपने छोटे भाई को पहचानते ही हर्षोत्तेजित होकर कहा। जब उसने उसे तीन वर्ष पहले देखा था, तब से वह एक लम्बा-तड़ंगा नौजवान बन चुका था। वह उसे भीतर ले गयी और अपने सभी दुख भूलकर, हँसते हुए बोली, "भाई, आओ बैठो! पिछले कुछ वर्षों के दौरान तुम्हारे और परिवार के साथ क्या कुछ हुआ?"

बैठने के बजाय, लिन ताओ-चिङ ने कमरे के बीचोबीच खड़े होकर अपने चारों तरफ़ तहक़ीक़ाती नज़रों से देखा। साजोसामान और अपनी बहन के लिबास का क़रीब से निरीक्षण करने के बाद उसे कुछ निराशा का आभास हुआ।

"मैंने सुना था कि तुमने शादी कर ली है दीदी। तुम क्यों अकेले ऐसी जगह में रह रही हो?"

"हाँ, मैं यहाँ अकेली ही हूँ, भाई। बैठो तो!"

ताओ-फेङ ने बैठने से पहले धूल झाड़ने के लिए एक रूमाल निकाला। "मेरा बहनोई कहाँ है?" उसने एक मुस्कान के साथ पूछा। "वह आजीविका के लिए क्या करता है? क्या वह बहुत धनी है?"

ताओ-चिङ थोड़ा बुझ-सी गयी। "क्यों उसके बारे में पूछ रहे हो? मैंने उसे बहुत पहले छोड़ दिया है। मुझे बताओ, परिवार अब कहाँ है। तुम कहाँ से आ रहे हो?" यद्यपि वह अपने परिवार से घृणा करती थी और वर्षों से उससे कुछ लेना-देना न था, फिर भी ताओ-चिङ ने दिलचस्पी और लगाव को, क्षणिक रूप से, पुनः याद किया।

"माँ पिछले वर्ष मर गयी।" उसने उदासीनता के लहज़े में कहा। "मैं इधर पिछले दो वर्षों से पिता के ही साथ रह रहा हूँ... क्या तुम्हें पता है कि वह फिर से एक सरकारी अहलकार हो गये हैं? हमारा घर नानकिङ में है, मैं शंघाई में रहता हूँ। मैंने उन्हें नहीं बताया है कि मैं अरोरा विश्वविद्यालय में पढ़ रहा हूँ।"

"फिर तुम पेइपिङ किसलिए आये? और पिता कहाँ हैं?"

"पिता?" ताओ-फेङ ने फिर एक बढ़िया रूमाल निकाला। "वह बुड्ढा पैसा चाहता है और यद्यपि महान दीवार के उस पार की सारी ज़मीन बिक चुकी है, फिर भी उसे इतनी कम क़ीमत मिली है कि वह चाहता है कि मैं जाऊँ और असामियों

पर और दबाव डालूँ। वह जेहोल चला गया है, और मुझे यहाँ जेहोल की प्रान्तीय सरकार के महासचिव की रखैल से मदद प्राप्त करने की कोशिश करने के लिए छोड़ गया है। बिना सख़्ती किये उन खस्ताहाल असामियों से कोई रक़म वसूलना कठिन है।"

अब जाकर ताओ-चिङ ने अपने भाई के बढ़िया इस्तरी किये हुए विदेशी सूट, उसके चमकदार बालों और उसके भड़कीले, छिछले व्यक्तित्व पर ग़ौर किया। "तो यही रंग-ढंग हैं जिसमें वह ढल चुका है..." उसने अपनी भौंहें सिकोड़ीं और उसके पास सरक गयी, वह अपनेआप को इस आग्रह से रोक पाने में असमर्थ थी :

"ताओ-फेङ, पिता की इस ज़ालिमाना स्कीम में कोई मदद मत करो। फ़ार्म के असामी पहले से ही बहुत मज़लूम हैं, उनके पास खाने या पहनने को कुछ भी तो नहीं है। इसके अतिरिक्त वह ज़मीन बिक चुकी है – फिर कैसे वह उनसे और रक़म निचोड़ सकता है? उन्हें निचोड़कर रक्तहीन कर देने के बाद वह उनके घावों पर नमक रगड़ना चाहता है।" पूरी तरह आवेश में आकर उसने ज़ोर-ज़ोर से कहना शुरू किया, "अब मैं महसूस करती हूँ, भाई कि हमारे माँ-बाप और हम दोनों पर अपराध का बोझ है। तुम्हारा और मेरा पालन-पोषण इन्हीं असामियों का ख़ून चूसकर किया गया है। पिता का रास्ता तो मरने के साथ ही ख़त्म होगा, जैसे माँ का हुआ। लेकिन हम तो अभी नौजवान हैं, हम तो एक दूसरा रास्ता पकड़ सकते हैं..."

ताओ-फेङ ने इस विचित्र बात पर अपनी जीभ काढ़ ली, और बीच ही में बोल पड़ा :

"ध्यान से सुनो दीदी, मेरी पहले से ही एक गर्लफ़्रैण्ड है। उसका नाम काओ लिङ-लिङ है और वह देखने में सुन्दर है। वह एक धनी परिवार की है और विश्वविद्यालय की रानी है। हमारी सगाई हो चुकी है। और पिता का कहना है कि अगर हम महान दीवार के उस पार वाली अपनी ज़मीन से कुछ और पैसे पा सकें, तो वह इसे हमारी शादी में ख़र्च करेगा। 'स्वार्थ-लिप्सा तो मनुष्य में परमात्मा द्वारा ही आरोपित कर दी गयी।' मैं उन सभी अभागे असामियों को धनी तो बना नहीं सकता, अलबत्ता वे मेरे बढ़िया ढंग से जीने में योगदान तो कर ही सकते हैं।"

ताओ-चिङ इस मानवद्वेषी स्वार्थवाद पर भड़क उठी।

"भाई!" उसने प्रतिवाद किया। "तुम इतने नीच और घृणित कैसे हो सकते हो? ज़रा सोचो तो, कि तुम क्या कह रहे हो। तुम एक ज़मींदार या पूँजीपति की भाँति बोल रहे हो। क्या तुम नहीं जानते कि इन वर्गों का कोई भविष्य नहीं है, इनका सर्वनाश निश्चित है?" अपनी बौखलाहट में वह अपनी ही ख़तरनाक स्थिति को भूल गयी, और वर्ग-संघर्ष और मानव-समाज के भावी विकास का वर्णन करने लगी।

ताओ-फेङ बढ़ती अधीरता के साथ तब तक सुनता रहा, जब तक कि वह और

बरदाश्त न कर सका। वह एकाएक उठा, अपना हैट उठाया और तिरस्कारपूर्ण हँसी के साथ बोला :

"व्यर्थ बकबास मत करो, दीदी। तुम एक कम्युनिस्ट हो, है न? वैसे यह कोई मज़ाक़ नहीं है।" अपने हाथ से उसका गला दबा देने की कल्पना करते हुए उसने एक मन्द स्वर में चेतावनी दी, "तुम अपना ख़याल रखो कि कहीं तुम्हारा सिर न उतार लिया जाये!"

उसके चले जाने के बाद ताओ-चिङ जहाँ खड़ी थी, वहीं कुछ समय तक खड़ी रही। उसने जो कुछ कहा था उस पर अफ़सोस करती हुई, उसने स्तब्धकारी अन्दाज़ में अपनेआप को यह कहते हुए कोसा, "मैं कितनी मूर्ख हूँ। क्या मुझे इसीलिए अपना दिल खोल देना चाहिए था कि वह मेरा भाई है?" उसने दुश्मन के समक्ष सच्चाई बयान करने के विरुद्ध सू हुई की चेतावनी को याद किया। बहरहाल, धीरे-धीरे वह शान्त हुई, उसे बातचीत के बाद रुख़सत होती हुई सू हुई की फुसफुसाहट याद आयी, "शाम के धुँधलके तक यहीं रुके रहो, कोई तुम्हें निकल भागने में मदद करने आयेगा, लेकिन इसके बारे में एक शब्द की भी किसी को भनक न लगे।" हँसते हुए उसने अपने हाथों को अपने दहकते चेहरे पर रखा और अपनेआप से फुसफुसायी, "उसकी तुलना में मैं कितनी मूर्ख हूँ।" उसके एकाकीपन का भाव विदा हो चुका था, कारण कि उसे जो निश्छल सहानुभूति और स्नेहिल सहायता मिल रही थी, उसने उसे काफ़ी उत्साहित किया था। ऐसा प्रतीत होता था मानो यदि कोई जीवन के समुद्र में अपने को सिर्फ़ तरणशील और संघर्षशील बनाये रखे, तो कभी उसे डूबने नहीं दिया जा सकता। जब उसने अपने सामान को व्यवस्थित करना शुरू किया, तो सोचने लगी कि यह नया अध्याय उसके जीवन में क्या लेकर आयेगा। सू हुई के सवालों में से एक दूसरा सवाल तेज़ी से उसके दिमाग़ में उभरा। "उन्हें तुम्हारे बारे में पता कैसे चला?"

कैसे? ताओ-चिङ ने विश्व संस्कृति की उस पुस्तक को रख दिया जिसे वह पकड़े हुए थी, और बिस्तर पर सोचने के लिए बैठ गयी। युङ-त्से और वाङ सियाओ-येन को छोड़कर सिर्फ़ ताई यू ही ऐसा था जो उसके क़रीब था और उसकी गतिविधियों की कोई जानकारी रखता था। युङ-त्से इतनी दूर तक कभी नहीं जायेगा कि वह उसके ख़िलाफ़ मुख़बिरी करे। उसने ऐसा तर्क किया, जबकि, खुले दिल वाली, सरल-सीधी सियाओ-येन तो और भी अधिक भरोसेमन्द थी। जहाँ तक ताई यू का सवाल था, वह तो स्वयं ही एक क्रान्तिकारी था – कैसे वह ऐसा काम कर सकता था? बुरी तरह से उलझकर वह किसी नतीजे पर नहीं पहुँच सकी।

"तुमने सच्चाई बतायी क्यों? वह सचमुच बहुत मूर्खतापूर्ण था।" सू हुई के शब्दों को याद करती हुई, वह फिर अपने को कोसती हुई, हँस पड़ी। "ग़द्दार – क्या तुम समझती हो कि क्रान्ति के खेमे में ग़द्दार नहीं हैं?" आख़िरी बार जब वे मिले

थे, तो लू चिआ-चुआन ने उसको बताया था कि उसके कई कॉमरेड ग़द्दारों के विश्वासघात से गिरफ़्तार हो गये थे। इसको स्मरण करते हुए, उसने महसूस किया कि ताई यू का व्यवहार ही अधिक सन्देहास्पद था... लेकिन तुरन्त ही उसने अपनेआप को कोसा, "नहीं, यह नहीं हो सकता।" और इन सन्देहों को हास्यास्पद समझकर एक ओर झटक दिया। उस रात देर तक वह अँधेरे में पड़ी-पड़ी, अपने दिमाग़ में अन्तहीन सवालों को उलटती-पलटती रही, पर उनका कोई जवाब न पा सकी। इतनी अधिक समस्याओं से तंग आकर, उसने किसी से परामर्श लेने की इच्छा की। हर चीज़ कितनी भिन्न होती, अगर सिर्फ़ लू चिआ-चुआन इस समय उसके साथ होता। उसका ख़याल आने पर, वह उछल पड़ी और बत्ती जलाकर मेज़ के पास उन तमाम बातों में कुछ को लिखने बैठ गयी जिनके बारे में वह उसे बताना चाहती थी।

"भाई लू," उसने लिखा, फिर उसने इन दोनों शब्दों को काट दिया और फिर से लिखना शुरू किया, इस बार वह उसका नाम ही भूल गयी।

मेरे सर्वप्रिय सलाहकार और दोस्त,

मैं पेइपिङ से, 19 अक्टूबर 1933 को तुम्हें यह पत्र लिख रही हूँ। मैं नहीं जानती कि तुम इस समय कहाँ क़ैद हो और क्या-क्या भोग रहे हो। लेकिन मैं महसूस करती हूँ, दोस्त कि मुझे तुमको पत्र लिखना ही चाहिए, क्योंकि मेरे पास कहने को बहुत कुछ है, तुमको बताने के लिए बहुत कुछ है। पहले तुम मुझे मेरी सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण ख़बरों को लिखने दो, जो मुझे विश्वास है, तुमको प्रसन्न कर देंगी। मैंने हिचकिचाना बन्द कर दिया है, और संकल्पबद्ध होकर उस राह पर तुम्हारे साथ आ जुड़ी हूँ जिस पर तुम सफ़र कर रहे हो। मैंने उन अस्वास्थ्यकर निम्न पूँजीवादी कमज़ोरियों – अतीत से भावुक लगाव और सिद्धान्त की परवाह किये बग़ैर दूसरों के साथ अन्धाधुन्ध सहानुभूति – से निजात पाने का इन्तज़ाम कर लिया है। मैंने जीवन में एक नयी शुरुआत की है। और अधिक ठोस रूप में कहूँ, तो मैंने युङ-त्से को छोड़ दिया है। जो साल बीता है, उसे सोचकर मुझे तकलीफ़ होती है, दोस्त। इससे मुझे भारी अपराध का अनुभव होता है। उस शाम जब मैं दीदी ली को देखने गयी, तो तुम मेरे लौटने के समय तक जा चुके थे, और उसके तुरन्त बाद ही तुम गिरफ़्तार हो गये। मैं अपनेआप को इस बात के लिए कभी माफ़ नहीं करूँगी कि जब तुम ख़तरे में थे, तो मैंने तुम्हारे प्रति चूक कर दी। मैं कभी इसका प्रायश्चित करने में समर्थ नहीं हो सकूँगी। लेकिन मैं अपने को अवसाद से अभिभूत हो जाने नहीं दूँगी, और मैं तुमसे माफ़ी नहीं मागूँगी। जो कुछ मैं तुमसे कहना चाहती हूँ वह यह है : तुम गिरफ़्तार हो चुके हो, लेकिन मैं कतारों में शामिल हो गयी हूँ। और मेरा विश्वास है कि मेरे जैसे हज़ारों दूसरे नौजवान लोग भी आगे आ

रहे हैं। बेशक, मैं बहुत अनुभवहीन हूँ और किसी भी रूप में तुम्हारी बराबरी नहीं कर सकती।

इतना लिखने के बाद वह रुक कर लम्बे समय तक सोचती रही। बाहर पछुआ हवा कागज़-लगी खिड़कियों पर गिरी हुई पत्तियों को उड़ा-उड़ाकर अन्दर झोंक रही थी। यह पतझड़ का अन्त था और वह हल्के कपड़े पहने हुए थी। खिड़की की दरारों से सनसनाती आ रही ठण्डी हवा उसे कँपकँपा दे रही थी। उसी समय उसके हृदय में एक नये उल्लास ने उसे सर्दी और आसन्न खतरे से बेखबर बनाकर, उसके विचारों और उसकी लेखनी को गतिशील कर दिया।

मेरे सर्वप्रिय और सर्वाधिक सम्मानित दोस्त, एक दूसरी बात जो मैं तुमको बताना चाहती हूँ, वह यह है कि मैं अभी-अभी एक छोटी-सी परीक्षा से गुज़री हूँ। प्रतिक्रियावादी मुझे लगभग नष्ट ही कर चुके थे। लेकिन जब स्थिति अपनी सबसे नाजुक घड़ी में थी और मुझे कोई रास्ता नहीं सूझ रहा था, तो पार्टी हमारी महान माँ – का मददगार हाथ पहुँच गया। इसलिए अपनी चिन्ता और मुसीबत के बावजूद, मैं बहुत प्रसन्न हूँ। यह पार्टी ही थी कि तुम्हारे ज़रिए उसने मुझे तब रास्ता दिखाया जब मैं टूट चुकी थी और विभ्रान्त हो गयी थी, और जब खतरे और अज्ञात गड्ढे मेरे आगे बढ़ने के मार्ग में आये तो पार्टी फिर मेरे बचाव में आ गयी... मैं फ़िलहाल खतरे से बाहर नहीं हूँ, लेकिन मुझे यक़ीन है कि मैं जल्द ही सुरक्षित हो जाऊँगी। मैं यह सोचकर बेहद खुश हूँ कि अब मेरा जीवन तुम्हारे जैसा है – भारी जोखिम से भरपूर।

अन्त में, मेरे सर्वप्रिय और सर्वाधिक सम्मानित दोस्त, मैं कुछ बात अपने हृदय की गहराइयों से कहना चाहती हूँ, कुछ ऐसी बात जिसे कभी पहले कहने का मैं साहस नहीं जुटा पाती थी... मेरे ऊपर हँसना मत, दोस्त। मैं तुम्हें कभी नहीं भूलूँगी, कभी नहीं। कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता कि तुम कहाँ हो, ज़िन्दा या मृत, कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता कि स्थिति किस तरह बदलती है, या परिस्थिति कितना बुरा पलट खा जायेगी, तुम हमेशा-हमेशा मेरे हृदय में बसे रहोगे। हम फिर कब मिलेंगे? क्या हम फिर एक-दूसरे को देख पायेंगे?...मैं एक ऐसे ही दिन के आने की आशा में जी रही हूँ। अगर यह मेरे जीवनकाल में ही आ जाता, तो मैं कितना खुश होती! दोस्त, काश, हम सचमुच फिर मिलते! अपना अच्छी तरह खयाल रखना। संघर्ष में तुम्हारा अटल संकल्प तुमको हमेशा मेरा प्रेरणास्रोत बनाये रखेगा।

जब ताओ-चिङ ने यह पत्र लिख लिया, तो उसने इसे बार-बार पढ़ा। फिर भी, यह पत्र जिसे उसने लू चिआ-चुआन को लिखा था, उस सन्देश की तुलना में नाकाफ़ी प्रतीत हुआ था, जिसे वह अनकही कठिनाइयों से गुज़रते हुए उसके पास

भेजने में सफल हुआ था। पत्र को पढ़ने में पूरी तरह से तल्लीन, वह इतने गहरे आवेगों से अभिभूत थी कि उसे स्वयं अपने ख़तरों और मुसीबतों की कोई ख़बर ही न रही।

"मैं इसे कैसे उसके पास भेजूँगी?" उसने स्वयं से पूछा। सवेरे के अर्द्ध-प्रकाश में उसने पत्र को उँगली से बन्द किया, और मुस्कुरायी। यह एक ऐसा पत्र था जो कभी नहीं भेजा जा सका।

——:o:——

अध्याय 29

वाङ सियाओ-येन ने अपने पिता के अध्ययन कक्ष में, चिड़चिड़ेपन और ख़ामोशी के साथ प्रवेश किया, मानो कोई चीज़ उसके मन पर बोझ बनी हुई थी।

"क्या बात है, सियाओ-येन?" उसकी माँ ने चिन्तित होकर पूछा।

"क्या तुम अपने पाठों के बारे में चिन्तित हो?"

"नहीं!" उसने तमतमाते हुए अपना सिर हिलाया, उसका बरताव सामान्य से और अधिक बेढंग था।

"तब क्या बात है? हमें बताओ!"

सियाओ-येन ने बिना कोई शब्द कहे अपना सिर डेस्क पर टिका दिया।

प्रोफ़ेसर वाङ उसके पास गया और उसके सिर को प्यार से हिलाते हुए, उठाया।

"तुम्हें अपने पिता से कुछ भी छिपाने की ज़रूरत नहीं बेटी। कह डालो, जो तुम्हारी परेशानी हो?"

"डैडी, तुम्हें मेरी मदद करनी है!" उसने निराशा में अपने पिता पर नज़र डालने के बाद अपनी माँ पर नज़र डाली।

"ठीक है, पर बात क्या है बेटी?"

"ताओ-चिङ क्वोमिन्ताङ आततताइयों के भयानक ख़तरे में है। मुझे उसके लिए बहुत अफ़सोस है क्योंकि वह निपट अकेली है। हमें उसकी मदद करने का कोई रास्ता निकालना ही होगा, डैडी।" सियाओ-येन की आँखों से आँसू झरने लगे थे।

प्रोफ़ेसर और उसकी पत्नी ने, जैसे ही इस सूचना पर ग़ौर किया, अपनी बेटी को घूरकर देखा।

"मैं पहले ही उसकी मदद का वादा कर चुकी हूँ। हमें चूकना नहीं चाहिए, डैडी। उसे जिन हालात से गुज़रना पड़ा था, उसको सोचकर मुझे बेहद गुस्सा आता है।" फिर उसने अपने माँ-बाप को ताओ-चिङ की आप-बीती का विस्तृत विवरण सुनाया। जब वह बता चुकी तो प्रोफ़ेसर वाङ हुङ-पिन ने अपना चश्मा उतार लिया, और अपनी मुट्ठी मेज़ पर मारकर हाथ हवा में लहराया :

"यह पूरी तरह से समझ से बाहर की बात है!" वह चीखा "पूरी तरह से समझ से बाहर की बात है!" वह इस बिन्दु पर अपनी बौखलाहट पर क़ाबू पाने के लिए रुक गया और तुरन्त एक अपेक्षतः शान्त स्वर में कहने लगा, "ठीक है, सियाओ-येन, फ़िक्र मत करो, और ताओ-चिङ से कह दो कि वह भी फ़िक्र न करे। हम लोग उसके लिए कोई न कोई उपाय करेंगे।"

सियाओ-येन मुस्कुरायी। उसने सू हुई के साथ जो योजना बनायी थी वह आख़िरकार असरदार साबित हुई। वह जानती थी कि पेइपिङ से दक्षिण-पश्चिम स्थित तिङसिएन में उसकी बुआ एक प्राइमरी स्कूल में प्रधानाध्यापिका है, जिसमें अध्यापकों की कमी है, और वहाँ एक नौकरी पा जाना ताओ-चिङ की समस्याओं के लिए उसे एक आदर्श हल प्रतीत होता था। अपने पिता के पास सीधे पहुँचने से डरने के कारण, उसने उसके रोष और सहानुभूति को उभाड़ने के लिए यह स्वांग रचा था। सबकुछ वैसे ही हुआ जैसा वह चाहती थी, क्योंकि प्रोफ़ेसर वाङ ने पूछे जाने का इन्तज़ार किए बग़ैर, तुरन्त ही प्रस्ताव कर दिया था कि ताओ-चिङ को उसकी बहन के पास भेज दिया जाना चाहिए। बाद में सियाओ-येन के अनुरोध पर, उसने यहाँ तक वादा किया कि वह ताओ-चिङ को पेइपिङ से सुरक्षित निकल जाने देने के लिए उससे भेंट करने स्टेशन तक जायेगा। बहरहाल, जब यह सब तय हो गया, तो उसने अपनी बेटी को कुछ सशंकित भाव से बताया :

"सियाओ-येन, बस इतना ही ठीक है कि हम लिन ताओ-चिङ की मदद कर दें लेकिन भविष्य में दूसरे लोगों के मामलों में हाथ मत डालना। सबसे अच्छा है कि राजनीति को अलग छोड़ दिया जाये : हम इससे जितना ही कम सरोकार रखें, उतना ही बेहतर। तुम्हारा काम पढ़ाई करना है – और कुछ नहीं।"

सियाओ-येन ने स्वीकृति में सिर हिलाया। "मैं मानती हूँ, डैडी। मैं राजनीति का क-ख-ग भी नहीं समझती। यह तो ताओ-चिङ थी जिसके लिए मैं चिन्तित थी – मुझे उसके लिए बहुत दुख है।"

अगले दिन सुबह सियाओ-येन अपने साथ फल की एक बड़ी टोकरी लिये ताओ-चिङ के यहाँ पहुँची। अपने सामान्य आत्मनिष्ठ रवैये के विपरीत, उसने कमरे में प्रवेश करते ही पुकारा :

"क्या बात है ताओ-चिङ, तुम हमारे घर दो दिन से पढ़ाने नहीं आयी। क्या तुम बीमार हो? माँ ने देख आने को कहा है।"

ताओ-चिङ का गला रुँध गया। दोनों सहेलियों एक-दूसरे से लिपट गयीं और कुछ समय तक दोनों में से कोई कुछ न बोलीं। आख़िरकार, सियाओ-येन ने अपने आँसू पोंछे और फुसफुसाकर कहा :

तुम पेइपिङ छोड़ने के लिए आज शाम को सात बजे तक ज़रूर तैयार हो जाना। तुम तिङसिएन में मेरी बुआ के स्कूल में अध्यापन-कार्य करने जा रही हो। तुमको

इस टोकरी में छिपाया हुआ एक मर्दाना सूट मिलेगा। ऐसा इन्तज़ाम किया गया है कि कुछ छात्र ली हुआई-यिङ को बुलाने आयेंगे और छह बजे के थोड़ी देर बाद फ़िल्म देखने जायेंगे। तुम मर्दाना कपड़े पहनकर, और हैट लगाकर इस झुण्ड में शामिल हो जाना, जैसे ही वे भीड़ के रूप में फाटक से बाहर जायें।" सियाओ-येन यह सबकुछ बिना साँस लिये ही कह गयी और मन्द स्वर में आगे बोली, "सात बजे अँधेरा शुरू ही हो गया रहता है, तुम्हारे लिए यह बिल्कुल सुगम होगा कि उस भीड़ और गहमागहमी में बिना किसी की नज़र में आये निकल जाओ। तुम अपने छद्मवेश का ठीक से ख़याल रखना! अपने कन्धों को पीछे ताने रहना ताकि तुम एक लड़का लग सको। हम दोनों भले ही इससे वाक़िफ़ नहीं, लेकिन सू हुई अच्छी तरह जानती है कि बाहर जासूस तैनात हैं। वह हमें बहुत ही सावधान रहने की चेतावनी देती है!" वह ताओ-चिङ पर मुस्कुरायी और एक गहरी साँस खींची। फिर अपना स्वर तेज़ करके सियाओ-येन बोली, "ताओ-चिङ, माँ तुम्हारे बारे में बहुत चिन्तित है। वह आज बहुत व्यस्त है, नहीं तो ख़ुद ही आ गयी होती।"

"कोई बात नहीं। मैं एक या दो दिन में ठीक हो जाऊँगी," ताओ-चिङ ने अपनी भौंहें सिकोड़ते हुए जवाब दिया। फिर वह फुसफुसायी, "मैं तुम्हारे और सू हुई के प्रति तुम लोगों की सम्पूर्ण सहायता के लिए बहुत आभारी हूँ... लेकिन मान लो कि कोई गड़बड़ हो गयी और तुम फँस गयी, तब?"

"उसके बारे में चिन्ता मत करो। सू हुई कहती है कि अगर हम परिणाम चाहते हैं तो हमें ख़तरे तो उठाने ही होंगे।" सियाओ-येन इतनी उत्तेजित पहले कभी नहीं हुई थी। उसने ताओ-चिङ के ठण्डे हाथों को सहलाया और उसके बुझे चेहरे को देखकर एक तेज़, चिन्तामिश्रित स्वर में आगे कहा, "तुम बहुत बुझी हुई दिखती हो। तुमने कई दिनों से खाया न होगा। जाओ और फाटक के पास छोटे रेस्तराँ में खाना खा लो। क्या तुम सचमुच कुछ नहीं चाहती?" तब उसने अपना स्वर मन्द कर दिया, "सू हुई कहती है कि तुम्हें ज़रूर खा लेना चाहिए, अगर तुम भूखी रहोगी, तो बीमार पड़ जाओगी... अरे हाँ, मैं तो एक बहुत ज़रूरी बात लगभग भूल ही गयी थी। जब तुम इस शाम बाहर निकलो, तो लाल भवन के पास मोड़ पर जाना, वहाँ तुम्हें एक कार इन्तज़ार करती हुई मिलेगी जिसमें मेरे माँ-बाप बैठे होंगे...तुम्हें स्टेशन ले जाने की तैयारी में।"

यह कहकर सियाओ-येन जाने के लिए मुड़ी। लेकिन ताओ-चिङ ने उसकी बाँह पकड़ ली, और अपनी जेब से वह पत्र निकाला जिसे उसने पिछली रात लिखा था और उससे आग्रह किया, "कृपया इसे सू हुई को दे देना। उससे कहना कि मैं बहुत शुक्रगुज़ार हूँगी अगर वह इसे लू चिआ-चुआन तक पहुँचाने का इन्तज़ाम कर सके।"

"लू चिआ-चुआन?" सियाओ-येन ने आश्चर्य से दोहराया।

"हाँ, कृपया भूलना मत, और ध्यान रखना कि यह कहीं खो न जाये।"

सियाओ-येन अपनी सहेली पर मुस्कुरायी, और बिना आगे कोई शब्द कहे चल दी।

उसके चल जाने के बाद ताओ-चिङ का दिमाग़ अब भी ढेर सारी समस्याओं से बेचैन बना हुआ था। फल की वह टोकरी, जो उसके पलायन की मदद में आयी थी, एक स्टूल पर रखी थी, लेकिन क्या यह प्रयास सफल होगा?... मेङ-एन द्वारा दी गयी तीन दिनों की मोहलत ख़त्म होने को थी। वह यह सोचना गवारा नहीं कर सकी कि कल क्या होगा...अगर इस शाम पलायन न कर जाये...

"तुम्हारे मन में क्या है ताओ-चिङ?" एक मन्द स्वर ने उसे बौखला दिया, अपना सिर उठाकर उसने देखा कि ताई यू उसके सामने खड़ा है। वह एक मैली-कुचैलह, ड्रिल वाले छात्रों की वर्दी पहने था, और अख़बार में लिपटा एक छोटा-सा पार्सल लिये था। वह तुरन्त उठ खड़ी हो गयी, फल की टोकरी को मेज़ के नीचे रखकर, उसके लिए स्टूल ख़ाली कर दिया।

"मुझे उम्मीद थी कि तुम आओगे, भाई ताई। मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई तुम्हें देखकर।"

ताओ-चिङ के पिछले दिनों के सन्देहों ने उसे ताई यू के प्रति थोड़ा सतर्क किया लेकिन उसकी सावधानी और एक दोस्त की उसकी आवश्यकता ने एक-दूसरे को सन्तुलित कर दिया। उसने गर्मजोशी के साथ उससे हाथ मिलाया और बैठने के लिए कहा।

बैठ जाने के बाद ताई यू ने एक सिगरेट जलायी और बोलने से पहले एक क्षण तक उसको एकटक निहारता रहा। चूँकि यह उसकी आदत थी, इसलिए ताओ-चिङ ने इस पर कोई विशेष महत्त्व न दिया।

"तुम इन दिनों अकेले कैसे रह रही हो? क्या तुम अब भी पढ़ा रही हो?"

"वैसे..." कुछ असुविधा महसूस करते हुए, उसने विचार किया कि उसे ताज़ा गतिविधियों से वाक़िफ़ कराये या नहीं लेकिन इससे पहले कि वह अपने मन में कोई फ़ैसला ले, उसने एक दूसरी सिगरेट जलायी और आगे कहता गया :

"तुम बहुत ठीक नहीं दिख रही हो। क्या तुम बीमार रही हो?"

"नहीं, लेकिन मुझे भयावह अनुभव हुआ है," उसने जवाब दिया। उसने महसूस किया कि यह एक ग़लती होगी कि वह अपनी मुसीबतों को एक साथी क्रान्तिकारी से छिपाये, जो लगाव ज़ाहिर करता था, भले ही उसके कार्य कुछ विवादास्पद थे।

"क्या हुआ?" ताई यू ने उसे क़रीब से ग़ौरपूर्वक निहारते हुए सहानुभूति के साथ, पूछा। उसके बाद उसने अपनी गिरफ़्तारी और हू मेङ-एन की यन्त्रणा के बारे में संक्षेप में बता दिया। उस शाम की अपनी तैयारियों में खोयी हुई, वह इस मूड

में नहीं थी कि बहुत विस्तार से बात करे।

"यह तो यक़ीन लायक़ बात नहीं है, क्यों।" ताई यू ने उसको घूरते हुए विस्मय से कहा। "उस आदमी ने तो हद कर दी। उन प्रतिक्रियावादियों में शर्म का कोई अहसास नहीं है।"

"तुम्हारे ख़याल से मुझे क्या करना चाहिए भाई ताई? उसने मुझे तीन दिनों की मोहलत दी है...और अब तक दो दिन बीत चुके हैं।"

ताई यू एक क्षण तक सोचते हुए फ़र्श की ओर देखता रहा। फिर एक चिन्तित मुद्रा में मेज़ को ठकठकाते हुए, उसने पूछा, "इस परेशानी से उबरने के लिए तुमने क्या योजना बनायी है ताओ-चिङ? जहाँ तक मैं देख रहा हूँ, तुम्हारी स्थिति वास्तव में गम्भीर है।"

"भाई ताई..." वह उसे सू हुई की योजना बता ही देने के कगार पर थी, तभी उसकी दोस्त की पूर्ण गोपनीयता वाली चेतावनी ने उसे ऐसा करने से रोक दिया। "मेरी तो बुद्धि काम नहीं कर रही है।" उसने अपना लहज़ा बदल दिया। "मैं इतनी चिन्तित रही हूँ कि तीन दिन से खाना नहीं खा रही हूँ।"

"तो यह हालत है?" उसने अपना सिर ऊपर उठाया और गम्भीरता से कहा। "ठीक है, तुम्हें कोई न कोई रास्ता तो सोचना ही होगा – क्या तुम्हारे मन में भाग जाने की बात आयी है?"

"नहीं। मुझे जाने का कोई ठौर नहीं है, और अगर होता भी तो मैं नहीं जानती कि कैसे बचकर निकलूँ। क्या तुम महसूस नहीं करते कि फाटक से बाहर जासूस हैं? मैं बाहर निकलने का साहस नहीं कर सकती। कई दिनों से तो मैं पढ़ाने नहीं गयी।"

ताई यू बिना अधिक दिलचस्पी का भाव दिखाये ध्यानपूर्वक सुनता रहा। अपना सिर झुकाये, वह अपनी सिगरेट फूँक रहा था और अपने दिमाग़ में कुछ उलट-फेर करता प्रतीत हो रहा था। कुछ मिनट तक उसने कुछ नहीं कहा।

ताओ-चिङ एक पेंसिल को मेज़ पर इधर-उधर फिराती रही। वह उत्तेजना और निराशा में भी सचेत थी। क्यों नहीं उसने उस तरह से उसकी मदद करने को कहा जिस तरह से सू हुई ने कहा था? वह इतना निरावेग क्यों था? उसने ख़ामोशी से उस पर ग़ौर किया। तुरन्त वह उठ खड़ा हुआ, अपने कपड़ों से धूल झाड़ी और नरमी से बोला :

"चिन्ता मत करो, ताओ-चिङ। तुम्हें जैसे ठीक लगे वैसे उस हू नामक व्यक्ति से निपटो। मैं तुम्हारी मदद के लिए कोई रास्ता निकालने वापस जा रहा हूँ। जब मुझे कोई ठोस उपाय मिल जायेगा, तो मैं आऊँगा और तुम्हें बताऊँगा।"

"धन्यवाद," ताओ-चिङ ने पीड़ा के एक अहसास के साथ ठण्डेपन से कहा।

ताई यू ने उसके बर्फ़ सरीखे ठण्डे हाथ से हाथ मिलाया, फिर मुड़ा और अहाते

से बाहर चला गया।

"हो सकता है वह मेरे लिए कोई रास्ता निकाले... लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी होगी।" वह विचारमग्न हो अपने बिस्तर पर बैठकर अपने पूर्वनियोजित पलायन को तब तक भूले रही, जब तक कि फल की टोकरी पर पड़ी नज़र ने उसे याद नहीं दिला दिया कि उसे अब तैयार होना शुरू कर देना चाहिए।

वह फुर्ती से उठी और पश्चिमी सूट निकाल लिया। अब चार बजे से अधिक समय हो रहा था, और सियाओ-येन द्वारा तय किये गये समय में तीन घण्टे से कम ही बाक़ी रह गये थे। ताओ-चिङ उस सूट को अपने सामने पकड़े ही हुए थी कि उसका भाई फिर आ पहुँचा। वह डरा हुआ और हताश दिखायी दे रहा था। उसके बाल बिखरे हुए थे, उसके कपड़े मुचड़ गये थे और उसकी टाई ग़ायब थी। बिना ध्यान दिए कि उसकी बहन अपने सन्दूक में क्या रख रही है या कि कुर्सी साफ़ है या नहीं, वह बैठ गया और लाल हो आयी आँखें ताओ-चिङ पर स्थिर कर दीं।

"बहन, मै गिरफ़्तार हो चुका हूँ," उसने बताया, "तुम मुझे ज़रूर बचा लो।"

"क्या!" ताओ-चिङ चौंकी, "तुम भी गिरफ़्तार हो गये?"

"यह सच है। तुम्हारे यहाँ से जाने के ठीक दो घण्टे बाद मैं पकड़ लिया गया। पुलिस ने मुझे यह कहते हुए पीटा कि तुम और मैं दोनों दंगा भड़काने वाले कम्युनिस्ट हैं। क्या इससे भी अधिक कोई नाइन्साफ़ी हो सकती है।"

उसने अपना रूमाल निकाला और अपना आँसू पोंछा। "मुझे बचा लो, बहन! तुम्हीं एकमात्र हो जो मुझे बचा सकती हो!"

"कैसे मैं तुमको बचा सकती हूँ?"

ताओ-फेङ ने अपने आँसू पोंछते हुए सिर नीचा कर लिया और काँपते स्वर में बोला :

"पहले तो मैंने समझा कि वे मुझे पीट-पीटकर मार डालेंगे, लेकिन उसी समय कोई जनाब हू पहुँच गया और उसी ने मेरी प्राण रक्षा की। वह बहुत दयालु था। उसने बताया कि वह तुम्हें जानता है और तुम जानती हो कि मुझे कैसे बचा सकती हो। इसलिए उसने मुझे यहाँ भेज दिया।"

ताओ-चिङ सोचने की मुद्रा में कुछ क्षण तक अपना सिर झुकाये रही। सू हूई की सलाह और सख़्त हिदायत ने जिसे उसने उससे, अपने भाई से पहली मुलाक़ात के मौक़े पर सीखा था, उसे और चौंकन्ना कर दिया। इस समय उसने न तो ताओ-फेङ को भाषण पिलाया, और न ही हू मेङ-एन को गालियाँ दीं। एक क्षण की ख़ामोशी के बाद उसने अपना सिर उठाया और प्रसन्नचित होकर बोली :

"परेशान मत हो भाई! श्री हू ने तुम्हें बचाने के लिए मुझको कहा है? निस्सन्देह, मैं अपने भाई की मदद में जो कुछ बन पड़ेगा, करूँगी, लेकिन..."

"लेकिन क्या?" उसने एक आश्चर्यमिश्रित ख़ुशी में सवाल किया।

"लेकिन श्री हू ज़रूरत से ज़्यादा उतावला है, बहुत बदमिज़ाज और रूखा है। वह परसों मुझे अपने पिस्तौल से धमकाने आया था, और दो दिन से उसके जासूस मेरी निगरानी कर रहे हैं। मैं बेहद डर गयी हूँ और इतनी बेचैन हो गयी हूँ कि न खाना खा पाती हूँ और न सो पाती हूँ। अगर उसका दृष्टिकोण बदल जाये, तो उसके बाद शायद मैं कुछ कर सकूँ..." वह एक मुस्कुराहट में फूट पड़ी।

ताओ फेङ की चिन्ता ग़ायब हो गयी। उसने उसकी बाँह थाम ली और उसे उत्साहपूर्वक दबाया। "शुक्रिया बहन! और लिङ-लिङ की तरफ़ से भी शुक्रिया। तुम सचमुच बहुत अच्छी हो। क्या तुमने कहा कि श्री हू बदमिज़ाज और रूखा है? मेरे विचार में वह अत्यन्त रोचक है।" एक धूर्तताभरी मुस्कान के साथ वह उसके कान में फुसफुसाया, "वह प्यार में पागल हो गया लगता है... और वह बहुत धनी है।"

ताओ-चिङ तमतमाकर लाल हो गयी। लेकिन उसने अपना गुस्सा दबाने की भरसक कोशिश की, और अपना सिर हिलाते हुए, जवाब में सिर्फ़ इतना ही कहा, "बकवास मत करो। वह ठीक आदमी नहीं है...लेकिन मुझे यह बताओ कि कैसे वह तुमको बचाने के लिए मुझसे उम्मीद करता है?"

"हाँ, उसने कहा कि अगर तुम उसकी बात मान लो...उसने कहा कि वह तुम्हें बता चुका है, और तुम समझती हो। मुझे विश्वास है कि अगर सिर्फ़ तुम उसके प्रति सहृदय हो जाओ, तो वह बहुत खुश होगा।"

"मैं कैसे मान सकती हूँ?" ताओ-चिङ एक आश्चर्यमिश्रित स्वर में भुनभुनायी। "उसने मुझे जवाब देने के लिए तीन दिन की मोहलत दी है, और समय ख़त्म होने में अभी एक दिन बाक़ी है, इसलिए मुझे इस पर सावधानी से विचार करना होगा। जाओ और उससे कहो कि अगर उसने दबाव डालना जारी रखा और मेरी निगरानी के लिए जासूस भेजता रहा, तो मैं निश्चय ही उसे सीधे इन्कार कर दूँगी; लेकिन अगर वह कुछ सम्मान प्रदर्शित करे और मेरे प्रति नेक बने, तो मैं उसे कल के बाद एक उचित उत्तर दूँगी।"

"तुम्हारा उत्तर क्या होगा?" ताओ फेङ पुनः चिन्तित लगने लगा। "मेरे वास्ते बहन, हमारे माँ-बाप के वास्ते, जिनका कि मैं इकलौता बेटा हूँ, साथ ही अपनेआप के वास्ते वह जो चाहता है, उसे मान लो।"

"तुम फ़िक्र मत करो।" उसने उसे दरवाज़े की ओर ठेला। "आख़िरकार, मैं भी नहीं चाहती कि तुम्हें कष्ट उठाना पड़े और मुझे अपनी सुरक्षा के बारे में भी तो सोचना है... अब जाओ और उसे बता दो जो मैंने कहा है।"

"धन्यवाद बहन, और लिङ-लिङ की ओर से भी धन्यवाद! मैं तुरन्त श्री हू के पास जाता हूँ और बताता हूँ कि तुम उसे कल के बाद जवाब दोगी।" एक याचनाभरी मुस्कान के साथ उसने झुककर अभिवादन किया और कमरे से बाहर निकल गया।

"अब चिन्ता मत करो।" वह उसे फाटक तक छोड़ने आयी, जहाँ तीन रिक्शे इन्तज़ार कर रहे थे। दो सादे कपड़े वाले आदमियों ने एक-एक दोनों तरफ़ होकर, उसे बीच वाले रिक्शा पर बेरहमी से धकेल दिया, और वे सभी एक साथ चल पड़े। जब ताओ-चिङ फाटक पर खड़ी हुई तो उसके भाई ने मुड़कर उसकी तरफ़ एक ऐसे मेमने की तरह देखा, जो वध करने के लिए ले जाया जा रहा हो। वह द्रवित हो गयी और उस अबोध लड़के पर दयार्द्र हो उठी। वह वापस अपने कमरे में भारी मन लिये गयी। कुछ मिनट के सोच-विचार के बाद वह अपने चेहरे पर एक दृढ़बद्ध झलक लिये उछल पड़ी और स्वयं से कहा, "लड़ते रहो! और अधिक हिचकिचाहट नहीं।" फिर उसने अहाते में पदचापों की धमक सुनी, फिर हँसी के ठहाके। आगन्तुक उसके सभी पड़ोसियों के कमरों में एकत्र हो रहे थे। छात्र गला फाड़-फाड़कर बातें करते और हँसते थे, और शाम के धुँधलके में हॉस्टल अचानक सजीव हो उठा।

ताओ-चिङ ने दरवाज़ा बन्द किया और जल्दी-जल्दी अपने कपड़े बदले। अपनी शर्ट और पतलून के नीचे जितने सम्भव हो सका उतने कपड़े पहन लिये। तब उसने उत्साहपूर्वक अपने बालों में कन्घी की। सात बजने ही वाले थे। उसका हृदय ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा।

भाग 2

अध्याय 1

प्रोफ़ेसर वाङ और उसकी पत्नी की मदद से ताओ-चिङ ने तिङसिएन जाने वाली ट्रेन पकड़ी, जहाँ वह पूर्वी फाटक से बाहर एक प्राइमरी स्कूल में अध्यापिका हो गयी। उसकी लगन और कड़ी मेहनत ने उसे बच्चों के बीच लोकप्रिय बना दिया, और यहाँ तक कि सख़्त प्रधानाध्यापिका, सियाओ-येन की बुआ वाङ येन-वेन भी, इस नौजवान अध्यापिका की प्रशंसा किये बिना न रह सकी, जिसकी सिफ़ारिश उसके भाई ने की थी।

ताओ-चिङ को अब भी व्यर्थताओं का भान होता रहता था। वह पेइपिङ को अधिकाधिक भूलती गयी, और एक बहादुराना जोखिमभरे जीवन के पीछे ललकती गयी। वह अक्सर लू चिआ-चुआन या किसी दूसरे क्रान्तिकारी के आगमन का सपना देखा करती। समय सरकता गया, जबकि इन दोस्तों की ओर से, जिनके प्रति वह इतना ऊँचा सम्मान सँजोये हुए थी, एक शब्द भी नहीं प्राप्त हुआ, और उसके पास उनका अता-पता जानने का कोई चारा भी न था। यद्यपि सू हुई के साथ पत्राचार क़ायम किये हुए थी, जिसके पत्रों से वह प्रेरणा और उत्साह प्राप्त करती, फिर भी, वह यह महसूस करके असन्तुष्ट बनी रहती कि जीवन में किसी महत्त्वपूर्ण चीज़ की कमी है।

कई महीने गुज़र गये।

बसन्त के एक दिन उसने सू हुई का एक पत्र प्राप्त किया, जिसमें उससे च्याङ हुआ नामक एक आदमी के आगमन की प्रतीक्षा करने को कहा गया था, और उसे उसके लिए तिङसिएन में कोई नौकरी ढूँढ़ने के लिए अनुरोध किया गया था। ताओ-चिङ की खुशी की ठिकाना न रहा। उसने पत्र को पढ़ा, उसे अपनी डेस्क पर रखा और मुस्कुरा दी। कुछ मिनट बाद उसने इसे पुनः पढ़ा और मुस्कुरायी। यद्यपि वह आदमी लू चिआ-चुआन नहीं था, न ही कोई पुराना परिचित था, फिर भी उसे उम्मीद थी कि वह ज़रूर उन्हीं में से एक...कोई क्रान्तिकारी ही होगा। पत्र को अब भी अपने हाथ में लिये उसने अपनी कल्पना को खुला छोड़ दिया। क्या वह किसी मायने में लू चिआ-चुआन या सू निङ की भाँति होगा?... वह लजा गयी, जब उसने महसूस किया कि किस तरह उसके विचार चक्कर काट रहे थे। उसके विचार अक्सर उसे अब भी पूरी तरह बहा ले जाते थे।

बहरहाल, जल्दी ही उत्तेजना में चिन्ता उत्पन्न हो गयी। सू हुई ने उससे च्याङ हुआ के लिए एक नौकरी तलाशने का अनुरोध किया था। लेकिन कैसे? वह किसके पास जाये? इस समस्या ने उसे सारी रात जगाये रखा, और अगली सुबह उसने पहला काम यह किया कि वह प्रधानाध्यापिका के पास गयी और उससे कहा :

"मेरे एक मौसेरे भाई को अपनी पढ़ाई छोड़ देनी पड़ी, कुमारी वाङ। वह यहाँ आ रहा है और अपने लिए एक नौकरी चाहता है। क्या आप सहायता करेंगी?"

कुछ अचकचाकर वाङ येन-वेन ने दुविधा में, अपना सिर हिलाया और एक मुस्कान के साथ कहा :

"सत्र बहुत पहले से चालू हो चुका है; इसलिए यहाँ तो कोई जगह ख़ाली नहीं है... मैंने तो कभी नहीं जाना कि तुम्हारा कोई मौसेरा भाई भी है। क्या वह सचमुच तुम्हारा मौसेरा भाई है?"

प्रधानाध्यापिका जो चालीस से ऊपर की होकर भी कुआँरी थी, हमेशा ही किसी रोमांस की गन्ध सूंघने के लिए उतावली रहती थी।

ताओ-चिङ एक उलझनपूर्ण हँसी हँस दी।

"मेरा मज़ाक़ मत उड़ाइये, कुमारी वाङ! मुझे आपकी मदद की ज़रूरत है। उसका नाम च्याङ हुआ है, और वह पीकिङ विश्वविद्यालय का एक छात्र है। हाल ही में उसके माँ-बाप ने उसे एक ऐसी लड़की से शादी कर लेने के लिए दबाव डाला जिसे उसने कभी देखा न था। उसने इन्कार कर दिया, और अपने परिवार से नाता तोड़ लिया, इसलिए उसे काम पाने की गरज़ से विश्वविद्यालय छोड़ना पड़ा। आप तो सहृदय हैं कुमारी वाङ, और तिङसिएन में तमाम लोगों को जानती हैं। उसकी ज़रूर मदद करें।" उसका चेहरा तब आरक्त हो उठा और हृदय ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा, जब उसने इस सावधानीपूर्वक गढ़ी गयी कहानी को बयान किया।

"शादी" शब्द ने और ताओ-चिङ की उत्सुकता ने प्रधानाध्यापिका को विश्वास दिला दिया कि यह नौजवान ज़रूर उसका प्रेमी होगा। वह एक सेकेण्ड के लिए रुकी, फिर सिर हिलाया।

"धीरज रखो ताओ-चिङ, हम कोई काम तलाशने की कोशिश करेंगे, जब वह आ जाये। वह यहाँ कब आ जायेगा?

"एकदम जल्दी ही। तब आप उसकी सहायता करियेगा, करियेगा न?" ताओ-चिङ खुशी से हँस पड़ी और कृतज्ञतापूर्वक इस वरिष्ठ महिला का हाथ पकड़ लिया। "आप कितनी सहृदय हैं, बुआ।"

"आह तुम नौजवान लोग..." इस दुनियादार, कातर प्रधानाध्यापिका ने अन्वेषणभरी दृष्टि से ताओ-चिङ के नाजुक चेहरे को देखा। अब उसका नर्म स्वर, जिसमें प्रशंसा का पुट मिला हुआ था, दूर होता गया।

उस अपराह्न, स्कूल के बाद ताओ-चिङ इतनी बेचैन थी कि घर में न रह सकी।

वह च्याङ हुआ से मिलने पश्चिमी फाटक से बाहर स्टेशन पर चली गयी, उसे अपनी ग़लती का अहसास तब तक नहीं हुआ जब तक कि वह वहाँ पहुँच नहीं गयी। अगर प्रत्याशित अतिथि आता भी तो वह उसे पहचान नहीं सकती थी। कुछ निराशा महसूस करती हुई, वह वापस लौट आयी।

एक सप्ताह बाद, एक शाम चौकीदार उसे बताने आया कि कोई श्री च्याङ उससे मिलना चाहता है वह उससे मिलने के लिए दौड़ती हुई गयी, उसने एक लम्बा-तगड़ा, साँवले रंग का एक सुगठित नौजवान फाटक के पास खड़े देखा। वह एक पुरानी फ़ैल्ट हैट और एक खाकी रंग का सूती गाऊन तक पहने हुआ था, और साधारण रुचियों वाला एक कॉलेज-छात्र या किसी सरकारी दफ़्तर का क्लर्क जैसा दिखता था। यह इत्मीनान कर लेने के बाद कि और कोई पास में नहीं था उसने सकुचाते हुए पूछा :

"कृपया अपना नाम बताओ? और तुम कहाँ से आ रहे हो?"

"मैं च्याङ हुआ हूँ।" उसने नरमी से अभिवादनपूर्वक कहा। "सू हुई ने मुझे भेजा हैं।"

उसका सूटकेस लेकर ताओ-चिङ उसे अपने कमरे में ले गयी। भीतर हो जाने के बाद उसने दरवाज़ा बन्द कर दिया और उससे फुसफुसाकर बोली, मानो वे पुराने दोस्त हों :

"याद रखो, तुम मेरे मौसेरे भाई हो, पीकिङ विश्वविद्यालय का एक छात्र। जब तुम अन्य लोगों से बात करो तो इसे तुम भूल मत जाना। हमारे कथन एक होने चाहिए, समझे!"

च्याङ हुआ ने सहमति में सिर हिला दिया और मुस्कुराकर बैठ गया। अपनी डेस्क पर झुककर ताओ-चिङ ने उसे आशाभरी नज़रों से देखा। वह कुछ निराला व्यक्ति लगता था, और बस चुपचाप बैठकर उसे दोस्ताना ख़ामोशी में निहार रहा था। ताओ-चिङ को बातचीत करने में बेहद उलझन मालूम हो रही थी, और च्याङ हुआ ने कुछ समय तक बात करना शुरू नहीं किया। उसका स्वर मद्धिम और गहरा था और लहज़ा उत्तरी था।

"तुम सू हुई से कैसे परिचित हुई? तुम यहाँ कब से हो?"

ताओ-चिङ ने यह जानकर कि वह उसकी पृष्ठभूमि के बारे में कुछ जान लेना चाहता था, उसे विस्तार से बता दिया कि वह कैसे तिङसिएन पहुँची थी। वह जल्दी-जल्दी बोलती हुई, अपना स्वर असावधानी से तेज़ करती गयी। उसने इसे धीमा करने का संकेत किया, और एक मुस्कुराहट के साथ इसे मान लिया। उसने उसे बताया कि किस तरह वह चिन्तित होकर उसका इन्तज़ार कर रही थी, और कि उसने कुमारी वाङ से उसके लिए एक नौकरी ढूँढ़ने के लिए कह दिया था। अन्त में उसने पूछा कि क्या वह पेइपिङ छोड़ने से पहले सू हुई से मिला था।

"तुमने जो कष्ट उठाया है उसके लिए धन्यवाद," उसने कहा। "देखो, मैं तुम्हारे लिए एक काम लाया हूँ।" उसने अपनी जेब से पत्र निकाला और उसे दे दिया। "सू हुई ने इसमें तुम्हें मेरे बारे में सबकुछ बयान करते हुए लिखा है।" वह महज़ ज़रूरतभर ही बोलता था, और उसका यह तरीक़ा विवेकपूर्ण और स्वाभाविक था।

ताओ-चिङ ने उसे इस आश्चर्य के साथ खोला कि क्यों उसने इसे पहले नहीं दे दिया। इसे पढ़कर उसका चेहरा प्रदीप्त हो उठा।

"मुझे तुम्हारे आ जाने से बहुत ख़ुशी हुई है। तुम नहीं जानते कि मैं किस तरह से दिन के हरेक मिनट किसी के मेरे सम्पर्क में आने का इन्तज़ार करती रही हूँ... और अब सू हुई ने तुम्हें भेज दिया है।"

ताओ-चिङ ने उत्सुक, उत्तेजित चेहरे को देखकर च्याङ हुआ ने अपना विस्मय छिपा लिया और स्पष्टतापूर्वक पूछा, "क्या तुम रात का खाना खा चुकी हो? मैंने नहीं खाया है।"

"ओह, प्यारे! मैं भी कितनी विचारहीन हूँ। मैं इतनी उत्तेजित हो गयी थी कि मैंने तुम्हारी उपेक्षा ही कर दी। हम तो पहले ही खा चुके हैं, लेकिन तुम्हारी ज़रूरतों को याद न करने के लिए कोई माफ़ी नहीं। एक सेकेण्ड ठहरो, मैं तुम्हारे पीने के लिए कुछ ला रही हूँ और चौकीदार को नाश्ते के लिए कुछ ख़रीद लाने को कहती हूँ।"

वह जल्दी से बाहर गयी, और तुरन्त गर्म चाय का एक पात्र लेकर लौटी। उसने एक कप में चाय डालते हुए, कहा, "तुम्हें ज़रूर प्यास लगी होगी।"

च्याङ हुआ ने कप को कुछ ही घूटों में ख़ाली कर दिया। उसके लिए चाय का दूसरा कप डालते हुए ताओ-चिङ मेज़ के पास बैठ गयी, और अपना सिर थोड़ा एक तरफ़ करके बोली :

"तुम्हें किस वजह से यहाँ आना पड़ा? पहले तुम कहाँ काम कर रहे थे?"

तभी चौकीदार कुछ पेस्ट्रियाँ, भुने हुए चूजे, सॉसेज, और पकाया हुआ सुअर का माँस लिये अन्दर आया। जब उन्हें फैलाया गया, तो आधी से अधिक मेज़ भर गयी।

"तुमने इतना अधिक क्यों ख़रीदा?" जब वह आदमी चला गया तो च्याङ हुआ ने पूछा।

"तुम बहुत भूखे होगे। बस खा जाओ। तिङसिएन अपनी पेस्ट्रियों और भुने हुए चूजों के लिए मशहूर है, परन्तु मैं नहीं समझती कि वे वास्तव में अपनी प्रसिद्धि के मुताबिक़ होते भी हैं।" ताओ-चिङ अपनी ओर से पूरी-पूरी कोशिश कर रही थी कि उसे घर जैसा महसूस हो।

"मुझे बताओ, च्याङ, क्या तुम आने से पहले सू हुई से मिले थे? सू हुई कैसी है, च्याङ?"

अपनी उत्तेजना में उसने उस सवालों की बारिश शुरू कर दी। लेकिन उसने सिर्फ़ अपना सिर हिलाया और मुस्कुराकर बोला

"नहीं, च्याङ नहीं, मौसेरा भाई।"

उसने और कुछ कहना ज़रूरी नहीं समझा। उसने सावधानी की ज़रूरत को पहचाना। पश्चाताप में हँसी और बोली, "मैं भी कितनी बेवक़ूफ़ हूँ।"

अँधेरा हो चला था, जब खाना ख़त्म हुआ ताओ-चिङ ने अपने छोटे कमरे में एक पैराफ़िन लैम्प जलाया और वे एक लम्बी वार्ता के लिए बैठ गये।

"इस स्कूल में कैसे चल रहा है?" च्याङ हुआ ने पूछा।

ताओ-चिङ ने थोड़ा सोचा, फिर बोली, "मैं दरअसल नहीं जानती कि कहाँ से शुरू करूँ। लेकिन पहली बात मैं तुमको यह बता दूँ कि प्रधानाध्यापिका, वाङ येन-वेन, मेरी सहेली वाङ सियाओ-येन की बुआ है। वह एक ईसाई है, चालीस वर्ष से ऊपर की है, और उसने अभी शादी नहीं की। कुल नौ अध्यापक हैं। उनमें से तीन, मुझको लेकर महिलाएँ है।"

"क्या तुम मुझे उनके दृष्टिकोण और जीवन के बारे में कुछ बता सकती हो? अच्छा, बुरा या उदासीन?" ताओ-चिङ को आश्चर्य हुआ, लेकिन उसने प्रसन्नतापूर्वक जवाब दिया, "ठीक है, मैं तो कहूँगी कि उनमें से अधिकतर, प्रशासकीय दफ़्तर में काम करने वाले दो को शामिल करते हुए देश के बारे में चिन्तित और वर्तमान भ्रष्ट शासन-व्यवस्था से असन्तुष्ट हैं, लेकिन कुल मिलाकर वे शिकायतभर करते हैं। दो या तीन इतने घमण्डी हैं कि खाना, पढ़ाना, सोना और माहजोङ खेलना ही उनका सम्पूर्ण जीवन है। जहाँ तक दो महिलाओं का सवाल है, एक अपने विकलांग पति के भरण-पोषण के लिए, जिसकी नौकरी छूट गयी है, खूब कमा लेने के अलावा और कुछ नहीं सोचती, और दूसरी एक खूब धनी आदमी से शादी करना चाहती है, जो उसका भरण-पोषण कर सके।"

"क्या तुम्हें यहाँ कोई बढ़िया व्यक्ति नहीं मिला है?" च्याङ हुआ ने अपना सिर टेढ़ा किया और हँसा।

"एक है जो बाक़ी से बेहतर है।" ताओ-चिङ की आँखें अधमुँदी थीं और उसके चेहरे पर एक शरारत थी। "और एक है जो एकदम भयानक है।"

"मुझे उनके बारे में बताओ।" च्याङ हुआ मुस्कुरा रहा था।

"ठीक है।" ताओ-चिङ भी मुस्कुरायी। "भयानक व्यक्ति चर्बी का एक पहाड़ है जिसका नाम वू यू-तिएन है, जिसकी झाड़ी जैसी बरौनियाँ हैं, जो क़रीब-क़रीब उसकी नाक तक आती हैं। जब वह बोलता है तो उसका सिर हिलता और काँपता है। उसके बारे में सबसे अधिक घृणास्पद बात यह है कि वह महिला अध्यापिकाओं के इर्द-गिर्द मँडराता फिरता है..." च्याङ हुआ इस पर हँस पड़ा, और वह भी अपनी हँसी न रोक सकी। "वह क्वोमिन्ताङ का एक सदस्य है और पूरी तरह सड़ा हुआ

है। वह अक्सर प्रमण्डलीय क़स्बे में क्वोमिन्ताङ मुख्यालय पर जाता रहता है।"

च्याङ हुआ की दिलचस्पी बढ़ गयी। "क्या तुमने सावधानीपूर्वक उसकी निगरानी की है? क्या वह स्कूल में कुछ करने पर उतारू है?"

उसने अपना सिर हिलाया। "वह मैं नहीं जानती।"

"ठीक है। उसके बारे में क्या कहना है, जो बाक़ी से बेहतर है?"

"वह चाओ यू-चिङ है, जो पाओतिङ के दूसरे नॉर्मल स्कूल में पढ़ा करता था। वह नौजवान और उत्साही है और मेरे उससे अच्छे सम्बन्ध हैं। उसने नॉर्मल स्कूल के छात्र आन्दोलन में हिस्सा लिया था। उसने मुझे गुप्त रूप से यह भी बताया है, कि वह कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल होने की इच्छा रखता है..."

"और तुमने कह दिया कि तुम भी वैसा ही महसूस करती हो। ठीक!" च्याङ हुआ हँसा। "तुम अच्छा अनुमान लगाते हो।" ताओ-चिङ लजा गयी। "हम अक्सर अपने आदर्शों के बारे में, क्रान्ति के बारे में बातचीत करते रहे है – बेशक, गुप्त रूप से।"

च्याङ हुआ ने कोई टिप्पणी नहीं की। ताओ-चिङ पर नज़र डालते हुए, उसने उसकी डेस्क पर पड़ी कुछ अभ्यास पुस्तिकाएँ उठा लीं और उन्हें पलटने लगा। फिर मज़ाकिया अन्दाज़ में पूछा।

"हाँ, तो क्या तुम सोचती हो कि तुम मुझ पर विश्वास कर सकती हो?"

"बेशक! क्यों नहीं?"

च्याङ हुआ ने स्वीकृति में सिर हिला दिया। अभ्यास-पुस्तिकाओं को रखते हुए उसने विषय बदल दिया। "मुझे छात्रों के बारे में कुछ बताओ।"

वह उससे स्कूली बच्चों के बारे में, उनकी संख्या और पारिवारिक पृष्ठभूमि के बारे में विस्तारपूर्वक सवाल करता गया। कितने छात्र किसान परिवारों से आते हैं? कितने मज़दूर वर्ग से? क्या कुछ बच्चे हैं जिनके माँ-बाप सरकारी अहलकार हैं? उनके परिवार अच्छे खाते-पीते हैं या नहीं?..." उसे आश्चर्य हो रहा था कि क्यों वह इन सारे सवालों को पूछ रहा था, लेकिन उसके पास जितनी जानकारी थी, उसने सब बता दिया। यद्यपि ये बहुत सीमित थीं। इसके बाद ही उसे सवाल पूछने का मौक़ा मिला।

"तुम क्यों तिङसिएन में काम करना चाहते हो? तुम कहाँ से आये हो?"

"मेरा कोई निश्चित पता नहीं है।" च्याङ हुआ की मुस्कुराहट ने यह असम्भव कर दिया कि वह उस पर सन्देह करे। उसने कुशलतापूर्वक बातचीत को ताओ-चिङ की ओर मोड़ दिया। "चूँकि हम दोस्त बनने जा रहे हैं, इसलिए क्या तुम मुझे बताना चाहोगी कि तुम पिछले समय में क्या-क्या कर चुकी हो और तुम भविष्य में क्या करना चाहती हो?"

"निश्चित!" वह गम्भीर दिखायी दी, और विचारपूर्वक और धीमे बोली। "मैं

एक ज़मींदार और किसान औरत की बेटी हूँ। इसलिए मुझमें सफ़ेद हड्डियों के साथ-साथ काली हड्डियाँ भी हैं।" (रूसी लोक साहित्य के अनुसार कुलीन वर्ग की हड्डिया सफ़ेद होती थीं, भूदास और मेहनतकश जनता की हड्डियाँ काली होती थीं)। च्याङ हुआ पर एक चोर-नज़र डालकर आश्वस्त होते हुए कि वह हँस नहीं रहा था, उसने आगे कहना चालू किया, "मैं भावुक हुआ करती थी, आसानी से हताश और जीवन से ऊब महसूस करने लगती थी। मैं दुनिया की हर चीज़ से नफ़रत करती थी, कारण कि मेरे बाप और मेरी सौतेली माँ ने मेरे साथ बुरा सलूक किया था। मैं नहीं जानती थी कि जिनसे मैं नफ़रत करती थी, उन सबसे किस तरह विद्रोह करूँ। मेरे साथ यह तब तक चलता रहा जब तक कि मैं एक बहुत ही अच्छे आदमी से नहीं मिली, एक ऐसे आदमी से, जो मेरी जानकारी में सर्वोत्तम है, जिसने मुझे सुझाया कि मैं कौन-सी डगर पकड़ूँ, मुझे दिखाया कि कैसे इस सड़े समाज से विद्रोह किया जाये तथा लोगों और चीज़ों को एक वर्ग-दृष्टिकोण से कैसे देखा जाये। तभी से...मैं समझती हूँ कि मैं कह सकती हूँ कि केवल तभी से मेरे सफ़ेद हड्डी वाले अंश ने सिकुड़ना शुरू कर दिया। मैंने सही रास्ते पर चलने के लिए समझना शुरू कर दिया। लेकिन उस रास्ते पर बने रहना आसान नहीं है, और अक्सर मैं अपना रास्ता भूल जाती हूँ।" ताओ-चिङ जल्दी से रुककर, चिन्तातुर हो च्याङ हुआ को एकटक देखने लगी, मानो उसने काफ़ी कुछ अनकहा ही छोड़ दिया हो।

एक लम्बे समय तक वह ख़ामोश बना रहा, उसकी विचारमग्न आँखें उसे देख रही थी, मानो कह रही हों, "हाँ, मेरी दोस्त, तुम सच कह रही हो।"

——:o:——

अध्याय 2

मई के फूल
खिले हैं दूर-दूर तक चारों ओर,
पार कर इस धरती का छोर
होकर देशभक्तों के खून से सराबोर,
लड़े थे वे बहादुरी से
बचाने अपमान से अपने देश को,
उनकी निर्भीक लड़ाई ने
दिलाया मृत्युहीन यश उनको।

यद्यपि ताओ-चिङ उस रात देर से बिस्तर पर गयी, फिर भी वह अगली सुबह पौ फटते ही उठ गयी। यह सोचकर कि च्याङ हुआ अब भी सो रहा था, वह अकेले गुनगुनाती हुई, खेतों से होकर टहलने चल दी, क्योंकि खेत स्कूल से दूर नहीं थे।

एक अकेली पड़ी क़ब्र के पास पहुँचकर वह 'मई के फूल' गीत गाने के लिए रुक गयी, और गीत ने उसके विचारों को लू चिआ-चुआन की सोच की दिशा में मोड़ दिया। जब से च्याङ हुआ आया था, तभी से किसी न किसी वजह से वह उन दोनों में तुलना करने लगी थी और उसका हृदय फिर टीसने लगा था। अपने पीड़ादायी विचारों से राहत पाने की तलाश में उसने कुछ फूल चुन लिये। एक हल्की बयार खेतों के ऊपर बह रही थी जो बसन्त के आगमन का संकेत दे रही थी, बयार महक से भरी हुई थी। जंगली आर्किड बटोरने के दौरान, उसे उस नये महत्त्व और उद्देश्य से सुखानुभूति हुई जो च्याङ उसके जीवन में भर सकता था।

ताओ-चिङ आर्किड का एक बड़ा गुच्छा और लाइलक की कुछ टहनियाँ लिये तेज़ी से स्कूल की ओर वापस चल दी। वह एक नीला गाउन, हल्का नीला कार्डिगन, सफ़ेद जूते और मोज़े पहने थी, और उसका सफ़ेद रेशमी गुलूबन्द उसके सुन्दर चेहरे और कोमल मुखाकृति के लिए एक प्रशंसनीय पन्नी की परत जैसा था। बसन्तकालीन सुबह की भाँति, रूप और सजीवता दोनों ही दृष्टि से, वह तरुणाई की प्रतिमूर्ति बनी हुई थी। अपने कमरे में वापस आकर उसने फूलों को दो गुलदस्तों में रख दिया, और उनमें से एक को लेकर पश्चिमी हिस्से में गयी जहाँ च्याङ हुआ ठहरा हुआ था। उसने आहिस्ते से क़दम रखा ताकि वह जाग न जाये। दरवाज़े से झाँककर, जो आधा खुला हुआ था, उसने देखा कि वह जाग गया था और किसी किताब पर नज़रें गड़ाये हुए था। जब वह मुड़ा और उसे बाहर पीठ पीछे हाथ किये खड़ा देखा तो वह उठ खड़ा हो गया और बोला :

"तुम अन्दर क्यों नहीं आती? वहाँ से क्या लायी हो?"

"तुम इसे पसन्द नहीं करोगे। लेकिन..." ताओ-चिङ ने गुलदस्ते को मेज़ पर रख दिया और लगभग अपराधी भाव से सकपकाकर बोली। "निश्चय ही तुम हँस दोगे, लेकिन मैं फूलों की बहुत शौक़ीन हूँ। ये थोड़े से हैं जिनको मैंने खेतों से चुना है।"

उसको आश्चर्य हुआ कि हुआ ने गुलदस्ता ले लिया, फूलों को सूंघा और तारीफ़ में सिर हिलाया। "कितनी मोहक गन्ध है।" उसने कहा। "जो ख़ूबसूरत है उसे हर कोई पसन्द करता है। तो फिर मैं क्यों न करूँ?" गुलदस्ते को फिर नीचे रखते हुए वह ताओ-चिङ की तरफ़ मुड़ा। "क्या तुम शहर का रास्ता जानती हो? मैं एक दोस्त के यहाँ जाना चाहता हूँ।"

"क्या तुम बाहर जाना चाहते हो? लेकिन नाश्ता तो बहुत जल्द ही तैयार हो जायेगा। मैं नाश्ते के बाद तुम्हारे साथ चलूँगी और तुम्हें रास्ता दिखा दूँगी।"

"नहीं, उसकी कोई ज़रूरत नहीं। तुम्हें अपनी कक्षाएँ भी तो लेनी हैं। मैं ख़ुद-ब-ख़ुद चला जाऊँगा। एक मिनट के सोच-विचार के बाद उसने मुस्कुराहट के साथ आगे कहा, "एक बात है जिसके लिए तुम्हें मानसिक रूप से तैयार होना

पड़ेगा, दूसरे लोग हमारे सम्बन्ध को कैसे लेंगे?"

ताओ-चिङ आरक्त हो उठी, लेकिन बिना किसी हिचकिचाहट के जवाब दिया।

"उससे क्या फ़र्क़ पड़ता है? मैं इसकी परवाह नहीं करती कि वे क्या सोचेंगे। तुम चिन्ता मत करो।"

"तब, बहुत बढ़िया है। इससे हम लोगों का कुछ अच्छी बातें करने में आसानी होगी। मैं यहाँ कुछ दिनों तक ठहरना चाहूँगा। क्या यह ठीक रहेगा?"

"बढ़िया रहेगा। मैं जाकर कुमारी वाङ को तुम्हारी नौकरी दिलाने का उसका वायदा याद दिलाऊँगी।"

"बहुत अच्छा।"

अध्यापकों ने यह देखकर कि ताओ-चिङ अपने मेहमान से कितनी नज़दीक बनी हुई थी, यह मान लिया कि च्याङ हुआ उसका प्रेमी था। वे दो-दो, तीन-तीन के झुण्ड में होकर फुसफुसाकर गप्पें किया करते थे। लंच के समय मोटे वू यू-तिएन ने अपनी बड़ी-बड़ी आँखें ताओ-चिङ पर गड़ाते हुए पूछा।

"कुमारी लिन, क्यों चीन में तमाम प्रेमी सच बोलने की जगह अपनेआप को मौसेरे भाई-बहन कहा करते हैं?"

कमरे के अध्यापक ठहाका लगाकर हँस पड़े। स्वयं वू गम्भीर होकर ताओ-चिङ के जवाब का इन्तज़ार करता रहा, उसकी घनी काली बरौनियाँ सिकुड़ी हुई थी।

ताओ-चिङ तो ऐसे किसी हमले की उम्मीद कर ही रही थी, और इसके पहले ही इसी सुबह च्याङ हुआ द्वारा चर्चा कर दिये जाने पर वह जवाब की तैयारी भी कर चुकी थी। आग से पकायी हुई रोलों को नीचे रखने की ज़हमत न उठाते हुए, उसने शान्त स्वर में कहा :

"मेरे ख़याल से उसका कारण एकदम साफ़ है। ऐसा इस कारण है कि सामन्तवाद का असर अब भी इतना ज़्यादा है कि सच्चा प्यार अपने रास्ते पर भली प्रकार चल नहीं सकता। अगर नौजवान लोगों को अपनेआप को प्रेमी कहना असंगत लगता है, तो वे स्वाभाविक तौर पर अपनेआप को भाई-बहन कहेंगे।"

वू यू-तिएन की आँखें इस अप्रत्याशित उत्तर से फैल गयीं।

"फिर, तुम दोनों के बीच क्या रिश्ता है?" उसने अपना सिर डुलाकर च्याङ हुआ की ओर, फिर ताओ-चिङ की ओर देखते हुए, ललकार भरे स्वर में पूछा। "भाई बहन? प्रेमी? या एक साथ दोनों ही?"

भोजनकक्ष में हँसी का ठहाका फूट पड़ा।

"एक साथ दोनों ही," ताओ-चिङ ने ठहाका शान्त होते ही जवाब दिया।

ताओ-चिङ की बेबाकी और दृढ़ता च्याङ हुआ की मुस्कानभरी मुद्रा और वू के दोलायमान सिर के प्रहसनकारी दृश्य एवं बनावटी गम्भीरता ने समूचे कमरे को

और भी ज़ोर-ज़ोर से ठहाकों में झोंक दिया। अपने चीनी-काँटों को नीचे रखकर, दो अध्यापिकाएँ हँसते-हँसते दोहरी हो गयीं। प्रधानाध्यापिका ने जो शिष्टाचार के उल्लंघन के प्रति सचेत थी, मेज़ पर अपने चीनी-काँटों को ठकठकाया और बाँसुरी जैसे स्वर में बोली।

"मज़ाक़ बहुत आगे बढ़ चुका है, दोस्तो। श्री च्याङ एक मेहमान हैं। हम बहुत शिष्ट नहीं हो रहे हैं। कृपया बुरा मत मानना श्री च्याङ। हम सभी ताओ-चिङ को एक ही परिवार की छोटी बहन के रूप में मानते हैं।"

"सुनो-सुनो, अब तुम्हारा और कोई मज़ाक़ नहीं चलेगा, जनाब वू!"

"श्री वू को दाल-भात में मूसलचन्द नहीं बनना चाहिए।"

वू पर हो रहे चौतरफ़ा प्रहार से वह विषय बरख़ास्त हो गया।

लंच के बाद च्याङ हुआ ताओ-चिङ के पीछे-पीछे उसके कमरे में गया। भीतर होते ही लड़की ने अपने मन की भड़ास निकाली।

"तुम कितने नाराज़ महसूस कर रहे होगे।...वे इतने उजड्ड हैं।"

"मैं क्यों नाराज़ होऊँ?" उसने मुस्कुराकर पूछा। "तुम फ़िलिस्टाइनों से ऐसे ही व्यवहार की आशा करो। तुमने इतनी शान्तिप्रियता से प्रतिक्रिया करके अच्छा ही किया। ठीक है हम अपना अभिनय जारी रखें, ताकि हम उन्हें निराश न होने दें।" वह ठठाकर हँस पड़ा और ताओ-चिङ भी तब तक हँसती रही, जब तक कि उसकी आँखों में आँसू नहीं आ गये।

च्याङ हुआ उस दिन दोपहर के बाद निकल गया और क़रीब नौ बजे के बाद ही वापस लौटा। ताओ-चिङ जो लैम्प के पास बैठी हुई थी, यह पूछना चाह रही थी कि उसने दिन कैसे बिताया, लेकिन उसने बात शुरू कर दी, और क्रान्तिकारी सिद्धान्त की चर्चा करने लगा, स्कूल या दैनिक जीवन पर कोई सवाल नहीं।

"ताओ-चिङ आओ इस शाम कुछ अलग विषय पर बातचीत करें। क्या तुम जानती हो कि आज चीनी क्रान्ति की मौलिक समस्या क्या है?"

ताओ-चिङ पूरी तरह परेशान होकर उसकी ओर एकटक देखने लगी।

"कोई बात नहीं, किसी और विषय पर बातें करें," उसने थोड़ा विराम लेकर कहा। जापान-विरोधी उत्तरी चाहार मित्र सेना पराजित हो गयी है, लेकिन इसने प्रतिरोध और राष्ट्रीय मुक्ति पर क्या प्रभाव डाला है? और तुम्हारी समझ से चीनी क्रान्ति किन लाइनों पर विकसित होगी?"

अपने होंठ सिकोड़े हुए ताओ-चिङ अपनी रूमाल के साथ खेलती रही। उसने एक क्षण के लिए सोचा पर जवाब न दे सकी।

उसे हमेशा अपनेआप पर गर्व होता था कि उसने कई किताबें पढ़ी हैं। 'द्वन्द्ववाद के तीन सिद्धान्त', 'पूँजीवाद की श्रेणियाँ और अवस्थाएँ', 'साम्राज्यवाद के अनिवार्य विनाश और साम्यवाद की अन्तिम विजय का सिद्धान्त'। वह ये सभी, और कुछ

अधिक भी पढ़ गयी थी। लेकिन चीनी क्रान्ति की विशिष्ट समस्या और मूल प्रकृति के बारे में च्याङ हुआ के सवालों ने उसे उलझन में डाल दिया। उसने एक बढ़िया जवाब की कोशिश में अपने दिमाग़ पर ज़ोर दिया। लेकिन अब उसे अख़बारों को सावधानी से न पढ़ने और व्यावहारिक समस्याओं का बेहतर अध्ययन न करने का हर्ज़ाना भरना पड़ रहा था। वह जितना ही अधिक सोचने की कोशिश करती, उतना ही अधिक उलझती जाती। उसने महसूस किया कि जो कोई भी जवाब वह देती वह बेकार से भी बदतर होता। अतः एक त्रासद ख़ामोशी के बाद, जिसके दौरान उसे महसूस हुआ कि वह एक ऐसी जटिल बच्ची की भाँति थी जिसको अध्यापक ने विशेष ध्यान देने के लिए अलग कर दिया है, वह च्याङ हुआ का चेहरा निहारती रही।

"मैंने काफ़ी ज़ोर देकर सोचा, लेकिन तब भी मैं कोई जवाब नहीं दे सकती। तुमने मेरी आँखें खोल दी है... ओह, प्यारे! कैसे मैं इस पूरे समय मैं इन समस्याओं को उपेक्षित करती रही?"

यह देखकर कि वह कितनी व्यग्र और भोली थी, वह न चाहते हुए भी हँस पड़ा।

"ठीक है, तब, मुझे एक दूसरा सवाल पूछने दो। क्या तुम सोचती हो कि चीन जापान को हरा सकता है?"

"बेशक!" इस बार ताओ-चिङ ने अपना जवाब तैयार रखा था, जिसको उसने क्रमबद्ध ढंग से बताना चालू कर दिया। "प्रथम तो, चालीस करोड़ चीनी किसी पराये देश का गुलाम ही नहीं होना चाहेंगे। दूसरे, चीन बड़ा है, प्राकृतिक संसाधनों से भरपूर है, और इसकी आबादी बहुत बड़ी है, जबकि जापान छोटा है, जिसकी आबादी बहुत थोड़ी है, और वह महज़ इसी कारण लड़ाई नहीं जीत सकता कि उसके पास बेहतर हथियार हैं। तीसरे..." उसने अपने होंठ काटे और एक क्षण सोचा। "तीसरे, कम्युनिस्ट और सभी प्रगतिशील लोग जापान का प्रतिरोध करने के लिए कटिबद्ध हैं, और तो और, कम्युनिस्ट पार्टी भी जापान-विरोधी मोर्चे में शामिल हो गयी है। क्या मैं ठीक कह रही हूँ, च्याङ हुआ?"

च्याङ हुआ वहाँ ख़ामोशी से बैठा हुआ था जबकि ताओ-चिङ खड़ी होकर उत्सुकतापूर्वक उसके प्रत्युत्तर की प्रतीक्षा कर रही थी। अन्ततः उसने मन्द स्वर में कहा।

"तुम्हारी पहली दो दलीलें ठीक हैं, लेकिन तीसरी में कुछ ग़लती है। कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व के बग़ैर, चीनी क्रान्ति कभी सफल नहीं हो सकती! यही बात जापान-विरोधी युद्ध के बारे में भी सत्य है। पार्टी का सिर्फ़ इसमें शामिल हो जाना ही काफ़ी नहीं है, बल्कि इसका नेतृत्व भी करना चाहिए। तुम समझती हो कि नेतृत्व का मतलब क्या होता है, ताओ-चिङ?"

च्याङ हुआ की विचारमग्न आँखें दहक रही थीं, और ताओ-चिङ जो उसके प्रत्येक शब्द पर कान लगाये हुए थी, उसके प्रति एक गहरा आदर भाव महसूस करने लगी। वह अचानक आनन्द से भर उठी थी। उसने उसका कप भरा, कुछ और पानी पिया, और फिर डेस्क पर झुककर उस पर अपनी आँखें स्थिर करते हुए बोली :

"मुझे तुम्हारे आने से बहुत खुशी हुई है च्याङ हुआ। मैं बहुत ही कम जानती हूँ, और मेरे जो कुछ थोड़े विचार हैं वे बहुत ही सतही है... अब से तुम मेरी और अधिक मदद करो। तुम किस कॉलेज से स्नातक हुए थे? मैं उम्मीद करती हूँ कि तुम वर्षों से क्रान्तिकारी काम करते आ रहे हो, है न?"

"मैं कोई कॉलेज-स्नातक नहीं हूँ। मुझे एक मज़दूर कहना ज़्यादा सही होगा।"

"क्या! तुम एक मज़दूर हो? बिल्कुल नहीं!"

"हाँ, एक मज़दूर।" वह खुलकर मुस्कुराया। "कुछ ही समय पहले मैं एक कोयला-खदान में काम कर रहा था।"

ताओ-चिङ ने अविश्वासपूर्वक अपना सिर हिलाया।

"लेकिन तुम एक मज़दूर जैसे नहीं दिखायी देते। तुम इतना अधिक जानते हो ... मैं सारा समय यही समझती थी कि तुम एक कॉलेज स्नातक हो।"

च्याङ हुआ दबी-सी हँसी हँसा।

"क्यों, क्या तुम सोचती हो कि सभी मज़दूर अनाड़ी और मूर्ख होते हैं? उनके वैसा होने का कोई कारण नहीं हैं।"

ताओ-चिङ बिल्कुल हक्की-बक्की हो गयी। वह अब और भी अधिक पानी-पानी और शर्मिन्दा महसूस कर रही थी, उस बार से भी अधिक जब वह उसके सवालों का जवाब देने में असमर्थ हो गयी थी। अपने गाउन की किनारी पर उँगली फिराते हुए उसने मन्द स्वर में कहा :

"सिद्धान्त रूप में, मैं जानती हूँ कि मज़दूर योग्य और सक्षम होते हैं, लेकिन मेरा हृदय... सच तो यह है कि मैं अब भी उस पुरानी कहावत मुं विश्वास रखती हूँ, 'अध्ययन सबसे बढ़कर होता है', आज मैं खुद को देखने लगी हूँ जैसाकि मैं हूँ एक बेलबूटेदार गिलाफ जो भूसे से भरा हो।"

च्याङ दबी-सी हँसी हँसा, लेकिन उसने कोई टिप्पणी तब तक नहीं की, जब तक कि ताओ-चिङ स्वयं भी, एकदम उलझन में पड़कर हँसने को मजबूर न हो गयी। तब उसने उसके सामने एक नया सवाल रखा :

"मुझे बताओ ताओ-चिङ, क्या तुम्हारा अपने छात्रों में से किसी के माँ-बाप से सम्पर्क है – मेरा मतलब है, जो मज़दूर और किसान हों?"

"नहीं, मेरा कोई सम्पर्क नहीं है," ताओ-चिङ ने कुछ व्यग्र भाव से स्वीकार किया। "यह तो कभी भी मुझे सूझा ही नहीं कि उनसे सम्पर्क करूँ। मैं तो अपना

सारा ख़ाली समय पढ़ने में ही बिताती रही।"

एक रूलर से खेलते हुए उसने उसे इरादतन निहारा। "अब से आगे, अपने छात्रों के ज़रिये, मैं चाहूँगा कि तुम कुछ मज़दूरों और किसानों से सम्पर्क बनाओ। वे तुम्हारी काफ़ी मदद करेंगे। तुम जिन लोगों को जानती हो, उनसे वे भिन्न हैं, और कहीं अधिक दिलचस्प।" वह इतने स्वाभाविक और सुखकर ढंग से बोला कि ताओ-चिङ को महसूस नहीं हुआ कि उसे भाषण पिलाया गया है।

"तुम ठीक कहते हो," उसने कहा। "मैंने भी महसूस किया है कि मुझे उनसे सम्पर्क करना चाहिए, लेकिन मैं नहीं जानती थी कि क्या कहूँगी – ऐसा लगता था जैसे हमारे पास आपसी बातचीत के बहुत कम सामान्य मुद्दे हैं।"

च्याङ हुआ कमरे में चहलक़दमी करने लगा। फिर उसने घुप-अँधेरे अहाते में झाँकने के लिए दरवाज़ा खोला। उसने पुनः दरवाज़ा बन्द कर दिया, एक क्षण के लिए दीवार पर लगी तोल्सतोय की तस्वीर को देखा, और उसके बाद पुनः एक मुस्कुराहट के साथ ताओ-चिङ की ओर मुड़ गया।

"ताओ-चिङ मैं समझता हूँ कि क्रान्ति के बारे में तुम्हारे विचार बेहद काल्पनिक और भाववादी हैं। तुम एक रोमाण्टिक कवि की भाँति हो... तुम्हारी सबसे बड़ी ज़रूरत यह है कि तुम मेहनतकश लोगों से सम्पर्क करो। उनके पास ईंधन, चावल, तेल और नमक, बच्चों के पालन-पोषण के तरीक़ों, और रोज़मर्रा की ज़िन्दगी के अन्य सभी क्रियाकलापों के ज्ञान का एक विशाल भण्डार है। वे बहुत व्यावहारिक होते हैं। और तुममें इसी व्यावहारिक चेतना का बुरी तरह से अभाव है।"

ताओ-चिङ ने ख़ामोशी से उसकी तरफ़ देखा। यह न जानते हुए कि वह सहमत थी या नहीं, उसने अलविदा कहा और चल दिया।

च्याङ हुआ को कुछ समय के लिए स्कूल में ही ठहरने की इजाज़त मिल गयी थी। वह दिन के समय, जब ताओ-चिङ पढ़ा रही होती थी, बाहर चला जाता था और शाम का धुँधलका हो जाने के बाद वापस लौटता था, वह अधिकतर शामें उससे सवाल पूछने और विभिन्न समस्याओं को विश्लेषित करने में उसकी मदद करते बिताता था। यदा-कदा, जब वे फुसफुसाकर बातें कर रहे होते, तो कुछ टोह लेने वाले विद्यालय-सहकर्मी दरवाज़ा खोल देते और अन्दर आ जाते थे। तब च्याङ हुआ मुस्कुराते हुए अपने पैरों पर खड़ा हो जाता, और ताओ-चिङ बिल्कुल उसकी बग़ल में आ खड़ी होती, उसका चेहरा प्रसन्नता से प्रदीप्त बना रहता जिसको वह छिपाने की कोई कोशिश न करती।

"आह, एड़ी से चोटी तक प्रेम में सराबोर!" जब बिन बुलाये अतिथि, अपने मज़ाक़ ठोंककर चले जाते तो वे फिर अपनी बातचीत में मशगूल हो जाते।

एक बार ताओ-चिङ यह कहे बिना न रह सकी, "च्याङ हुआ, मैं अक्सर तुम्हारी पिछली ज़िन्दगी और यहाँ आने की वजह के बारे में इतना पूछती रही हूँ,

फिर भी, तुमने मुझे कुछ नहीं बताया।"

"मैं यहाँ नौकरी की तलाश में आया, बस यही। मेरी पिछली ज़िन्दगी एकदम साधारण रही है। इसमें ऐसा कुछ भी नहीं है जिस पर बातचीत की जाये। हो सकता है कभी बाद में मैं तुम्हें इसके बार में कुछ बताऊँ।"

ताओ-चिङ असहाय-सी मुस्कुरायी। वह समझ गयी कि च्याङ हुआ सिरे से ही गतिशील और संकल्पबद्ध था। उसने अनुमान किया कि उसे एक क्रान्तिकारी कार्यभार सम्पन्न करना था, और उसकी इच्छा होती थी कि वह जाने कि कौन-सा कार्यभार था। और वह कौन था, लेकिन इन बिन्दुओं पर उसके सारे सवाल अनुत्तरित ही रह जाते, यद्यपि वह निरपवाद रूप से उसके प्रति सहृदय और मित्रवत था।

एक शाम वह अपने सामान्य समय पर वापस नहीं आया। ताओ-चिङ आधी रात तक इन्तज़ार करती रही, उसके बाद बिस्तर पर जाकर इतनी चिन्तित हो गयी कि सो नहीं सकी। च्याङ हुआ कि मितभाषिता के बावजूद वह जानने को उत्सुक थी कि वह क्या कर रहा था। आधीरात बीते काफ़ी देर हो चुकी थी कि उसे अपनी खिड़की पर ठकठकाहट सुनायी दी और एक मन्द खुश्क स्वर ने उसका नाम पुकारा।

वह बिस्तर से उछल पड़ी, लैम्प तेज़ कर दिया और दरवाज़ा खोला।

च्याङ हुआ चुपके-से अन्दर आ गया, वह एक किसान की भाँति फटे-पुराने कपड़े पहने था, और कीचड़ से सना हुआ था।

मद्धिम प्रकाश में जब वह, ज़मीन में जड़ जमाये किसी मज़बूत वृक्ष की भाँति कुछ सेकेण्ड के लिए खड़ा हुआ, तो उसका चेहरा बुरी तरह पीला था। उसका हृदय धक से कर गया, जब उसने उसे उलझन में देखा।

"कुछ परेशानी हो गयी है, ताओ-चिङ। मुझे अभी-अभी चल देना होगा।"

उसका चेहरा ऐंठ गया, मानो प्रत्येक शब्द उसे तकलीफ़ दे रहा था। एक कुर्सी में धँसकर हाँफते हुए उसने आगे कहा, "मैं यहाँ कुछ अधिक समय तक ठहरने की उम्मीद लिये था। अफ़सोस है कि यह सम्भव नहीं है... कृपया लैम्प को जितना हो सके, मद्धिम कर दो।" अपनी साँस रोके, ताओ-चिङ ने वैसा ही किया जैसा उसे कहा गया था। फिर वह पंजे के बल चलती हुई उसे क़रीब से देखने के लिए च्याङ हुआ की बग़ल में पहुँच गयी। खिड़की से छनकर आ रही चाँदनी ने अचानक यह रहस्योद्‌घाटन कर दिया कि उसके दायें कन्धे और दायीं बाँह पर एक बड़ा लाल धब्बा था। उसने भयाक्रान्त होकर महसूस किया कि यह तो ख़ून था।

"क्या तुम ज़ख़्मी हो गये हो?" उसका स्वर मन्द और कम्पायमान था।

"क्या हुआ? किसने यह किया?"

"तुम किसे सोचती हो?" च्याङ हुआ तब तक कुर्सी के सहारे झुककर खड़ा रहा, जब तक कि उसने अपनी सामान्य मन:स्थिति फिर से नहीं बना ली। "क्या तुम

इस पर पट्टी बाँधने के लिए मुझे कुछ कपड़ा दे सकती हो?" उसने पूछा।

वह जल्दी-जल्दी एक कपड़े का टुकड़ा लायी, लेकिन जब उसने मदद करनी चाही तो उसने इन्कार कर दिया। अपने दाँतों और अपने बायें हाथ की कुछ कुशल हरकतों से उसने अपनी दायीं बाँह पर पट्टी लपेटी। उसके बाद उसने उस स्थान पर उसे कसकर पट्टी में गाँठ लगाने के लिए कहा। कपड़ा लगभग तुरन्त ख़ून से तर हो गया।

"ताओ-चिङ, मुझे अफ़सोस है कि मैं तुम्हारे काम के बारे में तुम्हारे साथ विचार-विमर्श करने के लिए बहुत कम समय दे पाया।" उसका स्वर मन्द और क्षीण था। "इन पिछले थोड़े-से दिनों में हम बमुश्किल ही कोई गम्भीर बातचीत कर पाये हैं। मैं नहीं जानता था कि हालात इतनी तेज़ी से बदल जायेंगे... अच्छा, तो तुम कुछ व्यावहारिक काम करना चाहती हो?"

"बेशक! लेकिन मुझे बताओ, च्याङ हुआ..." यह सवाल उसके दिमाग़ में कई दिनों से था, लेकिन उसने अपने धड़कते दिल को शान्त करने की कोशिश की, जैसे ही उसने यह सवाल किया :

"मुझे बताओ – क्या तुम कम्युनिस्ट हो?"

"तुम मुझसे क्यों पूछती हो?"

"मैं, मैं – क्या तुम मेरा समर्थन करोगे अगर मैं पार्टी में शामिल होने की अर्ज़ी दूँ।"

च्याङ हुआ अपना सिर दीवार से सटाये बैठा था, उसकी आँखें दर्द के मारे बन्द थीं। उसने अब उन्हें ताओ-चिङ को देखने के लिए खोल दिया, और उसके पथराये चेहरे पर एक फीकी मुस्कान फैल गयी।

"मैं समझता हूँ कि तुम जानती हो कि परीक्षा का क्या मतलब होता है। तुमने अपने ही अनुभव से देख लिया है कि पार्टी और क्रान्ति क्या है; लेकिन क्रान्ति इसके बजाय में तुम्हारी परीक्षा लेगी... अगर तुम काफ़ी दृढ़ रहो, तो पार्टी अपना द्वार तुम्हारे लिए खोल देगी।" वह खाँसा और अपना सिर एक क्षण के लिए मेज़ पर टिका दिया। उसके बाद लगाव और स्नेह से उसने कहा, "निराश मत हो! तुम्हें आगे चलकर पार्टी में शामिल होने का अवसर मिलेगा। वर्तमान में, तुम्हें कुछ व्यावहारिक काम करना होगा। मेरे चले जाने के बाद, मैं चाहूँगा कि तुम अपने छात्रों और सहकर्मियों के बीच क्रान्तिकारी काम करो, और कुछ बच्चों के माँ-बाप से सम्पर्क स्थापित करो। आओ हम इस पर विचार-विमर्श कर लें कि तुम इसे कैसे करोगी।"

उनकी बातचीत पौ फटने से ठीक पहले ख़त्म हुई, तब च्याङ हुआ किसी तरह अपने पैरों पर खड़ा हुआ और खिड़की से बाहर देखा। पूर्व में प्रकाश हो चला था। उसके लिए उसकी आख़िरी सलाह यह थी : "निर्भीक, लेकिन सावधान बनो। अपने सहकर्मियों को अपने समर्थन में लेने की पूरी-पूरी कोशिश करो। मुझे विश्वास है
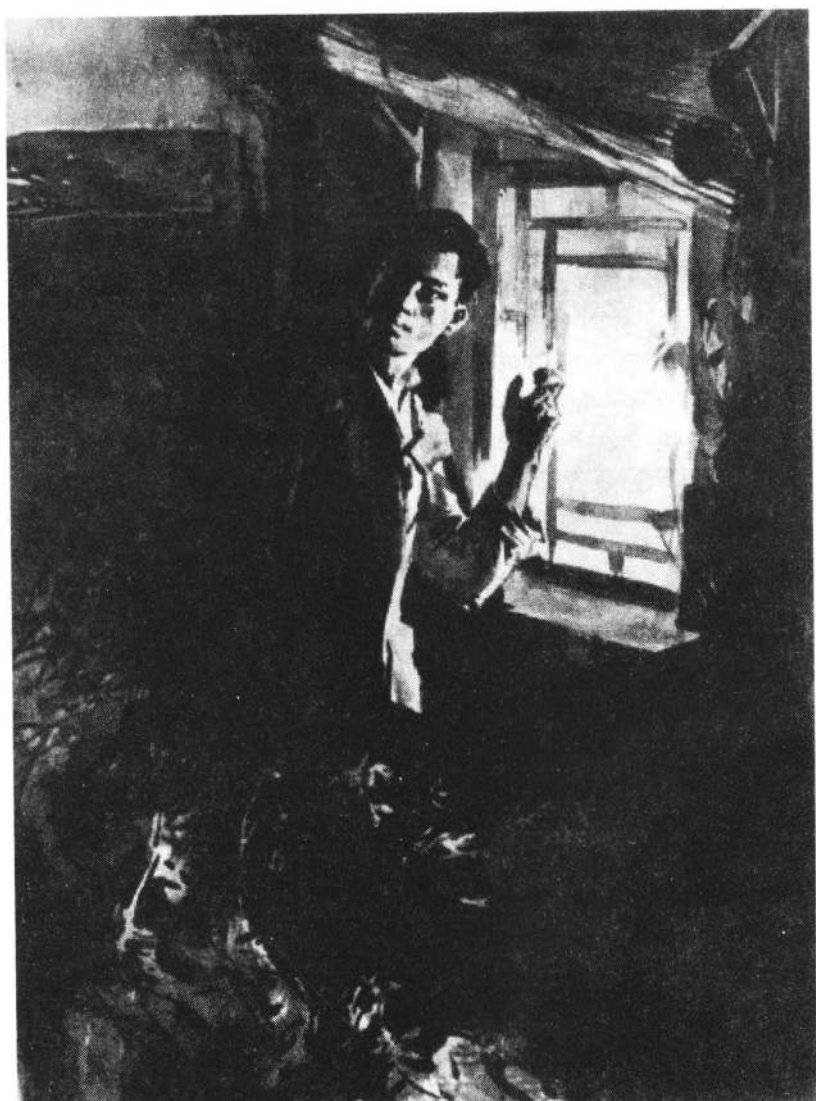
।।, तुम बढ़िया काम करोगी। अच्छा, मुझे दिन निकलने से पहले ही चले जाना चाहिए। मेरा सूटकेस ला दो, ला दोगी? मुझे अपने कपड़े अवश्य बदल लेने चाहिए।"

भयमिश्रित बौखलाहट में ताओ-चिङ उसे ख़ून के धब्बे लगे कपड़े बदलते, लपेटते, एक हाथ से अपना चेहरा धोते, और उसके बाद शान्तिपूर्वक अपना सामान पैक करते देखती रही।

"क्या तुम सचमुच जा रहे हो? तुम्हारी बाँह से अब भी ख़ून बह रहा है।"

"इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता," उसके रक्तहीन होंठ एक फीकी मुस्कान में खुल पड़े। "पिछली रात एक मीटिंग में हम लोग अचानक प्रमण्डलीय सुरक्षा दल द्वारा घेर लिये गये। मैं बाहर भाग रहा था कि चोट लगी... लेकिन यह गम्भीर नहीं है। अब यहाँ हालात मेरे लिए बहुत गर्म हैं। मुझे चले ही जाना चाहिए।"

"क्या तुम वापस आओगे?" एक चाहभरी मुस्कान उसके होंठों पर थी।

"निश्चित नहीं कह सकता। लेकिन हम हमेशा ही सम्पर्क बनाये रखने के ज़रिये ढूँढ़ सकते हैं। कोई तुमसे मिलने आ सकता है। मेरी एक मौसी है, वह दयालु है और पड़ोस में रहती है। शायद वह तुम्हारे पास आये... ठीक है, तुम मुझे विदा दो। चलो मुख्य फाटक से चलें। और कहें कि हमें ट्रेन पकड़नी है।" च्याङ हुआ ने पुनः एक दफ़्तरी मुलाज़िम की पोशाक में सजकर अपना हैट उठाया। ताओ-चिङ ने उसका सूटकेस ले लिया और वे साथ-साथ बाहर निकले।

सवेरा हो गया था। कुछ देर तक ठहरने वाले सितारे पश्चिमी आकाश में टिमटिमा रहे थे, और शहर से बाहर सन्नाटा था। सुबह की ताज़गी में ओस-पड़ी घास से होकर चलते हुए, च्याङ हुआ ख़ामोश बना रहा, और ताओ-चिङ उदासी से बोझिल बनी हुई थी। उसके पास पूछने के लिए असंख्य सवाल थे, लेकिन वह उन्हें अभी नहीं पूछ सकती थी।

"वह कितना दृढ़ और बहादुर है। और दूसरों को सिखाने में कितना धैर्यवान।" च्याङ हुआ पर पड़ी एक निगाह ने दर्शाया कि उसका चेहरा, यद्यपि अब भी पीला था, फिर भी पूरी तरह से संयत और सौम्य था। "क्या वह दर्द से परेशान है?" उसने सोचा। उसका हृदय कसक रहा था, वह उससे पूछे बिना न रह सकी, "क्या दर्द होता है? तुम्हें मेरे साथ कुछ दिन रहकर आराम कर लेना चाहिए था।"

उसने अपना सिर हिलाया और ख़ामोशी में चलता रहा। एक चौराहे पर वह रुका और बोला :

"ताओ-चिङ इतनी कोमल-हृदया मत बनो – संघर्ष निर्मम होता है। अब तुम्हें वापस लौट जाना चाहिए।"

"तुम्हारा असली नाम क्या है, च्याङ हुआ? क्या तुम मुझे अभी बता सकते हो?"

"ली मेङ यू! अब लौट जाओ, मुझे जाना है। अलविदा!" वह राजमार्ग पर चल पड़ा, बग़ैर उसको और सवाल पूछने का कोई अवसर दिये।

"क्या यह वही ली मेङ यू है जिसने पीकिङ विश्वविद्यालय के छात्रों का नेतृत्व किया था जब वे नानकिङ में प्रदर्शन करने गये थे?..." वह एक बेदमजनूं वृक्ष के नीचे खड़ी हो गयी, उसकी आँखें उसकी लम्बी-तगड़ी चौड़ी आकृति को तब तक देखती रही जब तक कि वह सुबह के कुहासे में विलीन नहीं हो गयी। उसके बाद उसने अपना सिर नवाया और बोली, मानो कोई प्रार्थना बुदबुदा रही हो :

"शुभकामना, कॉमरेड!...फिर वापस ज़रूर आना!..."

——:o:——

अध्याय 3

तो च्याङ हुआ दरअसल ली मेङ-यू था, पीकिङ विश्वविद्यालय का एक छात्र। लेकिन यह कॉलेज-छात्र अपनेआप को एक मज़दूर क्यों कहता है? इस सवाल ने ताओ-चिङ को उलझन में डाल दिया।

ली मेङ-यू होनान का मूल-निवासी था। तेरह वर्ष की आयु में एक प्राइमरी स्कूल में पढ़ाई पूरी करने के बाद उसका बाप उसे एक छापाख़ाना में अप्रेण्टिस बनाने के लिए शंघाई लेकर चला गया था। वह दिनभर काम करता और शाम को स्कूल जाता। यहाँ वह कम्युनिस्टों के सम्पर्क में आया, फिर कम्युनिस्ट युवा लीग में और बाद में पार्टी में शामिल हो गया। उसके बाद उसने शंघाई विश्वविद्यालय से सम्बद्ध हाईस्कूल में अध्ययन किया, वह अंशकालिक काम करके अपना ख़र्च खुद चलाता रहा, और उसी समय मज़दूरों के संघर्ष का नेतृत्व भी करता रहा। 1924-27 की क्रान्ति असफल हो गयी और क्वोमिङताङ प्रतिक्रियावादी मज़दूरों और क्रान्तिकारियों का क़त्लेआम करने लगे, तो वह गिरफ़्तारी से बचने के लिए निकल भागा। पार्टी से सम्पर्क टूट जाने और शंघाई में न रह पाने के कारण वह अपने मौसा के साथ रहने के लिए पेइपिङ चला गया, उसका मौसा भी एक छापाख़ाने में मज़दूर था। उसे आशा थी कि पेइपिङ में उसका पार्टी से फिर सम्बन्ध बन जायेगा और कोई नौकरी भी मिल जायेगी, लेकिन यह आशा से अधिक कठिन साबित हुई, और अपनी उलझन में ही उसने कॉलेज जाने का विचार पक्का कर लिया। दिन में वह चिएन मेन से बाहर एक छोटे-से बाज़ार में तरह-तरह के काम करके अपने खाने के लिए काफ़ी कमा लेता। रात में वह अपने मौसा के एकमात्र कमरे के एक कोने में पढ़ने बैठ जाता। वह इतने परिश्रम से अध्ययन करता कि पाँच महीने के भीतर ही वह कॉलेज में प्रवेश पाने के लिए तैयार हो गया। एक फ़र्ज़ी हाईस्कूल डिप्लोमा के साथ उसने प्रवेश-परीक्षा दी और वह पास हो गया, और उसके बाद पीकिङ

विश्वविद्यालय के दर्शन विभाग में दाख़िल हुआ। लेकिन इसके पहले ही वह पार्टी से पुनः सम्पर्क स्थापित कर चुका था, और उसे छात्रों के आन्दोलन का नेतृत्व सँभालने का कार्यभार सौंप दिया गया था। ये ही कारण थे जिनके नाते वह अपनेआप को सबसे पहले एक मज़दूर समझता था।

जब नानकिङ में प्रदर्शन करने के बाद छात्र वापस लौटे, तो ली मेङ-यू विश्वविद्यालय में नहीं ठहर सकता था। पार्टी ने उसे पूर्वी होपेई में ताङशान भेज दिया, जहाँ उसने एक साल से अधिक ख़ान मज़दूर के रूप में काम किया और ताङशान की पाँच कोइलरियों में विशाल हड़ताल करवाने में मदद की। जब जापान विरोधी मित्र सेना गठित हुई, तो वह चाङ चिआकोऊ चला गया और बटालियन कमाण्डर बन गया। सेना की पराजय के बाद वह पेइपिङ लौट आया, पार्टी की होपेई प्रान्तीय कमेटी से सम्पर्क किया और उसे पाओतिङ में किसान आन्दोलन का इंचार्ज बना दिया गया। उस समय उस क्षेत्र के किसान, जो ज़मींदारों और सूदखोरों, अन्तहीन टैक्सों और लेवियों, तथा ग्रामीण अर्थ व्यवस्था के तीव्रगामी दिवालियेपन के चलते निराशा के गर्त में धकेल दिये गये थे, गुप्त रूप से पार्टी नेतृत्व के तहत, प्रतिरोध की तैयारी कर रहे थे। ताओ-चिङ के तिङसिएन आने से पहले च्याङ हुआ, तिङसिएन के आसपास के प्रमण्डलों की पार्टी कमेटी के सेक्रेटरी के रूप में पहले से ही वहाँ भूमिगत गतिविधियाँ चला रहा था। दुश्मन को अपनी गन्ध से भी दूर रखने के लिए वह सू हुई के ज़रिये ताओ-चिङ के सम्पर्क में आया, और उसके स्कूल में छद्म रूप से ठहर गया, जबकि वह तिङसिएन सुरक्षादल की दूसरी टुकड़ी में एक सशस्त्र विद्रोह संगठित करता रहा। ताङ-हो नदी के दोनों तटों पर रहने वाले ग्रामवासी, अक्सर उसे स्टेशनरी का सामान बेचने के लिए साइकिल से आते-जाते देखते थे। कभी-कभी किसान का भेष बनाकर वह ग्रामीण जनता के साथ उनकी आम क़िस्मत की कठोरता और लूट-खसोट भरे टैक्सों और लेवियों के कमरतोड़ बोझ के बारे में बातचीत करता। वह इतनी जल्दी-जल्दी अपना वेष और पेशा बदल देता कि वह तिङसिएन में आधे वर्ष से अधिक समय तक बिना पता लगे ही काम करने में समर्थ रहा। उस क्षेत्र में क्रान्तिकारी संस्थाएँ दिन-ब-दिन ताक़त हासिल करती गयीं।

उस रात जब ताओ-चिङ उसके लिए काफ़ी रात तक बैठी रही, तब पीली चाँदनी धुँधले रूप में घुमावदार ताङ हो नदी के ऊपर छिटकी हुई थी, और निकट के दलदल में नरकुल के पौधे सन-सन करते हवा में झूम रहे थे। बीत रहे बसन्त की रात नरकुलों की खरखराहट के सिवाय निःशब्द थी; तभी बीसों आदमी फटी-पुरानी सैनिक वर्दियाँ और मैले-कुचैले किसानी कपड़े पहने वहाँ जमा हो गये। वे पार्टी-सदस्य या कम्युनिस्ट युवा-लीग के सदस्य थे, जो स्थानीय सुरक्षा-दल में

भरती हो जाने में सफल हो गये थे। कुछ अपने हाथों में राइफ़लें लिये बाँध के किनारे खड़े थे, बाक़ी उसी तरह से शस्त्र-सज्जित होकर, बर्फ़ीले कीचड़ में उकड़ूँ बैठे थे। दो युवा प्रहरी चाँदनी में प्रकाशित बाँध के ऊपर-नीचे बन्दूकें साधे मार्च कर रहे थे।

इन आदमियों में च्याङ-हुआ था, और ताई यू था जो दो दिन पहले पाओतिङ की पार्टी कमेटी के प्रतिनिधि के रूप में पहुँचा था। वे यह विचार-विमर्श करने के लिए मीटिंग कर रहे थे कि कैसे इस क्षेत्र में पार्टी को मज़बूत बनाया जाये, और सुरक्षा दल – ज़मींदार सेना – में विद्रोह संगठित किया जाये। दोनों ही किसानों जैसे लिबास पहने हुए थे : च्याङ हुआ घर का बुना हुआ एक काला जैकेट और एक मैली-कुचैली स्ट्रा-हैट पहने था; ताई यू अब भी अपना चश्मा पहने हुए था, वह भी काले लिबास में था। वे बाक़ी साथियों के साथ उस कीचड़ में उँकड़ूँ बैठे हुए थे।

च्याङ हुआ ने मीटिंग की शुरुआत, जन-भावना सम्बन्धी रिपोर्ट पूछने और इस मसले पर जो साथी अपने विचार प्रकट कर सकते थे, उनका आह्वान करते हुए की।

कुछ समय तक कोई न बोला। यद्यपि चाँदनी में, जो बिखरे हुए नरकुलों के ऊपर चमक रही थी, उनके चेहरों पर तनाव और आवेश दिखायी दे रहा था। वर्षों की कठिनाई की मार ने कइयों के ललाटों पर झुर्रियाँ डाल दी थीं, और इन आदमियों की आँखें नफ़रत और क्रोध से चमक रही थीं।

थोड़े समय की ख़ामोशी लम्बी प्रतीत हुई। तब एक क़रीब तीस वर्ष की आयु वाला आदमी कड़ुवाहट से भरकर मन्द स्वर में बोला।

"हम समय बरबाद न करें। हमें कैसे शुरुआत करनी है? हम यहाँ जितना झेल सकते हैं, उससे अधिक झेल चुके हैं। अनाज की एक बाली भी बाढ़ के कारण बटोरी नहीं जा सकी, लेकिन ज़मींदार अब भी लगान और बेगार की आशा करते हैं... और साहूकार इस मौक़े पर हमारी हड्डियों से मज्जा तक निचोड़ लेने पर उतारूँ हैं। एक पेक मक्का उधार लेने का मतलब है गर्मी के बाद दो पेक गेहूँ का भुगतान करना, भले ही उपज अच्छी हो या बुरी। हमारे बीबी-बच्चे भूखों मर जायेंगे ..."

"हम सभी पार्टी सदस्य इसी के लिए हैं," तगड़े गठीले ज़िला पार्टी सेक्रेटरी ली लो-कुएई ने कहा, जो खुद भी सुरक्षा दल की एक टुकड़ी का नेता था। "उन्हें जहन्नुम रसीद कर दो। हम लोगों को एक साथ कार्रवाई करने के लिए सुरक्षा दल को विभिन्न गाँवों में तैनात करना होगा। जब हम लोग हमला करेंगे और उन कचरों को साफ़ कर देंगे, तो हम पहाड़ों में लौट जायेंगे... एक बार यहाँ उत्तरी चीन में, किआङसी के निचले भाग की तरह, सोवियतें गठित कर लेने के बाद हमारे किसान

भी ज़मींदारों से अपना हिसाब चुकता कर लेने और उनके द्वारा दबाकर रखे गए अनाज को बाँट लेने में समर्थ हो जायेंगे... हम अपनी पीठें सीधी कर सकेंगे।" ली ने अपनी चालाक, सिकुड़ी आँखें अपने नज़दीक खड़े नौजवान आदमियों पर टिका दीं। अपनी खोल से एक पिस्तौल खींचकर उसने यह दर्शाने के लिए लहरायी कि उसका अभिप्राय इस करतब से था।

"और कौन बोलना चाहता है? कोई पार्टी सदस्य जो भी सुझाव देना चाहे, पार्टी को दे सकता है।" च्याङ हुआ के कॉमरेडों ने उसके तौर-तरीक़ों से जान लिया कि वह एक मँजा हुआ क्रान्तिकारी था, एक ऐसा क्रान्तिकारी जिसका इरादा फ़ौलादी था।

"मैं बोलना चाहता हूँ।" एक घनी भौंहों, बड़ी आँखों, और चौड़े कन्धों वाले एक नौजवान ने कहा। उसके शब्द सटीक थे और उसका लहज़ा जोशीला था। "जो कुछ भी नेतृत्व तय करता है, हम उसे करेंगे। अगर ज़रूरत पड़ी, तो अपनेआप को मुक्त कराने के लिए हम अपने प्राणों का उत्सर्ग भी करने के लिए तैयार हैं..."

च्याङ हुआ ने स्वीकृति में सिर हिलाया।

"बस धीरज रखो, ली युङ-कुआङ!" उसके बाद वह बाक़ी को एक मन्द स्वर में सम्बोधित करने के लिए मुड़ा, "हमारी लाल सेना दुश्मन की घेरेबन्दी को तहस-नहस कर रही है। वह एक कठिन संघर्ष में लगी हुई है। हमें यहाँ इन श्वेत क्षेत्रों में उससे अधिक संघर्ष करना होगा, ताकि हम दुश्मन की कुछ ताक़त निचोड़ सकें..." आओ हम विचार-विमर्श करें कि क्या क़दम उठाये जायें।"

ली युङ-कुआङ बीच ही में बोल पड़ा :

"चाचा लो-कुएई पूरी तरह तैयार हैं, और वैसे ही हम भी तैयार है। जैसे ही पार्टी कमेटी आदेश करेगी, हमारे ज़िला सुरक्षा दल के सभी आदमी कार्रवाई में उतर जायेंगे। पहले हम ज़मींदार सिङ का घर घेर लेंगे और मैं अन्दर पैठकर धावा बोल दूँगा, और उस सूअर की हत्या कर दूँगा। फिर हम आगे बढ़ेंगे... तुम बाक़ी को क्या कहना है, कॉमरेडो?"

ताई यू ने, जो पूरे समय ख़ामोश बना रहा, ली युङ-कुआङ के कन्धे को थपथपाया। अपने गले को तेज़ आवाज़ में कई बार खँखारकर उसने कहा :

"तुम्हारा भला हो, नौजवान साथी! क्या तुम पार्टी सदस्य हो या युवा लीग में से हो? मैं तुम्हारे जोश की क़द्र करता हूँ। हमें स्थानीय आततायियों और दुष्ट ज़मींदारों को मिटा डालने के लिए ज़रूर लड़ना चाहिए, और उत्तरी चीन में एक सोवियत सरकार गठित करनी चाहिए!"

अभी उसने मुश्किल से बात ख़त्म की थी कि तीन गोलियाँ धाँय-धाँय दग उठीं...यह संकेत था कि वे दुश्मन द्वारा देख लिये गये थे। कीचड़ में उकड़ूँ बैठे

आदमी उठ खड़े हुए और अपनी बन्दूक़ों पर घोड़े चढ़ा लिये। च्याङ हुआ ने एक मन्द स्वर में आदेश दिया :

"ख़ामोश बने रहो! एक क्षण ठहरो!"

"सपना देखना छोड़ दो, लाल क्रान्तिकारियो! तुम लोग घिर चुके हो!" एक कर्कश आवाज़ चीख़ उठी, जबकि और अधिक गोलियाँ धाँय-धाँय चलने लगीं।

"वह कुत्ता सिङ और उसके आदमियों ने हमें घेर लिया है!" ली लो-कुएई ने उदास होकर च्याङ हुआ और ताई यू से फुसफुसाकर कहा। "हम क्या करें? ज़्यादा सम्भावना है कि यह प्रमण्डलीय सुरक्षा दल है – उन्हें इसकी भनक कैसे मिली? ..."

कुछ सेकेण्ड तक ध्यानपूर्वक सुनने के बाद, च्याङ हुआ ने शान्तिपूर्वक एक हाथ उठाया।

"शान्त हो जाओ, कॉमरेडो! अगर हम मरना नहीं चाहते, तो हम ज़रूर प्रतिरोध करें और एक तगड़ी टक्कर भी दें। हम यहाँ बीस आदमी हैं, सभी शस्त्र-सज्जित।" वह बाँध पर के प्रहरियों को आवाज़ देने के लिए रुका, "लेट जाओ। फ़ायर करो जब वे निकट आयें।" अपने चारों ओर कीचड़ में एकत्र किसानों पर नज़र डालते हुए उसने आगे कहा, "हम उन्हें देर तक नहीं रोक सकते। हमें ओट में होकर पीछे हटना होगा, उसके बाद बिखरकर भूमिगत हो जाना होगा... तुम क्या कहते हो, भाई चेङ?" वह ताई यू की ओर, जो यहाँ चेङ के नाम से जाना जाता था, समर्थन के लिए मुड़ा।

ताई यू, जिसका चेहरा लेई की तरह सफ़ेद था, हकलाया :

"इतना बड़ा झटका! इतना बड़ा झटका! हमारे पास कोई चारा नहीं बचा है.. .सिवाय प्रतिरोध करने के।" प्रचण्ड धमाके उन सभी के आस-पास सुनायी दिये। दोनों युवा प्रहरियों ने जवाबी फ़ायर किये, ऐसा करते हुए वे चीख़ पडे :

"वे यहाँ आ गये। प्रमण्डलीय सुरक्षा दल हम पर धावा बोल रहा है!"

ताई यू पर और कोई ध्यान दिये बग़ैर, च्याङ हुआ ने ली लो-कुएई और दूसरे किसानों को आदेश दिया :

"ली युङ-कुआङ यहाँ मेरे साथ तुम लोगों की सुरक्षित वापसी के लिए रुका रहेगा। बाक़ी तुम लोगों को ली लो-कुएई के नेतृत्व में तुरन्त निकल जाना है। संघर्ष करते हुए अपना रास्ता तय करें। हम लोग दिन निकलने से पहले अपनी अगली गतिविधियाँ करने के लिए दो माऊ प्लाट पर मिलेंगे।"

ली लो-कुएई ने च्याङ हुआ की बाँह पकड़ ली और हाँफते हुए बोला, "यह नहीं होगा! मैं यहाँ रहूँगा। तुम बाक़ी के साथ वापस जाओ। मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा।" विकट स्थिति में होने के बावजूद च्याङ हुआ पर टिकी सभी आँखों में आदर और प्रेम था।

"तुमने मुझे सुना नहीं? दुश्मन घेरता आ रहा है। चले जाओ! यह शिष्ट बनने का समय नहीं है!" च्याङ हुआ का जापान विरोधी मित्र सेना में एक कमाण्डर के रूप में अनुभव उसके बहुत काम आया जिसके नाते वह शान्तिपूर्वक इन किसानों को जो पहले कभी लड़ाई में नहीं शामिल हुए थे, दृढ़ आदेश देता रहा।

उन्होंने आदेश पालन किया, और आग्रह किया कि वह सबसे बढ़िया बन्दूक़ रख ले। फिर तो उन्होंने हथगोले फेंकते हुए, दुश्मन को डर के मारे ज़मीन पर लेट जाने के लिए मजबूर कर दिया। ली लो-कुएई ने अपने आदमियों के साथ निकल जाने के लिए इस मौक़े का फ़ायदा उठाया। उस सीलन भरे, बर्फ़ीले बाँध पर लेटे हुए, च्याङ हुआ और ली युङ-कुआङ ने ऐसी अनवरत फ़ायरिंग जारी रखी कि भले ही ज़मींदार सिङ और प्रमण्डलीय सुरक्षा दल के प्रधान के पास पचास से साठ के बीच आदमी थे, फिर भी वे आगे बढ़ने की हिम्मत न कर सके।

"आगे बढ़ो! उनका पीछा करो! विद्रोही भाग रहे हैं। तुम आक्रमण क्यों नहीं करते?" सिङ और सुरक्षा दल का मोटा थुलथुल प्रधान, दोनों चीख़ पड़े। लेकिन जैसे ही उनका कोई आदमी तनिक भी आगे बढ़ता, ली युङ-कुआङ फ़ायर शुरू कर देता और च्याङ हुआ भी वैसा ही करता। दनादन उस दल के दो जवान एक-एक करके ज़ख़्मी कर दिये जाने पर बाक़ी आगे बढ़ने की हिम्मत नहीं कर सके। जब च्याङ हुआ ने तजवीज़ कर लिया कि उसके आदमी काफ़ी दूर निकल गये हैं, तब वह और ली बाँध के नीचे ज्वार के खेतों की ओर जाने के लिए तेज़ दौड़ पड़े। ली दौड़ते हुए ज़ख़्मी हो गया। च्याङ हुआ ने अपने कॉमरेड की बन्दूक़ अपने कन्धे में लटका ली, उसको कन्धे पर उठा लिया और लेकर सीधे दौड़ा, उसका चेहरा उस युवा किसान से कसकर सटा हुआ था। इसके पहले कि वह दौड़ कर दूर तक जा पाता, उसने अपनी बाँहों में ढोये जा रहे इस भारी शरीर में एक ऐंठन महसूस की। च्याङ हुआ धीमा हो गया, और ली युङ-कुआङ ने अपनी आँखें खोली। "माँ से कहना कि वह बहुत दुखी न हो," वह बोला। "...लड़ते रहो..." उसके अगले ही क्षण वह मर गया। च्याङ हुआ ने आहिस्ते से उसके बलिष्ठ शरीर को, जो तेज़ी से ठण्डा पड़ता जा रहा था, चिपचिपी ज़मीन पर रख दिया और एक क्षण तक अपने मृत कॉमरेड को निहारता रहा। गोलियाँ उसके पीछे दगती हुई क़रीब आती जा रही थीं और उसे इस युवा योद्धा को वहीं छोड़ देना पड़ा।

उसने महसूस नहीं किया कि उसकी बाँह ज़ख़्मी हो चुकी है, और अन्ततः वह तेज़ी से भाग चला। युङ-कुआङ की माँ, चाची ली, के घर दौड़ते जाने और दोनों राइफ़लों को छिपा देने के बाद वह वापस ताओ-चिङ को देखने गया, और फिर, उसके थोड़ी ही देर बाद वहाँ से चल दिया।

——:o:——

अध्याय 4

गरमी का आरम्भ था। सम्पूर्ण उत्तरी चीन, तिङसिएन के आसपास का रमणीक देहात जीवन के संचार से गुंजायमान और स्पन्दित हो रहा था। सफ़ेद बादल आकाश में धीरे-धीरे तैर रहे थे और खेतों में किसान दो-दो और तीन-तीन के झुण्डों में कड़ी मेहनत कर रहे थे। बेदमजनूँ वृक्ष की डालियाँ एक सरिता के तटों के ऊपर लटक रही थीं, जहाँ सिर्फ़ बच्चों की चिल्लाहटें ही स्तब्धता भंग कर रही थी।

"देखो, देखो।"

"उस छोटे मेढक को देखो!" उनकी किलकारियाँ, सुबह की ताज़ी हवा में खनकती हुई सुनने वालों के दिलों में बसन्तकालीन आह्लाद की स्फूर्ति पैदा कर रही थीं।

"देखिये, कुमारी लिन! क्या वह अवसादी चट्टान है?"

"क्या यह एक ख़ूबसूरत फूल नहीं है, श्री चाओ।"

क़रीब एक दर्ज़न स्कूली बच्चे, लड़कियाँ और लड़के जो बारह-तेरह वर्ष की उम्र के थे, ताओ-चिङ और एक दूसरे अध्यापक के साथ देहात की तरफ़ जाने वाली एक सड़क पर चल रहे थे। वे चलते-चलते पूरे जोश में चिल्ला रहे थे और उत्सुकतावश अपने सिर प्रत्येक दिशा में मोड़ते जा रहे थे। छँटे हुए बालों वाली दो लड़कियाँ, बाक़ी से थोड़ा पीछे फुसफुसाकर बातें कर रही थीं।

"देखो, कुमारी लिन कितनी लोकप्रिय हैं, सिऊ-यिङ! बेशक, श्री चाओ भी बुरे नहीं है..." दोनों में से एक मोटी लड़की ने सड़क के किनारे से एक फूल चूमकर और उसे सूँघकर कहा। तुम जानती हो, हमारी कक्षा के ढेर सारे छात्र क्रान्ति में शरीक़ होना चाहते हैं। मैं लाल सेना में भरती होना चाहती हूँ सिऊ-यिङ, लेकिन मैं नहीं जानती कि इसके लिए कैसे जाऊँ..."

"तुम मत जाओ! बस तुम नहीं ही जाओ!" दुबली-पतली लड़की, सिऊ-यिङ ने ज़ोर देकर कहा। "क्यों, कुओ-हुआ, क्या कुमारी लिन और श्री चाओ दोनों ने नहीं कहा है कि हम अभी बहुत कमसिन हैं? अभी हमारा काम अपनेआप को भविष्य के लिए तैयार करने के लिए कड़ी मेहनत करके पढ़ाई करना है...शायद उस समय तक कम्युनिस्ट आ चुके होंगे और लाल सेना भी आ चुकी होगी!"

"नहीं! मैं तुमसे सहमत नहीं हूँ। क्रान्ति में शरीक़ होने का मतलब है लाल सेना में भरती होना। इसका मतलब होता है राइफ़ल उठाना और लड़ना।"

"कुओ-हुआ! सिऊ-यिङ!" ताओ-चिङ ने पीछे पलटकर उन्हें आवाज़ दी। "तुम दोनों क्या बहस कर रही हो? जल्दी करो। जब तक हम वहाँ पहुँच नहीं जाते, तब तक तुम अपनी बहस नहीं कर सकतीं।

इस रमणीक रविवारीय भोर में इन बच्चों के आगमन ने वू ली गाँव के किनारे

बह रही, बेदमजनूँ वृक्षों से आच्छादित सरित को जीवन्त बना दिया। लड़के और लड़कियाँ घुमावदार तट के किनारे-किनारे खेलने के लिए छितर गये। कुछ ने अपने जूते उतार लिये और ठण्डे पानी में जंगली कबूतर, ईल और मछली का शिकार करने के लिए चप्पू चलाने लगे। बेदमजनूँ वृक्ष के नीचे लड़कियों का उच्च स्वरों में गायन उस देहाती प्रदेश को बसन्त की मस्ती से भर रहा था।

ताओ-चिङ अपने सफ़ेद रेशमी गुलबन्द को अपनी गरदन के चारों ओर लपेटकर रेतीले तट पर बैठी थी। खेलते हुए बच्चों को देखती हुई, उसने मीठे स्वर में दूसरे अध्यापक से कहा :

"देखो, यू-चिङ, जो तुमने उपलब्धियाँ हासिल की हैं।" वह मुस्कुरायी और मछली टोहते बच्चों की ओर इशारा किया। "बहुत पहले की बात नहीं है, जब वे सिर्फ़ शरारती बच्चे थे। लेकिन अब उनको देखो..."

"अब भी कुछ ऐसा नहीं है, जिस पर शेखी बघारी जाये," चाओ यू-चिङ ने प्रत्युत्तर में कहा, वह बीस वर्ष से कुछ अधिक का दुबले-पतले सफाचट चेहरे और प्रतिभावान उत्सुक आँखों वाला नौजवान था। वह रेत पर शब्द-चित्र उकेर रहा था लेकिन अब उसने ध्यानपूर्वक आगे बोलने के लिए अपना सिर उठाया, "बिना मार्गदर्शन के तुम्हें ऐसा महसूस होगा जैसे हवा में उड़ती हुई एक कटी पतंग। हम अनिश्चित काल तक इस भाँति काम नहीं कर सकते।"

"मैं भी ऐसा नहीं समझती कि हम कर सकते हैं," ताओ-चिङ ने च्याङ हुआ के बारे में सोचते हुए निःश्वास छोड़ा। "तुम मेरे मौसेरे भाई से मिल चुके हो। अगर वह यहाँ होता तो हम बेहतर ढंग से जान सकते थे कि क्या करें... जाने के दिन ही उसने मुझे बताया था कि कोई आयेगा, लेकिन अब तक कोई नहीं आया; और यह हफ़्तों पहले की बात है।" उसने बेदमजनूँ वृक्ष की एक टहनी तोड़ ली, और उसके साथ खेलती हुई, इस नौजवान को उत्सुकतापूर्वक देखने लगी।

"अब भी अगर तुम इस पर सोचो," वह बोला, "तो हमने स्वयं अपने ढंग से भी कोई बहुत बुरा नहीं किया है। ये सभी बच्चे क्रान्ति के पक्ष में हैं, और कुछ हमारे सहकर्मी भी सहानुभूति रखते हैं। हम जल्द ही कोई बड़ी कोशिश कर सकेंगे।"

ताओ-चिङ ने अपना सिर हिलाया।

"नहीं, मैं सोचती हूँ कि बेहतर होगा कि हम पार्टी से अनुरोध करें कि जितनी जल्दी हो सके वह किसी को यहाँ भेजे। मैं इसके लिए लिख भी चुकी हूँ, यद्यपि मैं नहीं जानती कि इससे कोई फ़ायदा होगा या नहीं।" एक ध्यानमग्न विराम के बाद वह फिर बोली, "अब वे काफ़ी खेल चुके हैं। अब बहस शुरू करने का समय हो गया।"

चाओ ने एक सीटी बजायी, और तुरन्त बच्चों ने अपनी बाल्टियाँ, कुदालें और मछली मारने के डण्डे नीचे रख दिये, और अपने अध्यापकों के इर्द-गिर्द जमा हो

गये। कुछ सयानी लड़कियों, जैसे ली कुआ-हुआ और लिऊ सिऊ-यिङ को छोड़कर, जो अब भी साफ़-सुथरी पोशाकें पहने थीं, बच्चे कीचड़ से सने हुए थे। मज़ाक़ में एक-दूसरे पर कटाक्ष करते हुए, वे अपनी-अपनी आस्तीनों से अपने-अपने चेहरे पोंछने लगे। वे जितना ही कसकर पोंछते उतना ही अधिक मैले होते जाते, और ताओ-चिङ बरबस ठठाकर हँस पड़ी।

"नहीं, मेरी प्यारो, बेहतर होगा कि तुम लोग नदी पर चले जाओ और बातचीत शुरू करने से पहले अपने हाथ-मुँह धो आओ।"

बच्चे अपने को साफ़ करने के लिए नदी की ओर दौड़ पड़े, और उसके बाद लौटकर अपने अध्यापकों के चारों ओर भीड़ लगाकर बैठ गये। शरारत का भाव उनके चेहरों से ग़ायब हो चुका था, और वे उत्कण्ठित होकर इन दो प्रौढ़ व्यक्तियों को एकटक देख रहे थे। तब ताओ-चिङ ने भावप्रवण होकर एक स्नेहिल स्वर में कहा।

"तुम लोग चीन के अच्छे बच्चे हो : तुममें से हर कोई। तुम सभी जानते हो कि क्यों तुम्हें अपने देश से प्यार करना चाहिए और तुम सभी इसके बारे में चिन्तित हो। तुम यह भी जानते हो कि चीन किस दिशा में जायेगा। भविष्य में हम एक बहुत खुशहाल समाज में जियेंगे, जैसे सोवियत संघ के लोग आज जी रहे हैं। क्या तुम सभी ने वह किताब पढ़ी है, 'सोवियत संघ में बच्चों का सुखी जीवन'? पढ़ी है? ठीक तब आओ, हम इस पर बात करें कि वहाँ के बच्चे इतने सुखी क्यों हैं।"

गर्म धूप, बेदमजनूँ वृक्ष की शाखाओं से छनकर, तट पर घेरा बनाकर बैठे बच्चों पर चमक रही थी, जो उत्तेजना से आरक्त थे, उनमें से प्रत्येक पहले बोल पड़ने की कोशिश में था।

"मैं समझती हूँ कि ऐसा इस कारण से है कि सोवियत संघ के बच्चे अच्छा खाते-पहनते हैं, और उनके माँ-बाप को काम मिला हुआ है..." ली कुओ-हुआ की बड़ी-बड़ी आँखें उत्सुकता से दमक उठीं थी, जब उसने अपनी बात कही। "लेकिन मैं सोचता हूँ कि सबसे महत्त्वपूर्ण चीज़ पढ़ाई करने में समर्थ होना है," एक घुटे बालों वाले लड़के ने कहा, जिसकी नाक गन्दी थी।

"हमारे देश में बहुत कम बच्चों को ऐसा अवसर मिल पाता है। मुझे देखो। मेरे बाप को अपनी पचास युआन मासिक आमदनी पर हम पाँच लोगों का भरण-पोषण करना पड़ता है – वह मुझे स्कूल भेजने का ख़र्च कैसे उठा सकता है?"

"सोवियत संघ में एक लड़का प्राइमरी स्कूल में जाता है, हाईस्कूल में जाता है, विश्वविद्यालय में जाता है। जब तक वह अच्छी प्रगति करता रहता है, तो वह जितना चाहे पढ़ सकता है। लेकिन हमको दे-दे-देखो। मु-मुझे देखो!...मेरे लिए यह कितना क-क-कठिन है।" वह हकलाने लगा था क्योंकि उसने विषय को बड़ी गम्भीरता से महसूस किया था। उसका छोटा चेहरा तमतमा गया था और उसकी

आँखें तीव्र भावुकता से चकरा गयी थीं।

एक दूसरे लड़के ने उसे तिरस्कारपूर्वक देखा और कहा :

"चुपकर, पितेह-जुई। अगर तुम बोलते रहे, तो तुम्हारी आँखें फट पड़ेंगी।"

"तुम म-मेरा मज़ाक़ उड़ाते हो... फिर भी तुम... क्रान्ति की ब-बात करते हो।" पी तेह-जुई दुखी होकर दूसरी ओर मुड़ गया। उसकी आँखें अब शंका के मारे लाल हो गयी थी।

ताओ-चिङ उस लड़के को कठोर नज़र से देखती हुई उठ खड़ी हुई जिसने उसे दुखी किया था। "तेई-जुई ने जो कुछ कहा है वह बिल्कुल ठीक है : वह अपने निजी अनुभव के आधार पर कह रहा था। तुम सभी जानते हो कि वह अपनी पढ़ाई कितने अच्छे ढंग से करता है; लेकिन उसका परिवार इतना ग़रीब है कि उसे पढ़ा नहीं सकता। हर रोज़ जब स्कूल बन्द होता है, उसे रेलवे स्टेशन पर कोयले के टुकड़े बीनने या रद्दी के ढेर में रद्दी माल खोजने जाना पड़ता है। वह अक्सर भूखे ही स्कूल आ जाता है...आओ हम सोचें कि क्यों ऐसा है कि हमारे देश के बच्चों को इतना कुछ झेलना पड़ता है।"

किसी ने जवाब नहीं दिया – वे सभी पितेह-जुई को देख रहे थे। उन्होंने देखा कि जिस लड़के ने उस पर फ़ब्ती कसी थी, वह अपना सिर लटकाये, उसकी ओर बढ़ा और फिर उसका हाथ पकड़ लिया। "अच्छा किया, सुएह-चाङ! यही सच्ची वर्ग-एकता है," अब तुम सभी बैठ जाओ। हम अपनी बहस आगे बढ़ायें।"

ठीक तभी उनमें से कोई चिल्ला उठा, "कोई आ रहा है!" बेदमजनूँ वृक्षों के उस पार साइकिल पर सवार वू यू-तिएन की भारी भरकम आकृति प्रकट हुई।

ताओ-चिङ झट उसके पास पहुँच गयी और मुस्कुराती हुई बोली, "तो तुम भी यही जगह पसन्द करते हो, श्री वू! हम लोग बच्चों के साथ यहाँ पर खेल खेलते हुए और कविता पाठ करते हुए अच्छा समय बिता रहे है। 'कुओ मो-जो की देवियाँ' एक बढ़िया कविता-संग्रह हैं। क्या आप हमारे साथ नहीं शामिल होंगे, श्री वू?"

अपनी साइकिल ठेलते हुए वू यू-तिएन ने अपने सिर को एक तिरस्कार भरा झटका देकर उत्तर दिया :

"चूँकि आज रविवार है, इसलिए मैं एक रिश्तेदार से मिलने जा रहा हूँ। मुझे आशा नहीं थी कि तुम सब यहाँ मिल जाओगे...तुम अपना कविता पाठ करते रहो। निस्सन्देह, तुम सभी किसी न किसी दिन महान कवि बन जाओगे!"

वह अनिश्चिततापूर्वक थोड़ा रुका, और बच्चे दुविधा में पड़ कर उसे घूरने लगे। जब वह अपनी साइकिल ठेलते हुए धीरे-धीरे दूर चला गया तो बच्चों का एक समवेत स्वर और उसके पीछे, कुओ मो-जो की कविता "सुबह का आलोड़न" का गायन फूट पड़ा।

सुबह, पीली है जैसे चाँदनी,
बेधती है जंगल की धुन्धभरी गहराइयों को;
बिखरी हैं परछाइयाँ घबराहट में,
गुँथी हुई हैं रुपहली रेत पर।
समुद्र साफ़ दिख रहा है।
चीड़ों के उस पार, दूर बहुत दूर,
झलकती है द्वीपों की धुन्ध वाली आकृतियाँ,
मानो खुमार लिये हों, पिछली रात के सपने का...

च्याङ हुआ के तिङसिएन से चले जाने के दो महीने बाद प्राइमरी स्कूल में हालात बदलने शुरू हो गये थे। उसके निर्देशों पर अमल करते हुए ताओ-चिङ ने अधिकाधिक लोगों को अपने पक्ष में कर लेने की पुरज़ोर कोशिश की। पहले वह चाओ यू-चिङ के पास गयी, जो पहले से ही क्रान्तिकारी रुझान रखता था। दृष्टिकोण की समानता ने उत्साहवर्द्धन के लिए एक-दूसरे पर भरोसा करने की प्रेरणा दी थी, और वे अक्सर विचार-विमर्श करते कि वे अपने गुप्त काम को कैसे स्कूल में आगे बढ़ायें। धीरे-धीरे अधिकतर छात्र और अध्यापक जापान का सक्रिय विरोध करने के पक्ष में हो गये। छात्रों का एक स्वयंशासी संगठन स्थापित किया गया, साथ-ही, साहित्यिक, संगीत सम्बन्धी, और आधुनिक ड्रामा सम्बन्धी समितियाँ भी गठित की गयी। ताओ-चिङ के अपने अधिकतर सहकर्मियों के साथ अच्छे ताल्लुक़ात थे, क्योंकि उसने च्याङ हुआ की इस सलाह पर अमल किया था कि उनको प्रभावित करने से पहले उन्हें दोस्त बनाया जाये। ख़ास तौर से उसने यह भी पूरी-पूरी कोशिश की कि उसकी सावधान, संकीर्ण प्रधानाध्यापिका उसे पसन्द करती रहे और उस पर विश्वास करती रहे, जिससे कि वह उनकी गतिविधियों में अड़ंगेबाज़ी न करे। एक बार प्रधानाध्यापिका ने प्रसंगवश पूछ लिया :

"तुम और बच्चे देहात में क्या-क्या करते हो ताओ-चिङ? तुम्हारे यहाँ रहने के आधे वर्ष में ही, तुम बिल्कुल बच्चे की तरह हो गयी हो!"

"वे सभी साहित्यिक समिति के सदस्य हैं बुआ। हम सभी साहित्य पसन्द करते हैं, इसलिए हम लोग देहात में कोई ख़ूबसूरत जगह खोजकर आनन्द मनाते हैं, जहाँ हम कविताओं या बढ़िया गद्य का पाठ कर सकें। दरअसल, मैं सोचती हूँ कि आप भी किसी दिन हमारे साथ शामिल हो जायें।"

प्रधानाध्यापिका दबी-हुई हँसी हँसी, और अपने होंठों को एक रूमाल से थपथपाया।

"मैं बहुत उम्रदराज़ हूँ। मैं तुम तरुण लोगों की तरह काव्यात्मक रुझान नहीं रखती..." अपेक्षतः अधिक गम्भीर दिखती हुई वह फुसफुसायी, "श्री वू मुझसे कहते हैं कि तुमको सन्देहास्पद समझा जाता है, चाओ यू-चिङ को भी...कि तुम

लोग छात्रों को शहर से बाहर मीटिंग करने के लिए ले जाते हो। बेहतर होगा कि सावधान रहो! हम बरदाश्त नहीं कर सकते कि स्कूल की मर्यादा चौपट हो जाये।" उसके बाद लड़की के बाल सहलाकर वह आत्मीयता से आगे बोली, "क्या कुछ गड़बड़ है? तुम्हारा वज़न घटता जा रहा है। क्या तुम्हें श्री च्याङ का कोई पत्र मिला?... मेरा भाई और सियाओ-येन कई बार मुझे हिदायत देते हुए लिख चुके हैं कि मैं तुम्हारा अच्छा ख़याल रखूँ। इसलिए एक नेक लड़की बनो और किसी को भी खुसुर-फुसुर करने का कोई अवसर न दो!"

"क्या आप सचमुच श्री वू पर विश्वास करती हैं बुआ?" ताओ-चिङ ने धैर्यपूर्वक उत्तर की प्रतीक्षा की।

एक सेकेण्ड की हिचकिचाहट के बाद कुमारी वाङ ने अपना सिर हिलाया।

"नहीं, मैं नहीं करती। लेकिन मैं इस विद्यालय के लिए जवाबदेह हूँ, तुम जानती हो। 'कम्युनिस्ट' शब्द ही मुझे घबरा देता है।"

ताओ-चिङ ठठाकर हँस पड़ी। उस वरिष्ठ महिला की पतली उँगलियों को अपनी उँगलियों में जकड़कर उसने स्नेहपूर्वक कहा :

"फ़िक्र न करें बुआ! डरने की कोई बात नहीं। क्वोमिन्ताङ हर देशभक्त को कम्युनिस्ट कहता है। जो कुछ मैंने बच्चों को बताया है वह यही है कि वे अपने देश से प्यार करें और अपनी पढ़ाई में कड़ी मेहनत करें। कैसे कोई चीनी, जिसमें हृदय है, अपने देश से प्यार नहीं कर सकता? सोचिये, बुआ कि चीन किस ख़तरे में है!..."

प्रधानाध्यापिका ने सहमति में सिर हिलाया, उसकी छोटी आँखें आँसुओं से चमक उठीं।

इस तरह भूमिगत गतिविधियाँ जारी रहीं।

एक शाम ग्रीष्मावकाश के कुछ ही पहले चौकीदार ने ताओ-चिङ को बताया कि कोई उससे मिलने आया है। उसका दिल धक से कर उठा। "क्या वह च्याङ हुआ हो सकता है?" उसने मन में सवाल किया।

वह फाटक की ओर झपट पड़ी।

वह यह जानकर निराश हो गयी कि यह तो ताई यू था। फिर भी उसने अपना हाथ बढ़ा दिया।

"युगों से तुमको नहीं देखा है।" ताई यू ने उसका हाथ अपने हाथ में पकड़ते हुए भावप्रवण होकर कहा। "मैं इधर से होकर गुज़र रहा था, अतः अवसर का लाभ उठाकर यहाँ आ गया।"

"निश्चय ही लम्बा अरसा गुज़र गया। अन्दर आओ न!" ताओ-चिङ ने उसे अपना कमरा दिखाया, और उसके साथ एक पुराने दोस्त जैसा व्यवहार करती हुई आगे बोली :

"देखो तो, च्याङ हुआ ने तब से मुझे कोई पत्र ही नहीं लिखा, और हमारे पास अन्य कोई नहीं है, जिसकी ओर मार्गदर्शन के लिए रुख कर सकूँ। तुम्हारा आगमन सचमुच समयोचित है।" वह उस पर असन्दिग्ध रूप से विश्वास करती थी।

"क्या कोई शहर से तुमसे मिलने नहीं आया?" ताई यू ने सिगरेट का एक कश लेते हुए पूछा।

"कोई भी नहीं!" ताओ-चिङ ने मुँह फुला लिया, वह फिर एक क्रान्तिकारी की उपस्थिति में बच्चों जैसा महसूस कर रही थी। "यहाँ पर हम सिर्फ़ दो हैं। दूसरा श्री चाओ है – तरुण, उत्साही, और एक बहुत बढ़िया आदमी। हम लोगों ने तमाम अध्यापकों और छात्रों को अपने इर्द-गिर्द एकजुट कर लिया है, और थोड़ा-सा प्रचारात्मक और शैक्षणिक कार्य किया है। स्टाफ़ और छात्रों में से क़रीब एक दर्ज़न प्रगतिशील हैं और हमारे नज़दीकी हैं..."

"वे कौन हैं? उनके नाम क्या हैं?" ताई यू ने बीच ही में पूछ लिया। "वे किस तरह का संकेत देते हैं?"

"क्या यह सबकुछ देर बाद नहीं पूछा जा सकता?" ताओ-चिङ की शंकाएँ उभरने लगीं, और च्याङ हुआ की सलाह का स्मरण करती हुई, उसने नाम नहीं बताया।

"बेशक!" अपनी चाय पीते हुए, ताई यू ने उसे टोकने के लिए अपना हाथ लहराया। "मुझे भविष्य के लिए अपनी योजनाएँ बताओ – क्या तुम महज़ प्रचारात्मक कार्य करने से सन्तुष्ट हो?"

"च्याङ हुआ ने कहा था कि हमें अधीर नहीं होना चाहिए कि अपनी सामर्थ्य बढ़ाने में समय लगेगा...और कि एक अकेली चिनगारी जंगल में आग लगा सकती है।"

"लेकिन वह एक ग़लत, दक्षिणपन्थी दृष्टिकोण है!" ताई यू के तीक्ष्ण व्यंग्यात्मक लहज़े ने उसे स्तब्ध कर दिया। वह चीनी क्रान्ति पर एक लम्बा-चौड़ा भाषण सुनती हुई, यह बता सकने में असमर्थ थी कि वह सही था या ग़लत। लेकिन उसके अन्तिम आदेश में कोई त्रुटि नज़र नहीं आयी : "उस कॉमरेड चाओ को बुलाओ। मैं तुम दोनों के साथ विचार-विमर्श करूँगा कि क्या किया जाये।"

जब चाओ यू-चिङ आ चुका और ताओ-चिङ ने लैम्प जला दिया, तो वे डेस्क को घेरकर बैठ गये, और ताई यू ने धैर्यपूर्वक कुछ निर्देश देना चालू किया। नौ से ऊपर हो गये, जब वह रुख़सत हुआ, और तुरन्त बाक़ी दोनों एक गर्मागर्म बहस में उलझ गये। तमतमाये चेहरे से ताओ-चिङ ने ऐलानिया स्वर में कहा :

"अगर हम उसके बताये रास्ते पर चले, तो मेरी बात पर ग़ौर करना, हम निश्चय ही मुसीबत में फँस जायेंगे। क्या तुम नहीं देखते कि हमने प्रधानाध्यापिका और स्टाफ़ के कुछ लोगों को अपने पक्ष में कर लिया है, हमने वू यू-तिएन को

किनारे कर दिया है, और हमने यहाँ एक आधार खड़ा कर लिया है, और इस आधार पर अपना काम आगे बढ़ा सकते हैं? अगर हम प्रधानाध्यापिका को उखाड़ फेंक दें, तो हम कहाँ रहेंगे?"

"तुम ग़लती पर हो!" चाओ एकदम उत्तेजित-सा उसको एकटक देखता रहा। "और इतनी उत्तेजित मत हो, ताओ-चिङ! हमें नेतृत्व के आदेशों के पालन में कायरता नहीं बरतनी चाहिए। हमें अवश्य आदेश पालन करना चाहिए भले ही यह हमें मुसीबत में डाल दे। और तो और,..." उसने उसके तमतमाये, खिंचे हुए चेहरे को देखा और हल्के-से डेस्क को ठोका, "क्या यह सामान्य जानकारी की बात नहीं है कि वाङ येन-वेन शिक्षा-आयुक्त की चापलूसी करती है? कि वह छात्रों के खाने की रक़म को वू यू-तिएन से साँठ-गाँठ करके व्यापार में लगा रही है? कि वू की सलाह पर वह अध्यापकों और छात्रों की जासूसी करती है? क्या तुमने हर आदमी को शिकायत करते नहीं सुना है? कॉमरेड ताई सही था जब उसने कहा था : वे क्वोमिन्ताङ के चाटुकार हैं। यहाँ के लोगों को संघर्ष का कोई अनुभव नहीं है...हमें इस अवसर का लाभ उनको संघर्ष की आग में दीक्षित करने के लिए उठाना चाहिए।"

अपनी कोहनियाँ डेस्क पर टिकाये, अपना सिर अपने हाथों में ढँके, ताओ-चिङ एक क्षण तक ख़ामोश बनी रही।

"तुम्हारी इसमें क्या राय है? अगर तुम्हें कोई एतराज़ हो, तो कहो!" चाओ का स्वर दोस्ताना और आग्रहपूर्ण था।

"मैं क्या कह सकती हूँ? वू यू-तिएन मुर्दाबाद, प्रधानाध्यापिका मुर्दाबाद..." ताओ-चिङ एकदम घबरायी हुई दिखी। "चूँकि ये आदेश हैं, इसलिए हमें इनका पालन करना ही है। लेकिन वास्तव में मैं समझ नहीं पा रही – क्या वह प्रधानाध्यापिका एक दुश्मन मानी जा सकती है?"

"क्या लक्ष्य गौण होना चाहिए और व्यक्तिगत सम्बन्ध प्रधान?" चाओ अचानक तीखेपन से उस पर झल्ला उठा। "तुम हमेशा ही उसके साथ बहुत मित्रवत रही हो। 'बुआ' यह बात और 'बुआ' वह बात ही चलती रही है... मुझे यह कभी अच्छा नहीं लगता था। फिर अब तो यह सबकुछ ख़त्म है। चूँकि हमें नेतृत्व की ओर से निर्देश मिल चुके हैं, अतः हमें संकल्पबद्ध होकर उन्हें लागू करना ही करना है... क्रान्ति को एक तूफ़ान की तरह, गर्जन-तर्जन और वज्रपात की तरह, सबकुछ को, जो इसके सामने पड़े, बहा ले जाने वाला होना चाहिए, जैसाकि तमाम जगहों पर हुआ है..." यह अहसास करके कि वह बेहद गर्म हो उठा था, वह अब अपेक्षतः मन्द स्वर में आगे बोला, "याद रखो कॉमरेड, मैंने पाओ तिङ के द्वितीय नॉर्मल स्कूल में छात्र-आन्दोलन में भाग लिया था, मैं जानता हूँ कि मैं क्या कह रहा हूँ। अब और हिचकिचाहट मत रखो। आओ विचार-विमर्श करें कि आगे की कार्रवाई कैसे करें।"

वाङ येन-वेन की अपने प्रति कुछ अध्यापकों से सहानुभूति प्राप्त करने के भौंड़े तरीक़ों के प्रति नफ़रत, और उसकी कुछ ख़ामियों के प्रति जानकारी ने चाओ को उसे और वू यू-तिएन दोनों को उखाड़ फेंकने के लिए संकल्पबद्ध कर दिया। ताओ-चिङ अपनी आस्था के प्रति साहस के अभाव में एक उलझनपूर्ण दशा में पड़कर उसकी योजना से सहमत हो गयी।

भोर में, तीन दिन बाद, जबकि निचली कक्षाओं के छात्र अपनी पीठों पर अपने बस्ते लादे, स्कूल की ओर उछलते-कूदते आ रहे थे, पाँचवीं और छठी कक्षाओं में कोई असाधारण चीज़ घटित होने वाली थी। खेल के मैदान में लड़के और लड़कियाँ, दो-दो और तीन-तीन के झुण्डों में षड्यन्त्रकारी फुसफुसाहटों में बतिया रहे थे। जब पढ़ाई की घण्टी बजी, तो उनमें से कोई भी कक्षाओं में नहीं गया। यहाँ तक कि तब भी नहीं, जब कुछ समय बाद कक्षाएँ शुरू होने की घण्टी बजी।

वू यू-तिएन, जो छठवीं कक्षा का शिक्षक था, अपनी कक्षा से बाहर रुक गया, उसकी गुच्छेदार भौंहें क्रोध से सिकुड़ी हुई थीं। वह मुड़ा और फनफनाते हुए प्रधानाध्यापिका के दफ़्तर की ओर चल दिया। चाओ यू-चिङ जो पाँचवीं कक्षा का शिक्षक था, सामने दिखायी दिया और फिर चला गया।

अभी वू और प्रधानाध्यापिका फुसफुसाकर बतिया ही रहे थे कि नारे लगाते छात्रों की एक भीड़ आ पहुँची। प्रधानाध्यापिका का दुबला-पतला चेहरा मोम की तरह फक पड़ गया, और उसकी टाँगें काँपने लगीं।

वू सूएह-चाङ, ली-कुओ-हुआ और तीन अन्य छात्र-प्रतिनिधि अन्दर घुस आये। अपना ध्यान प्रधानाध्यापिका और वू पर केन्द्रित करते हुए, उन्होंने सवाल किया :

"कुमारी वाङ, आप छात्रावास में रहने वाले छात्रों के साथ इतना बुरा सलूक क्यों करती हैं? हमारे भोजन के भुगतान से आपने कितनी रक़म हड़पी है?"

"वू यू-तिएन, आप क्वोमिन्ताङ के पिट्ठू हैं। आप हमारी जासूसी क्यों करते है? आप उन देशभक्त छात्रों को क्यों तंग करते हैं जो जापान का प्रतिरोध करना चाहते हैं?"

अगले ही क्षण वह परिसर क्रुद्ध चीख़ों से गरज उठा :

"वू यू तिएन मुर्दाबाद...वाङ येन-वेन मुर्दाबाद!"

तमतमाये चेहरे लिये बच्चे अपनी बाँहें लहराते हुए उन्मत्त उत्तेजना में उछल-कूद करने लगे थे।

"वापस जाओ! वापस जाओ!" वू चिल्लाया, इसके साथ ही एक ख़ामोशी छा गयी। वह दरवाज़े पर खड़ा था, उसके पीले चेहरे पर तटस्थता का भाव था, वह पचास या साठ छात्रों के समक्ष खड़ा था।

"अपनी कक्षाओं में वापस जाओ। क्या तुम लोगों का दिमाग़ फिर गया है जो तुम लोग इस तरह से अपनेआप को कम्युनिस्टों द्वारा इस्तेमाल किये जाने दे रहे हो? अगर तुम लोग सचमुच मुसीबत खड़ी कर दोगे, तो तुम्हें इसके लिए पछताना पड़ेगा।"

"बालको और बालिकाओ!..." प्रधानाध्यापिका ने काँपते स्वर में चिल्लाकर कहा। उसके होंठ पीले थे और उसकी छोटी आँखें आँसुओं से झिलमिल थीं। "इतने मूर्ख मत बनो! मत बनो!...अपनी कक्षाओं में वापस जाओ।" आँसू उसके गालों पर से होकर ढुलक पड़े।

वू की धमकियाँ से भय खाकर और प्रधानाध्यापिका के आँसुओं से द्रवित होकर कुछ छात्र पूरी तरह से गड़बड़ाकर अपनी कक्षाओं में चले गये। बाक़ी तीस अक्खड़ छात्र वू सूएह-चाङ और निर्भीक आदर्शवादी ली कुओ-हुआ के नेतृत्व में, प्रधानाध्यापिका के दफ़्तर के सामने चीख़ते और उछलते-कूदते रहे। अब तक ताओ-चिङ ने प्रगतिशील छात्रों को हमेशा ही नियन्त्रण में रखा था, कई बार चेतावनी दी थी कि वे अपनेआप को खुल्लमखुल्ला ज़ाहिर न करें। अब चाओ यू-चिङ के उकसावे में आकर बिना किसी भय के ये अनुभवहीन बच्चे, जिनके नायक क्रान्तिकारी आदर्शों से भरे हुए थे, उनके नेतृत्व में अन्धाधुन्ध अपना प्रदर्शन करते आगे आ गये।

"क्वोमिन्ताङ का चाटुकार, वू यू-तिएन मुर्दाबाद!"

"स्वार्थी वाङ येन-वेन मुर्दाबाद!"

"समझौतापरस्त कायर मुर्दाबाद!"

दो समूहों में बँटकर वे बारी-बारी से गला फाड़-फाड़कर चिल्लाते रहे। उन्होंने अपने उन साथियों की भर्त्सना की, जो कक्षाओं में वापस चले गये थे।

वातावरण लगातार तनावपूर्ण होता गया। वह छोटा-सा स्कूल, जहाँ हमेशा शान्ति का राज रहता था, अचानक एक रणस्थल में परिवर्तित हो गया। दो ऊपरी कक्षाओं में वास्तव में हड़ताल थी, और धनी परिवारों के तथा कुछ और डरपोक बच्चे चोरी-चोरी घर निकल गये। निचली कक्षाएँ जब घण्टी बजी तो यथावत अपने-अपने कमरों में लग गयीं; लेकिन उनके अध्यापकों की आँखें स्कूल परिसर की ओर भटकती रहीं। वे आपस में दुखी होकर कह रहे थे, "इसका मतलब है भारी मुसीबत..."

परिसर में सयाने लड़के और लड़कियाँ अपने स्वरोत्कर्ष में चीख़ते जा रहे थे, वे इतने तमतमाये और ऊधम मचाये हुए थे, मानो वे किसी गली में फेरी लगा रहे थे। कुछ उनके ठीक पार्श्व में निरर्थक चीख़ रहे थे, कुछ को तो ये मालूम भी नहीं था कि उनके प्रतिद्वन्द्वी कौन थे, लेकिन वे भी बाक़ी के साथ चीख़ते-चिल्लाते इधर उधर उछल कूद रहे थे।

——:o:——

अध्याय 5

प्रधानाध्यापिका और वू एकदम ख़ामोश, मानो एक युग तक ख़ामोश बैठे रहे। उसके बाद छात्रों की क़तारों में एक ख़ाली जगह देखकर, स्थूलकाय वू घेरेबन्दी को चीरते हुए निकल गया और स्कूल से बाहर भाग गया।

"उसका पीछा करो! पकड़ लो गीदड़ को।"

"जल्दी करो। आओ चलें और शिक्षा ब्यूरो में याचिका दायर करें।"

ली कुओ-हुआ की सलाह तुरन्त मान ली गयी, और तमाम लड़के और लड़कियाँ वू के पीछे-पीछे दौड़ पड़े।

"क्या तुम नहीं चल रहे हो, पितेह-जुई? आओ चलो। हम शिक्षा ब्यूरो जा रहे हैं।"

ली कुओ-हुआ और एक बड़े-बड़े चेचक के दाग़ वाले ली चाओ-आओ नामक लड़के ने पितेह-जुई की बाँह पकड़ी और उसे अपने साथ घसीट ले गये।

"मैं नहीं ज-जाऊँगा..." वह नाक सुड़कते हुए हकलाया। "क्या फ़ायदा? मैं इसके बजाय यह समय झाड़ू-बरदारी में ख़र्च करूँगा।" और सिर लटकाये वह फिर स्कूल में लौट आया।

"छिः। वह हार मान गया।" ली चाओ-आओ उसके पीछे गुस्से से भरकर चिल्लाया, और फिर बाक़ी का साथ पकड़ने के लिए दौड़ पड़ा।

जैसे ही वू और उसका पीछा करने वालों ने कूच किया, ताओ-चिङ कुछ दूसरे लड़कों को लेकर शौचालयों और भोजनकक्ष समेत, पूरे स्कूल में लाल और हरे पोस्टर चिपकाने के लिए चल दी। कुछ पोस्टरों पर इस तरह के नारे थे : "प्रधानाध्यापिका मुर्दाबाद!" और "वू यू-तिएन मुर्दाबाद!" दूसरे, जो और अधिक ध्यानाकर्षण और आश्चर्य पैदा करते थे, इस तरह के थे : चीनी सोवियत सरकार का समर्थन करो!" या "चीनी कम्युनिस्ट पार्टी का समर्थन करो।" लड़के और लड़कियाँ उन्हें पढ़ने के लिए एकत्र हो गये। ख़ुशी, उत्सुकता या भय से नज़रों का आदान-प्रदान करने लगे।

"वह देखिये। कम्युनिस्ट पार्टी..."

कुछ अध्यापकों ने घबराहट से उबरते हुए, अपने छात्रों को अपनी कक्षाओं में लौट जाने के आदेश दिये; बाक़ी अचम्भा और आह्लाद में पोस्टरों को एकटक देखने लगे।

ताओ-चिङ तीसरी कक्षा की शिक्षिका थी। शुरू-शुरू में वह भी निचली कक्षाओं के अन्य अध्यापकों की भाँति अपनी कक्षा में ही रुक गयी थी, जब-तब बाहर की ओर नज़र डाल लेती, और वहाँ जो कुछ हो रहा था, उस सबको सुन लेने

की गरज से अपने कानों पर ज़ोर दे रही थी। जब प्रदर्शन चालू हो जाने के बाद दूसरे अध्यापकों ने अपनी कक्षाएँ छोड़ दीं, तो वह चाओ-यू-चिङ को ढूँढ़ने बाहर निकली। लेकिन वह उग्र, उतावला तरुण कहीं दिखायी नहीं दिया। वह याचिका दायर करने वालों की मदद में दौड़ गया था।

"अपने इर्द-गिर्द लोगों से मेलजोल करने और अपनेआप को अलग-थलग न रखने की भरसक कोशिश करो। हमदर्दी को अपने पक्ष में खींच लेने का हर उपाय की कोशिश करो..." जिस दिन वह ज़ख़्मी हुआ था, च्याङ हुआ न उससे यह सिद्धान्त क्वोमिन्ताङ द्वारा नियन्त्रित क्षेत्रों में भूमिगत काम के सिलसिले में बताये थे। याचिका का क्या नतीजा निकलेगा? अब क्या होगा, जबकि चाओ यू-चिङ और वह अपनेआप को सभी प्रगतिशील छात्रों समेत खुल्लमखुल्ला ज़ाहिर कर चुके थे? आख़िरी घण्टी बजी, लड़के और लड़कियाँ घर चले गये, और ताओ-चिङ खिन्न-मन अपने कमरे में वापस लौटी। वह अभी अपने सन्तप्त दिमाग़ को संयत करने के लिए, और आगे की कावा पर सोचने के लिए बैठी ही थी कि प्रधानाध्यापिका अन्दर आयी, उसके बाल बिखरे हुए थे और उसकी आँखें सूजी हुई और लाल थीं। उसने कुछ सेकेण्ड के लिए सीधे ताओ-चिङ की ओर देखा, और उसके बाद हठधर्मितापूर्वक बैठ गयी। सिर नीचा किये, उसने पूछा :

"कुमारी लिन, क्या तुममें कोई विवेक नहीं है? क्या मैंने इस पूरे समय में तुम्हारे साथ बुरा बरताव किया है?"

"आपका आशय क्या है बुआ?" उसका आगमन ताओ-चिङ के लिए कोई आश्चर्यजनक नहीं था। यद्यपि उसने पूरी तरह खुलकर शिरकत नहीं की थी, फिर भी प्रधानाध्यापिका यह निष्कर्ष निकालने को बाध्य थी कि आज के प्रदर्शन के पीछे इसी का हाथ था।

"मुझे बहुत कुछ कहना है।" वाङ येन-वेन ने अपना सिर उठाया। उसका चेहरा मुरझाई था। "तुम मेरे पास मेरे भाई की संस्तुति पर आयी। मुझे शुरू से ही बताया गया था कि तुम सन्देह के घेरे में हो; लेकिन मैं यक़ीन करने से इन्कार करती रही। यह मेरे लिए एकदम समझ से परे था कि एक नौजवान लड़की किसी पार्टी में शामिल होगी, या ऐसी ख़तरनाक, आपराधिक गतिविधियों में भाग लेती होगी। बाद में श्री वू ने मुझे एक से अधिक बार चेतावनी दी कि तुम और चाओ यू-चिङ छात्रों को मीटिंगों के लिए एकत्र कर रहे थे। ऐसी मीटिंगों के लिए जिनसे कम्युनिस्ट विचारों का प्रचार हो। तब भी मैं इसे मानने से इन्कार करती रही। मैं तुम्हारे लिए बड़े लम्बे वक्तव्य देती रही।" उसने निःश्वास छोड़ा, और एक क्षण के लिए निराश हो गयी। उसके बाद उसका चेहरा कठोर हो गया। "निश्चय ही किसी आदमी के चेहरे से उसके हृदय के बारे में निर्णय करना असम्भव है। मैंने कभी कल्पना नहीं की थी कि तुम दोनों मिलकर मेरे छात्रों को मेरे और श्री वू के ख़िलाफ़

भड़का दोगे, कि मेरे स्कूल की दीवारों पर कम्युनिस्ट नारे चिपकाये जायेंगे... अच्छा, कुमारी लिन, अब और क्या है कहने को? तथ्य सबकी आँखों के सामने एकदम खुल चुके हैं। जो उचित समझो, करो। इन्साफ़ तो होगा ही।"

वह उठ खड़ी हुई इसके पहले कि ताओ-चिङ अपना औचित्य सिद्ध करने का कोई प्रयास करती, वह क्रुद्ध होकर बाहर निकल गयी। लम्बे समय तक यह लड़की वहीं हक्की-बक्की बैठी रही।

उस दिन दोपहर बाद कुछ ही छात्र स्कूल में वापस लौटे। उनके माँ-बाप ने इस मुसीबत को सुनकर, उनको घर पर ही रोक लिया था और इसलिए कक्षाएँ निलम्बित कर देनी पड़ीं। ताओ-चिङ बहुत चिन्तित थी। सौभाग्य से सिऊ-यिङ और तीन अन्य, जो "सम्पर्क कार्य" के लिए ज़िम्मेदार थे, समय-समय पर रिपोर्ट देने आ जाते थे कि बाहर क्या हो रहा था।

"श्री चाओ और हमारे सहपाठी कुछ समय तक शिक्षा-ब्यूरो से बाहर खड़े होकर नारेबाज़ी करते हुए प्रधानाध्यापिका और श्री वू की बरख़ास्तगी की माँग करते रहे, उसके बाद वे प्रमण्डलीय सरकार के पास गये और वहाँ भी वे नारेबाज़ी कर रहे हैं।"

"श्री वू क्वोमिन्ताङ मुख्यालय गये हैं। कुमारी वाङ शिक्षा ब्यूरो में उपस्थित हैं।"

ताओ-चिङ बुरी तरह विक्षुब्ध थी, और समय पहाड़ जैसा प्रतीत हो रहा था।

जब चाओ और छात्र तीन बजे तक वापस नहीं आये, तो वह अब और निष्क्रिय बनी बैठी न रह सकी और एक दर्ज़न से अधिक लड़के और लड़कियों के साथ प्रमण्डलीय सरकार के दफ़्तर की ओर चल दी। धूल भरी सड़क से धूल के बादल उठने लगे, और गरमी की धूप निर्मम प्रहार करने लगी, वे हाँफते हुए, तमतमाये चेहरों के साथ दौड़ते हुए गये। अचानक उन्होंने चाओ यू-चिङ और उसके दल को निकट आते देखा। दोनों पक्ष उल्लासभरी चीख़ों में फूट पड़े।

"तुम लौट आये! तुम लौट आये!"

"हम जीत गये! हम जीत गये!"

ख़ुशी से नाचते हुए ये नौनिहाल एक-दूसरे की गरदनों पर लगभग गिर पड़े, जबकि दोनों शिक्षक-शिक्षिका ने कसकर हाथ मिलाया। चाओ, जिसका कृशकाय, धूल भरा चेहरा धूप से झँवाँ गया था, उत्तेजित होकर चिल्ला उठा :

"ताओ-चिङ हमारे संघर्ष का अन्त विजय में हुआ। पहले तो शिक्षा-ब्यूरो ने हमारी परवाह ही नहीं की। प्रमण्डलीय सरकार ने भी हमारी उपेक्षा कर दी। लेकिन हम नारेबाज़ी करते रहे और सरकारी दफ़्तर को तोड़-फोड़ देने की धमकी देते रहे, अन्ततः उन्हें अन्दर प्रवेश करने देना पड़ा। ज़िला सरकार के प्रधान और शिक्षा-आयुक्त दोनों ही हमसे मिलने बाहर आये। उन्होंने वाङ येन-वेन और वू यू-तिएन

को बरख़ास्त कर देने का वादा किया है।" ताओ-चिङ के कन्धे पर थपथपाते हुए चाओ ने एक मुस्कान के साथ बात ख़त्म की, "अब, इसके बारे में क्या राय है?" इससे उसका आशय था, "अन्ततः मैं सही साबित हुआ।"

ताओ-चिङ ने भी प्रसन्नता महसूस की। उनकी विजय से कम, बल्कि उनकी सुरक्षित वापसी से अधिक। बहरहाल, इसको प्रकट न करके,उसने दो छात्रों के हाथ मरोड़े और हँसी के साथ चीख़ी :

"मैं बहुत ख़ुश हूँ। आख़िर तुम लौटे आये!"

उस रात बारिश हुई, और ताओ-चिङ घटनाओं के इस अचानक मोड़ ले लेने से बौखलायी हुई, अनिश्चय की स्थिति में थी कि इसका अंजाम क्या होगा; इसके चलते वह सो न सकी। वह चाओ के आसान आशावाद में भागीदार नहीं बनी, और अपनेआप में भी उसका यक़ीन न था। उसके विचार संघर्ष के महारथी व्यक्तियों, जैसे च्याङ हुआ और लू चिआ-चुआन की ओर मुड़ते रहे। एक तन्द्रिल मुद्रा में, अपनी अन्तर्दृष्टि में उसने उनके चेहरों को देखा और वे उससे कहते प्रतीत हुए, "स्थिरचित बनी रहो ताओ-चिङ! अपना विवेक मत खोना।..."

वहाँ, वास्तव में एक स्वर उसे पुकार रहा था। वह चौंक कर चैतन्य हुई। यह कोई सपना न था। कोई खिड़की पर थपथपा रहा था।

"कुमारी लिन! कुमारी लिन!" एक डरी-डरी-सी, बमुश्किल सुनी जा सकने वाली पतली आवाज़ आ रही थी।

ताओ-चिङ उछल पड़ी और दरवाज़ा खोल दिया। बाहर घुप अँधेरा था और मूसलाधार बारिश हो रही थी। पितेह-जुई दरवाज़े के पास खड़ा भीगने से तरबतर और ठण्ड से काँप रहा था। उसने उसकी बाँह पकड़ ली, और हाँफते हुए बोला :

"कुमारी लिन, कुछ गड़बड़ हो गयी है!" वह दम मारने के लिए रुका, वह इतना घबराया हुआ था कि बोल नहीं पा रहा था।

ताओ-चिङ का दिल धक से हो गया। उसको शान्त करते हुए वह धीरे से बोली, "इसे सहज ढंग से लो, तेह-जुई। क्या हुआ है?"

"कुमारी...कुमारी लिन, मेरे पिता...पिता ने मुझे यहाँ आपको बताने के लिए भेजा है...आप संकट में हैं!"

"तुम कहना क्या चाहते हो? कैसा संकट?" ज़रूर ही कोई गम्भीर बात होगी जिसके नाते यह बहती हुई नाक वाला बच्चा इतनी रात गये और इस मूसलाधार बारिश में स्कूल तक आया था।

"आप चली जायें, कुमारी लिन! एकदम अभी! वे आपको और श्री चाओ को गिरफ़्तार करने आ रहे हैं!"

"क्या?..." ताओ-चिङ उस लड़के को कमरे में खींच ले गयी।

"मेरे पिता ने इसे तब सुना जब वह प्रमण्डलीय सरकार के दफ़्तर में चाय दे रहे थे। उन्होंने आज शाम एक मीटिंग की थी, उसमें प्रमण्डलीय प्रधान और क्वोमिन्ताङ मुख्यालय के आदमी शामिल थे।" पितेह-जूई ने उदासी से भरकर ताओ-चिङ को एकटक देखा। "मेरे पिता ने उनको कहते सुना। आज रात बारह बजे वे आपको और श्री चाओ को गिरफ़्तार करने आ रहे हैं... आपको ज़रूर भाग जाना चाहिए...जल्दी!"

ताओ-चिङ ने अपनी घड़ी पर नज़र डाली; ग्यारह बजने वाले थे। पितेह-जूई के कन्धे को थपथपाते हुए उसने कहा। "तुम एक अच्छे लड़के हो। शुक्रिया! मेरी ओर से तुम्हारे पिता को भी शुक्रिया। बारिश अभी भी पहले की तरह घनघोर हो रही है, लेकिन बेहतर होगा कि तुम घर दौड़ जाओ। तनिक ठहरो। क्या कोई और भी गिरफ़्तार होने जा रहा है?"

"नहीं, और कोई नहीं। जल्दी करिये कुमारी लिन, और श्री चाओ को बता दीजिये – जल्दी! और जितना तेज़ भाग सकें, भागें!"

उसके बाद पितेह-जूई चला गया। ताओ-चिङ उसकी छोटी आकृति को उस भारी बारिश में तब तक एकटक देखती रही जब तक कि वह नीची दीवार के पीछे ओझल नहीं हो गया। तब वह चाओ यू-चिङ के दरवाज़े पर फुर्ती से दस्तक देने गयी।

उन्होंने जल्दी-जल्दी राय-मशविरा किया। पहले तो यक़ीन न करते हुए चाओ ने जाने में अनिच्छा दिखायी। तब अधीर होकर ताओ-चिङ ने कहा :

"तुम कैसे आश्वस्त हो सकते हो कि तुम सही हो। मैं तुम्हें बताती हूँ कि हम सचमुच संकट में हैं। ठीक है, मगर तुम नहीं जाओगे, तो मै भी नहीं जाऊँगी।"

"चूँकि तुम अन्यथा महसूस करती हो इसलिए आओ चलें।" चाओ ने अपने कोट का बटन बन्द किया।

"लेकिन हम जायेंगे कहाँ? हम लोग इस तरह से अचानक अपना काम तो स्कूल में छोड़ नहीं सकते, और छोटे-छोटे बच्चों का भी तो ख़याल रखना है।"

"तुम ठीक कहते हो। बेशक हम दूर नहीं जा सकते। इसके अतिरिक्त, हमें ज़रूर उन्हें बता देना चाहिए कि हमारे चले जाने के बाद वे क्या करेंगे।" ताओ-चिङ ने इस पर विचार किया। मैं तुम्हें बताती हूँ यू चिङ कि क्या करना है। मैं लिऊ सिऊ-यिङ के घर जाऊँगी। वह वाङ गाँव में रहती है, उसका पिता एक बढ़ई है। उसके ज़रिये हम यहाँ की गतिविधियों से अपना सम्पर्क बनाये रख सकते हैं। और मेरी राय है कि तुम वाङ पि-फु के साथ ठहर जाओ। एक और बात, क्या हमें अपने उन सहकर्मियों को; जो हमारे क़रीब हैं – भाई चिन, भाई वाङ और भाई हो – को चेता देना चाहिए?"

"मैं जानता हूँ कि क्या करना है। हर चीज़ मुझ पर छोड़ दो।" उसकी आँखें

चमक उठीं। "तुम पहले जाओ। मैं जैसे ही इन कामों को निपटा लूँगा, निकल जाऊँगा। कल सुबह मैं तुम्हें सूचित करूँगा, और तब हम विचार करेंगे कि अगला क्या क़दम उठाया जाये।"

"ठीक! लेकिन ध्यान रखो कि तुम्हें चले जाना है। मैं वापस अपने कमरे में कुछ सामान बाँधने जा रही हूँ। दस मिनट में हम साथ ही दीवार के उस पार चले जायें।"

"बेहतर होगा कि हम साथ-साथ न जायें। तुम पहले जाओ, मैं जल्दी ही आ जाऊँगा। मैं पहले इससे होकर गुज़र चुका हूँ। मैं भयभीत नहीं हूँ।"

ताओ-चिङ को और कुछ नहीं कहना था। अपने को भरसक शान्तचित करती हुई, उसने चाओ का हाथ दृढ़तापूर्वक पकड़ लिया और स्थिर भाव से उसको देखा।

"यू-चिङ, बहुत सावधान रहना। शुभकामना और अलविदा!" उसने काँपते स्वर में कहा।

वह नौजवान आरक्त हो उठा, उसकी आँखों में सम्मान का भाव था। अब तक तो उनका एकमात्र सरोकार काम से ही था, लेकिन जुदाई के इस तनावपूर्ण क्षण में अपने प्रति उसके द्वारा अभिव्यक्त इस सहृदयता ने उसे द्रवित कर दिया।

——:o:——

अध्याय 6

उस रात ताओ-चिङ उस घनघोर बारिश में भागकर अपनी छात्रा लिऊ सिऊ-यिङ के घर चली गयी।

च्याङ हुआ की सलाह पर उसने स्कूल में सिर्फ़ क्रान्ति के लिए कार्य नहीं किया था, बल्कि अपनी कुछ छात्राओं के माँ-बाप से दोस्ती भी कर ली थी। इनमें से उसके सबसे क़रीब लिऊ सिऊ-यिङ की माँ थी, जो एक कद्दावर, अधेड़ उम्र की छह बच्चों की माँ थी, और अपनी सारी कठिनाइयों के बावजूद हँसमुख, आशावादी और कड़ी मेहनत करने वाली किसान औरत थी। श्रीमती लिऊ का जीवन के प्रति दृष्टिकोण और उसके भरपूर अनुभव ने ताओ-चिङ की आँखें खोलने में मदद की, शहर में पली छात्रा होने के नाते ताओ-चिङ किसानों के विरुद्ध कुछ-कुछ पूर्वाग्रहग्रस्त थी, यद्यपि वह देहात में रह चुकी थी और बहुत ग्रामीणों को जानती भी थी। किसान उसे कंगाल, ख़ाली दिमाग़ वाले झुण्ड प्रतीत होते, जो असंस्कृत और अपने ही स्वार्थ के दायरे में सिमटे हुए थे, लेकिन सिऊ-यिङ की माँ के साथ उसकी दोस्ती ने उसके नज़रिये को बदल डाला। यह बढ़ई की औरत खेती-बाड़ी और उन तमाम लोगों की बदनसीबी के बारे में हर चीज़ जानती थी जो खेतों में कड़ी मेहनत करते और पसीना बहाते थे। उसके पास मजे़दार क़िस्सों का भण्डार था, जिनको उसके पति ने तब संग्रहीत किया था, जब वह विभिन्न गाँवों

में जाया करता था। उसकी भी जीवन की, देहात में कड़वे वर्ग-संघर्ष की, और उन असंख्य तौर-तरीक़ों की, एक सही समझदारी थी कि कैसे निर्दयी ज़मींदार और सूदख़ोर महाजन किसानों को लूटते और कंगाल बनाते थे। ताओ-चिङ ने इस साधारण मेहनतकश महिला से सीखा कि किसान किसी भी तरह से उतने घमण्डी और पिछड़े हुए नहीं थे जितना कि वह मान बैठी थी, बल्कि वे तो सिर्फ़ अनवरत कंगाली से पीस डाले गये थे। अब इस विश्वास के साथ कि मित्रता के नाते श्रीमती लिऊ उसकी मदद करेंगी, ताओ-चिङ भागकर उसके घर चली गयी थी। उस समर्थ प्रतिभासम्पन्न महिला ने उसका ख़ुशी-ख़ुशी स्वागत किया।

लिऊ का अहाता ख़ूब ठीक-ठाक बना रहता था। कद्दू-लौकी आदि सब्ज़ियाँ और सेमें झमड़े पर चढ़ायी गयी थीं; और उनकी हरी-हरी पत्तियाँ गर्म धूप की रोशनी में शान्ति का वातावरण पैदा करती थीं। उत्तर रुख वाला कमरा तीन में विभक्त कर दिया गया था, और इन हिस्सों में से एक रसोईघर था जहाँ से धुआँ उठ रहा था। यह लगभग दोपहर के भोजन का समय था, और श्रीमती लिऊ ताओ-चिङ से बात करती हुई, अँगीठी के पास बैठी हुई थी।

"फ़िक्र मत करो, बिटिया!" वह पुनः इत्मीनान दिलाते हुए मुस्कुरायी। "बस यहीं कुछ दिन ठहरो और देखो कि हालात कैसे गुज़रते हैं। हम देहाती लोग एक कहावत कहते हैं, 'कोई ऐसी नदी नहीं है जिसे पार न किया जा सके।'"

"लेकिन कैसे मैं यहाँ निठल्ली पड़ी रह सकती हूँ बहन, जबकि स्कूल पर..." वह यकायक रुक गयी, क्योंकि सिऊ-यिङ अन्दर आयी।

उस सुबह तड़के ही सिऊ-यिङ यह देखने स्कूल चली गयी थी कि हालात कैसे थे। अब अपनी आँखों में आँसू लिये और अपना सिर लटकाये, उसने ताओ-चिङ से कहा :

"श्री चाओ गिरफ़्तार हो गये हैं।"

"सिऊ-यिङ! मुझे बताओ यह कैसे हुआ।" अब की बार ताओ-चिङ ने संकट की घड़ी में पहले की तरह अपना विवेक नहीं खोया। "आगे बताओ!"

"पिछली रात सार्वजनिक सुरक्षा ब्यूरो और सुरक्षा दल के दर्ज़नों आदमियों ने स्कूल को घेर लिया। श्री चाओ तब भी वहीं थे, वहीं किसी काम में व्यस्त थे, अतः पकड़ लिये गये।" सिऊ-यिङ के होंठ काँप गये और उसने अपने आँसू पोंछे।

"और दूसरे लड़कों और लड़कियों का क्या हाल है? उनमें से कोई पकड़ा गया?"

"हाँ," लड़की ने सुबककर कहा, "ली कुआ-हुआ और वू सूएह-चाङ... जैसे ही हम आज सुबह स्कूल पहुँचे, हम सभी को, जिन्होंने कल की याचिका वाली कार्रवाई में जो कुछ भी किया था, प्रधानाध्यापिका और श्री वू ज़बरदस्ती क्वोमिन्ताङ मुख्यालय पर एक भाषण सुनवाने ले गये। एक कृशकाय सरकारी अहलकार ने, जो

एक बन्दर की भाँति था, हमको चेतावनी दी कि अगर हम और कोई वारदात करेंगे तो सबको शूट कर दिया जायेगा...उन्होंने आपको श्री चाओ को भी शूट कर देने की धमकी दी।"

"मत रोओ, सिऊ-यिङ!" ताओ-चिङ ने झमड़े पर हरी सब्ज़ियों की ओर देखते हुए कहा। "वे सब ठीक-ठाक रहेंगे। क्या और भी कोई ख़बर है?"

"नहीं...बस इतनी ही" सिऊ-यिङ अब भी सुबक रही थी। "लेकिन कुमारी लिन आप क्या करने जा रही हैं? वे आपको गिरफ़्तार करने के लिए तलाश रहे हैं।"

"फ़िक्र मत करो, सिऊ-यिङ वे मुझे पकड़ नहीं सकेंगे... क्या तुम पितेह-जुई, ली चू-यिङ, चू यू-कुआङ, वाङ कुआङ-त्सू और ली चान-आओ को आज रात अपने गाँव के पोखरे पर मिलने के लिए कह दोगी? हम वहाँ बातचीत करेंगे।"

"यह भयानक है, बड़े चेचक के दाग़ वाला ली चान-आओ बिक चुका है!" सिऊ-यिङ ने मुँह फुला लिया और अपनी आँखें पोंछीं। "क्वोमिन्ताङ मुख्यालय में वह उनका पक्ष लेकर हमको उपदेश पिलाता रहा और हमारा मज़ाक़ उड़ाता रहा। मैं उससे नफ़रत करती हूँ।"

ताओ-चिङ पीली पड़ गयी लेकिन उसने लड़की का हाथ पकड़ा। और एक मुस्कुराहट के साथ कहा, "हमारा काम उसके बग़ैर भी चल जायेगा। तब बाक़ी को बता दो।"

उस दिन दोपहर के बाद इसके पहले कि ताओ-चिङ अपने छात्रों से मुलाक़ात कर पाती, एक पचास वर्ष की या उसी के आस-पास की उम्र वाली महिला आयी। वह कपड़ों की कतरनों और बेलबूटेदार जूतों की डिज़ाइनों से भरी एक छोटी टोकरी लिये हुए थी। धूप से झँवायी हुई और दुबली-पतली, वह सुन्दर पर कुछ शरमीली थी। लगता था, उसके श्रीमती लिऊ के साथ अच्छे ताल्लुक़ात थे, क्योंकि उसका मुस्कानपूर्वक अभिवादन करने के बाद, और बिना कोई शब्द बोले, वह भीतरी कमरे में चली गयी। ताओ-चिङ काङ पर बैठकर लिखने में व्यस्त थी। वह एक अजनबी के प्रवेश करने पर हक्की-बक्की हो गयी, लेकिन अभिवादन में उठ खड़ी हुई और उसे बैठने के लिए कहा।

"मेरा बुरा मत मानना बिटिया! तुम लिखो, जो कुछ लिख रही हो। मैं कहीं और बैठ लूँगी," महिला ने एक मुस्कान के साथ मन्द स्वर में कहा। अपनी टोकरी सन्दूकची पर रखकर वह स्वयं स्टूल पर बैठ गयी।

ठीक उसके पीछे ही श्रीमती लिऊ अपने चेहरे पर एक रहस्यमयी मुस्कान लिये हुए आयी।

लड़की कभी इसको तो कभी उसको देखती हुई, परेशान थी कि क्या कहे।

यह बेढब ख़ामोशी आगन्तुका के इस सवाल से टूटी, "तुम जूतों के कुछ नमूने ख़रीदना चाहोगी? ये नये और ख़ूबसूरत हैं।"

ताओ-चिङ ने सिर हिला दिया। "मैं तो बेलबूटेदार जूते पहनती ही नहीं।"

"क्यों नहीं? वे तो एक ख़ूबसूरत लड़की को और भी ख़ूबसूरत बना देते हैं।" महिला ने उसे आँकती हुई नज़रों से देखा, फिर श्रीमती लिऊ की ओर एक मुस्कुराहट के साथ मुड़ गयी। "कितनी प्यारी लड़की है यह, सदा सम्मोहित करने वाली! मैं ऐसी बेटी के वास्ते क्या दूँ!"

ताओ-चिङ उलझनपूर्ण मुद्रा में मुस्कुरायी। काङ के कोर पर बैठी हुई और उसके दयालु चेहरे पर नज़र डालती हुई, उसने शालीनतापूर्वक पूछा, "क्या तुम इसी गाँव की रहने वाली हो, चाची? निश्चय ही तुम्हारी कोई अपनी भी बेटी होगी?"

"नहीं, अब तक एक भी नहीं!" श्रीमती लिऊ ने अपने इस मेहमान की तरफ़ से बताया। "वह बहुत पहले अपना पति खो चुकी है, और अपना इकलौता बेटा भी अभी हाल ही में खो दिया है।" उस दूसरी महिला पर एक निःश्वास के साथ निगाह डालती हुई, वह कमरे से बाहर चली गयी।

ताओ-चिङ बहुत उलझन में थी, कारण कि श्रीमती लिऊ ने उसकी मौजूदगी को गुप्त बनाये रखने का वादा किया था। फिर भी, वह आगन्तुका के साथ बातचीत में शरीक़ हो गयी।

"एकदम अकेला हो जाना कठिन होता है चाची। तुम कैसे ज़िन्दगी चलाती हो?"

"मैं ठीक-ठाक चला लेती हूँ।" उसके शान्त, सुदृढ़ स्वर ने ताओ-चिङ को चकित कर दिया। "तुम जानती हो, मेरे ढेर सारे धर्म-पुत्र और धर्म-पुत्रियाँ हैं। अपनी बाँहों में यह टोकरी लिये मैं गाँवों में फेरी लगाती हूँ और कभी भूखी नहीं रहती। लेकिन तुम कहाँ से आयी हो बिटिया; और यहाँ क्या कर रही हो?"

ताओ-चिङ का दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा, वह सोचने लगी कि कहीं लिऊ के घरवालों ने तो उसका भेद नहीं खोल दिया था।

"मैं अभी-अभी थोड़ी देर के लिए आयी हूँ चाची," उसने उसी की तरह शान्त लहज़े में जवाब दिया। "कल की बारिश समय से हुई थी, हुई थी न? इससे फ़सल को फ़ायदा पहुँचेगा।"

"हाँ," अधेड़ महिला ने निःश्वास छोड़ा। उसकी आँखें ताओ-चिङ पर लगी हुई थीं। "पिछले कुछ वर्ष तो हम सूखा और बाढ़ ज़्यादा ही झेल चुके हैं। इससे भी बदतर तो गृहयुद्ध रहा है, और लुटेरे तो हर जगह एक नियमित प्लेग बन गये हैं। इन दिनों हम जैसे सामान्य लोगों के लिए जीना आसान नहीं हैं। तुम इन इलाक़ों की रहने वाली नहीं हो बिटिया। क्या तुम अध्यापिका हो?"

"हाँ।" ताओ-चिङ ने क्षुब्ध न दिखने की कोशिश की। "मैं सिऊ-यिङ की अध्यापिका हूँ, और उसकी माँ से अपने लिए कुछ सिलाई-कढ़ाई का काम करने को कहने आयी थी। उसने मेहरबानी करके मुझे एक या दो दिन ठहरने के लिए

कहा, और मुझे स्वीकार करके खुशी हुई। क्या तुम इसी गाँव में रहती हो चाची? क्या तुम मुझसे कोई चिट्ठी लिखवाने आयी हो?"

"अरे नहीं।" वह हँस पड़ी। "मैं तुमसे किसी के बारे में पूछने आयी हूँ। क्या तुम किसी श्री च्याङ हुआ को जानती हो?"

ताओ-चिङ ने महसूस किया कि उसका दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा था। कौन थी यह औरत? इन सवालों के पीछे क्या था? लेकिन सिऊ-चीङ, जो अभी-अभी अन्दर आयी थी, मुस्कुरा रही थी। उसकी माँ ने भी एक रहस्यमयी मुस्कान ओढ़ ली थी। यकायक ताओ-चिङ समझ गयी, यह ज़रूर च्याङ हुआ की "मौसी" होगी।

"हाँ, मैं उसे जानती हूँ," उसने शान्त स्वर में कहा। "क्या तुम?"

महिला ने ताओ-चिङ के क़रीब पहुँचने और उसका हाँथ पकड़ने से पहले सिऊ यिङ की ओर देखा। "क्या उसने तुम्हें अपनी मौसी के बारे में नहीं बताया था बच्ची?" उसने एक मुस्कुराहट के साथ पूछा।

"ओह, तो तुम वही हो!" ताओ-चिङ उस महिला की बाँहों में समा गयी। उसके बाद उसने उसके दुबले-पतले, गाँठदार, मज़बूत और गर्मजोशी से भरे हाथों को पकड़ लिया।

"मुझे अफ़सोस है, बच्ची!" उस महिला ने ताओ-चिङ को अब काङ पर अपनी बग़ल में बैठा लिया और सिऊ-चिङ उन्हें अकेले छोड़कर बाहर निकल गयी। "मेरे भानजे ने तुम्हारे बारे में बताया था कि तुम स्कूल में अध्यापिका हो। मैं तुमसे मिलने पहले ही आ गयी होती; लेकिन यहाँ हालात कष्टपूर्ण हो गये हैं, और मुझे दूर ही दूर रहना पड़ा। मैं और जल्दी आने का प्रबन्ध नहीं कर पायी। तब भी, मैं तुम्हारे बारे में सुनती आ रही हूँ।"

अब ताओ-चिङ ने महसूस किया कि क्यों श्रीमती लिऊ इतनी प्रगतिशील थी। उसने ज़रूर चिआ हुआङ की मौसी को वह सब बता दिया होगा जो घटित हुआ था। वह ख़ामोशी और आश्चर्य से सुनती रही। उस अधेड़ महिला ने आगे बताया :

"क्यों, मैं समझती हूँ, तुम स्कूल में बिल्कुल ठीक-ठाक काम कर रही थी। हालात बिगड़ कैसे गये?"

ताओ-चिङ ने फुसफुसाकर जवाब दिया, "एक दिन ताई यू नामक एक पार्टी सदस्य मुझसे मिलने आया और हमें प्रधानाध्यापिका और वू नामक एक अध्यापक पर धावा बोल देने का आदेश दिया। इस तरीक़े से हम खुल्लमखुल्ला ज़ाहिर हो गये और हमारी योजना धराशायी हो गयी।"

"तो कोई तुम्हारे पास पहुँचा था!" उस महिला ने शान्तिपूर्ण कहा, लेकिन व्यग्र दिखायी दी।

ताओ-चिङ भौचक्की थी।

अधेड़ महिला अपने विचारों में खोयी हुई, ख़ामोश बनी रही।

ताओ-चिङ ने अपनी आँखें उसके स्याह, झुर्रीदार, साधारण चेहरे पर टिका कर, यकायक अपनी मन में सोचा, "यह वही है जो च्याङ हुआ के साथ कन्धे से कन्धे मिलाकर संघर्ष करती है।"

"मुझे अफ़सोस है कि मैं पहले नहीं पहुँची, बच्ची," महिला ने अपनी टोकरी उठाते हुए एक मुलायम स्नेहिल स्वर में कहा। "लेकिन अब उस पर खेद प्रकट करने से कोई फ़ायदा नहीं। आओ हम हालात का सामना करें। दुश्मन युद्ध-पथ पर है। तुम्हें ज़रूर छिप जाना चाहिए।"

"मौसी," ताओ-चिङ ने अधीर होते हुए कहा, "मैं दूर जाना नहीं चाहती। मेरे इतने सारे छात्र यहाँ हैं। मैं उन्हें कैसे छोड़ सकती हूँ?"

वह महिला मुस्कुरायी और लड़की के नर्म हाथों को सहलाया। "अच्छे क्रान्तिकारी उतावले नहीं होते बच्ची।" उसने जवाब दिया। "तुम यहाँ छिपी नहीं रह सकती, और मैं तुम्हें शेरों के आगे नहीं फेंके जाने दूँगी। बेशक, अन्त में विजय हमारी ही होगी, लेकिन एक नीची छत के नीचे खड़े होने वाले व्यक्ति को अपना सर ज़रूर नीचा कर लेना चाहिए।"

क्रान्तिकारी ताक़त को संरक्षित करने के लिए अवसर के मुताबिक़ पीछे हटने की आवश्यकता की व्याख्या करने की बजाय, उसने ताओ-चिङ को महज़ यह यक़ीन दिलाने की कोशिश की कि उसके रहने के लिए तिङसिएन अत्यधिक ख़तरनाक जगह थी।

"लेकिन, मौसी, मेरे जाने का कोई ठौर नहीं है। क्या तुम मेरे लिए कोई जगह तलाश कर दोगी?"

"हाँ, बच्ची," उस मृदुभाषिणी महिला ने कुछ सोचने के बाद कहा, "तुम मेरे साथ चल सकती हो। मैं तुम्हारे लिए कुछ इन्तज़ाम कर दूँगी।"

"ओह, बढ़िया है।" ताओ-चिङ मुस्कुरायी। कुछ चिन्तित-सी वह आगे बोली, "कृपया मेरे छात्रों और चाओ-यू-चिङ को मत भूलो...वह एक बढ़िया नौजवान है, और वे उसे भी पकड़ ले गये हैं।"

अधेड़ महिला ने स्वीकृति में सिर हिलाया और अपनी थकी आँखों को और खोल दिया, उनमें एक तरुणाई भरी चमक थी।

"व्यथित मत हो बच्ची। जिस दिन हमारी विजय होगी, हम इन मरदूदों से हिसाब-किताब करेंगे... मेरा बेटा ली युङ-कुयाङ... क्या तुमने उसके बारे में सुना? ... उसने कुछ ही समय पहले अपनी जान गँवा दी। मेरा अपना माँस और रक्त। इससे एक माँ का हृदय विदीर्ण हो जाता है। परन्तु यही तो क्रान्ति है..."

उसका सिर लटक गया, और आँसू उसके झुर्रीदार गालों से होकर बह चले।

"अपनेआप को व्यथित मत करो मौसी!" ताओ-चिङ ने, उसके वेदना-व्यथित

चेहरे से द्रवित होकर अनुरोध किया। "तुमने एक बच्चा खोया है, लेकिन हम सभी ही बच्चे हैं..." उसका अपना ही कण्ठ अवरुद्ध हो गया।

मौसी ली, उसको ले जाने के लिए दो दिन के भीतर आने का वादा करने के बाद, अपनी टोकरी अपने बाँहों में उठाये चल दी। तुरन्त ताओ-चिङ श्रीमती लिऊ से उत्सुकतावश पूछने के लिए मुड़ी, "बहन, क्या तुम मुझे उसके बारे में और कुछ बता सकती हो?"

"मैं खुद भी बहुत अधिक नहीं जानती," उसका जवाब था। "वह और उसका पति अच्छे, ईमानदार किसान थे, जो पच्चीस ली दूर तावाङ गाँव में रहते थे। वे इतने ग़रीब थे कि उनके पास एक माऊ भी ज़मीन नहीं थी और दोनों को एक ज़मींदार के यहाँ काम करना पड़ता था। जब किसानों ने काओयाङ और लिङसिएन में विद्रोह किया, तो उसका पति विद्रोह में शामिल हो गया और मार डाला गया। उसके पास उसका ली युङ-कुआङ नामक बेटा बचा था, जो एक बढ़िया नौजवान था, जिसने इन इलाक़ों में संघर्षों का नेतृत्व किया। जहाँ तक माँ का सवाल है, तो तुम उस जैसा अन्य किसी को आसानी से नहीं पा सकती। पड़ोस में हर कोई उसे जानता और पसन्द करता है। वह कभी निराश नहीं होती। इसी तरीक़े से वह वर्षभर काम करती रहती है, चाहे बारिश हो या धूप।" श्रीमती लिऊ ने अपनी जैकेट के कोने से अपना पसीने से तर चेहरा पोंछा, और एक कपड़े का पल्ला उठा लिया जिसे वह सी रही थी। "वह औरत अद्‌भुत है," वह आगे बोली, "दिन के समय वह कई ज़मींदारों के यहाँ तरह-तरह के काम करने या उनकी औरतों को नुमाइशी चीज़ें बेचने के लिए जाती है, लेकिन जब रात होती है तो क्रान्तिकारी काम करने लगती है।" वह मुस्कुरायी।

लेकिन यह अल्प सूचना ताओ-चिङ को सन्तुष्ट न कर सकी, वह उत्सुकतापूर्वक उसकी आँखों में देख रही थी, जो मानो अर्ज़ कर रही हों, "और बताओ न उसके बारे में!"

——:o:——

अध्याय 7

तीन दिन बाद, शाम के वक़्त च्याङ हुआ की "मौसी" ने ताओ-चिङ को कुछ देहाती कपड़े पहन लेने को कहा, और उसे पच्चीस ली पश्चिम की ओर अपने घर ले गयी। अँधेरा हो चला था, जब वे गाँव के बाहर उस एकाकी कुटिया पर पहुँचे। "मौसी" ली ने दरवाज़ा खोला अन्दर गयी और एक पैराफ़िन लैम्प जलाया, जो ताकपट्टी पर रखा हुआ था। इसकी मद्धिम रोशनी में एक काङ दिखायी दिया जिस पर सिर्फ़ एक जीर्ण-शीर्ण चटाई, एक बदरंग सूती रज़ाई, और एक बड़ा तकिया सोने

के लिए पड़ा हुआ था। जब ताओ-चिङ उत्सुकतावश अपने चारों ओर देख रही थी, तब उस महिला ने भाँप लिया कि उसके मन में क्या बात थी और कहा :

"तुमने इतना दरिद्र घर नहीं देखा होगा, क्या तुमने देखा है बच्ची? लेकिन मैं क्या करूँ? मेरे पास कुछ फ़र्नीचर और कुछ सन्दूकें थीं। लेकिन मुझे सबकुछ बेच देना पड़ा। उससे भी एक फ़ायदा ही हुआ है – अब मेरे पास कुछ भी नहीं है जो मेरे रास्ते का रोड़ा बने।" हँसते हुए उसने काङ पर से धूल बुहारी और ताओ-चिङ से बैठने को कहा।

पैराफ़िन लैम्प की टिमटिमाती रोशनी खिड़की के फटे कागज़ से होकर आ रही चाँद की किरणों से घुल-मिल गयी थी, और कमरे को जंगल में किसी परीकथा वाली झोंपड़ी की तरह किसी भुतही छाया से भरे दे रही थी। रोमानी और कल्पनाशील ताओ-चिङ इस अद्भुत वातावरण के सम्मोहन से अभिभूत हो गयी और एक सुखद मनोविलास में डूब गयी। जब तक वह अधेड़ महिला बाहरी कमरे में आग जलाती रही, तब तक ताओ-चिङ काङ पर बैठी सपनों में खोयी हुई, आसपास के उस माहौल की विचित्रता से अभिभूत होती रही, जो उसकी अब तक की जानकारी में आयी किसी भी चीज़ से सर्वथा भिन्न था। वह च्याङ हुआ की "मौसी" पर चमत्कृत थी, जो एक थकी-माँदी, अधेड़ उम्र वाली, साधारण क़िस्म की औरत थी, लेकिन आत्मा में इतनी तरुण, इतनी सुन्दर... वह यथार्थ में लौट आयी, जब मौसी ली उसके लिए एक कप गर्म पानी लेकर आयी। काङ से नीचे सरक कर उसने आकुलता में उस वरिष्ठ महिला का हाथ थाम लिया और जल्दी जल्दी बोली :

"यह किसलिए मौसी? मैं प्यासी नहीं हूँ।"

"अगर तुम प्यासी नहीं हो बच्ची, तो मैं हूँ न।" मौसी ली मुस्कुरायी, "मैं सारा दिन ज़मींदार के खेतों की गुड़ाई करती रही, थक गयी और झुलस गयी हूँ।" उसने बड़ा कटोरा उठाया, गर्म पानी को इसमें ठण्डा होने के लिए उड़ेला और एक चुस्की ली। ताओ-चिङ के विचार पुनः विचरण करने लगे। कभी खेतों में काम न किये होने से उसको इसका कोई अहसास नहीं था कि कमरतोड़ मेहनत के बाद थकने का क्या मतलब होता है। उसकी नयी दोस्त की थकावट ने उसे स्वयं के प्रति लज्जित किया। यह एक अधेड़ उम्र की महिला थी, जो दिनभर कड़ी मेहनत कर चुकी थी, फिर भी किसी व्यक्ति को संरक्षण देने के लिए शाम के समय अँधेरी देहाती पगडण्डियों पर बीसों ली पैदल चलने के बाद भी, इस पर कुछ नहीं सोच रही थी... ताओ-चिङ ने अपनी आँखों में आँसुओं का प्रवाह महसूस किया। एक लम्बें समय तक वह इतनी विचलित रही कि बोल न सकी।

उस रात वह मौसी ली के साथ एक ही रज़ाई में सोयी, मौसी ली तो अपना सिर रखते ही सो गयी। ताओ-चिङ, फिर भी सो न सकी। उसे तमाम सवाल व्यथित

किये हुए थे। उसे कहाँ ठहरना होगा, भविष्य में वह कैसे जियेगी? वह क्या काम कर सकेगी?

लैम्प बुझा दिया गया था, और चाँदनी विलुप्त हो चुकी थी। कोई भी आवाज़ कमरे की शान्ति भंग नहीं कर रही थी, सिवाय अपनी सहचरी की भारी सांसों के और कभी-कभार दूर भौंकते कुत्तों के। ताओ-चिङ स्वयं अपने हृदय की धड़कनें सुन सकती थी। कई बार उसने करवट बदलनी चाही, लेकिन मौसी के सोने में ख़लल न पड़े, इसलिए उसने अपनेआप को ज़ब्त किये रखा। वह उस रात एक झपकी तक न ले सकी।

जब मौसी ली दिन निकलते ही जागी, तो ताओ-चिङ पहले ही से थोड़ा पानी गर्म कर चुकी थी। अब उसने एक छोटी-सी पीतल की चिलमची काङ के किनारे पर रख दी, जो बिस्तर, मेज़ और बेंच तीनों का काम देता था।

"मौसी, तुम पिछली रात गहरी नींद सोयी," उसने प्रसन्न होकर कहा। "क्या तुम अब भी प्यासी हो? यह रहा तुम्हारा गर्म पानी।"

"तुम एक प्यारी बच्ची हो।" मौसी ली प्रफुल्लित हो उठी, और उसने ताओ-चिङ का हाथ थाम लिया। "पहले कभी मेरा इस भाँति इन्तज़ार नहीं किया गया।"

"हम सभी का बढ़िया जीवन होगा मौसी, जब हमारे क़िस्म का समाज अस्तित्व में आ जायेगा। क्या तुम ऐसा नहीं सोचती?"

"हाँ, अवश्य आयेगा। लेकिन मेरे लिए तो यह अभी ही आनन्ददायक है कि कोई मेरे लिए गर्म पानी रखे। मैं भाग्यशाली हूँ।"

मौसी ली ने खाना पकाना शुरू कर दिया जबकि ताओ-चिङ अँगीठी में जलावन की लकड़ी झोंकती रही। उन्होंने मक्के के आटे की मीठी रोटी और बाजरे के दलिये का नाश्ता किया, जिसके बाद मौसी ली बोली :

"मैंने तुम्हारे लिए एक ज़मींदार-परिवार में पढ़ाने का काम ढूँढ़ लिया है। ठीक है?"

"एक ज़मींदार परिवार में?" ताओ-चिङ भौचक्की हो गयी।

"हाँ, क्या बुरा है थोड़ा समय आराम से काट लेने में?" मौसी ली मुस्कुरायी।

"नहीं, मैं ऐसी किसी भी जगह नहीं जाना चाहती।" उससे मुलाक़ात के बाद पहली बार ताओ-चिङ ने मुँह फुलाया।

उस महिला ने हथेली से उसकी पीठ थपथपायी और हँसी। "तुम ग़लती पर हो प्यारी, मैं तुम्हें वहाँ ऐशो-आराम में जीने के लिए नहीं भेज रही हूँ। मैं तुमसे एक उपयोगी काम के लिए कह रही हूँ। वह पाजी नर-पशु एक बड़ा भूस्वामी है जिसके पास दो हज़ार से अधिक माऊ ज़मीन है। वह अपने पोतों के लिए एक आया तलाश रहा है। और मैंने एक दोस्त के ज़रिये तुम्हारे लिए इस नौकरी का इन्तज़ाम कर दिया

है। यह एक बढ़िया मौक़ा है। बेहतर होगा कि तुम इसे कर लो।"

"लेकिन किसलिए? मैं किसी ज़मींदार के लिए काम नहीं करना चाहती।"

"नहीं! नहीं! तुम चली जाओ बच्ची," उस सहृदयता ने ख़ुशामदी भरे स्वर में कहा। "तुम उस घर में हमारे लिए उपयोगी हो सकती हो। मैं तुम्हें रास्ते में कुछ दूर तक ले जाऊँगी, फिर हम लोग इस प्रमण्डल के स्कूल इन्सपेक्टर, श्री वाङ चीह-ली से मिलेंगे। वह तुम्हारा परिचय उस ज़मींदार से करा देगा। तुम बता सकती हो कि तुम तिएनत्सिन से आयी हो और हाईस्कूल पास हो। बाक़ी श्री वाङ तुमको बता देगा। आओ अब हम चलें, चलें न?"

ताओ-चिङ की बड़ी-बड़ी काली आँखें उस अधेड़ महिला पर टिकी हुई थीं; जिसका दृढ़ किन्तु नरम स्वर स्वीकृति के लिए प्रेरित कर रहा था। अतः आगे कोई एतराज़ न करती हुई उसने अपने कपड़े बदले और वे दोनों चल पड़ी।

वह ज़मींदार, सुङ कुएई-ताङ, तिङसिएन से सटे शेन्त्सी प्रमण्डल के एक सरहदी गाँव में रहता था। जब दोनों महिलाएँ एक दर्ज़न ली या इससे कुछ अधिक सफ़र तय कर चुकीं, तो वे एक रेशमी गाऊन पहने आदमी से मिलीं, जिसको मौसी ली ने श्री वाङ के रूप में सम्बोधित किया। ताओ-चिङ ने भाँप लिया कि वह भी उन्हीं में से एक था। जब परिचय हो गया और वह महिला वापस मुड़ने वाली थी, ताओ-चिङ ने उसकी बाँह पकड़ ली और अधीर होकर पूछा :

"जब-तब आते रहना और मुझसे मिलते रहना मौसी! मुझे भूल मत जाना!"

मौसी ली ने ताओ-चिङ का हाथ अपने हाथों में ले लिया और मुस्कुरायी, "बेवक़ूफ़ बच्ची! तुम्हें निरुत्साहित होने की आवश्यकता नहीं। मेरे भानजे ने मुझे चेतावनी दी थी कि तुम जैसी एक शहरी लड़की को सख़्त बनाने की ज़रूरत है। अब कुछ कलेजा दिखाओ, और देहाती जीवन में ढलने की पूरी-पूरी कोशिश करो। तुम्हें कठिनाइयों या गन्दगी से भयभीत नहीं होना है। अगर तुम सचमुच मुसीबत में होगी, तो कोई निश्चय ही तुम्हें उबरने में मदद करेगा। मैं भी समय-समय पर तुमसे मिलने आ जाया करूँगी। अब श्री वाङ के साथ जाओ। उसने सुङ कुएई-ताङ के साथ सारा प्रबन्ध कर दिया है।"

ताओ-चिङ मर्म तक द्रवित हो उठी। तो च्याङ हुआ उसके लिए सन्देश छोड़ गया था। यह उसके द्वारा उसको दी गयी सलाह से मेल खाता था : "तुम्हें किसी भी परीक्षा में खरा उतरने के लिए काफ़ी दृढ़ होना पड़ेगा।" वह तुरन्त फिर उत्साहित और उल्लासित हो उठी।

"जो तुमने कहा है, उसे मैं याद रखूँगी मौसी," वह भावप्रवण होती हुई बोली। "श्री वाङ, मैं चलने को तैयार हूँ।"

ताओ-चिङ अपने नये सहयात्री के साथ आगे बढ़ती हुई समय-समय पर उसे चोरी-चोरी उत्सुक नज़रों से देख लेती थी। वह चालीस वर्ष से कम उम्र का था,

और पीले चेहरे और छोटी मूँछ वाला था। अपने बदरंग हो चुके खाकी रेशमी गाऊन, फ़ैल्ट हैट और चश्मे में वह कुलीनों जैसा ही एक व्यक्ति लगता था। उसे कुछ क्षोभ हुआ कि एक ऐसे व्यक्ति द्वारा वह एक कुख्यात ज़मींदार के घर ले जायी जा रही थी, लेकिन मौसी ली में निहित विश्वास ने उसे अपनी शंकाओं पर विजय पाने में मदद की।

वे चुपचाप घुमावदार नदी के किनारे-किनारे चलते रहे, तपता सूरज उनके ऊपर दहक रहा था। ताओ-चिङ पसीना-पसीना हो गयी, लेकिन श्री वाङ बिना घबराये चलते रहे। वे बीस ली या अधिक पार कर चुके थे, और अपने गन्तव्य के क़रीब पहुँच रहे थे, इस के पूर्व ही वह रुक गया और शान्तिपूर्वक बोला :

"तुम अवश्य अपना नाम बदल लेना। क्या हम तुम्हें चाङ सिऊ-लान कहें?"

ताओ-चिङ ने स्वीकृति में सिर हिलाया और शर्माकर मुस्कुरायी। "चाङ सिऊ-लान?"

"हाँ, तुम भूलकर भी तिङसिएन स्कूल के अपने अतीत के बारे में कुछ मत ज़ाहिर होने देना। नहीं तो हम सभी परेशानी में पड़ जायेंगे। बस उन्हें इतना ही बता देना कि तुम तिएनत्सिन से आयी हो, जहाँ तुम मेरे मौसेरे भाई ली चेन की सहपाठिन थी।"

ताओ-चिङ ने नाम को दिमाग़ में नोट करते हुए स्वीकृति में सिर हिलाया। उसके बाद वह गम्भीरतापूर्वक पूछने के लिए मुड़ी :

"श्री वाङ, अगर वे मेरे देहात में आने का कारण पूछें, तो?"

"बढ़िया सवाल है।" वह मुस्कुराया और सहमति में सिर हिलाया। "तुम क्या कहोगी?"

"मैं सोचती हूँ कि मैं उन्हें बता दूँगी कि मैं तिएनत्सिन में कोई नौकरी न पा सकी, इसलिए यहाँ पर अपनी मौसी के साथ रहने के लिए आ गयी। क्या यह चलेगा?"

"हाँ, यह उन्हें ठीक तरह से बता देना। यद्यपि मैं तुम्हें एक चीज़ की चेतावनी ज़रूर देना चाहूँगा। वह बूढ़ा कंजूस सुङ कुएई-ताङ तो इतना खुला बदमाश है कि हम उससे बिना किसी अधिक कठिनाई के निपट सकते हैं, लेकिन उसका बेटा सुङ यू-पिन, जो चीन विश्वविद्यालय का स्नातक है, कहीं अधिक चालबाज़ है। मुझे आशंका है कि तुम उसकी पसन्दलायक़ हो, इसलिए तुम अपना ख़याल रखना।"

ताओ-चिङ आतंकित हो गयी, और अनचाहे ही ठिठक गयी। "तुम कहते हो कि वह अपने पिता से भी बदतर है? तब मैं...मैं..." वह पूछना चाहती थी कि क्यों वे उसे ऐसी जगह भेज रहे थे, लेकिन उसने आपको रोक लिया। क्या च्याङ हुआ ने नहीं कहा था कि उसे किसी भी परीक्षा के लिए तैयार रहना है? अपने दाँत पीसती हुई वह श्री वाङ के पीछे-पीछे चलती रही।

लेकिन वह भाँप गया कि इस शहरी लड़की के दिमाग़ में क्या बात चल रही थी, जो देहात में एक ज़मींदार परिवार में रहने के लिए आ रही थी, जहाँ हर चीज़ उसके लिए नयी होगी। मामले की और जटिलता यह थी कि यह दुश्मनों के बीच एक ख़तरे की जगह थी।

"चिन्ता मत करो, तुम अकेली नहीं होगी," उसने एक मुस्कुराहट के साथ कहा। "तुम्हारी मौसी और मैं अक्सर तुमसे मिलने आया करेंगे। तुम्हारा पहला कार्यभार उस परिवार के साथ अच्छे सम्बन्ध स्थापित करना है। हर तरह से कोशिश करना कि वे तुम्हें पसन्द करें – परिवार के बच्चे और बाक़ी सभी। इससे तुम्हें खेत-मज़दूरों के बीच कुछ काम करने में मदद मिलेगी।"

"कोशिश करना कि वे मुझे पसन्द करें?" ताओ-चिङ ने चौंककर दोहराया। "मुझे खेत-मज़दूरों से दोस्ती करने में कोई उज्र नहीं है, लेकिन ज़मींदारों से..."

श्री वाङ बीच ही में टोक कर हँस पड़े। "हम उस पर बाद में विचार-विमर्श करेंगे। तुम्हारे लिए महत्त्वपूर्ण चीज़ यह है कि तुम उस परिवार से अच्छे ताल्लुक़ात बना लो। तुम्हें, जहाँ तक सम्भव हो सके, यह स्वांग भी करना होगा कि तुम भोली-भाली हो।"

दोनों ख़ामोश हो गये। ताओ-चिङ भीतर ही भीतर अपने सहयात्री के विवेक और आत्मसंयम से प्रभावित हो गयी थी।

जल्दी ही वे सुङ गाँव पहुँच गये, और एक भव्य हवेली के पास आ गये, जो गली की लगभग पूरी लम्बाई में फैली हुई थी। ताओ-चिङ का दिल धक-से रह गया, जब वे ऊँचे काले फाटक से होकर घुसने लगे। उसका पिता और उसकी घृणित सौतेली माँ फिर से उसके सामने प्रतीत होने लगे। वे क्रूर और प्रतिशोधी रह चुके थे, लेकिन यह सुङ परिवार तो उससे भी बुरा हो सकता है। उसे महसूस हुआ जैसे वह शेर की माँद में प्रवेश कर रही है, और जब उसने हॉल में प्रवेश किया, तो अपने भावावेगों को छिपाने के लिए उसे अपने सम्पूर्ण साहस को समेटना पड़ा।

दरवाज़े और खिड़कियाँ पश्चिमी शैली में चमकदार बनाये गये थे, लेकिन डेस्क और कठोर काठ के फ़र्नीचर चीनी शैली के थे। ताओ-चिङ और श्री वाङ का स्वागत लगभग पैंतीस वर्ष के एक गोली-मटोल, बने-ठने व्यक्ति द्वारा किया गया था, जो एक सूती गाऊन पहने था। यह सुङ यू-पिन था जिसने ताओ-चिङ का शिष्टता से अभिवादन किया।

"यह बहुत अच्छा है कि तुम आ गयी और मेरे बच्चों को पढ़ाओगी। मेरे पिता उनसे इतना लगाव रखते हैं कि वह उनके स्कूल जाने की बात तक नहीं सुनना चाहते। यही कारण है कि श्री वाङ ने हमसे तुम्हारी सिफ़ारिश की। हमें तुम्हारे यहाँ आने से ख़ुशी हुई।"

"मेरा पढ़ाने में बहुत अनुभव नहीं है, लेकिन मैं भरसक कोशिश करूँगी।"

ताओ-चिङ ने संकोच के साथ जवाब दिया।

श्री वाङ, जो अब तक ख़ामोश थे, बीच में बोल पड़े, "श्री सुङ, कुमारी चाङ एक ईमानदार लड़की है, जिसने अधिक दुनिया नहीं देखी है। मुझे आशा है कि आप इसकी अच्छी देखभाल करेंगे।"

"निश्चित," सुङ ने जवाब दिया, तब तक लगभग बारह वर्ष की एक लड़की और उससे कुछ वर्ष कम उम्र का एक लड़का पिछले कमरे से दौड़ते हुए आये और दालान में रुक गये। लड़की ने ताओ-चिङ को देखकर ख़ुशी और आश्चर्य ज़ाहिर किया, लेकिन लड़का भुनभुनाया, "मुसीबत है। एक लड़की आ गयी!" वह चिल्लाते हुए अहाते में दौड़ गया, "बड़े दादा! बड़े दादा। मैं नहीं चाहता कि कोई लड़की मुझे पढ़ाये।"

"वह अपने बड़े दादा द्वारा बिगाड़ दिया गया है," सुङ ने क्षमायाचना के स्वर में कहा। "मुझे उम्मीद है कि तुम दोनों को बस में कर लोगी, कुमारी चाङ। मैं तुम पर भरोसा करता हूँ।"

"धन्यवाद श्री सुङ। मैं भरसक कोशिश करूँगी, आप इत्मीनान रखें।"

जब श्री वाङ ने रुख़सत ली, तो ताओ-चिङ ने गम्भीरतापूर्वक उसके चेहरे की ओर देखा, वह नहीं समझ पा रही थी कि ख़ुश हो या दुखी। उसने नर्मी से उससे कहा। "चिन्ता मत करो। तुम्हारी मौसी दो दिन में आयेगी।"

उसने स्वीकृति में सिर हिलाया और मुस्कुरायी, "कृपया उससे कहो कि मैं भरसक वही करूँगी जो यहाँ कर सकती हूँ। वह चिन्तित न हो।"

जब श्री वाङ चले गये, तो सुङ यू-पिन ने चन्द शब्दों में ताओ-चिङ से बातचीत की। उसके बाद दरवाज़े का परदा एक तरफ़ हटा और तीस के आस पास की उम्र की पीले चेहरे वाली औरत, दोनों बच्चों को लेकर अन्दर आयी।

सुङ सू-पिन उठ खड़ा हुआ और ताओ-चिङ से बोला, "यह मेरी पत्नी है। उसका स्वास्थ्य बहुत अच्छा नहीं है।" वह अपनी पत्नी की ओर मुड़ गया। "यह कुमारी चाङ है। स्कूल इन्सपेक्टर श्री वाङ ने इसकी सिफ़ारिश की थी। कृपया इसकी सभी ज़रूरतों का ख़याल रखना।"

श्रीमती सुङ ने कोई जवाब नहीं दिया, लेकिन ताओ-चिङ का क़रीब से निरीक्षण किया। सौभाग्य से लड़की की उलझन थोड़े ही समय के लिए रही क्योंकि लड़का गाँव के मन्दिर जाने और खेल देखने के लिए हल्ला मचाने लगा। उसकी माँ का ध्यान बँट गया और उसने ताओ-चिङ से एक मुस्कुराहट के साथ कहा, "मैं आशा करती हूँ कि तुम इन दोनों बच्चों में दिलचस्पी लोगी, कुमारी चाङ वे इतने छोटे हैं कि अभी ज़्यादा तमीज नहीं रखते।"

अपनी खिन्नता को संयत करते हुए, ताओ-चिङ ने हामी भर दी। उसने अपने नये दायित्वों यानी बच्चों के हाथ पकड़े और उनके नाम पूछे।

उनकी माँ ने ही जवाब दिया, "वह वेन-ताई है और वह सियाओ-सू है।"

"कितने बढ़िया नाम हैं।" ताओ-चिङ ने उनके हाथ सहलाये और मुस्कुरा दी, "क्या तुम लोग कहानियाँ सुनना पसन्द करते हो?" "अरे-हाँ," वेन-ताई उसकी बाँह पकड़कर चिल्लाया। "क्या तुम 'पूर्वी राजधानी के पाँच नायक' के बारे में जानती हो?" ताओ-चिङ हँस दी। "लेकिन मैं उन्हीं बच्चों का बताती हूँ जो मेरा कहना मानते है। तुम और कौन कौन-सी कहानियाँ पसन्द करोगे, वेन-ताई?"

सियाओ-सू बोल पड़ी, "अरे, कोई भी जिसमें लड़ाई-भिड़ाई हो। वह तो 'तीन राज्यों की कहानी के सेनापतियों के बारे में सुनने के लिए अपना खाना तक छोड़ देगा।"

"शान्त रहो, बेबी!" वेन-ताई चीख़ा, वह अपनी बहन से अधिक रूखा था। जैसे ही उसने त्यौरियाँ चढ़ाईं, वह ख़ामोश हो गयी। सुङ यू-पिन जो क़रीब से परख रहा था कि क्या हो रहा है, अपनी पत्नी पर मुस्कुराया। "कुमारी चाङ एक अच्छी अध्यापिका हैं। मुझे विश्वास है कि वह उन्हें ठीक से सँभाल लेगी। क्या तुमने उसके लिए कोई कमरा ठीक किया?" वह ताओ-चिङ की ओर मुड़ा। "क्या तुम जाकर आराम नहीं करोगी? मेरे पिता हाल ही में अस्वस्थ रहे हैं, जब सुविधाजनक होगा, तब मैं तुम्हारा उनसे परिचय करा दूँगा।"

ठीक तभी एक लम्बा-तगड़ा दुबला-पतला बूढ़ा आदमी घर का बुना हुआ एक गहरा खाकी गाऊन पहने आया। वह एक छड़ी टेकते हुए और दहाड़कर बोला, "भला मेरा परिचय करवाने की क्या आवश्यकता है।... क्या तुम गवर्नेस हो, कुमारी चाङ?...तुम्हारा स्वागत है।" बिना उत्तर की प्रतीक्षा किये वह अपने शिकन पड़े चेहरे पर एक तमतमाहट लिये मुड़ पड़ा। "गेहूँ की कटाई का जल्द ही समय होने वाला है। यू-पिन तुम्हें सारा ब्यौरा ज़रूर देख लेना चाहिए। ध्यान रखो कि तुम्हें खेत-मज़दूरों को गाँव के पूरब वाङ लाओ-त्सेङ का तीन माऊ गेहूँ काट लेने का आदेश देना है। और याद रखो कि हमने सुङ वेन-काङ का भी दो माऊ ख़रीद लिया है। तुम्हें इन मामलों में ज़्यादा ध्यान देना चाहिए। देर-सवेर सारी जायदाद तो तुम्हारी ही होगी।"

"आप ऐसी चीज़ों की चिन्ता करते-करते बहुत बूढ़े हो चुके हैं पिताजी," सुङ यू-पिन ने तपाक से कहा। "मेरा सारा समय बाहरी कारोबार में बीत जाता है। अभी-अभी एक निमन्त्रण पाओ-तिङ के वकील संगठन से आया है, और मैं सोच रहा हूँ कि इसे स्वीकार कर लूँ। जहाँ तक घरेलू कामकाज का सवाल है, क्या फ़र्क़ पड़ता है अगर हम उन ग़रीब ग्रामीणों से अपनी बकाया राशि से थोड़ा कम ही वसूलें?"

इसके पहले कि वह अपनी बात ख़त्म कर पाता, वह बूढ़ा गुस्से से चीख़ उठा, "मैं तुम्हें चेतावनी देता हूँ, यू-पिन...क्या तुम्हारे बाप-दादाओं ने पैतृक सम्पति इतनी

आसानी से खड़ी कर ली थी? तुम जिस राह पर चल रहे हो, उससे तो इसका कुछ भी नहीं बचेगा।" फिर उसने अपने पोते पर, जो उसकी छड़ी पर झूल रहा था, बौखलाते हुए कहा, "तुम एक दूसरे फ़िज़ूलख़र्च हो वेन-ताई।"

सुङ यू-पिन और उसकी पत्नी सिर्फ़ मुस्कुराकर रह गये, बूढ़ा झटककर वापस जाने लगा। जाते जाते वह दरवाज़े पर पीछे मुड़ा और चुपचाप खड़ी ताओ-चिङ को घूरकर देखा, मानो यह तजवीज़ करना चाहता हो कि वह एक चोर की भाँति लग रही थी या नहीं। "वेन-ताई। सियाओ सू!" वह दहाड़ा। तुम्हें इस गवर्नेस के साथ कड़ी मेहनत करनी होगी। ज़रा सोचो तो! दस युआन माहवार और रहने-खाने का ऊपर से! तुम लोग अपने बड़े दादा की बरबादी का कारण बनोगे।"

उस रात ताओ-चिङ एक विचित्र किन्तु ताज़ा वालपेपर लगे कमरे में सोने के लिए गयी। अपनी कल्पना में उसके सामने दो तस्वीरें उभरती रहीं। एक तस्वीर थी दुबली-पतली पीतवर्णी श्रीमती सुङ की, जिसकी धमकी भरी आँखें उसे कँपकँपा दे रही थी, जिसकी वजह नापसन्दगी थी या डर, ताओ-चिङ तय न कर सकी। दूसरी तस्वीर थी अपनी छड़ी टेके हुए उस बूढ़े ज़मींदार की, जो उस पर आँख तरेरती और गुर्राती हुई थी, "मेरी कोई भी चीज़ मत छूना! मैं तुम्हें अच्छी-ख़ासी रक़म देता हूँ – रहने-खाने के अलावा दस युआन माहवार।"

उसने अपना सिर खिड़की से दिखायी दे रहे चमकीले चाँद की ओर घुमाया और निःश्वास लिया। "कैसे मैं यह हिक़ारत झेलूँ? मैं इसे यहाँ कैसे बरदाश्त कर सकती हूँ? मुझे उनके बच्चों की देखभाल करनी है, जबकि वे मुझे कोई चोर या इससे भी बदतर समझते हैं।"

अचानक उसे मौसी ली की सलाह याद आ गयी, "मेरे भानजे ने मेरे लिए सन्देश छोड़ा था कि तुम जैसी एक शहरी लड़की को सख़्त बनाने की ज़रूरत है।" इसने एक टॉनिक जैसा प्रभाव छोड़ा। और करवट बदलती हुई उसने अपनेआप को धिक्कारा, "ताओ-चिङ, पार्टी ने तुमको यहाँ भेजा है। तुम्हें निर्देशों का पालन करना ही है। लू शुन ने कहा था, 'क्रान्ति का मतलब होता है पीड़ा झेलना, यह अपरिहार्य रूप से गन्दगी और ख़ून से सना होता है।'" वह सारी रात अपनी उलझनों से जूझती रही और सो न सकी।

दो दिन बाद ताओ-चिङ पहले से कुछ-कुछ प्रसन्न थी, क्योंकि अपनी क़िस्सागोई से उसने वेन-ताई का मन जीत लिया था उसे यह भी महसूस हुआ था कि सुङ यी-पिन, श्री वाङ ने जितना बताया था, उससे कम धूर्त था। वस्तुतः उसने एकमात्र उसे ही तुलनात्मक रूप से समझदार और परिवार का स्नेहिल सदस्य माना था। यहाँ आने के दूसरे दिन उसने उससे कहा था, "तुम जानती हो, कुमारी चाङ, मैं लगान और क़र्ज़ वसूलने में अपने पिता की मदद करने से पूरी तरह नफ़रत करता हूँ।

लेकिन और मैं कर भी क्या सकता हूँ? वह इतने बूढ़े हैं कि खुद इन्तज़ाम कर नहीं पाते। ये कुछ माऊ ज़मीनें मेरा जीवन चौपट कर रही हैं। इसके बजाय मैं कुछ अनुसन्धान कार्य कर लेता।" उसने इतनी शालीनता से कहा कि उसे उस पर दया आ गयी। उसे यह ज़रूर दुर्भाग्यपूर्ण लगा कि एक विश्वविद्यालयी स्नातक को घर पर अपना वक़्त ज़ाया करना पड़ता था। अहाते की ऊँची दीवारें उस स्थान को एक जेल की भाँति बनाये हुए थीं।

ज़मींदार की हवेली, दरअसल एक जेल से कुछ-कुछ मिलती-जुलती थी। इसके बड़े-बड़े काले फाटकों के भीतर तीन मुख्य प्रांगण और तीन उनसे छोटे प्रांगण थे। पहले मुख्य प्रांगण में उत्तर की ओर रुख किये कमरों की एक क़तार थी। यही वह जगह थी, जहाँ कारिन्दे लगान वसूलते, क़र्ज़ देते या काश्तकारों द्वारा लाये गये अनाज को तौलते थे, और वहीं दर्ज़नभर या उससे अधिक घरेलू चौकीदार सोया करते थे। ठीक दूसरी ओर, पाँच बड़े कमरे थे जिनके अगल-बग़ल छोटे-छोटे कमरे थे। बड़े कमरे जिनमें से एक में सुङ यू-पिन ने ताओ-चिङ का स्वागत किया था, परिवार द्वारा इस्तेमाल किया जाता था जबकि छोटे कमरे पुरुष मेहमानों के कमरे थे। पूरब की ओर बग़ल के प्रांगण में अस्तबल और दिहाड़ी मज़दूरों के बाड़े थे। मध्य का मुख्य प्रांगण बड़ा था, जिसके चारों तरफ़ कमरे थे। दक्षिण रुख वाले कमरे सुङ कुएई-ताङ के क़ब्ज़े में थे, और अन्य जिसमें लोहे के दरवाज़े लगे थे, स्टोररूम थे। इसके पीछे बड़े प्रांगण के तीन तरफ़ इमारतें थीं। पाँच साफ़-सुथरे काफ़ी स्थान वाले कमरे, जिनके दक्षिण तरफ़ खुला स्थान था, सुङ यू-पिन परिवार के लिए थे। एक पश्चिमी खण्ड उसके अध्ययन का काम देता था, और एक पूर्वी खण्ड बच्चों के अध्ययनकक्ष का काम देता था। प्रांगण के पूरब की तरफ़ इसके आगे महिलाओं के लिए तीन उत्तरी अतिथिकक्ष थे। बीच वाले कक्ष का दरवाज़ा प्रांगण में खुलता था। ताओ-चिङ के सोने का कमरा पश्चिम तरफ़ था। रसोईघर और नौकरानियों के रहने के क्वार्टर पूर्वी और पश्चिमी खण्डों में थे। बीच वाले मुख्य प्रांगण से सटे बग़ल के प्रांगण में एक चक्की, फ़र्नीचर और औज़ारों रखने के कमरे थे। इस तरह सिर्फ़ पाँच लोगों का एक परिवार – बूढ़े ज़मींदार की पत्नी मर चुकी थी – ऊँची दीवारों से घिरे साठ से अधिक कमरों वाले एक घर का मालिक था। ठीक ही था कि यह ताओ-चिङ को एक जेल की याद दिलाता था। इसके बावजूद खेत-मज़दूरों को दूसरे मुख्य प्रांगण में प्रवेश करने की सख़्त मनाही थी, पिछले प्रांगण के लिए तो कुछ कहना ही नहीं था। महिला अतिथियों को सिर्फ़ उनके लिए रिज़र्व किये गये अतिथिकक्षों में ही दाख़िल होने दिया जाता था। यहाँ तक कि बूढ़े ज़मींदार की विवाहित बेटी भी मुख्य प्रांगण में नहीं ठहर सकती थी। उसकी ठोस ईंटों की दीवारें थीं और एक छोटा-सा लोहे का दरवाज़ा था। जब यह दरवाज़ा रात को बन्द कर दिया जाता, तो प्रांगण बाक़ी दुनिया से कट जाता था।

इस "जेल" में दो दिन रहने के बाद ताओ-चिङ को पता लगा कि उसकी निकट से निगरानी की जा रही थी। चाची चेन, जिसका कमरा उसके कमरे के ठीक सामने था और जो घर-गृहस्थी के लिए धुलाई और सिलाई का काम करती थी, दिन के समय मुख्य प्रांगण में काम करती थी, जबकि ताओ-चिङ अध्ययनकक्ष में पढ़ा रही होती थी। जब वह लड़की अपने कमरे की ओर लौटती, तो वह उसके पीठ पीछे ही चल देती। अब तक दो अवसरों पर ताओ-चिङ उस अजनबी को अपनी छोटी खिड़की से बाहर खड़ी होकर अन्दर झाँकते हुए पकड़ चुकी थी। वह इस ताक-झाँक से खिन्न और परेशान थी, कारण कि यह बूढ़ी औरत देखने में ईमानदार लगती थी। यह याद करके कि श्री वाङ ने उसे नौकरों और भाड़े के मज़दूरों से भाई-चारा स्थापित करने की सलाह दी थी। उसने सोचा, "मैं उससे मेलजोल क्यों न शुरू करूँ? वह भी तो उत्पीड़ितों में से एक है।" अतः तीसरे दिन शाम को उसने चाची चेन से बातचीत करने का मुद्दा सुनिश्चित किया और कुछ सामान्य बातों के बाद सीधे असली सवाल पर आ गयी।

"चाची, क्यों तुम सारा समय मेरी निगरानी करती रहती हो, मानो मैं कोई चोर हूँ! क्या श्री सुङ ने तुम्हें ऐसा करने को कहा है?"

चाची चेन का चेचक के बड़े-बड़े दागों वाला झुर्रीदार चेहरा सुर्ख़ हो गया और वह अटपटाते हुए कुछ भी कहने से पहले एक क्षण घूरती रही। "तुम उसके बारे में चिन्ता न करो, बिटिया। किसी ने मुझसे नहीं कहा कि... पर तुम यहाँ पूरी तरह अकेली लड़की हो, कोई तुम्हारी देखरेख के लिए चाहिए ही।" उसका जवाब इतना सच ध्वनित हुआ कि ताओ-चिङ नरम पड़ गयी, और जल्दी ही विषय बदल दिया। "तुम्हारे परिवार में कितने लोग हैं, चाची? क्या तुम्हारे परिवार के लोग इसी गाँव में रहते हैं?"

"मेरे परिवार के लोग?" बूढ़ी औरत ने अपना सिर हिलाया और गहरी साँस खींची। "मेरा कोई नहीं है। मेरा घरबार सबकुछ यही है।"

"क्यों? यह कैसे हो सकता है?"

चाची चेन ने अपनी जैकेट की किनारी से अपनी आँखें पोंछीं। "मेरा पति चिङ-सिङ की कोइलरी में मर गया। मेरा बेटा वर्षों पहले गुज़र गया। और जहाँ तक मेरी बेटी का सवाल है, शादी के बाद वे उसे दूसरे प्रान्त में लेकर चले गये और मुझे वर्षों से उसके बारे में कोई ख़बर नहीं मिली।"

"ओह चाची, यह तो तुम्हारे लिए बहुत दुखद रहा।" सहानुभूति ने ताओ-चिङ के अविश्वास का स्थान ग्रहण कर लिया। उन्होंने परस्पर समझदारी के तहत निगाहों का आदान-प्रदान किया।

आश्चर्य ही कहना चाहिए कि तभी से श्रीमती सुङ ताओ-चिङ के प्रति कम दुराव रखती हुई दिखने लगी, और उसकी बेधती आँखों में कम विद्वेष रहने लगा।

और चाची चेन इस लड़की की जासूसी करने के बजाय उसके लिए स्नेहभाव दर्शाने लगी, उसके लिए गर्म पानी लाती और उसके लैम्प को तेल से भरा रखती। लेकिन तब भी ताओ-चिङ को अपना ख़याल रखने की बात याद थी।

——:o:——

अध्याय 8

गवर्नेस के रूप में ताओ-चिङ के कार्यों में से एक कार्य बच्चों को पढ़ाने के बाद टहलाने ले जाना था। एक दिन ऐसा हुआ कि वह और वेन-ताई बग़लवाले एक प्रांगण से होकर खलिहान की ओर, जो लगभग दो माऊ जगह घेरे हुए था, चले गये। इसके दक्षिणी छोर पर खजूर के पेड़ों के किनारे कुछ झुग्गियाँ थीं जिनमें सूखी करबी रखी हुई थीं। सुङ कुएई-ताङ कोई बेवक़ूफ़ न था। वह जानता था कि हताशा के मारे खेत-मज़दूर ज़मींदारों की सूखी करबी में आग लगा देते थे, अतः अपने परिवार और स्टोररूमों की सुरक्षा के लिए उसने रिहायशी क्वार्टरों से थोड़ी दूरी पर इन बाड़ों को बनवाया था।

जब ताओ-चिङ और वेन-ताई इसके क़रीब पहुँचे तो बिना कंघी किये और मैले-कुचैले कपड़ों वाला एक आदमी, लगभग बारह वर्ष के बच्चे को साथ लेकर सूखी करबी काटने में व्यस्त था। इस लड़के ने खींसे काढ़ते हुए वेन-ताई को सम्बोधित किया, जबकि वह आदमी अपना सिर झुकाये अपना काम करता रहा।

"आओ चलें, कुमारी चाङ," वेन-ताई चिल्लाया। "यहाँ देखने को कुछ भी नहीं है।" वह उसे दूर खींच रहा था, तभी उस आदमी ने अपने स्याह, चिन्ताकुल चेहरे को उठाया, उसकी विचित्र रूप से सफ़ेद कोयों वाली आँखें ताओ-चिङ की आँखों से मिलीं।

"वह परिचित दिखता है। उसे मैंने पहले कहाँ देखा है?" उसने सोचा, तब तक वह फिर अपने काम में झुक गया।

वह वेन-ताई को फलों के बाग़ में ले गयी, जहाँ वह पूछे बिना न रह सकी।

"वेन-ताई, वह बूढ़ा आदमी कौन है?"

"एक खेत-मज़दूर है बुद्धू चेङ!" लड़के ने एक छोटे-से खूबानी के पेड़ को पकड़कर उस पर चढ़ते हुए कहा।

"बुद्धू चेङ! उसका असली नाम क्या है?"

"उस बुद्धू का? कोई नाम नहीं। यह लो, पकड़ो!" उसने एक खूबानी ताओ-चिङ की ओर दे मारी, जबकि वह स्वयं पेड़ पर बैठकर फल खाने लगा था।

उस पूरी अपराह्न ताओ-चिङ के दिमाग़ को ये "खेत-मज़दूर-बुद्धू चेङ" शब्द परेशान करते रहे। वह उसके जीर्ण-शीर्ण कपड़ों, उसके स्याह खस्ताहाल, लेकिन

परिचित, भली प्रकृति वाले चेहरे, और उन भावहीन आँखों से बेचैन बनी रही, जिन्होंने उसे घूरा था।

वह यह याद करने की कोशिश में असफल रही कि उसे कहाँ देखा था।

दो दिन बाद शाम के धुँधलके के समय उस बग़ल वाले प्रांगण से होकर गुज़रते हुए वह फिर उस बुद्धू चेङ से मिली। वह कुएँ से पानी खींच रहा था, और दूसरा कोई भी आस-पास न था, उसने उससे बोलने का निर्णय किया। फिर वे विचित्र सफ़ेद आँखों के कोये उसकी ओर झिलमिलाने लगे। वे साँझ की रोशनी में भयावह दिखते थे, और वह उलझन में पड़ गयी कि यह ग़ुस्सा था या दुश्चिन्ता, जिसके चलते वह उस पर दहकने लगा और वह अपनी बेलन चरखी की धीरे-धीरे चलते हुए छोड़कर उसके क़रीब गया। जैसे-जैसे उसकी डरावनी आँखें निकट आती गयीं, उसका हृदय धौंकनी की तरह धडकने लगा, और उसे न भाग जाने की ख़ातिर अपने सम्पूर्ण साहस को सहेजना पड़ा। वह आगे की ओर क़दम बढ़ाकर नरमी से बोली, "चेङ..." फिर एक मुस्कान के साथ, शर्माती हुई अटक गयी, वह नहीं जान पा रही थी कि उसे क्या कहकर पुकारे।

उस आदमी ने एक गन्दे तौलिये से अपना चेहरा पोंछा।

"तुम्हारा नाम लिन है, चाङ नहीं!" वह फटी आवाज़ में बोला।

ताओ-चिङ बिल्कुल स्तब्ध रह गयी। कैसे वह उसका नाम जानता था? क्या होगा यदि सुङ इसे जान गया तो।...वह दौड़कर अपने कमरे में वापस आ गयी, जहाँ एक बार और उसने अपने दिमाग़ पर ज़ोर डाला। और आख़िरकार उसे याद आ गया ...

नौ वर्ष पहले जब वह बारह वर्ष की थी, तो अपने माँ-बाप के साथ लगान वसूलने कुपेई कोऊ गयी थी। उस ख़ूबसूरत गाँव में उसने एक काश्तकार खेतिहर की लड़की हेई-नी से दोस्ती कर ली थी। हेई-नी एक प्यारी सौम्य बच्ची थी जो बटुओं पर कढ़ाई करने और कपड़े के खिलौने सीने में प्रवीण थी, वह क़िस्से कहने और तितलियाँ पकड़ने की भी शौक़ीन थी। ताओ-चिङ अपनी इस हमउम्र लड़की पर बहुत अनुरक्त हुई। लगभग हर रोज़, बिना अपनी सौतेली माँ या अपने सौतेले भाई की जानकारी के वह उससे मिलने जाती थी। उसकी सौतेली माँ ने उसे काश्तकारों के बच्चों के साथ खेलने से मना किया था, जिनको वह "फूहड़ बच्चे" या "नीच जात" कहा करती थी। फिर भी ताओ-चिङ जिसके ऐसे कोई पूर्वाग्रह न थे, हुई-नी की सोहबत का मज़ा लेती और अपनी सहेली के माँ-बाप से जुड़ गयी जो एक छोटी-सी झोंपड़ी में रहते थे। चेङ तेह-फू जो उसका बाप था, एक मज़बूत क़द-काठी का, शान्त, स्नेहिल आदमी था, वह हमेशा ताओ-चिङ को देखकर मुस्कुराता और उसके लिए दुर्लभ चिड़ियाँ पकड़ने की कोशिश करता। उसकी पत्नी, जो एक

शान्त चित्त, सौम्य, भली दिखने वाली औरत थी, उसके साथ, उसकी सौतेली माँ की अपेक्षा, काफ़ी बेहतर बरताव करती थी, वह हमेशा इस नन्हे मेहमान के लिए कुछ अखरोट या खजूर रखे रहती थी। जब ताओ-चिङ आती तो वह उन्हें यह कहते हुए दे देती : "लो बिटिया रानी! हम इतने ग़रीब हैं कि तुमको कोई बढ़िया चीज़ नहीं दे सकते।"

ताओ-चिङ ले लेती, और इस उपहार को सुस्वादु पाती।

जल्द ही दोनों लड़कियों में इतनी गहरी दोस्ती हो गयी कि ताओ-चिङ शायद ही अपने को हेई-नी से अलग कर पाती, भले ही उसकी सौतेली माँ इसके लिए उसे डाँटती-फटकारती या मारती-पीटती। लेकिन एक दिन एक दिल दहला देने वाली घटना घटी, एक ऐसी घटना जिसने उसके मस्तिष्क पर इतनी गहरी छाप छोड़ दी कि वह कभी भुला न सकी।

उस सुबह जब वह हेई-नी के यहाँ गयी, तो उसने उसे दहलीज़ की सीढ़ी पर ज़ोर-ज़ोर से सिसकते हुए पाया। उसकी माँ भी जो काङ पर बैठी हुई थी, रो रही थी। उसका बाप उसे बाहर की ओर घसीट रहा था।

ताओ-चिङ बाहर ही खड़ी उलझन में एकटक देखती रही जबकि हेई-नी चीख़ पुकार रही थी, "इतना निर्दयी मत बनो, दादा। मुझे बाहर मत निकालो, माँ... तुम लोग भूखों नहीं मरोगे, और न ही मैं..."

हेई-नी की माँ काङ पर बैठी थी, उसके चेहरे से आँसुओं की धार बह रही थी। आख़िरकार, अपनी एकमात्र लड़की की तरफ़ से दूसरी ओर रुख़ करती हुई वह चीख़ पड़ी।

"अगर तुम नहीं गयी तो हम तीनों भूखों मर जायेंगे। तुम एक समझदार लड़की हो। तुम वहीं वापस चली जाओ, जहाँ की हो। ज़मींदार ने हमारी फ़सल लगान में ले ली है, कुछ भी तो नहीं बचा है। पिछले हफ़्ते तो हमारे पास चोकर और सब्ज़ियाँ थीं भी, अब तो हमारे पास पत्तियाँ और छाल तक नहीं हैं। उसकी आवाज़ टूट गयी और वह आगे न बोल सकी।"

हेई-नी का बाप उसकी बाँहें खींचे हुए था। "बेहतर होगा कि तुम चली जाओ बच्ची। हम सभी भूखों मर जायेंगे, अगर तू रह गयी।"

भुखमरी के आगे हेई-नी के माँ-बाप ने उसे, जब वह सात वर्ष की थी, तभी बालिका वधू के रूप में एक छोटे व्यापारी के हाथों बेच दिया था। उसके घर गृहस्थी में उसे एक नाकारा जानवर समझा जाता, उसे पीटा जाता और गालियाँ दी जातीं, इसलिए हर बार जब वह अपने माँ-बाप से भेंट करने आती, तो वापस जाने से इन्कार करने लगती। उसको न खिला-पिला सकने के कारण उनके पास इसके सिवाय दूसरा कोई चारा न था कि वे अपने दिल कड़े कर लें और उसे ज़बरदस्ती वापस भेज दें।

अब वह सुबक रही थी, उसके दुबले-पतले कन्धे उसकी जीर्ण-शीर्ण जैकेट के नीचे काँप रहे थे, उसकी बड़ी-बड़ी आँखें ऐसे दयनीय लग रही थीं जैसे उस बछिया की आँखें हों, जो कसाई-घर की ओर हाँकी जा रही हो। कष्ट ने इस बारह वर्ष की बच्ची को उम्र से ज़्यादा बूढ़ी कर दिया था, वह फिर अपने माँ-बाप के सामने गिड़गिड़ायी।

"दादा! माँ! अपनी ही बच्ची को नर्क में वापस लौटने के लिए ज़बरदस्ती मत करो। वे मुझे पीट-पीट कर ही मार डालेंगे, अगर उन्होंने मुझे इससे पहले ही भूखों नहीं मार दिया तो। दया करो! दया करो!"

उसकी माँ ने बेटी पर एक निराशाभरी दृष्टि डालने के बाद अपना चेहरा दीवार की ओर सिसकते हुए, फिरा लिया, "मेरे दिल के टुकड़े। बेहतर हो कि तुम चली जाओ।...जब बसन्त आयेगा, जब पेड़ों पर कलियाँ आ रही होंगी...जब घास और खेत हरे-भरे हो जायेंगे...तब हमारे पास फिर खाने को हो जायेगा, तब हम तुम्हें वापस बुला लेंगे..."

अब चेङ तेह-फू भी, जो चालीस वर्ष का एक हट्टा-कट्टा किसान था, अपने आँसू न रोक सका। माँ-बाप दुख से बिलख रहे थे, मानो उनका हृदय फट जायेगा, लेकिन भुखमरी के आतंक ने बाप के हृदय को कठोर बना दिया था। उसने उस दुबली बालिका को अपने कन्धे पर उठाया और बिना अपने आँसू पोंछे या सिर घुमाये, बाहर चल दिया। यद्यपि हेई-नी चिल्लायी और संघर्ष किया, लेकिन वह इतनी कमज़ोर थी कि अपने को मुक्त न कर सकी। ताओ-चिङ उनके पीछे-पीछे तब तक चलती रही जब तक कि वे एक पहाड़ी की ओर नहीं घूम गये। बाप और बेटी जल्द ही आँख से ओझल हो गये, और वह फफक-फफककर रो पड़ी।

ताओ-चिङ तब से न तो हेई-नी को कभी देख ही पायी, और न उसकी कोई ख़बर ही सुन पायी। अब किस वजह से उसके बाप को जो बुद्धू चेङ कहा जाता था, मानो उसका कोई अपना नाम ही न हो – मध्य होपेई के इस छोटे प्रमण्डल में ला दिया था, फिर हेई-नी और उसकी माँ कहाँ थी?

ताओ-चिङ अतीत की इन घटनाओं को याद कर सो न सकी, जो अब भी उसके ख़ून को सर्द बनाये दे रही थी – चेङ ने उसकी ओर ऐसे दहकती नज़रों से देखा था जैसे वह उसकी दुश्मन हो। दुख और चिन्ता से सराबोर वह कामना करने लगी कि च्याङ हुआ या मौसी ली आ जाती और उसे बताती कि वह क्या करे, अथवा वे उसे इस घृणित ज़मींदार-परिवार से दूर ले जाते।

मौसी ली चार या पाँच दिन बाद शाम का धुँधलका घिरते ही आ भी गयी। उसके धूसर बाल सफ़ाई से कंघी किये हुए थे, उसके घर की बुनी हुई जैकेट और काली सूती पतलून पर कोई धब्बा न था। ताओ-चिङ उसे देखकर प्रमुदित हो गयी। वे उस रात उसी कमरे में सोयीं, और बिस्तर पर लेटे-लेटे मन्द स्वर में बतियाती

रहीं।

"क्या सुङ तुम्हें पसन्द करता है, बिटिया?" अधेड़ महिला का पहला सवाल था।

"श्रीमती सुङ और उस बूढ़े आदमी के अलावा बाक़ी सभी पसन्द करते हैं।"

"क्यों नहीं? तुम्हें उनको भी ख़ुश करने के लिए कोई कसर नहीं छोड़नी चाहिए।"

"वैसे वे मेरे साथ पहले से काफ़ी बेहतर बरताव कर रहे हैं। तुम नहीं जानती कि जब मैं पहले-पहल यहाँ आयी तो कितनी भद्दी निगाहों से वेन-ताई की माँ ने मुझे देखा था और तब चाची चेन..." ताओ-चिङ ने उस बूढ़ी नौकरानी के साथ के अपने अनुभव को याद किया।

"मैं समझ गयी!" मौसी ली हँसी। "दरअसल वेन-ताई की माँ ईर्ष्यालु हो गयी थी, जब उसने देखा कि तुम एक ख़ूबसूरत लड़की हो। बेहतर होगा कि तुम समय-समय पर जाकर उसके साथ गपशप किया करो और यह संकेत दो कि तुम एक स्नेहिल हृदया हो। तब वह तुम्हारे प्रति कुछ अधिक बेहतर महसूस कर सकती है। वह बूढ़ा तुम्हें क्यों पसन्द नहीं करता है?"

"क्योंकि वह निहायत मक्खीचूस है! दस युआन का हाथ से निकल जाना उसे व्यथित करता है। फिर भी वह अपने पोते-पोती को पढ़वाना चाहता है। उसने एक गवर्नेस को लगा रखा है, क्योंकि गाँव के स्कूल की उसकी नज़र में कोई उपयोगिता नहीं है, लेकिन मुझे पैसा देने में उसकी जान निकलती है।"

"तो यह बात है!" मौसी ली ने एक क्षण सोचा। "तब दो युआन कम ही लेने के लिए कहने की कोशिश क्यों नहीं करती?"

ताओ-चिङ मोलियर के नाटक 'ल आव्रे' को याद करके हँसी। अगर कोई आदमी, जो हज़ारों माऊ का मालिक हो और एक-एक पाई को इतना महत्त्व देता है, तो वह निश्चय ही बहुत ख़ुश होगा, अगर कोई उसके सामने दो युआन कम लेने का प्रस्ताव करे।

"मुझे ख़ुशी है कि तुम आ गयी, मौसी।" वह बोली। "मैं तुम्हारी सलाह मानूँगी। लेकिन वास्तव में मैं यहाँ रहना नहीं चाहती। इसका कोई फ़ायदा नहीं है।"

"क्यों नहीं?" उसका मन्द स्वर उसकी खिन्नता को चूर-चूर करता प्रतीत हुआ। "अगर इससे कोई फ़ायदा न होता, तो तुम्हें यहाँ रहने को कहा ही नहीं गया होता। मेरी बच्ची, किसान जितना कुछ झेल सकते हैं वह सब ज़मींदारों से झेल चुके हैं। गेहूँ की कटाई को लेकर एक संघर्ष होने वाला है। तुम जानती हो कि बूढ़ा सुङ और उसका बेटा प्रमण्डल के सभी बड़े आदमियों के सम्पर्क में है। तुम अधिक से अधिक जितना हो सके, उन सभी के बारे में जानकारी हासिल करो, तुम्हारी जानकारी हमारे काम में मदद करेगी। बेशक यह आसान काम नहीं है। तुम्हें किसी

कीमत पर उन्हें तुम्हारे बारे में सन्देहशील नहीं होने देना है, तुम्हारा असली परिचय तो और भी नहीं ज़ाहिर होना चाहिए..." उसने ताओ-चिङ का हाथ कसकर पकड़ लिया। "यह एक भारी ज़िम्मेदारी है, प्यारी!"

ताओ-चिङ ने अपनी दोस्त की मज़बूत, खुरदुरी उँगलियों को मुट्ठी में दबाते हुए काँपते स्वर में जवाब दिया। "मैं तुम्हारा आशय जानती हूँ मौसी। लेकिन मुझे भय है...यह मेरी शक्ति से बाहर है।"

"क्यों?" तीखा सवाल किया गया। "क्या तुम इससे सहमत नहीं हो?"

ताओ-चिङ को चेङ तेह-फू के साथ हुई अपनी अप्रत्याशित मुलाक़ात के बारे में मजबूरन बताना ही पड़ा। "मैं नहीं जानती कि वह क्यों मुझसे नफ़रत करता है," उसने असमंजस में कहा। "जब मैं छोटी थी तो वह मुझे बहुत चाहता था। वह मेरा नाम जानता है...वही, जिससे मैं तिङसिएन में जानी जाती थी। अब सोचो तो, मौसी ... मैं क्या करूँ?"

एक लम्बे समय तक कोई जवाब नहीं आया, और उस अधेड़ महिला की अनवरत साँसे ऐसे चल रही थी, मानो वह सो रही हो। ताओ-चिङ का दिमाग़ विक्षुब्ध था। ये जटिल नयी स्थितियाँ उसके लिए विकट थीं। उसने अपने को एक ऐसी पत्ती की भाँति महसूस किया जो एक प्रचण्ड आँधी द्वारा बवण्डर में उड़ा दी गयी हो। कोई प्रत्युत्तर न पाकर, फिर उसने ही पहल करने का साहस किया :

"मौसी..."

"क्या है?" यह प्रखर प्रत्युत्तर ही इस बात का संकेत था कि यह पूछने वाली वह महिला इस पूरे समय में विस्तारपूर्वक सोचती रही है।

"अतीत पर नज़र डालते हुए मुझे बताओ बच्ची, उसके सम्बन्ध में तुम क्या सोचती हो?"

"चेङ तेह-फू के सम्बन्ध में?"

"हाँ। तुम उसके बारे में क्या महसूस करती हो?"

"हाँ, यह सच है कि मेरे माँ-बाप ने उसका शोषण किया था, लेकिन मैंने तो कभी किया नहीं...उन्होंने मेरे साथ भी तो बुरा ही सलूक किया था।"

"यह तो वह बात है जो तुम्हारी नज़र से दिखायी देती है," एक विराम के बाद उत्तर मिला। "इसे उसकी नज़र से देखने की कोशिश करो। याद रखो, तुम उसके पुराने ज़मींदार की बेटी हो।" अब ताओ-चिङ के ख़ामोश हो जाने की बारी थी। एक अचानक अवसन्न कर देने वाली टीस उठी, जब उसे अपनी स्वयं की घृणित क्षुद्रता का अहसास हुआ। क्षोभ का बोध और भी गहरा हो गया, क्योंकि यह सीधे उसका दोष नहीं बल्कि एक ज़मींदार परिवार से सम्बन्धित होने का परिणाम था। वह बोल न सकी।

अधेड़ महिला उसके विचारों को पढ़ती हुई प्रतीत हुई, क्योंकि उसने लड़की

के बालों को सहलाया और मृदुता से कहा, "मैं तुम्हें एक कहानी बताऊँगी बच्ची, जिससे तुम्हें समझने में मदद मिलेगी। तुम मेरे बेटे युङ-कुआङ को जानती हो, वह एक ज़िद्दी लड़का था...जब वह सिङ त्से-त्साई के यहाँ काम कर रहा था, तो ज़मींदार की लड़की ने अपनी टोपी उसके सिर पर रख दी। वह अट्ठाईस वर्ष की थी, और उसका बाप उसके लिए कोई उपयुक्त वर नहीं तलाश सका था। वह मेरे लड़के पर रीझ गयी...हाँ, वह ख़ूबसूरत, तथा घनी भौंहों और बड़ी-बड़ी आँखों वाला हट्टा-कट्टा था। और थी तो वह भी उसके लिए अच्छी ही। वह उसके लिए जूते और मोज़े बना देती, उसके स्वास्थ्य की चिन्ता करती और कई एक बार तो, जैसाकि परी कथाओं में होता है, बढ़िया शराब और खाना उसके काङ पर चुपके से पहुँचा आती। जब मेरा बेटा शाम को अपने कमरे में वापस आता, लेकिन वह बिना यह पता लगाने की ज़हमत उठाये कि ये चीज़ें कहाँ से आती थीं, उन्हें खा लेता। बाद में जब उसे सच्चाई मालूम हुई, तो वह उन्हें सुअरों को फेंक देता, यह कहते हुए कि ज़मींदार की लड़की उसके वर्ग की नहीं है – वह उसके साथ कोई सरोकार नहीं रखेगा। वह सच था कि वह लड़की बुरी नहीं थी। वह काश्तकारों और खेत-मज़दूरों के साथ अपने बाप से बेहतर व्यवहार करती थी, लेकिन मेरा बेटा प्लेग की भाँति उससे दूर भागता था।"

"तब क्या तुम मुझे ज़मींदार वर्ग की लड़की समझती हो मौसी?" ताओ-चिङ का स्वर काँप रहा था।

"नहीं, नहीं।" मौसी ली ने कसकर उसका हाथ पकड़ लिया। "जब मेरे भानजे ने तुम्हारी देख-रेख करने के लिए मुझसे कहा, तो उसने मुझे बताया कि तुमने अपने ही वर्ग से विद्रोह किया है और तुम अपना जीवन क्रान्ति के लिए समर्पित करने की इच्छुक हो। क्यों, मैं तो तुम्हें अपनी ही बेटी जैसी समझती हूँ...इतनी भावुक न बनो। मैं अपने लड़के की कहानी तुम्हारे पर उलाहने की उँगली उठाने के लिए नहीं कह रही हूँ। मेरे कहने का आशय यह है कि तंगहाल व्यक्ति सभी उत्पीड़कों और उनके सम्पूर्ण वर्ग से घृणा किये बग़ैर नहीं रह सकता। इसलिए चेङ तेह-फू को तुमसे घृणा करने के लिए दोष मत दो। उसे कैसे पता चलता कि तुम बदल गयी हो, और अब उसी की तरफ़ हो?"

ताओ-चिङ के लिए यह साधारण रात न थी, बल्कि सर्वाधिक कटु आत्मावलोकन वाली रात थी, यह उन सर्वाधिक पीड़ादायी रातों में से एक थी जिनका उसने कभी अनुभव किया था। लू चिआ-चुआन जैसे क्रान्तिकारियों के निर्देशों का अनुसरण करके, और वर्ग-संघर्ष पर कुछ मार्क्सवादी-लेनिनवादी पुस्तकों को पढ़कर वह सोच बैठी थी कि वह उत्पीड़ितों के पक्ष में हो गयी थी, और अपनी वाजिब सर्वहारा स्थिति प्राप्त कर चुकी थी। यह तो एक दूसरे ज़मींदार परिवार में जाकर रहने की आवश्यकता थी, जिसने यह उद्घाटित कर दिया कि उसकी

वर्ग-संघर्ष की समझदारी और शोषकों के प्रति उसकी घृणा एकदम अकादमिक थी। चेंग तेह-फू घर से इतनी दूर क्यों भाग आया था? किस चीज़ ने उसे इतना कंगाल और इतना ख़स्ताहाल बना दिया था? निस्सन्देह, उसके पिता का क्रूर व्यवहार ही इसकी जड़ में था। तब स्वयं उसकी अपनी स्थिति क्या थी? वह वास्तव में कहाँ अवस्थित थी? अपनी सहचरी की अनवरत साँसों को पड़े-पड़े सुनती हुई ताओ-चिङ ने चिन्तातुर होकर विचार किया। "मैं बस एक निम्न-पूँजीवादी क्रान्तिकारी भाववादी हूँ। मैं गुलाबी हूँ, जबकि वर्ग-संघर्ष दहकता हुआ सुर्ख़ लाल है। ज़मींदार वर्ग...शोषक वर्ग...ने मेरे ऊपर एक सफ़ेदपोश का ठप्पा लगा दिया है. ..एक ऐसा ठप्पा जिसने मेरी आत्मा पर गहरा निशान छोड़ दिया है। यही कारण है कि मैं चेङ तेह-फू की सख़्त नज़र को बरदाश्त नहीं कर पाती और उससे इतनी अधिक घृणा करती हूँ... आह ताओ-चिङ, यह कैसी वर्ग-भावना है?"

पहले कभी उसने ऐसी बेधने वाली आत्मालोचना नहीं की थी। अपने बुर्जुआ दृष्टिकोण के अहसास से उसका हृदय दुखने लगा। उसने अपने दाँत पीस लिये और अपनी बग़ल में सोयी महिला को देखा, उसे उसकी राजनीतिक सत्यनिष्ठा और दृढ़ बेलाग अवस्थिति पर ईर्ष्या हो रही थी। कैसे उसने इसे प्राप्त किया? वह कोई पढ़ी-लिखी महिला न थी, और कभी उसने मार्क्सवादी सिद्धान्तों का अध्ययन नहीं किया था। हाँ यह वर्ग में पैदा होने का मामला ज़रूर था। इस तथ्य ने, कि मौसी ली एक अत्यन्त उत्पीड़ित वर्ग में पैदा हुई थी, उसे यथार्थ का डटकर सामना करने में, और वर्ग-संघर्ष को समझने में समर्थ बना दिया था, जबकि स्वयं ताओ-चिङ कोमल-हृदय, कमज़ोर, और निर्मम संघर्ष से भयभीत थी। उसने अभी तक एक ज़मींदार की बेटी होने की झूठी गरिमा को उतार नहीं फेंका था, और न स्वयं को यातनापूर्ण ढंग से सताये गये काश्तकारों के प्रति विनम्र ही बनाया था..." अँधेरे में उसे लगा कि वह हेई-नी को देख रही है, पहले ही जैसी प्यारी और छरहरी, जो उसकी ओर उत्कण्ठा और स्नेह से देख रही हो। ताओ-चिङ का हृदय प्रफुल्लित हो गया, जब उसे अपने बचपन की दोस्ती याद आयी। लेकिन अगले ही क्षण हेई-नी की सौम्य आँखें भयग्रस्त सफ़ेद गोलकों में रूपान्तरित हो गयीं, जिनमें एक नफ़रत भरी चमक थी... ताओ-चिङ ने मन की एक असह्य दुश्चिन्ता में अपने आँखें खोल दीं।

"हेई-नी कहाँ है? क्या वह अब भी जीवित है?" एक बार फिर उसे अपनी आख़िरी मुलाक़ात की त्रासदी याद हो आयी। "हेई-नी क्यों इतना ज़ार-ज़ार होकर विलाप करती थी? क्यों उसके माँ-बाप उसे अपनी ससुराल वापस चले जाने के लिए ज़ोर दे रहे थे? क्यों एक सात वर्षीय बच्ची को बालिका-वधू बनना पड़ा था?" ताओ-चिङ ने हमेशा ही अपने बाप और अपनी सौतेली माँ से अपने और अपनी माँ के प्रति किये गये दुर्व्यवहार के कारण घृणा की थी। अब पहली बार उसने उनसे

उस दुर्व्यवहार के नाते घृणा की, जो उन्होंने दूसरों के साथ किया था। अन्ततः एक वाजिब वर्ग-घृणा ने उसे ज़मींदार वर्ग से और सभी दूसरे उत्पीड़क वर्गों से तहेदिल से घृणा करना सिखा दिया। वह उस छाप से भी घृणा करने लगी जो उसके ऊपर उसके वर्ग द्वारा छोड़ी गयी थी।

——:o:——

अध्याय 9

अगली सुबह मौसी ली को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि ताओ-चिङ का चेहरा पीला हो गया था और उसकी आँखों के नीचे स्याह गड्ढे पड़ गये थे।

"क्या तुम आज स्वस्थ नहीं हो बच्ची?" उसने पूछा।

ताओ-चिङ ने सिर हिलाया और शर्माते हुए जवाब दिया, "मैं पिछली रात सो नहीं सकी। मैं..." उसने अपना सिर लटका लिया। आँसू की दो बड़ी बूँदें उसकी जैकेट पर टपक पड़ीं। एक क्षणिक विराम के बाद वह आगे बोली, "मैं तुमसे वादा करती हूँ मौसी, मैं...मैं स्वयं को दिल से मज़दूर-वर्ग के प्रति समर्पित कर दूँगी..."

एक मृदु मुस्कान, जिसको ताओ-चिङ ने पहले कभी न देखा था, अधेड़ उम्र के झुर्रीदार चेहरे पर खिल उठी। उसने लड़की का हाथ थाम लिया, खिड़की से बाहर यह आश्वस्त हो लेने के लिए नज़र डाली कि कोई सुन तो नहीं रहा है, और कहा, "मैंने तुम्हें चोट पहुँचायी बच्ची, लेकिन तुमने इसका बुरा नहीं माना...चलो, जो हुआ अच्छा ही हुआ। यह साबित तो हो गया कि मेरा भानजा सही था, जब उसने कहा था कि क्रान्ति को ऐसे नौजवान लोगों की ज़रूरत है जो सीखने के लिए तुम्हारे जैसे उत्सुक हों। लेकिन एक चीज़ मुझे ज़रूर पूछ लेनी चाहिए।" पुनः उसने खिड़की से बाहर देखा और अपना स्वर धीमा कर दिया।" क्या श्री वाङ ने तुमको खेत-मज़दूरों के बीच कुछ काम करने के लिए नहीं कहा था? तुमने अभी तक शुरू नहीं किया है, है न? तुम्हारी योजनाएँ क्या हैं?"

एक शर्मिन्दगी भरी नज़र से ताओ-चिङ ने जवाब दिया, "जब से मैं चेङ तेह-फू से मिली हूँ तब से बेहद अस्त व्यस्त ही रही हूँ। मैंने उसके साथ काम शुरू करने की सोची थी..." उसने सामने के कमरे की ओर एक इशारा किया। "मेरा मतलब है, चाची चेन के साथ। लेकिन बहुत आगे तक जाने की मेरी हिम्मत नहीं पड़ी, क्योंकि वह सुङ परिवार वालों के बहुत क़रीब मालूम पड़ती है।"

"वह पूरी तरह से एक नौकरानी ही है। और वह तुमसे बहुत बुरा बरताव करती भी नहीं लगती, और न ही वह सुङ परिवार वालों की इच्छा की कठपुतली लगती है। पहले उससे दोस्ती करने की कोशिश करो, फिर उसमें राजनीतिक दिलचस्पी पैदा करने के लिए अवसर की तलाश करो। यह एक भारी मदद होगी, अगर तुम

उसे अपने पक्ष में कर लो। हालाँकि बहुत जल्दबाज़ी मत करना। बहुत सावधान रहना। यह तुम्हारे लिए बढ़िया प्रशिक्षण होगा।"

ताओ-चिङ ने स्वीकृति में सिर हिलाया। यह देखकर कि वह महिला अपने थोड़े से सामान को सहज रही थी, उसने चिन्तित होकर पूछा :

"क्या तुम जा रही हो मौसी? ज़रूरत पड़ने पर मैं कैसे तुमसे सम्पर्क कर सकती हूँ?"

"क्या तुम सू मान-तुन को जानती हो?"

ताओ-चिङ को कुछ आश्चर्य हुआ। "वह गुच्छेदार बरौनियों और बड़ी-बड़ी आँखों वाला गाड़ीवान?"

"हाँ, वही आदमी। तो तुम उसे पहले से जानती हो, है न?" वह खिड़की के पास गयी और एक बार पुनः कान लगाकर सुना। सौभाग्य से श्रीमती सुङ बीमार थी और चाची चेन दिन निकलने से पहले ही उसकी तीमारदारी करने चली गयी थी। इसने उन्हें बातचीत करने का बढ़िया मौक़ा दे दिया।

"उससे सम्पर्क करो," मौसी ली ने बताया। "और वही करो जो वह कहे। लेकिन दूसरों को शुबहा मत होने दो कि तुम लोगों के बीच कोई सम्पर्क है। बस, इतना ही कहना था, अब मैं चलूँ। बस याद रखना तुम्हारा पहला काम सुङ परिवार से बढ़िया ताल्लुक़ात बनाये रखना है, और यह निगरानी करते रहना है कि वे क्या कर रहे हैं। दूसरा यह कि, तुमें चाची चेन से दोस्ती कर लेनी है और उसकी राजनीतिक चेतना को जागृत कर देना है। तीसरा काम यह है कि तुम्हें अपनी वर्ग अवस्थिति को पूरी तरह से बदल डालना है, ताकि चेङ तेह-फू तुम से घृणा करना बन्द कर दे। सू मान-तुन उससे तुम्हारे बारे में कुछ बता भी सकता है, लेकिन यह बहुत कुछ तुम्हारे ही ऊपर निर्भर है।"

"तुम कितनी अच्छी हो मौसी!..." ताओ-चिङ ने इस सलाह की ख़ातिर उसकी ओर कृतज्ञता से भर कर देखा।

अधेड़ महिला के विदा होने के बाद, ताओ-चिङ ने सू मान-तुन के साथ अपनी पहली मुलाक़ात को याद किया जिसके मातहत उसे आने वाले दिनों में काम करना था। वह बहुत विनोदी स्वभाव वाला था। यहाँ आने के एक दिन बाद ही, जब वह अपराह्न में वेन-ताई के साथ टहल रही थी, तो उसने गुच्छेदार बरौनियों, बड़ी-बड़ी आँखों और मज़बूत क़द काठी वाले क़रीब तीस वर्षीय आदमी को देखा था। वह कुएँ से पानी खींच रहा था, लेकिन उनके निकट पहुँचते ही वह वेन-ताई के पास पहुँच गया था, "छोटे मालिक! तुम सुङ परिवार की एकमात्र आशा हो। कुएँ के बहुत क़रीब न आओ; यह ख़तरनाक है!" यही सू मान-तुन था। उसकी चेतावनी के बावजूद, वेन-ताई झट कुएँ की मुँडेर के पत्थर पर कूद कर चढ़ गया था। तब उसने लड़के को पकड़ लेने और तंग करने के लिए काम बन्द कर दिया

था। "तुम्हारे लिए कितनी पत्नियाँ तुम्हारे बड़े दादा लायेंगे, छोटे मालिक? मैं जानता हूँ। तुम अपनी पत्नियों और रखैलों के लिए पुराने ज़माने के बादशाहों की भाँति तीन महल और छह प्रकोष्ठ रखोगे। हाँ, तुम्हारी यह हवेली उन छह प्रकोष्ठों के लिए बड़ी और बढ़िया है। अब तुम्हें यह करना चाहिए कि तीन महल बनवाओ।"

ताओ-चिङ इस खेत-मज़दूर के चुटीले विनोद से दंग रह गयी थी।

"मैं कोई पत्नी नहीं चाहता..." एक हँसी के साथ लड़का सू मान-तुन के ऊपर टूट पड़ा था और उसे हाथापाई के लिए ललकारा था क्योंकि वह खेत-मज़दूर कुछ मुक्केबाज़ी भी जानता था। मज़ाक़ में मुक्केबाज़ी करते हुए वे ताओ-चिङ को भूल गये थे। लेकिन जब सू की निगाह उस पर पड़ी थी, तो उसने उसकी बेबाक, स्नेहिल आँखों में संशय देखा था। वह बोलना चाहती थी, लेकिन नहीं जातनी थी कि क्या कहे, कदाचित वह उसकी संशय भरी नज़रों से अचकचा गयी थी। सुङ परिवार में आने के बाद से वहाँ के विचित्र परिवेश ने और किसी ऐसे दोस्त के अभाव ने जिससे कि वह खुलकर बात कर सकती थी, उसे उदास कर दिया था। अब जबकि वह जानती थी कि सू मान-तुन उसके साथ काम करेगा, उसने प्रसन्नता महसूस की। लेकिन आत्मालोचना की उस पीड़ादायी रात ने उसके मन को इस तरह से हल्का कर दिया था, मानो वह स्वयं अपने विकृतकारी अवशेषों से मुक्त हो गयी हो।

उस दिन पढ़ा लेने के बाद, वह वेन-ताई को रोज़मर्रा की तरह टहलाने ले गयी। उसे आशा थी कि सू मान-तुन से मुलाक़ात हो जायेगी, लेकिन वह कहीं दिखायी नहीं दिया। वह हाल ही में परिसर के बाहर गाड़ी हाँकने और दूसरे कार्यों को करने में व्यस्त हो गया था। उसने चेङ तेह-फू से थोड़ा-सा भी दुराव न रखने, और अपने तहे-दिल से उसे प्यार करने का संकल्प लेकर उससे मिलने का निश्चय किया।

गवर्नेस के रूप में ताओ-चिङ घूमने फिरने के लिए काफ़ी आज़ादी पा जाती थी, कारण कि वेन-ताई घर से बाहर खेलना पसन्द करता था। वह अपने पाठ ख़त्म करके बाहर जाने की फ़िराक़ में रहता था, और उसके माँ-बाप और बड़े दादा भी इसकी स्वीकृति दे देते थे। वे अधिकतर परिसर से बाहर फलोद्यान में जाते थे, जहाँ चेङ तेह-फू रहता था। फलोद्यान में भाँति-भाँति के फलदार वृक्ष और बौने पोपलर के पेड़ थे। वहाँ एक छोटा-सा नाला भी था, और वेन-ताई भृंग कीट पकड़ने या फल तोड़ने के लिए पेड़ पर चढ़ने का मज़ा लिया करता था। आज जैसे ही वह एक पेड़ पर चढ़ा वह चेङ तेह-फू को खोजने पीछे के प्रांगण में खिसक गयी। उसने गुज़रते हुए उसकी झोंपड़ी में झाँका, और उसे काङ पर बैठकर हुक़्क़ा पीते हुए देखा।

वह हाँफते हुए उस अँधेरे कमरे में तेज़ी से घुस पड़ी, मानो कोई उसका पीछा कर रहा हो।

"क्या तुम मुझे नहीं जानते चाचा चेङ?"

"ऐ?" उसने अपने मुँह से हुक्क़ा हटाया और राख झाड़ दी। उसके बाद अपना सिर उसकी ओर घुमाकर उसने धीरे-से पूछा, "तुम यहाँ क्या चाहती हो?" उसका खुश्क, उदासीन लहज़ा उसे ऐसे लगा, जैसे अचानक उस पर ठण्डा पानी पड़ गया हो, और उसका गला रुँध गया। उसी समय एक तीखी, फफूँदी जैसी गन्ध से उसकी साँस घुटने लगी, वह कमरे की गन्ध थी, जहाँ कभी धूप नहीं जाती थी और पसीनायुक्त, चिपचिपी रज़ाई वर्षों से नहीं धुली थी। चेङ के ठण्डेपन ने और उसके साथ इस सड़ाँध भरी बदबू ने मिलकर ताओ-चिङ को अपने पहले फ़ैसले से विचलित-सा कर दिया। लेकिन वह इतना ही कर सकी कि निकल नहीं भागी, बल्कि बलात अपने को एकदम स्वाभाविक ढंग से बोलने के लिए तैयार भी किया।

"क्या तुम हेई-नी के पिता नहीं हो? वह अब कैसी है?"

"हेई-नी!" के नाम से चेङ तेह-फू के शरीर में एक फुरफुरी दौड़ गयी। उस मद्धिम रोशनी में, जो छोटी चौकोर खिड़की से छनकर प्रवेश कर रही थी, ताओ-चिङ ने देखा कि उसका चेहरा पीला पड़ गया था, और उसकी भयभीत सफ़ेद गोलकों वाली आँखें ऐसी लग रही थीं, मानो वे उसे एक भयमिश्रित आवेग से देख रही हों। वह डरी और चौंकी कि क्या कोई ग़लती हो गयी, क्यों उसकी बेटी के नाम से उसमें इस तरह का परिवर्तन हो गया था?

"कुछ बताओ तो सही!" धैर्य बनाये रखते हुए ताओ-चिङ ने अपना सवाल दोहराया, "मैंने पूछा था क्या तुम्हारी बेटी, यानी मेरी सहेली हेई नी ठी-ठाक है?"

एक लम्बे समय तक चेङ तेह-फू ख़ामोश बना रहा। उसके बाद उसने एक काँपता हाथ दरवाज़े की ओर संकेत करने के लिए उठाया, और जंहोल लहज़े में, एक मन्द, फटे स्वर में बोला :

"उस नाम का ज़िक्र मत करो, कुमारी जी। बाहर चली जाओ। तुम यहाँ की बदबू बरदाश्त नहीं कर सकोगी।"

इन कटु-उक्तियों ने ताओ-चिङ को भीतर तक बेच दिया। उसने मानो स्वप्नवत होकर वह कमरा छोड़ दिया, उसे यह भान भी नहीं था कि उसकी आँखों में आँसू उमड़ आये थे।

एक बार फिर वह वेदना और विक्षोभ में डूब गयी। उसने अपने बाप और अपनी सौतेली माँ के साथ, यू युङ-त्से और हु मेङ-ऐन के साथ बिना किसी हताशा या भय के संघर्ष किया था, लेकिन इस गाँव में उसने इस तरह से कभी चोट नहीं खायी थी और नहीं अपमानित हुई थी, जिस तरह से इस बूढ़े खेत-मज़दूर से हुई, जो पहले स्वयं उसी के परिवार का काश्तकार और उसकी सहेली का बाप रह चुका था। उसने मौसी ली से वादा किया था कि वह दिलो-जान से मज़दूर वर्ग का पक्ष ग्रहण करेगी। फिर भी, इस प्रथम झिड़की ने उसे अरुचि और निराशा से भर दिया था, और उसने महसूस किया कि इस अवरोध को तोड़ना लगभग

असम्भव होगा।

उस शाम जब चाची चेन अपना काम ख़त्म कर चुकी, तो ताओ-चिङ अपने भारी मन के बावजूद उसके कमरे में गयी।

"तुम ज़रूर थक गयी होगी चाची, तुम रोज़ बहुत सवेरे उठ जाती हो और बहुत देर से सोती हो!" ताओ-चिङ काङ के कोर पर बैठ गयी, और उसे एक सिगरेट का पैकेट थमा दिया।

चाची येन ने इस तोहफ़े को खुशी से यह कहते हुए स्वीकार किया, "अरे, तुम्हें इसे नहीं लाना चाहिए, कुमारी चाङ! मेरे लिए तो हुक्क़ा ही काफ़ी है।" उसने एक सिगरेट जलायी। "मुझे थकी समझती हो? हाँ मैं थकी हूँ। भला मैं कैसे नहीं थक सकती हूँ? श्रीमती सुङ एक अच्छे खाते-पीते परिवार से आयी हैं और वह मुझसे ढेर सारी अपेक्षाएँ करती हैं। वह जितना धुलाई और सिलाई चाहती हैं, उसका कोई अन्त नहीं है, और इसका तो कुछ कहना ही नहीं है कि किस तरह से मुझे उनके इशारे और बुलाने पर उनको कपड़े पहनाने और उनके बाल सँवारने के लिए, भाग-दौड़ करनी पड़ती है!"

"फिर भी, वह बुरे मिज़ाज की नहीं हैं, है न? लगता है वह तुम्हारे साथ एकदम ठीक-ठाक बरताव करती हैं।"

चाची चेन ने ताओ-चिङ पर नज़र डाली और गहरी साँस खींची। "वह ठीक-ठाक तभी रहती हैं जब वह अच्छे मूड में होती हैं लेकिन जब वह भड़क उठती हैं तो..." वह यकायक रुक गयी, उसकी गहरे धँसी आँखें सामने की ओर शून्यभाव से घूरने लगीं। एक लम्बे समय के बाद उसने अपनेआप को झकझोरा और बुदबुदायी।

"अगर मेरा बूढ़ा ज़िन्दा होता...अगर मेरा बेटा ज़िन्दा होता...तो मैं यहाँ नहीं आयी होती।"

"क्या तुम्हारा बेटा था चाची?" ताओ-चिङ ने नरमी से पूछा।

वह कृशकाय, झुर्रीदार चेहरा एक सेकेण्ड के लिए खिल उठा। खोयी हुई खुशी का एक क्षणिक संकेत, माँ के हृदय में बहुत पहले से छिपा एक प्यार, उसके चेहरे पर कौध गया। लेकिन यह तुरन्त ही एक असहाय वेदना और हताशा में बदल गया, जिसके नाते उसका वृद्ध स्वर काँपने लगा। "हाँ, प्यारी बिटिया, मेरा एक बेटा था। बहुत होनहार आज्ञाकारी लड़का था – देखने में भी भला था। हम ग़रीब थे, मेरा पति एक खेत-मज़दूर के रूप में काम करता था, और मैं ज़मींदार के यहाँ तरह-तरह के काम किया करती थी। इसके चलते हमें सारा दिन घर से बाहर ही रहना पड़ता था। मेरा लड़का ही एक था जो हमारी छोटी बच्ची की देखभाल किया करता था; वही जलावन की लकड़ी बीनता और परिवार के लिए खाना पकाता था। वह घर में एक मर्द के बराबर काम करता था, जबकि वह सिर्फ़ दस वर्ष का ही था। लेकिन

एक दिन...एक दिन...ऐसा आया..." आँसू उसके गालों से होकर ढुलकने लगे। "उस दिन बर्फ़ पड़ रही थी। और हौज में पानी नहीं था। हमारा बच्चा भूखा था और खाना पकाना चाह रहा था। वह कुएँ से पानी लाने के लिए अकेले ही गया, वह दस ही वर्ष का तो था! कुएँ की जगत् बर्फ़ से ढँकी हुई थी उसका सन्तुलन बिगड़ गया, और वह कुएँ में गिर पड़ा।...वह एक तूफ़ानी दिन था – हर कोई घर के भीतर बन्द था अतः कोई नहीं जान पाया कि क्या हुआ। बेचारा मेरा बेटा-मेरा बेटा..."

नैसर्गिक भावनावश ताओ-चिङ ने उस बूढ़ी औरत का हाथ कसकर पकड़ लिया। अब वह भूल गयी कि वह वर्ग-उत्पीड़न और शोषण पर बोलने के लिए तैयार होकर आयी थी, वह बस इतना ही कह सकी।

"मत रो चाची! इसे भूल जाओ। अपने को इतना विक्षुब्ध मत करो।"

चाची चेन ने अपने जैकेट की किनारी से अपने आँसू पोंछे। फिर, शान्त होकर अपनी वेदना का गुबार निकाल लेने के बाद, उसने सूजी हुई आँखों से ताओ-चिङ की ओर देखा और बोली, "कुमारी चाङ, जब मैंने तुम्हें पहली बार देखा था तभी तुम्हें अपना समझ लिया था, और वह सबकुछ तुमको बता देना चाहती थी जो मेरे हृदय में था। तुम जानती हो, इस परिवार में दस वर्षों तक काम करने के दौरान, मैंने कभी किसी के सामने अपने बेटे की मौत का ज़िक्र नहीं किया था।"

ताओ-चिङ को कहने का अवसर मिल गया, "तुम्हारी ही तरह मैंने भी दुर्दिन भोगे हैं। मेरी सौतेली माँ मेरे साथ बहुत क्रूर व्यवहार करती थी। लेकिन सभी मालिक तो धनी ही होते हैं – वे ग़रीबों की पीड़ा क्या जानें?"

"तुम ऐसी नहीं दिखती कि तुमने दुर्दिन भोगे हैं।" चाची चेन को ताज्जुब हुआ। "तुम बहुत नाज़ुक और परिष्कृत हो, और तुम तो एक विदेशी-ढर्रे के स्कूल में पढ़ चुकी हो।"

ताओ-चिङ उठ खड़ी हो गयी और लैम्प को मद्धिम कर दिया, वापस आकर वह काङ पर बूढ़ी महिला की बग़ल में बैठ गयी। "तुम ज़रूर थक गयी होगी चाची," उसने कहा। "लेट जाओ और सो लो। मैं तुम्हें अपनी कहानी किसी दूसरे दिन बताऊँगी।"

लेकिन उस महिला ने उसकी बाँह पकड़ ली। "मुझे अभी बताओ मेरी बच्ची। उसने आग्रह किया। जब हम अपने मन का गुबार निकाल देते हैं, अपने किसी नज़दीकी और प्रिय पात्र के सामने अपने दिल की बातें कह देते हैं, तो बहुत भला लगता है।"

"चाची, मुझे बहुत खुशी हुई कि तुमने मुझे अपनी बच्ची कहा।" ताओ-चिङ की भावनाएँ फिर उफ़न रही थीं। "मेरी माँ के मरने के बाद से किसी ने मुझे प्यार नहीं किया, यह तब की बात है जब मैं नन्ही बच्ची थी। हाँ, तो अगर तुम मेरी राम कहानी सुनना ही चाहती हो तो आओ दोनों लेट जायें।" वे आमने-सामने होकर

काङ पर लेट गयी और ताओ-चिङ कहने लगी।

"मेरी माँ तो तभी मर गयी थी जब मैं एक वर्ष की थी। मेरी सौतेली माँ कठोर और क्रूर थी। हमारा परिवार धनी था, अत: वह और उसका बेटा रेशम और बारीक़ से बारीक़ ऊन के लिबास पहनते थे, लेकिन मैं एक नन्ही भिखारिन की तरह रहती थी मुझे सबसे अधिक डर जाड़े के मौसम से लगता था। यद्यपि बर्फ़ जमा देने वाली सर्दी पड़ती थी, फिर भी मुझे सूती-गद्देदार जूते पहनने की इजाज़त नहीं थी और मेरे मोजों में चारों तरफ़ छेद ही छेद रहते थे। तब मैं छह या सात वर्ष की रही होऊँगी, लेकिन मुझे दौड़ते रहना पड़ता था और हर तरह के काम करने पड़ते थे। छोटी से छोटी ग़लती का मतलब था पिटाई या गालियों की बौछार। मेरी एड़ियों में ठण्ड से फटी बिवाइयाँ इतनी दर्द करतीं, इतनी दर्द करतीं कि मैं चीख़ने लगती – लेकिन वह कोई परवाह न करती। वह मुझे पहले ही जैसे आदेश देती रहती और मुझे जहाँ तक हो सकता था, भाग-दौड़ करते रहना पड़ता था... अरे, यह मुझे अब भी सालता है, चाची जब मैं अपने बचपन को याद करती हूँ। मेरे चिथड़ाये सूती कोट और लटियाये बालों में जूएँ पड़ी रहतीं, मेरे हाथ सर्दी से ठिठुरते रहते और लाल हो जाते, मेरे पाँव में छाले पड़ जाते और वे इतने सूज जाते कि मेरे जूतों में समाते ही नहीं. .."

चाची चेन ने भावविह्वल होकर ताओ-चिङ का हाथ थाम लिया और अपनी आँखों में आँसू भरकर आवेश में बोल पड़ी, "ओह, बेचारी बच्ची। तुमने कैसे दिन गुज़ारे हैं। हम ग़रीब भले हो सकते हैं, लेकिन हम कभी अपनी लड़की या लड़के को ऐसी दशा में नहीं पड़ने देते। तुम्हारी सौतेली माँ कितने कठोर हृदय की औरत रही है।"

"यह तुम्हारे लिए ग़ौरतलब है चाची! मैं तुम्हें कुछ ऐसी बातें बताऊँगी जिन्हें मैं कभी भुला नहीं पाती। एक बर्फ़ भरी शाम को, जब मैं सिर्फ़ आठ वर्ष की थी, मेरी सौतेली माँ ने मुझे एक पत्र एक आदमी को सौंपने के लिए दिया, जो मुझे अफ़ीम पीने का हुक़्क़ा देता – मुझे इसे लिये बिना वापस नहीं लौटना था। आदमी घर पर नहीं था और मुझे उसकी तलाश करते फिरना था। क़रीब आधी रात को जाकर वह मुझे मिला। भारी बर्फ़ पड़ रही थी और हवा प्रचण्ड थी। मैं उस गली में एकमात्र ज़िन्दा इन्सान थी। बेधती हुई सर्दी, अकेलेपन का भय और बेतहाशा थकान – इन सब ने मुझे इतना बेज़ार कर दिया था कि मैं चीख़ भी नहीं सकती थी। पूरी तरह से घबरायी हुई, मैं रास्ता भूल गयी और खो गयी। हम पेइपिङ के पश्चिमी भाग में रहते थे, लेकिन मैं शहर के उत्तरी भाग में भटककर चली गयी। थककर चूर, मैं एक दालान में सो जाना चाहती थी, लेकिन मैं जानती थी कि अगर मैंने ऐसा किया, तो इस भारी बर्फ़ और बर्फ़ीली उत्तरी हवा में जमकर मर जाऊँगी। अत: मैं कभी इस रास्ते पर, तो कभी उस रास्ते पर लड़खड़ाती चलती रही, मैं

चुपचाप दाँत किटकिटाती रही, लेकिन आख़िरकार, जब मैं इसे और न झेल सकी, तो लड़खड़ाते हुए मैं बिल्ली के बच्चे की भाँति किकियाने लगी। सुबह की वेला में, मुझे एक दयालु रिक्शावाला मिला, जिसने मुझे घर पहुँचाया। वहाँ मेरी सौतेली माँ मुझ पर गालियाँ देते हुए इसलिए बरस पड़ी कि मैंने लौटने में इतनी देरी क्यों कर दी थी और उसका मज़ा किरकिरा क्यों कर दिया था। वह रिक्शेवाले को पैसे देने से भी इन्कार कर गयी।"

इस दर्दीली याद से ताओ-चिङ ऐसे बिलख पड़ी मानो उसका हृदय फट जायेगा। मद्धिम रोशनी में उस पर अपनी आँखें टिकाये वह बूढ़ी नौकरानी बुदबुदायी :

"बेचारी बच्ची! बेचारी बच्ची!" वह हमदर्दी में रो रही थी।

——:o:——

अध्याय 10

दो दिन बाद शाम के धुँधलके में वेन-ताई को साथ लेकर टहलते हुए एक बग़ल वाले प्रांगण में ताओ-चिङ को सू मान-तुन मिल गया। वह पशुओं को नहलाते हुए सुङ यू-पिन से बतिया रहा था। वह उनकी बातें ध्यान से सुनने लगी।

"ज़रा बताओ, मान-तुन।" एक कृपा भरी मुस्कान सुङ के चिकने गोलमटोल मुखमण्डल पर फैल गयी। "क्या तुम्हारे खेत-मज़दूरों की स्थिति पहले से बेहतर नहीं है?"

उसने बेलन-चरखी को घुमाते हुए जवाब देने के लिए अपना सिर घुमाया, "आप कितना पहले की बात पूछ रहे हैं, जनाब? पहले का मतलब तो कोई भी समय हो सकता है।"

"हाँ, तुम ठीक कहते हो।" ज़मींदार ने स्वीकृति में सिर हिलाया। "यों कहें कि चिङ वंश की तुलना में। गणतन्त्र की स्थापना के समय से, एक नयी कर प्रणाली लागू की गयी है और सभी आदमियों को समान नागरिक अधिकार हासिल हैं। एकदम स्पष्ट है कि भाड़े के मज़दूरों का जीवन बदल गया है।"

आराम से एक पेट्रोल के कनस्तर में पानी भरते हुए सू ने एक रहस्यमयी मुस्कान के साथ अपने मालिक की ओर देखा।

"मैं नहीं जानता। बेहतर होता कि आप मेरे परदादा से पूछ लेते।"

"लेकिन तुम्हारी भी तो कोई धारणा होगी।" सुङ ने एक भद्रतापूर्ण मुस्कान बिखेर दी। "उदाहरण के लिए, क्या तुम अपने साथ मेरे बरताव और मेरे परदादा के बरताव के बीच कोई फ़र्क़ नहीं देखते?"

"हाँ, जनाब, आप बहुत मृदुभाषी है।" सू की रहस्यमयी मुस्कान से ताओ-चिङ

डर गयी कि कहीं ज़मींदार इसके पीछे छिपे व्यंग्य को भाँप न ले। सुङ बनावटी दबी हुई हँसी हँसा, उसकी आँखें सिर्फ़ छिद्र की भाँति उसके सींग की रिमवाले चश्मे के पीछे झाँक रही थी, आगे फिर उसने आग्रह किया, "कहते जाओ।"

"आप अक्सर समान नागरिक अधिकार और...श्रम की पवित्रता की बात करते है। और आप हमें पैसा उधार देते हैं, जब हम कठिनाई में होते हैं, यह सच है... मेरे परदादा के साथ आप लोगों का जैसा व्यवहार था, उसकी अपेक्षा आप मेरे साथ काफ़ी बेहतर व्यवहार करते हैं।"

सुङ ने जल्दी-जल्दी और बार-बार स्वीकृति में सिर हिलाते हुए इस विषय को यहीं ख़त्म कर देने के लिहाज़ से अपनी जेब से एक कागज़ निकाला। फिर वह मुड़ा और देखा कि ताओ-चिङ और उसका बेटा वहीं खड़े थे।

"अच्छा तो कुमारी चाङ, मैं समझता हूँ, तुमने हमारी बात सुन ही ली होगी।" वह मुस्कुराया। "मैं 'वर्तमान भूमिकर का एक अध्ययन' शीर्षक से एक लेख लिख रहा हूँ, और मैं आज के और अतीत के खेत-मज़दूरों और काश्तकारों के जीवन के बीच फ़र्क़ की जाँच-पड़ताल करना चाहता हूँ। क्या तुम इस विषय पर अपना कोई दृष्टिकोण रखती हो?"

ताओ-चिङ ने एक सरसरी नज़र उसके गोल-मटोल, चमकदार चेहरे और सींग की रिमवाले चश्मे पर डाली, जिसमें वह एक विद्वान जैसा दिखता था। वह बमुश्किल ही वैसा कुचक्री प्रतीत होता था जैसाकि श्री वाङ ने बताया था। फिर भी उसने जवाब दिया।

"मैं इस विषय को नहीं समझती, जनाब सुङ। अतः मैं इस पर कोई दृष्टिकोण नहीं रखती। मुझे तो जो चीज़ दिलचस्प लगती है, वह है अध्ययन, क्या अब भी आपको वेन-ताई और सियाओ-सू में कोई फ़र्क़ नहीं दिखायी देता?"

"मुझे यह कहने में खुशी होती है कि उनमें मैं भारी सुधार देख रहा हूँ।" वह प्रफुल्ल होकर सुङ सू की ओर मुड़ा। हम ऐसी अच्छी गवर्नेस को पाकर भाग्यशाली हैं। यहाँ तक कि मेरे पिता भी इसकी सराहना करते हैं...।" यद्यपि सुङ यू-पिन एक ज़मींदार था, फिर भी वह अपनी जागीर में कम समय देता था, और किताबों में कहीं अधिक दिलचस्पी लेने वाला माना जाता था। उसके प्रमण्डलीय क़स्बे, पाओ-तिङ या तिएनत्सिन में बार-बार आने-जाने से उसका बाप उसे फ़िज़ूलख़र्च कहा करता था।

उसने ताओ-चिङ पर आँखें झपकायीं लेकिन कहा कुछ नहीं।

"कुमारी चाङ, क्या मैं तुमसे मदद की माँग कर सकता हूँ?" ज़मींदार ने मुस्कुराकर कहा।

"कैसी मदद?" उसने चौंककर पूछा।

"मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे लिए कुछ पाण्डुलिपियों की प्रतिलिपियाँ तैयार कर

दो। मैं तुमको विश्वास दिलाता हूँ कि इससे तुम्हारे अध्यापन में कोई व्यवधान नहीं पडेगा।"

ताओ-चिङ ने पहले तो यह सोचा कि यह उसको और अधिक जानने का एक अच्छा तरीक़ा होगा लेकिन उसकी ईर्ष्यालु पत्नी की याद ने उसे हिचकिचा दिया। एक क्षण की हिचकिचाहट के बाद वह सहमत हो गयी। उसने पहले श्रीमती सुङ से राय लेने का निश्चय किया। अगर श्रीमती सुङ मंजूरी दे देती है, तो ताओ-चिङ उससे इस मसले का इन्तज़ाम करने के लिए कहेगी, जोकि वह जानती थी कि वह निश्चय ही उसकी निगरानी करेगी। यह तो हर तरह से ठीक ही रहेगा, क्योंकि भले ही श्री सुङ अच्छे आचार-विचार का व्यक्ति लगता था और लड़कियों से दूर रहने वाला समझा जाता था, फिर भी उसे हर हालत में अपना बचाव तो करना ही था।

श्रीमती सुङ इतनी चालाक थी कि उसने इस प्रस्ताव को तुरन्त स्वीकार कर लिया जैसाकि उस लड़की ने अन्देशा किया था, हर शाम जब वह अध्ययनकक्ष में जाती तो यह दुबली-पतली, पीतवर्ण वाली, परन्तु आकर्षक महिला वहाँ उपस्थित रहती। वह तब तक एक कोने में बैठी रहती जब तक कि ताओ-चिङ अपना काम पूरा नहीं कर लेती, और तब वह अपने पति के साथ अपने निजी कमरे में चली जाती।

अन्ततः एक दिन ताओ-चिङ सू मान-तुन से बात करने में सफल हो गयी, जिसका उसके प्रति दृष्टिकोण बदल चुका था। यह पूछने के बाद कि उसकी सुङ परिवार, के साथ कैसी निभ रही थी, उसने आगे सवाल किया :

"क्या बूढ़े चेङ ने तुम्हें अपमानित किया है?"

"तुम कैसे जान गये?"

"अरे, मैंने यूँही सुन लिया।" वह दो मोटे रस्सों को तार से जोड़कर बाँध रहा था, लेकिन एक क्षण बाद, आगे कहने के लिए उसने अपना सिर उठाया, "तुम तो जानती हो तो वह बूढ़ा एक बढ़िया आदमी है, ईमानदार और दयालु। हालाँकि कुछ कुछ ज़िद्दी है। तुम्हारे माँ-बाप ने उसके साथ जो बदसलूकी की थी उसके प्रायश्चित स्वरूप तुम्हें कोई न कोई उपाय तो करना ही होगा।"

ताओ-चिङ खिन्नता से तमतमा उठी और भभककर बोली, "उसके साथ मैंने क्या बदसलूकी की है?" यह सच है, एक बार वह स्वीकार कर चुकी थी कि उसके परिवार ने किसानों का खून चूसा था, लेकिन वह यह नहीं बरदाश्त कर सकती थी कि दूसरे इसको लेकर उस पर फब्तियाँ कसें।

चूँकि आस पास कोई नहीं था, इसलिए सू मान-तुन चहका और मधुरता से बोला, "नाराज़ मत हो। बेचारा बूढ़ा चेङ। बुरा मत मानो, जो मैंने कहा। धैर्य रखो समाधान निकलेगा ही।" फिर उसने एक और रहस्यमयी मुस्कान के साथ पूछा।

"नौजवान श्री सुङ के बारे में तुम्हारा क्या ख़याल है?"

"सुङ यू-पिन? मैं समझती हूँ कि वह अपने बाप से काफ़ी बेहतर है।"

ठीक वही व्यंग्यपूर्ण चमक सू की आँखों में कौंध गयी जो उसकी सुङ यू-पिन के साथ बातचीत के दौरान दिखायी दी थी। "बेहतर, अरे?" वह बोला। "याद रखो वे सब एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं। तुम उनके बीच से कोई चुनाव नहीं कर सकती। तुम एक बुद्धिजीवी हो कुमारी जी, इसलिए मुझे एक सलाह देने दो। कभी मत भूलना, जो मौसी ली ने तुमसे कहा था कि तुम यहाँ पढ़ाने आयी हो, तुम उनके लिए वैसे ही काम कर रही हो जैसे हम खेत-मज़दूर करते हैं। याद रखो कि सुङ यू-पिन हमारा अमीर मालिक है।"

एक क्षण सोचने के बाद ताओ-चिङ ने हामी भरी। "हाँ, तुम ठीक कहते हो। मैं इसे याद रखूँगी।" उसने फिर सोचा और बोली, "तुम यहाँ पिछले कुछ दिनों तक नहीं रहे। मौसी ली ने बताया था कि कोई संघर्ष होने वाला है। मुझे ज़रूर बताओ कि मैं इसमें कैसे मदद करूँ, और कैसे भरसक कोशिश करूँ।"

सू अपना काम ख़त्म ही कर चुका था और अपनी बेलन-चरखी को सहेज रहा था। "हाँ, एक संघर्ष होने वाला है," उसने कहा। "लेकिन तुम्हें बाहर कुछ नहीं करना है। बस सुङ परिवार से अन्तरंग बनती जाओ, और चाची चेन को मत भूलो। अगर तुम्हें किसी महत्त्वपूर्ण बात की भनक लगे, तो तुरन्त मुझे बता दो। अगर मैं यहाँ न होऊँ, तो अठारह ली दूर ताचेन गाँव चली जाओ, जहाँ तुम्हें तुम्हारी सहेली का मौसेरा भाई श्री वाङ मिलेगा। हालाँकि जब तक वास्तव में जाना आवश्यक न हो, तब तक मत जाओ।"

ताओ-चिङ ने ध्यान से सुना। अब जैसे ही वह वेन-ताई को तलाशने के लिए मुड़ रही थी, सू ने अपना स्वर ऊँचा कर दिया और बोला, "कृपया नौजवान श्री सुङ से कहना कि हम पहले से काफ़ी बेहतर हैं।" फिर उसने अपना स्वर धीमा कर दिया। "किसी को यह महसूस न होने दो कि तुम्हें कुछ भी जानकारी है कि कब संघर्ष फूटने वाला है। हम देहाती लोग बरदाश्त की हद पार कर चुके हैं। कैसे वह मूर्ख कहता है कि हम काफ़ी बेहतर हैं।"

इस संक्षिप्त बातचीत ने ताओ-चिङ पर गहरा असर छोड़ा। उसने सोचा, "वह कितनी दृढ़ता से अपनी अवस्थिति को प्रस्तुत करता है। सीधे मामले की जड़ में पहुँच जाता है।" सू और मौसी ली में ज़रूर कोई बात समानधर्मा थी जिसका उसमें अभाव था। उसने सोचा – क्या यह वर्ग-पृष्ठभूमि का फ़र्क़ था या मेहनतकश लोगों का जन्मजात गुण था, जिसने उनको उससे पृथक कर दिया था? वह उन्हें पाकर प्रसन्न थी क्योंकि वे उसे इतना कुछ सिखा सकते थे, लेकिन वह उनकी मौजूदगी में एक मानसिक असुविधा का भी अनुभव करती, मानो उसकी सभी भावनाएँ सार्वजनिक रूप से बेपर्दा होती जा रही थीं, जिससे उसकी प्रतिष्ठा धूल में मिलती

जा रही थी। निश्चय ही उसे बूढ़े चेङ के साथ हुई बदसलूकी का प्रायश्चित करना होगा। यह विचारमात्र ही उसे तब तक बेचैन किये रहता जब तक कि उसे इस सोच में सान्त्वना न मिल जाती कि सू का कटूक्तिपूर्ण लहज़ा शायद उसके अतीत की ग़ैरजानकारी के कारण था।

अगले दिन ताओ-चिङ खुद एक दूसरी कश्मकश में थी। यद्यपि उसका हृदय बोझिल था, फिर भी वह चेङ तेह-फू से मिलने गयी। दोपहर के अवकाश का समय था और वहाँ आसपास कोई न था। उसने उसकी झोंपड़ी के बाहर से कई बार पुकारा, लेकिन कोई जवाब न मिला, तब वह अन्दर घुस गयी। वह अपनी बात कहने के लिए इतनी कृतसंकल्प थी कि उस अँधेरे कमरे की बदबू से कम उबकाई प्रतीत हुई। लेकिन कमरा ख़ाली था, सिवाय काङ पर पड़ी जीर्ण-शीर्ण रज़ाई के! वह निराश होकर जाने ही वाली थी कि चेङ तेह-फू भारी क़दमों से अन्दर आया और उसे वहाँ देखकर भौचक्का रह गया, और वह भी घबराकर उसाँसें लेने लगी। वे एक क्षण तक एक-दूसरे के सामने ख़ामोश बने रहे, आख़िरकार ताओ-चिङ ने ही ख़ामोशी तोड़ी।

"चाचा मैं तुमसे मिलने आयी हूँ..."

"तुम्हें खुद को ज़ाहिर नहीं करना चाहिए। तुम मुझसे किसलिए मिलना चाहती हो?" इस तीखे प्रत्युत्तर ने उसे सन्त्रस्त कर दिया, लेकिन वह आगे बोली।

"मुझ पर नाराज़ मत हो चाचा। मैं अपने बाप या अपनी सौतेली माँ की तरह नहीं हूँ, मैं भी उनसे घृणा करती हूँ..."

"यह तुम्हारा अपना मामला है।" वह धस्स-से काङ के कोर पर बैठ गया और अपने काँप रहे हाथों से अपना हुक़्क़ा भरने लगा, उसके बाद इसे पीने के लिए आगे की ओर झुक गया मानो, ताओ-चिङ का वहाँ अस्तित्व ही न हो।

लड़की दरवाज़े में खड़ी-खड़ी इतनी उलझन में पड़ी हुई थी कि कोई शब्द न बोल सकी, तभी उसके दिमाग़ में यह सलाह की "उसको दोस्त बनाओ," और मौसी ली द्वारा उसकी चिढ़ के बारे में दिया गया स्पष्टीकरण याद हो आया। इससे उसको यह ढाढ़स मिला कि वह स्टूल पर बैठ जाये, और अपने अतीत के बारे में बताये। उसने उसे अपनी माँ और उसकी मौत के बाद अपनी सौतेली माँ की क्रूरता के बारे में बताया... लेकिन उसकी रामकहानी के बीच ही में चेङ तेह-फू यकायक उठकर खड़ा हो गया और अपना हुक़्क़ा लिये बाहर निकल गया। ताओ-चिङ वेदना से तिलमिला उठी। वह अपनी आँखों में आँसू लिये अपने कमरे में वापस लौटी, वह इतनी टूट गयी थी कि रात का खाना खाये बिना ही बिस्तर पर चली गयी। वह यह जानने बेहद परेशान थी कि कैसे वह इस सनकी बूढ़े को अपने पक्ष में करे।

——:o:——

अध्याय 11

दो दिन बाद ताओ-चिङ और वेन-ताई के रोज़मर्रा के सैर-सपाटे के दौरान एक दूसरी घटना घटी।

वे झुग्गियों के एक समूह के पास जा पहुँचे थे जहाँ सुङ के असामी और दूसरे ग़रीब ग्रामीण रहते थे, ताओ-चिङ उनकी जीवन-दशा के बारे में कुछ देखने की आस किये हुए थी। वहाँ हर तरफ़ दीन-हीन घर बने हुए थे जिनमें खस्ताहाल छोटी चौकोर खिड़कियाँ थीं, और कुछ के छोटे अहातों में चूज़े और सूअर, भिनभिनाती मक्खियों के साथ घूरों पर भोजन की तलाश में मुँह मार रहे थे। ताओ-चिङ की हिम्मत नहीं पड़ी कि इनमें से किसी झुग्गी में प्रवेश करे, और यह भी था कि वेन ताई इसकी इजाज़त नहीं देता। वह लड़के को इस बस्ती के पीछे से चक्कर काटकर ले गयी, जहाँ उन्हें एक तालाब मिला जो नरकुलों और बेरों के फूलों से भरा हुआ था। हर्ष से चीख़ते हुए लड़का ड्रैगनफ़्लाई पकड़ने के लिए दौड़ने लगा जो वहाँ भारी मात्रा में थे। ताओ-चिङ ने एक पोपलर वृक्ष के नीचे दो एकाकी झोंपड़ियाँ देखी जो बहुत दूर नहीं थीं। उसने बच्चे को चेतावनी दी।

"ख़बरदार वेन-ताई पानी में न गिर पड़ना, मैं वहाँ पर जा रही हूँ, लेकिन देर तक नहीं रहूँगी..." उसने झोंपड़ियों की ओर इशारा किया और उधर बढ़ चली।

झोंपड़ियों में एक का दरवाज़ा खुला हुआ था और उसे लगा कि भीतर से आवाज़ें आ रही हैं। अन्दर जाने में हिचकिचाते हुए उसने जर्जर खिड़की से अन्दर की ओर झाँका। वह एक मद्धिम रोशनी वाले कमरे में पहली नज़र में एक काङ और एक अँगीठी का अनुमान कर सकी। एक बूढ़ा आदमी काङ पर लेटा हुआ था, जिसकी बग़ल में बिखरे बालों वाली, जीर्ण-शीर्ण कपड़े पहने एक पाँच या छह वर्ष की बच्ची चिपटी हुई थी।

"क्या अब तुम पहले से ठीक हो दादा?" बच्ची ने उसकी दाढ़ी सहलाते हुए पूछा।

बूढ़ा आदमी अर्द्धमूर्छित प्रतीत होता था। बच्ची के बालों में उँगली फिराते हुए, उसने क्षीण स्वर में उत्तर दिया, "नहीं प्यारी बिटिया, अभी नहीं..." उसने मानो निढाल होकर अपनी आँखें बन्द कर लीं।

बच्ची मूर्ति की भाँति निश्चल पड़ी हुई उसको एकटक देख रही थी, उसकी चमकदार आँखें उसके पीले, मलिन चेहरे से एक विरोधाभास प्रकट कर रही थीं। उसकी आँखों में चिन्ता की एक झिलमिलाहट थी – या यह एक पूर्वाभास था? अचानक उसका मुँह कँपकँपाया और उसकी गरदन से चिपटकर चीख़ पड़ी।

"दादा। दादा। मुझे भूख लगी है।"

ताओ-चिङ जो बाहर से ध्यानपूर्वक सुन रही थी, बच्ची की चीख़ से बहुत

विचलित हो उठी। आसपास नज़र घुमाकर यह आश्वस्त होती हुई कि वेन-ताई अब भी तालाब के पा खेल रहा था और पुनः आश्वस्त होकर कि वह सुरक्षित था, उसने फिर खिड़की से झाँका।

बूढ़े की आँखें अब खुली हुई थीं और आँसू की दो बड़ी-बड़ी बूँदें उसके मरियल गालों से होकर ढुलक रही थीं। उसने उन्हें पोंछ डाला, हिलती-काँपती हुई बच्ची को अपने पास खींचा और उसका सिर अपनी छाती से चिपटा लिया। "मत रो!" उसका स्वर लड़खड़ाया। "तुम्हारा भाई तुम्हारे खाने के लिए कोई चीज़ लेकर वापस आयेगा।"

उसी समय एक लड़का अपने कन्धे पर कुछ लकड़ियों का गट्ठर लिये झोंपड़ी के पास आया। क़रीब बारह वर्ष की उम्र वाला, वह मैला-कुचैला और चिथड़े पहने हुए था। ताओ-चिङ इतनी खोयी हुई थी कि उसे भान नहीं हो पाया कि उसने उसे देख लिया था या नहीं। वह उसे गट्ठर को बाहरी कमरे में रखते और फिर अपने दादा के पास जाते हुए, ग़ौर से देखती रही।

"तो तुम वापस आ गये, नन्हे शेर। क्या तुम कुछ खाने को लाये हो?" बूढ़े ने मुस्कुराहट का भाव लिये अपना सिर उठाया। वह बच्ची भी रोना बन्द करके एक थैले को घूरकर देखने लगी, जो उसके भाई के हाथ में था। एक बार फिर वह मूर्ति की तरह निश्चल हो गयी।

बिना एक शब्द कहे, अपना सिर लटकाकर लड़के ने अपने झोले को धीरे-धीरे काङ पर ख़ाली कर दिया। उसमें से कुछ कच्ची खूबानियाँ और छोटे-छोटे आड़ू लुढ़ककर बाहर आ गये। उसकी बहन अपनी निराशा न छिपा सकी, और रोती हुई बूढ़े की बाँह से झूल गयी :

"मुझे भूख लगी है, दादा! मैं बहुत भूखी हूँ। मुझे खूबानी नहीं चाहिए।"

एक कातर दृष्टि से लड़के ने अपनी जेब से एक ग़ौरेया निकाली और उसको दिखाया "मत रोओ बहन!" उसने नर्मी से कहा। मैं इसे तुम्हारे लिए भून दूँगा।"

एक नज़र डालकर लड़की अपने दादा से चिपट गयी और फिर सुबकने लगी। बूढ़ा उठ बैठा और दोनों बच्चों को निहारा। अपनी आँखों में आँसू भरकर वह भी काङ के कोर पर ऐसे बैठ गया, मानो पत्थर हो।

इस हृदयविदारक दृश्य ने ताओ-चिङ को हेई-नी और चेङ-फू की याद दिला दी। वेन-ताई के स्वर ने अचानक उसकी तन्मयता भंग कर दी।

"आओ रात का खाना खाने घर चलें, कुमारी चाङ। माँ ने कहा था कि शाम चपातियाँ और पके हुए सुअर का माँस बनेगा।"

अपनेआप को संयत करके ताओ-चिङ वेन-ताई की ओर चल दी जैसे ही वह जाने को हुई, उसने देखा कि बूढ़ा आदमी लड़खड़ाते हुए बाहर आ रहा था, उसके हाथ में हँसिया थी; ठीक उसके पीछे उसके पोता-पोती चले आ रहे थे।

बूढ़ा ज़ोर-ज़ोर से उचकता हुआ तेज़ी से आगे की ओर बढ़ता गया जबकि बच्चे उसका साथ पकड़ने के लिए जी जान से कोशिश कर रहे थे।

ताओ-चिङ को चिन्ताजनित विस्मय हुआ कि उसका क्या करने का इरादा था। वेन-ताई ने पीछे से उनको घूरते हुए उत्सुकतावश पूछा।

"वह मरभुक्खा क्या करने जा रहा है, कुमारी चाङ?"

उत्सुकता और दया के वशीभूत ताओ-चिङ ने वेन-ताई का हाथ पकड़ा, और उनके पीछे दौड़ पड़ी। वे दो खेत पार करके एक तीसरे खेत के पास गये जहाँ गेहूँ की पकी फ़सल हवा में झूम रही थी। बूढ़े ने अपने हँसिये से काटना शुरू कर दिया।

"इसे घर ले जाओ।" उसने बच्चों से कहा। "अगर ज़मींदार इसे खा सकता है, तो हम क्यों नहीं?"

लड़का और लड़की पूरी तरह निश्चल एक-दूसरे को पकड़े हुए खड़े थे, उनकी आँखें बूढ़े पर टिकी हुई थीं।

एक ऊँचे क़द की आकृति एक बड़ी छड़ी लिये निकट आ रही थी – यह बूढ़ा सुङ कुएई-ताङ था। जब इस ज़मींदार ने देखा कि बीमार बूढ़ा क्या कर रहा है, तो वह अपनी छड़ी भाँजते हुए और चीख़ते हुए दौड़ पड़ा।

"वाङ लाओ-त्सेङ, क्या तुम पागल हो गये हो? तुमने अपनी पतोहू का कफ़न दफ़न करने की ख़ातिर इन तीन माऊ को मुझे बेच दिया था; तुमको मेरा गेहूँ छूने की हिम्मत कैसे हुई?"

"तुम्हारा गेहूँ?..." बूढ़े वाङ ने अपनी गुस्सैल सूजी आँखों को अपने उत्पीड़क पर टिकाते हुए कटाई बन्द कर दी। "यह तुम्हारा नहीं है।" उसने कहा और फिर काटने लगा।

सुङ कुएई-ताङ गुस्से से पागल हो उठा और बूढ़े को मारने के लिए अपनी छड़ी उठायी। दोनों किसान बच्चे भयातुर मेमनों की भाँति थर-थर काँपने लगे, लेकिन वेन-ताई ख़ुशी से चीख़ उठा, "देखो! बड़े दादा उन्हें फिर पीट रहे हैं। वह उनकी अच्छी-ख़ासी मरम्मत करेंगे।"

ताओ-चिङ ने वेन-ताई पर आँखें तरेरीं, और अपने सारे निर्देशों को भूलकर कि उसे सुङ परिवार वालों से अच्छे सम्बन्ध बनाये रखने हैं, वह ज़मींदार की ओर झपट पड़ी। गुस्से से भीतर ही भीतर धधकती हुई, उसने छड़ी छीन ली और काँपते स्वर में पूछा।

"आप उसे क्यों पीट रहे हैं?"

ताओ-चिङ की इस बेबाक कार्रवाई और उसके पीले चेहरे ने अवश्य सुङ कुएई-ताङ को हक्का-बक्का बना दिया क्योंकि उसने अपना सिर लटका लिया और उसको दहकती आँखों से ऐसे देखने लगा मानो वह कोई अजनबी हो। फिर मसखरी करने के अन्दाज़ में ठहाका लगाते हुए "बहुत अच्छा। बहुत अच्छा।" कहकर कर्कश

स्वर में चीखा। "तुमको क्या सूझ गयी? इससे तुमको क्या लेना-देना? क्या तुम समझती हो कि पानी खून से ज़्यादा गाढ़ा होता है, और हमदर्दी अजनबी से होती है?" उसकी गहरे धँसी आँखों में एक आक्रोशभरी, लोलुपतापूर्ण चमक थी।

बूढ़ा वाङ और उसके पोता-पोती पर तो वज्रपात ही हो गया, यहाँ तक कि वेन-ताई भी डर से सन्न हो गया। ताओ-चिङ ने ज़मींदार को कनखी से देखा और शान्तिपूर्वक कहा, "क्या आप नहीं देखते कि वे कितने दीन-हीन हैं, श्री सुङ? इतनी दरिद्रता। क्या आप उन्हें अपनी प्राण रक्षा हेतु थोड़ा-सा गेहूँ नहीं ले लेने देंगे?"

"उन्हें मेरा गेहूँ ले लेने दूँ?...नहीं, भगवान क़सम!" उसने छड़ी को पीछे की ओर तान लिया और उसे खींचकर बूढ़े वाङ पर दे मारते हुए दहाड़ा, "तुम जो फ़सल बेच चुके हो उसे काट लेने की हिम्मत करते हो। तुम ज़रूर पागल हो गये हो।"

"मत मारिये उसे।" ताओ-चिङ उस बूढ़े को अपने शरीर से ढाँप लेने के लिए आगे की ओर उछल पड़ी। "आप इस जैसे ग़रीब को मत सतायें।" वह हाँफने लगी।

सुङ फनफनाते गुस्से में ताओ-चिङ की ओर मुड़ने ही वाला था कि बूढ़े वाङ ने उसके पैरों पर गिरकर काँपती परन्तु बेधती आवाज़ में विलाप करते हुए घटनाक्रम का दूसरी ओर मोड़ दिया :

"हे भगवान! हे भगवान! हम पर दया करो! देखो तो हम लोग कैसा जीवन बिता रहे हैं। यह काले हृदय वाला ज़मींदार कहता है कि मैंने उसे अपनी ज़मीन अपनी पतोहू के कफ़न-दफ़न के लिए तीस युआन में बेच दी है। लेकिन वह इतना अधिक सूद लेता है कि मैं सिर्फ़ बीस युआन ही पा सका। और मैंने उसे दो माऊ बेचा था न कि तीन माऊ। वे ही तीन माऊ तो हमारे जीने के एकमात्र सहारे थे। हे भगवान! हे भगवान! हम पर दया करो! एक बूढ़ा आदमी और दो छोटे-छोटे बच्चे... हम क्या करें?..." वह चीख़ता और बिलखता रहा, जबकि लड़का और लड़की उससे चिपटकर रोते रहे।

ताओ-चिङ भी अपने को रोने से न रोक सकी।

एक क्षण के लिए ज़मींदार स्तब्ध रहा, और जब उसने घूमकर देखा, तो एक भीड़ पहले ही से जमा हो चुकी थी।

"छि!" उसने उन पर थूक दिया। "ग़रीबी ने उसे सनकी बना दिया है। यह तो घोर भभकी है। लेकिन तुम मुझे इस तरह से नहीं ठग सकते, वाङ लाओ-त्सेङ! तुम वह गेहूँ मुझे लौटा दो। जिसे तुमने मेरे खेत से काटा है।" ताओ-चिङ पर एक ज़हरीली नज़र डालते हुए, उसने अपनी छड़ी ज़मीन पर पटकी और फिर चलता बना।

गाँववाले बूढ़े वाङ का सहारा देकर खड़ा ही कर रहे थे कि इसी दौरान सुङ [illegible] पिन पहले की तरह ही चिकना-चुपड़ा और प्रफुल्लित बना हुआ, आ पहुँचा, जो

अपने बाप से एकदम भिन्न होने का स्वांग करता रहता था। उसने झपटकर बूढ़े वाङ को उसके पैरों पर खड़ा करते हुए माफ़ी माँगी। "इसका बुरा मत मानो, चाचा वाङ। तुम तो मेरे पिता का मिज़ाज जानते ही हो। नाराज़ मत हो। तुम्हारे पास अनाज की कमी है, मैं तुम्हारे लिए अपने में से दो पेक गेहूँ ला देने के लिए एक नौकर को कह दूँगा।" उसके बाद वह एक मुस्कान के साथ ताओ-चिङ की ओर मुड़ा। "क्यों, कुमारी वाङ, मैं नहीं जानता था कि इसमें तुम्हारा भी हाथ था। मेरे पिता बूढ़े हैं। हम उन्हें बहुत गम्भीरता से नहीं ले सकते। अच्छा अब अँधेरा घिर रहा है। हम वापस चले। ये अच्छे लोग सब के सब चाह रहे होंगे कि शाम की ठण्ड में अपना काम निपटा लें।"

यद्यपि तकरार ख़त्म हो चुकी थी, फिर भी ताओ-चिङ सुङ यू-पिन के साथ वापस नहीं लौटी। धुँधलका हो जाने पर वह एक लोकस्ट वृक्ष के नीचे खड़ी होकर, उस अपराह्न की घटनाओं पर पहले से कहीं अधिक दुखी होकर सोचती रही। उसकी आत्मसंयम की कमी और अधीरता ने उसे यहाँ ठहरना असम्भव बना दिया। वह चाची ली को भूल गयी। पार्टी को भूल गयी। अब वह क्या करेगी, चेङ तेह-फू की दोस्ती प्राप्त कर लेने की अपनी चरम असफलता पर वह ज़मींदार से ही उलझ पड़ी थी। फिर भी उसकी कल्पना में वाङ लाओ-त्सेङ और उसके पोती-पोता बार-बार उभर आते थे। उनका जीवन कितना नारकीय था। क्या सभी चीनी किसान भुखमरी के कगार पर थे?... वह काफ़ी देर बाद ही वापस लौटी, उसका दिमाग़ अब भी विक्षुब्ध था, वह सारी रात जागती रही।

आश्चर्य है कि उसके इस अवज्ञाभरे कृत्य पर कुछ भी नहीं हुआ। सुङ परिवार के किसी भी सदस्य ने इसकी चर्चा नहीं की। जब वह बूढ़े ज़मींदार से मिली, तो उसने सिर्फ़ एक तिरस्कारभरी नज़र से देखभर लिया, जबकि सुङ यू-पिन पहले की भाँति ही स्नेहिल था – यहाँ तक कि उसने उसके प्रति पहले से अधिक आदर जताया। वह इस परिवार के दृष्टिकोण को न समझ सकी। लेकिन इसमें उसने सुङ यू-पिन की नेकनीयती को ही कारण माना और उसके बारे में और ऊँचे ख़याल रखने लगी। उसके विचार से वह पूरी तरह बुरा न था, बल्कि अब भी विवेकवान था, और अध्ययन में दिलचस्पी रखता था। चाहे उसके विचार कितने भी हवाई क्यों न हो, वह अपने बाप से बेहतर था, उसके बाप का तो एकमात्र सरोकार दीन-हीन किसानों के ख़ून की आख़िरी बूँद भी निचोड़ लेने से था।

बूढ़े वाङ की ताओ-चिङ द्वारा हिमायत करने के दूसरे दिन सू मान-तुन ने उससे बाहर मुलाक़ात की, और उसे चेतावनी दी कि वह और अधिक सावधान रहे, और दोबारा कभी अपनेआप को ज़ाहिर न होने दे। अपनी ग़लती को जान लेने के बाद वह और अधिक सतर्कता बरतने लगी। कई दिनों तक उसने पढ़ाने और

पाण्डुलिपियों की नक़ल उतारने के अलावा कुछ न किया, किसी तरह से वह वेन-ताई के साथ टहलने जाने का समय निकाल पाती। इससे सू और चेङ तेह-फू से मिलने का मौक़ा कम ही मिल पाता था। फिर भी एक बार वह बग़ल वाले एक प्रांगण में चेङ तेह-फू से मिल गयी। वह उसके सामने जाने से हिचकिचायी और वह भी उसकी उपेक्षा कर गया। इस आकस्मिक मिलन ने उसके अव्यवस्थित कर दिया उसकी स्मृति में कई द्वन्द्वरत भावनाएँ, लज्जा और आत्मभर्त्सना और साथ ही साथ, स्वाभिमानपूर्ण तिरस्कार-भावना उभर आयी। तथापि वह उसकी विषादपूर्ण भावाभिव्यक्ति से नहीं बता सकती थी कि वह अब भी उससे घृणा करता था या नहीं।

बहरहाल, उसकी चाची चेन के साथ दोस्ती सुस्थिर गति से गहराती जा रही थी। अब वह आश्वस्त हो गयी थी कि यह बूढ़ी औरत उसके साथ दग़ा नहीं करेगी या सुङ-परिवार का पक्ष नहीं लेगी। अतः शाम के वक़्त वह उसको वर्ग-संघर्ष के बारे में कुछ सरल विचार दे आती थी। हालाँकि चाची चेन ताओ-चिङ द्वारा प्रयोग किये जाने वाले सभी अकादमिक शब्दों को नहीं समझ पाती थी, फिर भी वह एक से अधिक बार कह चुकी थी,

"मैं जानती हूँ, तुम एक दयालु-हृदया लड़की हो...नर्म दिल वाली एक भली लड़की।"

——:o:——

अध्याय 12

गेहूँ की कटाई का समय आ पहुँचने का मतलब था पूरे ज़मींदार घराने के लिए अतिरिक्त काम, क्योंकि सुङ परिवार के पास लगभग दो हज़ार माऊ ज़मीन थी। मालिक और मज़दूर भोर में ही खेतों पर चले जाते थे। और अँधेरा होने पर लौटते थे। वे घर पर इतना कम रहते थे कि ताओ-चिङ का नक़लनवीसी वाला काम रुक गया।

उसके दिमाग़ में किसानों द्वारा छेड़े जाने वाले संघर्ष बुरी तरह घर किये हुए थे। वह जानती थी कि यह न्यायपूर्ण संघर्ष पार्टी के नेतृत्व में चलाया जाना था, लेकिन देहात में एक क्रान्तिकारी संघर्ष जो रूप लेता उसकी उसे कोई स्पष्ट धारणा नहीं थी। उसे सू मान-तुन से कुछ मालूम होने की उम्मीद थी, परन्तु वह इन दिनों ख़ासतौर से व्यक्त हो गया था। इसके बावजूद, आख़िरकार उन बग़लवाले प्रांगण से होकर कई बार टहलने जाने के बाद, वह उसके पास उस समय गयी, जब आसपास और कोई न था। अपने सिर पर बँधे सफ़ेद तौलिये को ठीक करते हुए उसने मुस्कुराते हुए कहा, "व्यस्त हो, कुमारी चाङ?"

उसकी उलाहनाभरी दृष्टि ने बता दिया कि वह उसकी लापरवाही को भूला न था। ताओ-चिङ के पश्चाताप में कुछ-कुछ आत्मतुष्टि का भाव मिला हुआ था, और एक लज्जालु दृष्टि उस पर डालकर वह नरमी से बोली :

"मैं जानती हूँ कि मैंने पिछले दिनों ग़लती की...लेकिन इससे सुङ परिवार के साथ मेरे सम्बन्ध प्रभावित नहीं हुए हैं। अब कटाई-संघर्ष कैसे चलने वाला है? मैं पूरी तरह से अँधेरे में हूँ। तुम जानते हो कि मैं कितनी चिन्तित हूँ?"

सू ने एक मुस्कान के साथ स्वीकृति में सिर हिलाया। "चिन्तित होने से कोई फ़ायदा नहीं। बस इन्तज़ार करो। जो कुछ भी घटित होता है, उस पर इतनी सावधानी बरतो कि अन्य लोगों से भिन्न न मालूम पड़ने लगे और अपने निजी काम को मत भूलो।"

यद्यपि उसने भावी संघर्ष के बारे में कुछ भी विशेष रूप से नहीं बताया था, फिर भी उसने उसकी आँखों की उद्देश्यभरी दृष्टि से भाँप तो लिया ही था कि तूफ़ान फूटने वाला था।

सुङ परिवार के दूर-दूर तक फले हुए खेत सोने के समुद्र की भाँति लहराने लगते, जब बयार झुलसा देने वाली धूप में गेहूँ की फ़सल पर स्पर्शाघात करती। सुङ-कुएई-ताङ गर्मी के प्रति अभेद्य बना हुआ, हर रोज़ खेतों पर अपने चौकीदारों के साथ चक्कर लगाते देखा जाता था, वह गेहूँ की कुछेक बालियाँ भी ग़ायब हो जाने पर गालियाँ बकता, और भूखों मरते किसानों में से जब किसी को भी चोरी करते पकड़ लेता, तो वह उनकी निर्मम पिटाई करता।

बूढ़े ज़मींदार ने खेत-मज़दूरों को गाँव से और अधिक कटाई-मज़दूर लाने के लिए भेज दिया था। पिछली बार उसने अस्थायी मज़दूरों को मामूली मज़दूरी पर लगाया था लेकिन इस वर्ष स्थिति बदल गयी थी। आसपास के लोग चार युआन रोज़ाना की मज़दूरी माँग रहे थे और दो युआन पर काम करने से इन्कार कर रहे थे, जबकि वह इतना ही देता था। गेहूँ की फ़सल तेज़ी से पकती जा रही थी और अगर जल्दी नहीं काट ली जाती तो खेतों में ही सड़ जाती, अतः उसने सू मान-तुन और कुछ दूसरे मज़दूरों को आदेश दिया कि वे बाहर जायें तथा और मज़दूर ले आयें। चिन्ता ने उस बूढ़े को और अधिक गाली बकने वाला बना दिया था। वह लगातार अपनी छड़ी को ज़मीन पर ठोंकता रहता था। उसका लड़का या तो उससे प्रभावित होकर या इस संकटपूर्ण स्थिति के प्रति सचेत होकर, निरीक्षण कार्य करने लग गया था। एक स्ट्राहैट पहनकर अपने बाप के पीछे-पीछे चक्कर लगाते हुए उसका साफ़-सुथरा गोलमटोल चेहरा धूप से झुलस जाता और उसकी मुस्कान ग़ायब हो जाती।

इन्हीं दिनों एक अँधेरी रात में, जब सू मान-तुन और अन्य अभी बाहर ही थे

कि अचानक अहाते में घण्टियाँ बजने की आवाज़ फूट पड़ी। इस अचानक, त्वरित चेतावनी ने पूरे घराने को घबराहट में डाल दिया। ताओ-चिङ जो बिस्तर पर सोने जाने की तैयारी कर चुकी थी, हड़बड़ाकर यह पूछने बाहर निकल आयी कि क्या गड़बड़ हो गयी है। एक चौकीदार ने, जो उसके अहाते की ओर से एक सीढ़ी के सहारे मुख्य अहाते की ऊँची दीवार पर चढ़ रहा था, उसको बताया, "वे फ़सल चुरा रहे हैं।"

ताओ-चिङ का दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा, और उस चिल्ला उठने और ठहाके लगाने की अपनी उत्कट इच्छा को बरबस दबाना पड़ा। अन्ततः पार्टी के नेतृत्व में चलने वाला संघर्ष शुरू हो ही गया था। वाङ लाओ-त्सेङ और उसके पोती-पोतियों जैसे किसान, आख़िरकार अब कुछ तो बढ़िया खाना खा सकेंगे। फिर भी अपनी प्रसन्नता के बावजूद उसे वास्तव में इस बात का कोई इल्म नहीं था कि कैसे वे किसान इस गेहूँ को ले जाना शुरू करेंगे जो वाजिब तौर पर उनका ही था। वह वहाँ पर एक प्रचण्ड उत्तेजना में खड़ी थी, तभी सुङ यू-पिन और उसका बाप अपने कारिन्दे और एक दर्ज़न सशस्त्र चौकीदारों को लेकर तेज़ी से पीछे की ओर आये। वे ऊँची दीवार पर चढ़ गये। उनकी धुँधली आकृतियाँ तारों की रोशनी में बमुश्किल ही पहचान में आ रही थीं, लेकिन ताओ-चिङ ने अस्पष्टता से ही सही, यह कयास तो कर ही लिया कि वे बाहर किसी निशाने पर अपनी बन्दूक़ें साध रहे थे।

घण्टियों का बजना बन्द हो गया था, बाहर एकदम सन्नाटा था, और छत पर चढ़े चौकीदार भी ख़ामोश थे। कोई फ़ायरिंग, कोई चीख़ नहीं उभर रही थी। ताओ-चिङ और कुछ नौकरानियाँ छज्जे के नीचे एकत्र होकर, संशय में पड़ी, दमसाधे खड़ी थी। एक सेकेण्ड के लिए समय मानो ठहर गया था।

ताओ-चिङ ने दीवार पर चढ़े आदमियों की कारगुजारियों से अनुमान लगाने की कोशिश की कि संघर्ष कैसे चल रहा होगा, लेकिन चौकीदारों ने एक-एक करके अपने हथियार रख दिये जबकि कुछ तो धूम्रपान भी करने लगे। अधीर होकर उनकी सिगरेटों के लाल सिरों को निहारती उसने निर्णय लिया कि वह ऊपर चढ़कर देखेगी कि क्या हो रहा है और अपनी बग़ल में खड़ी चाची चेन से फुसफुसाकर बोली, "चाची, आओ ऊपर चलकर देखें कि क्या हो रहा है।"

"बूढ़ा श्री सुङ महिलाओं को वहाँ ऊपर जाने की अनुमति नहीं देता है।" बूढ़ी नौकरानी ने गहरी साँस खींची। "वैसे तुम तो देख ही रही हो कि क्या हो रहा है ग़रीबों की अपनी व्यथाएँ हैं, अमीरों की भी अपनी परेशानियाँ हैं।" यह कहकर वह और दो अन्य नौकरानियाँ ताओ-चिङ को अकेली छोड़कर भीतर चली गयी। चूँकि बग़ल वाला दरवाज़ा अब खुल गया था, इसलिए उसने छत पर जाने की अपनी योजना पर अमल किया। वह अगले प्रांगण में स्थित सुङ यू-पिन के

शयनकक्ष की ओर दौड़ पड़ी और खिड़की से आ रही रोशनी को देखकर बोली, "क्या आप सो रही हैं, श्रीमती सुङ?"

"कौन है?" एक घबराये स्वर ने पूछा। "चाङ सिऊ-लान!"

दरवाज़ा खोलते ही श्रीमती सुङ कढ़ाई किये रेशम में लिपटा हुआ एक बड़ा बण्डल थामे दिखायी दी। उसका चेहरा राख की तरह धूसर था, और उसका स्वर काँप रहा था, जब उसने पूछा, "क्या हो रहा है? क्या कोई ख़तरा है?"

"नहीं।" ताओ-चिङ ने सिर हिला दिया। "मैं आपसे यह पूछने चली आयी कि यह सब क्या हो रहा है।"

"जनता द्वारा गेहूँ लूटने के सिवाय और क्या हो सकता है। बूढ़े श्री सुङ भयभीत हैं कि कहीं वे अन्दर न घुस पड़ें और लूटपाट न शुरू कर दें। इसलिए वह और उनके सभी आदमी छत पर हैं।"

"क्या हम ऊपर जाकर देख सकती हैं कि क्या हो रहा है?" ताओ-चिङ ने श्रीमती सुङ की पतली बाँहों को सहारा देने के लिए पकड़ लिया।

"मैं नहीं जा सकती।" वह पीछे की ओर सिमट गयी। "मुझे सामानों को छाँटकर बाहर कर लेना है, अगर ऐसी स्थिति आ ही जाये कि..." जब ताओ-चिङ ने बार-बार आग्रह किया, तो उसने कहा, "ठीक है, तब तुम्हीं चली जाओ। तुमको श्री सुङ से कोई डर नहीं है।"

इस अनुमति पर ताओ-चिङ सीढ़ी की ओर दौड़ पड़ी और आहिस्ते-आहिस्ते छत पर चढ़ गयी, वह अपनी उत्सुकता में लगभग भूल ही गयी थी कि ज़मींदार और उसके आदमी वहाँ पर हैं।

दृश्य अद्‌भुत था – हज़ारों बत्तियाँ, आकाश में टिमटिमाते तारों की भाँति, विस्तृत खेतों में चमक रही थीं। बत्तियों के इन निशानों के बीच असंख्य काली आकृतियाँ घूम रही थीं। ये प्रेतात्माएँ या जुगनू नहीं थे जो हवा में नृत्य कर रहे हो, बल्कि किसान थे जो निडर होकर अपने अधिकारों के लिए जंग कर रहे थे। अपने हर्षातिरेक में ताओ-चिङ का मन हुआ कि वह चिल्ला उठे, "अहा, हमारी पार्टी, तुम कितनी महान हो।"

उसका हृदय ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था, चेहरा आवेश में तमतमाया हुआ था, वह समझ गयी कि क्या हो रहा है। पार्टी किसानों द्वारा बोयी गयी फ़सल को अपने-अपने घर ले जाने के लिए उनका नेतृत्व कर रही थी, ताकि किसान आग पर पकायी गयी उन बढ़िया रोलों का स्वाद चख सकें जो आमतौर पर सिर्फ़ अमीरों द्वारा ही खायी जाती हों।

राहत महसूस करके और शान्त होकर उसने आगे की ओर क़दम उठाया ही था कि किसी ने उसे रोक दिया। यह सुङ यू-पिन था।

लेकिन उसका शान्त स्वर अचकचाया नहीं, "मैं चाङ सिऊ-लान हूँ, श्री सुङ

क्या आप बता सकते हैं कि क्या हुआ है? मैं चिन्तित हो गयी थी और श्रीमती सुङ से पूछा था लेकिन उन्हें मालूम नहीं है। उन्होंने मुझे यहाँ आकर पता लगाने को कहा है।"

"अरे, कुछ नहीं है।" सुङ यू-पिन ने अपनी माउज़र नीचे कर दी, और एक गहरी साँस ली। "बस लोग हमारी फ़सल काट रहे हैं। क्या तुमको डर नहीं लगता, कुमारी चाङ? तुम वापस बिस्तर पर क्यों नहीं जाती?"

"नहीं, मुझे डर नहीं लगता – मैं तो एक मर्दानी लड़की कही जाती थी। क्या वे बिना अनुमति के सचमुच आपकी फ़सल काट रहे हैं? इसका मतलब क्या है?"

दीवार के एक झरोखे पर झुककर सुङ ने काले लिबास पहने अपनी बग़ल के दो चौकीदारों पर नज़र डाली। "अगर एक कीड़ा भी कुलबुलाये..." उसने अपना सिर हिलाया। "मेरे पिता कभी-कभी हद कर देते हैं..."

वह एक उग्र कोलाहल के कारण बोलते-बोलते रुक गया, और सभी सुङ कुएई-ताङ की आवाज़ पर चौंक पड़े।

"हद कर देता हूँ, मैं?...तुम नमकहराम पिल्ले! तुम्हीं हो, जिसने इन शैतानों को बिगाड़ा है।" आख़िरकार, बूढ़े ज़मींदार को अपने गुस्से की भड़ास निकालने का मौक़ा मिल ही गया। "एक क़र्ज़दार को पैसा चुकाना ही पड़ता है, एक हत्यारे को अपनी जान गँवानी ही पड़ती है – यह नियम अनादिकाल से चला आ रहा है। कोई भी आदमी जो मेरी ज़मीन पर खेती करता है, उसे लगान देना ही होगा, और जो आदमी मुझसे क़र्ज़ लेता है, उसे क़र्ज़ चुकाना ही पड़ेगा। क्या यह हद कर देना है? क्या सभी ज़मींदार यही नहीं करते? मेरे पीठ पीछे तुम औरों को मुझसे फ़ायदा उठाने देते हो, मूर्ख कहीं का। लेकिन क्या इससे अन्त में तुम्हारा लूटा जाना रुक जाता है? ...देखो वहाँ!" उसने भद्दे ढंग से अपने हाथ पश्चिम दिशा में खेतों की ओर उठाकर इशारा किया और गरजकर कहा, "वहाँ!...वहाँ...वे मेरा गेहूँ लिये जा रहे हैं...लेकर चले जा रहे हैं।" इससे पहले कभी ताओ-चिङ ने ऐसा नफ़रत भरा स्वर नहीं सुना था।

ताओ-चिङ और सुङ यू-पिन ने उस तरफ़ देखा, जिधर ज़मींदार ने इशारा किया था, और पाया कि सैकडों छायाकृतियाँ टिमटिमाती बत्तियों के बीच तेज़ी से इधर-उधर घूम रही थीं। सुसंगठित किसान अपनी विजय के फल काट रहे थे। गाड़ियों पर लाद रहे थे और ले जा रहे थे। ताओ-चिङ ने अवर्णनीय ख़ुशी और गर्व महसूस किया। लेकिन सुङ यू-पिन का चेहरा सफ़ेद पड़ गया था, उसकी आँखों में उदासी छा गयी थी। अपने पिता पर से नज़र हटाकर ताओ-चिङ की ओर देखते हुए उसने तनिक खींसें निपोरते हुए प्रतिवाद किया।

"मेरा क्या दोष है। उनके पीछे लाल क्रान्तिकारी हैं। मैं क्या कर सकता हूँ?"

"लाल क्रान्तिकारी!..." तो इसका मतलब यह है कि वह इस मामले में कम्युनिस्ट पार्टी की भूमिका को जानता था। ताओ-चिङ ने तो सोच रखा था कि

वह इतना अकादमिक है कि कोई राजनीतिक समझदारी रखता ही नहीं होगा।

बूढ़े आदमी ने लाल फीते से बँधी पिस्तौल को दीवार पर ठोका जिसे वह वर्षों से साथ रखता था और झट उसे टोकते हुए कहा :

"तुम निरे मूर्ख हो। तुमने व्यर्थ में क़ानून की पढ़ाई की है। ज़रा उस सारी रक़म पर तो सोचो जो मैंने तुम्हारे कॉलेज जीवन पर ख़र्च की है। फिर भी, तुम अपनी नाक के नीचे से लाल क्रान्तिकारियों को निकल जाने दे रहे हो... क्या ही नालायक़ बेटा मैंने पैदा किया है, मूर्ख, किसी काम का नहीं..."

ज़मींदार की चुभने वाली गालियाँ उस अँधेरे में छत पर खड़ी ताओ-चिङ के लिए आँखें खोल देने वाली थीं। दरअसल वह एक माह से सुङ परिवार में बिना यह पूरी तरह समझे ही रह रही थी कि उसे वहाँ क्यों भेजा गया था, और कैसे उसके लिए यह महत्त्वपूर्ण था कि वह जो कुछ भी सुने उसे सू मान तक पहुँचा देने के लिए इस परिवार के साथ अच्छे ताल्लुक़ात बनाये रखे। ऐन इस संघर्ष के वक़्त बाप-बेटे के इस टकराव से उसे महसूस हुआ कि वह भी वर्ग-संघर्ष के सामने थी, एक तमाशबीन के रूप में नहीं, बल्कि एक सक्रिय प्रतिद्वन्द्वी के रूप में। आश्चर्य के साथ चारों तरफ़ नज़र दौड़ाते हुए, वह जो कुछ कहा जा रहा था, उस पर बहुत क़रीब से ग़ौर कर रही थी। लेकिन यह तक़रार शीघ्र ही ख़त्म हो गयी। एक कारोबारी लहजे में बूढ़े ज़मींदार ने अपने बेटे से पूछा, "क्या सभी भण्डारकक्षों पर दोहरे ताले बन्द कर दिये गये हैं? सबसे बढ़िया अंग्रेज़ी ताले?"

"हाँ, फ़िक्र न करो।"

ताओ-चिङ खेतों की ओर नज़र डालने के लिए कुछ क़दम आगे बढ़ गयी, मानो वह उस दृश्य में खो गयी हो।

"हे भगवान! वे तो डाकुओं से भी बदतर हैं।" बूढ़े ज़मींदार ने फटी आवाज़ में चिल्लाकर कहा। उसने अपने प्रधान चौकीदार को बुलाया, "हू, ये लुटेरे अभी मेरी फ़सल चुराने में मशगूल हैं, लेकिन जल्द ही ये घर पर धावा बोल देंगे... बाहर नज़र रखो। नरम पड़ने की ज़रूरत नहीं...अगर वे आने लगें, तो फ़ायरिंग शुरू कर देना।" उसके बाद उसने जलती आँखों से ताओ-चिङ को देखा और बड़बड़ाया, "कुमारी चाङ, हमने तुमको गवर्नेस के रूप में रखा है, चौकीदार के रूप में नहीं। तुम यहाँ छत पर क्या कर रही हो? तुम अपने कमरे में क्यों नहीं जाकर रहती?"

इसके पहले कि ताओ-चिङ जवाब देती, सुङ यू-पिन ने उसकी तरफ़दारी की। "कुमारी चाङ कोई बाहरी नहीं है, पिताजी। उसका यहाँ पर आना हमारे परिवार के साथ उसके लगाव को दर्शाता है।"

बूढ़ा ज़मींदार मानो प्रतिवाद करने के कारण झल्ला उठा, "तुम हमेशा उसका पक्ष लेते हो।" फिर वह थका-थका-सा एक पत्थर पर बैठ गया।

चूँकि सुङ यू-पिन ने उसको वहाँ से चले जाने का कोई संकेत नहीं दिया था

इसलिए ताओ-चिङ यह देखने के लिए रुकी रही कि बाहर क्या चल रहा है।

रात खूबसूरत और सर्द थी, छिटके हुए तारे पूरे आकाश में सम्मोहक रूप से टिमटिमा रहे थे। एक झरोखे पर टिककर ताओ-चिङ इतनी मासूम दिखायी दे रही थी जैसे कोई नन्ही बच्ची। वह उन पश्चिमी खेतों की ओर ग़ौर से देख रही थी, जहाँ आदमियों और बत्तियों का जमावड़ा था ऊपरी तौर पर वह दृश्य की मुग्धता में खोयी हुई थी, लेकिन भीतर ही भीतर उत्तेजना में हिलोरें ले रही थी। उसने काफ़ी समय तक उत्पीड़ित किसानों के चमकभरे चेहरों की झलक पा लेने की निरर्थक कोशिश की, और अब इच्छा करने लगी कि वह अपने पिंजरे से उड़कर चली जाये और उन आदमियों में शामिल हो जाये जो अब अपने हँसिये खेतों में चलाने लगे थे। लेकिन इस विचार से चिढ़ गयी कि वह सुङ का घर नहीं छोड़ सकती थी, और उसने चारों ओर नज़र दौड़ायी। बूढ़ा ज़मींदार चला गया था। बस उसका बेटा, हताश भाव से, पश्चिम दिशा में, खेतों की ओर देख रहा था।

वहाँ एक गहन सन्नाटा था, एक कुत्ता तक नहीं भौंक रहा था; ताओ-चिङ ने पूर्व दिशा में मद्धिम रोशनी की ओर देखा। वह दीवार के सहारे टिक गयी और निढाल होकर जम्हाई ली। अचानक क्रोध का गर्जन सुनकर छत पर चढ़े चौकीदार सभी दिशाओं में बिखरने लगे। ताओ-चिङ ने पीछे मुड़कर देखा कि बूढ़ा ज़मींदार अपनी काँपती बाँहें फैलाकर चीख़ रहा था, "सबकुछ चला गया। मेरा सारा गेहूँ... दसियों हज़ार सेर, सब ख़त्म हो चुका।" वह इतने ज़ोर से काँप रहा था कि उसका कर्कश स्वर भी काँप रहा था।

पौ फटने की पीली आभा में, वह देख सकी कि टिमटिमाती बत्तियाँ ग़ायब हो चुकी हैं। ख़ाली हो चुके विशाल खेत ऐसे पड़े हुए थे, जैसे कोई दैत्य कड़ी मेहनत के बाद गहरी नींद में सो रहा हो। गेहूँ और उसे काटने वाले जा चुके थे।

"ख़त्म हो चुका! यही अन्त है।" बूढ़े ज़मींदार का स्वर क्षीण होता गया। सुङ यू-पिन और चौकीदार जो उसकी गुहार पर इकट्ठा हो गये थे उसके चिन्तित, नीले पड़ गये चेहरे को घूर रहे थे। "मेरा गेहूँ!" चीख़कर वह अपने बेटे की बाँहों में गिर पड़ा।

सुङ यू-पिन घुटनों के बल बैठ गया और अपने बाप का सिर पकड़कर चिल्लाने लगा, "पिताजी! उठो!...उठो।" अगले क्षण वह विलाप करने लगा, पिताजी तुम्हारा नालायक़ बेटा बदला लेकर रहेगा। मैं क़सम खाता हूँ।"

"बदला?" ताओ-चिङ थर्रा गयी और सुङ यू-पिन की ओर देखा। उसके कानों को विश्वास नहीं हो रहा था। जब उसने उसकी ख़ूनी प्यासभरी क़सम सुनी तो उसकी पिण्डलियाँ ऐसे काँपने लगीं, मानो वह स्वयं ही किसी अपराध की दोषी हो। वह जल्दी-जल्दी अपने कमरे में वापस आयी, काङ पर पड़ गयी और अपना सिर रज़ाई से ढँक लिया।

——:o:——

अध्याय 13

अगली सुबह बूढ़ा ज़मींदार बिस्तर पर ही पड़ा रहा, और सुङ यू-पिन ने चेङ तेह-फू को आदेश दिया कि वह उसे गाड़ी में बैठाकर शहर ले चले, ताकि वह पता करे कि बदले की कार्रवाई कैसे की जाये। चेङ ही एकमात्र गाड़ीवान था जो उस वक़्त उपलब्ध था। उसे और सबके साथ बाहर नहीं भेजा गया था, कारण कि वह बहुत मूर्ख दिखायी देता था। यह सुनकर कि उसका बेटा मण्डलीय सरकार के दफ़्तर में मदद के लिए गया है, बूढ़े ज़मींदार का जोश जाग उठा और वह पहले से बेहतर होने लगा। लेकिन ताओ-चिङ चिन्तित और परेशान थी। उसने सोचा, "वे किस प्रकार का बदला लेंगे? किसानों ने गेहूँ छिपा दिया था और कोई भी पकड़ा नहीं गया था...पूरी कार्रवाई काफ़ी कुशलता से की गयी थी। सुङ परिवार क्या करेगा, जब वह यही नहीं तय कर सकेगा कि किसने उसका गेहूँ चुराया है?" वह किसानों के लिए चिन्तित थी, और सू मान-तुन पर अपने सन्देह करने और सुङ यू-पिन को उसके पिता से भिन्न, एक दयालु और उपकारी परन्तु अपने ही परिवार द्वारा बाधित मानने के अपराधबोध में वह अपनेआप से घृणा कर उठी। वह कितनी भोली और बचपने से भरी हुई थी। सुङ यू-पिन तीन दिनों तक बाहर रहा, और इधर वह दो रात तक अपनी कमियों को लेकर भारी पश्चाताप करती रही। उसने महसूस किया कि उसका राजनीतिक स्तर सू मान-तुन, चेङ तेह-फू और बाक़ी कइयों से काफ़ी नीचा था। उसे एक अन्देशा भी हुआ कि वाङ लाओ-त्सेङ गिरफ़्तार हो सकता है, और तब उसके दोनों पोती-पोते का क्या होगा? गेहूँ की कटाई के दूसरे दिन वह वेन-ताई को टहलाने खेतों की ओर ले गयी थी, भीतर-भीतर वह यह देखकर ख़ूब ख़ुश हुई थी कि सारी सुनहरी बालें ग़ायब हो चुकी थीं। अचानक नन्हा शेर अपनी पीठ पर जलावन की लकड़ियों का एक झाँपा लादे आ पहुँचा था, और एक मुस्कान के साथ उसका अभिवादन किया था। जब उसने देखा कि वेन-ताई ड्रैगनफ़्लाई पकड़ने चला गया तब उसने अपने झाँपे से भाप पर पकायी गयी एक बड़ी रोल निकालकर ताओ-चिङ के हाथों में दे दी। वह एक भी शब्द नहीं बोला था, लेकिन उसकी आँखों में दिखायी दे रही ख़ुशी की झलक ने ताओ-चिङ का रक्त-प्रवाह तीव्र कर दिया था। उसे भी विभ्रमित महसूस करने के बजाय, अन्त तक इन बच्चों की भाँति संघर्ष करना चाहिए। इस निर्णय पर पहुँचकर, अपनी उद्विग्नता के बावजूद, उसने अपनेआप को सुङ परिवार के और निकट लाने का मन बना लिया। वह या तो बूढ़े ज़मींदार की खोज-ख़बर लेती या चिकित्सक बुलाकर और वानस्पतिक औषधियों का अर्क खींचकर श्रीमती सुङ की मदद करती। वह स्नेहिल चाची चेन से भी पहले

से अधिक मित्रवत हो गयी। दुर्भाग्य से सू मान तून फिर औरों के साथ फ़सल की कटाई करने के लिए काफ़ी दूर भेज दिया गया था, और ताओ-चिङ को उसके लौटने का हर हालत में धैर्यपूर्वक इन्तज़ार करना था। किसान-कार्रवाई के चौथे दिन अपराह्न में सुङ यू-पिन चेन तेह-फू की गाड़ी में वापस लौटा। यद्यपि बहुत घबराहट महसूस हो रही थी, फिर भी ताओ-चिङ निर्भीकतापूर्वक उसके कमरे में परम्परागत अभिवादन करने गयी।

"बहुत-बहुत धन्यवाद, कुमारी चाङ कि तुमने मेरी अनुपस्थिति में मेरे पिता की इतनी बढ़िया देखभाल की। मैं सचमुच बहुत आभारी हूँ..." उसके गोलमटोल चेहरे पर धूप और हवा की मार के चिह्न थे, लेकिन उसकी मुस्कान पहले जैसी ही भद्र थी। क्या वह सचमुच अपने पिता का बदला लेने के लिए शहर गया था? ताओ-चिङ ने यही अनुमान किया कि उसने अब तक कुछ नहीं किया होगा।

"श्री सुङ, क्या आप बस गेहूँ के मसले पर ही शहर गये थे?" उसने सवाल को जितना सम्भव हो सका, सहज बनाकर पूछा।

सुङ ने अपनी सिगरेट का कश खींचा, और ताओ-चिङ की ओर देखने एवं निःश्वास छोड़ने से पहले एक नज़र अपनी पत्नी और बच्ची पर डाली।

"मैं इस बूढ़े आदमी को तुष्ट करने के लिए सफ़र कर आने के अलावा और क्या कर सकता था। ख़ैर, जो हो गया। गेहूँ ही सबसे महत्त्वपूर्ण नहीं है। किसान वास्तव में कड़ी मुसीबत में हैं।"

एक बार धोखा खा जाने के बाद अब वह और ऐसी वाचालता पर विश्वास नहीं कर सकती थी, लेकिन विश्वास करने का स्वाङ करते हुए उसने टिप्पणी की, "मैंने कई दिनों से आपकी पाण्डुलिपियों पर कोई काम नहीं किया है, श्री सुङ अब जबकि आप वापस आ गये हैं, क्या मैं उन्हें करूँ?"

"कृपया, हाँ।" उसने उठ खड़े होते हुए नरमी से निर्विरोध स्वीकृति दे दी। "क्या यहाँ कोई और वारदात हो रही है? किसान कैसे काम कर रहे हैं? क्या वे अब पहले से बेहतर हैं?"

इसने उसे उस सफ़ेद भाप पकी रोलों की याद दिला दी जिसको नन्हे शेर ने उसके हाथ में दे दिया था। ताओ-चिङ ने मन में सोचा, "पहले से बेहतर? कैसे वे पहले से बेहतर हो सकते हैं जब तक कि तुम जिस वर्ग के हो, उसे विनष्ट न कर दिया जायें?" लेकिन उसने बस इतना ही कहा, "माफ़ कीजियेगा, मुझे पता नहीं है। मैं पिछले कुछ दिनों से बहुत ज़्यादा बाहर नहीं जाती रही हूँ।"

सुङ यू-पिन ने कृपालुभाव से सहमति में सिर हिलाया, उसके बाद उसे अपने अध्ययन कक्ष में ले गया, उसे कुछ पाण्डुलिपियाँ सौंपी और उसे वहीं अकेला छोड़कर चला गया। वह धैर्यपूर्वक दो घण्टे तक काम करती रही।

रात का खाना खाने के बाद वह इस उम्मीद में बाहर निकली कि सू मान-तुन

मिल जायेगा, जो उसे हाल की गतिविधियों के बारे में बतलायेगा या चेङ तेह-फू से श्री सुङ के सबसे ताज़ा क्रियाकलापों के बारे में जानकारी प्राप्त करेगी। उसे चेङ कुएँ पर मिला, जो सू की तरफ़ से पशुओं को पानी दे रहा था। उसका ताओ-चिङ के प्रति दृष्टिकोण काफ़ी-कुछ बदल चुका था। उस शाम की रोशनी में वह जो अपनी ज्योतिहीन आँखें इसकी ओर टिकाये हुए था, उनमें घृणा की जगह चिन्ता झलक रही थी। उसने कई बार इधर-उधर देखा, मानो बोलना चाह रहा हो और बेलन-चरखी को घुमाना बन्द कर दिया।

ताओ-चिङ समझ गयी। वेन-ताई का नाम पुकारते हुए, मानो कि वह उसे खोज रही हो, वह जल्दी-जल्दी कुएँ पर गयी और फुसफुसाकर बोली, "क्या है, चाचा?"

चेङ तेह-फू ने अभिवादन में सिर झुकाया और आसपास नज़र दौड़ायी। बेलन-चरखी को फिर घुमाते हुए वह बौखलाकर बोला, "जल्दी भाग जाओ, बिटिया! सुङ यू-पिन ने तुम्हारे लिए बहुत बुरा सोच रखा है। उसके पास तुम्हारे नाम समेत एक काली-सूची है, और तुम्हारा फ़ोटो भी उसके साथ है। वह कहता है कि तुम लाल क्रान्तिकारी हो। तुम जल्दी करो! आज रात को भाग निकलो!"

अभी वह अपने ख़तरे के प्रति बमुश्किल ही चैतन्य हो पायी कि उसके निष्कपट लगाव ने ताओ-चिङ को द्रवित कर दिया, और उसने आगे बढ़कर उसकी बाँह थाम ली। उसके चेहरे पर आँखें गड़ाकर देखते हुए उसने दम साधकर पूछा, "क्या अब तुम मुझसे घृणा नहीं करते, चाचा?"

"बातचीत में समय मत गँवाओ!" उसने उसे दूर ठेल दिया। "पहले अपनेआप को बचाओ!"

ताओ-चिङ अपने कमरे में थोड़ी देर के लिए वापस गयी। उसे चेङ तेह-फू के हृदय-परिवर्तन पर विचार करने का समय न था। उस पर तहेदिल से विश्वास करते हुए उसने सोचा : "मैं क्या करूँ? तुरन्त भाग निकलूँ? नहीं, इसमें और लोग भी तो शामिल हैं। मैं अपने ऊपर सौंपे गये कार्यभार को एकबारगी नहीं छोड़ सकती। मैं क्या करूँ?" अँधेरा हो गया था, और उद्विग्न मन से वह काङ पर तब तक पड़ी रही जब तक कि उसके मन में यह विचार नहीं घुमड़ पड़ा : "अगर सुङ यू-पिन जान गया है कि मैं कौन हूँ, तो वह सम्भवत: कुछ और लोगों के बारे में भी जान गया होगा। क्या चेङ तेह-फू ने नहीं कहा कि उसके पास एक काली-सूची है? यदि मैं इसे पा जाती और पार्टी को सौंप देती!" इस विचार ने उसे और उत्तेजित कर दिया और उसका भय जाता रहा, वह उसी तरह से निर्द्वन्द्व बन गयी जैसे लू चिआ-चुआन की पर्चियाँ चिपकाने का निर्णय लेते वक़्त बन गयी थी। वह ख़ुशी-ख़ुशी बाहर निकल पड़ने ही वाली थी कि एक बार चकराकर घूम पड़ी और फिर काङ पर धम-से बैठ गयी। उसके होंठों पर एक आत्मपरिहासी मुस्कान तैर गयी। इस बार यह

इतना सुगम नहीं था। उसे कोई आभास नहीं था कि वह सूची कहाँ तलाश करे।

वह उस काली-सूची को प्राप्त करने की उधेड़बुन में पड़ी हुई हर उठने वाले नये विचार को अव्यावहारिक कहकर टाल देती। क्या इसे चुराने के लिए उसे सियाओ-सू के पास जाना चाहिए? नहीं। इससे काम नहीं बनेगा। या चाची चेन की मदद माँगू? वह बूढ़ी औरत शायद ऐसा ख़तरनाक काम करने की हिम्मत न करे... अभी वह अपने दिमाग़ पर ज़ोर मार ही रही थी, कि किसी ने दरवाज़े का परदा उठाया और अन्दर प्रवेश किया। यह चाची चेन थी।

"क्या तुम अभी तक सोयी नहीं?" उसने मन्द स्वर में पूछा, "तुमने बत्ती क्यों नहीं जलायी?" एक तीली घिसकर उसने लैम्प जला दिया।

लेकिन ताओ-चिङ उठ बैठी और चाची चेन को देखा, अपना मुँह खोला, लेकिन नहीं जान पायी कि क्या बोले। अन्ततः उसने संयत होकर पूछा, "आज इतना पहले कैसे लौट आयी चाची? श्री सुङ और श्रीमती सुङ कहाँ हैं?"

"ओह, वे बूढ़े श्री सुङ को देखने गये हैं। भगवान ही जानता होगा कि वे वहाँ इतनी देर तक क्या कर रहे हैं। सियाओ-सू अपनी कढ़ाई का काम कर रही है; वेन-ताई किसी के कमरे में खेल रहा होगा। मुझे यहाँ आने और तुमसे मिलने का मौक़ा मिल गया। आज तुमने इतना कम चावल क्यों खाया? क्या तुम अस्वस्थ महसूस कर रही हो?"

ताओ-चिङ के दिमाग़ में एक विचार कौंध गया। उसे यक़ीन था कि काली-सूची ज़रूर श्रीमती सुङ के शयनकक्ष में होगी। अब एक मौक़ा था जिसे वह हाथ से निकलने देना नहीं चाहती थी।

"चाची, यहाँ पर मच्छर हैं," उसने कहा। "क्या तुम मेरे लिए कुछ मच्छर वाली अगरबत्तियाँ जला दोगी? मुझे सियाओ-सू से कुछ बात करनी है। मैं एक मिनट में वापस आयी।" इसके साथ ही वह झटपट बाहर चली गयी।

युवा ज़मींदार के कमरे के बाहर खड़ी होकर उसने कई बार आवाज़ दी, पर कोई जवाब नहीं मिला। वह सीधे अन्दर घुस गयी। वहाँ कोई न था। वह पर्चियाँ बाँटने के वक़्त जितनी घबरायी थी उससे कहीं अधिक इस बार घबरायी हुई थी। मद्धिम पैराफ़िन लैम्प उस पर टिकी हुई एक विद्वेषपूर्ण विशाल आँख की तरह लग रहा था, इसकी रोशनी वहाँ के लाल कैबिनेट और कठोर काठ के फ़र्नीचर पर इतनी तेज़ चमक रही थी, जो मानो उसके लिए सर्चलाइट हो। लेकिन यद्यपि उसकी पिण्डलियाँ काँप रही थी, फिर भी उसने अपने हृदय को इस विचार के लिए दृढ़ बनाये रखा कि वह सत्य के लिए और उत्पीड़ितों की खुशी के लिए संघर्ष कर रही थी। कुछ ही सेकेण्ड में उसने पहले की अपेक्षा शान्ति महसूस की और यह आश्वस्त होकर कि आस-पास कोई न था, उसने बत्ती तेज़ कर दी और खोजबीन शुरू कर दी। मेज़ पर कुछ काग़ज़ात थे जो खोलने पर, आइ.ओ.यू. सम्बन्धी,

मुक़दमे सम्बन्धी और रेहन से सम्बन्धित साबित हुए। एहतियात की थरथराहट में, उसने उन्हें सावधानीपूर्वक यथास्थान रख दिया और एक दराज़ खोला...फिर उसको संत्रस्त कर देने वाले पदचाप बाहर सुनायी दिये और चाची चेन अन्दर आ गयी।

ताओ-चिङ किसी तरह कोशिश करके चुपचाप शयनकक्ष के दरवाज़े के पास खड़ी हो गयी, लेकिन उसका कमरे में अप्रत्याशित प्रवेश बूढ़ी महिला के सन्देह को जगाये बिना न रह सका, जो उसे ऊपर-नीचे देखते हुए चिन्तातुर भाव से बोली :

"क्या बात है, बिटिया?...क्यों?..." उसने वाक्य पूरा नहीं किया, लेकिन उसका आशय स्पष्ट था। अब जबकि और कोई चारा न था, ताओ-चिङ ने उस बूढ़ी औरत की जैकेट पकड़ ली और कहा :

"चाची, सुङ यू-पिन मुझे जान से मरवा डालना चाहता है। क्या तुम मेरी मदद करोगी?"

"क्या?" तुम्हें जान से मरवा डालना चाहता है?" चाची चेन ने ताओ-चिङ की बाँह कसकर पकड़ ली और उसका चेहरा पीला पड़ गया, लेकिन इसके पहले कि वह लड़की कोई स्पष्टीकरण दे, वह उसे यह कहती हुई बाहर खींच ले गयी। "आओ चलो तुम्हारे कमरे में बातें करें।"

वे ताओ-चिङ के कमरे में लौट आयीं, दोनों इस तरह हाँफ रही थीं, मानो बाल-बाल बची हों, अब ताओ-चिङ ने उस बूढ़ी महिला को बताया :

"आज अपराह्न में जब श्री सुङ वापस आया, तो मैं उससे मिलने अन्दर गयी। वहाँ पर एक फ़ोटो उसकी मेज़ पर पड़ा हुआ था। अनुमान करो कि वह क्या था चाची। वह मेरा फ़ोटो था। और वहीं उसकी बग़ल में एक काग़ज़ का टुकड़ा भी था, जिसपर मेरा नाम लिखा था। इसकी असलियत यह है कि वह मुझे कम्युनिस्ट साबित करना चाहता है!"

"तुमको कम्युनिस्ट साबित करना चाहता है! कैसा आदमी है...लेकिन कैसे उसने इसे तुमको देखने दिया?"

"मैं नहीं जानती। जब मैं अन्दर गयी तो श्रीमती सुङ वहाँ नहीं थी और वह अपने पढ़ने में इतना खोया हुआ था कि उसे मेरे पहुँचने का भान न हुआ। बस, उसने मुड़ने से पहले ही मुझे इसकी झलक दिख गयी। मैं अभी-अभी उस काग़ज़ को पाने की कोशिश में और इत्मीनान करने की ख़ातिर वहाँ गयी थी, अगर उस पर लिखा नाम सचमुच मेरा ही है तो...वह मेरे प्रति इतनी भयानक करतूत कैसे कर सकता है चाची?"

चाची चेन ख़ामोश बनी रही, उसका सिर झुका हुआ था, उसकी बाँहें उसकी अगल-बग़ल निश्चल पड़ी हुई थीं। एक क्षण बाद उसने ताओ-चिङ की ओर देखा, जो उसकी बग़ल में बैठी हुई थी।

"मैं तुमको कुछ बातें बताऊँगी बच्ची। तुमने जान लिया है न कि जब तुम

पहले-पहल यहाँ आयी तो मैं तुम्हारी जासूसी करती थी? वह श्री सुङ और मालकिन के आदेश के अनुसार था। वह डरती थी कि उसका पति तुम पर अनुरक्त हो जायेगा और तब उसने मुझसे यह पता करने को कहा कि तुम किस तरह की लड़की हो, और जब तुम कमरे में अकेली होती हो तो क्या करती हो। मालकिन ने तो चिन्तित होना तब छोड़ा जब मैंने उसे बता दिया कि तुम एक ईमानदार लड़की हो। लेकिन श्री सुङ नहीं। वह मिलनसार और भद्र दिखायी दे सकता है, लेकिन वह जो कुछ इस घर से बाहर करता रहता है, वह दोहराने लायक़ नहीं है। जब वह एक लड़की से ऊब जाता है, तो उसे दूर फेंक देता है। उसके पास धन है, तुम तो जानती ही हो, और बड़ा चालाक भी है। यही कारण है कि उसकी पत्नी और उसके बाप तक नहीं जानते कि उसके मन में क्या है। वह ज़रूर तुम पर रीझ गया होगा, क्योंकि वह हमेशा तुम्हारे बारे में पूछता रहता है। हाय, अब वह तुमको बरबाद कर देना चाहता है?..." वह यकायक अटककर सोचने लगी। फिर एक हँसी के साथ उसने ताओ-चिङ के नर्म ठण्डे गालों को छुआ। "वह ज़रूर अपना धैर्य खो चुका होगा, कारण कि तुम उसके मन-माफ़िक़ आगे नहीं बढ़ी...या हो सकता है, तुम्हीं ग़लती पर हो; या हो सकता है, तुम्हारी आँखों को धोखा हुआ है?"

जैसे ही उसने यह सुना, ताओ-चिङ-ने इस विषय पर फिर विचार किया। अब वह मन्द स्वर में बोली; "यह सम्भव है, चाची। लेकिन यदि वह सचमुच मेरा अनिष्ट करना चाहता है, तब तो एकमात्र तुम ही हो, जो मेरी मदद कर सकती हो। तुम बिना उँगली उठाये मुझे मौत के मुँह में जाते नहीं देखोगी, है न? कहते हैं कि क्वोमिन्ताङ वाले निरपवाद रूप से सारे कम्युनिस्टों को शूट कर देते हैं।"

"अच्छा मुझे बताओ कि वह काग़ज़ कैसा दिखता है...मैं उसे तुम्हारी ख़ातिर तलाशूँगी," चाची चेन ने वादा किया।

चाची चेन जैसे मज़दूर से इस तरह की सहायता की स्वागतयोग्य पहल प्रत्याशित थी। ताओ-चिङ ने उसके दयालु, भयग्रस्त चेहरे की ओर देखा और सोचा, "आख़िरकार, वह भी तो दुनिया के मेहनतकशों में से एक है!"

चाची चेन सवा घण्टे बाद ताओ-चिङ का फ़ोटो और सन्देहास्पद "लाल क्रान्तिकारियों" के नामों वाला काग़ज़ लिये वापस लौटी। एक दर्जन से अधिक नाम सूचीबद्ध थे, लेकिन ताओ-चिङ केवल जिन तीन नामों को जानती थी वे थे च्याङ हुआ, सू मान-तुन और वह स्वयं।

उसने झट एक सफ़ाई पेश की। "चाची, यह काग़ज़ झूठे आरोपों से भरा हुआ है। मुझे इसे ध्यानपूर्वक पढ़ना होगा, ताकि अगर मुझे कोर्ट में जाना पड़े तो अपना बचाव कर सकूँ। क्या तुम मेरे लिए पहरा देने का काम करोगी? तुमको यह एक मिनट में वापस मिल जायेगा।"

"वे इसका पता पायें, इसके पहले ही मुझे वापस रख आना चाहिए।" उस

महिला ने याचना की। "मेरा तो काम तमाम कर दिया जायेगा, यदि उन्हें पता चल गया कि मैंने क्या किया है।"

इस अनुरोध की उपेक्षा करती हुई, ताओ-चिङ ने क़लम और काग़ज़ लिया, और दो मिनट में सभी नामों को उतार लिया। उनकी जाँच कर लेने के बाद उसने हल्का हृदय होकर मूल काग़ज़ को वापस कर दिया। तथापि बूढ़ी नौकरानी तुरन्त नहीं चली गयी, बल्कि उसने अपना एक हाथ ताओ-चिङ की बाँह पर रखा, और आँसू बहाने लगी, मानो वह लड़की जेल ही जाने वाली हो।

"क्या तुम्हें विश्वास है?...क्या वह सचमुच तुम्हें मार डालना चाहता है? अब मुझे सबकुछ विश्वास हो गया जो तुमने कहा था कि ज़मींदार शैतान होते हैं..."

ताओ-चिङ ने हामी भर दी, कहा कुछ नहीं। दूसरी महिला ने अपने आँसू पोंछे, और झटपट चल दी।

इस नस-नस झंकृत कर देने वाली घटना के बाद ताओ-चिङ अपनी अगली कार्रवाई पर सोच-विचार करने बैठ गयी। सूची उसके हाथों में थी, लेकिन इसका अध्ययन करने के लिए उसके पास समय न था। इसे तुरन्त पार्टी को सौंप देना ज़रूरी था। सू मान-तुन ने उसे बताया था कि यदि वह उसे न पा सके, तो श्री वाङ के पास चली जाये। चेन तेह-फू की चेतावनी अब भी उसके कानों में ताज़ा बनी हुई थी और वह अपने ख़तरे की पूरी स्थिति को महसूस करने लगी। उसने अपने सामने वाले चाची चेन के कमरे को देखा और उसे इतने अच्छे दोस्त को छोड़कर जाने का अफ़सोस हुआ; लेकिन वह अपने अचानक पलायन का कारण नहीं स्पष्ट कर सकती थी। चाची चेन ताओ-चिङ को दोबारा आश्वासन देकर वापस अपने कमरे में आराम कर रही थी। इस तरह लड़की को अपना सामान सहेजने का मौक़ा मिल गया। मुख्य प्रांगण से लगे दरवाज़े में ताला बन्द था; लेकिन उसने पंजे के बल चलते हुए बाहर जाकर देखा कि सहन ख़ाली था या नहीं, फिर सू की झोंपड़ी की ओर गयी जहाँ चेङ ठहरा हुआ था और मन्द स्वर में उसका नाम पुकारा।

बूढ़ा खेत मज़दूर बाहर आया और उस अँधेरे में फुसफुसाकर बोला, "अभी तुम गयी नहीं? अभी चली जाओ, दूसरा पहर शुरू होने से पहले।"

"मैं जा रही हूँ, चाचा। मैं तुम्हारी बहुत ऋणी हूँ। सू यू-पिन तो मेरा फ़ोटो रखे हुए है...कृपया मुझे बताओगे कि ता चेन गाँव का सबसे अच्छा रास्ता कौन-सा है? मैं वहाँ किसी को ढूँढ़ना चाहती हूँ।"

उसको दिशा बताने के बजाय उसने आग्रह किया, "जल्दी करो! किसी सवारी से जाना चाहोगी? आओ चलें।"

"क्या तुम मेरे साथ चलना चाहते हो?" उसे अति ख़ुशी हुई। "तब एक मिनट ठहरो मैं कुछ लेकर आ रही हूँ।"

वह अपने कमरे में वापस गयी, एक छोटा बण्डल लिया, और उस काली सूची

को अपनी भीतरी जेब में खोंस लिया। फिर चाची चेन के दरवाज़े पर गयी, लेकिन भीतर एकदम सन्नाटा था। यह सोचकर उसे दुख हुआ कि वह इस एकाकी बूढ़ी महिला को फिर कभी नहीं देख सकेगी जिसके साथ उसने क़रीब एक माह तक अच्छे ताल्लुक़ात बनाये रखे थे, और जिसने उसकी इतनी असाधारण मदद की थी। अब विलम्ब करने का समय न था, अतः वह यहाँ से चल पड़ी और सामने का दरवाज़ा खोल दिया वहीं चाची चेन से टकरा गयी।

उस बूढ़ी महिला ने उसका हाथ थाम लिया मानो वह सबकुछ समझ गयी थी, और फुसफुसाकर बोली :

"क्या तुम निकल भाग रही हो? तुमने मुझे बताया क्यों नहीं? जब तक वे सो रहे हैं, तुम जल्दी से निकल जाओ।"

ताओ-चिङ ने अपनी बाँहें इस महिला के गले में डाल दी, और उसके आँसुओं ने उस बूढ़ी नौकरानी के कपड़े भिगो दिये।

——:o:——

अध्याय 14

ताओ-चिङ और चेङ तेह-फू प्रांगण से होकर निकले, और एक छोटे फाटक के रास्ते से बाहर चले गये। वे सावधानीपूर्वक खेतों से होते हुए क़रीब पाँच ली जल्दी-जल्दी तय करते हुए एक बैलगाड़ी की लीक टेकरी के पास पहुँच गये, जहाँ पर ताओ-चिङ रुक गयी।

"अब लौट जाओ," उसने कहा। "मैं रास्ता पा जाऊँगी।"

जवाब देने के बजाय वह बूढ़ा आदमी उत्साहपूर्वक उसे अपने पीछे खींचता हुआ बढ़ चला। एक बड़े डबरे को पार करने में उसकी मदद करने के पश्चात उसने स्पष्ट किया :

"मैं तुम्हारे साथ चल रहा हूँ। अब मैं सुङ परिवार के साथ कैसे ठहर सकता हूँ?"

ताओ-चिङ समझने लगी। उसके ख़तरे के प्रति उसे अगाह करके उसके पास भाग निकलने के अलावा कोई रास्ता न था। वह उसके क़रीब खिंच गयी, अब उसे उसके पसीने की गन्ध से कोई परेशानी नहीं हुई।"

"चाचा, मैं कैसे तुम्हारा शुक्रिया अदा कर पाऊँगी? तुम मेरे प्रति इतने सहृदय रहे हो!"

वह पहले ही जैसा अक्खड़ बना रहा। "यह बात करने का कोई तरीक़ा नहीं है।" इस धीमी, सारगर्भित झिड़की ने उसके हृदय को छू लिया।

वे ख़ामोशी से उन दूर-दूर तक फैले खेतों से होकर चलते गये। उस मखमली

अन्धकार में एक ठण्डी बयार ज्वार की नम पत्तियों को, सरसराते पोपलर वृक्षों को, और ताओ-चिङ के चेहरे को जो आवेश में तमतमाया हुआ था, स्पर्श कर रही थी। यह उन मुग्धकारी ग्रीष्मकालीन रातों में से एक रात थी जब तारे झिलमिला रहे थे, और टिड्डे, झींगुर, साइकैडा और मेढक हरी-भरी घासों में, पेड़ों पर और तालाब के किनारे आह्लादित हो सहगान कर रहे थे। अपरिमित विस्तार में फैल खेत, अपनी नींद से विभोर हो, दिन की अपेक्षा कहीं अधिक मोहक लग रहे थे। हरी-भरी फ़सलें, कल-कल करती नदी, गहन आकाश की छतरी के नीचे दूर तक सर्पिल चला गया राजमार्ग, वन-फूल और सुगन्ध बिखेरती लताएँ, स्फूर्तिदायक, मदहोश करती हवा, और इससे भी अधिक क्रान्तिकारी संघर्ष की साहसिक गुणवत्ता – ये सभी इस रात को ताओ-चिङ के लिए सनसनीखेज़ रात बना रहे थे। वह ख़तरे से बेपरवाह होकर फिर से अपनी पुरानी मनःस्थिति में आ गयी। उसने ताज़ी हवा में एक गहरी साँस खींची। उसकी ज़ुबान पर चेङ तेह-फू से कहने के लिए यह बात मचल रही थी। "क्या यह ख़ूबसूरत नहीं है चाचा! और क्या जीवन भव्य नहीं है!" लेकिन वह उस समय को याद कर रुक गयी, जब वह तीन वर्ष पहले पेइताइहो से भागी थी। तब इसी तरह के संवेदनों ने उसे अभिभूत किया था, जब उसने समुद्र की पहली झलक देखी थी, जिससे प्रेरित होकर वह कुली से हर्षातिरेक में बोल पड़ी थी, "ओह, देखो तो! क्या यह मनोहर नहीं है।" तब उसका जवाब भी महत्त्वपूर्ण था, "इसमें मनोहर क्या है? अगर हम कोई मछली न पकड़ें और खाने को कुछ न मिलें तो मनोहर दृश्य का कोई ख़ास मतलब नहीं रह जाता है।" ऐसा सोचती हुई उसने उस बूढ़े जीर्ण-शीर्ण खेत-मज़दूर की ओर देखा जो भदभद करते उसकी बग़ल में चल रहा था। "एक टिपिकल निम्न-पूँजीवादी प्रतिक्रिया!" उसने अपनेआप को फटकारा। "क्या तुम कभी इन रोमानी भावों से मुक्ति नहीं पाओगी, और उस तरह समझदार नहीं बनोगी, जैसे मज़दूर और किसान हैं?..." अब एक भिन्न मूड में उसने अपने डग बढ़ा कर अपने दिमाग़ को अपेक्षाकृति अधिक फ़ौरी समस्याओं की ओर मोड़ दिया। क्या वे श्री वाङ को पा लेने में सफल होंगे? क्या वे समय से उन लोगों को सचेत कर सकेंगे जिनके नाम सूची में हैं? और स्वयं उसका क्या होगा?... वह रात की ख़ूबसूरती पूरी तरह भूल गयी। उसने अपना ध्यान अपने सहयात्री के साथ-साथ चलने पर ही केन्द्रित कर लिया।

चेङ तेह-फू बिना एक शब्द बोले आगे-आगे चलता रहा। जब एक दर्ज़न ली या अधिक चल चुके तो ताओ-चिङ ने यह पूछ कर ख़ामोशी तोड़ी :

"चाचा, तुमने कैसे जाना कि सुङ यू-पिन के पास मेरा फ़ोटो था और वह मुझे मुसीबत में डालना चाहता था?"

कुछेक क़दम और आगे बढ़कर चिङ तेह-फू ने जवाब दिया :

"मैं उसे गाड़ी में बैठाकर पहले शेन्शी प्रमण्डलीय सरकार के दफ़्तर गया और

फिर उसने क्वोमिन्ताङ मुख्यालय ले चलने का आदेश दिया। उसके बाद वह पूर्वी फाटक के बाहर प्राइमरी स्कूल गया..."

"प्राइमरी स्कूल!" ताओ-चिङ ने अचम्भे में दोहराया।

"हाँ। और वहाँ वू नामक एक मोटा आदमी उसके साथ क्वोमिन्ताङ मुख्यालय गया। मैंने उन्हें गाड़ी में बातचीत करते सुना। वू ने सुङ से कहा कि वह ज़रूर लिन ताओ-चिङ ही होगी, जो एक बार इस स्कूल में पढ़ा चुकी है। जब मैंने तुम्हारा नाम सुना..." वह उसको ध्यान से निहारने के लिए मुड़ा मानो आगे बोलने से पहले उसकी पहचान के प्रति आश्वस्त हो जाना चाहता हो, "तो आगे वे जो कुछ बतियाते गये, मैं उसे कान लगाकर सुनता गया। पहले तो सुङ को वू पर विश्वास नहीं हुआ, तब तक नहीं, जब तक कि उस मोटे आदमी ने तुम्हारा फ़ोटो नहीं दिखा दिया। मैं रोशनी की गरज से पीछे की ओर झुक गया और इसे साफ़ तौर पर देखा। यह तुम थी, इसमें कोई गफ़लत न थी..." एकाएक बोलना बन्द करके वह ताओ-चिङ को फ़सलों के बीच सीलन भरे खेत में छिपाने के लिए सड़क से खींच ले गया।

"क्या कोई आ रहा है?" ताओ-चिङ का हृदय धक-धक करने लगा। चेङ तेह-फू ने उसे ख़ामोश करने के लिए उसका एक हाथ थाम लिया। एक मँजे हुए शिकारी की भाँति उसने ग़ौर से सुनने के लिए अपना सिर काढ़ लिया और हामी भरी। तब आहिस्ते से लेकिन दृढ़तापूर्वक, उसने ताओ-चिङ को नीचे की ओर धकेल दिया। उसके दयालु, चिन्तातुर चेहरे पर एक नज़र डालते हुए ताओ-चिङ ने भी वैसा ही किया जैसा वह चाहता था और सोचने लगी, "वे इसे मूर्ख चेङ कहते हैं। लेकिन यह कितना चौकस और योग्य है।"

> पहले और पन्द्रहवें दिन
> मन्दिर का फाटक खुल गया विस्तार में!
> वृषभ-सिर और अश्व-मुख के दैत्य
> वहाँ खड़े थे अपने पूरे आकार में।...

वह आदमी जिसके त्वरित पदचाप सुनायी देते हुए निकट आते जा रहे थे, एक लोकप्रिय गीत गुनगुना रहा था। चेङ तेह-फू ने ताओ-चिङ को खींचकर खड़ा किया और उसी फुर्ती से उछलकर सड़क पर आ गया, जिस फुर्ती से यहाँ उछलकर नीचे की ओर गया।

"मान तुन, अरे बदमाश!" उसने ख़ुशी से चीख़ा।

सू मान-तुन इस अप्रत्याशित मुलाक़ात से इतना प्रसन्न था कि उसने ताओ चिङ और चेङ तेह-फू दोनों को हाथ से पकड़ लिया।

"क्यों, कुछ गड़बड़ है क्या? यह सब, क्या मतलब है?... मुझे आशा नहीं थी कि हालात इतनी जल्दी सिर पर गहरा जायेंगे।"

ताओ-चिङ ने जो कुछ हुआ था उसके बारे में एक संक्षिप्त विवरण दिया, और उसके बाद उसे नामों की सूची थमा दी।

"मैं इसे बिना चाची चेन की मदद से कभी न पा सकती थी," उसने बताया।

उसने नामों को पढ़ा और टिप्पणी की, "हमें किसी गन्दे कृत्य की उम्मीद तो थी, जब वह पाजी सुङ यू-पिन शहर गया था, लेकिन हम नहीं जानते थे कि वह दोनों प्रमण्डलों के प्रतिक्रियावादियों से इतनी जल्दी यह सूची प्राप्त कर लेगा। मैं यह इत्मीनान करने वापस जा रहा था कि तुम ठीक-ठाक हो या नहीं, लेकिन तुम तो यहाँ हो। चलो हम सभी श्री वाङ के यहाँ चलें।"

"इसका मतलब तुम उसके यहाँ से हो आये हो?" ताओ-चिङ ने चिन्तित भाव से पूछा।

"हाँ।" सू ने मुस्कान के साथ हामी भरी। "तुम्हारे दोस्तों में से एक यहीं पर है और तुम्हारी कुशल-क्षेम पूछा था।"

"कौन है वह?" उसने सवाल किया, वह आश्चर्य मिश्रित आशंका के बावजूद प्रसन्न थी।

"चलो चलते हुए बातचीत करें।" सू मुड़ा और चला पड़ा।

वे ताचेन गाँव की दिशा में पश्चिम की तरफ़ बढ़ चले। वे इतनी तेज़ चल रहे थे कि ताओ-चिङ मुश्किल से ही उनका साथ पकड़ पा रही थी, और वह अपना सवाल दोहराने के लिए बेहद अधीर थी। "क्या वह च्याङ हुआ है?" उसने सोचा। "या हो सकता है, लू चिआ-चुआन हो?" हो सकता है, वह जेल से छूट गया हो, और यहाँ स्थानीय पार्टी काम का नेतृत्व करने आ गया हो..।" लू चिआ-चुआन की कद्दावर, जीवन्त आकृति फिर उसके सामने साकार हो उठी। ताओ-चिङ हमेशा ही जब संकट में होती, लू चिआ-चुआन को याद करती, और अब जब उसके बारे में ख़याल आया, तो उसका हृदय पीड़ा से भर गया और उसमें खुशी का कोई भाव नहीं मिश्रित था।

वे भोर बेला में श्री वाङ के घर पहुँचे। यह एक अच्छे खाते-पीते मध्यम वर्गीय किसान का घर था, लेकिन दादा से लेकर नाती तक पूरा परिवार कम्युनिस्ट पार्टी का निष्ठावान समर्थक था। पिछवाड़े के अहाते के एक छोटे कमरे में रोशनी थी; और वहाँ उसको यह देखकर आश्चर्य हुआ कि च्याङ हुआ और मौसी ली तथा साथ ही साथ दो अजनबी, जो उसके अनुमानतः आन्दोलन से ज़रूर सम्बन्धित रहे होंगे, मौजूद थे।

ताओ-चिङ ने अधेड़ महिला के हाथ थाम लिये, लेकिन आँखें च्याङ हुआ के अलावा और किसी की तरफ़ नहीं गयी। मुश्किल से दो माह हुए होंगे, जब वे जुदा हुए थे, लेकिन ऐसा प्रतीत होता था, मानो एक लम्बा अरसा बीत गया हो, क्योंकि

संघर्ष ने उनको एक-दूसरे के काफ़ी निकट ला दिया था। ताओ-चिङ इतनी प्रग...। थी कि बोल नहीं पा रही थी, और यह च्याङ हुआ ही था जिसने मुस्कुराकर उसे बताया : "तुम भाग्यशाली हो! एक बार फिर असली ख़तरे से बच निकली!"

चेङ तेह-फू की ओर इशारा करके, जो चुपचाप एक बेंच पर बैठा हुक़्क़ा पी रहा था, वह बोली, "वह और सुङ घराने की एक पुरानी नौकरानी, चाची चेन, ही ऐसे थे जिन्होंने मुझे बचाया। क्या यह आश्चर्य नहीं है कि हमारी हमेशा ही किसी न किसी ऐसे दयालु से भेंट हो जाती है, जो दुर्भाग्य को सौभाग्य में परिणत कर देता है?"

वहाँ उपस्थित हर व्यक्ति ठठाकर हँस पड़ा। यहाँ तक कि श्री वाङ भी, जो आमतौर पर गम्भीर रहा करते थे, दबी हुई हँसी हँस पडे। तब सू मान-तुन ने कहा, "यह रही काली-सूची। स्थिति नाज़ुक है। क्या हम इस पर विचार-विमर्श करेंगे कि क्या किया जाये?"

च्याङ हुआ ने विचारमग्न होकर आसपास नज़र दौड़ायी और कहा, "सच है, हालात नाज़ुक हैं। लेकिन क्रान्तिकारी तो श्वेत आतंक के अन्तर्गत इसकी उम्मीद ही करते है। मैं समझता हूँ कि हममें से बाक़ी उस समस्या पर अभी विचार कर सकते हैं। पहले हम इन दो, बूढ़े और युवती, की समस्या हल कर लें।" वह चेङ तेह-फू और ताओ-चिङ की ओर मुड़ा। "यह असम्भव है कि ताओ-चिङ यहाँ रुके। मैं इस पक्ष में हूँ कि वह पेइपिङ वापस लौट जाये। जहाँ तक चाचा चेङ का सवाल है, हम इनके लिए कहीं भी कोई काम ढूँढ़ देंगे।"

चेङ तेह-फू ने कुछ नहीं कहा, लेकिन ताओ-चिङ आश्चर्य से चीख़ उठी, "मुझे पेइपिङ जाना होगा?"

"हाँ, तुम वापस पेइपिङ चली जाओ।" च्याङ हुआ ने दृढ़तापूर्वक उत्तर दिया। "यह तुम्हारे लिए अपेक्षाकृत आसान होगा कि वहाँ तुम भूमिगत काम करो। यह कहावत याद रखो, हरी-भरी पहाड़ी से चिपके रहो, तुम्हें कभी ईंधन की कमी नहीं पड़ेगी।"

कुछ भौचक्का-सी ताओ-चिङ एक क्षण तक ख़ामोश रही, फिर बोलने के लिए अपना सिर उठाया :

"कृपया, मुझे यहीं रहने दो! मैं देहात में तुम्हारे साथ मिलकर संघर्ष करना चाहती हूँ।"

इस पर कोई नहीं बोला, लेकिन मौसी ली ने उसका हाथ थपथपाया, और पुचकारते हुए कहा, "अब हम कड़ी मुसीबत में हैं बच्ची। बेहतर है कि तुम च्याङ हुआ के कहे मुताबिक़ पेइपिङ चली जाओ।"

अपने चारों ओर निश्चयबद्ध चेहरों पर नज़र डालते हुए, वह एक क्षण तक सोचती रही और फिर सहमति में सिर हिलाया।

च्याङ हुआ चुपचाप उसके पास क़रीब आ गया और फुसफुसाकर कहा जब तुम पेइपिङ पहुँचो, तो सू हुई से मिलो। यहाँ से एक पत्र ले जाकर उसे देना है। और तुम उसे न पा सको, तो इसे नष्ट कर देना..." उसने आगे बोलने से पहले थोड़ी देर सोचा, "मुझे ऐसा लगता है कि तुमने इन दो महीनों में अच्छी प्रगति की है। तुमने इस सूची को प्राप्त करने में अच्छी भूमिका निभायी। अच्छा काम करती जाओ। याद रखो, सच्चे क्रान्तिकारी बनने से पहले कई-कई परीक्षाएँ और मुसीबतें झेलने की आवश्यकता पड़ती है।" इस प्रोत्साहन और सलाह को सुनकर ताओ-चिङ के चेहरे पर एक भोली, अदम्य मुस्कान खिल गयी। लेकिन उसकी प्रसन्नता जल्दी ही च्याङ हुआ के प्रति चिन्ता में बदल गयी। उसने चिन्तित होकर पूछा, "हमारे जुदा होने के समय से तुम सारा समय यहीं आस-पास रहे, रहे न?"

उसने मुस्कुराते हुए स्वीकृति में सिर हिलाया।

"तुम क्या करोगे?" उसने व्यग्रता से पूछा।

"उसके बारे में चिन्ता मत करो, कुमारी आया! कॉमरेड च्याङ जानता है कि अपनी देखभाल कैसे की जाये।" सू मान-तुन की टिप्पणी ने बाक़ी को फिर हँसा दिया।

पौ फट चुकी थी। और श्री वाङ की खच्चर-गाड़ी तैयार थी। जब वह ताओ-चिङ को ट्रेन पकड़वाने के लिए चेङतिङ ले जाने के बारे में गाड़ीवान को निर्देश दे रहा था, उस दौरान ताओ-चिङ अहाते में एक लोकस्ट वृक्ष के नीचे खड़ी होकर चेङ तेह-फू से बातें कर रही थी, वह भी जाने की तैयारी में था। "चाचा, मैं तुमको कभी न भूलूँगी।" उसने ऐलानिया तौर पर कहा। "अब मैं जा रही हूँ और नहीं जानती कि हम फिर कब मिलेंगे, लेकिन मुझे अपने मन की शान्ति के लिए तुमसे एक बार और पूछना है : क्या तुम अब भी मुझसे घृणा करते हो?"

चेङ तेह-फू ने अपना हुक़्क़ा झाड़कर ख़ाली कर दिया, और एक फीकी मुस्कान उसके साँवले झुर्रीदार चेहरे पर फैल गयी, जब उसने जवाब में कहा, "अब तुम लिन पो-ताङ की बेटी नहीं, बल्कि क्रान्ति के लिए समर्पित एक लड़की हो। मैं तुमसे कैसे घृणा कर सकता हूँ? अगर मैंने पहले ऐसा किया बुरा मत मानना – तो, यह तो कम्युनिस्ट पार्टी है जिसने इसे ठीक कर दिया।"

यद्यपि ताओ-चिङ जान चुकी थी कि उसका दृष्टिकोण बदल गया था, फिर भी उसके शब्दों से उसे ख़ुशी मिल रही थी।

"देखो," उसने आगे कहा, "तुम्हारी माँ के घरवाले मेरे गाँव के थे। मैं उसे और उसके बाप दोनों को जानता था। भला, मैं जो कुछ तुम्हारी मदद में कर सकता था, उसे किये बिना कैसे रह सकता था?"

तुम सचमुच बहुत अच्छे हो चाचा। मैं तुम्हारे बारे में पूरी तरह से ग़लती पर थी।" वह हँस पड़ी। "लेकिन क्या तुम मुझे नहीं बताओगे कि हेई-नी कहाँ है? वह

कैसी है?"

बूढ़े के चेहरे की प्रसन्नता ग़ायब हो गयी और उसकी मुद्रा कठोर हो गयी। उसने शून्य भाव से उसकी ओर घूरा। उसका हुक्क़ा उसके हाथों से छूटकर गिर पड़ा।

"क्यों चाचा, क्या बात है?" जल्दी से उस काँपते बूढ़े को अपनी बाँह का सहारा देते हुए ताओ-चिङ स्वयं भी काँपने लगी।

कोई जवाब नहीं मिला। सूर्योदय की पहली किरणों ने दर्शा दिया कि उसका मरियल चेहरा सफ़ेद पड़ गया था, और दो बड़े-बड़े आँसू उसके गालों से ढुलक रहे थे। उसने ताओ-चिङ को हाथ से पकड़ लिया, और काँप उठा, "हेई-नी मर गयी बिटिया! उसकी सास ने बहुत पहले ही उसे मार डाला..."

"नहीं!...बेचारी हेई-नी!..." उसकी बाँह को कसकर पकड़े हुए ताओ-चिङ आँसुओं में फूट पड़ी। अपनी प्यारी, चंचल, बचपन की सहेली की स्मृति ने उसको अभूतपूर्व रूप से द्रवित कर दिया। अपने आँसू पोंछती हुई, उसने जहाँ तक हो सका, चेङ तेह-फू को ढाढस बँधाया। "चाचा इतने दुखी मत हो। जब...जब हालात बेहतर हो जायें, तो तुम ज़रूर आ जाना और मेरे साथ रहना।" सिसकी ने उसका कण्ठ लगभग अवरुद्ध कर दिया, लेकिन उसे महसूस हुआ कि उसे एक बात और जाननी थी। "और चाची चेङ कहाँ है?"

बूढ़े का चेहरा पीड़ा और हताशा से कुण्ठित हो गया। अब उसकी आँखें शुष्क हो गयी थी, उसने दाँत भींचकर जवाब दिया। "मर गयी। जब मैं खेतों में काम करने के लिए बाहर गया था, तुम्हारे बाप ने उसके साथ बलात्कार किया। वह फाँसी लगाकर मर गयी।" ताओ-चिङ एकदम अवाक रह गयी। कई मिनट गुज़र गये, और एक किंकर्त्तव्यविमूढ़ता में ही उसने सू मान-तुन की आवाज़ सुनी, "गवर्नेस के जाने का समय हो गया है।" वह अपने पर टिकी च्याङ हुआ की उत्सुक आँखों के प्रति कम ही सचेत थी, जो मानो आग्रह कर रही हों कि वह जल्दी कूच कर दे, और अपनी भावनाओं के प्रवाह में न बहे। मौसी ने उसकी बाँह पकड़कर सहारा देते हुए गाड़ी में बैठाया, और श्री वाङ ने बैंक नोटों की एक गड्डी उसके हाथों में थमा दी। इस सबके प्रति सचेत होते हुए भी वह एक शब्द नहीं बोल सकी थी। उसने जिस पीड़ा को महसूस किया था, उससे उसका गला अवरूद्ध हो रहा था, और वह अपनी समस्त लज्जा, वेदना और पश्चाताप को व्यक्त नहीं कर सकती थी। दूसरी बात, जो उसे मालूम हुई, वह यह थी कि वह अब गाड़ी में थी...परदा गिरा दिया गया...गाड़ीवान ने कोड़ा फटकारा और खच्चर को चिल्लाकर आवाज़ दी।...उसकी आँखें धुँधलायी हुई थीं। हेई-नी का प्यार भरा मुस्कुराता चेहरा, उसकी माँ की स्नेहभरी, मैत्रीपूर्ण भावाभिव्यक्ति, चेङ तेह-फू की वेदना-विचलित मुद्रा-सभी उसकी आँखों के सामने थे, तभी गाड़ी हिचकोले लेकर चल पड़ी। "उसके साथ की

गयी ज़्यादती की भरपायी करो।" अब सू मान-तुन के शब्दों ने एक भिन्न अर्थ ग्रहण कर लिया।

"बेशक, तुम मुझसे घृणा करते थे चाचा...भला तुम यह किये बिना कैसे रह सकते थे? ओह, लिन पो-ताङ, सुङ यू-पिन, सुङ कुएई-ताङ, वू यू-तिएन हमें निश्चय ही इस दुनिया को तुम जैसे रक्त-चूषक, नरभक्षी राक्षसों से मुक्ति दिलानी होगी।" अन्ततः उसने अपनी भावनाओं को अभिव्यक्ति दे ही दी, लेकिन किसी ने उसकी चीख़ नहीं सुनी।

——:o:——

अध्याय 15

यह सवेरा होने के पूर्व रात का सबसे अँधेरा समय था। खड़खड़ करती पेइपिङ-हाङकाऊ एक्सप्रेस गाड़ी विस्तृत उत्तरी चीन के मैदान से होकर दौड़ती जा रही थी। मद्धिम रोशनी वाले तीसरी श्रेणी के डिब्बे में ताओ-चिङ को छोड़कर सभी मुसाफ़िर सिकुड़े-सिमटे हुए सो रहे थे। वह एक कोने में आँखें बन्द किये और ख़यालों में खोयी हुई बैठी थी। जब-तब वह यह देखने को आँखें खोल लेती कि कोई उसकी निगरानी तो नहीं कर रहा है। अगले ही क्षण उसका दिमाग़ पुनः विषादमय विचारों पर लौट जाता था। उसने खिड़की से बाहर अँधेरे में खुले देहात की ओर देखा, क्षितिज पर झिलमिलाते तारे धीरे-धीरे कई नन्हे सिरों की आकृति ग्रहण करते हुए प्रतीत हो रहे थे। उसने तिङसिएन के बहादुर, उर्वर मस्तिष्क वाले स्कूली बच्चों और सुङ यू-पिन के घर में रहने के दौरान अपने कई विक्षुब्धकारी अनुभवों को याद किया... चेङ तेह-फू, जिसकी उसने इतनी अधिक सराहना की थी, कहाँ गया होगा? उसने उम्मीद की कि वाङ लाओ-त्सेङ और उसके पोती-पोते को सताया नहीं जा रहा होगा। हालाँकि वह उस बूढ़े आदमी से एक ही बार मिली थी, फिर भी उसकी दुर्दशा ने उस पर एक अमिट छाप छोड़ दी थी। उसने अपनी अर्न्तदृष्टि में दुखी हेई-नी और उसकी माँ और साथ ही, स्वयं अपनी माँ, सिऊ-नी, को भी देखा... कौंधकर पीछे छूट रहे अँधेरे खेतों को निहारते हुए वह निःश्वास छोड़े बिना न रह सकी। अपनी जेब में उस पत्र को महसूस करते हुए जिसको च्याङ हुआ ने उसे सू हुई के पास पहुँचाने के लिए कहा था, उसने चिन्ताभाव से सोचा, "अगर मैं उसे न पा सकी तो क्या होगा?..."

फिर वह अपने विचारों की ओर से अपेक्षाकृत अधिक व्यावहारिक समस्याओं पर सोचने के लिए मुड़ी।

"मैं पेइपिङ में सबसे पहले किसके यहाँ पहुँचूँगी? मैं कहाँ ठहर सकती हूँ? सियाओ-येन के यहाँ तो, जो कुछ घट चुका था, उसके बाद बमुश्किल ही जा

सकती हूँ, और च्याङ हुआ ने कहा है कि मुझे सू हुई के पास सीधे नहीं जाना चाहिए। उसने ठीक कहा है। लेकिन कहीं अगर मैं हू मेङ-एन के हाथों पड़ गयी तो?..." हू का घृणास्पद चेहरा तभी से उसे खटक रहा था, जब वह ट्रेन पर चढ़ी थी। यह पेइपिङ से पेइताइहो की यात्रा उसकी पहली यात्रा से एकदम भिन्न थी। अब गुप्तचर विभाग हमेशा उसके पीछे लगा रहेगा, लेकिन जो भी ख़तरा आये उसे सू हुई के सम्पर्क में आने के लिए, पेइपिङ तो जाना ही है... बैठे-बैठे सोचते हुए उसकी भारी पलकें मुँद गयीं।

ट्रेन हड़हड़-खड़खड़ करते चल रही थी। अन्ततः वह पिछले चार दिनों के तनाव और भागदौड़ के मारे सो ही गयी।

ट्रेन उस दिन दोपहर के बाद पेइपिङ पहुँची, और अपना मामूली असबाब उठाये ताओ-चिङ डिब्बे से उतर गयी और कोलाहल भरी भीड़ में समा गयी। वह कुछ ही क़दम चली होगी कि एक तीक्ष्ण स्वर पुकार उठा :

"छोटी लिन, लिन ताओ-चिङ!" ठीक उसी समय एक नर्म, ख़ुशबूदार बाँह ने उसके कन्धों को घेर लिया। एक चुस्त लिबास वाली महिला, भारी मेकअप किये और कान में मोती की बालियाँ पहने उससे मिल रही थी और मित्रवत मुस्कान के साथ उसका अभिवादन कर रही थी।

"अरे छोटी लिन, क्या तुम मुझे नहीं जानती?"

ताओ-चिङ सन्न रह गयी।

ओह, तो तुम हो, पाई ली-पिङ! मैं तो बड़ी मुश्किल से ही तुम्हें पहचान पायी।"

"बेवक़ूफ़ी मत करो," पाई ली-पिङ तमतमा गयी। "बस इसी कारण से कि मैंने बेहतर कपड़े पहन लिये हैं? मैं तुमको तत्क्षण ही यहाँ तक कि दूर से ही देखकर पहचान गयी।" वह ताओ-चिङ को ऊपर से नीचे तक देखती हुई जल्दी-जल्दी उसके साथ-साथ चलने लगी। "मैं अभी-अभी एक दोस्त को विदा कर रही थी। कितना अच्छा है, जो तुमसे यहीं मुलाक़ात हो गयी! तुम तो जानती हो कभी-कभी मैं पुराने दोस्तों का ख़याल किये बिना नहीं रह पाती। उन दिनों हमारे जीवन में कुछ रोमानी बातें थीं... हाँ तो छोटी लिन, मैंने यह तो पूछा ही नहीं कि तुम कहाँ से आ रही हो, या इस पूरे समय में तुम क्या करती रही।"

ताओ-चिङ ने अपनी इस पुरानी सहेली को जिज्ञासापूर्वक देखा, जिसके होंठ गहरे किरमिजी रँगे हुए थे, और उसकी कमानीदार भौंहें सुरुचिपूर्ण ढंग से तूलिका-खचित थीं। उसके हल्के पारदर्शी गाऊन से इत्र की ख़ूशबू के झोंके आ रहे थे, और उसके कान की बालियाँ उसके पाउडर-पुते गालों के अगल-बग़ल झूल रही थी। यह छिछोरी नखरेबाज़ उसके छात्र-दिनों वाली पाई ली-पिङ नहीं थी, और ताओ-चिङ का मन उससे इतना बिदक गया कि उसने अन्यमनस्क भाव से ही

उसके प्रश्नों का उत्तर दिया।

"मैं क्या करती रही? मैं देहात के एक प्राइमरी स्कूल में पढ़ा रही थी।"

पाई ली-पिङ ने विस्मय से भरकर अपनी कमानीदार भौंहें उठायीं।

"देहात में पढ़ा रही थी? क्या वह भयावह रूप से कठिन नहीं था? तुम्हारे उस पतिदेव, यू युङ-त्से का क्या हुआ?"

"हमने बहुत पहले सम्बन्धविच्छेद कर लिया।"

"क्या सचमुच? चलो, जो हुआ बहुत बढ़िया हुआ। मैं उसे कभी पसन्द नहीं करती थी।"

चलते-चलते बतियाते हुए वे जल्द ही स्टेशन से बाहर आ गयीं। ताओ-चिङ अलविदा कहने ही वाली थी कि पाई ली-पिङ ने यह कहते हुए उसकी बाँहें पकड़ लीं, "छोटी लिन, हमने वर्षों से एक-दूसरे को नहीं देखा, हमें एक लम्बी बातचीत करनी है। चलो मैं एक डिनर से तुम्हारी आवभगत करूँ। तुमने ट्रेन में कुछ भी नहीं खाया होगा, है न?"

"अरे, नहीं..." ताओ -चिङ जो उसे बहन पाई कहने की इच्छुक नहीं थी, नहीं समझ पा रही थी कि कैसे उसे सम्बोधित करे। "मैं अभी भूखी नहीं हूँ, और मुझे ढेर सारे काम करने हैं। मैं किसी दूसरे समय आकर तुमसे मुलाक़ात करूँगी।"

"ओह नहीं, तुम ऐसा नहीं कर सकती!" पाई ली-पिङ ने प्यार से उसे एक धौल जमाते हुए कहा। "अगर तुम अपने पतिदेव से छुट्टी पा गयी हो, तब क्यों मिट्टी का माधो बनी हुई हो?" उसने तुरन्त दो रिक्शे बुलाये, आनाकानी करती ताओ-चिङ को एक पर बैठा दिया, स्वयं दूसरे पर चढ़ी, और रिक्शावाले को चिएहयिङ ले चलने को कहा, जो पेइपिङ का सबसे बड़ा पश्चिमी शैली का रेस्तराँ था।

पाई ली-पिङ ने दो लोगों के लिए डिनर का आदेश दिया और वे खाते हुए बतियाती रहीं। ताओ-चिङ को मालूम हुआ कि उसकी पुरानी सहपाठिन शंघाई फ़िल्म स्टूडियो में भरती हो गयी थी, दो फ़िल्मों में अभिनय कर चुकी थी, और एक प्रबन्धक की पत्नी भी बन चुकी थी। वह विलासिता में जी रही थी, लेकिन समय-समय पर वह ऐसे जीवन से ऊब जाती और अपने पुराने जीवन और पुराने दोस्तों के बारे में सोचने लगती।

"यू यी-मिन और वाङ चिएन-फू अब कैसे हैं?" ताओ-चिङ ने पूछा।

"यू यी-मिन!" पाई ली-पिङ मुस्कुरायी। "तुम कल्पना नहीं कर सकती कि वह कितना सिरदर्द रहा है। वह सारा समय एक भौंरे की तरह मेरे ईर्द-गिर्द मँडराता रहा है। अगर मैं शंघाई जाती, तो वह मेरे पीछे-पीछे वहाँ चला जाता। अगर मैं नानकिङ जाती, तो वह वहाँ भी पहुँच जाता। जब वह बहुत देर तक रुक जाता, तो मेरे ऊपर प्यार, घृणा, आत्मीयता और आँसुओं की झड़ी लगा देता...यह बेहद

हास्यास्पद है। वह एक दुछत्ती में रहता है और जब उसके हाथ तंग हो जाते हैं तो क़र्ज़ लेने चला जाता है। लेकिन हालाँकि वह एक भयानक सिरदर्द है, फिर भी मैं उसके लिए अफ़सोस करती हूँ। जहाँ तक वाङ चिएन-फू का सवाल है, ख़ैर, वह एक सरकारी अहलकार बन गया है तथा अहंकारी और आत्मतुष्ट हो गया है। वह अराजकतावादी, जो सरकार की नुक्ताचीनी किया करता था, अब इसका चहेता औज़ार, एक चीनी नौकरशाह बन गया है। एक बार मैं उससे नानकिङ में मिली थी, वह एक फ़ैशनेबुल युवती की बाँह में बाँह डाले हुए था, लेकिन वह मुझसे कतरा गया और मैंने भी उसका अभिवादन करने का कष्ट नहीं किया! अब सिर्फ़ सू निङ बचता है। क्या तुम जानती हो कि वह गिरफ़्तार हो चुका है, और जेल में है? हे भगवान! जब मैं दूसरे दिन उसे देखने गयी, तो मैंने उसे एक सज़ायाफ़्ता क़ैदी का लिबास पहने पाया, और उसके बाल मुड़ा दिये गये थे। वह चुस्त लड़का – तुम्हें देखना चाहिए कि उन्होंने उसकी क्या गत बना दी है।" वह ताओ-चिङ की ओर आकर्षक रूप से मुस्कुरायी और आगे बोली, "छोटी लिन, क्या तुम्हें मालूम है कि एक बार मैं उसके प्यार में पागल थी? अब भी मैं उसके प्रति अपने हृदय में एक स्नेहिल स्थान रखती हूँ और तो-फाङ तो बहुत ईर्ष्यालु रहा है। अफ़सोस है कि हमारे अच्छे दिन एक साथ ही ख़त्म हो गये। वैसे लू चिआ-चुआन का क्या हाल है? अब तक तो तुम लोग निश्चित तौर पर प्रेमी बन गये होगे?"

ताओ-चिङ लजा गयी। ढेर सारी चिर-संचित स्मृतियों और दबी भावनाएँ पाई ली-पिङ की आकस्मिक टिप्पणी पर सजीव हो उठीं। उसने मृदुता से जवाब दिया :

"जब वह गिरफ़्तार हुआ तब से लेकर अब तक एक वर्ष से अधिक हो गया..."

"क्या! क्या वह भी गिरफ़्तार हो गया? मुझे बहुत अफ़सोस है। ये क्रान्तिकारी..." अपने विस्मय के बावजूद उसने बैरे को अंग्रेज़ी में बुलाने के लिए मुड़ते हुए, वाक्य अधूरा ही छोड़ दिया :

"बैरा! दो कप कोका!" अपने रँगे होंठों को एक झीने रूमाल से थपथपाकर, वह कुछ हिसाब लगाने के अन्दाज़ में मुस्कुरायी। "मुझे बताओ छोटी लिन, क्या तुमने शादी कर ली?"

"नहीं।"

"क्या तुमको कोई नौजवान मिला?"

"नहीं।" यद्यपि बातचीत के दौरान पाई ली-पिङ के प्रति ताओ-चिङ की कुछ पिछली भावनाएँ लौट आयी थीं, फिर भी उसके साथ में एकदम स्वाभाविक और स्नेहसक्ति ढंग से व्यवहार करने में उसे बेहद असुविधा महसूस हो रही थी।

पाई ली-पिङ ने उसका कन्धा थपथपाया और एक खिलखिलाहट के साथ, बोली, "छोटी लिन तुम कितनी निराली हो! मैं तो मर्द के बिना एक दिन भी नहीं रह सकती... मुझे तुम्हारे लिए एक बढ़िया वर ढूँढ़ने दो, जिससे कि तुम जीवन का

कुछ लुत्फ़ ले सको।"

ताओ-चिङ मुस्कुरायी, लेकिन प्रत्युत्तर में कुछ बोली नहीं। अपना कोका पी चुकने के बाद वह जाने के लिए उठी; लेकिन पाई ली-पिङ ने उसे फिर खींचकर बैठा लिया। "बेवकूफ़ लड़की। हमें एक-दूसरे से मिलने का बराबर मौक़ा तो मिलता नहीं, और मैं एक या दो दिन में शंघाई के लिए कूच करने वाली हूँ। तुम मेरे साथ घर क्यों नहीं चलती और मज़े से समय गुज़ारती? कल हमलोग जाकर सू निङ को देख सकते हैं...तुम्हारा कोई प्रेमी नहीं, जो तुम्हारा इन्तज़ार कर रहा है, तो फिर जल्दी क्या है?"

"अब तुम कहाँ रह रही हो?" ताओ-चिङ ने प्रसंगवश पूछ लिया।

"ली तुङ होटल में। मेरा पति मेरे साथ नहीं है। इसलिए आओ वहीं चलें और मज़े से बातें करें।"

"नहीं, धन्यवाद। मुझे एक रिश्तेदार से कुछ फ़ौरी काम है। मैं किसी दूसरे दिन आ जाऊँगी।" इस बेबाक इन्कार के साथ ताओ-चिङ ने अपना बैग उठाया और चल देने को हुई।

"नहीं, मैं तुम्हें नहीं जाने दूँगी!" पाई ली-पिङ ने उसके हाथ से बैग छीन लिया और उसकी बाँह पकड़कर उसे रेस्तराँ से बाहर ले आयी। उसने बिना किराया पूछे ही दो रिक्शे बुलाये, और ताओ-चिङ को एक पर बैठ जाने को कहा। जैसे ही वे चलीं, वह अपनी सहेली की नाराज़गी पर हँस दी, और बोल उठी, "छोटी लिन, हम लोग अच्छी-बुरी हर स्थिति में दोस्त रही हैं। अतीत में तो हम बहनों की भाँति थीं ... क्या अब तुम मुझ पर अधिक विश्वास नहीं करती? खुश हो जाओ। मेरे साथ आओ, और मैं वादा करती हूँ कि मैं तुम्हें अच्छे दिन दिखा दूँगी।"

ताओ-चिङ ने कोई जवाब नहीं दिया। उसने रिक्शा से कूद पड़ने के अपने क्रुद्ध आवेग को रोक लिया। आख़िरकार पाई ली-पिङ एक बार आन्दोलन में भाग ले चुकी थी, और उसके कई क्रान्तिकारी दोस्तों को जानती थी, इसके अतिरिक्त वह दयालु और स्नेहिल हृदया थी। ये विचार जब उसके दिमाग़ में उभरे, तो उसका गुस्सा शमित हो गया।

ली तुङ होटल की पहली मंज़िल पर पाई ली-पिङ ने एक ठाठदार आवास ले रखा था, लेकिन ताओ-चिङ एक ठण्डे, खूबसूरत चमड़े के सोफ़े पर बैठकर असुविधा के अलावा और कुछ भी महसूस नहीं कर रही थी। "यह तो एक स्वप्न की भाँति है। भला मैं ऐसी जगह कैसे आ सकती थी?" वह स्वयं से पूछ रही थी, तभी उसकी सहेली ने बाथरूम से उसे पुकारा :

"आ जाओ, छोटी लिन! आओ और हाथ-मुँह धो लो!"

ताओ-चिङ उठ खड़ी हुई और बोली, "नहीं, मैं थोड़ी देर के लिए बाहर जा रही हूँ। मैं जल्द ही वापस आ जाऊँगी।"

"ज़रा ठहरो!" उसका रास्ता रोकने के लिए दौड़ती हुई पाई ली-पिङ ने आग्रह किया। वह एक भड़कीला सफ़ेद रेशमी ड्रेसिंग गाऊन पहने हुए थी। ताओ-चिङ को फिर सोफ़े पर ढकेलते हुए, उसने उसके गाल में चिकोटी काटी और शरारतपूर्ण ढंग से कहा, "मूर्ख मत बनो छोटी लिन! मैं तुम्हें जाने नहीं दूँगी।" उसे फिर ऊपर-नीचे देखती हुई वह आगे बोली, "क्यों, तुम्हारे जैसे चेहरे वाली तो किसी भी मर्द का दिल चुरा सकती थी। फिर भी तुम इतनी गावदुम क्यों बनी रहती हो। तुम क्रान्ति से प्यार करती हो, मैं मान लेती हूँ, नहीं तो क्यों तुम इतना कठोर जीवन जीती?"

"बेकार की बातें मत करो!" ताओ-चिङ ने झट प्रतिवाद किया। "मेरा लम्बे समय से उन क्रान्तिकारियों से नाता टूट चुका है। इस समय तो मैं बस यही सोचती हूँ कि कैसे जीविका कमाऊँ..। मुझे सचमुच कुछ फ़ौरी काम करने हैं। कृपया कुछ देर के लिए मुझे माफ़ करना।" एक बार फिर वह अपनी जगह से उठी।

लेकिन इस बार फिर पाई ली-पिङ ने एक मुस्कुराहट के साथ प्रतिवाद करते हुए, उसे वापस बैठा दिया, "तुम फिर बेवक़ूफ़ी कर रही हो। तुम्हारे बचकाने झूठ मुझे धोखा नहीं दे सकते। मैंने ख़ूब दुनिया देखी है, और मैं कोई बेवक़ूफ़ नहीं हूँ। तुम्हारी उम्र में मैं भी सर्वहारा क्रान्ति के बारे में तुम्हारी ही तरह से उत्सुक थी। निम्न-पूँजीवादी बुद्धिजीवी एक क्रान्तिकारी बनने का क्या-क्या सपना नहीं देखते? लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता गया, मेरा सच्चाइयों से सामना होना शुरू हो गया। बेशक कम्युनिज़्म कोई कोई बुरी चीज़ नहीं, लेकिन एक आदर्श के रूप में यह अत्यधिक अस्पष्ट और अत्यधिक दूरगामी लक्ष्य है। कब कम्युनिस्ट समाज बनेगा? कब क्रान्ति विजयी होगी? इसके अतिरिक्त हमेशा ही गिरफ़्तार हो जाने और गरदन उड़ा दिये जाने का ख़तरा मँडराता रहता है। अगर, तुम सौभाग्य से बच भी जाओ, तो लौह अनुशासन के आगे घुटने टेकना होगा, और बिना ना-नुकुर के नेतृत्व की आज्ञा का पालन करना होगा... यही कारण है कि मैं इन सबसे बाहर निकल आयी।"

पाई ली-पिङ ने एक हल्की साँस खींची, और कुछ विराम लेकर आगे कहा, "लेकिन जीवन क्या है, मुझे जानना चाहिए कि नहीं? तो फिर यह जब तक है तब तक इसका मज़ा क्यों न लिया जाये? मैंने हवा में महल बनाकर समय नष्ट करना बन्द कर दिया है, और अब मेरी कोई महत्त्वाकांक्षा नहीं है। मैं तो बस यही चाहती हूँ कि जब तक जवान हूँ तब तक जीवन के मज़े लूटूँ। ओह छोटी लिन, मैं तुम्हारी पोशाक, तुम्हारे व्यवहार और तुम्हारी बातचीत से बता सकती हूँ कि तुम पर अभी वही भूत सवार है...मुझे तुम्हारे लिए अफ़सोस है, सचमुच मुझे अफ़सोस है!"

उसने ताओ-चिङ को बाँहों में भर लिया और उत्सुकतापूर्वक फुसफुसाकर कहा : "छोटी लिन, हालाँकि अब मैं क्रान्तिकारी नहीं हूँ, फिर भी मैं निश्चय ही प्रतिक्रान्तिकारी नहीं हूँ। मैं जो महज़ तुमको सलाह दे रही हूँ कि जब तक तुम जवान हो, तब तक एक बढ़िया पति ढूँढ़ लो, और जीवन से जो मज़े ले सकती हो, ले लो।

यह सारी धमाचौकड़ी तुम्हें कहाँ ले जायेगी? सब निरुद्देश्य है। अरे, क्या मेरी सलाह अब भी तुम्हारे कानों को सुहा रही है? किसी दिन तुम महसूस करोगी कि मैं ठीक कह रही थी!"

ताओ-चिङ पूरी कोशिश करके चुपचाप सुनती रही, जबकि पाई ली-पिङ अपना जीवन-दर्शन बघारती रही। यह कुछ-कुछ परिचित-सा लगा और अचानक उसे याद हो आया कि उसकी मिडिल-स्कूल के दिनों की एक सहेली, चेन वेई-जू ने वर्षों पहले उसे ऐसी ही सलाह दी थी। अन्तर सिर्फ़ इतना था कि चेन वेई-जू ने बिना कभी क्रान्ति में शिरकत किये ही शादी कर ली थी, जबकि पाई ली-पिङ एक धनी आदमी की पत्नी बनने से पहले इससे पीछे हट चुकी थी। यह कल्पना करना कितना हास्यास्पद और अपमानजनक था कि चीनी महिलाओं के लिए एकमात्र शादी का ही रास्ता खुला हुआ था। अपने को संयत करके उसने गम्भीरतापूर्वक कहा :

"ली-पिङ तुम्हारा भला हो कि तुम मेरे बारे में सोचती हो। हालाँकि मैं यक़ीन नहीं करती कि खुशी वस्तुतः पति पर ही निर्भर करती है। क्या भौतिक सुख आत्मिक शून्यता को भर सकता है? मैं चाहूँगी कि तुम सुख के लिए किसी दूसरे पर निर्भर रहने के विचार से मुक्ति पा लो, और अपने पैरों पर खड़ा होना सीखो। तुम क्यों नहीं कुछ बढ़िया फ़िल्मों में अभिनय के माध्यम से कुछ सार्थक काम करती?" जब ताओ-चिङ ने चेन वेई-जू से बहस की थी, तब कि अपेक्षा अब वह अधिक अनुभवशील थी और अपने मिजाज़ और विवेक को सही और कुशल ढंग से बनाये रखने में समर्थ थी।

चतुर पाई ली-पिङ ने जब देखा कि ताओ-चिङ पूरी तरह से गम्भीर हो गयी थी, तो झट अपना लहज़ा बदल दिया।

"ठीक है छोटी लिन, "वह बोली, "यहाँ मैं तुमसे सहमत हूँ। आजकल की चीनी फ़िल्में हॉलीवुड प्रोडक्शंस की ही तर्ज पर बनती हैं, इसलिए उनमें से अधिकतर तो कूड़ा या अश्लील ही होती हैं। मैं अक्सर सपना देखती हूँ कि किसी प्रगतिशील फ़िल्म या नाटक में कोई सार्थक अभिनय करूँ। अफ़सोस है कि अच्छे नाटकों का बहुत अभाव है।" उसने एक गहरा निःश्वास छोड़ा, मानो उसकी दुनियादारी पूरी तरह सिर्फ़ अच्छे नाटकों के न होने के कारण ही थी।

थोड़े समय तक ख़ामोशी छायी रही, फिर ताओ-चिङ ने यह महसूस करके कि वह जा नहीं सकती थी, सू निङ का समाचार पूछा। वह अपने इस एक समय के "भाई" से अपनी गिरफ़्तारी के बाद सम्पर्क खो चुकी थी।

"सू निङ?" पाई ली-पिङ ने अपनी सहेली का हाथ सहलाते हुए कहा। "वह एक अच्छा लड़का है। लेकिन तुम्हारी ही तरह वह भी अब मुझ पर विश्वास नहीं करता। जब मैं दूसरे दिन उसे देखने गयी, तो मैं जानबूझकर एक नीला सूती गाऊन

पहने हुए थी। लेकिन वह...मैं इसे कैसे बताऊँ? वह बदल चुका है। मैं दोष नहीं देती उस बेचारे को। उसने तुम्हारे बारे में पूछा। हो सकता है तुम दोनों..." उसने एक स्नेहिल दृष्टि ताओ-चिङ पर डाली और वाक्य को अधूरा ही छोड़ दिया।

ताओ-चिङ ने हँसकर मुँहतोड़ जवाब देते हुए, मानो थप्पड़ जड़ दिया।

"तुम तो जोड़ा बैठाने में माहिर हो। क्या तुम इसके अलावा और कुछ नहीं सोच सकती?"

ठीक तभी दरवाज़ा खुला तथा एक युवती और तीन मर्द अन्दर आये, वे सभी पश्चिमी वेषभूषा में थे। पाई ली-पिङ ने ताओ-चिङ को खींचकर खड़ा किया, और उसका एक सहज, स्वाभाविक लहजे में परिचय कराया।

"यह मेरी छोटी बहन है। क्या तुम नहीं देखते कि हम एक जैसी हैं?"

मेहमानों में से दो हँस पड़े, जबकि तीसरा कुछ बुदबुदाया, जिसे ताओ-चिङ सुन न सकी। "क्या होगा यदि वह पाजी हू मेङ-एन यहाँ आ पहुँचे।" उसने चिहुँककर सोचा। उसने कुछ बेमन से मेहमानों का अभिवादन किया, और वहाँ से खिसक जाने से पूर्व अपना सामान लेकर नहाने के लिए बाथरूम में चली गयी। उसे सफ़र के बाद गर्मी और चिपचिपाहट महसूस हो रही थी, और वह पिछले कुछ दिनों की भागदौड़ से थक गयी थी। वह नहा चुकी थी और बाथरूम में ही अपने को चुस्त-दुरुस्त बना रही थी, तभी पाई ली-पिङ बोलती हुई अन्दर आ गयी।

"छोटी लिन, आओ चलें। मैं तुम्हें मज़े लेने के लिए बाहर ले चल रही हूँ।"

"धन्यवाद, लेकिन मुझे अफ़सोस है कि मैं नहीं जा सकती। सचमुच मेरे पास समय बहुत कम है, और मुझे अभी चले जाना है।"

"तुम मुझे इस तरह अपमानित नहीं कर सकती। मैं तुमको भागने नहीं दूँगी। जब तक बन पड़े जीवन के मज़े लूटो। इतनी बेवकूफ़ मत बनो।" पाई ली-पिङ खुशमिज़ाजी के ढंग से ताओ-चिङ की बाँह पकड़कर बोलती गयी। "क्या तुम नहीं जानती कि क्रान्तिकारी काम में ढेर सारे सामाजिक अनुभवों की भी ज़रूरत पड़ती है? अगर तुम्हें पूँजीपति वर्ग से नफ़रत है, तो तुम्हें उनके पास जाना चाहिए, और देखना चाहिए कि वे वास्तव में कैसे जीते हैं। आज रात पीकिङ होटल में एक नृत्य होगा। आओ चलें।"

"नहीं ली-पिङ, मैं नहीं जा सकती। मैं नाचती नहीं, इसलिए मजबूर मत करो।" ताओ-चिङ झल्ला रही थी।

"क्या फ़र्क़ पड़ेगा अगर तुम नहीं नाचोगी? तुम दूसरों को तो देख सकती हो। देखो, मेरे दोस्त इन्तज़ार कर रहे हैं। उनमें से एक येन येह, बैंक का प्रबन्धक है। साथ की युवती उसकी पत्नी है। बाक़ी दो में से एक म्युनिसिपल सरकार का मुख्य सचिव और दूसरा अख़बार का सम्पादक है। वे प्रभावशाली लोग हैं, और वे तुम्हारा ही इन्तज़ार कर रहे हैं। क्यों न चलकर अच्छा समय बितायें? क्या तुक है कि तुम

हमेशा अपने में ही सिमटी रहो?"

अब अपने को और संयत रख सकने में असमर्थ पाकर ताओ-चिङ तमतमा उठी, और उसका स्वर गुस्से से काँपने लगा।

"तुम क्या करने पर उतारू हो, पाई ली-पिङ मैं इस तरह की तानाशाही की क़ायल होने वाली नहीं हूँ।"

अनुभव ने पाई ली-पिङ को युक्ति सिखा दी थी। बुरा मानने का कोई लक्षण न प्रकट करती हुई, उसने अपने नर्म, गुलाबी गाल को ताओ-चिङ के गाल से सटाया, और खुशामद करने के लहजे में फुसफुसाकर कहा।

"चिढ़ो नहीं। बात यह है कि मैं तुमको इतना चाहती हूँ कि तुम्हारे बग़ैर जा नहीं सकती। क्यों न चले चलें, वहाँ कुछ समय तक रुकेंगे, और जल्द ही वापस आ जायेंगे" इसके साथ ही उसने ताओ-चिङ को एक बाँह से समेट लिया और उसे कमरे से बाहर ले चली। चिढ़ी तो थी ही, वह लड़की अजनबियों के सामने तमाशा नहीं खड़ा करना चाहती थी, लिहाज़ा वह चमकदार फ़ोर्ड गाड़ी में सवार हो गयी।

पेइपिङ होटल के बॉल रूम में पाई ली-पिङ ने एक बार फिर अपने चारों दोस्तों का ताओ-चिङ से परिचय कराया। वह म्युनिसिपल सरकार के मुख्य सचिव श्री पान के साथ नृत्य करने के लिए चली गयी। बैंक प्रबन्धक भी अपनी पत्नी के साथ ताओ-चिङ और सम्पादक को चाय की मेज़ पर छोड़कर नृत्य करने चला गया।

शानदार शाही झाड़-फ़ानूस बारीक़ रेशमी फीतों के सहारे उस भव्य हाल की छत से लटक रहे थे। पालिश की हुई फ़र्श और लम्बे मखमली परदों की सजावट से, हाल स्वप्न लोक की भाँति लग रहा था। जाज़ बैण्ड बज उठा और क़ीमती वस्त्र पहने जेवरात से लदी-फदी महिलाएँ मन्द प्रकाश-तले अपने जोड़ीदारों की बाँहों में थिरकने लगी थीं। भावुकताभरे गीत, उत्तेजक संगीत और इसकी खुशबू से हवा भर उठी थी। यद्यपि ताओ-चिङ ज़मींदार परिवार की थी, फिर भी उसने कभी ऐसा प्रदर्शन नहीं देखा था। वह महिलाओं के भड़कदार, बहुरंगे ऊँची ऐड़ी वाले जूतों और उनके कलात्मक ढंग से रँगे हुए नाखूनों को एकटक निहारती रही। वह बड़ी कठिनाई से अपनी जुगुप्सा को दबा पा रही थी, और यकायक मानो उसे वाङ लाओ-त्सेङ और उसके भूखों मरते पोती-पोते दिखायी दे गये।

"कुमारी लिन, थोड़ा लेमोनेड लो।" वह वर्तमान परिदृश्य में लौट आयी, जब वह सम्पादक लिङ जू-त्साई, जो उसकी बग़ल में बैठा हुआ था, बोला।

"नहीं, धन्यवाद। मैं अब कुछ नहीं चाहती।" ताओ-चिङ नृत्य देखने के लिए मुड़ गयी।

"कृपया तकल्लुफ़ न करो कुमारी लिन...! नृत्य एक मनहूस काम है, मैंने तो कभी इसका मज़ा लेना नहीं सीखा... तुम क्या पीना चाहोगी? मुझे तुमसे मिलकर

और बात करने का अवसर पाकर बड़ी ख़ुशी हुई।"

घूम पड़ने और उसकी ओर मुख़ातिब होने की विवशता में ताओ-चिङ ने देखा कि वह एक खूबसूरत, पक्के रंग का क़रीब तीस वर्ष की आयु का आदमी था। उसका पश्चिमी-शैली वाला सूट बढ़िया बना था, और वह गुलाबी रंग की टाई बाँधे हुए था। वह कुछ-कुछ संकोच ओढ़े हुए था। उसको जवाब देने का अवसर न देते हुए वह नखरेबाज़ी के साथ अपने स्वर को और धीमा करके आगे बोला :

"कुमारी पाई और मैं पुराने दोस्त हैं। वह मुझसे बताती है कि तुम प्रगतिशील हो। हाँ; देश तो निश्चय ही कुत्तों के हाथों में जा रहा है, लेकिन हम क्या कर सकते हैं? जिस तरह के हालात चल रहे हैं, उनमें तो जीविका कमाने में ही इतना संघर्ष है कि हम, जो क़लम के सहारे ज़िन्दा रहते है, कोई रास्ता नहीं पा सकते..."

ताओ-चिङ ने बमुश्किल ही उसको सुना, वह नन्हे शेर और चेङ तेह-फू के परिवार के बारे में सोच रही थी। "दो एकदम भिन्न दुनियाएँ हैं।" उसने सोचा।

संगीत रुक गया। पाई ली-पिङ, जिसके गाल नृत्य से अभी भी आरक्त थे, झटपट वापस आयी, और हँसती हुई बोली :

"मैं देख रही हूँ कि तुम दोनों मज़ेदार बातें कर रहे हों।" फिर ताओ-चिङ की ओर घूमकर वह आगे बोली, "श्री लिङ भावुक आदमी हैं, उसकी पत्नी हाल ही में मरी हैं और उसे सुख-चैन की ज़रूरत है... वैसे मैं तुमको और अधिक तंग नहीं करूँगी। ठीक से बातें कर लो।" लिङ जू-त्साई की ओर एक कुटिल मुस्कान के साथ देखकर वह पुनः झटपट वापस हो गयी।

अब ताओ-चिङ की समझ में आने लगा कि क्यों पाई ली-पिङ, जो उससे एक भिन्न रास्ता अख़्तियार कर चुकी थी, इतनी स्नेहिल थी और क्यों इतना लगाव दिखा रही थी। वह बार-बार ताओ-चिङ को लिङ के सामने उसे ख़ुश करने के लिए प्रस्तुत करने की कोशिश कर रही थी। एक ही झटके में वह समूची स्नेहिल भावना ग़ायब हो गयी जिसे वह पाई ली-पिङ के प्रति रखे हुए थी। पहले तो वह अवसाद से भर उठी, फिर खिन्न और हताश हो गयी। जब उसने देखा कि उसकी पुरानी सहेली बैंकर को फुसला रही थी, सचिव से चोंचलेबाज़ी कर रही थी और जब-तब लिङ जू-त्साई और स्वयं उस पर कुटिल दृष्टि डाल रहा था, तो उसके मन में सवाल उठा, "क्या यह वही लड़की है जो त्सुई-यू के साथ उत्तरपूर्व के अपने घरों की हालात याद करके आँसू बहाती थी..." जैसे ही कामोत्तेजक संगीत बज उठा, उसने बड़ी स्पष्टता से उन शरणार्थी विद्यार्थियों को याद किया जो पाई ली-पिङ के कमरे में दो वर्ष पहले नववर्ष की शाम को एकत्र हुए थे।

जब पाई ली-पिङ और उसके दोस्त नृत्य कर रहे थे, उसी दौरान लिङ जू-त्साई अपने रुग्ण पीले हाथों से उसे कोका-कोला का गिलास पेश कर रहा था। लेकिन उसकी उपेक्षा कर उसने अपनी कुर्सी पीछे की ओर धकेल दी और कहा :

"कृपया मुझे माफ़ करना। मुझे कुछ क्षण के लिए बाहर जाना है।"

——:o:——

अध्याय 16

जब ताओ-चिङ पीकिङ होटल से चली, तो धूसर आकाश में तारे टिमटिमा रहे थे, और एक सर्द, स्फूर्तिदायक हवा बह रही थी। दुनिया अचानक पहले से विस्तृत प्रतीत होने लगी और उसका दिमाग़ अपेक्षाकृत निरभ्र हो गया। ताज़ी, स्फूर्तिदायक हवा का रसास्वादन करती हुई, उसने प्रखरता से टिमटिमाते तारों की ओर देखा और सोचा, "बहुत रात हो चुकी है, लगभग दो बजे होंगे, मैं कहाँ जाऊँ?"

सम्भावित जासूसों के पीछे लग जाने से बचने के लिए वह झट सिआकुङ फू स्ट्रीट के इधर ही एक गली में मुड़ गयी और कुछ देर तक तेज़ी से एक फरार क़ैदी की भाँति उत्तर की ओर दौड़ पड़ी, फिर अपनी अगली कार्रवाई पर सोचने के लिए उसने रफ़्तार धीमी कर दी।

"रात की इस घड़ी में मैं कहाँ जा सकती हूँ?" अनजाने ही उसके पाँव पीकिङ विश्वविद्यालय के निकट पेइहोयेन स्ट्रीट की तरफ़ मुड़ गये, जहाँ वह इतने अच्छे दोस्तों के बीच कई वर्षों तक रह चुकी थी, जहाँ... उसे अचानक वाङ सियाओ-येन याद आ गयी, जिसकी संवेदनशील, स्नेहिल आँखें उसको बहुत आकर्षक लगती थीं। "हाँ, मैं उसके यहाँ जाऊँगी, चाहे वह मुझसे घृणा करती हो या नहीं, लेकिन ऐसा नहीं लगता कि वह सिर्फ़ अपनी बुआ की वजह से मुझसे घृणा करेगी। मैं अवश्य उसी से मिलने चलूँ।" यह निर्णय लेने के बाद उसने अपने डग बढ़ा दिये, इस आनन्ददायक पूर्वापेक्षा ने पिछले कुछ दिनों की उसकी संचित ऊब को ग़ायब कर दिया।

वह जल्दी-जल्दी क़दम बढ़ाती हुई कई परिचित, वीरान गलियों को पार करती हुई, नहीं जान पायी कि कैसे, वह अन्ततः उस हॉस्टल के सामने पहुँच गयी, जहाँ वह और यू युङ-त्से रह चुके थे। वहाँ वह न चाहते हुए भी रुक गयी। काला दोहरा फाटक बन्द था, और उसने इसे घूरकर देखा, उसका हृदय अचानक घृणामिश्रित अवसाद से भर उठा। उसने सोचा कि यदि वह नहीं रहा होता, तो लू चिआ-चुआन गिरफ़्तार नहीं हुआ होता... उसकी आँखों में गर्म आँसू आ गये। उसने झट अपना सिर दूसरी ओर मोड़ा, और इस छोटे द्वार को छोड़कर चल दी।

भोर के दो से अधिक बज रहे थे, जब वह पीकिङ विश्वविद्यालय के महिला छात्रावास में पहुँची। उसने कुण्डी खटखटायी और घण्टी का बटन दबाया, और साँस रोके उस सुनसान गली में इन्तज़ार करने लगी। उसने कई बार घण्टी बजायी जब कहीं जाकर एक बूढ़े आदमी ने फाटक की दरार से झाँकते हुए धीमे स्वर में पूछा,

"इतनी रात गये तुम क्या चाहती हो?"

"मैं वाङ सियाओ-येन से मिलना चाहती हूँ। कृपया क्या तुम फाटक खोलोगे?" उसकी आवाज़ थकावट से खुश्क हो गयी थी और उसकी इच्छा हो रही थी कि वह अच्छी नींद लेने के लिए तुरन्त बिस्तर पा जाये, चाहे वह सियाओ-येन का बिस्तर हो या और किसी का, लेकिन बूढ़े चौकीदार ने पहले ही धीमी आवाज़ में जवाब दिया, "अब आगन्तुकों के आने की अनुमति नहीं है। मैं भोर के साढ़े पाँच बजे से पहले फाटक नहीं खोल सकता। यही नियम है। दिन निकलने के बाद फिर आना।"

"लेकिन मुझे उससे फ़ौरी काम है। कृपया मुझे अन्दर आने दो।"

"यह नहीं हो सकता कुमारी जी। नियम नियम होता है।" उसने इन्कार कर दिया और भड़ाम से दरवाज़ा बन्द कर दिया।

"मैं यहाँ सुबह होने तक खड़ी नहीं रह सकती!" ताओ-चिङ थकान के मारे उस जीर्ण-शीर्ण लाल फाटक पर झुक गयी और नीरव रात्रिकालीन आकाश की ओर नज़र उठायी। "क्या मैं किसी होटल में चली जाऊँ? नहीं। सू हुई की तलाश करूँ? नहीं; इससे भी कोई फ़ायदा नहीं। जल्द ही दिन निकल आयेगा, बेहतर होगा कि मैं कुछ समय तक इधर-उधर टहलती रहूँ, और जब उजाला हो जाये, तो वापस आ जाऊँ।" अपने पाँव घसीटते हुए वह धीरे-धीरे पश्चिम की तरफ़ बढ़ चली। पिछले दो दिनों से वह न तो आराम कर पायी थी और न सो सकी थी, और अब जबकि कड़ा संघर्ष समाप्त हो चला था, और आराम कर लेना सम्भव हो गया था, तब इस गरमी की रात में इस तरह एकाकी टहलते रहने से उसे और भी नींद और थकान महसूस हो रही थी। वह पुराने इम्पीरियल पैलेस के चारों ओर बनी खाई के पास की सुपरिचित गलियों में इधर-उधर भटकती रही, और फिर उसकी मुँडेर पर झुककर अलस भाव से मछली के छिलकों की भाँति झिलमिलाते पानी को देखने लगी। एकाकीपन की गहन अनूभुति ने उसे विचलित कर दिया।

उसे अपनी इस दुर्बलता पर ग्लानि हो रही थी कि उसने पाई ली-पिङ और उसके साथ के उन सामाजिक परजीवियों द्वारा समय नष्ट करने के लिए अपनेआप को घसीट लिये जाने दिया था। कैसे वह ऐसे लोगों के साथ हो गयी और समय बरबाद किया, जबकि उसकी जेब में सू हुई के लिए एक चिट्ठी थी। शायद यह बहुत महत्त्वपूर्ण नहीं था, फिर भी यह उसे एक पार्टी सदस्य द्वारा सौंपा गया काम था। वर्जित शहर की दीवार का बुर्ज, जो उस धूसर कुहासे में भी भीमकाय, घुटने मोड़कर बैठे दैत्य की भाँति झुका हुआ था, देखने पर उसकी कल्पना में अचानक ऐसा लगा कि उसके पीले हाथ उसकी ओर बढ़ रहे हैं और उसने लिङ जू-त्साई का ख़याल आते ही घृणा से थूक दिया! अपने बालों को पीछे की ओर फेरती हुई, वह बुदाबुदायी, "तुम मुझे अकेला छोड़ दो, और भाड़ में जाओ।" फिर उसने अपना

सिर मुँडेर पर टिका दिया और थकान से चूर होकर सो गयी।

जब उसकी नींद खुली तो पूर्वी क्षितिज एक नये दिन की रोशनी से पीला हो चुका था। उसने राहत की साँस ली, और खुश होकर वापस दौड़ पड़ी, जैसे ही घड़ी ने चार बजाये, वह महिला छात्रावास पहुँच गयी। आसमान में एक विस्तृत धूसर फैलाव था। पुन: दस्तक देने में सहमती हुई, वह दरवाज़े पर सुस्ताने के लिए बैठ गयी, और एक बार फिर सो लेने के लिए झपकी लेने लगी, तभी पटपटाती बूँदा-बाँदी की भाँति एक चीख़ उसके कानों में पड़ी।

"अम्मा! अम्मा!..."

वह चौंक गयी और सोचा कि शायद वह सपना देख रही थी, लेकिन अपनी आँखें मलते हुए उसने फिर उस क्षीण स्वर को पुकारते सुना। "मम्मी। मुझे मम्मी चाहिए..." उसके बाद धीमी रिरियाहट सुनायी देने लगी।

अब पूरी तरह से चैतन्य होकर ताओ-चिङ ने जाना कि यह कोई सपना नहीं था, क्योंकि आवाज़ ठीक उसके पास से ही आयी थी। वह पता लगाने के लिए उछलकर खड़ी हो गयी और तत्काल उसने पाया कि दो बच्चे सड़क के दूसरी ओर एक दूकान के ठण्डे पथरीले ओसारे की फ़र्श पर एक-दूसरे से चिपटे हुए थे। जब वह और क़रीब से देखने के लिए झुकी, तो भोर के प्रकाश में दो लड़के दिखायी दिये। बड़ा आठ वर्ष का था और छोटा पाँच या छह वर्ष का। उनके मैले-कुचैले चेहरे कुम्हलाये हुए थे और वे पूरी तरह नंगे थे। दोनों नींद में सोये लग रहे थे, लेकिन छोटा अपनी माँ के लिए रो रहा था, उसका नन्हा-सा मुँह थोड़ा खुला हुआ था, उसकी बरौनियों पर आँसू टँगे हुए थे।

ताओ-चिङ की नींद झट हिरन हो गयी। ये बच्चे कहाँ से आ गये थे और इनकी माँ कहाँ थी? यद्यपि यह गरमी का मौसम था, फिर भी रातें सर्द होती थीं और वह तो अपने कपड़ों के बावजूद काँप रही थी; फिर भी ये दो यतीम बच्चे बिना कपड़ों के, सर्द पथरीली सीढ़ियों पर लेटे हुए थे। भावविह्वल होकर, वह उनके चेहरों और पीठों को छूने के लिए आगे की ओर झुकी और यह जानकर भयभीत हो उठी कि छोटा वाला तेज़ बुख़ार से जल रहा था। उसका मन हुआ कि उन्हें जगा दें और उनसे पूछताछ करे, लेकिन इससे मक़सद नहीं सिद्ध होता। उसके विचार पुन: पीकिङ होटल की ओर उड़ चले, जहाँ से वह अभी-अभी भागकर आयी थी; अपने राजसी वैभव और नीले मखमली पर्दों, जेवरात से लदी-फदी महिलाओं और सजे-धजे, भद्रजनों की वह शानदार इमारत... खेदपूर्वक अपना सिर हिलाते हुए उसने पाँच युआन निकाला – यही उसके पास कुल रक़म थी – और आहिस्ते से इनमें से दो युआन इन लड़कों के सिरों के नीचे खोंसकर झट छात्रावास के फाटक पर दस्तक देने वापस लौट गयी।

सियाओ-येन नींद से जाग उठी थी और आँखें खोलीं तो अपनी बग़ल में खड़ी

ताओ-चिङ को देखा। वह अलसायी हुई उठ बैठी और बोली। "तो तुम हो।... [illegible]... बैठ जाओ।"

ताओ-चिङ! इस ठण्डे, फिर भी नरमी भरे स्वागत से सिहर उठी। वह कुछ [illegible] का सामना करने के लिए तो तैयार थी, परन्तु इस तरह के व्यवहार का सामना करने के लिए नहीं। वह अपनी सहेली को एकटक देखती हुई, वैसे ही निश्चल खड़ी रही; और एक उलझनभरी ख़ामोशी के बाद बोली, "सियाओ-येन, क्या तुम अपनी बुआ की वज़ह से नाराज़ हो?...मैं बेहद अनाड़ी थी। दरअसल मेरा मतलब यह नहीं था कि..."

"मैं नहीं जानती कि तुम्हारा क्या मतलब था, लिन ताओ-चिङ," सियाओ-येन ने बीच ही में टोक दिया, उसने जम्हाई लेते हुए स्विच ऑन करके बत्ती जलायी, और अपना चश्मा पहन लिया। "तुम ज़रूर यह कहावत जानती रही होगी : उस कुत्ते को मत पीटो, अगर तुम उसके मालिक से दोस्ती करना चाहते हो।"

बिस्तर की बग़ल में एक स्टूल पर बैठकर उसने खिड़की से बाहर देखा, जबकि ताओ-चिङ पास ही पड़े एक मेज़ पर बैठ गयी। दोनों लड़कियाँ ख़ामोश थीं।

"सियाओ-चेन तुम उदार हो, तुम्हें अवश्य सोचना चाहिए कि यह कोई व्यक्तिगत हमला नहीं था..." एक और चुप्पी के बाद ताओ-चिङ ने आगे कहा, "तुम्हारी बुआ वाक़ई मेरे लिए बहुत अच्छी थी, लेकिन वह एक पिछड़ा दृष्टिकोण भी तो रखती है..."

"आगे और कुछ मत कहो। मेरी बुआ ने मुझे पूरा ब्योरा बता दिया है।" सियाओ-येन ने काँपते स्वर से उसे बीच ही में रोक दिया, और उठकर खड़ी हो गयी, उसकी घनी, कमानीदार भौंहें गुस्से से तन गयीं। "इससे मुझे भारी झटका लगा है। उनके ऐसा कहने में कोई आश्चर्य नहीं है कि तुम जैसे लोग बिल्कुल बेरहम और एकदम भावनारहित होते हैं। क्या किसी क्रान्तिकारी को अपने परिवार और दोस्तों की ओर पीठ फेर देना होता है?"

दो या तीन सेकेण्ड के लिए ताओ-चिङ ने सियाओ-येन के तमतमाये चेहरे और गोल-गोल चोटिल आँखों की ओर स्थिरभाव से देखा। फिर वह उठ खड़ी हुई, थकान से थर्रायी हुई और दुखी होकर कहा :

"सियाओ-येन, मुझे इसके लिए अफ़सोस है, लेकिन अभी मैं इसका स्पष्टीकरण नहीं दे सकती... अच्छा, मैं चलूँ। अलविदा।"

वह धीरे-धीरे दरवाज़े तक गयी, उसका चेहरा पीला पड़ गया था, आँखें आँसुओं से झिलमिल थीं।

सियाओ-येन का हृदय तेज़ी से धड़कने लगा, जब उसने उसको जाते हुए निहारा। जब उसकी सहेली गलियारे के छोर पर पहुँच गयी तो वह उछली, और अपनी आँखों में आँसू लिये, उसे बाँहों में समेट लेने के लिए बाहर दौड़ पड़ी :

"नाराज़ मत हो, ताओ-चिङ।" वह हाँफने लगी। "वापस आओ!"

ताओ-चिङ रुक गयी, पीछे की ओर घूमी और जब उसने सियाओ-येन का अकुलाया चेहरा देखा, अपने आँसू न रोक सकी।

"कुछ बातें ऐसी हैं जिन्हें मैं अभी नहीं समझ सकती, ताओ-चिङ... कृपया मुझे माफ़ कर दो। वापस लौट आओ, हम इस पर ठीक से बातचीत कर लेंगी।"

ताओ-चिङ अपनी सहेली के पीछे-पीछे कमरे के अन्दर गयी, और छोटे लोहे वाली चारपाई पर लेट गयी, वहाँ पर गतिहीन और निश्चेष्ट पड़ी रही।

सियाओ-येन उसकी बग़ल में एक बहन की भाँति उसका हाथ थामे चारपायी के कोर पर बैठी रही। उसके चेहरे पर एक प्यार भरी मुस्कुराहट थी, हालाँकि उसके गालों पर से टप-टप आँसू झर रहे थे।

"कैसे और कब तुम पेइपिङ वापस आयी? पिछली रात तुम कहाँ ठहरी?" ताओ-चिङ का माथा सहलाते हुए उसने उदास होकर उसकी धँसी आँखों और गहरी थकावट पर ग़ौर किया, जिसने उसे अपने आस-पास से लगभग एकदम बेख़बर कर दिया था। "क्या बात है? क्या तुम बीमार हो?"

अपनी आँखें बन्द करके चित्त लेटी हुई, ताओ-चिङ ने अपना सिर हिलाया, और मुस्कुराकर कहा, "मेरे साथ कोई गड़बड़ नहीं है। बस यही है कि मैं दो दिनों से ठीक से सो नहीं पायी हूँ। क्या मैं तुम्हारे बिस्तर पर एक अच्छी नींद सो सकती हूँ?"

"बिल्कुल। हम लोग तुम्हारे जागने के बाद बातचीत करेंगी।" सियाओ-येन अपना मुँह धोने के लिए जा ही रही थी कि ताओ-चिङ ने चिन्तित भाव से पुकारा, "अरे एक मिनट ठहरो। मुझे बताओ, क्या सू हुई अब विश्वविद्यालय में है? मैं उससे मिलना चाहती हूँ।"

"सू हुई?..." सियाओ-येन की गोल-गोल चमकदार आँखें चालाकी भरे अन्दाज़ में उस पर टिक गयीं। "उसने बताया कि उसकी माँ बीमार थी और यहाँ तक कि बिना फ़ाइनल इम्तहान दिये ही वह अचानक घर चली गयी। लेकिन कुछ दूसरे अवर-स्नातकों ने मुझको एक अलग ही कहानी बतायी। सम्भवतः उसने क्रान्तिकारी काम के लिए पढ़ायी छोड़ दी थी।"

ताओ-चिङ यकायक उठ बैठी और बिस्तर से कूदकर बाहर आ गयी, अपनी सारी थकान भूल गयी।

"तब मुझे वह कैसे मिलेगी?"

सियाओ-येन ने उसे पीछे ढकेला और आश्चर्य से पूछा :

"क्या जल्दी है?" वह वापस आ जायेगी।

तकिये पर पड़कर ताओ-चिङ ने येन सियाओ-येन की ओर घूरकर देखा और ऐसे बुदबुदायी, मानो स्वप्न में हो :

"हाँ, वह वापस आयेगी...वह आयेगी। मैं जानती हूँ कि मैं उसे पा लूँगी।"

उसकी आँखें मुँदी हुई थीं और सियाओ-येन ने देखा कि वह थकान से चूर नींद में सो गयी थी। वह बड़बड़ा रही थी कि उसे सू हुई को ढूँढ़ना है। अपनी सहेली पर सरसरी नज़र डालते हुए सियाओ-येन ने स्वयं से कहा :

"निश्चय ही यह अपने विश्वासों के लिए साहस भी रखती है।"

पाई ली-पिङ दोपहर तक न तो उठी और न नाश्ता किया, जिसके बाद वह सोफ़े पर सुस्ती से लेटकर एक फ़ैशन-मैगजीन देखने लगी। जब उसने अपना सिर उठाया, तो कमरे के एक कोने में पड़े एक बैग पर नज़र पड़ते ही उत्तेजित हो गयी। म्युनिसिपल सरकार का महासचिव, श्री पान उसकी बग़ल में बैठा हुआ था, उस पर एक तिरछी नज़र फेंकती हुई वह बोल पड़ी :

"कुछ लोग एहसानमन्द होना अब तक नहीं सीख सके हैं! मैंने तो दयार्द्र होकर उसका परिचय लिङ जू-त्साई से करवाया, लेकिन वह कार्ल मार्क्स से इतना सम्मोहित है कि मेरे ख़याल से, वह श्री लिङ को पाँव की जूती समझती है। देखो, उसने पिछली रात भागकर मेरी कितनी हेठी करा दी। अगर मैं उसे दोबारा देख लूँ, तो उसका दिमाग़ ठिकाने लगा दूँगी।"

"मुझे कुछ भी नहीं मालूम कि तुम किसके बारे में बात कर रही हो," महासचिव ने अपने चश्मे पर उँगली फिराते हुए लापरवाही से पूछा।

"उस कुतिया के बारे में कह रही हूँ, जो पिछली रात यहाँ थी। हाँ। मैं विश्वविद्यालय में उससे परिचित हुई और तब वह बुरी न थी, इसके बावजूद वह ख़ूबसूरत है। अब, जबकि श्री लिङ की पत्नी मर चुकी है, मैंने सोचा कि मैं उसको उससे मिलवा दूँ – तुम तो अच्छी तरह जानते हो कि हमें उस मामले में उसकी मदद की ज़रूरत है। लेकिन वह चली गयी और मेरे साथ इतनी गन्दी चाल चल गयी..." उसने एक गहरी साँस खींची, और अपने प्रेमी पर एक कुटिल मुस्कान बिखेर दी। "दुनियादारी के लिए सबकुछ करना पड़ता है। कुछ लोग ज़ुबान से क्रान्ति में शिरकत करते हैं, लेकिन मैं देखती हूँ कि कुछ ऐसे हैं जो सचमुच गम्भीरता से शिरकत करते हैं, और मुसीबतों से या यहाँ तक कि अपने सिर उतार लिये जाने से भी नहीं डरते। मैं स्वीकार करती हूँ कि यह एकदम मेरे बस के बाहर है।"

श्री पान ने एक सिगरेट जलायी और ली-पिङ के पैरों के पास धुएँ का छल्ला छोड़ते हुए, अलसभाव से पीली हरी छत की ओर निहारते हुए, उसी लापरवाह लहजे में पूछा :

"तुम्हारा कहना है कि तुम्हारी सहेली एक क्रान्तिकारी है? तुम कैसे जानती हो? यदि वह जू-त्साई को नहीं पसन्द करती, तो उससे भड़ककर भाग जाने के लिए मैं उसे दोषी नहीं मानता!"

ली-पिङ उछलकर खड़ी हो गयी और अपनी नाक के सिरे को एक नेलपॉलिश लगी उँगली से स्पर्श करती हुई प्रतिवाद में बोली।

"तुम सोचते हो कि मुझे कोई अनुभव नहीं हैं? मैं उसे ठीक से समझती हूँ। मैं अपनी आँखों की क़सम खाकर कहती हूँ कि उसने मेरी दोस्ती की पेशकश को इसीलिए ठुकरा दिया है कि उस पर कम्युनिस्ट पार्टी का जादू चढ़ गया है!..." वह एक नौकर के प्रवेश पर रुक गयी, जिसने थोड़ा झुककर अभिवादन किया था।

"मादाम, बाहर एक छात्रा है जो कुछ ले जाने आयी है। उसने आपको एक पत्र दिया है।"

"इसे मुझे दो!" ली-पिङ ने आकुलतापूर्वक अपना सिर झटककर आदेश दिया, वह सोच रही थी कि यह ज़रूर ताओ-चिङ होगी, जो अपने बैग के लिए आयी है।

पत्र उसे सौंप दिया गया। उसने इसे अन्यमनस्क भाव से खोला और पढ़ने के लिए सोफ़े पर बैठ गयी।

> प्यारी ली-पिङ,
>
> तुम ज़रूर मुझसे नाराज़ होगी। लेकिन अफ़सोस है कि तुमने मेरे लिए जो नाटक रचा था, मैं उसे बरदाश्त न कर सकी, इसलिए भाग चली। क्या तुम सचमुच उस विलासमय, सड़ियल जीवन से आकर्षित हो? मेरे ख़याल से इस तरह की ज़िन्दगी तुम्हारी इच्छाशक्ति को कमज़ोर ही बनायेगी और तुमको भ्रष्ट करेगी। ली-पिङ तुम्हारा कभी प्रगतिशील दृष्टिकोण था, और तुम्हारी सलाह से मुझे मदद मिली थी। तुमने क्यों इतनी बुरी मित्रमण्डली बना रखी है और क्यों इतनी ख़तरनाक राह पकड़ ली है? निश्चय ही तुम्हें एक अपेक्षाकृत अधिक सार्थक जीवन जीना चाहिए...

"क्या बकवास है।" पत्र को समाप्त करने का जहमत उठाये बग़ैर उसने इस महीन कागज़ को फाड़कर चिन्दी-चिन्दी कर दिया। "कुछ सर्वहारा जुमले क्या जान लिये अपने को तीसमारखाँ समझने लगी। भाड़ में जाये वह। हम सब ख़ाली नारे लगा सकते हैं, क्या नहीं लगा सकते?"

"मुझे माफ़ करना मादाम, लेकिन वह लड़की अपने सामान के लिए इन्तज़ार कर रही है।" नौकर, जो मानो कारपेट में गड़ गया था, ली-पिङ द्वारा पत्र की दुर्गति को देख चुका था, और उसकी क्रुद्ध चीख़ को सुन चुका था। अब उसके तकाज़े ने आग में घी का काम कर दिया। इस बात से खिन्न होकर कि उसकी अक्खड़मिज़ाजी को किसी ने देख लिया था, उसने एक उँगली ताओ-चिङ के झोले की ओर उठायी, और दहाड़कर बोली :

"तुम किसलिए रुके हुए हो, मूर्ख कहीं का? दफ़ा कर दो उस गन्दी चीज़ को यहाँ से।"

नौकर धनवान मालिकों की अनिश्चित अक्खड़मिज़ाजी से भलीभाँति परिचित था। जब वे पद और लाभ की छीनाझपटी में असफल होते या जब प्यार में निराश होते, तो वे अपने मुक्के से मेज़ पर प्रहार करते और पूरे स्टाफ़ को गाली देते। लेकिन जब भाग्य मुस्कुराता और वे ख़ुशहाल होते, तो सिर्फ़ उनकी जी-हजूरी में सलाम ठोको, उनकी औरतों को शाल ओढ़ाओ या उन्हें फूलों का उपहार दो और आठ-या दस युआन का अच्छा-ख़ासा टिप पा जाने के लिए निश्चिन्त रहो। अपनी नौकरी न गँवा देने की गरज से उसने ताओ-चिङ का बैग उठाया और चुपचाप वापस चला गया। उसने मुस्कुराते हुए बैग सियाओ-येन को थमा दिया, जो बाहर खड़ी प्रतीक्षा कर रही थी और बोला :

"क्या तुम उस युवती के यहाँ से आयी हो, जो पिछली रात यहाँ थी? मुझे आश्चर्य ही रहा था कि क्यों मादाम पाई, अपने रुतबेदार सम्बन्धों के बावजूद एक छात्रा को पकड़ लायी और यहाँ ठहरने को कहा...अपनी सहेली से मत बताना, लेकिन मादाम पाई गुस्से से पागल हो उठी, जब उसे वह पत्र मिला... ख़ैर, 'खग जाने खग ही की भाषा।' बेहतर होगा कि तुम उसकी मण्डली से दूर रहो – धनवानों से लाग-लपेट रखना ठीक नहीं है..."

सियाओ-येन ने बीच ही में बोलकर इस आदमी को वाचालता को रोक दिया :

"वह तो ठीक है। उनमें अब आपस में गड़बड़ है। अच्छा, अलविदा!" उसने बैग को रिक्शा पर रखा और बैठ गयी, वह एक ही साथ ख़ुश और खिन्न दोनों थी।

इस बीच महासचिव पान ने मुस्कुराकर ली-पिङ से कहा, "प्रिये, मुझे एक ज़रूरी फ़ोन करना है।" वह गलियारे के एक धुँधले प्रकोष्ठ में गया, जहाँ एक टेलीफ़ोन रखा हुआ था, कोई नम्बर डायल किया, और मन्द स्वर में जल्दी-जल्दी कहा, "क्या, यह बड़ा भाई हू है? जल्दी करो, नहीं तो बहुत देर हो जायेगी। पीकिङ विश्वविद्यालय की एक छात्रा अभी-अभी ली तुङ होटल से निकली है, उसका पीछा करो तुरन्त! तुरन्त उसका पीछा करने के लिए किसी को लगा दो... नहीं, यह लड़की नहीं, लेकिन यह तुम्हें एक दूसरी लड़की, लिन ताओ-चिङ तक पहुँचा देगी... हाँ!... वह क्या है?" श्री पान ने अपना सिर एक तरफ़ किया और अपनी भौंहें टेढ़ी कर ली। "मुझे मत बताओ कि तुम उसकी तलाश करते रहे हो! सब इसी समय? क्या भाग्य है, बड़े भाई! तुम मुझे इसके लिए ईनाम ज़रूर दो...पाई ली-पिङ? बकवास मत करो! मैं सिर्फ़ उसके साथ थोड़ा मनोरंजन कर रहा हूँ। वह बुरी नहीं है; वह लुभावनी बनना जानती है...जब तुम्हारे पास समय निकले, तो दो पेग शैम्पेन के लिये आ जाना। ठीक, यह तय रहा। तब तक मैं यहाँ हूँ।"

उसने रिसीवर रख दिया, जम्हाई ली और अलसभाव से देह सीधी की, फिर अपने अस्थायी घर, ली-पिङ के कमरे में लौटने से पहले उसने अपने नीले रेशमी ड्रेसिंग गाऊन को ठीक ठाक किया। उसे वहाँ न पाकर, उसने एक सिगरेट जलायी,

अपने ब्रीफ़-केस से हेरोइन की एक छोटी शीशी निकाली, उसमें से थोड़ी-सी सिगरेट में घुसेड़ी और चाव से पीने लगा। फिर एक सन्तुष्ट स्वीकृति में अपनी भारी पलकों को झुकाते हुए, वह किलक उठा :

"आख़िरकार तकदीर ने मेरा साथ दे ही दिया... हर चीज़ मेरे मनमाफ़िक़ जा रही है!"

——:o:——

अध्याय 17

ताओ-चिङ ने सू हुई का इन्तज़ार करने और च्याङ हुआ की खोज-ख़बर लेने के लिए पीकिङ विश्वविद्यालय के निकट चुङ लाओ हुतुङ स्थित एक छोटे से हॉस्टल में डेरा डाल दिया। उसे इन जैसे कॉमरेडों के बिना जीना दूभर लग रहा था, और उसे विश्वास नहीं था कि वह देर-सवेर उन्हें पा ही लेगी।

दिन के समय वह यूँ ही कुछ पढ़ती या अध्ययन करती रहती, और दहलीज़ से बाहर कभी न जाती, लेकिन रात होने पर वह अक्सर टहलने के लिए सियाओ-येन के साथ हो लेती, जो उसके पड़ोस में ही रहती थी। रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में सियाओ-येन अपेक्षाकृत अधिक सावधानी बरतती थी और बाहर जाने से पहले हमेशा ही चिन्तित होकर कहा करती :

"तुम्हें उस क्वोमिन्ताङ वाले बदमाश का ज़रूर ध्यान रखना चाहिए। उसका मतलब हू मेङ-एन से था।

"फ़िक्र मत करो। इतना अँधेरा है कि कोई मुझे पहचान नहीं सकता।" ताओ-चिङ मुस्कुराकर उसकी चेतावनी को टाल जाती।

शातान से इम्पीरियल पैलेस जाने वाली सड़क के दोनों तरफ़ हरे-भरे लोकस्ट वृक्षों की क़तारें थीं, जिनके फूलों से रात के वक़्त एक स्फूर्तिदायक, मादक सुगन्ध आती रहती थी। दोनों लड़कियाँ अक्सर चुपचाप इन वृक्षों को पार कर 'वर्जित शहर' के चारों ओर बनी खाई के मुँडेर तक टहलती हुई जातीं। कभी-कभी वे रुपहली चाँदनी में इस भव्य महक को, उन उत्तुंग छतों को निहारतीं, जिन पर पीली चमकदार खपरैलें लगी हुई थीं, और उनके प्रभावोत्पादक गुम्बदों को देखतीं, जो प्राचीन देवताओं की विशाल मूर्तियों की भाँति खाई के ऊपर के रात्रिकालीन आकाश में गर्वोन्नत पर रहस्यात्मक ढंग से उभरे हुए थे। इस दृश्य की मूक प्रशंसा करते हुए वे चीन के प्राचीन सभ्यता और उसकी महान कलात्मक विरासत के विचारों से, अवचिल रूप से, गहरे अभिभूत हो जातीं।

कभी-कभी ऐसे ही क्षणों में वे उत्साह में काफ़ी दूर निकल जातीं तथा अतीत और वर्तमान के बारे में पूरी गम्भीरता से वार्ता करने लगतीं। ताओ-चिङ प्रायः क्रान्ति

और वर्ग-संघर्ष की बातें करती, लेकिन सियाओ-येन, जो उसकी बग़ल में चल रही होती, इस विषय को बन्द कर देने का हर सम्भव बहाना ढूँढ़ती।

"तुम कितनी पिछड़ी और अड़ियल हो!" ताओ-चिङ झिड़कते हुए बोल पड़ती, जब वह अपनी सहेली को अपने रास्ते पर ले आने और अपने दृष्टिकोण से क़ायल करने में असफल हो जाती। जहाँ तक सियाओ-येन का सवाल था, वह हालाँकि ताओ-चिङ को प्यार करती थी, और अपनी दोस्ती की बहुत अधिक क़द्र भी करती थी, और कि उसने अपनी बुआ को पहुँचायी गयी ठेस तक को भी माफ़ कर दिया था, फिर भी वह अपनी सहेली के विश्वासों और दृष्टिकोण से प्रभावित होने से कतराती थी। वह चाहती थी कि ताओ-चिङ भी उसके दृष्टिकोण को उसी तरह सम्मान दे। इसके चलते उसे ये सम्भाषण बेस्वाद और खिझाने वाले लगते रहते थे।

एक बार जब वे खाई के पास बतिया रही थीं, तो ताओ-चिङ ने च्याङ हुआ के बारे में बताया।

"देखो सियाओ-येन, च्याङ हुआ, जिससे मैं तिङ सियेन में परिचित हुई, वास्तव में एक टिपिकल क्रान्तिकारी है। उसने मुझे रूस की अक्टूबर क्रान्ति के बारे में, चीनी कम्युनिस्ट आन्दोलन के बारे में, और 1 अगस्त 1927 के नानचाङ जन-उभार के बारे में विस्तारपूर्वक बताया। फिर, उसने कॉमरेड माओ त्से तुङ के बारे में, जिन्होंने हुनान किसान आन्दोलन और पतझड़ के फ़सल कटाई-विद्रोह का नेतृत्व किया था, चिङ काङ पहाड़ों पर लाल सेना की टुकड़ियों में भरती होने के बारे में, क्याङ सी और दूसरी जगहों में पार्टी द्वारा क्रान्तिकारी आधार-क्षेत्रों के निर्माण और सशस्त्र संघर्ष के बारे में और सफ़ेद क्षेत्रों मे पार्टी के नेतृत्व में चलाये जाने वाले जनान्दोलनों के बारे में भी बताया... उसने मुझे यह भी बताया कि चीनी क्रान्ति की प्रमुख समस्या भूमि समस्या है... अब ऐसे मत देखो। सुना कि नहीं जो मैंने कहा?"

"मैं नहीं जानती कि तुम क्या बातें कर रही हो। पहली बात तो सोवियत संघ की और फिर इसकी सोवियत सरकार की है। वे दोनों ही इतने दूर हैं कि उनको हमसे कुछ लेना-देना नहीं।" सियाओ-येन धीमी होती हुई रुक गयी और धीरे-से ताओ-चिङ को खींचकर दोनों ही इम्पीरियल पैलेस की खाई की नीची चहारदीवारी पर झुक गयीं। वह ताओ-चिङ के हवा से फरफरा गये बालों की एक लट को सँवारते हुए स्नेहपूर्वक मुस्कुरायी। "और अधिक व्यावहारिक चीज़ों के बारे में बात क्यों नहीं करती? क्या तुम यू युङ-त्से को छोड़ने के बाद फिर उससे कभी मिली हो?"

"उसकी बात क्यों करती हो?" ताओ-चिङ ने एक पत्थर उठाकर खाई में फेंकते हुए एक टेढ़ी मुस्कान के साथ पूछा। "कल ही मैं उस आदमी से गली में

टकरा गयी और सचमुच क्रोध आ गया। मैं ड्रम टावर के सामने पटरी पर चली जा रही थी, तभी एक आदमी लम्बा गाऊन और हैट पहने वहाँ आ पहुँचा। उसकी बाँह से चिपकी हुई एक लड़की थी, जो बालों में रंग लगाये, भारी मेकअप किये हुए थी। जब वे और निकट आ गये, तो कोई सन्देह नहीं रह गया कि वह यू युङ-त्से ही था। मैंने उस पर बिल्कुल ध्यान न देने की सोच ली थी। लेकिन वह रुक गया, अभिवादन में सिर झुकाया और बोला : 'क्यों, कहीं कुमारी लिन तो नहीं?' तब मेरे पास प्रत्युतर में अभिवादन करने के अलावा और कोई चारा न था। इस पर उसका फब्ती कसने का साहस हो गया : 'कुमारी लिन, क्या तुम इसलिए वापस चली आयी कि क्रान्ति करने में सफल हो चुकी हो?... फिर वह उस लड़की को आगे खींच ले आने के लिए मुड़ा और विद्वेषपूर्वक मुझसे उसका परिचय कराया : यह मेरी पत्नी ली मेङ-लान है...यह कुमारी लिन श्री मार्क्स की सर्वप्रसिद्ध शिष्या के अलावा और कुछ नहीं है...' मैं बीच में बोल पड़ी, ज़ुबान बन्द करो यू युङ-त्से! मैंने कभी नहीं सोचा था कि तुम इतने बेहया और ज़लील हो!... फिर मैं वहाँ से दूसरी ओर मुड़ी और चल दी। उस जैसे आदमी से कहने को बाक़ी ही क्या था?"

सियाओ-येन तब तक इन्तज़ार करती रही जब तक कि उसने बोलना ख़त्म नहीं कर दिया, उसके बाद उसने गम्भीरता से सिर हिलाया, "मैंने सुना है कि यह अब पीकिङ लाइब्रेरी में काम कर रहा है। सम्भवत: वहाँ उसे कोई बढ़िया पद मिल गया है। उसने किराये पर एक छोटा घर भी ले रखा है। मैं अक्सर उसे आत्मतुष्ट भाव से आते-जाते देखती हूँ, लेकिन हमेशा उससे कतरा जाती हूँ। वह बेहद आत्मकेन्द्रित है।"

"हाँ, वह एक आत्मतुष्ट बेलि है," ताओ-चिङ बीच ही में बोल पड़ी। उसने ज़रूर हू शिह की कृपा प्राप्त कर लेने का जुगाड़ बैठा लिया होगा और उसके ज़रिये एक बढ़िया नौकरी पा ली होगी। पू यी से मिलने के बाद हू शिह शेखी बघारता था, उसने मुझे श्रीमान कहा और मैंने उसे महामहिम कहा। यदि यू युङ-त्से पू यी से मिला होता तो वह यह कहकर शेखी बघारता – महान साम्राज्य के महामहिम अमर हो!...छिह, वह गुलाम दर गुलाम है।" ताओ-चिङ खिलखिला कर हँस पड़ी। हवा में लहराते नर्म, काले बालों के साथ वह एक शरारती लड़के की भाँति दिख रही थी।

"ख़ैर, उसके बारे में बहुत हो चुका," सियाओ-येन बोली। "अब जल्दी ही तुम फिर वर्ग-संघर्ष के बारे में बोलने लगोगी और मैं नहीं चाहती कि तुम बोलो। तुम इतनी अधिक जगहों पर घूम आयी हो, फिर भी मुझे कुछ उन दिलचस्प चीज़ों के बारे में क्यों नहीं बताती, जिन्हें तुमने देखा है?"

"कुछ दिलचस्प चीज़ें? मैं नहीं समझ पा रही हूँ कि कहाँ से शुरू करूँ।" बहरहाल, ताओ-चिङ अपने बचपन और उस समय की बातें बताने लगी, जब वह

अपनी सौतेली माँ के साथ लगान वसूलने कुपेई हाऊ गयी थी। हालाँकि तब से वर्षों बीत चुके थे, फिर भी बचपन के उन अनुभवों में से कुछ तो उसके स्मृति-पटल पर अमिट रूप से अंकित हो ही गये थे। उसके पिता और सौतेली माँ के ऐसे काश्तकार जो अपना लगान नहीं दे पाते थे, अक्सर शहतीर से लटका दिये जाते थे और उन पर कोड़े बरसाये जाते थे। उन्होंने विधवा सून को नदी में कूदकर जान दे देने के लिए मजबूर कर दिया था और स्वयं उसका नाना पाइहो नदी में डूब मरा था... "अब उनके बारे में और नहीं कह सकती।" ताओ-चिङ की आवाज़ डूब चुकी थी, और वह अतीत के बारे में सोचते-सोचते निर्मम हो उठी थी। "अब मैं तुम्हें अपने बचपन की सहेली, हेई-नी के बारे में बताऊँ। तुम जानती हो, मैं अपनी इस ग़रीब सहेली को कभी नहीं भूलूँगी..."

उसने हेई-नी की कहानी बता दी, उसके और अपने बीच के घनिष्ठ लगाव का वर्णन किया, हेई-नी की प्रतिभा और निपुणता का ज़िक्र किया तथा चेङ तेह-फू और हेई-नी-की माँ के बारे में बताया कि वे किसी तरह जी-खा रहे थे, और प्रायः नहीं जानते थे कि दूसरी जून का खाना कहाँ से आयेगा... शुरू-शुरू में दबे लहज़े में बोलते हुए उसकी आँखें खाई के झिलमिल पानी को निहार रही थीं, लेकिन जल्दी ही वह भावविह्वल होती गयी और उसका स्वर तेज़ होता गया, वह आँखें गड़ाये सियाओ-येन की ओर ताक रही थी। सियाओ-येन शुरू-शुरू में अपने गम्भीर और कुछ अध्ययनशील अन्दाज़ से, मुँडेर पर झुककर बिल्कुल सुस्थिर भाव से सुनती रही। जब कहानी का वह हिस्सा आया, जहाँ चेङ तेह-फू हेई-नी को पहाड़ी पर पहुँचा आया था, तो सियाओ-येन को अचानक अपने आँसू पोंछने के लिए मुड़ जाना पड़ा।

"मैनें कभी ऐसी हृदयविदारक कहानी नहीं सुनी।" जब उसने फिर अपना सिर घुमाया, तो उसकी आँखें लाल थीं।

ताओ-चिङ का हृदय पीड़ा से दहक रहा था। बरबस उसके विचार अपनी अभागी माँ और हेई-नी की माँ की ओर उड़ चले, जिनको लिन पो-ताङ द्वारा आत्महत्या कर लेने पर मजबूर कर दिया गया था। चेङ तेह-फू तथा वाङ लाओ-त्सेङ और उसके पोती-पोते ये सभी बदहाल किसान उसकी आँखों के सामने साकार हो उठे।

"लेकिन एक इससे भी अधिक दुखभरी कहानी है, जिसको मैंने आज तक किसी से नहीं बताया," उसने भारी हृदय से रहस्योद्घाटन किया। "मेरी अपनी माँ की कहानी।"

उसने सिऊ-नी की और हेई-नी की माँ की कहानी का वर्णन करते हुए, निष्कर्ष में कहा, "सियाओ-येन, यह सच है कि मेरा पालन-पोषण शोषक-वर्ग में हुआ था, लेकिन जैसे ही मुझे पता चला कि मेरी अपनी माँ कैसी थी और कैसे मुझे

एक सामन्ती ज़मींदार द्वारा अपमानित और प्रताड़ित किया गया, और जब मैंने अपनी आँखों से चेङ तेह-फू के चेहरे पर दुख और निराशा देखी, तो मैं सिर्फ़ अपने तथाकथित माँ-बाप लिन जो-ताङ और सू फेङ-यिङ से ही घृणा नहीं करने लगी, बल्कि सभी शोषक वर्गों से घृणा करने लगी। मैंने स्वयं अपनी आँखों से इन वर्गों के अपराधों, कमीनेपन और कुरूपता को देखा है। अब मैं जब कभी किसी सत्ताधारी वर्ग के व्यक्ति से मिलती हूँ तो मेरी अपनी माँ और हेई-नी याद आ जाती हैं।" उसने साँस लेने के लिए रुककर अपनी सहेली के हाथों को कसकर पकड़ लिया, फिर काँपते स्वर में आगे कहा, "सियाओ-येन, हम लोगों के इर्द-गिर्द जो कुछ हो रहा है, उसको देखने के लिए ज़रूर अपनी आँखें खोलो! जब तुम देखोगी कि दुनिया में कितना कष्ट है, और हमारा देश कितने गम्भीर संकट में पड़ा हुआ है, तब क्या तुम सिर्फ़ हाथ पर हाथ रह सकती हो?"

सियाओ-येन ने ताओ-चिङ पर एक उत्सुक नज़र डालने के लिए धीरे-धीरे अपना सिर उठाया। रात की परछाइयों में उसकी सहेली की बड़ी-बड़ी काली आँखें आग के गोलों की तरह लग रही थीं। उनमें एक लपट थी, जो मानो देखने वाले को भस्म कर देने वाली हो।

सियाओ-येन ने आहिस्ते से और नरमी से कहा : "हाँ ताओ-चिङ, तुम ठीक कहती हो! आज तुमने मुझे पहली बार हमारी दुनिया से भिन्न एक दूसरी दुनिया के अस्तित्व का बोध करा दिया।" उसके मन्द स्वर में लज्जा, वेदना और उत्कण्ठा मिली हुई थी। एक विराम के बाद वह फिर आगे बोली, "क्या तुम मुझे पढ़ने के लिए कुछ किताबें सुझाओगी? मैं सबसे पहले क्या पढ़ूँ? तुम्हारी सारी किताबें तो मेरे कमरे में हैं, फिर भी कहने में बड़ा विचित्र लगता है – मैंने उनमें से एक को भी खोलने की परवाह नहीं की!"

यह ताओ-चिङ की आशातीत आशाओं से भी अधिक अप्रत्याशित था। वह अक्सर अपनी सहेली को क्रान्तिकारी सिद्धान्तों द्वारा विश्वास दिलाने की कोशिश करती थी, ताकि वह उसकी राजनीतिक समझदारी के स्तर को ऊँचा उठा सके, लेकिन आत्मविश्वासी, संकीर्णतावादी सियाओ-येन हमेशा उसे टाल देती थी, परन्तु हेई-नी और उसकी निजी माँ के ज़िक्र ने सियाओ-येन को बदलकर उसी रास्ते पर चलने के लिए इच्छुक बना दिया, जिस पर उसकी सहेली चल रही थी। ताओ-चिङ का धुँधलाया चेहरा खुशी से रौशन हो उठा, जब उसने प्रसन्नतापूर्वक, युक्तियुक्त ढंग से कहा :

"तुम 'नये सामाजिक विज्ञानों का अध्ययन कैसे करें' से शुरू कर सकती हो। यह पहली पुस्तक है जिसे मैंने पढ़ा था, और यह अब भी तुम्हारे कमरे में है। उसके बाद, कॉमरेड माओ-त्से तुङ की कुछ कृतियाँ, लेनिन की 'राज्य और क्रान्ति' और 'वामपन्थी कम्युनिज़्म : एक बचकाना मर्ज' और उसके बाद 'राजनीतिक अर्थशास्त्र

की रूपरेखा' पढ़ने का प्रयास करना!"

"ठीक है। तुम्हारी मदद से मुझे विश्वास है कि मैं अच्छी प्रगति कर लूँगी।"

"वैसे, यह इतना आसान नहीं है सियाओ-येन कि पढ़ लिया और हो गया। हमें सैद्धान्तिक अध्ययन से आगे बढ़कर, क्रान्ति के मार्ग पर बढ़ते जाने के लिए एक लम्बा रास्ता तय करना है – तब कहीं जाकर सच्चे क्रान्तिकारी बन सकती हो। मेरा ही उदाहरण लो..."

"मेरा सौभाग्य है कि तुम तो पहले ही से मेरी शिक्षिका हो!" सियाओ-येन हँसकर बीच ही में बोल पड़ी। "मैंने अभी स्कूल की चौखट नहीं लाँघी और तुमने पहले ही से भाषण पिलाना शुरू कर दिया!" ताओ-चिङ भी हँस पड़ी। अपने सम्पूर्ण सुदीर्घ मैत्रीकाल में वे कभी पूरी तरह से इतनी पारस्परिक सहानुभूति में नहीं आ सकी थीं।

वापस लौटते हुए ताओ-चिङ ने गली की बत्ती के नीचे से तेज़ी से गुज़रते एक नौजवान आदमी की ओर इशारा किया और अपनी सहेली से फुसफुसाकर कहा :

"देखो, सियाओ-येन! क्या तुम सोचती हो कि वह एक कम्युनिस्ट है?"

सियाओ-येन ने एक नज़र उस नौजवान पर डाली और हौले से हँस दी। मैं समझती हूँ कि तुम मतिभ्रम में हो। तुम किस आधार पर कह रही हो कि वह कम्युनिस्ट है?"

"तुम कह सकती हो कि वह ईमानदार है, दृढ़ और गम्भीर है...मेरा विश्वास है कि कम्युनिस्ट शक्ल-सूरत और मिज़ाज में भिन्न-भिन्न हो सकते हैं, लेकिन उनमें कई सामान्य विशिष्टताएँ भी पायी जाती है। वह नौजवान जो अभी-अभी गुज़रा है, साधारण लोगों से अधिक गम्भीर दिखायी दे रहा था।"

सियाओ-येन खिलखिलाकर हँस पड़ी। "कब से तुम रूपाकृति विशेषज्ञ बन गयी?"

"यह सच है! मैं मज़ाक़ नहीं कर रही हूँ।" ताओ-चिङ ने अपनी भौंहें सिकोड़कर गम्भीरतापूर्वक प्रतिवाद किया।

"इन दिनों मेरा अपने सभी क्रान्तिकारी कॉमरेडो से सम्पर्क टूट गया है, और मैं उनमें से किसी को नहीं पा सकती। मैं उनको पाने के लिए इतनी आकुल हूँ कि मेरे सपनों में भी वे आ घुसते हैं, जब कभी मैं गली में किसी के पास से गुज़रती हूँ, तो मैं विस्मय से देखती हूँ कि कहीं वह पार्टी-सदस्य तो नहीं... मैं क्या करूँ सियाओ-येन? जीना एक समस्या है।"

"उसके बारे में चिन्ता मत करो। कोई नौकरी पाने की कोशिश करो। तुम जब तक नौकरी नहीं पा जाती, तब तक मुझसे मदद ले सकती हो। मैं क्रान्ति के बारे में जो चीज़ नहीं समझ जाती, वह यह है कि क्यों कभी तुम इसके सम्पर्क में रहती हो, तो कभी इससे तुम्हारा सम्पर्क टूट जाता है।" उसने अपना स्वर धीमा कर दिया,

और सतर्क होकर चारों ओर देखा। "क्या तुम कम्युनिस्ट हो?"

"नहीं!" ताओ-चिङ का जवाब और भी धीमा था, इसलिए नहीं कि वह डर रही थी, बल्कि इसलिए कि इस सवाल ने उसे टीस दिया था। "अगर मैं होती, तो मैं समझती हूँ, मैं दुनिया की सबसे खुश व्यक्ति होती। लेकिन...मैं नहीं हूँ..."

"तुम हो जाओगी!" सियाओ-येन उसके चिन्ताग्रस्त चेहरे को निहारने के लिए मुड़ गयी। "हाँ, तुम एक दिन हो जाओगी। मुझे इसका विश्वास है।"

जैसे ही वे ताओ-चिङ के हॉस्टल के क़रीब पहुँचे, उसने देखा कि एक आदमी फ़ेल्ट हैट पहने प्रवेश-द्वार पर खड़ा होकर स्थिर भाव से उसी दिशा में देख रहा था, जिस दिशा से वे आ रही थीं। चौंककर उसने उस चिट्ठी को याद किया जो उसे च्याङ हुआ ने सौंपी थी, जिसको उसने जलाया नहीं था, बल्कि इस उम्मीद में अपने साथ लिये हुए थी कि किसी दिन वह सू हुई को पा लेगी। अब जबकि कुछ गड़बड़ लग रहा था, उसने अपनी जेब से उस पतले लिफ़ाफ़े को झटपट निकाला, मोड़कर उसकी गोली बनायी और उसको अपने मुँह में डालकर तैयार हो गयी कि अगर आवश्यकता पड़ी तो इसे घोंट जायेगी।

"तुम क्या कर रही हो?" सियाओ-येन ने चौंककर पूछा।

ताओ-चिङ ने जवाब में उसे कुहनी मारकर चेतावनी दी।

दोनों लड़कियाँ हॉस्टल पहुँचीं, तो कई सशस्त्र सैनिक प्रकट हो गये। एक अधेड़ उम्र के आदमी ने, जो प्रकटतः उनका प्रभारी अधिकारी लगता था, भौंहें तानकर एक खुश्क स्वर में पूछने से पहले, ताओ-चिङ को क्षणभर ऊपर से नीचे तक देखा :

"क्या तुम लिन ताओ-चिङ हो? हमारे साथ चलो!"

एक झटके में ताओ-चिङ वह चिट्ठी निगल गयी। तब वह सियाओ-येन की ओर चुपचाप मुड़ी और सिर हिलाती हुई बोली :

"विश्वविद्यालय लौट जाओ और कड़ी मेहनत करो। बस इतना ही कहना है!"

वह अधिकारी की ओर मुख़ातिब हुई और तिरस्कारपूर्ण लहजे में पूछा :

"क्या हमें चलना होगा?"

एक काली कार उनके सामने आकर खड़ी हो गयी और चार या पाँच सशस्त्र सैनिक उसे उसकी ओर धकेलकर ले चले।

जैसे ही इंजन स्टार्ट हुआ, वह पीछे उस पटरी पर देखे बिना न रह सकी, जहाँ सियाओ-येन किंकर्त्तव्यविमूढ़ बनी हुई खड़ी थी। गली के लैम्प की मद्धिम रोशनी उसके चेहरे के पीलेपन को और गाढ़ा बना रही थी।

"ऊधर क्या देख रही हो नासपीटी! अन्दर चलो!" उसे बेरहमी से कार के भीतर धकेल दिया गया, और धड़ाम से दरवाज़ा बन्द कर दिया गया।

"ताओ-चिङ! ताओ-चिङ!" कार दौड़ चली। उसके पीछे-पीछे दौड़ रही

सियाओ-येन की दर्दभरी और क्रमशः दूर होती जा रही चीखें सुनायी दे रही थीं।

ताओ-चिङ शान्त बनी रही और पीछे खिसककर बैठ गयी, वह संयत और निडर थी, मानो वह इस घटना की लम्बे समय से प्रतीक्षा कर रही थी।

——:o:——

अध्याय 18

उस दिन शाम होते ही 'वर्जित शहर' के ख़ूबसूरत, भव्य गुम्बद के ऊपर पीले आकाश में बादल छा गये थे। खाई का गहरा धूसर पानी मछली के छिलकों की भाँति चमक रहा था, जब उन दो लड़कियों ने खाई के चारों तरफ़ बने पत्थर की मुँडेर की बग़ल में अपने विश्वासों का आदान-प्रदान किया था और आँसू बहाये थे. ..

"तुमने आज मुझे पहली बार हमारी दुनिया से एक भिन्न दुनिया के अस्तित्व का बोध करा दिया।"

शाम की घटना अब काफ़ी पुरानी और स्वप्न जैसी प्रतीत हो रही थी। केवल कुछ ही क्षण तो बीते होंगे, जब वह और सियाओ-येन खुलकर बातें कर रही थी, एक असीम, शानदार भविष्य की ओर देख रही थी और इस पर बहस कर रही थी कि राजनीति का अध्ययन कैसे किया जाये, और आगे कैसे बढ़ा जाये। अब जब ताओ-चिङ ने अपनी थकी-थकी आँखें खोलीं, तो उसने अपनेआप को एक सीलन भरी, घुप-अँधेरी कालकोठरी में पाया। अब आदमी की दुनिया से पूरी तरह से कट जाने के बाद वह काँप उठी कि उसके भविष्य के सपने ग़ायब हो चुके हैं, उसे अब वर्तमान की कड़वी सच्चाई का सामना करना था। सन्देह नहीं कि जल्द ही क्वोमिन्ताङ के कसाई उसे सताने और मार डालने के लिए तहक़ीक़ाती कमरे में ले जायेंगे – हाँ! एक बार फिर मौत का ख़याल अनचाहे ही उसके दिमाग़ में उभर आया।

उस अँधेरे तहख़ाने की सीलन भरी फ़र्श पर अकेले बैठे-बैठे उसे चिउ चिन* की वह कविता याद हो आयी जिसको उसने बहादुरी के साथ मृत्यु का वरण करने से पहले लिखा था : "पतझड़ की हवा और पतझड़ की बारिश मेरे हृदय को दुखी कर देती है।" उसे उमंगभरे, उद्दीप्त मुस्कान वाले लू चिआ-चुआन का और च्याङ हुआ और सू हुई का ख़याल हो आया। अपने नायक लू चिआ-चुआन की स्मृति से उसकी आँखें बन्द हो चलीं और वह एक मुस्कान के साथ बुदबुदायी, "कॉमरेड,

---

* 1875-1907 की एक महिला क्रान्तिकारी, जिसको चिङ वंश के शासन के विरुद्ध संघर्ष में नेतृत्वकारी भूमिका अदा करने के आरोप में प्राणदण्ड दे दिया गया था।

मैं समझती हूँ कि तुम्हारी नियति शीघ्र ही मेरी नियति बन जायेगी।" क्योंकि उसे लगभग विश्वास हो चुका था कि वह लक्ष्य के लिए पहले ही अपनी जान गँवा चुका था।

मौत! वह बाल्यावस्था से ही एक बहादुराना मौत मरने का सपना देखती आयी थी। अब वह समय क़रीब आ रहा था।

वह अपनी भूली-बिसरी मधुर स्मृतियों की भूलभुलैया में खो गयी। चूँकि मृत्यु किसी भी घड़ी आ सकती थी, इसलिए वह अपने अन्तिम क्षण को अपने छोटे-से जीवन की ख़ुशी, दुख और यादगार घटनाओं पर सोचने में बितायेगी। उसकी पहली गिरफ़्तारी के आतंक और एकाकीपन बेअसर हो चुके थे, तथा वे उसे और स्थिर चित्त होकर उस संघर्ष की भव्यता पर सोचने के लिए समर्थ बना चुके थे, जिसे उसे छोड़ना पड़ सकता था।

"बाहर आ जाओ!" दरवाज़े का ताला खुला और पल्ले एकबारगी खुल पड़े। भीतर एक टार्च की रोशनी चमक उठी, और एक विशालकाय हाथ ने उसे पकड़ लिया और उसे उस काले अन्धकार से बाहर खींच लिया।

एक पीला, अधेड़ वय का पश्चिमी लिबास पहना आदमी एक छोटे कमरे में डेस्क के पीछे बैठा हुआ था। दो सहस्त्र प्रहरी कोने में खड़े थे और एक क्लर्क नोट लेने के लिए एक मेज़ पर झुककर तैयार बैठा था।

ताओ-चिङ डेस्क के सामने तनकर खड़ी हो गयी, उसका चेहरा कुछ-कुछ अनमनापन लिये हुए था।

"क्या तुम लिन ताओ-चिङ हो? तुम्हारी उम्र क्या है?" पश्चिमी लिबास वाला व्यक्ति धीमे और रूखेपन से बोला, मानो अर्द्ध-निद्रा में हो।

एक लम्बी ख़ामोशी छायी रही, ताओ-चिङ विचारमग्न और निश्चल खड़ी रही, उसका सिर दूसरी ओर घूम गया था।

"तुम बोलती क्यों नहीं? हम तुमसे कुछ सवाल कर रहे हैं। क्या तुम्हें पता नहीं कि तुम एक मुजरिम हो?" उनीन्दा स्वर तीखा हो गया, जब उसने अपना धैर्य खो दिया।

"मैं मुजरिम नहीं हूँ।" उसने बिना घूमे ही तड़ से जवाब दिया। "यह तो तुम लोग हो जो मुजरिम हो!"

धमाक! उसने डेस्क पर घूँसा मारा और दहाड़ते हुए उसकी ओर दहकती आँखों से देखा, "गुस्ताख़ी मत कर, बदज़ात कुतिया। हम बिलाशक जानते हैं कि तुम एक कम्युनिस्ट हो। इसके सिवाय कुछ नहीं! तुम कम्युनिस्ट पार्टी में कब शामिल हुई? तुम्हारा नेता कौन है? तुम किस पार्टी-ब्रांच से सम्बन्धित हो? अगर तुम सच-सच बता दो और अपराध स्वीकार कर लो, तो मैं तुम्हें आसानी से छोड़ दूँगा।"

ताओ-चिङ आहिस्ते से मुड़ी, अपनी ठोड़ी ऊपर उठायी, और सीधे उस आदमी

के पतले किचकिचाये होंठों की ओर देखा। उसका लम्बोतरा-चुचका चेहरा, भेड़िये जैसी उसकी आँखों की चमक और उसके सूखे, स्याह होंठ विचित्र ढंग से उसे उसके क्रूर उत्पीड़क हू मेङ-एन की याद दिला रहे थे। जिस तरह सभी कम्युनिस्ट कुछ ख़ास अच्छे गुणों में समानधर्मा होते हैं, वैसे ही सभी गुप्तचर विभाग के आदमी और फ़ासिस्ट घिनौनी विशिष्टताओं में समानधर्मा होते हैं।

"काश मैं कम्युनिस्ट होती! दुर्भाग्य से मैं अभी उस स्तर की नहीं हूँ।" ताओ-चिङ का स्वर मद्धिम था, फिर भी प्रत्येक शब्द साफ़ और स्पष्ट था।

"टालमटोल करने से क्या फ़ायदा? हमने तुम्हें अच्छे-ख़ासे सबूत के साथ गिरफ़्तार किया। तुम सिर्फ़ एक कम्युनिस्ट ही नहीं हो, बल्कि काफ़ी महत्त्वपूर्ण काम कर चुकी हो। सच्चाई बयान करो।"

उसके तहक़ीक़ातकर्ता ने डेस्क पर फिर घूँसा मारा, मानो वह शराब के नशे में धुत, बहके-बहके हावभाव में अपनी असरदारी के अभाव को पूरा करना चाहता हो।

"मैं अभी-अभी बता चुकी हूँ।" ताओ-चिङ ने फिर एक बार दूसरी ओर रुख कर लिया और धूसर दीवार पर पड़ रही अपनी स्वयं की परछाईं को देखने लगी। "मैं कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल होना चाहती हूँ, लेकिन अभी तक मुझे लिया नहीं जा सका है।"

इसने उसको मेज़ पर घूँसा-प्रहार के लिए और उत्तेजित कर दिया। उस उत्तेजित "जज" ने अपने बाल नोचे और उछलकर खड़ा हो गया।

"कुतिया! क्या अड़ियलपन और धूर्तता है! अगर तुमने सच्चाई नहीं बतायी तो तुम्हें शूट कर दिया जायेगा। समझी?"

"हाँ, मैं समझती हूँ, और मैं इसके लिए तैयार हूँ।" उसका स्वर और मन्द पड़ गया उसकी सारी शक्ति निचुड़ चुकी थी।

"अहा!..." इसके पहले कि वह पतले होंठों वाला ऐयाश कुछ और कहे, एक दूसरा मरियल व्यक्ति पश्चिमी सूट पहने एक बग़ली दरवाज़े से अन्दर आया। उसने अभिवादन के अन्दाज़ में, अपना हाथ ताओ-चिङ की ओर लहराया, अपनी आँखें सिकोड़ी और एक फीकी हँसी के साथ बोला :

"हाँ तो कुमारी लिन तुम मुझे याद कर रही हो?"

"शैतान!" हू मेङ-एन की उपस्थिति से खिन्न होकर ताओ-चिङ कुछ क़दम पीछे हट गयी। उसकी अन्यमनस्कता हिरन हो गयी और उसका दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा। वह गुस्सा, नफ़रत और उसके द्वारा किये जाने वाले अपमान के भय से सिहर उठी। एक सनसनी उसके शरीर में दौड़ गयी।

"तुमने तो सोचा नहीं होगा कि हम फिर मिल जायेंगे, क्यों?" हू मेङ-एन ने ताओ-चिङ के ठीक सामने खड़े होकर उसे खा जाने वाली नज़रों से देखा, और एक

उद्दण्ड मुस्कान के साथ अपनी खीसें निपोर दीं। उसकी साँसों से ब्राण्डी की गन्ध आ रही थी।

"जैसीकि कहावत है, वन का गीदड़ जायेगा किधर। अब तक क्या-क्या गुल खिला चुकी हो, शैतान कम्युनिस्ट की बच्ची? क्या यह तुम्हारे लिए बढ़िया मौक़ा नहीं है कि तुम हमारे तीन महान जनवादी सिद्धान्तों* – के आगे नतमस्तक हो जाओ?"

"हट जाओ, मेरे पास से!" ताओ-चिङ ने उस मरियल पियक्कड़ को दूर धकेलते हुए चीख़कर कहा। "तुम ख़ून में सने हुए हो। मेरे क़रीब मत आओ!"

वह कृशकाय आदमी इतनी ज़ोर से अपनी डेस्क पर मुक्का मारा कि इस पर रखी चाय की प्याली फ़र्श पर गिरकर चूर-चूर हो गयी। हू मेङ-एन ने उचित नहीं समझा कि सन्तरियों और म्युनिसिपल क्वोमिन्ताङ मुख्यालय से आये अपने साथी की उपस्थिति में भड़क पड़े। इसके बजाय वह अपना सिर ऊँचा करके ख़ामोशी में कई सेकेण्ड तक ताओ-चिङ को घूरता रहा। बोलने से पहले एक चालाकी भरी मुस्कुराहट उसके चेहरे पर खेल गयी।

"कुमारी लिन ताओ-चिङ। कृपया, यह बताओ कि तुम कितने सिर कटवा चुकी हो? कम्युनिस्ट पार्टी ने कभी तुम्हारा क्या भला किया है जो तुम उसके प्रति इतने हठीले ढंग से निष्ठावान बनी हुई हो, और अपनी ग़लती क़बूल करने से इन्कार कर रही हो? मैं तुमको बचाना चाहता हूँ – वह तो मेरी हमेशा से तमन्ना रही है – लेकिन यह दूसरा मौक़ा है कि तुम मेरे हाथों में आ पड़ी हो। जब तक..." वह दाँत भींचकर धमकी भरे स्वर में फुफकार उठा, "जब तक तुम ग़लती नहीं क़बूल कर लेती, और अपने जुर्म का इकबाल नहीं कर लेती तब तक तुम्हें – इसके लिए भुगतना पड़ेगा।"

डेस्क के पीछे बैठे कृशकाय व्यक्ति को सुर में सुर मिलाने का मौक़ा मिल गया :

"तुम्हारी तिङसिएन और अन्य जगहों पर की गयी गतिविधियों का पूरा लेखा-जोखा हमारे पास है। तुम जल्दी करो और पार्टी से अपने सम्बन्धों को खोलकर बताओ। एक और कम्युनिस्ट का नाम बता दो, तब हम तुम्हें तुरन्त छोड़ देंगे।"

इसने ताओ-चिङ के शरीर में दूसरी सनसनी पैदा कर दी। "तिङसिएन? इनको कैसे पता चला कि मैंने तिङसिएन में क्या किया था?" क्रोध से जलती हुई उसने बिना किसी चेतावनी के हू मेङ-एन के कृश गाल पर चमाचा मारते हुए कहा,

---

* ये सिद्धान्त सुन यात-सेन द्वारा प्रतिपादित किये गये थे, लेकिन क्वोमिन्ताङ ने इन्हें व्यवहार में कभी लागू नहीं किया। ये तीन सिद्धान्त थे : राष्ट्रवाद का सिद्धान्त, जनवादी अधिकारों का सिद्धान्त और जनवादी आजीविका का सिद्धान्त।

"आगे बढ़ो और मुझे शूट कर दो! मैं तैयार हूँ।"

तड़ाक! तड़ाक! तड़ाक! हू का बेडौल हाथ उसके पीले चेहरे पर पड़ा। स्वयं अपना गाल सहलाते हुए वह गरजा, "तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई! आँख के बदले आँख, और दाँतों के बदले दाँत – यही तो है जिसे तुम्हारे लाल क्रान्तिकारी हरदम कहते-फिरते हैं। मैं तुमको अच्छा मज़ा चखाऊँगा। ले जाओ इसे!" दरवाज़े के पास खड़े सन्तरियों पर एक क्रुद्ध निगाह फेंककर वह अपनी बाँह झटककर बोला, "उसे यातना दो – इसे छोड़ना मत!"

मानो किसी दुःस्वप्न में पड़ी हुई ताओ-चिङ ने पाया कि उसे खींचकर एक बड़े, ठण्डे कमरे में ले जाया जा रहा था। दीवारों और फ़र्श पर यातना के ऐसे-ऐसे उपकरण थे जिनकी उसने कभी कल्पना तक न की थीं दो हट्टे-कट्टे मुस्टण्डे काले लिबास पहने चौकस आँखों से उसकी निगरानी करते हुए, उसकी भागने की किसी भी कोशिश को नाकाम कर देने के लिए तैयार थे। वह वहाँ पर श्रान्त-क्लान्त, नस-नस ढीली बनी हुई, खड़ी होकर कुछ-कुछ इस बात से वाक़िफ़ थी कि अब रात बहुत हो चुकी थी। यह रात का वह पहर था, जब माँएँ अपने दुधमुँहों को प्रेमपूर्वक अपनी बाँहों में लेकर सो रही होंगी, और नौजवान प्रेमी फुसफुसाकर एक-दूसरे से बतिया रहे होंगे। लेकिन उसका क्या हाल था?...उसे चिन्ता हुई कि सियाओ-येन अभी तक सोयी होगी या नहीं। उसके सभी अच्छे क्रान्तिकारी कॉमरेड कहाँ होंगे – लू चिआ-चुआन, च्याङ हुआ, सू निङ, लो ता-फाङ, सू हुई, सू मान-तुन और निष्ठावान मौसी ली? न तो उनमें से कोई, और न ही उसके प्यारे छात्र ही इस भयानक मुसीबत को जान रहे थे, जिसमें वह पड़ी हुई थी।

वह आँखें बन्द किये चुपचाप वहीं खड़ी रही। उसकी भय के प्रति बेख़बरी की खिल्ली उड़ाते हुए, वे दुर्दान्त उत्पीड़क अपने उपकरणों को खड़खड़ा उठे, भोंड़े ढंग से मज़ाक़ करते हुए बोले :

"कोई असली हीरो ही हमारे उपकरणों को या मिर्च की एक खुराक को झेल सकता है।"

"लेकिन वही सबसे बुरा तरीक़ा नहीं है! हम अपने लाल-गर्म लोहों से उसके माँस को छनछना और उसकी आँखों को सफ़ेद मनकों को बाहर निकाल सकते हैं। अगर सूअर के माँस को भून कर भूरा किया जा सकता है, तो वैसे ही हम मानव के माँस को भी..."

"तुमने तो कह ही दिया। यदि वह लड़की जानती होगी कि इसके लिए क्या अच्छा होगा, तो यह अपने अपराध स्वीकार कर लेगी, अभी भी समय है कि यह ज़ख़्मी होने से बच जाये। 'एक सच्चा हीरो मुसीबत नहीं मोल लेता।'"

ताओ-चिङ बस आँखें बन्द किये ऐसे ख़ामोश खड़ी रही, जैसे वह सो रही हो।

क्या था जो वह कहती? अपने होंठ काटती हुई वह सोच रही थी :

"अब दृढ़ हो जाओ! अपने दाँत भींच लो और एक कम्युनिस्ट की भाँति बरदाश्त करो!"

"तो तुम युद्ध-कौशल दिखाना चाहती हो?" धैर्य खोकर उन मुस्टण्डों ने उसे यन्त्रणा देना शुरू कर दिया...

वह धैयपूर्वक विकट यातनाएँ झेलती रही। उसके घुटनों के पिछले भागों पर आर-पार सलाखें रखकर उन्हें दबाया गया, मिर्च के पानी से भरी केतलियाँ एक के बाद-एक करके उसके नासा-रन्ध्रों में उड़ेली जाती रहीं...होंठ चबाते उनमें से ख़ून निकल आया। वह मूर्छित हो गयी, फिर होश में आयी, फिर मूर्छित हो गयी लेकिन उसके होंठों से एक भी शब्द न निकला। केवल जब एक लाल-गर्म लोहा उसकी जाँघ पर रखा गया तभी वह चीत्कार कर उठी और पूरी तरह बेहोश हो गयी।

दिन निकल रहा था। सवेरा फूटने के बाद पीला प्रकाश, उस ठिठुरन भरे यातनाकक्ष में, उसकी ऊँची खिड़की से छनकर आ रहा था। दोनों दुर्दान्त उत्पीड़क अपने पसीने-से तरबतर चेहरे को पोंछने लगे, जब उन्होंने ताओ-चिङ पर नज़र डाली, जो ज़मीन पर पड़ी और संज्ञाशून्य थी, उसका चेहरा नीला पड़ गया था और उसके शरीर पर गाढ़े ख़ून के थक्के जम गये थे।

"इस लड़की में दम है।" उनमें से एक ने सूअर की तरह घुरघुराते हुए कहा। "कम्युनिस्ट पार्टी में ऐसा क्या है जो साधारण मर्दों और औरतों को इस तरह बना देती है। कम्युनिज़्म के लिए वे अपनी जान तक दे देने को तैयार रहते हैं। और जीवन से ज़्यादा क़ीमती क्या है, मैं जानना चाहता हूँ?"

दूसरे ने ज़ोर की छींक मारी। अपने हाथ से बेंच पर पड़े ख़ून के छींटों को पोंछकर, उसने सिर काट लेने का संकेत करते हुए अचानक अपनी गरदन नचायी, और अक्खड़पन से चिल्लाया :

"अब हमारे लिए करने को कुछ भी नहीं बचा है! हमें तो महासेनानायक च्याङ के आदेशों का पालनभर करना है; कहीं एक भी कम्युनिस्ट बच न जाये। इसके लिए हज़ार निर्दोष लोगों को मार डालना है। हाँ, मार डालो, सभी को मार डालो! सबका समूल नाश कर कर दो – लाल हरामी!"

महासेनानायक का नाम आते ही वह उछलकर सावधान-मुद्रा में हो गया। फिर ताओ-चिङ पर एक कुत्सित निशाना साधकर, उन्मत्त, अनियन्त्रित ठहाका लगाने लगा।

——:o:——

अध्याय 19

तीन दिन बीत गये। भयानक पीड़ा के साथ ताओ-चिङ की चेतना लौटी। जैसी ही उसने एक कराह के साथ अपनी आँखें थोड़ी खोलीं, उसके उद्भ्रान्त मस्तिष्क में ढेर सारे विचित्र धुँधलाये दृश्य तैर गये।

"क्या मैं अभी ज़िन्दा हूँ..." उसने स्वयं से पूछा और फिर अचेत हो गयी। दोबारा जब होश में आयी तो उसने, जो कुछ घटा था, उसे याद करने की पूरी-पूरी कोशिश की। एक नज़र चारों ओर डाल लेने के बाद से महसूस हुआ कि उसे गिरफ़्तार कर लिया गया था, और यातना दी गयी थी तथा अब वह जेल की कोठरी में थी।

ठीक तभी एक मन्द, प्यारभरा स्वर उसके कानों में पड़ा।

"आख़िर तुम यहाँ आ ही गयी! मैं बहुत चिन्तित थी!"

ताओ-चिङ ने आहिस्ते से, अपने सिर को बोलने वाले की ओर मोड़ा। उस अँधेरी, फफूँदी लगी कोठरी की लोहे की सलाख़ों से होकर प्रवेश कर रही फीकी रोशनी में उसे पटरे की एक चारपायी पर पड़ी एक पीत वर्णी, छरहरी महिला दिखायी दी।

अपनी बची-खुची सम्पूर्ण शक्ति को बटोरकर उसने किसी तरह से सुनी जा सकने वाली आवाज़ में पूछा :

"क्या मैं अभी ज़िन्दा हूँ? तुम..."

दूसरी औरत जवाब देने के बजाय खिड़की की ओर मुड़ गयी और चिल्लायी :

"वार्डरक्षिका, वार्ड रक्षिका! यहाँ आओ! हमारी कोठरी की ज़ख़्मी क़ैदी होश में आ गयी है!" तब वह ताओ-चिङ की ओर घूमी और उत्साहवर्द्धक लहज़े में फुसफुसायी, "मैं चाहती हूँ कि वे आयें और तुम्हारे ज़ख़्मों को देख लें! हमें ज़िन्दा रहने के लिए हरसम्भव कोशिश करनी है..."

ताओ-चिङ की आँखें उस पथराये चेहरे पर पड़ी हुई थीं, जो स्नेहिल भावना के उद्रेक से ओत प्रोत थीं। उसने अब देखा कि उसकी साथिन तीस वर्ष से कम उम्र की एक ख़ूबसूरत महिला थी। उसका चेहरा पीला था, फिर भी संगमरमर की भाँति कान्तिमान था और उसकी बड़ी-बड़ी काली आँखें उस अँधेरी कोठरी में रत्न की भाँति चमक रही थीं।

"अरे, वह यूनानी देवी की भाँति है!..." यह बेतुका विचार ताओ-चिङ के दिमाग़ में कौंध गया। अत्यन्त अशक्त और हिल-डुल सकने में अत्यधिक दर्द महसूस करती हुई, वह बेहद प्रयास करके फुसफुसाकर उससे बोली, "धन्यवाद! लेकिन कोई डॉक्टर मत बुलाओ। मेरा काम तमाम ही समझो..."

ठीक तभी वार्डरक्षिका ने दरवाज़े का ताला खोला और अन्दर प्रवेश किया,

उसके पीछे-पीछे एक बिना कटे बालों वाला डॉक्टर था, जो एक क़ैदी की भाँति ही दिख रहा था। जैसे ही उसने ताओ-चिङ के फटे और ख़ून-सने कपड़ों को हटाया एक यन्त्रणादायी पीड़ा ने उसे अचेत कर दिया।

फिर जब उसकी चेतना वापस लौटी तो उसने देखा कि उसकी साथिन क़ैदी, अब भी अपनी चारपायी से उसे चिन्तातुर और स्नेहिल आँखों से देख रही थी, और जेल का डॉक्टर अपने हाथों में दवा का एक छोटा डिब्बा लिये उसके सामने खड़ा था। उसने ताओ-चिङ की जाँच की, और दूसरी औरत से कहा :

"इसे फिर अचेत नहीं होना चाहिए। चिन्ता की कोई बात नहीं है। यह मज़बूत क़द-काठी वाली है..." फिर वह ताओ-चिङ पर मुस्कुराया। मुझे तुम्हारे घावों की मरहम-पट्टी करने के लिए कहा गया है, इसलिए मैं, जो कुछ कर सकता हूँ करूँगा। कोई हड्डी नहीं टूटी है। अब तुम्हें जल्दी ही ठीक हो जाना चाहिए।"

कुछ घण्टे बाद जब ताओ-चिङ थोड़ा-सा चावल का दलिया ले चुकी, तो उसमें कुछ जान आ गयी, हालाँकि अब भी वह तीखे, जलते हुए दर्द से छटपटा रही थी। वह चीख़ी नहीं बल्कि इसे मशक्कत से झेलती रही। उसकी आँखें दूसरी क़ैदी की सुन्दर देह-यष्टि की ओर दौड़ती रही, और वह यह सोचे बिना न रह सकी। "वह कौन है? कोई कम्युनिस्ट?"

"ठीक है, बदतरीन हालत तो अब टल गयी। मुझे विश्वास है कि थोड़ा-सा और खाना तुम्हें ठीक-ठाक कर देगा।" वह नौजवान औरत, जिसका नाम वह जान चुकी थी, चेङ चिन थी, जो उसकी तरफ़ देखकर मुस्कुरायी। "जब तुम्हें बेहतरी महसूस हो, तो तुम ज़रूर बताना कि तुम कैसे गिरफ़्तार हुई और बाहर क्या कुछ चल रहा है। लेकिन तुम्हें अभी बोलने के लिए मैं नहीं कहूँगी। यह बेहद बेमुरव्वती होगी। हम दो या तीन दिनों तक इन्तज़ार करेंगे, जब तक कि तुम और ठीक नहीं हो जाती।"

उसी छोटी कोठरी में एक और छात्रा, यू शू-सिऊ, को भी यातना दी गयी थी, और चेङ चिन, ताओ-चिङ से बतियाने के साथ-साथ उससे भी बात करती रहती। वह बीमार लग रही थी, क्योंकि हिलने-डुलने में अशक्त, वह अपनी काठ की चारपायी पर ही पड़ी रहती, और दोनों के लिए शब्दों और निगाहों में अपना स्नेह जताती रहती। उसका कोमल स्वर प्राय: सुनायी पड़ जाता था।

"कृपया यहाँ आओ, वार्डरक्षिका! वे कुछ पानी पीना चाहती हैं।"

"कृपया यहाँ आओ वार्डरक्षिका! यहाँ आओ!"

"वार्डरक्षिका!" उसने जैसे ही कहा, वार्डरक्षिका लिऊ अन्दर आयी। "क्या तुम इस लड़की के लिए कुछ खाने को नहीं लाओगी, जिसने इतनी भयानक यन्त्रणा झेली है?" अगर लाये गये खाने में सिर्फ़ मक्के की मीठीरोटी का चूरा और बासी शोरबे के साथ उसकी सतह पर तैरती सब्ज़ी की पीली पत्तियाँ होतीं, तो वह

झल्लाकर शिकायत करती, "इसे वह कैसे निगल सकती है? कोई बेहतर [illegible] लाओ – हम तुम्हें आइन्दा कभी नहीं भूलेंगी!"

आश्चर्य कहिये कि यह दुबली-पतली वार्डरक्षिका हाज़िरजवाब प्रतीत होती, और उनकी कई तीमारदारियाँ खुशी-खुशी, इस जोखिम के बावजूद कर डालती कि दूसरे जेलरों और सन्तरियों को इसका पता लग सकता था।

वह छात्रा, जो पन्द्रह या सोलह वर्ष की थी, एक ख़ूबसूरत, अण्डाकार, प्रतिभासम्पन्न चेहरे वाली थी। वह इतने गम्भीर रूप से घायल नहीं थी कि अपनी चारपायी से उठ और चल-फिर नहीं सकती थी। लेकिन दिनभर वह भय से रोती हुई बिना कोई शब्द कहे, लेटी रहती, और रात में ताओ-चिङ अक्सर उसे नींद में चीख़ते हुए सुनती। "मम्मी! मम्मी! मुझे बहुत डर लग रहा है!..."

वह पहले कभी अपनी माँ से जुदा नहीं हुई थी, और उसकी चीख़ अभेद्य अन्धकार को चीरकर झनझना उठती।

चेङ चिन, जो अभी तक जाग रही होती, लड़की के पास उसका हाथ अपने हाथों में थाम लेने के लिए पहुँचती और बुदबुदाकर कहती :

"क्या तुम को कोई दर्द है?..."

"कोई ख़ास नहीं..."

"तब चीख़ क्यों रही हो? मैं समझती हूँ कि तुमको घर का वियोग सता रहा है, यही न? ठीक है, अब और मत चीख़ो। इससे कोई फ़ायदा नहीं!" वह एक गहरी साँस लेने के लिए विराम लेती और जब शू-सिऊ की सिसकियाँ थम जातीं, तो आगे कहती, "जब मैं पन्द्रह वर्ष की थी, तो मुझे शंघाई में गिरफ़्तार किया गया था। मैं संत्रस्त हो गयी थी और रातो-दिन रोती रहती थी। लेकिन मैं जितना ही अधिक चीख़ती थी, उतना ही अधिक वे प्रति क्रियावादी मुझे पीटते और आतंकित करते; फिर तो मैंने ओर आगे न चीख़ने का फ़ैसला कर लिया। मैंने अपनी कोठरी की उस सयानी महिला के उदाहरण का अनुसरण किया, जो उन मरदूदों के सामने तनकर खड़ी हो जाती थी और झिड़ककर पीछे कर देती थी। वे मुस्टण्डे सिर्फ़ कमज़ोर पर ही हमला करते हैं, और तुम क्या सोचती हो? जैसे ही मैंने दिखा दिया कि मैं उनसे नहीं डरती, तो उन्होंने मुझे पीटना बन्द कर दिया..." वह मृदु हँसी में फूट पड़ी, जिसमें ताओ-चिङ और शू-सिऊ भी शामिल हो गयी।

"लेकिन प्यारी चेङ चिन," छात्रा ने एक हकलाते स्वर में प्रतिवाद किया। "मैं इसलिए चीख़ती हूँ कि यहाँ का समूचा बरताव बुरा है।"

यद्यपि चेङ चिन का दम फूल रहा था और उसे बहुत कमज़ोरी महसूस हो रही थी, फिर भी उसने भरसक उसे सान्त्वना दी।

"शू-सिऊ!" उसने मृदुता और नरमी से कहा। "क्या तुम सोचती हो कि अकेले तुम्हारे ही साथ बुरा बरताव किया गया है? अरे नहीं! जालिमों के राज में ईमानदार

लोगों के लिए कहीं जगह नहीं है। इस समाज में बदमाश मौज मनाते हैं, जबकि शरीफ़ लोग हिरासत में लिये जाते हैं, और सताये जाते हैं। आज का यही रवैया है – आम रवैया!"

उत्साहित होकर और, चीज़ों को उनकी सही रोशनी में देखने की समझ पाकर, वह लड़की शान्त हो गयी, और आगे फिर नहीं चीख़ी।

ताओ-चिङ तभी से चेङ चिन पर मुग्ध हो गयी थी और उसकी बात को सुखद आश्चर्य से सुनती थी।

यह एकदम स्वाभाविक था कि वह सयानी महिला जो वहाँ सबसे उम्रदराज़ थी, यह जानती थी कि कामों को कैसे किया जाये। फिर भी ताओ-चिङ को जो बात अबूझ लग रही थी। वह थी वार्डरक्षिका की उसके प्रति हाजिरजवाबी की तत्परता। इससे उसे यह जानने की जिज्ञासा होती कि वह चेङ चिन कौन थी।

"तुम क्या करती हो और तुम क्यों गिरफ़्तार हुई?" दूसरी रात को जब सन्तरी अपने निरीक्षण का दौरा करके जा चुके, तो चेङ चिन ने मृदुता से पूछा।

"मुझे नहीं मालूम कि मैं क्यों गिरफ़्तार की गयी," ताओ-चिङ ने एक क्षीण स्वर में जवाब दिया। "मैं एक छात्रा हूँ, जिसे पढ़ाई छोड़ देनी पड़ी। मैं कम्युनिज़्म और कम्युनिस्ट पार्टी में विश्वास रखती हूँ...हो सकता है, यही कारण रहा हो, जिसके नाते उन्होंने मुझे गिरफ़्तार किया हो। मैं पार्टी सदस्य नहीं हूँ, लेकिन मैं अपने जीवन को पार्टी और मानवता की सेवा के लिए समर्पित कर देना चाहती हूँ। मुझे विश्वास है कि वह समय आ गया है, और अब मैं जो कुछ सोच रही हूँ वह यही है कि मैं अपनेआप को अन्तिम क्षण के लिए कैसे तैयार करूँ।"

चेङ चिन ने ध्यानपूर्वक सुना, उसका चेहरा गम्भीर हो उठा। कुछ समय गुज़रने के बाद उसने लैम्प की मद्धिम रोशनी में ताओ-चिङ की आँखों में सीधे देखने के लिए अपना सिर ऊपर उठाया।

"तुम्हें यह बिल्कुल नहीं सोचना चाहिए कि गिरफ़्तार हो जाना ही हर चीज़ का अन्त है या उसके बाद मरना ही निश्चित है। ऐसा नहीं है। कम्युनिस्ट जहाँ कहीं भी रहें, भले ही वह जेल ही में क्यों न हो, वहीं उसे क्रान्ति के लिए काम करना चाहिए और वह कर सकता है। हमें अन्तिम क्षण तक, अपनी अन्तिम साँस तक कार्य करते रहना है। हम चाहते हैं कि एक कम्युनिस्ट चीन को देखने के लिए उस दिन का खुशी से स्वागत करने के लिए ज़िन्दा रहें..." उसने ताओ-चिङ की तरफ़ से नज़र हटाकर शू-सिऊ की ओर देखा और उसकी काली आँखें कम्युनिज़्म की आशाप्रद सम्भावनाओं और चीन के उज्ज्वल भविष्य का वर्णन करते-करते इस खुशी से चमक उठी कि आज़ाद हो जाने पर यह स्वतन्त्र और समृद्ध देश के रूप में अन्य सभी राष्ट्रों के समकक्ष खड़ा होगा।

ताओ-चिङ ने इसे ध्यानपूर्वक सुना और विस्मित हो गयी। वह उन मुग्धकारी

आँखों से अविभूत हो चुकी थी जिनमें प्रतिभा का इतना तेज़ था। ऐसे आश्वस्त होकर कि चेङ चिन एक क्रान्तिकारी थी, वह इस निश्छल उत्साहवर्द्धन और आलोचना से गहरे प्रभावित हो गयी। मानो वह स्वतन्त्रता में बहा दी गयी, जिसकी गर्मजोशी और खुशी ने उसके हृदय को आप्लावित कर दिया। वह कितनी खुशनसीब थी कि उसकी बग़ल में एक ऐसी बुलन्द हौसलेवाली, तेज़तर्रार क्रान्तिकारी थी। जिस कॉमरेड की उसे कामना थी और जिसे ढूँढ़ कर भी वह न पा सकी थी, उसको दुश्मन ने ही उससे मिला दिया था, और वह भी उस वक़्त? जब इसकी उसे सबसे कम आशा थी।

तीन दिन बाद शाम के खाने और रात की पहली जाँच-पड़ताल के बाद चेङ चिन दोनों लड़कियों से फिर बातचीत करने लगी। उसे बतियाते रहना पसन्द था, जैसे वह तब तक नहीं चुप हो सकती थी जब तक कि वह हर उस चीज़ को, जिसे वह जानती थी, उनको बता न देती।

"अब मैं तुम लोगों को जेल-जीवन के बारे में कुछ बता दूँ, मेरी प्रिय साथिनो। यह सूचाओ में चार वर्ष पहले एक जेल में घटी घटना है..."

"प्रसंगवश," ताओ-चिङ ने पूछ लिया, "यह बता दो कि अब हम कहाँ पर है? इसे मैं अभी तक नहीं जानती।"

"यह मिलिटरी पुलिस मुख्यालय के अन्तर्गत गुप्त कारागार का एक हिस्सा है। मिलिटरी पुलिस की तीसरी रेजीमेण्ट और क्वोमिन्ताङ म्युनिसिपल मुख्यालय अक्सर आपस में झगड़ते रहते हैं, लेकिन कभी-कभी वे आपस में सहयोग भी करते हैं।" ताओ-चिङ को उत्तर देकर चेङ चिन आगे बोली, "जब मैं सूचाओ जेल में भी, तो मैंने मार्क्सवाद-लेनिनवाद की तीन साल पढ़ाई की, काफ़ी कुछ सीख लिया।"

"तुम वैसी पढ़ाई जेल में कैसे कर सकी?" शू-सिऊ ने विस्मय में पड़कर पूछा।

"यह कोई चमत्कार ही था," चिङचिन ने प्रयासपूर्वक जवाब दिया। उसकी आँखें बन्द हो गयी थीं और वह बहुत थक गयी थी। "हर सुबह जब तक निकट की फ़ैक्टरी की भाप-सीटी बजती, तो क़रीब एक हज़ार राजनीतिक क़ैदी जाग उठते – औरत-मर्द सभी-मैं उनकी बात नहीं करती, जो किन्हीं जुर्मों में सजा काट रहे थे। कवायद करने के बाद उसी जगह समय तय करके हम अपने बिस्तरों पर पढ़ने बैठ जाते। हममें से कुछ को मौत की सजा हुई थी, कुछ को आजीवन कारावास और कुछ को दस या आठ साल की जेल की सज़ा। लेकिन कोई भी समय नष्ट करना नहीं चाहता था। हम सभी अपनेआप को कर्त्तव्यनिष्ठ भाव से अपने अध्ययन में लगाते थे। कुछ अंग्रेज़ी सीखते, कुछ रूसी, जापानी या जर्मन। स्वाभाविक तौर पर राजनीतिक सिद्धान्त एक ऐसा कोर्स था जिसको सभी ने ले रखा था। मैंने जर्मन सीखी और बाद में इसका अध्यापन भी किया।"

"कितने अजीब थे! एक विदेशी भाषा सीखने का क्या तुक था, जबकि मौत

की सजा सुनायी जा चुकी थी?" शू-सिऊ ने आँखें फाड़कर कुछ अविश्वास के साथ पूछा। उसका हौसला तबसे बेहतर हो चुका था, जबसे वह इन दोनों से परिचित हो गयी थी।

चेङ चिन ने अपना सिर उठाया। लैम्प की मद्धिम रोशनी में उसका चेहरा, अपने पीलेपन के बावजूद साफ़ और सुन्दर झलक रहा था। ताओ-चिङ को एक संगमरमर की मूर्ति का ख़याल हो आया और उसने सोचा, "काश मैं उस जैसी ख़ूबसूरती गढ़ सकती!"

वह बोलने ही जा रही थी कि चेङ चिन ने उसे ख़ामोश रहने का संकेत किया, कारण कि सन्तरी के भारी बूटों की धमक बाहर के बरामदे में सुनायी दे रहा थी।

"तो तुम सोचती हो कि वे अजीब थे, शू-सिऊ?" जब बूटों की धमक ख़त्म हो गयी तो उस सयानी महिला ने आगे कहा। "वे किसी भी तरह से अजीब नहीं थे। वे साधारण लोग नहीं थे, बल्कि कम्युनिस्ट या कम्युनिज़्म में यक़िन करने वाले लोग थे। जो कोई कम्युनिज़्म में यक़ीन रखता है और मानवजाति की बहुसंख्यक आबादी के अधिकार और ख़ुशहाली के लिए लड़ने को इच्छुक होता है, वह उस उद्देश्य के लिए अपना जीवन दे देने से नहीं हिचकता। फिर उसका व्यक्तिगत जीवन इतना विशाल हो जाता है, जितना कि सैकड़ों का सम्मिलित जीवन या यहाँ तक कि सम्पूर्ण मानवता का जीवन। क्या तुम नहीं समझती प्यारी, यही अमरता है? मैंने कई कम्युनिस्ट देखे हैं जिन्होंने फाँसी के ठीक पहले जेल में अपने आख़िरी चन्द मिनटों को अन्त तक ख़ुशी-ख़ुशी कार्य करते हुए बिताये हैं – कारण कि वे ऐसे लोग होते है जो कभी नहीं मरते।"

ताओ-चिङ बिना एक शब्द छोड़े चाव से सुनती रही, उसे महसूस हो रहा था कि उसकी शिराओं में ख़ून तेज़ी से दौड़ने लगा है और अन्ततः वह आवेश में रोमांचित हो उठी। उसने कभी नहीं सोचा था कि ऐसी जगह में एक कट्टर बोल्शेविक से मुलाक़ात हो जायेगी, एक तपातपाया क्रान्तिकारी, जिसने उसे लू चिआ-चुआन, च्याङ हुआ और उन दूसरे नायकों की याद दिला दी, जिनका वह सपना देखा करती थी। अमानवीय यातनाओं के बाद बीमारी और पीड़ा की स्थिति में होते हुए भी येङ चिन प्रसन्नचित्त और साहसी बनी हुई अपनी सम्पूर्ण बची-खुची सामर्थ्य को ताओ-चिङ और शू-सिऊ को मदद करने और उनका मार्गदर्शन करने में लगा देने के लिए आतुर थी।

"बिना संघर्ष में हिस्सा लिये मौत के बारे में सोचना ग़लत है।" ताओ-चिङ को बहुत पहले कहे गये लू चिआ-चुआन के ये शब्द याद हो आये। वस्तुतः उसने शहादत की अपनी आदिम अभिलाषा को कभी नहीं छोड़ा था, लेकिन अब उसने महसूस किया कि यह उस व्यक्ति की एक कमज़ोरी का लक्षण है, जिसमें आख़िरी दम तक संघर्ष करने के साहस का अभाव होता है, और जो सिर्फ़ एक बहादुराना

मौत मरने का ही सपना देखता है। यह कायरतापूर्ण है।...वह भीतर ही भीतर लज्जित होकर चेङ चिन की ओर देखने के लिए मुड़ी।

अब तक शू-सिऊ अपने गृह-वियोग और कठिनाइयों के आतंक के आँसुओं से लगभग निजात पा चुकी थी तथा शान्त और संयत होने लगी थी। जब-तब दरवाज़े से झाँक लेने के बाद यह इत्मीनान करके कि बाहर कोई सन्तरी नहीं था, वह चुपके से ताओ-चिङ की खाट के कोर पर जा बैठती और विस्फाटित नेत्रों से, चेङ चिन के जेल-जीवन के संघर्षों की उत्साहपूर्ण कहानियों को ध्यानपूर्वक सुनती।

चौथी रात चेङ चिन ने कहानी की अगली किस्त सुनायी।

"हमलोग जेल में कुछ अख़बार और पत्रिकाएँ भी निकालने लगे थे।" वह मुस्कुरायी उसकी आँखें फिर मुँद गयीं। "वहाँ रहते हुए हमने सूचनाओं का आदान-प्रदान करने के लिए एक लघु समाचारपत्र के अतिरिक्त दो या तीन प्रकाश्न और निकाले। हममें से कुछ लेख लिखते, कुछ सम्पादन करते और कुछ उन की कापियाँ तैयार करते। मैं कापियाँ तैयार करने वालों में थी। मैं दिन के समय काम नहीं कर सकती थी, लेकिन रात में मेरी कोठरी के और साथी बारी-बारी से खड़े होकर चौकसी करते, जबकि मेरे ऊपर दो रजाइयाँ ओढ़ा दी जातीं। इस 'छत्रछाया' के नीचे, एक छोटी सेम के तेल वाली ढिबरी की रोशनी में या एक कौंध-बत्ती की रोशनी में फ़र्श पर लेटकर मैं स्याही से पाण्डुलिपियों की कापियाँ करती..."

"इस कोठरी में बहुत ज़्यादा बातचीत हो रही है!" कृश चेहरे वाली वार्डरक्षिका लिऊ ने आहिस्ते से चाबीवाले छेद से झाँकते हुए चेतावनी दी। "अच्छा हो कि तुम लोग शान्ति बनाये रखो। अगर सन्तरी तुम्हें बतियाते पकड़ लेंगे, तो तुम लेग भारी मुसीबत में पड़ जाओगी!"

"तुम एक अच्छी कर्मचारी हो, हमेशा हम लोगों की मद करने को तत्पर रहती हो। हमें थोड़ी बातचीत करने दो!" चेङ चिन ने खुशामद की। "तुम तो जानती हो कि यहाँ हम क़ैदी कितना कठिन जीवन बिता रहे हैं। हम सब कितने गृह-वियोगी हैं।"

जब वार्डरक्षिका कुछ न बोली, तो चेङ चिन ने दोनों लड़कियों से मुस्कुराकर कहा : "वह एक ग़रीब परिवार की है और हमसे हमदर्दी रखती है... मैं किसी भी हालत में अपनी कहानी जारी नहीं रख सकती। मैं उन यातनाओं से बुरी तरह विदीर्ण हो चुकी हूँ और आज रात मेरा हृदय बुरी तरह धड़क रहा है..." वह रुककर साँसें लेने लगी और तुरन्त ऊँघने लगने लगी। लड़कयाँ उसे कोई ख़लल न पहुँचाने के लिहाज़ से ख़ामोश बनी रहीं, लेकिन थोड़ा-सा सुस्ता लेने के बाद चेनचिङ ने फिर जागकर शू-सिऊ का हाथ पकड़ लिया, "मैं उतना ही अधिक जीना चाहती हूँ कि तुम लोग जीना चाहती हो, मेरी प्यारी साथिनो," उसने नरमी से कहा।

"मेरे बाप और माँ हैं, एक भाई और एक बहन है, इनके अलावा कई अच्छे

दोस्त और कॉमरेड है...मैं उन सभी को प्यार करती हूँ। मैं कितना चाहती हूँ कि इस गन्दे कारागार से उड़कर बाहर चली जाऊँ और उनके साथ खुली हवा और चमचमाती धूप में खुशी मनाऊँ।"

"क्या तुम शादीशुदा हो?" शू-सिऊ ने भोलेपन से पूछा। "तुम्हारा पति ज़रूर एक बहुत ही ख़ूबसूरत आदमी होगा।"

"मेरा पति?" चेङ चिन का चेहरा खिल उठा। "हाँ तुम ठीक कहती हो। वह लम्बा और ख़ूबसूरत था, संगीत में रुचि रखने वाला, कला-प्रेमी; और वह कोई साधारण प्रतिभा का धनी लेखक नहीं था। वह हमेशा ऊर्जा से ओत-प्रोत रहा करता था। हम दोनों ने साथ-साथ सोवियत संघ में पढ़ाई की थी। हम दोनों आपस में बहुत प्यार करते थे।"

"अब वह कहाँ है?" ताओ-चिङ बीच ही में पूछ पड़ी। "अगर कभी मौक़ा मिला, तो मैं उससे मिलना पसन्द करूँगी।"

"अब वह कहाँ है? ओह, दूर, बहुत ही दूर। तब से चार वर्ष हो गये, जब मैंने उसे आख़िरी बार देखा था, लेकिन अब हम उसके बारे में बातें न करें प्यारी। मैं तुम्हें एक दूसरे आदमी के बारे में बताना चाहती हूँ, जिससे जेल में मेरी मुलाक़ात हुई थी। क्या तुम सुनना चाहोगी? मैं अभी सो नहीं सकती और रात के इस वक़्त सन्तरी अपने दौरों से सुस्त पड़े हुए हैं। मुझे तो बताने में ख़ुशी ही होगी, अगर तुम लोगों को बहुत नींद न सता रही हो।" अपनी सारी शक्ति अपनी कहानी में झोंक कर वह देर रात तक अपनी नौजवान क़ैदी साथिनों से बातें करती रही। वह सिर्फ़ दम लेने या एक क्षण सुस्ताने के लिए ही रुकती थी। उसके अति-उत्साह में शब्द एक-दूसरे के ऊपर ढह पड़ते थे।

"ली वेई एक तेजस्वी, योग्य नौजवान था, जो मुसीबतों को झेलने में समर्थ था और अपनी पढ़ाई में अथक परिश्रम करता था। वह 1924-27 की महान क्रान्ति से पहले कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल हुआ। पार्टी ने उसे अध्ययन के लिए सोवियत संघ भेजा और वहाँ उसे एक लड़की मिली, जो उसकी पत्नी बनी – वे कॉमरेड थे। 1928 में महान क्रान्ति की विफलता के बाद वे साथ-साथ चीन वापस लौटे। वह शंघाई में भूमिगत पार्टी कार्य करने लगा, जबकि उसकी पत्नी शंघाई की एक कपड़ा मिल में मज़दूर बन गयी। पार्टी मुख्यालय, जहाँ ली वेई रहता था, एक धनी आदमी के आवास के रूप में जाना जाता था। एक बहुत मज़ेदार बात होती थी, जब उसकी पत्नी को उससे मिलना होता था। वह मिल में तो, जैसाकि तुम जानती हो, हमेशा एक ट्यूनिक और पतलून पहनती थी, लेकिन उस भवन में जाने से पहले उसे एक फ़ैशनेबल गाऊन पहनना पड़ता था। चूँकि उसके पास इतना समय नहीं होता था कि कहीं जाकर कपड़े बदल सके, अतः वह अपने गाऊन को एक छोटे से पैकेट में अपनी बाँह के नीचे छिपाकर ले आती थी और इसे जल्दी-जल्दी मुख्यालय के

क़रीब की गली में पहन लेती थी।"

"हे भगवान! कितनी घबराहट होती, अगर कोई ऐन उसी वक़्त चला आता – ख़ासतौर से अगर वह कोई मर्द होता!" शू-सिऊ का विस्मय और स्नेह विनोदपूर्ण रूप से हृदयस्पर्शी था।

"ओह शू-सिऊ, बीच में बाधा मत डालो!" ताओ-चिङ ने टोका। "मुझे विश्वास है कि वह अपने पति को इतना प्यार करती थी कि वह उससे मिलने के लिए कुछ भी कर सकती थी।" फिर उसने चेङ चिन से आग्रह किया, "हाँ, तो बताओ कि उनका क्या हुआ!"

चेङ चिन मुस्कुरायी :

"अधीर मत हो, मेरी प्यारी साथिनो। ज़रा मुझे याद करने दो... हाँ, तो यही हुआ।

"1930 में वे एक-एक करके गिरफ़्तार हो गये और सूचाऊ जेल में भेज दिये गये। दुश्मन यह जानकर कि ली वेई एक प्रमुख पार्टी-सदस्य था, जिसके तमाम सम्बन्ध-सूत्र थे, उसके गिरफ़्तार होते ही उस पर बुरी तरह पिल पड़े। उन्होंने उससे उसके गुप्त भेदों को उगलवा लेने के लिए उस पर हर प्रकार की धमकियों और रिश्वतों की आज़माइश कर डाली, लेकिन उनकी सभी धूर्तताओं और सभी अमानवीय यातनाओं के बावजूद ली वेई दृढ़ बना रहा। वह जानता था कि उसकी पत्नी भी उसी जेल में थी, लेकिन उसको इसमें न उलझाने की गरज से उसने अपनी भावनाओं पर नियन्त्रण रखा और उसे न पहचानने का स्वांग रचा। उसने स्वयं ही एक कड़ियल संघर्ष नहीं किया, बल्कि जेल में अपने कॉमरेडों के संघर्ष का नेतृत्व भी किया। जब दुश्मन को उसकी कार्रवाइयों का पता लगा, तो वे क्रोध से पागल हो उठे। उन्होंने उसको एक घटिया षड्यन्त्र का निशाना बनाया और उसे शंघाई ले गये, जहाँ उसे एक चुस्त पश्चिमी सूट पहनाकर एक कार में बैठाया गया और तब तक साथ-साथ चलते रहने को मजबूर किया गया, जब तक कि वे और अधिक पार्टी-सदस्यों को गिरफ़्तार करने जाते रहे। जब वे अपने गन्तव्य पर पहुँच जाते, तो वे उसे कार से बाहर खींचने की कोशिश करते, लेकिन वह एकदम पीछे की ओर लेट जाता और बाहर आने से इन्कार कर देता। वे उसे बर्बरतापूर्वक पीटते, लेकिन वह टस से मस न होता। इसके जवाब में वह आस-पास घिर आयी भीड़ चीख़-चीख़कर बताता, 'मैं एक क़ैदी हूँ। इन्होंने मुझे विदेशी कपड़े पहना रखा है, और एक बढ़िया कार में बैठा दिया है, लेकिन मेरा शरीर पीड़ादायी घावों से भरा हुआ है और वे चाहे मुझे जितना भी पीटें, मैं किसी भी तरह बाहर नहीं निकलूँगा। ये क्वोमिन्ताङ एजेण्ट भेड़ियों की तरह हैं।

"निराश होकर गुप्तचर विभाग के आदमियों को उसे वापस सूचाओ लाना पड़ा। जेल में वापस आने पर उसने अपने कॉमरेडों को बताया, 'दुश्मन मुझे ज़्यादा समय

तक ज़िन्दा नहीं रहने देगा। मुझे जल्दी ही तुम लोगों को सदा के लिए छोड़ जाना होगा।' बाक़ी बुरी तरह से व्यथित हो गये, लेकिन वह अध्ययन काम और अपनी सवेरे वाली कसरतें उतनी प्रसन्नता से करता रहा, जैसेकि वह पहले किया करता था। वह व्यक्तिगत सफ़ाई के प्रति बहुत सचेत था। और जब कभी उसे थोड़ा पानी मिल जाता, नहा लेता था। वह लम्बा और ख़ूबसूरत था, उसकी बड़ी-बड़ी आँखें थीं, और गहरे काले केश थे। उसकी भाषा आकर्षक थी, और वह जहाँ कहीं भी जाता प्रचार-कार्य करता। यहाँ तक कि कुछ जेलर भी उसके सम्मोहन में आ गये थे। कभी-कभी वह अपने मुग्धकारी मर्दाने स्वर में गीत गाता। उसके शानदान चरित्र ने उन जेलरों को जिनमें कुछ भी विवेक बचा हुआ था, क़ैदियों के साथ कम क्रूर बरताव करने पर विवश कर दिया।

"आख़िरकार वह दिन भी आ पहुँचा, जब उसे मरना था। जब सन्तरी उसको लेने के लिए आये, तो उसने अपने कपड़ों से धूल झाड़ी और सदा की भाँति शान्त रहते हुए, उसने अपनी कोठरी के आदमियों से कहा। 'कॉमरेड अब मुझे तुमसे विदा हो जाना है! लड़ते रहो – कभी हिम्मत मत हारना! हम जानते हैं कि अन्त में कम्युनिज़्म की विजय होगी!' कोठरी के दरवाज़े पर वह उनसे एक-एक करके हाथ मिलाते हुए, कहता रहा, 'मेरी शुभकामना है कि तुम सभी विजयी हो!' उसके बाद, अपना सिर ऊँचा किये वह मृत्युस्थल की ओर चल पड़ा... जेल की सलाख़ों के पीछे से उसके साथी चिन्तातुर नज़रों से उसे जाते देखते रहे, हर कोई ऐसा महसूस कर रहा था, मानो स्वयं उसी की छाती में छुरा भोंक दिया गया हो। तब प्रखर और उच्च स्वर से 'इण्टरनेशनल' गीत गूँज उठा...कितने अनुप्राणित करने वाले अन्दाज़ में उसने गाया था। फिर वह अपने स्वरोत्कर्ष में चिल्लाया, 'चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ज़िन्दाबाद!' आवाज़ गोलियों की गड़गड़ाहट में डूब गयी... तुरन्त सभी क़ैदी, जिसमें साधारण क़ैदी भी शामिल थे और बेशक उसकी पत्नी भी 'इण्टरनेशनल' गीत के साथ भावविभोर हो उठे। उनमें से कइयों की आँखों में आँसू उमड़ आये थे..."

चेङ चिन का स्वर शुष्क था। प्रकटतः वह स्वयं आँसुओं के उफान में बोल रही थी।

"ओह, अब आगे मत कहो बहन! मैं समझ गयी!" ताओ-चिङ उस अन्धकार में चेङ चिन का चेहरा सहलाते हुए रो उठी और अपने गालों से होकर बह रहे आँसुओं की धार को पोंछने लगी।

लेकिन शू-सिऊ की उत्कण्ठा जागृत हो चली थी।

"बहन चेङ, ली वेई की पत्नी का क्या हुआ?" उसने पूछा। 'क्या वह विदीर्ण-हृदया नहीं हो गयी, जब वह मरा?"

"अरे चुप भी हो शू-सिऊ! क्या तुम समझती नहीं?" ताओ-चिङ ने धीरे से जताया, वह डर रही थी कि इससे चेङचिन और भी विचलित हो उठेगी।

"तुम्हारे कहने का मतलब क्या है?" शू-सिऊ ने हठ किया। "मेरी तो समझ में नहीं आ रहा है!" एक लम्बी ख़ामोशी के बाद चेङ चिन ने गम्भीरतापूर्वक मुश्किल से सुने जा सकने वाले स्वर में उत्तर दिया।

"क्या तुमने अब भी नहीं समझा प्यारी? आख़िरकार ताओ-चिङ तुमसे अधिक अनुभवी है न...ली वेई ही मेरा पति था। हम चार वर्ष पहले ही एक-दूसरे से बिछुड़ गये।"

कोठरी एक गहरी ख़ामोशी में डूब गयी। ऐसा लगा, जैसे तीनों क़ैदी सो गये हो, लेकिन यह ख़ामोशी अचानक रुदन के तूफ़ान में डूब गयी – यह शू-सिऊ की सिसकी थी, जो अब फिर उतनी ही उग्र हो उठी थी जितनी कि तब हुई थी, जब ताओ-चिङ पहले-पहल इस कोठरी में लाकर फेंकी गयी थी, हालाँकि इस बार वह अपनी माँ के लिए नहीं रो रही थी।

"प्यारी बहन चेङ!" सिसकियों के बीच उसका स्वर लड़खड़ाया। "मैं तुम्हारे प्रति बहुत आभारी हूँ। तुमने मुझे यह जानना सिखा दिया कि जीवन क्या है, सच्चाई का मतलब क्या है।"

ऊपर की ओर एक सन्तरी अपने कन्धे पर रायफ़ल लिये दौड़ा। वह अपने जेलरों के सर्वाधिक बर्बर सन्तरियों में से एक था, और उसने अपनी बन्दूक़ के कुन्दे से लोहे के दरवाज़े पर आघात करते हुए गालियों की झड़ी लगा दी।

"कुतियो! क्या तुम लोग विद्रोह शुरू करना चाहती हो? रात की इस घड़ी में इस तरह गुलगपाड़ा मचाने का क्या मतलब है? क्या तुम लोग मरना चाहती हो?"

जैसे ही उसकी कर्कश डाँट-डपट ख़त्म हुई, ताओ-चिङ ने शू-सिऊ का हाथ थाम लिया और कहा :

"समझ रही हो शू-सिऊ? हम क़ैद नहीं है हम एक मार्क्सवादी-लेनिनवादी विश्वविद्यालय में कोर्स कर रही हैं!"

——:o:——

अध्याय 20

ताओ-चिङ दर्द के कारण उस रात सो न सकी। उसकी टाँगों पर मवादभरे घाव सूजकर छरछरा रहे थे, उसके शरीर का हाड़-हाड़ दर्द कर रहा था। वह लेटे-लेटे चेङ चिन द्वारा उनको बयान की गयी कहानी और उत्साहवर्द्धक शब्दों पर सोच रही थी। ली वेई जो एक सच्चा बोल्शेविक था, अन्त तक बिना झुके लड़ता रहा। यद्यपि दुश्मन ने उससे दोबारा पूछताछ नहीं की थी, फिर भी? उसने महसूस किया कि उसे कोर्ट में, उनके जूझने के लिए तैयार रहना होगा। अब वह मृत्यु के बारे में नहीं सोचती थी। "हमें जीने के लिए संघर्ष करना है तब तक ज़िन्दा रहना है, जब तक

कि चीन में कम्युनिज़्म नहीं ला दिया जाता।" चेङ चिन की कहानी एक सशक्त प्रेरणा-स्रोत थी, जिसने उसे ख़ुश और खिन्न दोनों ही कर दिया था।

क्या तुम अभी तक सोयी नहीं ताओ-चिङ?" आधी रात कब की बीत चुकी थी और कोठरी की छोटी खिड़की से होकर चाँदनी अन्दर आ रही थी। चेङ चिन ताओ-चिङ की अनियमित श्वास-क्रिया से बता सकती थी कि वह अब भी जाग रही थी।

"मैं सोचती रही हूँ कि यदि प्रतिक्रियावादियों ने मुझसे फिर पूछताछ की, तो मुझे क्या कहना चाहिए। क्या तुम मुझे कुछ सलाह दोगी, बहन? मेरा अनुभव बहुत थोड़ा है।"

"क्या उनके हाथों में तुम्हारे विरुद्ध कोई सबूत है? क्या तुम्हारा पार्टी-सदस्यों के साथ कोई ख़ास सम्बन्ध है? अगर तुमको मेरे ऊपर विश्वास हो, तो सच-सच बताओ।"

ताओ-चिङ इस तपेतपाये क्रान्तिकारी में पूरा यक़ीन करती हुई स्पष्टतापूर्वक बोली:

"नहीं, मेरा पार्टी-सदस्यों से कोई सम्बन्ध नहीं है और उनके पास मेरे विरुद्ध कोई सबूत नहीं है।"

"यह अच्छा है, ताओ-चिङ। जब मैं जीवित हूँ, मैं वह सबकुछ तुम्हारी ख़ातिर करूँगी, जो कर सकती हूँ। वे तुम पर और शू-सिऊ पर अधिक ध्यान देते नहीं मालूम पड़ते, अतः तुम लोग ज़रूर किसी न किसी दिन छोड़ दी जाओगी। इसके लिए तुम्हें ज़रूर इस बात पर ज़ोर देना है कि तुम पार्टी-सदस्य नहीं हो, बल्कि एक बेरोज़गार साधारण लड़की हो। अगर वे तुमको यातना दें, तो सिर्फ़ अपना दाँत पीसते रहना और बरदाश्त करना...लेकिन मैं नहीं समझती कि वे यह जानकर कि तुम्हें कितनी बुरी तरह से पिछली बार चोट पहुँचायी गयी थी, फिर तुमको यातना देंगे। असली बात है दुश्मन के आगे न झुकना – हमें बुरे से बुरे अंजाम तक संघर्ष करते रहना चाहिए। तुम पूरा यक़ीन रख सकती हो कि अन्तिम विजय हमारी होगी। तुम पार्टी में शामिल होने के लिए चिन्तित हो, है न? अगर तुम मेरे बताये – अनुसार करो, तो तुम एक बढ़िया कम्युनिस्ट और मानवजाति की सुख-शान्ति के लिए एक शानदार अग्रणी संघर्षकर्मी बन जाओगी।" चेङ चिन यह सब बिना किसी विराम के कह गयी, लेकिन अब उसकी दुर्बलता की दशा में खाँसी के एक दौरे ने उसे इतना तोड़ डाला कि वह अपनी बात आगे जारी न रख सकी।

"कॉमरेड चेङ!" ताओ-चिङ ने उसके नर्म, कृश हाथ को अपने हाथ में लेकर काँपते स्वर में कहा। "मैं इस रात को और तुम्हारे उत्साहवर्द्धन को कभी नहीं भूलूँगी। मैं तुम्हारे उदाहरण का अनुसरण करने जा रही हूँ। मैं एक कम्युनिस्ट बनना सीखूँगी और अपनी अन्तिम साँस तक संघर्ष करती रहूँगी। हाँ, मैं अपनी पूरी ताक़त

से उस शानदार दिन के लिए काम करने जा रही हूँ, जब मैं एक पार्टी-सदस्य बन जाऊँगी और भले ही मैं मर जाऊँ, फिर भी मैं चाहूँगी कि पार्टी मुझे मरने के बाद भी स्वीकार कर ले..."

"प्रिय कॉमरेड, मैं बहुत खुश हूँ!" चेङ चिन ने उस अँधेरे में उसके हाथों को कसकर पकड़ लिया और ताओ-चिङ ने उसकी निष्कपट और शालीन दोस्ती से द्रवित होकर महसूस किया कि उसके गालों पर से आँसू ढुलक रहे थे।

ताओ-चिङ, कुछ बात है जो मैं तुमसे बताना चाहुँगी..." चेङ चिन पहले जैसी स्थिरचित बनने के लिए कुछ रुकी, "जब मेरी आख़िरी तहक़ीक़ात की गयी, तभी से मैं जान चुकी हूँ कि वे मुझे ज़्यादा समय तक ज़िन्दा नहीं छोडेंगे... उनको यक़ीन है कि मुझे यहाँ केन्द्रीय कमेटी द्वारा भेजा गया था। इसलिए मैं तैयारी कर चुकी हूँ... "

एक झपकी के साथ ताओ-चिङ ने महसूस किया कि उसका दिल धक-से कर गया। उसने चेङ चिन का हाथ कसकर पकड़ लिया और चिन्तातुर होकर पूछा, "तुम क्या कहना चाहती हो बहन?"

शू-सिऊ जो जाग चुकी थी और जिसने प्रकटतः चेङ चिन के आख़िरी शब्दों को सुन लिया था, भय से चीख़ पड़ी :

"बहन चेङ! क्या था जो तुम कह रही थी?"

"क्यों, कुछ भी तो नहीं" यह बहानेबाज़ी का जवाब था। "ताओ-चिङ और मैं सिर्फ़ गप-शप कर रही थीं। क्योंकि हम सो नहीं सकी थीं। हाँ तो ताओ-चिङ, तुम्हारा नाम इतना विचित्र क्यों है? यह तो किसी मठवासिनी का नाम लगता है।"

"मेरा बाप एक बौद्ध था जिसने एक बार एक बौद्ध-भिक्षु बनने का इरादा किया था, लेकिन अपनी रखैल से अपना पिण्ड न छुड़ा सका..." ताओ-चिङ ने चोरी-चोरी अपने आँसू पोंछ दिये। "यही कारण है कि उसने मेरा इतना घृणास्पद नाम (ताओ-चिङ का अक्षरशः अनुवाद पवित्र शान्ति है) रख दिया।"

शू-सिऊ ने दबी हँसी हँस दी और बोली।

"ओह, मैं तुमको बता दूँ। मैंने फिर अपनी माँ का सपना देखा है।" वह तुष्टभाव से बुदबुदायी मानो अब भी सपना देख रही हो, मैंने अपने छोटे भाइयों को भी देखा। जब मैं जेल से छूटकर घर पहुँची, तो वे ख़ुशी से मेरे इर्द-गिर्द जमा हो गये थे..."

चेङ चिन अपने आँसू पोंछने के लिए बायें करवट होकर, ताओ-चिङ की तरफ़ हो गयी और फिर रज़ाई में दायें करवट होकर शू-सिऊ से लिपट गयी। इसके बाद वह निश्चल भाव से बोली :

"अब बहुत रात बीत चुकी है। अब हम सब कोशिश करके कुछ सो ले। मुझे डर है कि अगर सन्तरी हमें बतियाते देख लेंगे, तो मुसीबत खड़ी हो जायेगी।"

अगली सुबह सन्तरी चेङ चिन को अदालती कार्यवाही के लिए बाहर ले जा। आये। अब भी बिस्तर पर ही पड़े-पड़े उसने कहा, "बस एक क्षण! पहले मुझे अपन बालों में कंघी कर लेने दो!"

जब वह अपने लम्बे रेशमी बालों को सँवार चुकी, तो वे उसे लेकर चले गये।

कुछ ही मिनटों में वह फिर वापस ला दी गयी। वह कुछ समय तक निश्चल पड़ी रही और इतनी थक चुकी थी कि बोल नहीं पा रही थी। जैसे ही वह कुछ ठीक-ठाक हुई दोनों लड़कियाँ गहरे लगाव के साथ लगभग एक ही साथ पूछ पड़ी :

"उन्होंने क्या कहा, बहन? तुम्हारा केस कैसा जा रहा है?"

"ठीक है, कुछ ज़्यादा नहीं पूछा कहा, उन्होंने सिर्फ़ इतना पूछा कि क्या मैं पहले से बेहतर हूँ। अन्यथा जैसाकि उन्होंने कहा कि वे मुझे किसी दूसरी जगह भेज देते।"

इस जवाब ने जहाँ शू-सिऊ को सन्तुष्ट किया, ताओ-चिङ की चिन्ता को सिर्फ़ और बढ़ाया ही। लेकिन उसके लिए अपनी चिन्ता को शब्दों में व्यक्त करना कठिन था।

चेङ चिन पूरी सुबह उन्हें एक गीत बताती रही, जिसको शंघाई, हाङ चाओ और सूचाओ के क़ैदी 1930 से गाते आ रहे थे। उसने एक शुष्क स्वर में गाया :

बन्दी ओ मुद्दत के बन्दी,
हमने कोई ख़ता न की है!
हमें झपट लिया गया मैदान-ए-जंग से, वर्ष-संघर्ष के मोर्चे से;
हम क़ैदी नहीं हैं, बन्दी,
जिनकी रगों में अब भी गर्म ख़ून उबलता,
बावजूद क्रूर यातनाओं के।
लौह-सलाख़ें, ज़ंजीरें और ऊँची जेल-दीवारें,
छीन सकती हैं, हमारी आज़ादी,
पर छीन सकें ना हमसे, इन्क़लाबी जोश हमारा!
बन्दी, ओ मुद्दत के बन्दी!,
कई शहीद हुए मक़सद से,
पर लड़ते जाते जो हैं ज़िन्दा,
सड़ा जेल का खाना और कीट-पतंगे
चौपट कर सकते हैं हमारी सेहत
पर नहीं तोड़ सकते हैं हमारी हिम्मत!
बन्दी, ओ मुद्दत के बन्दी!
असफलता ही सफलता की जननी है,

अन्तिम जीत हमारी होगी।
हम फ़ौलाद बनाते खुद को; और तपते जाते
लड़ते रहने को ख़ातिर, बहादुरी से!
वह दिन तो आयेगा ही
जब लाल पताका सूरज में लहरायेंगी
धरती के ज़र्रे-ज़र्रे पर!

गीत लम्बा था और चेङ चिन इतनी कमज़ोर और थकी हुई थी कि वह पहले और आख़िरी बन्द से अधिक नहीं बता सकी। इस तरह उन तीनों ने एक खुशीभरी सुबह बितायी।

उस दिन दोपहर के बाद वे बेहद थक जाने की वजह से सो गयीं। ताओ-चिङ ने जिसे एक स्नेह भरे हाथ के स्पर्श ने जगा दिया था, चेङ चिन को फुसफुसाते हुए सुना :

"कॉमरेड लिन ताओ-चिङ, कुछ बातें ऐसी हैं जिनको मैं तुम्हें ज़रूर बता देना चाहती हूँ। मैं कल तक ज़िन्दा नहीं रह सकूँगी... किसी दिन अगर तुमको अवसर मिले, तो कृपा करके मेरी तरफ़ से, इस सन्देश को पार्टी तक पहुँचा देना। मेरा असली नाम लिन हुङ है। मैं पिछली अक्टूबर में शंघाई से यहाँ पर भेजी गयी थी। दुर्भाग्य से एक ग़द्दार ने मेरे ख़िलाफ़ मुख़बिरी कर दी और अपना काम शुरू करने के तुरन्त बाद ही मैं गिरफ़्तार कर ली गयी। फिर भी मेरा विवेक चुस्त-दुरुस्त है। मैंने पार्टी की मर्यादा को क्षति नहीं पहुँचायी है, बल्कि इंच-इंच पर संघर्ष किया है... मुझे उम्मीद है कि पार्टी हमारी लाल सेना को सौ गुना विस्तृत करेगी और जापान के ख़िलाफ़ अपने प्रतिरोध को मज़बूत करेगी। मैं जानती हूँ कि तुम कड़ा से कड़ा संघर्ष करती रहो और एक तेज़तर्रार बोल्शेविक बनो..." उस अँधेरी कोठरी में लिन हुङ की प्यार भरी आँखें एक ऐसी आभा से दमक उठीं जिससे यह नहीं लगता था कि वह अपनी मौत के बारे में बता रही है, बल्कि ऐसा लगता था, जैसा वह किसी निश्चित खुशी के बार में एक प्रेरणादायी, आह्लादकारी भविष्य के बारे में बता रही है। दम लेकर एक क्षण सुस्ताने के लिए उसने अपनी आँखें बन्द कर लीं, फिर ताओ-चिङ की ओर उत्सुकता भरी नज़रों में देखते हुए पूछा, "क्या तुम मेरा सन्देश पार्टी तक पहुँचाने का वादा करोगी?"

आँसू उमड़ आने के कारण बोल सकने में असमर्थ ताओ-चिङ ने स्वीकृति में ज़ोर से सिर हिलाया और लिन हुङ की सफ़ेद उँगलियों को कसकर थाम लेने के लिए उसके क़रीब जा पहुँची। उसने दृढ़तापूर्वक देर तक उस प्यार-भरे चेहरे को देखा, जो संगमरमर में तराशकर गढ़ा प्रतीत हो रहा था... ऐसा लगा, मानो उसकी हृदय की धड़कन रुक गयी। उसे यह यक़ीन करना लगभग असम्भव लगा कि कोई इतना ज़िन्दादिली से भी मर सकता है।

उस रात सोने से पहले लिन हुङ ने एक गुलाबी रंग का कार्डिगन निकाला और इसे ताओ-चिङ को दे दिया।

"तुम बहुत सेहतमन्द नहीं हो ताओ-चिङ। कृपया इसे पहन लो।" अपने तकिये की बग़ल से उसने एक आकर्षक प्लास्टिक की कन्धी उठायी, जिसे वह शंघाई से लायी थी और मुस्कुराती हुई शू-सिऊ से कहा, "क्या तुमको यह कंघी पसन्द है प्यारी? मैं चाहती हूँ कि तुम इसे निशानी के तौर पर रख लो।"

इस समय तक शू-सिऊ को भी अनुमान हो चुका था कि कुछ गड़बड़ थी, तथा वह और ताओ-चिङ साथ-साथ रो पड़ीं। रात अँधेरी और सन्तापकारी थी, मानो एक तूफ़ान जन्म ले रहा हो। घण्टे पर घण्टे तकलीफ़ में खिंचते चले गये।

आधी रात के क़रीब लोहे का दरवाज़ा खुला। लिन हुङ को उठाकर लकड़ी के दरवाज़े तक ले जाया गया। चूँकि उसे ले जाया जा रहा था, इसलिए उसने अपने दोनों हाथ अपने दोस्तों की ओर फैला दिये, हालाँकि वे उन तक नहीं पहुँच सकते थे और ज़ोशीले स्वर में चिल्लायी, "अलविदा मेरी प्यारी साथिनो! अपना अच्छी तरह ख़याल रखना।"

लिन-हुङ को अभी कालकोठरी से बाहर ले नहीं जाया गया कि अँधेरी जेल की छत पर नारों पर तूफ़ान गड़गड़ा उठा :

"क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादी मुर्दाबाद।"

"चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ज़िन्दाबाद।"

"कम्युनिस्ट अजेय है।"

"कॉमरेडो अपना बदला लो।"

यह लिन-हुङ थी जिसने इन नारों का नेतृत्व किया था, लेकिन उसके साथ ज़्यादा से ज़्यादा आवाज़ें जुड़ती गयीं, यहाँ तक कि सैकड़ों क़ैदी नारे लगाने लगे थे। उनकी निर्भीक उत्तेजित चीखें आसमान को गुंजायमान कर रही थी।

अपनी खाट पर पड़े-पड़े उस गुलाबी कार्डिगन को अपनी छाती से चिपटाये, ताओ-चिङ अपनी सम्पूर्ण बची-खुची ताक़त के साथ नारे लगाने में शरीक़ हो गयी, हालाँकि, उसका क्षीण स्वर मुश्किल से ही सुना जा सकता था।

शू-सिऊ नारेबाज़ी में शामिल नहीं हुई। एक बच्ची की भाँति, जिसकी माँ छिन गयी हो, वह अपनी खाट से कूद पड़ी और बाहर ले जायी जा रही लिन-हुङ के पीछे दौड़ पड़ी।

"बहन चेङ! बहन चेङ! हमें छोड़कर मत जाओ... तुम्हें मरना नहीं है। तुम मरने लायक़ नहीं हो।"

एक निर्दय हाथ ने उसके सिर को दीवार से टकरा दिया और उसके पेट में एक बर्बर लात ने उसे बेहोश कर दिया। उसका चेहरा आँसुओं से नहाया हुआ था। उस रात गोली दगने की कोई आवाज़ नहीं हुई। जब से मिलिटरी पुलिस की तीसरी

रेजीमेण्ट का कमाण्डर, च्याङ सियाओ-सिएन एक आरक्षी कुत्ते के तौर पर च्याङ काई-शेक द्वारा पेइपिङ भेजा गया था, तभी से कई कम्युनिस्ट और नौजवान देशभक्त हर रोज़ गिरफ़्तार और शूट किये जा रहे थे। अन्य कइयों को गुप्त रूप से क़त्ल कर दिया गया था। उस रात लिन हुङ और दस अन्य पक्के क्रान्तिकारी ज़िन्दा दफ़ना दिये गये।

ताओ-चिङ और शू-सिऊ, अब अकेले उस मनहूस कोठरी में एक-दूसरे का हाथ पकड़ने, और अपनी दुर्बल उँगलियों को एक-दूसरे के साथ कसकर जकड़ लेने के लिए एक मातृहीन शिशु-युगल की भाँति एक-दूसरे के क़रीब चिपटते हुए, अँधेरे में टटोलने लगी।

ताओ-चिङ की छाती से चिपटी शू-सिऊ पूरी तरह से हताश होकर लिन हुङ के लिए और जीवन को समझने से पहले ही मिली अपनी असफलता पर फूट-फूटकर रोने लगी। हालाँकि अभी वह सिर्फ़ सोलह वर्ष की थी, फिर भी वह अपने अतीत की अज्ञानता पर लज्जित थी।

"शू-सिऊ, प्यारी ऐसा मत करो।" स्वयं अपनी आँखों में आँसू भरे ताओ-चिङ ने उस कमसिन लड़की के बालों को लेटे-लेटे ही सहलाया। "आज की रात को याद रखना। आज की रात को कभी मत भूलना। बहन चेङ की हत्या को भी कभी मत भूलना।"

लिन हुङ की मौत के बाद शू-सिऊ की देखभाल की ज़िम्मेदारी स्वाभाविक तौर पर ताओ-चिङ पर आ पड़ी, जिसने उसे एक मातृवत और कॉमरेडाना स्नेह से महीनेभर पढ़ाया और उसकी देख-रेख की।

लेकिन ताओ-चिङ की खुद की सेहत गिरती जा रही थी।

सारा दिन वह एक नम, गन्दी खाट पर अर्द्धचेतन अवस्था में पड़ी रहती थी। लिन हुङ के मरने के बाद ख़ून की कमी, ख़राब खाना और उसके मवादभरे घावों ने उसे लगभग मरणासन्न ही कर दिया। सौभाग्य से वार्डरक्षिका इतनी स्नेहिल थी कि वह उसके लिए नूडल या अण्डे का शोरबा समय-समय पर ला देती और इलाज के लिए डॉक्टर बुला लायी; साथ ही शू-सिऊ की सुहृद स्नेहिल सेवा-टहल ने अन्ततः उसे जिलाये रखने में सफलता पायी।

लिन हुङ की मौत के पाँच दिन बाद एक दूसरी बीमार क़ैदी उनकी कोठरी में लायी गयी। वह पांडुर वर्ण की मोटी, गोल चेहरे वाली लगभग तीस वर्ष की एक महिला थी, जिसकी माँसपेशियाँ पिलपिली और आवाज़ कर्कश थी। अभी वह बैठी नहीं कि शू-सिऊ से एक दोस्ताना लहजे में बोल पड़ी, जो उसे उत्सुकतापूर्वक देख रही थी।

"अभी तो तुमने अपनी किशोरावस्था भी नहीं पार की है, दुलारी बिटिया। बड़ी निठुराई की है उन्होंने, तुम जैसी बच्ची को क़ैद करके..."

अपनी आँखों को थोड़ा खोलकर ताओ-चिङ ने शू-सिऊ को उत्कण्ठित होकर उत्तर देते हुए देखा।

"मैं सोलह वर्ष की हूँ। तुम यहाँ क्यों आयी बहन?"

"क्रान्तिकारी काम की वजह से। और तुम क्या कम्युनिस्ट हो?" यही सवाल करके वह ताओ-चिङ की ओर मुड़ी।

ताओ-चिङ को कुछ खटका हुआ क्योंकि यह औरत एक क्रान्तिकारी की भाँति नहीं दिखती थी। फिर भी कोई साधारण अपराधी अभी तक यहाँ भेजा नहीं गया था। उसने बिना कोई उत्तर दिये ठण्डेपन से अपना सिर हिला दिया, लेकिन शू-सिऊ चट से उसकी तरफ़ से बोल पड़ी।

"ताओ-चिङ को यहाँ क्रूर यातनाएँ दी गयी हैं। कुछ दिन पहले हमारे साथ एक बहुत अच्छी औरत थी – चेङ चिन। लेकिन उन्होंने उसे मार डाला। ताओ-चिङ तो इतनी विचलित हो गयी कि दुबली हो चली है..."

अपने भोलेपन में वह लड़की और आगे भी बक गयी होती, लेकिन ताओ-चिङ ने खाँस दिया और बुदबुदाकर कहा, "शू-सिऊ क्या तुम कृपा करके मुझे थोड़ा पानी ला दोगी?"

लड़की उठ पड़ी और एक कटावदार इनैमल मग से पानी डाल लाने के लिए अपनी खाट से नीचे कूद गयी। जैसे ही ताओ-चिङ प्याले पर झुकी, उसने अपनी दोस्त की उँगलियों को मरोड़ा और उस पर एक चेतावनी भरी नज़र डाली। शू-सिऊ लजा गयी और समझदारीपूर्वक सहमति में सिर हिलाया।

नवागन्तुका शू-सिऊ से सवाल करती रही, कारण कि वह अनाड़ी और अनपढ़ थी।

"यह कोठरी बुरी नहीं है दुलारी बिटिया, यह सुन्दर और शान्त है।" उसने एक सिगरेट जलायी और अपने सिर को पीछे की ओर झटककर नीची-अँधेरी छत की ओर उठते हुए धुएँ के छल्ले को निहारने लगी। फिर उसने एक मुस्कुराहट के साथ शू-सिऊ को बताया, "मैं इस कम्पाउण्ड के पूर्वी छोर पर स्थित महिला वार्ड से यहाँ आयी हूँ। मैं और अधिक भूखों नहीं मर सकती थी। तुमको पता है कि वे तीन दिनों से भूख-हडताल पर हैं?"

ताओ-चिङ इस ख़बर पर चौंक उठी और पूछे बिना न रह सकी। "भूख हड़ताल? कहाँ... अरे, हाँ हमने भी इसे सुना था। वे इतने मूर्ख कैसे हो सकते हैं?"

"तुम ठीक कहती हो, वे पूरी तरह से मूर्ख हैं।" ताओ-चिङ के प्रत्युत्तर से प्रसन्न होकर वह औरत उसकी ओर मुड़ गयी। "यहाँ तक कि जो लाल क्रान्तिकारी नहीं हैं, वे भी कम्युनिस्टों की राह पर चल रहे हैं। उन्होंने क्योमिन्ताङ की गुप्त गिरफ़्तारियों, गुप्त मृत्युदण्ड की कार्रवाइयों, जापान का प्रतिरोध करने में विफलता, देश के साथ विश्वासघात और इस तरह की तमाम बातों को लेकर विरोध प्रक[illegible]

करने के लिए भारी उपद्रव मचा रखा है... यहाँ तो काफ़ी शान्ति है। ख़ैर, उन्हें मुसीबत पैदा करने दो, अगर वे यही चाहते हैं।" वह शू-सिऊ की तरफ़ सवाल करने के लिए मुड़ी, "क्या किसी ने तुमको कोई सन्देश दिया था दुलारी बिटिया? मुझे बताया गया था कि तीन या चार सौ क़ैदियों ने गुप्त सूचनाओं का आदान-प्रदान करने के बाद यह भूख हड़ताल शुरू की थी।"

ताओ-चिङ के मन की शंकाएँ उभर गयीं। लेकिन अभी वह यह सोचे कि कैसे जवाब दे, इसके पहले ही शू-सिऊ बोल पड़ी :

"तो यह बात है। मैं तो अभी यही पूछने जा रही थी कि किसने यह हड़ताल प्रस्तावित की थी? हमको किसी ने कोई सन्देश नहीं भेजा। मुझे आश्चर्य है कि क्यों नहीं भेजा? यह तो बहुत ही बुरा है।"

"अरे मूर्ख बच्ची! लाल क्रान्तिकारियों ने तुम्हें इसलिए जानकारी नहीं होने दी होगी कि वे तुम पर विश्वास नहीं करते। चलो, हम लोग अपनी ख़ुराक दो दिन तक मज़े से खा सकती हैं। उन्होंने मुझे भूखों रख दिया, कारण कि मैं भी उसी कोठरी में थी, लेकिन मैं यह बरदाश्त न कर सकी।" भूख ने क़ैदी का स्वांग रचे इस जासूस को अपना असली रंग दिखा देने के लिए मजबूर कर दिया था।

शू-सिऊ की मुखमुद्रा अचानक बदल गयी। अपनी आँखें उस पेटू जासूस पर गड़ाकर वह उस पर थूकने लगी।

"शर्म की बात है! कितनी घृणास्पद और घटिया बात है। लेकिन यहाँ आने से तुमको कुछ भी नहीं मिलेगा कारण कि हम भी भूख हड़ताल में शामिल होने जा रही हैं।"

वह औरत अवाक रह गयी।

ताओ-चिङ शू-सिऊ के संवेदनशील नफ़रत भरे चेहरे को निहारकर मन ही मन फीकेपन से मुस्कुरायी, और थोड़ा रुककर उस महिला जासूस से बोली।

"हड़ताल के बारे में बताने के लिए तुमको शुक्रिया। अगर तुम नहीं बताती, तो हम लोग औरों का साथ न दे पाते।" उसने दृढ़तापूर्वक शू-सिऊ से, लगभग आदेशात्मक लहज़े में कहा, "अब हम और इन्तज़ार न करें प्यारी। अभी से हम खाना छोड़ देंगे।"

शू-सिऊ ने स्वीकृति में सिर हिलाया और उसने मन्द स्वर में यह जवाब दिया, "तुम जो कहोगी मैं वही करूँगी ताओ-चिङ। अब जबकि बहन चेङ मर चुकी है, मैं तुम्हारे नेतृत्व में काम करूँगी...ठीक है न?"

महिला जासूस ने उनको अविश्वासपूर्वक घूरकर देखा। वह उनके द्वारा कही गयी हरेक बात को कान लगाकर सुनती रही और उनकी हरेक हरक़त की निगरानी करती रही। जल्द ही उसकी सिगरेट ने उसकी नर्म उँगलियाँ जला दी, और तब दर्द से चीख़कर उसने इसे फेंक दिया। एक तिरस्कार भरी हँसी हँसती हुई, अपनी आँखें

छत पर टिकाकर,उसने कड़ुवाहट से भरकर कहा :

"मैं यहाँ नहीं आयी होती, अगर वार्डरक्षिका ने मुझे यह नहीं बताया होता कि तुम समझदार लोग हो जो हड़ताल में शामिल होने से इन्कार कर चुकी हो। अब मुझे पता चल गया कि तुम दोनों भी लाल क्रान्तिकारी हो। और मैंने तो तुम्हारी रिहाई के लिए ऊपर के अधिकारियों से कहने की सोच रखी थी!... ताज्जुब है उस झूठी वार्डरक्षिका पर।"

सच्चाई यह थी कि वार्डरक्षिका लिऊ, जो लिन हुङ के प्रभाव में आ चुकी थी, डर रही थी कि ताओ-चिङ और शू-सिऊ जो बेहद कमज़ोर थीं, कहीं इस आम भूख-हड़ताल में न शामिल हो जायें और इसीलिए जानबूझकर इस ख़बर को उनसे छिपाये रखा और इसके साथ ही उसने जेलाधिकारियों को भी बता दिया था कि वे हड़ताल के ख़िलाफ़ थीं। वह उनके लिए खाना लाने गयी थी और वह भी बढ़िया खाना, जो वह पा सकती थी, चूँकि दोनों लड़कियाँ अपने बिस्तर तक ही सिमटकर रह गयी थीं, इसलिए उनको कुछ भी पता न था कि बाहर क्या चल रहा है।

न तो ताओ-चिङ और न ही शू-सिऊ ने आगे कुछ कहा, लेकिन जब लंच आ गया, तब भी वे वैसे ही पड़ी रहीं और कुछ न खाया। जासूस ने उन्हें खाने के लिए फुसलाने की दोबारा कोशिश की। वह उन्हें कमज़ोर मानकर यह समझ बैठी थी कि उन्हें आसानी से डिगाया जा सकता है, यही कारण था उसने शुरू से ही अपना असली रंग खोलना चालू कर दिया था। जो खाना वार्डरक्षिका लायी थी, वह काफ़ी लज़ीज़ था, जिसमें सॉसेज, उबला हुआ चावल और एक ज़ायकेदार मछली थी लेकिन दोनों लड़कियों में से किसी ने इसकी ओर ताका तक नहीं। लेकिन उस जासूस ने ख़ूब चाव से खाया और ख़ुशामदी अन्दाज़ में शू-सिऊ की ओर मुस्कुरायी।

"तुम तो सिर्फ़ सोलह साल की हो दुलारी बिटिया, तब यह मूर्खता क्यों? अगर तुम्हारी माँ को पता होता कि तुम उपवास कर रही हो, तो वह कितना बुरा मानती। ज़रा इसे देखो तो। आओ कुछ खा लो और जब तुम खा लोगी तो मैं तुम्हें तुम्हारे घर भिजवा दूँगी।"

शू-सिऊ ने ताओ-चिङ की ओर देखा और स्थिरभाव से अपनी आँखें मिलायीं। दोनों में से कोई बोली नहीं। यह समझकर कि उसे अपना शिकार मिल गया था, उस औरत ने, जो छककर खा चुकी थी, रज़ाई को अपने सिर पर ओढ़ लिया और सो गयी। जब वार्डरक्षिका रात का खाना लेकर आयी, तो उसने दोनों लड़कियों से खाने का आग्रह किया, लेकिन वे नम्रतापूर्वक इन्कार कर गयीं। दोबारा भरपेट खाकर वह जासूस फिर सो गयी वह इतने ज़ोर-ज़ोर से खर्राटे ले रही थी कि ताओ-चिङ को कोई चैन नहीं मिल सका। आधी रात के क़रीब उसे हल्की हल्की खाँसी आने लगी। और तुरन्त शू-सिऊ ने पूछने के लिए अपना सिर उठाया।

"क्या तुम अब भी जाग रही हो ताओ-चिङ? क्या तुम्हें भूख महसूस हो रही है?"

"नहीं शू-सिऊ!" ताओ-चिङ ने काँपते स्वर में उत्तर दिया। "लेकिन बिना खाये रहना आसान नहीं है, प्यारी क्या तुम सोचती हो कि तुम इस प्रण पर टिकी रह सकती हो?"

शू-सिऊ के प्रत्युत्तर से पहले कुछ मिनट गुज़र गये।

"मैं समझती हूँ कि मैं रह सकती हूँ। जब-तब मुझे अपनी आँखों के सामने बहन चेङ खड़ी दिखायी देने लगती है। मेरे बारे में फ़िक्र मत करो ताओ-चिङ। मैं तक़रीबन उतनी बुरी हालत में नहीं हूँ जितनी कि तुम हो। मुझे तो तुम्हारी दशा देखकर चिन्ता हो जाती है।"

"मैं एकदम ठीक-ठाक हूँ। मैं अभी जवान हूँ और चंगी होने की दिशा में अच्छी प्रगति कर रही हूँ।" ताओ-चिङ का रक्तप्रवाह तेज़ हो गया और उसके गाल उत्तेजना से तमतमा उठे, जब उसने मन्द स्वर में कहा, "तुम जानती हो शू-सिऊ, हम निश्चित जीतेंगे। सिर्फ़ हम ही दोनों नहीं सैकड़ों क़ैदी हड़ताल पर हैं। यह सचमुच एक महान संघर्ष है। च्याङ सियाओ-सिएन चाहे जितना भी क्रूर क्यों न हो, वह हम सभी को भूखों मर जाने देने की हिम्मत नहीं करेगा।"

"मैं तुम्हारे नेतृत्व में वही करूँगी ताओ-चिङ, जो कुछ तुम कहोगी। अगर मैं भूखों मर भी गयी तो मुझे कोई परवाह नहीं।" शू-सिऊ ने अपनी सिसकियों को गले में ही रोक लिया। वह नहीं चाहती थी कि ताओ-चिङ को पता चल जाये कि वह रो रही है!

"मूर्ख बच्ची! कोई क्यों भूखों मरने की बात सोचे?" जासूस के तेज़ स्वर ने दोनों को चौंका दिया। वह सिर्फ़ सोने का बहाना बनाये हुए थी और अब शू-सिऊ पर अपनी युक्ति चलाने का निश्चय कर चुकी थी। "कहते हैं, बुद्धिमान आदमी सलाह पर कान देता है। तुम तो बस एक बच्ची हो...कम्युनिस्टों के लिए क्यों मर रही हो? अपने माँ-बाप के बारे में सोचो। क्या तुम्हारा कोई ब्वायफ़्रैण्ड है? ज़रा कल्पना तो करो कि इस समय युवा प्रेमी पार्कों में साथ-साथ हँस रहे होंगे और प्रसन्नतापूर्वक गप्पें लड़ा रहे होंगे। क्या तुम्हें उनसे ईर्ष्या नहीं होती।"

इसके बाद ख़ामोशी छा गयी। दोनों लड़कियों ने इस घटिया बकवास को उपेक्षित कर देना ही मुनासिब समझा। वह छोटी अँधेरी कोठरी सीलनभरी और फफूँदी की दुर्गन्ध से भरी हुई थी शू-सिऊ ने रोना बन्द कर दिया और अपने हाथों को अपने पेट पर रखते हुए दाँत पीस लिये, वह भूख से व्याकुल थी। अपने गुस्से को व उस जासूस पर उतार देने के लिए उद्यत थी।

अगले दिन दोपहर के बाद यह देखकर कि यहाँ उसे कुछ भी नहीं मिल सकता था, वह जासूस उठ खड़ी होने और चलने-फिरने में अशक्त इन दोनों लड़कियों पर

विदा होने की एक बदमिज़ाजी भरी नज़र डालते हुए डगमगाती चाल से बाहर निकल गयी। कुछ मिनट बाद शू-सिऊ को पूछताछ के लिए बाहर घसीट ले जाया गया, उसे खून से लथपथ वापस लाया गया, उसका चेहरा बुरी तरह कट-फट गया था। उसके बाल उसकी गरदन के चारों ओर खुलकर बिखर गये थे और वह इतनी टूट चुकी थी कि रो भी नहीं पा रही थी। सन्तरियों ने उसे कड़े काठ की खाट पर ऐसे फेंक दिया, मानो वह कोई लाश हो।

जब वह ताओ-चिङ की चिन्तातुर आँखों के सामने पड़ी, तो जल्दी-जल्दी बोल पड़ी।

"मैंने उनको कुछ भी नहीं बताया ताओ-चिङ। मैं तो बस एक मामूली, भोली-भाली छात्रा हूँ। मैं कैसे जान सकती थी कि कि किसने यह सब शुरू किया था?... मैंने समर्पण नहीं किया। मैं शेष सबके साथ भूख-हड़ताल करती रहूँगी।" बिना कोई आँसू बहाये वह फिर अचेत हो गयी।

ताओ-चिङ के गालों पर से आँसू ढुलकने लगे – "प्यारी शू-सिऊ चीन तुम्हारी जैसी बेटियों पर नाज़ करेगा।"

एक दिन बीता, फिर दूसरा और तीसरा दिन बीता। भूख और पीड़ादायी घावों से संत्रस्त वे ज़्यादा समय संज्ञाहीनता में ही पड़ी रहती। जब से सच न बताने के वजह से वार्डरक्षिका लिऊ का ट्रांसफ़र कर दिया गया था, तब से यह कोठरी ऐसी मनहूस, दुर्गन्धयुक्त और ख़ामोश बन गयी थी, जैसे यह कोई क़ब्र हो। लेकिन हर बार जब वे होश में आतीं और अपनी आँखें खोलतीं, तो वे स्नेहसिक्त नज़रों का आदान-प्रदान कर लेतीं। एक बार शू-सिऊ ने एक कृश, कँपायमान हाथ ताओ-चिङ की ओर फैलाया,और जब बुदबुदायी तो उसके पथराये होंठ काँपने लगे।

"माँ। तुम मेरे लिए एक माँ के समान हो।..." ताओ-चिङ उसके लिए उतनी ही प्यारी थी जितनी चेङ चिन या उसकी अपनी माँ। ताओ-चिङ की मृदु, प्यारभरी आँखों और उसके उस साहस ने जो चेङ चिन के समान हो गया था, शू-सिऊ के भीतर क्रान्ति का अपराजेय सामर्थ्य भर दिया, एक ऐसा सामर्थ्य, जो मनुष्यों के दिलों को गर्मजोशी से भर देता है और उनको साहसिक कार्य करने की प्रेरणा देता है।

चौथे दिन आम भूख हड़ताल के सातवें दिन ताओ-चिङ की मूर्छा तब टूटी, जब किसी चीज़ ने हल्के-हल्के उसके चेहरे को स्पर्श किया। चौंकते हुए उसने सहजभाव से अपना हाथ अपने गाल पर रखा और काग़ज़ की एक छोटी-सी गोली उसके तकिये से नीचे ढुलक पड़ी। इसको खोलकर उसने उस सन्देश को पढ़ा जो पेंसिल से घसीटा गया था।

"तुम्हारे सभी क़ैदी-साथी यह जानकर बहुत खुश हैं कि तुम लोगों ने भूख हड़ताल में शामिल होकर संघर्ष में शिरकत की। आज हम हड़ताल ख़त्म कर रहे

है। अधिकारियों ने हमारी कुछ माँगें मान ली हैं। हम आशा करते हैं कि तुम सहज ढंग से खाना खाओगी और अपनी सेहत का अच्छा ख़याल रखोगी। शुरू-शुरू में बहुत ज़्यादा मत खाना। हम सम्पर्क बनाये रखेंगे।"

ताओ-चिङ ने शू-सिऊ को जगाया और उसे यह चिट थमा दिया। जैसे ही उस लड़की ने इसे पढ़ा, उसके कृश हाथ काँप उठे।

"क्या यह वाक़ई सच है ताओ-चिङ आओ, हम थोड़ी *कोंगी* की माँग से शुरू करें, क्यों?"

ताओ-चिङ हँसी, हालाँकि वह सिर्फ़ ठठरीभर रह गयी थी।

"लेकिन हमें इत्मीनान कर लेना चाहिए कि कहीं यह भी कोई चाल न हो। दुश्मन किसी भी नीच हरक़त पर उतर सकता है। अच्छा हो कि इन्तज़ार करो और देखो..."

दो घण्टे बाद, रात के खाने का वक़्त हो गया। खाद्य-सामग्री की बाल्टियों की खनखनाहटें और नौकरों या सन्तरियों की गालियाँ कोठरी के बाहर के बरामदे में सुनी जा सकती थीं।

"भाड़ में जावें वे सब! अगर उन्होंने हड़ताल ही की, तो ठीक से इसे चलाया क्यों नहीं? फिर खाना क्यों चालू कर दिया – और कोंगी भी माँग रहे हैं। बस झाँसा-पट्टी दे रहे हैं, निखट्टू कहीं के।"

जब नयी वार्डरक्षिका ने रूखाई से पूछा कि क्या और किसी को खाना है, तो ताओ-चिङ ने जवाब दिया :

"हमें वही चाहिए जो और सबको मिला है। थोड़ी *कोंगी*, जल्दी से।"

एकता में अपरिमित ताक़त होती है। ताओ-चिङ को पता चला कि वह और शू-सिऊ अपने संघर्ष में अकेले या असहाय नहीं थी, तो उसने महसूस किया कि वह एक विशाल किन्तु अदृश्य समष्टि का हिस्सा थी। भले ही लौह-दीवारों ने उनको बाक़ी से अलग कर रखा था, वे अपने दिलों में एक-दूसरे से बहुत निकटता के साथ जुड़ी हुई थीं। यह सच था कि उस अँधेरी, अलग-थलग कोठरी में पड़ी-पड़ी वे उन दृढनिश्चयी व्यक्तियों को नहीं देख सकती थी, जिन्होंने इस समष्टि का सृजन किया था, लेकिन उनको ऐसा लगता था जैसे उनके गले में असंख्य गर्मजोशी भरी गलबहियाँ डाल दी गयीं हो और असंख्य आतुर गाल उनके गालों से चिपट गये हो। वे निर्भीक, मृत्यु को चुनौती देने वाले क़ैदियों के साथ मिलकर एकाकार हो गयी थीं। उनकी कोठरी में फेंके गये सन्देश ने किसी चमत्कारी दवा की भाँति काम किया था, जिसने उनकी सामर्थ्य को फिर से वापस लौटा दिया था, जो बीमारी और यातना से चुक गयी थी कोंगी खाकर, उनकी स्फूर्ति फिर बुलन्दी पर पहुँच गयी। उस रात शू-सिऊ चुपके से ताओ-चिङ के बिस्तर पर चढ़ गयी, और उसकी बग़ल में लेटकर उससे फुसफुसाकर कहा :

'तरुणाई का तराना' पर बनी फ़िल्म के दृश्य

"ताओ-चिङ, तुम जानती हो क्या बात है? मैंने अभी-अभी अपने संघर्ष का पूरा अर्थ समझ लिया है। आज से पहले मैंने कभी सपना भी नहीं देखा था कि यहाँ इतने लोग हैं जो उतने ही बहादुर है, जितनी कि बहन चेङ चिन थी।" ताओ-चिङ मुस्कुरायी, उसका चेहरा शान्त और प्रसन्न था। अनजाने ही चेङ चिन की नक़ल करती हुई। उसने शू-सिऊ के नर्म बालों को सहलाया, तथा उत्कण्ठापूर्वक और स्नेहिल भाव से जवाब दिया।

"मैं आज बहुत खुश हूँ शू-सिऊ। मैं महसूस करती हूँ कि मैं अपनी समझदारी में एक क़दम और आगे बढ़ी हूँ। दुश्मन हमें फिर अलग-थलग नहीं कर सकता – हम लोग हमेशा क्रान्तिकारी परिवार का अंग बने रहेंगे।

——:o:——

अध्याय 21

पेइपिङ वापस लौटने पर ताओ-चिङ सू हुई को पाने में असफल रही थी, क्योंकि वह म्युनिसिपल पार्टी कमेटी के निर्देश पर कुछ अस्थायी सम्पर्क-कार्य करने के सिलसिले में विश्वविद्यालय छोड़ चुकी थी। सू को ताओ-चिङ की गिरफ़्तारी का तब तक पता नहीं चला, जब तक कि वह ग्रीष्मावकाश के बाद वापस नहीं आयी, और तब जेल जाकर उससे मुलाक़ात करने में समर्थ होने के कारण, उसने परोक्ष रूप से उसकी खोज-ख़बर लेने की कोशिश की। एक दिन शाम के धुँधलके में अपने हॉस्टल लौटते वक़्त वह अभी दरवाज़े पर पहुँची ही थी कि उसे पुकारने वाला एक स्वर सुनायी दिया।

"कुमारी सू हुई।"

वह रुक गयी और आस-पास नज़र दौड़ाकर देखा, परन्तु आस-पास कोई व्यक्ति नहीं था सिवाय एक आदमी के, जो लैम्प की मद्धिम रोशनी में, फाटक के पास एक ऊँचे पेड़ के नीचे लेटा हुआ था। वह चलकर उसके पास गयी। वह देखने में कोयले की गोलियाँ बनाने वाला लग रहा था, जो मैले-कुचैले कपड़े पहने था, उसके बड़े-बड़े बाल सँवारे हुए थे, और उसका चेहरा और हाथ कोयले की गर्द से मैले थे। उसके पहुँचते ही वह धीरे-धीरे उठा, और फटी-फटी आवाज़ में बोला, "कुमारी सू मैं घर से तुम्हारे लिए एक पत्र लाया हूँ।"

"क्यों, तुम हो भाई ली।" सु हुई अगल-बग़ल से होकर जाने वाले राहगीरों पर सावधानीपूर्वक निगाह डालती हुई एक दबे स्वर में बोल पड़ी। "मेरे पीछे-पीछे सामनेवाली उस गली में आओ।"

"यह बातचीत करने के लिए उपयुक्त जगह है," जब वे एक कोयले की दूकान के दरवाज़े तक पहुँच गये, तो च्याङ हुआ ने कहा। उसको स्थिरभाव से देखते हुए

वह आगे बोला, "मैं दोपहर में ट्रेन से देहात से यहाँ आया हूँ। मेरे पास खाने के लिए पैसे नहीं है, न ही बदलने के लिए कोई कपड़े। क्या तुम्हारे पास कुछ पैसे होंगे?"

"ये रहे। यही हैं जो मैं तुम्हारे कोयले की गोलियों के बदले दे रही हूँ।" सू हुई ने उसे सभी पैसे, जो उसकी जेब में थे, सौंपते हुए कहा। जैसे ही वह राहगीर चला गया, वह पूर्ववत होकर बोली, "तुम्हारे बारे में ख़बर सुने लम्बा अरसा हो गया था। तुम क्या कर रहे थे?"

"देहाती क्षेत्र में संघर्ष में मदद पहुँचा रहा था... बहरहाल, हम उसकी बात यहाँ नहीं कर सकते। मुझे अभी चले जाना है। मैं एक या दो दिन में तुमसे मिलने आऊँगा।" वह दो या तीन क़दम गया होगा कि फिर पूछने के लिए मुड़ पड़ा, "गतिविधियाँ कैसी चल रही हैं? मुझे लम्बे समय से किसी भी तरह की कोई ख़बर नहीं मिली है।"

"पार्टी ने उत्तरी चीन में लोगों को हथियारबन्द करने के लिए एक व्यापक आन्दोलन का अभियान छेड़ा है। इसने राष्ट्र की सशस्त्र प्रतिरक्षा के लिए संघ गठित किया है और 'उत्तरी चीन को बचाने के लिए लड़ो' का नारा दिया है..." सू हुई ने इस सूचना को एक मन्द स्वर में एक ही झोंक में कह दिया। फिर अपनी साँस पर क़ाबू पाने की गरज से कुछ रुकी और आस-पास नज़र दौड़ाकर देखा। "आओ चलते-चलते बातचीत करते रहें... हाँ, तीन हज़ार से अधिक लोग, जिनमें सुङ चिङ लिङ और हो सिआङ-निङ भी शामिल हैं, जापान के ख़िलाफ़ चीनी जनता के प्रतिरोध के मूलभूत कार्यक्रम पर हस्ताक्षर कर चुके हैं, और समर्थन दे रहे हैं। तुमने उसे ज़रूर पढ़ा होगा, है न? अरे, क्या तुमको मालूम है कि वह लिन ताओ-चिङ गिरफ़्तार हो गयी है?" उसका चेहरा इस बात पर धुँधला गया।

च्याङ हुआ एक क्षण के लिए उसे घूरकर देखते हुए रुक गया।

"तो वह गिरफ्तार हो चुकी है?" उसने पूछा। "क्या उसने तुमको मेरा पत्र दिया?"

"नहीं। क्या वह महत्त्वपूर्ण था?"

"वह कोड में लिखा गया था, कारण कि डर था कि कुछ गड़बड़ हो सकती है।" एक विराम के बाद उसने आगे कहा, "मुझे अब तुमको अलविदा कहना चाहिए और ठीक यहीं से मुड़ जाना चाहिए। मैं इधर किसी दिन आऊँगा और तुम्हारे साथ ढेर सारी बातें करूँगा।" इसके साथ ही वह पीछे उसी दिशा में मुड़ चला जिधर से वे आये थे।

जब च्याङ हुआ और ताओ-चिङ ताचेन गाँव में अलग-अलग हुए थे, उसके तुरन्त बाद ही वह पार्टी की होपेई प्रान्तीय कमेटी द्वारा वापस पेइपिङ भेज दिया गया था। कुछ समय से पैसों और राशन के अभाव में वह पेइपिङ जाने का टिकट नहीं ख़रीद सका था, लेकिन अपने को कोयले के एक वैगन में छिपा लेने का इन्तज़ाम

कर लिया था। नतीजतन वह सिर से पाँव तक कोयले की गर्द से ढँक गया था, यहाँ तक कि उसके कानों के भीतर भी गर्द घुस गयी थी। फिर भी यह उतना बुरा नहीं हुआ होता, अगर वह बिना किसी झंझट के अपने गन्तव्य पर पहुँच गया होता, लेकिन जब ट्रेन पाओतिङ पर रुकी, तो वह रेलवे गार्डों द्वारा देख लिया गया। सबकुछ तब भी ठीक-ठाक हो गया होता, अगर उसने उन्हें कोई छोटी-मोटी रक़म दे दी होती, लेकिन उसके पास तो एक धेला भी नहीं था और उसे दो दिनों से भूखों रहना पड़ रहा था। लिहाज़ा गार्डों ने उसे चोर समझ लिया और उसे छोड़ने से पहले उसकी पिटाई कर दी। पिट जाना या बेइज़्ज़त हो जाना च्याङ हुआ के लिए कोई ख़ास मायने नहीं रखता था जो कुछ वर्ष पहले ताङशान में काम करने के दौरान अक्सर बिना टिकट ट्रेन में चढ़ने के जुर्म में पकड़ा-पीटा जाता था। वह जानता था कि जब एक बार यह खुलासा हो जायेगा कि उससे कुछ भी नहीं वसूल किया जा सकता है तो उसे छोड़ दिया जायेगा और तब वह उसके बाद आने वाली दूसरी ट्रेन में चोरी-चोरी चढ़ जाने की कोशिश करेगा। वह उन आदमियों में से था, जो अपने मक़सद को पाने में कभी हिम्मत नहीं हारते थे, चाहे उनके रास्ते में कितनी भी मुसीबतें और दुश्वारियाँ क्यों न आ जायें।

अपनी पिटाई के बाद उसने पाओतिङ से आगे एक छोटे स्टेशन पर एक दूसरी ट्रेन में लुक-छिपकर चढ़ने का इन्तज़ाम किया और उस दिन की दुपहरी में पेइपिङ के पश्चिमी नगरांचल में बुरी तरह से थका-मादा ट्रेन से उतरकर वह सुस्ताने के लिए खेतों में जाकर सो गया था। जब वह जागा और महसूस किया कि वह बहुत मैला-कुचैला हो गया है, तो वह नगर-दीवार के बाहर-बाहर से घेरने वाली वीरान खाई की ओर डगमगाते हुए चला गया, और अपना चेहरा धोने की कोशिश करने से पहले अपनी प्यास बुझायी। उसने कितनी भी कोशिश क्यों न की कालिख से छुटकारा न पा सका, कारण कि उसका पूरा शरीर और मैले-कुचैले कपड़े कोयले की गर्द से भर गये थे, जिसने उसके हाथों और चेहरे को धोने के साथ-साथ और भी गन्दा कर दिया। एक खेदभरी मुस्कुराहट के साथ उसने कोशिश छोड़ दी और अपनी बेल्ट को कसकर, अपने क़दम शहर की ओर बढ़ा दिये। दो दिन से बिना खाये रहने के कारण वह इतना अशक्त हो गया था कि अपनेआप को एक बीमार आदमी की भाँति घसीट रहा था। वह एक गाथा-गीत गुनगुनाने लगा, जिसको घुमक्कड़ कोयला-गोली बनाने वाले अच्छी तरह से गाते थे – एक जवान विधवा का अपने पति की क़ब्र पर विलाप। दो कॉमरेडों की तलाश व्यर्थ हो जाने के बाद वह सू हुई को खोजने पीकिङ विश्वविद्यालय चला गया। अपनी ग़ैरमुनासिब शक्ल-सूरत के मद्देनज़र उसने यह ठीक नहीं समझा कि सू हुई के बारे में फाटक पर पूछताछ करे और इसलिए उसके इन्तज़ार में हॉस्टल के सामने एक पेड़ के नीचे पसर गया।

तीन दिन बीत गये और अब च्याङ हुआ कोयला-गोली बनाने वाला गन्दा आदमी नहीं रह गया था। गरदन तक बटनबन्द साफ़-सुथरी वर्दी में सज-धजकर अपने सिर पर एक पुरानी पनामा टोपी लगाये, वह बेफ़िक्री से उस तपती धूप में सू हुई से मुलाक़ात करने के लिए चहलक़दमी कर रहा था। उसे एक अप्रत्याशित व्यक्ति का सामना करना पड़ गया।

"अरे, भाई च्याङ! तुम लम्बे समय से दिखायी नहीं दिये।"

उसने मुड़कर एक बड़े सिरवाले, छोटी क़द-काठी के अधेड़ उम्र के आदमी को एक ढीली बदरंग जैकेट में देखा।

"भाई मेङ! तुम?" च्याङ हुआ मुस्कुराया! और उसका हाथ पकड़कर अपनी मुट्ठी में कस लिया।

यह मेङ ता-हुआन था जो उस समय प्लाटून कमाण्डर रह चुका था, जब च्याङ हुआ जापान-विरोधी उत्तरी चाहार मित्र सेना में काम करता था। मूलतः एक मुनीम का काम करने वाला मेङ ता-हुआन उत्तरी चाहार सेना में ट्रांसफ़र किये जाने से पहले उत्तर पूर्वी जापान-विरोधी वालण्टियरों में भरती हो गया। अब उसने च्याङ हुआ को गर्मजोशी से बाँहों में भर लिया।

"ख़ूब मिले दोस्त! तुम्हारे बारे में मैं कितना सोचा करता था।"

चूँकि मेङ मज़दूर के चिथड़ाये कपड़े पहने हुए था और काफ़ी भावप्रवण होकर मुस्कुरा रहा था, इसलिए च्याङ हुआ ने पूछा :

"अच्छा तो भाई मेङ तुम पिछले एक या दो वर्षों से क्या कर रहे हो?"

"मैं तुम्हें बता दूँ, मैं एकदम बावला हो गया था।" वह च्याङ हुआ के कान में फुसफुसाकर कहने के लिए क़रीब खिंच आया, "यह तो बस मेरा दुर्भाग्य था कि क़रीबी पार्टी से सम्पर्क टूट गया। मैं तिएनत्सिन, पेइपिङ और इन इलाक़ों में कोई भी काम लेते हुए भटकता रहा हूँ और अपने लोगों के सम्पर्क में आने की कोशिश करता रहा हूँ, लेकिन कोई सफलता न मिली। अब मेरा सौभाग्य है कि तुम से भेंट हो गयी। चलो मेरे साथ मेरे डेरे पर चलें, हमें ढेर सारी बातें करनी हैं।"

जैसे ही च्याङ हुआ हिचकिचाया, मेङ ने गम्भीर होकर कहा :

"आह, वे भी क्या दिन थे। हमारी मित्र सेना को पाओचाङ तोलुन, कुयुआङ और चाङपेई जैसे शहरों पर फिर से क़ब्ज़ा कर लेने या जापानियों के साथ ही साथ वाङ यिङ और ली शाऊ-सिन जैसे ग़द्दारों का भी सफाया कर देने में ज़्यादा समय नहीं लगा। लेकिन वह कुतिया का पिल्ला च्याङ काई शेक... बेशक तुम तो जानते हो कि हमारी पार्टी फिर ताक़त बटोर रही है।" उसने एक तुष्ट मुस्कान के साथ अपनी छोटी आँखें मटकायीं। "मुझे पार्टी में शामिल होना ही होना है – क्या तुम मेरी सिफ़ारिश करोगे? आजकल तुम्हारे सम्पर्क में कौन है?"

श्वेत इलाक़े में मिले च्याङ हुआ के यथेष्ट अनुभव ने उसे तुरन्त इस आदमी

के विरुद्ध सतर्क कर दिया, जो संयोग से गली में मिल गया था, जिसके बारे में तीन वर्षों से कुछ सुनने को नहीं मिला था। उसने अनायास मुस्कुरा दिया और तटस्थ भाव से अपना सिर हिला दिया।

"मैंने तो काफ़ी पहले ही उस सबसे अपना हाथ धो डाला है और उन सभी लोगों से नाता तोड़ लिया है, जो हमारे परिचित हुआ करते थे। मैं अभी अभी देहात से लौटा हूँ और एक नौकरी की तलाश कर रहा हूँ।"

निराशा की एक स्पष्ट दिखायी देने वाली छाया मेङ ता-हुआन के चेहरे पर छा गयी, लेकिन अगले ही क्षण उसके होंठ मुस्कुराहट में सिकुड़ गये और जब च्याङ हुआ उसे अलविदा कहने को हुआ, तो उसने उसकी बाँह थाम ली।

"नहीं। मैं तुम पर यक़ीन नहीं करता। असम्भव..." उसने जल्दबाज़ी में कहा। "लेकिन उससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। हम पुराने दोस्तों से रोज़-रोज़ नहीं मिलते, तब फिर क्यों नहीं हमारे डेरे पर मज़े से बातचीत करने के लिए आ जाते?" वह च्याङ हुआ को गली में दक्षिण की ओर धकेल ले गया।

कोई चारा न होने से च्याङ हुआ ने अरुचिपूर्वक उसके अनुरोध को मान लिया। रास्ते में वे अपनी दोस्ती के बारे में इधर-उधर की बातें करते रहे। मेङ गँवार और असंस्कृत था, परन्तु अपनी बातचीत के लिहाज़ से वह एकदम प्रगतिशील लग रहा था, उसने इस पतनशील समाज पर गालियों की झड़ी लगा दी और क्रान्ति की क़तारों में शामिल होने के लिए अपने दोस्त से अनुरोध किया। च्याङ हुआ रह-रहकर इस मुद्दे को बहका दे रहा था, तभी एक तड़क-भड़क वाली जवान औरत एक चटख गुलाबी गाऊन पहने उनके निकट आ गयी। उसके बाल लहरदार थे और उसके होंठों पर गाढ़े रंग की लिपस्टिक लगा रखी थी। च्याङ हुआ ने उस पर निगाह डाली और हँसते हुए टिप्पणी की :

"वह देखो! जहाँ महासेनानायक च्याङ नयी ज़िन्दगी की मुहिम को आगे बढ़ा रहा है, वहीं कुछ युवतियाँ अब भी फूहड़ लिबास पहनती हैं। क्या तुमने सुना था कि मेयर युआन चुङ शान पार्क में जाकर लम्बे समय तक ऐसी औरतों को गिरफ़्तार करने के लिए खड़ा रहा जो नंगी बाँहें लिये गुज़रती थीं? एक अच्छा मज़ाक़ है, है कि नहीं?"

मेङ ता-हुआन बेहयाई से हँसा और अपने होंठ चाट लिये, जब उसने उस जवान औरत की सफ़ेद गरदन और उसकी उघड़ी बाँहों को घूरकर देखा। एक फीकी व्यंग्यपूर्ण मुस्कान च्याङ हुआ के चेहरे पर चमक उठी।

बतियाते और चलते हुए, वे जल्दी ही चिएनमेन के उत्तर कुआन गली में पहुँच गये। सार्वजनिक सुरक्षा ब्यूरो के फाटक पर मेङ ता-हुआन रुक गया तथा कठोर और अर्थपूर्ण निगाहों से च्याङ हुआ की ओर देखा, जिसने उसे भी धक्का दिया और पूछा :

"यहाँ क्यों रुक गये भाई मेङ? मुझसे यह तो नहीं कहोगे कि यही वह जगह है जहाँ तुम रहते हो?"

"नहीं मैं नहीं, तुम कहोगे! अब तुम घर पहुँच गये!" मेङ ता-हुआन ने रास्ता छोड़ दिया और उसका चेहरा बदल गया, उस पर एक मूर्खतापूर्ण विजयी मुस्कान फैल गयी। "अब हम झख न मारें भाई च्याङ। मैं खुफ़िया पुलिस के साथ काम कर रहा हूँ।"

च्याङ हुआ को बुरे अंजाम का अन्देशा हो चला था, जिसका सबसे भयानक ख़तरा खुलकर सामने आ गया था। फिर भी उसने आत्मसंयम बनाये रखा तथा एक अविश्वास के भाव से मेङ के कन्धों पर थपथपाया और सौजन्यता से प्रतिवाद किया :

"छोड़ो इसे! तुम हमेशा ही मज़ाक़ किया करते थे, लेकिन तुम जैसे एक पुराने दोस्त को मूर्ख बनाने की ज़रूरत नहीं। आओ, बातचीत के लिए चिएनमेन से बाहर कोई और जगह ढूँढ़ें। क्या तुमने कहा नहीं कि तुम्हें ढेर सारी बातें मुझसे करनी हैं?" मेङ की भाँति उसने भी अपना लहज़ा बदल दिया था।

चेहरे पर उलझन का दिखावटी भाव लिये और भीतर से इस कम्युनिस्ट को क़ायल करके अपने को प्रतिष्ठित कर लेने की उत्कण्ठा लिये वह ग़द्दार क्षणभर के लिए अचकचाया, उसके बाद ब्यूरो के फाटक पर तैनात गार्डों को इशारे से बुलाया। चार सादी वर्दी वाले जासूसों ने दौड़कर च्याङ हुआ को घेर लिया, जबकि मेङ ता-हुआन इठलाते और अपना बड़ा सिर हिलाते हुए अन्दर चला गया। वह पुनः दर्प भरे अन्दाज़ में, एक नयी गैबरडीन वर्दी पहने और एक टेढ़ी हैट लगाये फिर प्रकट हुआ।

"आओ चलें!" उसने च्याङ हुआ की ओर खीसें निपोर दीं। "हम वैसा ही करेंगे जैसा तुम चाहोगे और बातचीत के लिए एक जगह तलाशेंगे।"

वे अगल-बग़ल होकर चिएनमेन के बाहर शहर के पश्चिमी भाग की ओर चल दिये, खुफ़िया विभाग के चार आदमी दो-दो के समूहों में उनके पीछे-पीछे चल रहे थे।

"हाँ, तो भाई च्याङ, तुम नहीं कह सकते कि मैं पुराने दोस्तों को मझधार में छोड़ देता हूँ।" मेङ ने अपने मुँह में एक सिगरेट दबाये अकड़कर चलते हुए अपनी छाती को ठोंका। "मैं जब किसी आदमी की मदद करता हूँ, तो काम को पूरी तरह से करता हूँ। मैं चाहता हूँ कि तुम हमारी यूनिट में भरती हो जाओ। कैसा रहेगा?" अपने सिर को चारों ओर नचाते हुए खुलकर खीसें निपोरीं।

"एक अच्छी-ख़ासी तनख़्वाह – सौ युआन या इसी के आस-पास। इसके अलावा तुम किसी भी थियेटर, स्नानघर या वेश्यालय में मुफ़्त घुस सकते हो। तुमने जो उस कुतिया को पसन्द किया है, जिसको हमने अभी-अभी देखा था, नहीं पसन्द

किया है? कोई बात नहीं, चकलाघरों में उस जैसी तमाम पड़ी हुई हैं। तुम जहाँ कहीं भी जाना चाहो, बस अपना सिर हिला दो, अपने कूल्हों पर अपने हाथ रख दो और अपने होंठ हिला दो, फिर कोई भी ऐसा नहीं होगा जो तुम पर एक उँगली भी उठा सके।" एक खलनायक की भाँति त्यौरी चढ़ाकर उसने अपना मन्तव्य प्रकट किया। "मैं कितना मूर्ख था कि तीन लम्बे वर्षों तक नरक की यातना भोगने के लिए जापान-विरोधी स्वयंसेवक संघ और जापान-विरोधी मित्र सेना के चूल्हे-भाड़ में भरती हो गया। खुदा का शुक्र है कि अब मेरी तक़दीर पलट गयी है और हर चीज़ मेरे मुआफ़िक़ चल रही है। एक केस का निपटारा करो या एक कम्युनिस्ट को गिरफ़्तार करो, और तुम भी जल्दी ही चाँदी के डॉलरों में डूबने-उतारने लगोगे! तो तुम मेरे प्रस्ताव पर क्या कहते हो?"

उसको ध्यानपूर्वक सुनने के बाद च्याङ हुआ ने अपना सिर हिलाने और मुस्कुराहट के साथ प्रत्युत्तर देने से पहले एक क्षण सोचा, "मैं समझता हूँ कि मैं इस पद के लायक़ शायद आख़िरी आदमी होऊँगा। तुम्हारे अन्दर इस काम के लिए ख़ास योग्यताएँ हैं भाई मेङ, लेकिन मेरे भीतर मानवीय दया का दूध बहुत ही ज़्यादा है। मैं अपने भात की कटोरी भरने का कोई दूसरा तरीक़ा ढूँढ़ लूँगा।"

"क्यों, जहाँ तक मैं समझता हूँ, यह सम्भवत तुम्हारे लिए सर्वाधिक फ़ायदे का काम रहेगा।" मेङ ने एक अँगूठा उठाया और अपने सिर को फिर हिलाया। "मुझे इसके लिए अपना नाम लिख देने दो।"

"नहीं धन्यवाद। जैसाकि मैंने कहा, 'मैं इस पद के लायक़ शायद आख़िरी आदमी होऊँगा,'" च्याङ हुआ ने मुस्कुराकर दोबारा कहा।

मेङ ने उस पर एक सन्देहभरी निगाह डाली और मुँह टेढ़ा कर लिया। वे अब चिएनचिन से बाहर एक रेस्तराँ तक पहुँच गये थे, जहाँ च्याङ हुआ ठिठक गया और बोला :

"दोपहर से अधिक हो गयी है। मैं तुम्हें लंच पर ले चलूँ।"

"ठीक है। कोई शरीफ़ आदमी अपने सामने रखे गये खाने और पीने की चीज़ को इन्कार नहीं करता।" मेङ गार्डों में से दो को साथ लेकर तथा बाक़ी दो को दरवाज़े पर छोड़कर च्याङ हुआ के पीछे-पीछे सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर जाने लगा।

शराब पी चुकने के बाद मेङ ता-हुआन च्याङ हुआ को गुप्तचर सेवा में भरती होने के लिए आग्रह करता रहा, वह अपनी बेवक़ूफ़ी में मान बैठा था कि रिश्वत और भयादोहन एक साथ मिलकर एक क्रान्तिकारी को ग़द्दार बन जाने के लिए उकसा देते हैं, जैसाकि वह स्वयं हो चुका था।

"क्या तुम चाँदी के डॉलरों की मीठी खनक पसन्द नहीं करते, भाई च्याङ? हीलाहवाली करना बन्द करो! मेरी मदद से तुम जल्दी-जल्दी तरक़्क़ी पाने और धनी हो जाने की उम्मीद कर सकते हो। मानो या न मानो, मैं एक सार्जेण्ट बन चुका हूँ।"

अपने चेहरे पर मुस्कुराहट के साथ च्याङ हुआ ने मेंङ की छोटी आँखों को ग़ौर से देखा, जो शराब की लत से सुर्ख़ लाल थीं।

"तुम तब इतने अच्छे नहीं थे भाई मेङ, जब क्रान्ति के लिए काम करते थे, लेकिन अब प्रतिक्रान्तिकारी काम में तुम बड़े-बड़ों के कान काट रहे हो। अगर तुम अपने हाथों को और अधिक ख़ून में डूबा लो, तो निस्सन्देह तुम सार्जेण्ट मेजर के पद पर तरक्क़ी पा जाओगे। यह बहुत बुरा है जो मैं इस स्तर के लायक़ नहीं हूँ।" च्याङ हुआ खा रहा था, पी रहा था और मज़ाक़ कर रहा था, पर साथ ही वह भीतर ही भीतर अपना पिण्ड छुड़ा लेने की युक्ति भी सोच रहा था, यह तो स्पष्ट था कि यदि वह मेङ के प्रस्ताव को अस्वीकार कर देता, तो वह चट-पट हिरासत में ले लिया जाता। उसे गिरफ़्तारी के बाद गम्भीर परिणाम भुगतने पड़ते, क्योंकि दुश्मन उसे एक लम्बे अरसे से ढूँढ़ रहा था। एकमात्र रास्ता बचकर निकलना ही था; लेकिन जिस क्षण वे सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर आये, उसी क्षण वह देख चुका था कि उसके बच निकलने का रास्ता जाम कर दिया गया है। जैसे ही खाना ख़त्म हुआ, उसने बिल चुकाया और मेङ को सुझाव दिया, जो उसके पीछे-पीछे सीढ़ियाँ उतरा था।

"भाई मेङ, चूँकि हमारी एक-दूसरे से मुलाक़ात बहुत ही कम होती रही है, और विचार-विमर्श करने के लिए अभी ढेर सारी बातें हैं, फिर तुम्हारा क्या ख़याल है, अगर हम कोई फ़िल्म देखने चलें? चेन कुआङ सिनेमा बुरा नहीं है। आओ वहीं चलें।"

अपना बड़ा सिर एक तरफ़ करके मेङ ने इस पर सोचा और स्वीकृति में सिर हिला दिया, लेकिन चेङ कुआङ में जाने के बजाय वह च्याङ हुआ को ता कुआन लोऊ में ले गया, जहाँ उस पर कड़ी नज़र रखने और अपने क़ैदी को भागने से रोकने के लिए काफ़ी तादाद में मातहत कर्मचारी थे।

सिनेमा हॉल में मेङ ता-हुआन, च्याङ हुआ की बग़ल में बैठाये चारों गार्ड आसपास ही थे। और च्याङ हुआ ने फ़िल्म तो बहुत थोड़ी ही देखी, क्योंकि वह तो अपने साथ वाले पर ग़ौर करने और यह सोचने की कोशिश में लगा हुआ था कि कैसे अँधेरे में निकल भागे। जब परदा उन नंगी टाँगों वाली लड़कियों से भर उठा, जो नाचते हुए अपने कूल्हे मटका रही थीं तथा मर्द और औरतें उस कामोत्तोजक संगीत के साथ चुम्बन ले रहे थे और आलिंगन कर रहे थे, तो उसने देखा कि मेङ टकटकी लगाये हुए था और लार टपका रहा था। एक सेकेण्ड भी गँवाने का वक़्त नहीं था। च्याङ हुआ आहिस्ते से उठा और अपनी हैट सीट पर रख दी। मेङ जैसे ही चौंककर चिल्लाया और तुरन्त दो बलिष्ठ हाथों ने उसकी बाहें पकड़ लीं, "तुम कहाँ जा रहे हो?"

"कुछ सिगरेटें ख़रीदने," च्याङ हुआ ने बेपरवाही से दरवाज़े की ओर जाने का रुख करते हुए जवाब दिया।

"नहीं, नहीं। कोई दूसरा चला जायेगा। हम जानते हैं कि तुम एक लाल क्रान्तिकारी हो। भागने की कोशिश मत करो।" अपनी पकड़ को और कसते हुए, मेङ ने अपने मातहतों को चिल्लाकर कहा कि वे अपने क़ैदी पर कड़ी नज़र रखें।

च्याङ हुआ, आख़िरकार हताश होकर फिर बैठ गया। चूँकि यहाँ से भाग निकलना असम्भव था, अतः उसे बच निकलने का कोई दूसरा उपाय सोचना था।

सिनेमा छोड़ने से पहले ही वह फ़ुर्ती से सादे लिबास वाले जासूसों द्वारा घेर लिया गया, जो उसे और मेङ को साथ-साथ दरवाज़े की ओर धकिया ले गये। जब वे बाहर गली के रास्ते पर आ गये और भीड़ छँट चुकी, तो मेङ ने उसकी ओर दहकती नज़र से देखा और झट कहा :

"हम काफ़ी वक़्त बरबाद कर चुके हैं। अब तुम मेरे साथ ब्यूरो चल रहे हो।"

च्याङ हुआ ने पलटकर नफ़रतभरी नज़र से उसे घूरकर देखा और जवाब में कहा :

"तुम मुझ जैसे एक पुराने दोस्त के साथ यह कैसे कर सकते हो भाई मेङ? मुझे एक बार इस पर फिर सोच लेने दो।"

"नहीं।" मेङ अपना सीना उचकाकर दहाड़ उठा। "मेरे पास बरबाद करने के लिए और वक़्त नहीं है। साथ-साथ ब्यूरो चले चलो।"

"ठीक है।" च्याङ ने हामी भरी। "लेकिन मैं एक बात पूछना चाहता हूँ। मेरे घर छोड़ने से पहले उन इलाक़ों में लुटेरे इतने सक्रिय हो गये थे कि सुरक्षा की ख़ातिर मैंने दो सौ चाँदी के डॉलर पेइपिङ में एक दोस्त के पास भेज दिये थे। मैं आज सुबह स्टेशन से सीधे वह रक़म लेने के लिए ही गया था, लेकिन उसके बाहर होने के कारण कह आया कि मैं फिर दोपहर बाद उससे मिलने आऊँगा। मुझे वहीं जाना है, और वह रक़म लेनी है। मैं बिना कैश के अदालती कार्रवाई में अपनी पैरवी कैसे कर सकूँगा?"

मेङ ता-हुआन की हथेलियाँ पैसे का ज़िक्र आते ही खुजलाने लगीं, और उसने तुरन्त स्वीकृत दे दी। उसने छह रिक्शे बुलवाये, अपने क़ब्ज़े में आये शिकार को चार गार्डों के बीच वाले रिक्शे पर बैठाया और रिक्शावालों को च्याङ हुआ द्वारा बताये गये ठिकाने पर हुआङ हुआ मेन के भीतर एक छोटी गली में जल्दी से चलने को कहा।

जब वे एक जीर्ण-शीर्ण दरवाज़े के पास पहुँचे तो च्याङ हुआ उतर गया, और मेङ की ओर बढ़कर फुसफुसाया।

"मुझे ऐसा महसूस होता है, भाई मेङ कि यदि तुम सभी मेरे पीछे-पीछे चलोगे तो यहाँ मेरा दोस्त वाङ यू-तेह यह अनुमान कर लेगा कि मैं किसी मुसीबत में हूँ और रक़म वापस देने से इन्कार कर देगा। तुम्हारी समझ से हमें क्या करना चाहिए?"

मेङ ने अपने होंठ सिकोड़े और एक मोटी बाँह फैला दी। "ठीक है, तब अकेले ही अन्दर जाओ। साधु अपना मठ छोड़कर नहीं भाग सकता। फिर भी देर मत लगाना।"

गुप्तचर विभाग के आदमी आधे घण्टे से अधिक समय तक बाहर निगरानी करते रहे, लेकिन च्याङ हुआ का कोई पता न था। फिर अधीर होकर वे अहाते में घुस पड़े, लेकिन यह जानकर वे हतप्रभ रह गये कि वहाँ कोई घर ही नहीं था, बल्कि दूसरे छोर पर बना एक छोटा-सा दरवाज़ा था जिससे होकर उनका शिकार निकल चुका था। मेङ ता-हुआन ने गुस्से से पागल होकर अपने पाँव पटके, अपने आदमियों को गालियाँ दीं और ऐसा महसूस किया मानो उसने अपनी ही कनपटी पर घूँसा मार लिया हो।

च्याङ हुआ जहाँ कहीं भी जाता, वहाँ के भूगोल को जानने और याद रखने के लिए सदा सावधान बना रहता था। जब खुफ़िया पुलिस को चकमा देने के सभी तरीक़े नाकाम हो गये, तो उसने इस द्वार को याद किया।

च्याङ हुआ इस कठिन स्थिति से उबरकर सू हुई से मिलने चल दिया, जैसीकि उसकी योजना थी।

हॉस्टल के उसके छोटे कमरे में बिजली की रोशनी में बैठकर उसने कुछ पानी पिया और एक मुस्कान के साथ उससे बोला :

"हाँ तो सू हुई, मुझे उम्मीद न थी कि मैं अब भी तुमको यहाँ इतना सुरक्षित पा लूँगा।"

"हाँ, यह एक सिंहासन पर सुरक्षित बैठने जैसा है। लेकिन कुछ मेरी सूझ-बूझ की तो दाद दो..." हँसकर सू हुई ने उसको एक कप पानी और उड़ेलकर दे दिया। फिर खिड़की बन्द करके वह उसकी बग़ल में एक स्टूल पर बैठ गयी। "मैं देख रही हूँ कि तुमने अब और भी अधिक अनुभव प्राप्त कर लिया है, ली मेङ यू।" उसकी मुस्कुराह में उदासी का पुट था। "श्वेत आतंक दिन-प्रतिदिन गहराता जा रहा है, क्या तुम जानते हो कि लू चिआ-चुआन को उसकी गिरफ़्तारी के बाद नानकिङ ले जाया गया था? मुझे डर है कि उसे ख़त्म कर दिया गया है। कई और कॉमरेड भी गिरफ़्तार हो गये हैं, जिनमें लिन ताओ-चिङ जैसे प्रगतिशील शामिल हैं, जो क्रान्ति से हमदर्दी रखते हैं। हाँ...क्या तुम जानते हो कि शेन यी का क्या हुआ? उसे प्राणदण्ड दे दिया गया है और मुझे सन्देह है कि मैं उसे फिर कभी देख सकूँगी..." उसने अपना सिर झुका लिया, उसकी आँखों में आँसू उमड़ आये।

शेन यी, जो सू हुई का प्रेमी था और ली मेङ यू का पुराना दोस्त था जो उसके साथ शंघाई के मज़दूर-आन्दोलन में काम कर चुका था; यही उसके और सू हुई के बीच मित्रता का सूत्र-बन्धन था। इस त्रासद ख़बर को सुनकर च्याङ हुआ ने जो रोशनी की ओर पीठ किये बैठा था, अपना सिर उठाकर क्रीम रंग से पेण्ट की हुई

दीवार पर लगी मोंतेस्क्यू की एक तस्वीर को घूरकर देखा। एक लम्बा समय गुज़र जाने के बाद उसने धीरे से कहा।

"मैं जानता हूँ कि तुम कैसा महसूस कर रही हो, और मैं कुछ नहीं कर सकता, जिससे तुमको तसल्ली मिल सके। हमने पिछले दो वर्षों में कई अच्छे कॉमरेडों को खो दिया है, जो उनके अतिरिक्त हैं जिनका बारह अप्रैल के बाद के आरम्भिक वर्षों में क़त्लेआम कर दिया गया था। लेकिन चाहे कितने भी दुर्दिन और मुसीबतें क्यों न झेलनी पड़े, हमें अपनी पीड़ा को भूलना ही होगा, जब हम यह सोचते हैं कि हमारी विजय अवश्य होगी। क्या तुम भी वैस ही महसूस नहीं करती?"

"हाँ भाई ली, तुम ठीक कहते हो।" अपनी क्षणिक वेदना पर क़ाबू पाकर सू हुई ने अपने बालों को झटका और अपनी चमकदार मुस्कानभरी आँखों को उस पर टिका दिया।

"मैं तुमसे यह पूछने के बजाय कि तुम इस पूरे समय में कैसे रहे, तुमको उस ख़बर से ही दुखी कर दिया। अब मुझे बताओ तो सही कि तुम तिङसिएन कैसे पहुँचे। क्या मेरा कहना सही नहीं था कि तुम लिन ताओ-चिङ पर भरोसा कर सकते हो?"

मेज़ पर रखे उसके व्याख्यान नोटों को पढ़ते हुए वह बोला :

"आओ पहले तुम्हारे मामले पर विचार-विमर्श कर लें, सू हुई। तुम्हें यहाँ नहीं रहना है – पार्टी तुम्हें दूसरी जगह ट्रांसफ़र करना चाहती है। क्या तुम यहाँ का अपना काम छोड़ सकती हो?"

सू हुई ने चौंककर च्याङ हुआ को देखा, जो अब भी उसके व्याख्यान-नोटों पर झुका हुआ था।

"तुम्हारा यह मतलब तो नहीं है भाई ली कि मुझे विश्वविद्यालय छोड़ना पड़ेगा?"

च्याङ हुआ ने नोटों को नीचे रख दिया और एक मुस्कान के साथ सीधा तन गया।

"हाँ, प्रशासनिक काम के लिए तुम्हारी ज़रूरत है... मैंने अभी तक तुमको बताया नहीं था कि मैं अब पूर्वी शहर की ज़िला कमेटी के साथ हूँ। पार्टी ने मुझे तुमको सूचित करने के लिए भेजा है, जिससे कि तुम ज़रूरी इन्तज़ाम कर लो। कल रात तुमको चले जाना है और बड़ी दीदी लिऊ यी-फेङ से मिलना है।"

"लेकिन मेरे स्नातक होने में तो एक वर्ष और लगेगा..." उसके चेहरे पर उदासी और अनिश्चय का भाव दिखायी देने लगा।

च्याङ हुआ ने इस पर उसे नरमी से, लेकिन गम्भीरता से देखा। कभी-कभी एक निगाह हज़ारों सशक्त शब्दों से कहीं अधिक मुखर होती है। जब सू सुई ने उसकी भावमुद्रा देखी, तो उसका चेहरा सूर्ख़ हो उठा।

"बेशक मैं जाऊँगी, जहाँ भी पार्टी मेरी ज़रूरत समझती है," उसने एक [illegible] दृढ़ स्वर में उत्तर दिया। "मैं अभी-अभी इसलिए हिचकिचा रही थी कि पीकिङ विश्वविद्यालय में हमारी पार्टी की ब्रांच अभी उतनी मज़बूत नहीं है, जितनी कि हुआ करती थी; और मुझे डर है कि मेरे चले जाने पर मामला और चौपट हो जायेगा। हम पीकिङ विश्वविद्यालय द्वारा खोले गये सभी स्कूलों और विभिन्न संगठनों पर रुतबा बनाये सी.सी.गुट एक प्रतिक्रान्तिकारी संगठन के छात्रों के साथ नोक-झोंक कर चुके हैं। यह एक उग्र और जटिल संघर्ष है।"

उसने उसे कुछ उन संघर्षों का ब्योरा दिया जिनको छात्र चला रहे थे।

उसकी बातें सुन चुकने के बाद च्याङ हुआ ने एक मैली-कुचैली रूमाल से अपने पसीनाभरे चेहरे को पोंछा और बोला, "हिचकिचाओ नहीं और सिर्फ़ इस ख़ास ग्रुप के ही हितों के बारे में मत सोचो। जब तुम चली जाओगी, तो कोई न कोई तुम्हारा काम सँभाल लेने के लिए चला आयेगा। तब इसको हम तय मान लें, क्यों? और अब जबकि हम काम की बातें कर चुके, आओ थोड़ी अच्छी गप-शप करें। यहाँ तो बेहद गर्मी है – क्यों न टहलने के लिए बाहर चलें?"

पेई हाई पार्क की बढ़िया बिछी पटरी वाली सड़क पेइपिङ की सबसे शान्त और सुन्दर सड़कों में से एक थी, लेकिन पैदल चलने वाले कुछ ही थे और दूर-दूर थे, हालाँकि बिखरे हुए लोकस्ट वृक्षों और कोयले की पहाड़ी को घेरने वाली लाल हवेली की दीवारों से रात में एक विभोर कर देने वाला रमणीय दृश्य प्रस्तुत हो जाता था। गली के लैम्पों की मद्धिम रोशनी में, च्याङ हुआ और सू हुई अगल-बग़ल होकर दबे स्वरों में बतियाते हुए टहलते रहे। च्याङ हुआ एक स्नेहिल-हृदय और विचारवान दोस्त था, और वे अपने ताज़ा अनुभवों पर विचार-विमर्श करते रहे, उन्होंने आपसी परिचर्या की सूचनाओं को आदान-प्रदान भी किया। वे च्याङ हुआ के द्वारा तिङसिएन में किये जाने वाले कार्य की बात कर रहे थे, तभी वह अचानक पूछने के लिए मुड़ा :

"प्रसंगवश, तुम ताई यू को जानती हो?"

"हाँ, जानती हूँ। उसके बारे में कोई बात?"

"मुझे उसके बारे में कई सन्देह है – मैं विभिन्न हलक़ों से पार्टी के लिए एक रिपोर्ट तैयार करने के लिए जितनी जानकारी जुटा सकता हूँ, जुटा रहा हूँ। यही बात उस पत्र में थी जिसे मैंने ताओ-चिङ को पेइपिङ आकर तुम्हें देने के लिए कहा था। मुझे उम्मीद थी कि तुम पार्टी को सचेत कर दोगी। वैसे मुझे विश्वास है कि ताओ-चिङ ने उस पत्र को दुश्मन के हाथों नहीं पड़ने दिया होगा।"

"क्या तुम उस व्यक्ति के बारे में जो कुछ जानते हो, उसे तुमने पार्टी को बता दिया है?"

"हाँ, बिल्कुल। वह एक ग़द्दार और कमीना है। मैं अभी-अभी सड़क पर जाते

हुए एक गद्दार के चंगुल में पड़ गया था, और किसी तरह उससे पिण्ड छुड़ा सका।"

सू हुई ने च्याङ हुआ के शान्त चेहरे को विस्मय से देखा। फिर वह मुस्कुराते हुए बोली :

"तब तो तुम्हारा यहाँ पेइचिङ में रहकर काम करना बेहद ख़तरनाक है। तुम्हारे फ़िराक़ में गली-गली में ग़द्दार हैं, जबकि जेल में... मुझे बताओ, लिन ताओ-चिङ के बारे में तुम्हारा क्या ख़याल है?..." सू हुई ने बातचीत को ताओ-चिङ की ओर मोड़ दिया, क्योंकि उसे डर था – हालाँकि वह उसे खुलकर कहना नहीं चाह रही थी – कि वह लड़की शायद दुश्मन की अमानवीय यातनाओं के आगे टिक न पाये।

च्याङ हुआ ने तुरन्त जवाब नहीं दिया और चूँकि वह तेज़ी से यहाँ-वहाँ छिटके प्रकाश में क़दम बढ़ा रहा था, इसलिए सू हुई उसके चेहरे के भाव को न देख सकी। कुछ मिनट गुज़र जाने के बाद उसने धैर्यपूर्वक और शान्त भाव से जवाब दिया :

"मैं नहीं समझता कि वह हमारी हेठी करायेगी। मुझे ऐसा महसूस हुआ था कि वह क्रान्ति की सिर्फ़ हमदर्द ही नहीं, बल्कि पूरी तबियत से इसके लिए काम करने को तैयार है..." संक्षेप में उसने सू हुई को एक ज़मींदार परिवार में एक आया के रूप में ताओ-चिङ के काम और सुङ यू-पिन की काली-सूची को प्राप्त कर लेने के उसके प्रयासों का ब्योरा दिया। तब उसने फिर से विषय बदल दिया। "सू हुई कल तुम्हें शाम को अवश्य चले जाना है और बड़ी दीदी लिऊ से मुलाक़ात करनी है। ठीक अभी से हमें एक-एक सेकेण्ड का सर्वोत्तम उपयोग करना है। और विश्वविद्यालय प्राधिकरण को तुम अपने प्रस्थान का कैसे स्पष्टीकरण दोगी, मुझे यक़ीन है, यह तुम अच्छी तरह से कर सकती हो।"

सू हुई ने स्वीकृति में सिर हिलाया और उसका स्वर भावप्रवणता से काँप उठा, जब उसने प्रत्युत्तर में कहा, "चिन्ता मत करो, भाई च्याङ। मैं बिलाशर्त पार्टी का हुक्म बजाऊँगी। और कुछ भी कहना है? अब मेरे वापस लौटने का समय हो गया।"

"नहीं, कुल इतना ही कहना था। बस अपनी सुरक्षा के प्रति सचेत रहना। तुम विश्वविद्यालय वाले अपने काम को किसी ऐसे कॉमरेड को सौंप दो, जिस पर तुम्हें भरोसा हो, कारण कि तुम एक लम्बे समय तक वापस नहीं आओगी। एक दूसरी बात, वाङ सियाओ-येन से कहो कि वह समय-समय पर ताओ-चिङ की ख़बर लेती रहे। ताओ-चिङ को ज़मानत पर रिहा कराने के लिए सियाओ-येन के पिता से कहने के बारे में तुम्हारा क्या ख़याल है?"

"ख़ूब, यह तो एक शानदार विचार है। मैं जाकर सियाओ-येन से भेंट करूँगी।"

बग़ैर किसी गुमान के वे कोयले की पहाड़ी के पिछवाड़े के क़रीब पहुँच गये, जो धुँधले आकाश में एक ऊँट के कूबड़ की भाँति निस्संग और निरभ्र उठी हुई थी। जब सू हुई उसे छोड़कर चली, तो च्याङ हुआ ने एक छोटी-सी दूकान से माचिस की एक डिब्बी ख़रीदी और फिर मुड़कर उसकी छरहरी, फुर्तीली आकृति को तब

तक जाते देखता रहा, जब तक कि वह रात के गहन अँधकार में अन्तर्धान नहीं हो गयी। अकेले चहलक़दमी करते हुए उसने कोयले की पहाड़ी के शीर्ष के ऊपर इमारत के मण्डप की ओर अपनी नज़र उठायी, और अचानक उसकी आँखों के सामने ताओ-चिङ का उत्कण्ठा भरा उद्दीप्त चेहरा साकार हो उठा। उसकी काली भौंहें एक अवर्णनीय अभिलाषा और आत्मीयता से संकुचित हो गयी और उस मण्डप की ओर एकटक देखते-देखते उस सौम्य उत्साही लड़की की छवि उसके मन में और अधिक स्पष्टता से उभर आयी।

——:o:——

अध्याय 22

एक वर्ष और बीता।

पीकिङ विश्वविद्यालय के महिला छात्रावास के अपने साफ़-सुथरे छोटे कमरे में वाङ सियाओ-येन बेचैनी से चहलक़दमी कर रही थी। उसने 'राजनीतिक अर्थशास्त्र की रूपरेखा' की एक प्रति उठा ली, परन्तु पढ़ने का मूड न होने के कारण इसे एक तरफ़ रख दिया और आइने में अपनेआप को निहारने के लिए खड़ी हो गयी। उसका आमतौर पर शान्त और पीला चेहरा तमतमाया हुआ था, उसकी बरौनियाँ उत्तेजना में काँप रही थीं, और वह साफ़ तौर पर अनुभव कर रही थी कि उसका हृदय तेज़ी से धड़क रहा था।

"वह जल्दी ही यहाँ आ जायेगा।"

ताई यू से मिलने का विचार करते ही उसको हर्ष की फुरफुरी महसूस होने लगी। यह पहली बार था कि वह प्रेमासक्त हुई थी, और प्रेम ने उसे यौवन के आदर्शों और जीवन के आनन्द से सिर्फ़ धधका ही नहीं दिया था, बल्कि क्रान्ति में और उस लक्ष्य में उसकी आस्था को और सुदृढ़कर प्रतीत हुआ था, जिसके लिए उसने अपने काम को समर्पित कर दिया था। सियाओ-चेन क्रान्ति के बारे में ताओ-चिङ की अपेक्षा कम जानती थी, लेकिन एक चीज़ के बारे में वह निश्चित थी और वह यह थी कि इस कुत्सित पुराने समाज को ज़रूर उखाड़ फेंका जाना चाहिए, कि लोगों को एक ऐसे खुशहाल नये समाज के जन्म के लिए संघर्ष में उठ खड़ा होना चाहिए, जहाँ न्याय का राज्य होगा। अतः जब वह पहले-पहल ताई यू से एक दूसरे छात्र के कमरे में मिली और इस तेज़तर्रार नौजवान को क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादियों के निर्लज्ज अपराधों की भर्त्सना करते हुए सुना, तो उसके प्रति उसके मन पर एक अनुकूल प्रभाव पड़ा। वह इसके बाद अन्यत्र उससे दो बार मिली, और धीरे-धीरे वे एक-दूसरे से और निकट्तापूर्वक परिचित होते गये। ताई यू ने उसे पुस्तकें सुझायीं और उनकी विषय-सामग्री को स्पष्ट करने में सहायता की। वह स्वयं

अत्यधिक व्यापक अध्ययन किये हुए था, 'पूँजी' और दूसरी मार्क्सवादी क्लासिकी रचनाओं के पूरे पैरे ज़ुबानी बोल जाने में समर्थ था, जो तमाम छात्रों को विस्मय में डाल देता और वे उसकी तारीफ़ कर उठते। अध्ययनशील सियाओ-येन को यह नौजवान एक क्रान्तिकारी और विद्वान दोनों ही लगा, और जैसे-जैसे समय गुज़रता गया, उसकी प्रशंसा उसके प्रति प्रेम में परिपक्व होती गयी।

ताई यू अक्सर आता रहता था। हर बार वह उसके छात्रावास में आता, अपने विनम्र संकोचशील प्रवेश से पूर्व वह दरवाज़े पर तीन बार दस्तक देता।

"'पूँजी' कितना तक पढ़ गयी हो?" उसने एक दिन सियाओ-येन को देखने के लिए अपना चश्मा ठीक करते हुए बैठते ही पूछा।

उस पर नज़र पड़ते ही उसके गाल आरक्त होने लगते और जब वह बोलती तो उसका हृदय आवेश में काँपने लगता, लेकिन भरसक अपने को संयत बनाये रखते हुए उसने उसकी तरफ़ देखने का साहस किये बग़ैर ही उत्तर दिया :

"मैं अध्याय 51 पर पहुँच गयी हूँ, यानी वितरण सम्बन्ध और उत्पादन-सम्बन्ध पर। मैं इसे जल्द ही समाप्त कर लूँगी, लेकिन मैं इसे समझ नहीं पाती।"

"यह तुम्हारे लिए अच्छा है! यही तो वह दृष्टिकोण है जो एक मार्क्सवादी के अन्दर होना चाहिए। तुमने बताया कि तुम अध्याय 51 पर पहुँच गयी हो? क्या वहाँ पर यह नहीं कहा गया है?" उसने अपनी आँखें ऊपर की ओर उठायीं मानो सोच रहा हो, और उद्धृत करने लगा, "दूसरी ओर उत्पादन की पूँजीवादी प्रणाली का वैज्ञानिक विश्लेषण इसके विपरीत यह प्रदर्शित करता है कि विशिष्ट ऐतिहासिक विशिष्टताओं से युक्त यह एक विशेष प्रकार की उत्पादन-प्रणाली है, यानी किसी भी अन्य विशिष्ट उत्पादन-प्रणाली की भाँति ही इसके लिए सामाजिक उत्पादन की शक्तियों का एक उपलब्ध स्तर और विकास के उनके रूप इसकी पूर्व शर्त बनते हैं जैसे..." यहाँ पर वह एक मुस्कान के साथ सियाओ-येन के सामने यह स्वीकार करते हुए चुप हो गया कि "अनुच्छेद का बाक़ी हिस्सा मेरे दिमाग़ से उतर गया है। मेरी स्मरण शक्ति यूँ भी कमज़ोर है।"

"अरे तुमने कितने अच्छे ढंग से पढ़ा है। कितनी अद्भुत तुम्हारी स्मरण शक्ति है।" सियाओ-येन का सिर संकोच से झुक गया और उसके स्वर में निश्छल प्रशंसा का भाव था।

धीरे-धीरे यह उनके लिए असम्भव बनता गया कि वे इस तरह के विषयों पर ही केन्द्रित रह सके। जब कभी ताई यू आता वह लगातार कई मिनट तक ख़ामोशी में उसे निहारता हुआ बैठा रहता। सियाओ-येन को विश्वास था कि वह उसे प्यार करने लगी थी, लेकिन आत्मसम्मान का एक दृढ़ अहसास उसे पहली बार अपनी तरफ़ से अपनी भावनाओं को प्रकट करने से रोक देता था।

अतः वे कुछ समय तक बिना कोई शब्द बोले, अक्सर एक-दूसरे के सामने बैठे

रहते, फिर ताई यू अपना हैट उठाता और रुख़सत हो जाता। एक दिन दरवाज़े के सहारे टिककर उसे जाते देखती हुई वह अपने आँखों में आँसू भरकर बुदबुदायी :

"वह मुझ पर अनुरक्त लगता है, लेकिन वह इसे किसी तरह प्रकट क्यों नहीं करता?"

प्रेम की पीड़ा में सियाओ-येन का वज़न गिरने लगा। कभी-कभी बिस्तर पर पड़े-पड़े वह अपनेआप से कहती, "मुझे उससे यह कहने की हिम्मत जुटानी ही होगी कि उसके लिए एक हृदय प्रेम से परिप्लावित हो रहा है। अगर वह मुझे प्यार नहीं करता : तो मुझे उसका ख़याल पूरी तरह से छोड़ देना होगा।" लेकिन उसकी उपस्थिति में वह इतना शर्मा जाती कि बोल न पाती।

दरअसल ताई यू ने सियाओ-येन के प्रति अपने प्यार का इज़हार इसलिए नहीं किया था कि उसे अपने ऊपर वालों से अभी इसकी इजाज़त नहीं मिली थी।

एक रात उसने फ़ैसला किया कि वह इस मसले को अपनी रखैल के सामने छेड़ेगा। अतः कुछ सोच-विचार के बाद उसने उस मरियल औरत को कुहनी मारी, जो अब जवान नहीं रह गयी थी, जो डबलबेड पर उसकी बग़ल में सोयी हुई थी।

"उठो, फेङ-चुआन!" वह फुसफुसाया। "मुझे तुमसे कुछ कहना है।"

वाङ फेङ-चुआन ने यानी उस जासूस से, जिसने हू मेङ-एन की ताई यू के आत्मसमर्पण में मदद की थी, अपनी नींद भरी आँखें खोलीं, उसके गले में अपनी बाँहें डालीं और आलिंगन करती हुई बुदबुदायी :

"क्या है, ताई? कुछ देर और मुझे अपनी बाँहों में सो लेने दो।"

"नहीं, मुझे अब जाना चाहिए।" परन्तु जाने के लिए कोई हरक़त करने के बजाय कुछ हिचकिचाहट के बाद उसने आगे कहा, "मैं तुमसे बताना चाहता था कि पीकिङ विश्वविद्यालय की एक छात्रा मेरी दीवानी हो चुकी है। मैंने अब तक उसे कुछ कहा नहीं है। मैं तुमसे सलाह लेने की प्रतीक्षा करता रहा हूँ... अब, तुम्हारे ख़याल से मुझे क्या करना चाहिए?"

अब भी बिस्तर में लेटे ही लेटे वाङ फेङ-चुआन ने एक सिगरेट जलायी और ज़ोर से एक कश छोड़ा। अपनी आँखें छत की ओर टिकाकर उसने रुखाई से कहा :

"तो तुमने अब तक उसे काफ़ी नहीं परखा? जल्दी करो, उसको फ़ौरन बता दो। जल्दी उसको क़ब्ज़े में करो।" वह उस पर कामुक और खोज भरी निगाहें डालने के लिए मुड़ी। "सच है कि पीकिङ विश्वविद्यालय में अब अधिक लाल क्रान्तिकारी नहीं रह गये हैं, लेकिन हमारे पक्ष में भी तो बहुत छात्र नहीं है – उनमें से ज़्यादा तो पढ़ने के सिवाय और किसी चीज़ में दिलचस्पी ही नहीं लेते? क्या यह लड़की बाक़ी की तरह ही एक किताबी कीड़ा है? अगर है, तो आगे बढ़ो और उससे प्यार करो, लेकिन ध्यान रखो कि कहीं सचमुच में उस पर अपनी अक्ल न गँवा बैठो।" ताई यू पर एक तीखी नज़र डालती हुई, उसने अपनी बाँहें उसके गले में डालकर

सवाल किया, "क्या तुम उसे प्यार करते हो?"

"नहीं!..." ताई यू ने सिर हिला दिया, न तो उसने सियाओ-येन के प्रति अपनी सही भावना को खोला और न इस तथ्य को कि वह एक प्रगतिशील है। फिर भी वह औरत इतनी तेज़ थी कि उसने ताड़ लिया और एक सख़्त निगाह के साथ उसे चेतावनी दी :

"बेशक, उसे प्यार करो। लेकिन तुम प्यार किये जाने के क़ाबिल नहीं हो। तुम नहीं जानते कि प्यार क्या होता है और तुम्हें इसका कोई अधिकार नहीं है।"

ताई यू इतना आतंकित हो गया कि कोई प्रत्युत्तर न दे सका। उसने धीरे-धीरे अपने कपड़े पहने और अपनी काँख में काग़ज़ों का एक पुलिन्दा दबाये चल दिया।

उस शाम वह वापस सियाओ-येन के यहाँ गया। उसको दो हफ़्ते से न देख पाने की वजह से वह गहरे झेंप गयी और उसके गालों पर से आँसू ढलक चले, लेकिन झट वह अपनी भावुकता को छिपाने के लिए दूसरी ओर मुड़ गयी।

ताई यू उठ खड़ा हुआ। और सकपकाते हुए उस तक चलकर गया। खिड़की के दासे से टिककर वह खड़ी थी। उसके कन्धे पर एक हाथ रखते हुए उसने नरमी से कहा :

"सियाओ-येन, प्रिय कॉमरेड! मैं...मैं..तुम्हें प्यार करता हूँ।"

उसने अपना चश्मा उतार लिया और भावावेश में आकर उसके सर्द, सफ़ेद चेहरे को चूमने लगा।

सियाओ-येन ख़ुशी से अभिभूत हो गयी, मानो कोई स्वप्न देख रही हो। उसने इस आदमी को एकटक देखा, जिसको इतने अधिक समय से प्यार करती आ रही थी। ताई यू की बड़ी-बड़ी आँखों में भी आँसू उमड़ आये प्रतीत हो रहे थे, लेकिन वह कितना थका-थका और बीमार दिख रहा था। उसकी मुद्रा से आतंकित होकर सियाओ-येन ने उससे पूछा, "क्या बात है? क्या तुम्हारी तबियत ठीक नहीं है?" वह उसे सहारा देकर बिस्तर पर ले गयी, उसे लिटाया और एक कप चाय ढालकर दी, फिर ख़ुद उसकी बग़ल में एक स्टूल पर बैठकर उसे स्नेहपूर्वक और ख़ामोशी से निहारते लगी।

ताई यू एक क्षण तक लेटा रहा, मानो तन्द्रा में हो, फिर अपनी आँखें खोलकर एक क्षमाप्रार्थी मुस्कुराहट के साथ बोला :

"सियाओ-येन, तुम कितनी सुन्दर हो। कितनी मधुर और मोहक। पहली बार जब मैंने तुम्हें देखा, तभी से मैं तुमको भूल नहीं सका -- तुम उतनी ही पवित्र हो जितनी कि मैडोना। कोई भी जो तुम्हें देखेगा, ज़रूर चैतन्य हो उठेगा और अपनी पापी आत्मा को शुद्ध कर लेने की कामना करने लगेगा।" इसके साथ ही उसने उसका हाथ थाम लिया और अपने ख़ुश्क जलते होंठों से बार-बार चूमा।

"नहीं," सियाओ-येन अपने हाथ खींचते हुए मगर अपने गाल को उसके गाल

पर वैसे ही सटाये हुए बुदबुदायी, "जब मैंने तुम्हें पहली बार देखा चुन-त्साई, तभी से मैं...बेहद... लेकिन तुम मुझसे बहुत अच्छे हो। मैंने इस दुनिया में ताओ-चिङ को छोड़कर और किसी के लिए भी कभी इस तरह से महसूस नहीं किया है। तुम मेरे लिए सूरज की भाँति हो।"

"मेरा आदर्शीकरण मत करो – मैं वैसा नहीं हूँ।" ताई यू उर्फ़ चेङ चुन-त्साई ने सियाओ-येन को अपने पास बैठाकर धीरे-से और शुष्कता से प्रत्युत्तर दिया, "सियाओ-येन, मेरी प्रियतमा। तुम्हारी ख़ातिर मुझे अपनेआप को जागृत करना ही होगा और एक आदमी बनना होगा... मुझे प्यार करो प्रिये! मुझे हमेशा प्यार करो।"

यह एक सप्ताह पहले की घटना है। अब एक सप्ताह की उत्सुक प्रतीक्षा के बाद उसे फिर ताई यू से मिलना था।

आईने के सामने अपने बालों में कंघी करके सियाओ-येन ने अपने आरक्त कपोलों की ओर देखा और मुस्कुरा दी। अपने प्रेमी को मानो अपनी बग़ल में महसूस करते हुए, उसने उस साफ़-सुथरे, सुव्यवस्थित कमरे का निरीक्षण किया, जो एक गमले में लगे चमेली की खुशबू से महक रहा था। वह फिर मुस्कुरा उठी, जब उसने एक दराज़ खोली और एक लाल रंग के नक्काशीदार लाख के बक्से से एक सिंगारदान निकाला, जो उसकी बुआ द्वारा उसे उसके जन्मदिन पर उपहार में दिया गया था। उसने कभी सौन्दर्य-प्रसाधनों का इस्तेमाल नहीं किया था, और यह तभी से हमेशा एक दराज़ में बन्द पड़ा रहता था। आज, उसने इसे बाहर निकाल लिया और इसे खोलकर उसने अपने चेहरे पर पाउडर छिड़का। जब उसने अपना रूप आइने में निहारा उसके गालों की गुलाबी ताज़गी पहले से कहीं अधिक मोहक दिख रही थी, तो उसने लजाकर अपने रूमाल से पाउडर को फिर से पोंछ डाला। वह साधारण आदतों वाली लड़की थी, जो मेहनत से अपनी पढ़ाई करती थी, और अपने साज-श्रृंगार में कभी वक़्त नहीं बरबाद करती थी, इसलिए अब अपना समय बरबाद करने पर लज्जित होकर वह झट ड्रेसिंग-टेबल से अलग हट गयी और अपनी डेस्क से एक पुस्तक उठा ली।

घड़ी में तीन बज जाने के बाद कहीं जाकर सियाओ-येन ने जो बार-बार अपनी चिन्तातुर आँखें किताब पर से उठाकर खिड़की की ओर देख लेती थीं, अपनी छोटी बहनों में से किसी एक को अहाते से पुकारते हुए सुना, "कोई तुमसे मिलने आया है, दीदी।" उसने अपनी किताब एक तरफ़ फेंक दी और बाहर दौड़ पड़ी। चेङ तुन-त्साई आज जितना बना-ठना और चुस्त-दुरुस्त लग रहा था, वैसा तो पहले कभी नहीं दिखायी देता था। दाढ़ी बनवाकर चिकना बना हुआ, वह एक पश्चिमी शैली का नीले सर्ज का सूट पहने हुआ था और अपनी सफ़ेद कमीज़ की कॉलर बाहर किये हुए था। सियाओ-येन का ख़याल था कि वह तीस वर्ष या उसी के

आस-पास की उम्र का रहा होगा, लेकिन आज तो वह बमुश्किल ही पच्चीस से ऊपर का लग रहा था।

उसके घर पर ताई यू का यह पहला आगमन था। एक प्रशंसाभरी कुशलक्षेम के बाद वह बोला, "यहाँ तो पूरी ख़ुशहाली है, सियाओ-येन। क्या तुम अच्छे खाते-पीते लोग हो?"

उसे कुछ नाश्ता पेश करती हुई सियाओ-येन उसकी बग़ल में बैठ गयी और प्रत्युत्तर में बोली :

"अरे नहीं। डैडी की तनख़्वाह हमारे लिए पूरी नहीं पड़ती, और सरकार अपने कर्मचारियों को नियमित भुगतान भी नहीं करती। अगर हम लोग पूरी तरह से अपने पिता की तनख़्वाह पर ही निर्भर रहते, तो भूखों मर जाते, लेकिन मेरे एक धनी-मानी चाचा हैं, जो एक बैंक मैनेजर हैं, और वह अक्सर हमारी मदद करते रहते हैं – यही कारण है कि हम ठीक-ठाक जी ले रहे हैं।" ताई यू पर एक निरीक्षणभरी दृष्टि डालने के बाद वह आगे बोली, "तुम पहले से काफ़ी बेहतर लग रहे हो। तुम फिर बीमार नहीं पड़े? है न? तुम क्यों मुझसे यह बताने से हमेशा इन्कार करते रहते हो कि तुम कहाँ रहते हो? तुम जानते हो कि मैं किसी दिन पहुँचकर और तुमसे मिलकर कितनी ख़ुश होती?"

ताई यू ने सियाओ-येन की बाँह थाम ली। उसका चेहरा फिर धुँधला गया। "मेरी प्यारी, मेरे काम का स्वभाव इसकी इजाज़त नहीं देता। तुम मुझे ज़रूर माफ़ कर देना।...तुम इस पूरे सप्ताह कैसी रही?"

"बहुत बढ़िया – सिवाय इसके कि तुमसे बिछुड़ी रही।"

उसने उसे अपनी बाँहों में भर लिया। जब उसने उसके आलिंगन से अपने को थोड़ा मुक्त कर लिया तो अपने बालों को ठीक-ठीक किया और उसकी ओर नज़ाकत से देखा।

"क्या तुम्हें पता है कि ताओ-चिङ जल्द ही रिहा हो जायेगी?" सियाओ-येन ने पूछा। "वह बदमाश हू मेङ-एन पेइपिङ छोड़ चुका है। किसी भी सूरत में ताओ-चिङ कम्युनिस्ट नहीं है। तब डैडी ने कुछ सूत्र टटोले और पूरी सम्भावना है कि वह छोड़ दी जायेगी। जैसे ही मुझे उसकी रिहाई की तारीख़ का ठीक-ठाक पता चलेगा मैं उसे घर लाने के लिए जाऊँगी। चुन-त्साई, कुछ बात है जिसे मैं तुमसे पूछना चाहती रही हूँ, लेकिन कभी हिम्मत नहीं पड़ी। ताओ-चिङ ने बताया कि तुम तिङसिएन में उसके यहाँ गये थे। वह इससे बहुत ख़ुश नहीं लगी। उसने मुझे बताया कि तुमने उसे बुरी सलाह दी थी -- दरअसल यह तुम थे जिसने मेरी बुआ को उखाड़ फेंकने का प्रस्ताव किया था।"

ताई यू ने एक सिगरेट जलायी और एक बेपरवाह लहजे में जवाब देने से पहले कुछ चाय पी :

"उसने मुझे पूरी तरह ग़लत समझा! मैंने उसे सावधान किया था और एक चाओ नाम के नौजवान को कहा था कि वे अतिवादी न बनें या वामपन्थी ग़लतियाँ न करें। मेरी सलाह यही थी कि वे एक प्रतिक्रियावादी अध्यापक वू को निकाल बाहर कर दें, लेकिन तुम्हारी बुआ से सम्बन्ध बनाये रखें। भगवान ही जानता है कि वे कैसे यह गड़बड़ कर बैठे। फिर मैं वहाँ दो ही घण्टे तो रहा था।"

"तो यह बात है।" सियाओ-येन ने राहत की एक गहरी साँस छोड़ी और एक विश्वास और क्षमायाचना भरी मुस्कान के साथ कहा, "मुझे ज़रूर माफ़ कर दो। मुझे उससे सुनने में ज़रूर ग़लती हो गयी होगी। वह बहुत खुश होगी चुन-त्साई, जब वह बाहर आ जायेगी और सुनेगी कि हम प्यार करने लगे हैं। ताओ-चिङ पहले प्यार में पड़ चुकी है, मैं उससे उम्र में बड़ी हूँ लेकिन कभी मेरा कोई ब्यायफ़्रेण्ड नहीं रहा। वह मुझे इतनी शुष्क होने पर हँसा करती थी।"

ताई यू की आँखें बाहर की ओर उभर आयीं; जब उसने उस पर एक तिरछी निगाह डाली और मुस्कुरा कर पूछा, "अब तुम गर्व से उसको बता सकती हो कि तुम्हें एक प्रेमी मिल गया है जो जल्दी ही तुम्हारा पति बनेगा – ठीक?"

सियाओ-येन ने उसे एक धक्का दिया और लज्जित होकर, अपना सिर एक ओर मोड़ लिया :

"मैं अभी शादी नहीं करना चाहती। तब तक नहीं, जब तक कि स्नातक नहीं हो जाती।"

"बेशक, मैं तुम पर दबाव नहीं डालूँगा, प्रिये..."

ताई यू के चले जाने के बाद सियाओ-येन खुशी से फूली न समाती हुई, रात का खाना खाने लगी। आमतौर पर बहुत शान्त रहने वाली, वह अचानक अपनी छोटी बहनों के साथ बहुत बातूनी, उन्हें तंग करने वाली और मज़ाक़ करने वाली बन गयी। इस परिवर्तन से भौचक्का होकर श्रीमती वाङ अपने पति पर मुस्कुरायी।

"हुङ-पिन, क्या तुम जानते हो कि हमारी सियाओ-येन को एक ब्वॉयफ़्रेण्ड मिल गया है?"

प्रोफ़ेसर वाङ ने अपनी लजाती बड़ी बेटी की ओर से नज़र हटाकर दो छोटी बेटियों की ओर देखा और ठठाकर हँस पड़ा।

"अरे हाँ, मेरे जासूसों ने तो इसकी सूचना पहले ही दे दी थी। मुझे कोई एतराज़ नहीं है, एकदम नहीं। सियाओ-येन अब बाईस वर्ष की हो गयी है। यही तो ब्वॉयफ़्रेण्ड रखने का उसका समय है, लेकिन..." उसने दूसरा कौर मुँह में भर लिया और अपना सिर हिलाते हुए बोला। "लेकिन उसे ज़रूर ईमानदार और सु-शिक्षित होना चाहिए। इसके बारे में तुम्हें क्या कहना है सियाओ-येन? वह कैसा आदमी है?"

सियाओ-येन जवाब देने से पहले कुछ मिनट तक अपना सिर झुकाये रही :

"वह बिल्कुल ठीक है। वह बहुत पढ़ा हुआ और प्रगतिशील है। तेज़तर्रार और खरा भी है..."

"हाँ, मैं समझ गया। पिछले वर्ष के दौरान सियाओ-येन के विचारों में भारी परिवर्तन हुआ है। कार्ल मार्क्स की एक शिष्या के रूप में इसने मेरे ऊपर भी भारी प्रभाव डाला है। मैं समझता हूँ कि वह नौजवान भी ऐसा है... ठीक है, मैं तुम्हें शुभकामना देता हूँ। हर चीज़ अपने अपरिहार्य रास्ते पर जा रही है; क्वोमिन्ताङ इतना भ्रष्ट है कि यह कोई ताज्जुब नहीं है कि लोगों के बीच व्यापक असन्तोष फैल जाये..." उसने अपनी छोटी बेटी, लिङ-येन, का सिर थपथपाया और स्वीकृति में अपना सिर हिलाते हुए दिल खोलकर हँसा। जब तुम इतनी ख़ुश हो सियाओ-येन तो मैं भी ख़ुश हूँ। लेकिन तुम्हें बहुत सावधान रहना होगा।" उसने अपना सिर हिलाया। "माँ-बाप अपने बच्चों के बारे में चिन्तित हुए बिना नहीं रह सकते, भले ही यह ज़रूरी न हो।"

सियाओ-येन आरक्त और अवसन्न हो उठी, जब उसने हार्दिक कृतज्ञता से भरकर अपने आर्द्र, स्नेहपूर्ण माँ-बाप और फिर अपनी उन शरारती बहनों को देखा जो उसको देखकर स्तब्ध हो जाने का स्वांग कर रही थी।

"कृपया चिन्ता न करें।" उसने तत्काल मन्द स्वर में कहा। "वह एक बढ़िया आदमी है..." ऊपर देखती हुई उसने संकोचपूर्वक आगे कहा, वह निश्चय नहीं कर पा रही थी कि क्या जवाब ढूँढ़ें, "डैडी, तुम जानते हो कि ताओ-चिङ जल्दी ही रिहा हो जाने वाली है। उसके लिए कोई ठौर नहीं है, जहाँ वह जा सके। क्या मैं उसे हम लोगों के साथ ही रहने को कह सकती हूँ?"

प्रोफ़ेसर वाङ के चेहरे की मुस्कान ग़ायब हो गयी, और श्रीमती वाङ ने उसकी ओर बेचैनी से देखा।

"वह एक अच्छी लड़की है, लेकिन...कुछ बचपना कर जाती है..." उसने एक सिगरेट जलायी और कुछ समय तक चिन्तामग्न होकर कश छोड़ता रहा। "मैं समझता हूँ कि अब भी हम इस मामले को ठीक कर सकते हैं। मैंने जब तुम्हारे फूफा से म्युनिसिपल सरकार में उसके दोस्त से बात करने को कहा था तो मैंने यह उम्मीद नहीं की थी कि वह इतनी जल्दी छोड़ दी जायेगी। उसे यहाँ आने दो। ऐसा लगता है कि आज के नौजवान लोगों को अब और अधिक उनकी पढ़ाई में क़ैद करके नहीं रखा जा सकता।" वह रुक गया। उसे और आगे बोलने का इत्मीनान नहीं हो रहा था।

जब वह अपनी कुर्सी पर पीछे की ओर तिरछा होकर बैठा तो उसकी गम्भीर, चिन्तित भावाभिव्यक्ति पर सियाओ-येन हँसे बिना न रह सकी।

"डैडी।" उसने प्रोफ़ेसर का कन्धा थपथपाया और मुस्कुरा दिया। "एक समय था जब तुम चाहते थे कि मैं पुस्तकों में ही धँसी रहूँ और राजनीति से दूर ही रहूँ।

अब तुम पढ़ाई के द्वारा देश को बचाने की डॉ. हू शिह को योजना पर क्या सोचते हो?"

प्रोफ़ेसर वाङ ने एक क्षण तक उसको घूरकर देखा मानो वह कोई अजनबी हो। फिर मेज़ पर अपना मुक्का मारकर वह प्रभावशाली ढंग से बोल उठा :

"हर चीज़ विकसित और परिवर्तित हो रही है। इस संसार में कोई चीज़ ठहरी हुई नहीं रह सकती। यह बात हमारे विचारों पर भी लागू होती है।"

श्रीमती वाङ, जो अपने पति की बग़ल में बैठी थी, अपनी छोटी बेटी के लिए एक पुलोवर बुनने में व्यस्त थी। अब उसने सियाओ-येन पर नज़र डाली और मुस्कुराकर कहा :

"शायद तुम अभी नहीं जानती सियाओ-येन, लेकिन हाल ही में तुम्हारे पिता हर रात सोने जाने से पहले दो घण्टे के लिए दर्शन पढ़ने लगे हैं। 'ड्यूहरिंग मत-खण्डन', 'द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद', 'दर्शन की दरिद्रता'... वे किताबें तो मेरे पल्ले पड़ती नहीं, परन्तु लगता है कि उन्होंने इनको बदल दिया है।"

सियाओ-येन अपने पिता पर ख़ुशी से खिल उठी और उसके अण्डाकार चेहरे पर दो गहरे गड्ढे बन गये।

——:o:——

अध्याय 23

1925 में हो-उमेज़ू समझौते पर हस्ताक्षर करने के साथ ही क्वोमिन्ताङ सरकार ने उत्तरी चीन के अपने प्रभुत्व के सारे अधिकार जापानी साम्राज्यवादियों को सौंप दिये। होपेई से चीनी फ़ौजी टुकड़ियों को वापस बुलाने के बाद से पेइपिङ का क्वोमिन्ताङ कार्यालय बन्द हो गया, और हू मेङ-एन दक्षिण के लिए कूच कर गया। नतीजतन ताओ-चिङ और यू शू-सिऊ एक साल से भी अधिक के कारावास के बाद जुलाई 1935 में ज़मानत पर छोड़ दी गयीं, क्योंकि उनके ख़िलाफ़ कोई सबूत न था।

शू-सिऊ पहले रिहा की जाने वाली थी, लेकिन वह ताओ-चिङ से जुदा होना बरदाश्त नहीं कर सकती थी। विदा होने से पहले यार्ड में अपनी हवाखोरी के दौरान वह अपनी दोस्त के पास गयी और अपनी आँखों में आँसू भरकर बोली :

"यहाँ से बाहर निकलने के बाद मैं तुमको इतना अधिक देख न सकूँगी।"

ताओ-चिङ ने मुस्कुराते हुए उसका कन्धा थपथपाया और उत्तर दिया :

"बेवक़ूफ़ बच्ची! सोचो तो, तुम अपनी माँ से कितना बिछुड़ गयी हो। अब तुम घर जा सकती हो, और फिर से उसके साथ रह सकती हो – तुम कितनी ख़ुश होगी।"

"लेकिन तुम्हारी कमी बुरी तरह खटकेगी।" लड़की ने अपने होंठ भींच लिये।

"मैं तुमको और बहन चेङ को अपनी माँ से कोई कम प्यार नहीं करती। मैं तुम दोनों में से किसी को भी कभी नहीं भूलूँगी। मेरी माँ ने मुझे जीवन दिया, लेकिन तुमने. ..और पार्टी ने...मुझे जीने का मक़सद दिया है।"

लड़की की निष्कपटता और स्नेहशक्ति से गहरे अभिभूत होकर ताओ-चिङ ने उसका हाथ पकड़ लिया और प्यारपूर्वक उसकी आँखों में देखा।

"जब तक हम एक ही रास्ते पर चलीत रहेंगी, साथ-साथ रहेंगी। क्या तुम देखती नहीं शू-सिऊ कि यदि हमारे आदर्श एक है, तो हम एक ही सामान्य लक्ष्य से आबद्ध हैं। भले ही स्थल और समुद्र हमें अलग-अलग कर दें।"

उस लड़की ने बार-बार स्वीकृति में सिर हिलाया और उसका नाज़ुक चेहरा खिल उठा। अपना हाथ ताओ-चिङ के कन्धे पर टिकाकर उसने आवेश में कहा :

"वे मरदूद और गुण्डे सोचते हैं कि हम गिरफ़्तारी से ख़ामोश पड़ जायेंगी। क्या तमन्ना है! उन्होंने तो मुझे यहाँ मार्क्सवादी-लेनिनवादी संस्थान में भेज दिया। उनको शुक्रिया, मैंने सत्य पा लिया है।" सतर्क होकर चारों ओर नज़र डालती हुई और यह देखकर कि आस-पास कोई न था, वह जल्दी-जल्दी आगे बोलती गयी, "जैसे ही मैं बाहर होऊँगी, एक मुहिम चलाऊँगी। मैं आकर तुमसे मिलूँगी और तुम मेरी मार्गदर्शक होगी, होगी न?"

ताओ-चिङ ने स्वीकृति में सिर हिलाया और एक मुस्कान के साथ अपने को अलग कर लिया।

दस दिन बाद ताओ-चिङ भी मुक्त कर दी गयी और वाङ सियाओ-येन उसे घर ले जाने के लिए जेल में आयी।

लंच का समय था, और श्रीमती वाङ एक सफ़ेद एप्रन पहने रसोईघर में व्यस्त थी। सियाओ-येन अपनी सहेली को सीधे भोजनकक्ष में ले गयी, जहाँ प्रोफ़ेसर वाङ उनका इन्तज़ार कर रहा था। जैसे ही उसने ताओ-चिङ को देखा, उसने जाम उठाया और हर्ष से बोल उठा।

"स्वागत! वर्ग-संघर्ष के मोर्चे से वापस आने वाले योद्धा का स्वागत!" ताओ-चिङ को मुस्कानपूर्वक गिलास पेश करते हुए वह आगे बोला। "तुम्हारी और तुम्हारे दोस्तों की विजय के लिए।"

"बहुत-बहुत धन्यवाद चाचा।" ताओ-चिङ अपने गिलास से चुस्की लेती रही, जबकि प्रोफ़ेसर अपनी गिलास ख़ाली कर चुका था। "तुम सब बैठ जाओ। सुएह-येन और लिङ-येन, तुम लोग क्यों नहीं अपनी बहन की सबसे अच्छी सहेली का स्वागत करती?... हो सकता है, उसने तुम्हारी बुआ को नाखुश किया हो, लेकिन हम उसके वापस आने पर स्वागत करते हैं।"

"स्वागत, बहन लिन!" किशोर वय वाली दो लड़कियों ने अपनी मित्रवत, उत्सुक आँखें ताओ-चिङ के पीले चेहरे पर टिका दीं; और एक लम्बे अर्से से उसे

न देख पाने की वजह से कुछ-कुछ शर्माती हुई, उसकी कुर्सी की बग़ल में खड़ी हो गयीं।

"मैं तुम्हारी सारी सहायता के लिए बहुत आभारी हूँ, चाचा," ताओ-चिङ बोली, लेकिन प्रोफ़ेसर उसके धन्यवादज्ञापन के बीच ही में बोल उठा। हाथ में एक गिलास लिये वह अपनेआप को हल्का महसूस करने के लिए अपनी अधीरता में उत्तेजित हो रहा था।

"नहीं, आभारी तो मुझे होना चाहिए। तुमने मेरी बेटी को काफ़ी-कुछ सिखाया है, और बदले में उसने मुझे सिखाया है। मैं तुमको बताऊँ ताओ-चिङ, यह पिछले छह माह या उससे भी अधिक समय से मुझे ताज़ा घटनाओं से निकटता से वाक़िफ़ कराती रही है। उसने अपने द्वारा प्रस्तुत विश्लेषण और दृष्टिकोण से वास्तविक स्थिति के बारे में मेरी आँखें खोल दी हैं – यक़ीन मानो यह सच है। क्वोमिन्ताङ सरकार बद से बदतर होती जा रही है। हमलावरों को बाहर खदेड़ने से पहले घरेलू दिक़्क़तों का निपटारा करने की इसकी नीति ने पहले उत्तरी-पूर्वी चीन को और फिर उत्तरी चीन को आत्मसमर्पण की स्थिति में ला दिया है। वे हमारी इस महान धरती को विनाश की ओर घसीट रहे हैं..." उसने अपना चश्मा पोंछा और उसे एक चपल, उत्तेजक ढंग से अपनी बेटियों के सामने घुमाया, फिर अपना सिर हिलाकर चिल्लाया, "क्या हम इसको झेल सकेंगे कि एक छोटा-सा द्वीपनुमा देश हमारी पाँच हज़ार साल पुरानी सभ्यता वाले देश पर बेरोकटोक चढ़ बैठे? नहीं! मैं तुम लोगों के संघर्ष का समर्थन करता हूँ – हालाँकि 'संघर्ष' वाला वह शब्द पहले मुझे सिरदर्द पैदा कर देता था।" वह ठठाकर हँस पड़ा।

"मेरे प्रिय प्रोफ़ेसर, यह भाषण देने का वक़्त नहीं है।" श्रीमती वाङ चुपके से आ पहुँची थी जबकि उसका पति अपना राजनीतिक दृष्टिकोण व्यक्त कर रहा था। उसने ताओ-चिङ को बाँहों में ले लिया और एक मातृवत स्नेह से कहा, "तुम कितनी दुबली हो गयी हो मेरी प्यारी। देखो तो उन्होंने क्या गत बना दी है इस प्यारी लड़की की!..." अपनी आँखों में उमड़ आये आँसूओं को पोंछते हुए उसने अपनी पति से मृदुता के साथ कहा, "मुझे यक़ीन है कि तुम लोग अपने-अपने स्तर से जितना जान सकते हो, वह काफ़ी कुछ जान चुके हो। हर कोई अपना ही अपना ख़याल रखता है। जेल का वह घटिया खाना खाने के बाद ताओ-चिङ ज़रूर भूल गयी होगी, इसलिए आज मैंने विटामिन ए और बी से भरपूर कुछ ख़ास पकवान तैयार किये हैं। चलो, अभी शुरू कर दें।"

इस पर सभी ठठाकर हँस पड़े और खाना खाने की पूरी अवधि में वे खुशी-खुशी बतियाते रहे। ताओ-चिङ खुश थी कि सियाओ-येन कितनी बदल चुकी थी, और उसकी सहेली का परिवार कितना अधिक प्रगतिशील प्रसन्न हो चुका था। महीनों तक जेल का खाना खाने के बाद लज़ीज पकवान बहुत स्वादिष्ट लगे,

और इस नये घरेलू माहौल में अपनी सद्यःप्राप्त आज़ादी और क्रान्ति के लिए फिर से काम कर सकने की सम्भावना से झूम उठी, लेकिन इस अचानक परिवर्तन ने उसे उसी तरह स्तब्ध और भौचक्का कर दिया था, जिस तरह वह सालभर से अधिक समय पहले अपनी गिरफ़्तारी पर हुई थी। यह एक स्वप्न जैसा प्रतीत होता था।

लंच के बाद सियाओ-येन ताओ-चिङ को अपने कमरे में ले गयी। दोपहर के बाद की धूप खिड़की के दासे पर रखे सफ़ेद चमेली के गमले पर चमकती हुई, उस साफ़-सुथरे छोटे कमरे को उष्णता और मस्ती से भर दे रही थी। ये लड़कियाँ एक-दूसरे का हाथ थामे एक क्षण तक ख़ामोश रहीं, वे इतनी अधिक भावुक हो उठी थीं कि बोल नहीं पा रही थीं। आख़िरकार ताओ-चिङ बोली :

"सियाओ-येन, क्या उस रात जब मैं गिरफ़्तार हुई तो तुम कार के पीछे-पीछे नहीं दौड़ती रही? मैंने जेल में कितनी बार उस रात को और अपनी उन दिली बातों को याद किया। उसने सचमुच हमारी दोस्ती को प्रमाणित कर दिया।"

"हाँ, मैं कार के पीछे दौड़े बिना न रह सकी," सियाओ-येन ने अपना सिर लटकाये एक शान्त स्वर में जवाब दिया। "मैं इतनी घबरायी हुई थी कि तुमको पकड़ लेने और वापस खींच लेने के लिए उत्कण्ठित हो गयी थी... यह जानो कि मैं उस पूरी रात रोती रही। लेकिन उस दिन ने मुझे इस गन्दे समाज की असली प्रकृति और क्वोमिन्ताङ की असली हरामज़दगी को दिखा दिया था। पहली बार वह नर-पिशाच हू मेङ-एन तुम्हारे पीछे पड़ा था जिसको मैंने एक आदमी समझ रखा था। लेकिन तुम्हारे इस भयावह अनुभव ने मुझे एक सबक सिखा दिया और मेरी आँखें खोल दीं।" उसने ख़ुशी से चमकता चेहरा ऊपर उठाया, हालाँकि उसके गालों पर से आँसू ढुलक रहे थे। उन्हें पोंछते हुए उसने ताओ-चिङ के दुबले हाथ को सहलाया और आगे बोली, "मुझे अक्सर तुम्हारी ये पंक्तियाँ याद आती थीं जिनको तुमने एक क्लासिकीय कविता से उद्धृत किया था : कोई भी दावानल इसे पूरी तरह जला नहीं सकता; बसन्ती हवा इसे फिर से प्राणवान बना देती है। यह सच है। जब तुम गिरफ़्तार हो गयी, तो मैं जान गयी कि मुझे तुम्हारी जगह लेनी है, और तुम्हारे काम को आगे बढ़ाना है। अगर मैं गिरफ़्तार हुई होती, तो कई दूसरे मेरा काम सँभाल लेते और संघर्ष करते हुए आगे बढ़ते। हाँ, कोई भी दावानल इसे पूरी तरह नहीं जला सकता। कभी नहीं।"

ताओ-चिङ थकान से चूर होकर बिस्तर पर लेट गयी, और अपनी आँखें अपनी सहेली पर टिकाकर प्रत्युत्तर में बोली :

"मैं तुम्हारे पत्रों से जान गयी कि तुम पहले से अधिक सक्रिय होगी और काफ़ी अच्छा काम करोगी और अब तो तुमने अपनी पढ़ाई में एक निश्चित उद्देश्य पा लिया है। मैं इस पर बहुत ख़ुश हूँ।"

"क्या तुमने यह महसूस किया?" सियाओ-येन अपनी सहेली की समझदारी

और प्रशंसा से बेहद प्रसन्न हो उठी। "हालाँकि तुम सारा ब्योरा नहीं जानती। विश्वविद्यालय में मैंने उन लोगों से निकट सम्पर्क बनाये रखा, जो मुझे कम्युनिस्ट या युवा लीग के सदस्य लगते और दूसरे प्रगतिशीलो से भी सम्पर्क बनाये रखती। मैं उनकी सारी गतिविधियों में शामिल हो चुकी हूँ, और एक सक्रिय कार्यकर्ता बन गयी हूँ।" एक लघुविराम के बाद वह आगे बोली, "क्या तुम्हें ली हुआई-यिङ की याद है? वह एक बार तुम्हारे लिए चिन्तित हुई थी और हमारी मददगार बनी थी। लेकिन अब वह एक कवयित्री बनना चाहती है और अपना सारा समय शेक्सपीयर को पढ़ने में ख़र्च करती है। अब वह विश्वविद्यालय की सर्वसुन्दरी है – एक नियमित सोसायटी-गर्ल। वह ख़ूब बनाव-सिंगार करती है।"

सियाओ-येन अपनी सहेली का हाथ अपने हाथ में लेकर बिस्तर के कोर पर बैठी थी। ताओ-चिङ, जो ध्यानपूर्वक सुन रही थी, मुस्कुराकर बोली :

"ढुलमुल होना निम्न-पूँजीपति वर्ग का स्वभाव ही है। ली हुआई-चीङ कोई अलग नमूना नहीं है... प्रसंगवश, बताओ सियाओ-येन, क्या तुम्हें मेरे दोस्तो -- लू चिआ-चुआन, लो ता-फाङ, च्याङ हुआ, सू निङ और सू हुई के बारे में कोई ख़बर मिली है? मैंने जेल में नये दोस्त बनाये, लेकिन मैं अपने पुराने दोस्तों को नहीं भूल सकती।"

"मैंने लू चिआ-चुआन या लो ता-फाङ के बारे में कोई ख़बर नहीं सुनी है। सू निङ जेल में है। यह बताते हुए ताज्जुब होता है कि उसकी माँ को मेरे बारे में ख़बर लग गयी और वह बार मेरे यहाँ आ पहुँची। सू हुई अभी तक वापस नहीं लौटी है। हालाँकि कोई आया ज़रूर..." अचानक उसके गाल में गड्ढे पड़ गये. वह पहले से इतनी अधिक जवान दिखने लगी और इतनी अधिक सजीव हो उठी कि ताओ-चिङ ने उसे वैसा पहले कभी नहीं देखा था। उसने अपनी सहेली को कोहनी मारी और एक मृदु हँसी के साथ आगे कहती गयी, "कोई व्यक्ति हॉस्टल में मेरे यहाँ दो बार आया और दोनों बार शाम को ही। उसने अपना नाम ली बताया और तुम्हारे बारे में पूछा। मुझे शुबहा हुआ कि वह च्याङ हुआ था, जिसका तुम ज़िक्र करती थी। वह तुम्हारे प्रति बहुत स्नेहिल लगता था।"

"मुझे इसमें शंका है," ताओ-चिङ ने कुछ चौंकते हुए उत्तर दिया। "च्याङ हुआ पेइपिङ में क्या कर रहा होगा? तुम जानती हो सियाओ-येन कि सबसे बढ़िया बात जो मेरे साथ कभी हुई, वह लू चिआ-चुआन, च्याङ हुआ और लिन हुङ से मुलाक़ात थी, जिनको मैं तब जान पायी जब मैं जेल में थी, लेकिन उनको याद करके मेरे मन में टीस उठती है। लिन हुङ मारी जा चुकी है... वैसे हम आशा करें कि च्याङ हुआ यहाँ पेइपिङ में है। क्या तुम्हें पता है कि उसे कैसे ढूँढ़ा जाये?"

"नहीं।" सियाओ-येन ने अपना सिर हिला दिया और अपनी सहेली को निहार कर एक डूबे हुए स्वर में बोली, "मैं लिन हुङ के बारे में सुन चुकी हूँ...वह

अपनेआप को चेङ चिन कहती थी न?"

"तुमको कैसे मालूम?"

"यू शू-सिऊ ने मुझे बताया था। वह जिस दिन रिहा हुई, उसी दिन मुझसे मिलने आयी थी और घण्टों अपने जेल-जीवन और संघर्ष के बारे में बताती रही। उसने तुम्हारे और लिन हुङ के द्वारा उस पर छोड़े गये प्रभाव के बारे में मुझे बताया।" सियाओ-येन ने अपनी आँखें मूँद लीं और गहरी साँस ली।

"जिस क्षण मैं अपनी आँखें बन्द करती हूँ, उस क्षण इस प्यारभरी, संकल्पबद्ध महिला को देखने लगती हूँ।"

ताओ-चिङ ने वहाँ पड़े-पड़े आँखें अपने दोनों हाथों से ढँक लीं तथा आहिस्ते से और चिन्तित मुद्रा में कहा :

"उस जैसी महिला कभी नहीं मरती। वह हमेशा ज़िन्दा रहेगी..."

इसी समय शू-सिऊ धड़धड़ाती हुई कमरे में आ गयी। जैसे ही उसने ताओ-चिङ को देखा, वह उससे गले लग जाने को खुशी से चीख़ती हुई दौड़ पड़ी।

"मैं बहुत खुश हूँ कि तुम बाहर आ गयी ताओ-चिङ। माँ मुझे जेल में तुमसे मिलने नहीं जाने देती; लेकिन मैं जानती थी कि तुम यहाँ आओगी, इसलिए मैंने खिसक लेने की जुगत भिड़ायी और सीधे यहाँ चली आयी। ओह, क्या यह शानदार नहीं है। अब हम साथ-साथ उस राक्षस च्याङ काई-शेक से लड़ सकती हैं।"

सियाओ-येन खड़े-खड़े स्नेहासिक्त भाव से इस ज़िन्दादिल भावुक लड़की को निहार रही थी, वह शू-सिऊ के उल्लास और सही रास्ता अख़्तियार करने की उसकी संकल्पबद्धता से चकित थी, और वह भी ऐसी यातनाएँ झेलने के बावजूद। उसकी आँखें प्यार के आँसुओं से छलछला उठीं।

ताओ-चिङ लड़की के दुबले कन्धों को पकड़कर और उसके चेहरे को देखते हुए बिस्तर पर उठ बैठी थी।

"मैं समझती हूँ कि तुम्हारा वजन कुछ बढ़ा है बच्ची। कौन-कौन-सी बढ़िया चीज़ें तुम्हारी माँ तुम्हारे लिए पकाती रही है?"

"कुछ नहीं।" शू-सिऊ ने मुँह फुला लिया। "माँ मुझे डाँटती-फटकारती रही है और पिता भी। तुम जानती हो कि मैं झूठे आरोप पर गिरफ़्तार हुई थी, फिर भी वे कहते हैं मैंने लाल कवर वाली एक पुस्तक पीकिङ विश्वविद्यालय ले जाने की जो लापरवाही की थी, उसे ठीक करने के लिए यह अच्छी सज़ा थी। उन्हें इसकी कोई जानकारी नहीं है कि मैं एक सन्दिग्ध अपराधी के रूप में जेल गयी थी और एक असली क्रान्तिकारी बनकर बाहर आयी हूँ। उन्होंने मुझे चेतावनी दी है कि अगर मैं फिर पकड़ी गयी तो सचमुच मेरा सिर उड़ा दिया जायेगा। अत: वे सतर्कता से मेरी निगरानी करते हैं, और घर से निकलने नहीं देते। उन्होंने क्रान्तिकारी सिद्धान्त वाली मेरी सारी किताबें हटा दी हैं। मेरा बाप कायर है और बेशक माँ भी, मेरे बचाव के

लिए बुद्ध की प्रार्थना करती हुई, उसी के पीछे-पीछे चलती हैं। मेरे लिए बढ़िया-बढ़िया चीज़ें पकाने के लिए उसके पास समय ही कहाँ रहता है?"

इस मनोरजंक वृत्तान्त ने ताओ-चिङ और सियाओ-येन को हँसा दिया। लेकिन शू-सिऊ उनकी हँसी में शामिल न हुई। दोनों को एक धक्का देकर वह तमतमा गयी और बरस पड़ी :

"इसमें हँसने की क्या बात है? मैं गम्भीरता से कह रही हूँ और तुमसे राय लेने आयी हूँ। मैं लाल सेना में भरती होने या किसी फ़ैक्टरी में काम करने जाना चाहती हूँ ताकि में एक असली सर्वहारा बन सकूँ। जो भी हो, मैं अब घर पर नहीं रहूँगी।"

"ठीक है मेरी प्यारी, लेकिन इतना ताव मत खाओ।" ताओ-चिङ ने लड़की का हाथ थाम लिया। "हम तुम्हारी मदद करेंगी, लेकिन तुम धैर्य तो रखो। तुम हड़बड़ी में कोई काम मत करो। वरना तुम अपने माँ-बाप का दिल तोड़ दोगी। क्रान्ति कोई ऐसी चीज़ नहीं जिसके बारे में हम यूँ ही बात करते फिरें। लाल सेना में भरती होने या फ़ैक्टरी में काम करने के लिए पहले तुम्हें पार्टी के सम्पर्क में आना होगा – हम अपनी झक के पीछे तो दौड़ नहीं सकते।"

इस पर शू-सिऊ शान्त होने लगी। अपना सिर उठाकर उसने विस्फारित नेत्रों से जानना चाहा :

"क्या तुम अब भी पार्टी के सम्पर्क में हो?"

"नहीं, मैं तो अभी इसी सुबह बाहर आयी हूँ।"

"तो, जैसे ही तुम सम्पर्क में आना, मुझे बताने की कृपा करना। अब मुझे जाना होगा।" लड़की धड़धड़ाती हुई फिर बाहर चली गयी। माँ-बाप नाराज़ न हो जायें, इसलिए इस छोटी मुलाक़ात के बाद ही उसे ताओ-चिङ को छोड़कर चले जाने के लिए मजबूर हो जाना पड़ा था।

ताओ-चिङ और सियाओ-येन उस रात बिस्तर पर बतियाती रहीं, उन्हें आपस में ढेर सारी बातें करनी थीं।

"सियाओ-येन पिछले वर्ष या उससे पहले, क्या तुम प्रेम में पड़ चुकी हो? तुम्हें कुछ समय तक समझना-बूझना होगा, समझी।"

"हाँ, मैं समझती हूँ," यह शान्त जवाब था। "तुम भी तो उसे जानती हो। लेकिन मैंने अभी तक अन्तिम फ़ैसला नहीं लिया है।"

"कौन है वह? कौन है जिसे मैं जानती हूँ?"

"चेङ चुन-त्साई या ताई यू।"

"ताई यू?...?" ताओ-चिङ का दिल धक-से हो गया, लेकिन उसने अपनी शंकाओं को अपनी दोस्त के सामने ज़ाहिर नहीं किया। एक लम्बी ख़ामोशी के बाद वह अचकचाती हुई फिर बोली :

"ताई यू? ठीक है बधाई। तुमने कैसे मुलाक़ात की?"

"विश्वविद्यालय में फाङ शु-लिङ के कमरे में," सियाओ-येन ने भावप्रवण होकर जवाब दिया। "वे दोनों एक ही प्रान्त के रहने वाले हैं, और कई बार वहाँ मिलते रहने से हम दोस्त बन गये... वह 'पूँजी' के सारे अध्यायों को ज़ुबानी बोल सकता है।"

"क्या तुम उसके पूरे अतीत के बारे में जानती हो?"

सियाओ-येन ने इसमें निहित असहमति का भान करके सशंकित होकर उत्तर दिया, "नहीं, अभी तो नहीं... लेकिन मैं उसके बारे में और पता करने जा रही हूँ।" वह इस विवादित विषय से इतर अचानक पूछ पड़ी, "तुम्हारा क्या हाल है, ताओ-चिङ? क्या तुमको कोई नहीं मिला है?"

"नहीं।" ताओ-चिङ मुस्कुरायी। "जेल में हमने जिन आदमियों को देखा वे जेलर ही थे।"

"लेकिन ईमान से, क्या कोई ऐसा नहीं है जिसे तुम प्यार करती हो?" सियाओ-येन ने सौम्यता से ज़िद्द की, मानो उस आशंका को भूल जाना चाहती हो, जिसे उसकी दोस्त ने अभी-अभी प्रकट की थी।

कोई जवाब नहीं मिला। जब दोनों एक क्षण तक ख़ामोश रह चुकीं तो ताओ-चिङ धीरे-धीरे फिर बोलने लगी, मानो उसके गले में कोई चीज़ अटक गयी हो, हरेक शब्द दर्द की टीस के साथ निकल रहा था। "मैं अपना दिल दे चुकी हूँ, और मैं कभी बदलूँगी नहीं। मुझे इसकी परवाह नहीं कि मुझे कितनी लम्बी प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।"

"कौन है वह? मुझे बताओ। तुमने पहले कभी मुझे इसका संकेत तक नहीं किया।" उसके स्वर में आश्चर्य और आवेश का पुट था।

ताओ-चिङ बिस्तर से कूदकर बाहर आ गयी और बत्ती तेज़ कर दी, अपने ब्लाउज़ के गोट को फाड़कर खोला, और एक महीन मुड़ा हुआ कागज़ निकाला। उसने उसे हाथ से सीधा किया और सियाओ-येन को दे दिया।

"हँसो नहीं। यही कुछ है जिसे मैंने जेल में लिखा था। उसके बारे में एक कविता।"

आश्चर्य और आकुलता की कश्मकश में पड़कर सियाओ-येन इसे पढ़ने लगी। पास-पास लिखी हुई लाइनें उसकी दोस्त के तरसते हृदय की आतुरता को दर्शा रही थीं।

तुम चमक हो चंचला की
चीर देते गहनतम झंझा निशा की;
नितान्त निर्भीक,
नितान्त लोकोत्तर!
तुम प्रकाशित करते हो मेरे जीवनपथ को उत्तुंग ऊँचाई से

मैं तो मात्र एक बूँद हूँ गिरती हुई तुम्हारे आदेश पर।
कहाँ गये इतना तेज़, मेरे निर्भीक तड़ित?
अब तुम कहाँ हो?

हमने कभी नहीं खोले अपने हृदय,
हम कभी नहीं पहुँचे किसी मौन स्वीकृति पर,
लेकिन मैं विश्वास करती हूँ तुम पर
मैं सदा विश्वास करती रहूँगी
कोई करिश्मा तो होगा :
तोड़ गिराये जायेंगे कारा के लौह-दरवाज़े,
और बाहर बग़ीचे में, मेरे दोस्त,
हरे मख़मल जैसे एक लॉन पर,
तुम मुस्कुरा रहे होगे मेरी ओर।
तुम बता रहे होगे मुझे एक मृदस्वर में
अपने साहसिक कार्यों और कठिन संघर्षों के बारे में।
अहो भाग्य मेरा।
हम कभी न बिछुडेंगे फिर!
लेकिन, प्यारे दोस्त,
अब तुम कहाँ हो?
क्या हम मिलेंगे फिर इस जीवन में?
आह, दोस्त,
अब तुम कहाँ हो?
अब तुम कहाँ हो?
जानते हो तुम
कि एक लड़की बसन्त की उमंग में
आतुर हो प्रतीक्षा कर रही है तुम्हारी?
प्यार गड़ा है उसके हृदय में गहरे और अपरिवर्तनीय,
वह प्रतीक्षा करेगी तुम्हारी सदा-सदा ही।

ताओ-चिङ, अपना सिर अपनी बाँहों में धँसाये मेज़ के पास ख़यालों में डूब चुकी थी। जब सियाओ-येन पढ़ना ख़त्म कर चुकी, तो उसका चेहरा भावप्रवण हो चुका था और उसकी आँखें आँसुओं से तर थीं। वह अपनी दोस्त की ओर बढ़ी, और मन्द स्वर में बोली :

"ताओ-चिङ मैं अब तुम्हें समझ गयी – तुम्हारी वेदना और तुम्हारी अभिलाषाओं को समझ गयी... और मुझे विश्वास है कि एक दिन आयेगा, जब हम प्रत्येक जेल के द्वार को तोड़ डालेंगे, जब सभी प्रेमी अपनी बात को ख़ूबसूरत बग़ीचों

में अपने सुहृदों से कहने में समर्थ होंगे... वह दिन अवश्य आयेगा।"

"हाँ, वह ज़रूर आयेगा।" ताओ-चिङ ने अपना सिर उठाते हुए दृढ़तापूर्वक दोहराया।

——:o:——

अध्याय 24

खिड़की के पास खड़े होकर ताओ-चिङ दासे पर रखे चमेली के गमले पर अपनी आँखें टिकाये हुए थी। वह कुछ बेचैन थी। अपनी रिहाई के कुछ ही पहले चाङ हुआ-यिङ जो जेल में उससे सम्पर्क बनाये हुए था, उससे बता चुका था कि उसके बाहर आते ही कोई उससे मिलने आयेगा, लेकिन दो दिन गुज़र गये और कोई नहीं आया। यह नया पार्टी सम्पर्क कौन हो सकता है? सियाओ-येन व्याख्यान सुनने चली गयी थी, जबकि वह यही रुक गयी थी, जिससे कि प्रत्याशित आगन्तुक से मिलने में वह चूक न जाये।

दस बजे के आस-पास च्याङ हुआ दिखायी दिया। अचम्भित और अति हर्षित होकर वह उससे मिलने दौड़ पड़ी और मुस्कुराती हुई उसका हाथ कसकर पकड़ लिया।

"अरे, भाई च्याङ! तब से क़रीब दो साल हो गये, जब हम आख़िरी बार मिले थे।"

"हाँ एक साल से अधिक। मैं समझता हूँ, तुम अभी हाल ही में बाहर आयी हो।"

च्याङ हुआ अपने नीले रेशमी गाऊन और काले चमड़े के जूतों में एक सरकारी कर्मचारी की भाँति लग रहा था। उसके बाल कुछ-कुछ बिखरे हुए थे, लेकिन उसकी स्नेहिल आँखें पहले की ही भाँति निश्चल और विश्वासपूर्ण थीं।

"शेन्सी में हमारे जुदा होने के बाद से बहुत कुछ घटित हो चुका है..." अपनी चपल आँखों से उसकी ओर देखती हुई वह नहीं समझ पा रही थी कि क्या कहे। च्याङ हुआ भी मुस्कुरा रहा था, लेकिन यह ग़ौर करके कि वह कितनी पीली और दुबली हो गयी है, उसने टिप्पणी की :

"ताओ-चिङ, तुम पहले से लम्बी लग रही हो।"

वह ठठाकर हँस पड़ी। "यह बेतुकी बात है। इस उम्र में अब भी बढ़ रही हूँ? शायद वज़न घट जाने से ऐसा कुछ लग रहा है... बैठ जाओ, भाई च्याङ। हम कुछ अच्छी बातें करें।"

"दिक़्क़त यह है कि मैं जल्दी में हूँ। मैं कुछ मिनट ही दे सकता हूँ। प्रसंगवश,

क्या तुम आज अपना एक विवरण लिख सकती हो?"

ताओ-चिङ चकित दिखने लगी।

"किसलिए?"

"क्या चाङ हुआ-यिङ ने तुम्हें इसके बारे में बताया नहीं? तुम्हारा सपना सच होने जा रहा है, ताओ-चिङ, क्योंकि तुमने अपनेआप को जेल में पक्का साबित कर दिखाया है। तुमको पार्टी में लेने का फ़ैसला किया गया है।" च्याङ हुआ का चौड़ा, लाल चेहरा दमक रहा था।

ताओ-चिङ ख़ुशी से अभिभूत होकर ज़मीन में जड़वत हो गयी। वह आरक्त हो उठी और गोल-गोल आँखों से घूरती रही, वह बोल नहीं पा रही थी।

"क्या यह सच है?" उसने अपनेआप से पूछा। "क्या मेरे इन सभी वर्षों का सपना सच होने जा रहा है? क्या सचमुच मैं दुनिया की सबसे बड़ी ख़ुशी पाने जा रही हूँ?..." संकोचपूर्वक उसकी ओर देखकर मुस्कुराते हुए उसकी आँखें नम थीं। उसके होंठ काँप उठे, मानो वह कुछ कहना चाह रही हो, लेकिन ज़ुबान साथ नहीं दे रही थी।

"अपने विवरण में सही-सही तथ्य देना," च्याङ हुआ ने मन्द स्वर में आगे कहा। "पार्टी से कोई बात छिपाना नहीं।"

"बिल्कुल नहीं। मैं पार्टी के साथ एकदम ईमानदार रहूँगी।" ताओ-चिङ ने अपने हर्षोन्माद पर नियन्त्रण रखने की कोशिश करते हुए शान्त और धीमे लहजे में कहा। वह उस पर मुस्कुरायी। "तो यह तुम थे जो चाङ हुआ-चीङ के दिमाग़ में थे, जब उसने मुझे बताया कि कोई मुझसे मिलने आयेगा। निश्चय ही हमें किसी औपचारिक परिचय की ज़रूरत न थी, भाई च्याङ?"

"नहीं, वह नियमित पार्टी कार्यविधि है।" उसका लहज़ा शान्त और कामकाजी जैसा था, क्योंकि च्याङ हुआ स्वभावतः मितभाषी था। यद्यपि ताओ-चिङ के साथ इस ताज़ा मुलाक़ात से वह प्रसन्न था, और वास्तव में गहराई से आन्दोलित था। फिर भी वह प्रकट रूप में शान्त और यहाँ तक कि रूखा था। कुछ मिनट बाद वह झटपट रुख़सत हो लिया। सिर्फ़ उसने मुड़ते हुए जो एक स्नेहभरी नज़र फाटक पर खड़ी और उसे बाहर जाते हुए देखती ताओ-चिङ पर डाली, वही एक संकेत था कि वह एक स्नेहिल भावना और मैत्री भाव अपने भीतर छिपाये हुए था।

"बस एक मिनट!" वह उसकी ओर दौड़कर पुकार उठी और वह रुक गया। "क्या तुम मुझे बता सकते हो कि ताई यू किस क़िस्म का व्यक्ति है?"

"ताई यू? तुम्हारा उसके बारे में क्या ख़याल है?"

"मैं यह कहे बिना नहीं रह सकती कि वह बाक़ी तुम लोगों से भिन्न है।" जब च्याङ हुआ ख़ामोश ही बना रहा, तो वह आगे बोली, "क्या तुम्हें मालूम है कि वह

और सियाओ-येन एक-दूसरे को प्यार करते हैं?"

"नहीं, मुझे नहीं मालूम। ऐसी स्थिति में..." वह बोलते-बोलते रुक गया, "तुम जितना जल्दी हो सके, सियाओ-येन की जगह छोड़ दो। हम इस सम्बन्ध में बातचीत करने के लिए कल पेइहाई पार्क में मिलें, लेकिन अब आगे तुम सियाओ-येन को विश्वास में मत लो।"

ताओ-चिङ हालाँकि चकित हुई, फिर भी उसने सहमति में सिर हिलाया और कुछ बोली नहीं।

वह महान दिन आख़िर आ ही गया।

यह गर्मी की एक अपराह्न थी। गर्मी की तपती गलियों में धूल का एक घना आवरण पूरे शहर को...धूसर इमारतों, धूसर ट्रैफ़िक और धूसर राहगीरों को एक घने दमघोंटू धुन्ध में ढँके हुए था। पेइपिङ अनादिकाल से पुरातन और घिसा-पिटा लग रहा था। हरी-हरी शाखाएँ नीले आकाश में उचक-उचककर एक तरुण स्वरारोह पैदा कर रही थीं, लेकिन बाक़ी सबकुछ इस प्राचीन शहर के गड्डमड्ड, जराजीर्णता और जड़ता की ही गवाही दे रहे थे।

ताओ-चिङ हल्के मन से तेज़ी से चली जा रही थी। उसका हृदय एक हर्ष से उत्फुल्ल था, जो उसके लिए अब तक अज्ञात था, एक ऐसा हर्ष, जिसमें विस्मय का पुर मिला हुआ था। अपने विचारों में खोयी हुई, उसने अन्यमनस्क भाव से बग़ल से गुज़रने वाले नौजवान पर मुस्कुरा दिया, और दूसरे ही क्षण लजाकर महसूस किया कि वह तो एकदम अजनबी था।

अन्ततः वह एक सुनसान गली में पहुँच गयी, जहाँ उसे वह जीर्ण-शीर्ण पुराना घर मिला जिसका उसे संकेत दिया गया था। च्याङ हुआ ने उसे दरवाज़े की पहचान करने को कहा था और उसने यह देखकर राहत महसूस की कि शीर्ष पर एक कोने में खड़िया से दो असमान क्रॉस बनाये गये थे। वह मुस्कुरायी, हालाँकि उसका हृदय ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था। आहिस्ता से दस्तक देकर उसने नरमी से पूछा :

"क्या श्रीमती वाङ घर पर है?"

दरवाज़ा तुरन्त एक छापेदार गाऊन पहने एक छरहरी लड़की द्वारा खोल दिया गया, जिसने ताओ-चिङ का हाथ पकड़ा और फुसफसाकर कहा :

"तो तुम आ गयी। स्वागत है।"

विस्मय से भरकर ताओ-चिङ ने इस चतुर, योग्य सू हुई को पहचाना, जिसकी वह इतने दिनों से तलाश कर रही थी। लेकिन यहाँ सू हुई की उपस्थिति ने उसे और भौंचक्का ही किया।

"कृपया अन्दर आओ ताओ-चिङ। बड़ी दीदी लिऊ तुम्हारा इन्तज़ार कर रही है।" अगल-बग़ल कोई है तो नहीं, यह देखने के लिए दायें-बायें एक सतर्क निगाह

डालती हुई, सू हुई ने फाटक बन्द किया और दोनों लड़कियाँ अन्दर चली गयीं।

यह एक पुरानी शैली का घर था। जिसके छोटे अहाते के कोनों में कबाड़ के ढेर थे। सू हुई ने ताओ-चिङ को एक कमरे के भीतर की ओर संकेत किया जहाँ च्याङ हुआ और लिऊ यी-फेङ उसका इन्तज़ार कर रहे थे। ताओ-चिङ सीधे उस दुबली, शान्त महिला के पास गयी और उसका हाथ पकड़कर उत्तेजना में चीख़ पड़ी।

"बड़ी दीदी लिऊ।...हम पहले भी मिल चुके हैं... तब तुम मौसी ली थी, है न?"

"कॉमरेड लिन, नेतृत्व ने तुम्हारे व्यक्तिगत विवरण को सावधानीपूर्वक पढ़ और जाँच लिया है। तुमको आज औपचारिक रूप से पार्टी में लिया जाना है।" वह एक गम्भीर किन्तु उत्कण्ठा भरे स्वर में बोली, और लड़की का हाथ दबाकर मुस्कुरायी।

ताओ-चिङ का हृदय धड़क रहा था। अपनी आँखें लिऊ यी-फेङ के स्नेहिल चेहरे पर टिकाये वह आवेश के मारे बोल न सकी। चूँकि बाक़ी में से भी किसी ने भी कुछ नहीं कहा, इसलिए उस छोटे, छायाभसी कमरे में ख़ामोशी छा गयी।

"मौसी। चूँकि हम मेहमान हैं, इसलिए रात के खाने के लिए मालपुआ क्यों न रखें?" उनकी ख़ामोशी से चिन्तित सू हुई बाहर से आती हुई बोली। उसने अपने होंठ सिकोड़ते हुए अपना सिर कमरे के अन्दर किया और च्याङ हुआ ने संकेत पाकर डोमिनो खेल के मोहरों को मेज़ पर खड़खड़ाकर ख़ामोशी को भंग किया। ताओ-चिङ ने उसकी ओर नज़र उठाकर देखा, तो पाया कि वह उसे घूर रहा था। पहली बार उसकी शान्त, निश्छल आँखों में ताओ-चिङ ने भारी उम्मीदें और उत्कट उल्लास देखा। गहराई तक आलोकित होकर उसने अपनी निगाह अँधेरी दीवार पर लगी भूदृश्य की पेण्टिगों पर उठायी और उसका चेहरा गम्भीर हो उठा, उसकी साँस और तेज़ चलने लगी। एक पल में पेण्टिगें धुँधलाकर विलीन हो गयीं और उनके स्थान पर हथौड़ा और हँसियावाला लाल झण्डा, देदीप्यमान, प्रेरणादायक झण्डा उभर आया।

"अब से मैं बिना शर्त अपनी ज़िन्दगी पार्टी को, दुनिया के सर्वोत्कृष्ट, सर्वाधिक नेक उद्देश्य के प्रति समर्पित करने जा रही हूँ..." उसका स्वर फुसफुसाहट से कुछ ही अधिक मुखर था और बोलते-बोलते उसे रुक ही जाना पड़ा, जब आँसू उसके गालों पर से होकर ढुलकने लगे... ये खुशी के आँसू थे, क्योंकि अब वह अपने जीवन के सबसे सुखी क्षण का अनुभव कर रही थी, क्योंकि एक कम्युनिस्ट बनने की उसकी तमन्ना अन्ततः पूरी हो गयी थी। वह जानती थी कि अब वह एक अलग-थलग व्यक्ति नहीं, बल्कि साम्यवाद के ध्वजवाहकों में से एक थी, तथा अपने देश और लोगों को मुक्त करने के लिए हिरावल दस्ते की एक निडर योद्धा

थी। वह जानती थी कि उसने अपने जीवन को करोड़ों लोगों की आज़ादी और ख़ुशी हासिल करने में लगाकर अपनी नियति को अपने हज़ारो-हज़ार साथियों की नियति के साथ संयुक्त कर दिया था।

शाम का धुँधलका घिर रहा था। मद्धिम रोशनी में कमरा ख़ामोश था।

धीरे-धीरे ताओ-चिङ का आवेश शान्त होता गया। जब उसने अपने दो साथियों की आँखों में ख़ुशी के आँसू देखे तो वह मुस्कुराहट को रोक न सकी। इसके पहले कि वह बोल पाती, लिऊ यी-फेङ ने उसका हाथ थाम लिया। और शान्तिपूर्वक बोली :

"बधाई हो। मुझे विश्वास है कि हमारी पार्टी को तुम्हारे रूप में एक बढ़िया कॉमरेड मिला है, ताओ-चिङ। हमारी पार्टी कभी नष्ट नहीं की जा सकती – जब हमारा एक योद्धा गिरता है तो दूसरा उसका स्थान ले लेता है।"

च्याङ हुआ जो अब तक ख़ामोश ही रहा था, उठकर ताओ-चिङ के क़रीब गया और उसने भी उससे हाथ मिलाते हुए कहा, "मेरी हार्दिक बधाई, कॉमरेड लिन, हमारा एक महान लक्ष्य है, और हमें एक लम्बा रास्ता तय करना है। पार्टी-सदस्यता के लिए तुम्हारे प्रस्तावक के रूप में, मुझे उम्मीद है कि तुम एक कम्युनिस्ट के शानदार नाम को हमेशा ज़िन्दा रखोगी।" सू हुई के आते ही उसका हाथ छोड़ देने से पहले उसने उसे कसकर पकड़ लिया। सू हुई अहाते में रात का खाना तैयार करते हुए भी इधर निगाह रखे हुए थी, और हालाँकि उसकी उँगलियाँ आटे से सनी हुई थीं, उसने ताओ-चिङ से हाथ मिलाया और मुस्कुराकर बधाई दी। उसकी चतुर आँखें स्नेहिल और दयार्द्र थीं।

ताओ-चिङ की भी आँखें चमक उठीं, जब उसने दृढ़तापूर्वक हरेक से हाथ मिलाया। उसका चेहरा अब भी आवेश में तमतमाया हुआ था, उसका हृदय धड़क रहा था, लेकिन अब उसमें एक नयी दृढ़ता और शालीनता आ गयी थी।

लिऊ यी-फेङ और सू हुई, च्याङ हुआ को ताओ-चिङ से बात करने के लिए छोड़कर तुरन्त बाहर चले गये।

"क्या तुम वर्तमान स्थिति के बारे में स्पष्ट हो?" च्याङ हुआ ने मेज़ के पास बैठते ही एक सीधा सवाल किया। "मैं नहीं समझता कि तुमको जेल में ज़्यादा ख़बरें मिली होंगी।"

"नहीं, मैं बिल्कुल सम्पर्कविहीन रही हूँ, भाई च्याङ। क्या अब तक की स्थिति से वाक़िफ़ कराओगे? मैं अब राजनीति में पहले से अधिक गम्भीर दिलचस्पी रखती हूँ।" यह याद करके कि कैसे च्याङ हुआ ने तिङसिएन में ताज़ा घटनाओं के बारे में उससे पूछकर उसे निरुत्तर कर दिया था। उसने कनखी से एक शरारतभरी नज़र उस पर डाली और मुस्कुरा दिया।

च्याङ हुआ ने बोलने से पहले कुछ सेकेण्ड तक सोचा :

"क्वोमिन्ताङ ने एक कड़ा सेंसरशिप लागू कर दिया है। हमें सोवियत क्षेत्रों की सूचना, केन्द्रीय कमेटी के निर्देशों और कोमिन्टर्न के बारे में ख़बरों के लिए, सोवियत या दूसरे विदेशी स्रोतों पर भरोसा करना पड़ता है। पेरिस से प्रकाशित चिऊ कुओ शिह पाओ, बिल्कुल ठीक और सूचनाप्रद है। क्या तुम कभी इसको देखती हो?"

"हाँ। हालाँकि प्रायः नहीं। मुझे ताज़ा गतिविधियों के बारे में ज़रूर बता दो, बताओगे न?"

च्याङ हुआ राजनीतिक स्थिति की रूपरेखा समझाने लगा।

"हाँ, जापान के सशस्त्र आक्रमण और क्वोमिन्ताङ की समर्पण की नीति में देश को लगातार गहराते संकट में झोंक दिया है। मई 1935 में यह बहाना बनाकर कि चीनी सरकार ने विसैन्यीकृत क्षेत्र में उत्तर-पूर्वी जापान-विरोधी स्वयंसेवकों की 'घुसपैठ' को मदद देकर ताङकू समझौते का उल्लंघन किया है, जापानी क्वान्तुङ सेना ने मिलिटरी अफ़ेयर्स कमेटी के पेइपिङ कार्यालय के हो यिङ-चिन के सामने असंगत माँगें पेश कर दीं। प्रतिक्रियावादी चीनी अधिकारियों ने इन माँगों को स्वीकार कर लिया और उत्तरी चीन का सौदा करके हो-उमेजू समझौता कर डाला। इसने होपेई से जनरल यू सुएह-चुङ और जनरल सुग चेह-युआन की फ़ौजी टुकड़ियों को वापस लौटाने की माँग करने के लिए जापानियों के हौसले बुलन्द कर दिये; और तुरन्त इन सेनाओं को आदेश दे दिया गया कि वे दक्षिण में लाल सेना का प्रतिरोध करें। जापान ने तिएनातिसम से होपेई प्रान्तीय सरकार के खात्मे की माँग रख दी, और इसका दफ़्तर हटाकर पाओतिङ ला दिया गया। आगे आक्रामकों ने उन अख़बारों और पत्रिकाओं को बन्द करवा देने की माँग रखी, जो जापान का प्रतिरोध करने का आह्वान कर चुकी थीं; और उन सभी पत्रों को प्रतिबन्धित कर दिया गया। जिन्होंने जापान-विरोधी लेख प्रकाशित किये थे। उदाहरण के लिए, 'नवजीवन' पत्रिका में एक लेख 'सम्राटों के बारे में व्यर्थ बकवास' नाम से छपा था जिसको जापानियों ने कहा कि यह उनके मिकादो का अपमान था; अतः इसका प्रधान सम्पादक गिरफ़्तार कर लिया गया। आक्रामकों की इस ज़िद ने कि चीनी लोगों को गुलाम बनने की शिक्षा दी जानी चाहिए, च्याङ काई शेक को पुस्तकें फूँकने और विद्वानों को उसी तरह ज़िन्दा जला देने के लिए प्रेरित कर दिया, जिस तरह से चीन के प्रथम सम्राट ने किया था। देशभक्त छात्रों, विद्वान प्रोफ़ेसरों और पत्रकारों की गिरफ़्तारियों और हत्याओं का एक सम्पूर्ण सिलसिला चलता रहा। हो-उमेजू सरकार तो इतना आगे बढ़ गयी कि इसने क्वोमिन्ताङ और इस तरह पेइपिङ और होपेई के दफ़्तर हड़बड़ी में हटाकर दक्षिण भेज दिये गये यहाँ तक कि वह कुख्यात कसाई च्याङ सियाओ-सिएन भी जिसने कम्युनिस्टों के क़त्लेआम में इतनी 'हिम्मत'

दिखायी थी, इस दुश्मन से डरकर भाग गया। क्वोमिन्ताङ की अप्रतिरोध की नीति ने ग़द्दारों को 'चीनी-जापानी मित्रता', 'चीनी-जापानी सहकार', 'आर्थिक क्षेत्र में चीनी-जापानी परस्पर सहयोग' और 'अखिल एशियावाद' के बारे में रेंकने के लिए लगा दिया है। अब उत्तरपूर्व के हाथ से निकल जाने के बाद उत्तरी चीन के हथिया लिये जाने का ख़तरा सिर पर है। चीनी जनता अब इसे नहीं बरदाश्त कर सकती। देश के एक छोर से दूसरे छोर तक तुमको यही पुकार सुनने को मिल रही है : दुश्मन को खदेड़कर बाहर करो! देश बचाओ!"

"दरअसल चीनी लाल सेना अब उत्तर की ओर अपने रास्ते में आक्रामकों का प्रतिरोध करने जा रही है। यह कई महीने पहले माओ त्से-तुङ के नेतृत्व में लांग मार्च पर निकली थी और क्याङसी, हनान, क्वेइचाओ और क्वाङसी के रास्ते होते हुए जेचुआन पहुँच गयी है। दस लाख की क्वामिन्ताङ फ़ौजी टुकड़ियों ने घेरेबन्दी करके या पीछा करके इस क्रान्तिकारी सेना को तहस-नहस करने की कोशिश की, लेकिन वे पूरी तरह विफल हो चुकी हैं। लाल सेना ने क्वेइचाओ में त्सुन्याई पर क़ब्ज़ा कर लिया। इसने जेचुआन में सुङकान स्थित क्वोमिन्ताङ फ़ौजी टुकड़ियों को उखाड़ फेंक दिया, इसने चुङ किङ के कर्णधारों को इस क़दर आतंकित कर दिया कि उन्होंने अपनी धन-दौलत की सुरक्षा के लिए उसे शंघाई भेज दिया। क्रान्ति छलाँग लगाती हुई आगे बढ़ रही है..."

"क्या तुम सोचते हो कि हमारी लाल सेना लड़ती हुई जल्द ही उत्तरी चीन पहुँच जायेगी, भाई च्याङ?" ताओ-चिङ ने पूछा, जो भारी उत्तेजना में ध्यानपूर्वक सुनती रही थी। "निश्चय ही अब ज़्यादा दूर नहीं है, जब सोवियत और श्वेत क्षेत्र मिलकर एक हो जायेंगे तथा हथौड़ा और हँसिया पूरे देश में दिखायी देने लगेंगे? क्या तुम इसे नहीं मानते?"

च्याङ हुआ मुस्कुराया। लेकिन उसकी स्नेहिल आँखें गम्भीर थीं तब ताओ-चिङ के भावप्रवण बाल-सुलभ चेहरे की ओर देखते हुए उसने गम्भीरता से जवाब दिया।

"गतिविधियाँ बहुत तेज़ चल रही हैं। इसमें कोई शक नहीं कि अन्तिम विजय हमारी होगी। अब विचारणीय सवाल सामयिकता का है, उन दशाओं का है जिनमें हम काम करते हैं, और पार्टी के सही नेतृत्व का है। स्तालिन ने एक बार कहा था चीनी क्रान्ति के दुश्मन – भीतरी और बाहरी दोनों ही... बहुत अधिक और बहुत बलवान हैं।" इसलिए यह कुछ-कुछ रोमानी सोच है ताओ-चिङ कि विजय बहुत आसान और बहुत जल्दी हो जायेगी।"

ताओ-चिङ बहुत आरक्त हो उठी। उसे याद आया कि तिङसिएन में अपनी बातचीत में च्याङ हुआ ने इसी तरह उसकी अचानक खिंचाई कर दी थी।

"तुम बिल्कुल ठीक कहते हो," वह बोली। "मैं जानती हूँ कि हमारा लक्ष्य महान है, लेकिन विजय का रास्ता न तो चिकना है और न ही सीधा। इसके अलावा यह भी कि वर्ग शत्रु घर में है ही, बाहरी शत्रु भी है – जापानी साम्राज्यवादी। अतः हमारे देश को दोहरे ख़तरे का मुक़ाबला करना है मुझ पर यक़ीन करो, मैं इन सभी कठिनाइयों के लिए तैयार हूँ। इसके साथ ही कभी-कभी मैं सपने देखे बिना नहीं रह पाती। मैं विजय का दिन देखने का कब से ख़्वाब देख रही हूँ।" ताओ-चिङ ने अपनी आँखों में आँसू भरकर उसकी ओर निहारते हुए देखो। "मैंने तुम्हें उस कामरेड लिन हुङ के बारे में नहीं बताया, जिससे मैं जेल में मिली थी..." उसने गम्भीरतापूर्वक पार्टी के लिए लिन हुङ का सन्देश दोहराया।

उसकी गर्मजोशी, उसके ऊँचे आदर्शों और लिन हुङ के प्रति उसकी श्रद्धा से प्रभावित च्याङ हुआ विचारमग्न होकर एक क्षण तक खिड़की से बाहर घूरता रहा।

"ताओ-चिङ तुम्हारे बारे में एक बहुत ही बढ़िया बात है," वह शान्तिपूर्वक उसकी ओर मुड़ते हुए बोला। "कोई भी तुम्हारे उत्साह से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता... मैं समझ रहा हूँ कि लिन हुङ ने तुम्हारी कितनी अधिक मदद की और मैं कितना कम कर पाया, इसकी मुझे ग्लानि हो रही है।"

"तुम यह कैसे कह सकते हो?" उसने प्रतिवाद किया। "मैं हमेशा तुम्हें अपने शिक्षक और बड़े भाई के रूप में देखती रही हूँ। मैं हमेशा तुम्हारे मार्गदर्शन के प्रति आभारी रही हूँ। ठीक लू चिआ-चुआन की भाँति तुमने भी मेरी हर तरह से मदद की है..." जैसे ही यह शब्द उसके होंठों से बाहर निकला वह लजा गयी।

लेकिन इस तरह के विवरण च्याङ हुआ के ध्यान से उतर गये। इस विषय को विदा करते हुए, उसने निष्कर्ष में उसे स्पष्ट किया कि एक नये पार्टी सदस्य को क्या क्या जानना चाहिए।

"तुम्हें दफ़्तरी काम करना होगा ताओ-चिङ, वह तुम्हें कैसा लगेगा?"

"मुझे क्या क्या करना होगा?" उसने झट पूछ लिया।

"साहित्य वितरण और सम्पर्क-कार्य में बड़ी दीदी लिऊ की मदद कराना।"

"अच्छा है, मैं कब से शुरू करूँ?"

"जल्दी ही। ध्यान रखो, काम कठिन है और कभी-कभी बहुत ऊबाऊ भी, इसके लिए तुम्हें तैयार रहना होगा।" कुछ और याद करते हुए वह आगे बोला, "अब से तुम्हें एक दूसरा नाम रखना होगा, क्योंकि तुम्हारा नाम पेइपिङ जेल की फ़ाइलों में दर्ज है। और तुम सियाओ-येन को कुछ भी मत बताना कि तुम क्या कर रही हो। किसी हीले का स्वांग कर देना – समझ रही हो क्यों, नहीं समझती?"

ताओ चिङ ने यह महसूस करके हामी भर दी कि इस मामले में ताई यू अनभिज्ञ था, लेकिन चूँकि च्याङ हुआ ने उसको उकसाया नहीं, इसलिए उसने

सवाल नहीं किया।

इसके बाद उसने ताई यू के तिङसिएन में आगमन के बारे में पूछा और जब ताओ-चिङ ने पूरी कहानी तरतीब से बयान कर दी, तब च्याङ हुआ वे उसे ताई यू से हुई उसकी बातचीत के विस्तृत विवरण को लिखकर उसे दो दिन के भीतर देने को कहा। उसके बाद दोनों साथ-साथ उस घर से चल दिये।

ताओ-चिङ ने सियाओ-येन के घर वापस लौटकर देखा कि उसकी दोस्त अभी तक बाहर ही थी। अपने सामान को ठीक-ठाक करके वह बत्ती के पास वापस आयी, तथा कुछ अख़बार और पत्रिकाएँ पढ़ने में लग गयी। वह इसमें पूरी तरह तल्लीन हो गयी थी तभी किसी ने उसका कन्धा थपथपाया।

"ताओ-चिङ। तुम किस बात पर इतनी खुश नज़र आ रही हो?" सियाओ-येन चुपचाप अपनी किताबें लिये अन्दर चली आयी थी और अपनी दोस्त को मुस्कुराते हुए सिर उठाये उसकी उपस्थिति से एकदम बेख़बर निहार रही थी।

"अरे, तुम वापस आ गयी सियाओ-येन।" ताओ-चिङ अपने अख़बार अलग रखकर उठ खड़ी हुई। उसके कन्धे पर एक शरारतभरी मुस्कुराहट से देखते हुए उसने पूछा, "क्या ताई यू आज शाम को आ रहा है? मैं रास्ते में रोड़ा बनना नहीं चाहती।"

"बेवक़ूफ़ मत बनो! हाँ, वह यहाँ जल्द ही पहुँचने वाला है। भला तुम रास्ते में रोड़ा बन जाओगी! मैं चाहती हूँ कि तुम दोनों एक-दूसरे को बेहतर ढंग से जान लो।" सियाओ-येन ने अपनी निष्कपट आँखों में एक अनुभवभरी दृष्टि के साथ ताओ-चिङ का हाथ थाम लिया। "मैं चाहती हूँ कि तुम उसके बारे में पूरी जानकारी प्राप्त करने में मेरी मदद करो। लेकिन मैं उस पर विश्वास करती हूँ – मैं आश्वस्त हूँ कि यह एक अच्छा आदमी है।"

उसी क्षण ताई यू अन्दर आया। ताओ-चिङ से हाथ मिलाकर वह फटी आवाज़ में बोला : "तो तुम रिहा हो चुकी हो ताओ-चिङ। मैं तुमको बधाई दे दूँ। तुम सियाओ-येन की मदद करने में समर्थ होगी..." अपने पथराये चेहरे पर एक ज़बरदस्ती मुस्कान लाकर उसने अपनी बग़ल में सियाओ-येन पर नज़र डाली।

वे उस छोटे-से स्वच्छ कमरे में बैठ गये, जब सियाओ-येन ने एक और बत्ती जला दी तो कमरा और जगमगा उठा।

"चिढ़ाओ मत ताई यू। मैं सियाओ-येन की मदद करने की स्थिति में नहीं हूँ, मैं बहुत पीछे छूट चुकी हूँ। एक वर्ष से अधिक जेल-जीवन ने मुझे एकदम अस्तव्यस्त और बेकार कर दिया है।" दीवार के सहारे टिककर ताओ-चिङ ने एक चतुर मुस्कान के साथ उनकी ओर देखा और अपनी आँखें सिकोड़कर ख़ाली दिमाग़ का भाव प्रदर्शित किया।

[illegible] सियाओ-येन ने उसका भेद खोल दिया, जो मुस्कुराकर ताई यू [illegible] :

"[illegible] तुम नहीं सोचते कि जेल से बाहर आने के बाद ताओ-चिङ काफ़ी बदल [illegible] मैं सावधानीपूर्वक उसकी निगरानी करती रही हूँ और एक बदलाव देख [illegible] वह पहले बहुत स्नेहिल हृदया परन्तु बचपना करने वाली, सतही और [illegible]कुशल हुआ करती थी। अब वह पूरी तरह से भिन्न है। जहाँ वह हमेशा [illegible] आदर्शों, उम्मीदों और मुसीबतों की बातें किया करती थीं, वहाँ अब वह [illegible] कुछ दिनों से क्रान्ति के लिए, दूसरे लोगों के लिए काम करने के अलावा [illegible] किसी चीज़ पर बोलती ही नहीं। अपने बारे में एक शब्द तक नहीं, सिवाय उस [illegible] में जब मैंने एक प्रश्न उठाया था..." उसने आँख मारी और रहस्यमय ढंग से [illegible] चिङ पर मुस्कुरायी। "अब वह अपनेआप के बारे में कभी बात ही नहीं [illegible] वह गहन-गम्भीर हो गयी है, क्या तुम देखते नहीं? बेशक, वह पहले जैसी [illegible] हृदया है, लेकिन उसकी वह स्नेहसिक्तता एक नयी ताक़त के भीतर छिप [illegible] यह एक जेनरेटर की ऊर्जा की भाँति है। जो बरबाद करने या ऊलजलूल [illegible] के लिए नहीं है।"

"[illegible], शान्त भी जाओ सियाओ-येन!" ताओ-चिङ ने हँसते हुए टोका। "तुम [illegible] हाँक रही हो। अब तो मुझे हर चीज़ व्यर्थ मालूम पड़ती है। जब मैं [illegible] राजनीति में सक्रिय भाग लेते देखती हूँ, तो तुम्हें खुश करने की ख़ातिर वैसा [illegible] लगती हूँ प्यारी।" उसने अपने सिर को झटक दिया। "मैं अपना वक़्त जाया [illegible] सन्तुष्ट हूँ। अब मैं किसी प्रकार के गम्भीर सवालों पर और सोचना [illegible]।"

[illegible] येन ने उसे विस्मय से निहारा। ताओ-चिङ की किनाराकशी से [illegible] पड़कर उसने तय किया कि फ़िलहाल वह इस विषय पर ज़ोर नहीं देगी।

[illegible] ताई यू मौज से वहाँ बैठा रहा, सिर हिलाता रहा, एक के बाद एक [illegible] हुआ जब-तब बलात् मुस्कुराता रहा। ताओ-चिङ ने उसके ठण्डेपन [illegible], लेकिन इस पर कोई टिप्पणी नहीं की। लेकिन सियाओ-येन कुछ [illegible] अन्दाज़ में उसकी ओर मुड़ी और पूछी :

"[illegible] परेशानी है, ताई यू?..." वह उसकी तरफ़ कुछ सेकेण्ड तक देखती रही, [illegible] "मुझे ताज्जुब है, तुम इस तरह माटी की मूरत क्यों बने हुए हो? [illegible] तुम्हारे बतियाने का ताँता ही नहीं टूटता, लेकिन दूसरे की बात पर [illegible] ख़ामोश और उदास हो जाते हो, मानो तुम्हारे दिमाग़ पर कोई बोझ रख [illegible]" सियाओ येन ने उसकी भावनाओं को ठेस न पहुँचाने के एहतियात [illegible] को इतना मृदु बना लिया था कि आगे न बोल सकी।

"अरे, कोई बात नहीं है। तुम लड़कियाँ हद से ज़्यादा संवेदनशील हो उठती हो।" ताई यू ने अपनी सूजी हुई आँखें ताओ-चिङ की ओर घुमायीं, मानो इस पर उसकी स्वीकृति चाह रहा हो, फिर उसने सियाओ-येन की तरफ़ देखा।

"सियाओ-येन अगर तुम सचमुच अपनी दोस्त के प्रति लगाव रखती हो, तो उसे कुछ भौतिक मदद दो। ज़रा उसके कपड़ों को तो देखो।"

"अरे हाँ, अगर तुमने कहा नहीं होता, तो मैं तो भूल ही गयी होती। मैं माँ से कुछ पैसे माँगने की सोचती रही हूँ, लेकिन मेरा मन नहीं हुआ – उनके पास इतना कम पैसा बचता है कि वे नहीं दे पाते। आज, हालाँकि मुझे पन्द्रह युआन मिले, जो ज़्यादा नहीं हैं, फिर भी कुछ नहीं से तो बेहतर ही है। इन्हें ले लो ताओ-चिङ, अपनी ज़रूरत की कोई चीज़ ख़रीद लेना।" उसने अपनी जेब से पैसे निकाले और मेज़ पर रख दिये।

"धन्यवाद सियाओ-येन।" ताओ-चिङ मुस्कुरायी। "मेरे पास सचमुच पैसे नहीं हैं और यह सच है कि यह गाऊन फट चुका है और मुझे एक नये गाऊन की ज़रूरत है।"

सियाओ-येन विजयोल्लास का भाव लिये ताई यू की ओर घूम गयी।

"देखा? क्या यह सबूत नहीं है कि वह बदल चुकी है? पहले के दिनों में तो वह कदापि नहीं लेती – या बहुत मुश्किल से ही कभी-कभार पैसे स्वीकार करती। अरे इतना ही नहीं उसने तो पाँच ताऊ चावल के लिए भी झुकने से इन्कार कर दिया था... लेकिन अब हमारे सामान्य लक्ष्य की ख़ातिर अगर आवश्यक हो, तो वह एक ताऊ भी ले लेने के लिए तैयार हो जायेगी।"

"हाँ, तुम ठीक कहती हो। वह पहले से अधिक दृढ़निश्चयी हो गयी है..." ताई यू धीमे से हँसा।

उसकी इस बेईमानीभरी प्रतिक्रिया पर ताओ-चिङ गुस्से से तमतमा उठी और चिल्लाकर बोली :

"बेवकूफ़ की तरह मत बातें करो, ताई यू। तुम भूल रहे हो कि मैंने अभी-अभी अपनी आज़ादी फिर से हासिल की है। अगर तुम ऐसे ही बातें करते रहे, तो मैं जल्दी ही फिर जेल में भेज दी जाऊँगी।"

ताई यू और सियाओ-येन विस्मय में पड़कर उसे घूरने लगे।

——:o:——

अध्याय 25

'माँ' – जब कभी मैं उसे माँ कहकर पुकारती हूँ तो मुझे वैसी ही स्फूर्ति और सामर्थ्य महसूस होती है जैसीकि तब, जब मैं लिन हुङ के बारे में सोचती हूँ, जिसको मैं कभी नहीं भूल सकूँगी। फिर भी वह अभी तैंतीस वर्ष की ही है, जो मुझसे ज़्यादा उम्रदराज़ नहीं है।

वह दुबली-पतली, पीली और नाज़ुक है और यद्यपि वह जवान है फिर भी उसकी कमर झुक गयी है – यह लम्बे कारावास और क्रूर यातनाओं के कारण हुआ है। उसने क्षमता से अधिक त्रासदी झेली है। उसके पति ने क्रान्ति के लिए अपना जीवन उत्सर्ग कर दिया था। उसका बेटा खो चुका है और उसके कोई रिश्तेदार नहीं बचे हैं। फिर भी जब तुम उसे देखोगे, तो उसकी शान्त, प्रफुल्लित आँखों से अभिभूत हुए बिना न रह सकोगे। वह अपने बारे में कभी कुछ नहीं कहती, और चुपचाप सामान्य ढंग से काम करती रहती है। प्रकटतः हम धोबिन के रूप में जीविका कमा रही माँ और बेटी हैं, लेकिन वास्तव में वह ज़िला पार्टी कमेटी की एक सदस्या हैं, और मैं एक सम्पर्क-कार्यकर्ता हूँ। जब वह मुझे कोई महत्त्वपूर्ण और तात्कालिक रूप से ज़रूरी दस्तावेज़ थमाती है, तो मुझ पर दयालु, निश्चल आँखें टिकाकर निहारती है, और मुझे शान्तिपूर्ण, मातृवत निर्देश देती है।

"सिऊ-लान, इस कमीज़ को ले जाकर श्री वाङ को दे दो। इसे हिफ़ाज़त [illegible] जाना।" हर समय वह मुझे ऐसी ही ज़िम्मेदारी का काम सौंपती है, मैं एक [illegible]नीय ऊर्जा का आवेग महसूस करती हूँ, और उसकी दृढ़ स्नेहिल दृष्टि मेरे [illegible] में ज्वाला प्रज्वलित कर देती है। वह मुझे हमारे जीर्ण-शीर्ण फाटक से [illegible] जाते देखती रहती है, जबकि मन ही मन मैं उसे आश्वासन दे रही होती [illegible] "[illegible] माँ, तुम मेरे द्वारा इस कार्य को पूरा कर लिये जाने का विश्वास कर [illegible] हो।"

[illegible] पड़े ये कुछ छापें थीं, जिनको लिऊ यी-फेङ के साथ भूमिगत काम [illegible] चिङ संक्षेप में लिख लिया करती थी, और फिर फाड़ देती थी। उसे [illegible] और उत्साह अनुभव होता था जैसा लिन हुङ के साथ जेल में होता [illegible] अपनी भावनों को लिख डालने की इच्छा होती थी।

[illegible] काम कठिन और श्रम-साध्य है – बहुत कुछ करने का है और [illegible] सिर्फ़ हम दो ही हैं। मेरे हिस्से में नक़ल उतारना, सन्देश पहुँचाना, [illegible] और मरम्मत करना है – बाद वाला काम इसलिए कि हमें पैसों [illegible] पड़ती है। कभी कभी तो मुझे दिन में एक छोटी-सी मकई की रोटी

के अलावा और कुछ खाये बिना ही रात-दिन काम करते रहना पड़ता है। मैं अक्सर आधी रात होते-होते चकराहट महसूस करने लगती हूँ, लेकिन माँ हमेशा मेरी बग़ल में बैठी रहती है। उसकी शान्त, दयालु आँखें, उसके चेहरे की बारीक़ लकीरें – वह समय से पहले ही बूढ़ी हो चली है न – मेरी भूख और थकान भुला देती हैं, और मैं नयी स्फूर्ति के साथ काम करती जाती हूँ। जब मैं रात में काम कर रही होती हूँ तो वह साथ देने के लिए मेरी बग़ल में बैठी रहती है, मैं नक़ल लिखती हूँ, जबकि वह पढ़ती जाती है। आधी रात को वह मुस्कुराकर मुझे एक कप उबला हुआ पानी देने या कभी-कभार मेरे साथ एक बन खा लेने के लिए उठ खड़ी होती है। वह एक बन का आधे से भी कम टुकड़ा अपने लिए तोड़ती है, और बाक़ी मुझे खा लेने के लिए ज़िद करती है।

हाँ, वह अक्सर भूखी रह जाती है, लेकिन यह पूरा-पूरा इत्मीनान कर लेती है कि मेरे लिए पर्याप्त रहे। पिछली बार उसके कृश, थके चेहरे से सशंकित होकर पानी मैंने ले लिया, लेकिन खाना उसे दे दिया।

"मैं भूखी नहीं हूँ माँ," मैंने कहा। "तुमने दिन में पर्याप्त खाना नहीं खाया। इसे ज़रूर खा लो।"

"नहीं तुम अभी नौजवान हो और तुम्हें अपने स्वास्थ्य का ज़रूर ख़याल रखना चाहिए। तुम्हारे लिए मैं पार्टी के प्रति उत्तरदायी हूँ।"

मेरी प्यारी माँ इतने अच्छे चरित्र वाली है।

माँ सिर्फ़ मेरे भौतिक कल्याण की ही देखरेख नहीं करती, बल्कि मुझे बहुत गहन और विस्तृत रूप से शिक्षित करती है। जब मैंने ज़िला पार्टी कमेटी के लिए काम करना शुरू किया, तो मैं एकबारगी इस काम के प्रति ख़ुश न थी, हालाँकि मैंने च्याङ हुआ से वादा किया था कि मैं पूरी तबियत से काम करूँगी। मैं हमेशा एक स्वप्नदृष्टा रही हूँ और अक्सर लाल सेना या उग्र संघर्षों के जीवन का स्वप्न देखती रही हूँ – तूफ़ान और तनाव के एक रोमानी जीवन का स्वप्न। मैं आसानी से नीरस काम में मन नहीं लगा पाती, यहाँ तक कि इतने सारे वर्षों के बाद भी नहीं। इसलिए जब उन्होंने मुझे यहाँ नक़ल उतारने, सन्देश पहुँचाने तथा धुलाई और मरम्मत करने के रुटीन काम पर भेजा, तो मैंने मन ही मन क्षोभ महसूस किया। यद्यपि मैंने कहा कुछ नहीं, फिर भी माँ ने इसको भाँप लिया, और फलत: एक रात – एक अविस्मरणीय रात को – उसने मुझे एक सबक सिखाया। जबकि उस दोस्त ने जो सदा मेरे हृदय में वास करता रहेगा, अपने निर्भीक संघर्ष और अपनी बहादुराना मृत्यु के द्वारा मेरे लिए एक उदाहरण भी प्रस्तुत कर दिया था। केवल अब जाकर मैं महसूस करती हूँ कि कितनी गहराई से इन सारे वर्षों में मैं उसे प्यार करती रही हूँ। अगर वह अभी भी ज़िन्दा होता, अगर उसका अमूल्य जीवन उन दुष्ट क्वोमिन्ताङ कसाइयों

[illegible] नहीं छीन लिया गया होता, तो मैं दुनिया की सबसे सुखी महिला होती।
[illegible]लेकिन मेरी उम्मीदें तार-तार हो चुकी हैं। इसे लेखबद्ध करते हुए मैं अपने
आँसू नहीं रोक सकती। अगर मैं जानती होती कि बरसाती फूल वाली पहाड़ी*
पर कौन सी क़ब्र उसकी है, तो मैं नानकिङ चली जाती और वहाँ उसकी मृत्यु
का प्रतिशोध लेने की शपथ खाती...

पतझड़ की एक रात में एक सर्द हवा उनकी खिड़कियों के उखड़े कागज़ को [illegible] रही थी, और दराज़ों से होकर ऊँचे आकाश में चमक रहा चाँद लिऊ [illegible] और ताओ-चिङ के आरक्त कपोलों पर सर्द, रुपहली किरणें फेंक रहा था। [illegible] एक ख़ूबसूरत किन्तु एकाकीपन से भरी हुई रात थी और वे बिस्तर पर जा चुकी थीं, लेकिन सो न सकीं। अपने काम के बारे में फुसफुसाकर विचार-विमर्श कर लेने के बाद, उन्होंने व्यक्तिगत मामलों पर बातचीत की। अपना सिर ताओ-चिङ की [illegible] झुकाकर लिऊ यी-फेङ ने कहा :

"सिऊ-लान एक बात तुमने मुझसे कभी नहीं बतायी – क्या कोई ऐसा है [illegible] बारे में तुम ख़ास तौर से सोचती हो?" ताओ-चिङ ने यहाँ काम शुरू करने [illegible] साथ ही अपना नाम चाङ सिऊ-लान रख लिया था।

[illegible]की, जो आमतौर पर इतनी मुखर और बेबाक थी, एक लघु विराम के बाद [illegible] : "है और नहीं भी है...मैं उसके बारे में सोचना नहीं चाहती माँ।"

"[illegible] मतलब? कौन है वह?"

[illegible] चिङ उठ बैठी, अपने कन्धों पर एक जैकेट डाल ली और बिस्तर से उठ [illegible] गयी। ख़ामोशी में लिऊ यी-फेङ ने उसके तरुण, ख़ूबसूरत मुखड़े का [illegible] किया, जो उस चाँदनी में उदासी में डूबा प्रतीत हो रहा था। उस बड़ी [illegible] बिस्तर के कोर पर बैठती हुई और उसके पतले हाथ थामती हुई [illegible] ने काँपते स्वर में कहा :

"[illegible] ताज्जुब होगा यह सुनकर माँ कि वह लू...लू चिआ-चुआन है। मैं उसी [illegible] करती रही हूँ..."

[illegible] लिऊ यी-फेङ प्रकटतः आश्चर्यचकित नहीं हुई।

"[illegible] है," वह शान्तिपूर्वक बोली। "हाँ, वह सबसे अच्छों में से एक है। [illegible] प्यार कब हुआ?"

"[illegible] नहीं। ज़ाहिरा तौर पर तो किसी भी तरह से नहीं, हालाँकि मैं अपने दिल [illegible] थी कि वह मुझे प्यार करता था। यही कारण है कि मैं इन सारे वर्षों

[illegible] प्राणदण्ड-स्थल के रूप में इस्तेमाल किया जाता था, जहाँ क्वोमिन्ताङ [illegible] ने एक हज़ार से अधिक देशभक्तों की हत्या की थी। मुक्ति के बाद, इसे क्रान्ति [illegible] सम्मान में एक स्मृति उद्यान में परिवर्तित कर दिया गया।

में उसका इन्तज़ार करती रही हूँ।" चाँदनी से रोशन उस कमरे में ताओ-चिङ की आँखें आँसुओं से चमक उठीं। उसने अपना सिर झुका लिया और लिऊ यी-फेङ का हाथ कसकर पकड़ लिया। "अगर वह ज़िन्दा है तो मुझे ज़रूर बता दो," उसने ज़िद की। "क्या तुमको उसकी कोई ख़बर मिली है?"

लिऊ यी-फेङ ने तकिये पर अपना सिर हिलाया। वह इस उधेड़बुन में थी कि वह उस दुखद समाचार का खुलासा करे या नहीं। वह नहीं चाहती थी कि ताओ-चिङ की ख़ुशी के सपनों को नष्ट करें या उसके निष्कपट हृदय को तोड़े। उसके किसी निर्णय पर पहुँचने से पहले ही उस लड़की ने आगे कहा :

"मैंने अपनी अन्तरतम की भावनाओं को कभी किसी से नहीं बताया माँ। सच तो यह है कि मैंने और किसी को भी उससे अधिक प्यार और आदर के योग्य नहीं पाया। पहली बार जब मैंने उसे देखा तो ऐसा लगा, जैसे हम पुराने दोस्त हों..." उसका चेहरा आरक्त हो उठा था, उसका स्वर आवेश में काँप रहा था, जबकि लिऊ यी-फेङ उसके हाथों को सहला रही थी और ख़ामोशी से सुन रही थी। "तब मैं यू युङ-त्से से बहुत दुखी थी – काश मैं उससे पहले न मिली होती। जिस क्षण उसने मुझे लू चिआ-चुआन की गिरफ़्तारी के बारे में बताया, मैं ही जानती हूँ कि मैं कितनी गहराई से चिन्तित हो उठी।"

ताओ-चिङ बिस्तर पर झुक गयी और आगे कुछ न बोली। वह उन भावनाओं को प्रकट करने से हिचकिचा रही थी, जिनको उसने लगभग तीन सालों से दबा रखा था।

लिऊ यी-फेङ भी ख़ामोश थी। खिड़की से हवा का झोंका आ रहा था और उसने उठकर ताओ-चिङ को अपनी बग़ल में अपनी रज़ाई के भीतर खींच खींच लिया।

"मेरी बच्ची, अब मुझे सच्चाई को तुमसे और अधिक नहीं छिपाना चाहिए," उसने कहा। "वह हमारे लक्ष्य के लिए शहीद हो गया..."

"वह हमारे लक्ष्य के लिए शहीद हो गया?"

ताओ-चिङ ने यन्त्रवत इन शब्दों को दोहराया। फिर अपना सिर रज़ाई से ढँककर वह ख़ामोश हो गयी। लिऊ यी-फेङ ने अपनी जैकेट पहनी, बत्ती जलायी और 'चीनी क्लासिकीय साहित्य संकलन' की एक प्रति पुरानी खपच्चीदार टोकरी से उठा लायी इस धूलभरी, बदरंग हो चुकी किताब को खोलकर, उसने इसके दो या तीन दोहरे पन्नों को काटकर खोला और उनके बीच रखे खुरदुरे पीले काग़ज़ के कई पन्नों को बाहर निकाला। वह फिर ताओ-चिङ के पास आयी जो ऐसे निश्चल पड़ी थी, मानो नींद में हो। उसने रज़ाई को पीछे खींचा और फुसफुसाकर बोली :

"इसको इतनी बुरी तरह से मत लो सिऊ-लान! यह रहा वह पत्र जिसको उसने तुम्हारे लिए लिखा था... तुमको पहले न दे सकी इसके लिए मुझे माफ़ कर देना।"

ताओ-चिङ ने एकटक ऊपर की ओर देखा और सन्देहशील नज़रों से घूरती [illegible]।

"उसने मुझे पत्र लिखा?"

"हाँ," लिऊ यी-फेङ ने धीमे कहा। "मैंने इसे पिछली सितम्बर में एक मित्र [illegible] ज़रिये प्राप्त किया, जिसने मुझे बताया कि जब मैं उचित समझूँ, तब तुमको दे [illegible] तुम उस समय अभी जेल में थी। शायद ठीक उसी समय की बात है, जब लू [illegible] मारा गया। मैं तुम्हारी रिहाई के बाद इसे सीधे तुमको न सौंप सकी, क्योंकि मुझे कुछ ज्ञात न था कि उसका तुमसे क्या वास्ता था, और मैं तुमको दुखी करना [illegible] चाहती थी। अत: मैं इसे अपने पास ही रखे रही।" पेंसिल से लिखे पन्नों को [illegible]पूर्वक थामे हुए उसने उन्हें सावधानी से ताओ-चिङ के हाथों में सौंप दिया। ताओ चिङ ने अपनी काँपती उँगलियों से वह पत्र पकड़ लिया। वस्तुत: वह [illegible] रूप से काँप रही थी। आँसू उसकी आँखों को धुँधला रहे थे और कागज़ [illegible] टप गिर रहे थे। अन्तत: उसने उसे पढ़ने के लिए अपनेआप को संयत [illegible]:

जब तुम कभी इन पंक्तियों को पढ़ोगी, तब तक तुम मेरी अच्छी कॉमरेड [illegible] चुकी होगी। नारकीय जेलों में इन पिछले वर्षों में, मैं तुमको विश्व के [illegible] उन्नत वर्ग के लिए एक योद्धा बनने और मेरी कॉमरेड, उन योद्धाओं [illegible] एक बन जाने की राह देखता रहा हूँ जो हमारी क्रान्ति को आगे ले जायेंगे। [illegible] हर रोज़ कम्युनिस्ट, विजय की घड़ी को जल्दी ला देने के लिए अपना [illegible] बहा रहे हैं और प्राणोत्सर्ग कर रहे हैं। प्यारी कॉमरेड, प्यारी ताओ-चिङ, [illegible] ही मेरी बारी आ सकती है – सिर्फ़ संयोग ने ही मुझे पेइपिङ में मार [illegible] से बचा लिया था। लेकिन अब मैं कुछ महीने और जी चुका हूँ और [illegible] कर चुका हूँ, जो मेरे लिए एक महान खुशी है। अब मैं बिना किसी [illegible] के अन्तिम घड़ी का इन्तज़ार कर रहा हूँ। मेरे जीवन का सबसे [illegible] दिन वह होगा, जब मैं कम्युनिज़्म के लक्ष्य के लिए, अपने देश और [illegible] की शान्ति और सुख के लिए मरूँगा। सम्भव है कि जब तुम यह [illegible] तब तक मैं बरसाती फूल वाली पहाड़ी पर मौत के घाट उतार दिया गया [illegible]। लेकिन जब मैं याद करता हूँ कि हमारे कॉमरेड असंख्य हैं कि हमारे [illegible] बाद भी वे संघर्ष चलाते रहेंगे, कि तुम उनकी क़तारों में होंगी, और [illegible] विजय हमारी होगी – तब मुझे महान गर्व और खुशी का अनुभव [illegible] है।

मुझे तुम्हारी कुछ ख़बर मिली है, और तुम्हारा एक पत्र प्राप्त हुआ है। मुझे [illegible] है कि हम फिर कभी साथ-साथ काम नहीं कर सकेंगे। इस अन्तिम [illegible] चाहता तो हूँ कि अपना दिल तुम्हारे सामने खोलकर रख दूँ। लेकिन

नहीं, मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए'... बुरा अन्त हो उन कसाइयों का, जिन्होंने हमसे – और तमाम दूसरे साथियों से – हमारी खुशियाँ छीन ली हैं! प्यारी ताओ-चिङ, अपने को जितना सख़्त बना सको, बनाती जाओ। अपने को तपाकर फ़ौलाद बनाते जाने में कोई कसर न छोड़ो और हमारी मौत का बदला लो! कम्युनिज़्म के लक्ष्य के लिए संघर्ष कभी मत छोड़ना। तुम्हारा सच्चा दोस्त अपने समूचे हृदय से तुम्हारी खुशी की कामना करता है...

लू चिआ-चुआन के इस प्रथम और अन्तिम पत्र को पढ़ने के बाद ताओ-चिङ ने अब कोई आँसू नहीं बहाये। अचानक एक अद्‌भुत गम्भीरता से अभिभूत होकर वह वहाँ एक मनोहारी सफ़ेद संगमरमर की मूर्ति की भाँति खड़ी रही। यद्यपि अब वह जीवितों की दुनिया में न था, फिर ताओ-चिङ ने उसका इन्तज़ार नहीं किया था, और उसकी याद में व्यर्थ ही आँसू बहाये थी। लू ने कम्युनिस्ट के यशस्वी नाम को सार्थक किया था। उसके प्यार को शब्दों में बयान करने की आवश्यकता न थी, और अन्तिम क्षण तक वह ताओ-चिङ को भूला नहीं था। अपनी चिन्ताग्रस्तता के दरम्यान ताओ-चिङ को एक गहन स्नेह और राहत की अनुभूति हुई, जो लू की अमिट यादगार की भाँति ही चिरस्थायी रहने वाली थी।

दूसरे दिन सोने से पहले वह विचारमग्न सिर झुकाये अपने बिस्तर के कोने पर बैठी हुई थी और अपने गालों पर से होकर बह रहे आँसुओं की धार रोक पाने में असमर्थ बनी हुई थी। उसने सच्चा प्यार कभी नहीं जाना था और यू युङ-त्से के साथ अपने व्यर्थ प्रेम-सम्बन्ध के दु:स्वप्न को याद नहीं कर सकती थी। यह उसकी त्रासदी थी कि जब वह जीवन का अर्थ समझने में परिपक्व हुई, जब उसे अपने प्यार के क़ाबिल कोई मिला भी और जिस पर वह अपने उस हार्दिक स्नेह को निछावर कर देने को तैयार भी थी, जिसके लिए प्रेम में निराश हो चुकी एक महिला ही समर्थ हो सकती है, तब लू चिआ-चुआन गिरफ़्तार हो चुका था। वह अपना दिल उसके सामने खोलकर रखती, इसके पहले ही वह प्रतिक्रियावादियों द्वारा छीनकर दूर कर दिया गया। उसकी गिरफ़्तारी के बाद जब कभी वह फ़ुरसत में होती या कठिनाई और ख़तरे में पड़ जाती, तो लू का ख़याल उसके अन्दर असीम सामर्थ्य और साहस भर देता। लेकिन दिन पर दिन और महीने पर महीने सरकते चले गये। एक वर्ष बीता, फिर दो वर्ष और तीन वर्ष... और अन्ततः उसे बताया गया, "वह हमारे लक्ष्य के लिए शहीद हो गया।" बरसाती फूल वाली पहाड़ी पर मार डाला गया। इस क्रूर हत्या पर उसका हृदय दुख और क्रोध से दहकने लगता। उसे अवश्य लू चिआ-चुआन का बदला लेना है, उन दूसरी हज़ारों-हज़ार मौतों का बदला लेना है जिन्होंने क्रान्ति की ख़ातिर अपनी जान गँवा दी थी, उसे स्वयं अपनी खुशी का बदला लेना है। यकायक

खड़ी होकर उसने लिऊ यी-फेङ का हाथ पकड़ लिया, जो उसकी बग़ल में खड़ी थी, और लाल सूजी आँखों से उस सयानी महिला को निहारती हुई चीखी :

"माँ, मुझे सोवियत क्षेत्र में जाने दो! मैं हथियार उठाना चाहती हूँ।... मैं यहाँ पर यह शान्त जीवन नहीं झेल सकती।"

लिऊ यी-फेङ बिस्तर पर बैठी थी, लेकिन प्रत्युत्तर में कुछ न बोली। उसके पीले, निश्चल चेहरे पर चिन्ता झलक रही थी।

"सिऊ-लान एक दूसरा पत्र भी है, अच्छा हो कि तुम दूसरा भी पढ़ लो। मैं एक बार उस स्थिति से गुज़र चुकी हूँ, जिस स्थिति से तुम गुज़र रही हो।" भीतरी जेब से उसने एक दूसरा पुराना काग़ज़ निकाला। "दूसरा पत्र?" ताओ-चिङ ने उस पीला लगे, मुड़े-तुड़े काग़ज़ के पन्ने को ले लिया। अपनी दोस्त पर बरबस एक दृष्टि डालकर वह चुपचाप पत्र पढ़ने लगी :

मार्च 27, 1928

प्रियतम,

प्रत्याशित सज़ा अब सुना दी गयी है, अतः तुम्हारे लिए यह मेरा अन्तिम पत्र है। अत्यधिक दुखी मत होना। याद रखो, तुम्हारा समय क़रीब है और तुम्हारे ऊपर भारी ज़िम्मेदारियाँ हैं। बच्चे की और साथ ही साथ स्वयं अपनी अच्छी तरह देखभाल करना, ताकि तुम मेरा बदला ले सको।

आज मेरे भाग्य का फ़ैसला न हो सका – मैं कुछ समय से इसका अनुमान कर रहा हूँ। यह मेरी अन्तिम गृह-वापसी है – एक शानदार मौत। मुझ पर यक़ीन करो, मैं दुखी नहीं हूँ बल्कि अवर्णनीय रूप से गर्वोन्नत और खुश हूँ कि मैं अन्त तक सर्वहारा क्रान्ति की लक्ष्यसिद्धि के लिए लड़ा। मेरी प्यारी, तुम एक दृढ़ कॉमरेड हो, जो परीक्षाओं को झेल सकती हो। आओ, हम खुशी खुशी एक-दूसरे से अलविदा हों।

सिर्फ़ एक चीज़ मुझे परेशान करती है।

तुम्हारा ज़िद्दी मिज़ाज, तुम्हारा उतावलापन! विजय रातो-रात नहीं पायी जा सकती। अभी आगे एक लम्बा रास्ता तय करना है, जो कठिनाइयों से भरा हुआ है। पूरी तन्मयता से जनगण के बीच जाओ और कड़ी मेहनत करो। मेरी मौत की वजह से हड़बड़ी में कुछ मत करना।

अगर बच्चा तुम्हें अधिक बोझ लगे तो उसे किसी के द्वारा गोद ले लेने देना। ऐसा मत होने देना कि एक बच्चा तुम्हें पीछे खींच ले जाये। लेकिन मेरी प्यारी क्या तुम हमारे इकलौते बच्चे का नाम निएन-लिन (इसका मतलब है लिन को याद रखो) रखोगी?

तुम्हारे लिए मेरा अन्तिम सन्देश है – अन्त तक लड़ती रहो। एक

दृढ़निश्चयी बोल्शेविक योद्धा बनने के लिए अपने को तपाकर फ़ौलाद बनाओ।
मेरे अधूरे कार्यभार को पूरा करने का साहस रखो।

वेन-लिन

दोनों महिलाएँ, जिनकी नियतियाँ इतनी समान थीं, उस रात एक-दूसरे की वेदना में सहभागी बनीं। अपने गालों से आँसू पोंछकर लिऊ यी-फेङ बोली :

"मेरे पति का अन्तिम पत्र मुझे सतत प्रेरणा देता रहा। उसकी मौत के बाद सिऊ-लान, जब मैंने पहली बार उस पत्र को पढ़ा, तब से मैं काफ़ी बदल गयी हूँ। यद्यपि मैं एक कामगार थी, पर अव्यावहारिक, असावधान और उतावली हुआ करती थी। हमेशा स्वार्थपूर्ण विचारों द्वारा जगमगाया करती थी, फिर भी उसी समय से मैं धीरे-धीरे अधिकाधिक व्यावहारिक और स्थिरचित्त होती गयी, और अपना काम और सुचारू ढंग से करती गयी। मैं इस पत्र को सर्वाधिक संकटपूर्ण दिनों से, अपनी प्रगति में एक तुरही के स्वर और अपने लिए एक सतत यादगार के तौर पर रखे हुए हूँ।" वह उठ खड़ी हुई और बत्ती बुझा दी। खिड़की के फटे कागज़ से होकर चाँदनी चमक उठी, जब उसने ताओ-चिङ का हाथ थामा और उसकी आँखें एक दुर्लभ दाहकता से दमक उठीं, हालाँकि उसका स्वर मधुर और मन्द उच्चरित हो रहा था। "सिऊ-लान, मैंने बहुत अधिक झेला है – कभी-कभी तो इतना कि बरदाश्त के बाहर। पहले मेरा पति मार डाला गया। कई बार मैंने सुना कि एक बढ़िया कॉमरेड, जिसको मैंने एक मीटिंग में देखा या जिससे कुछ ही दिन पहले बातचीत की थी, क़त्ल कर दिया गया। मेरा बच्चा – हमारा इकलौता बच्चा, जिसके लिए मेरे पति ने निएन-लिन नाम चुना था – शंघाई में एक कम्युनिस्ट कार्यकर्ता परिवार की देखरेख में था, लेकिन श्वेत आतंक के दौरान वे उसे लेकर अन्यत्र चले गये और मैं अपने बच्चे को न पा सकी। एक टोकरी लेकर सब्ज़ी बेचने वाली किसान औरत का लिबास पहनकर मैं उस गली में घूमती-फिरती रही, जहाँ वे रहते थे, निएन-लिन को खोजती रही, लेकिन हमारे इकलौते बच्चे का कोई अता-पता न चला।"

ताओ-चिङ को लगता था कि वह फूट-फूटकर रो पड़ेगी, लेकिन लिऊ यी-फेङ इतनी शान्ति से बोल रही थी, मानो किसी अन्य की मुसीबतों का बयान कर रही हो। फिर भी उसके होंठ कुछ काँप रहे थे और उसकी आँखें आँसुओं से चमक रही थीं। वह ज़ाहिरा तौर पर और भी कुछ कहना चाह रही थी, लेकिन शब्द नहीं निकल पा रहे थे। एक टेढ़ी मुस्कान के साथ वह ख़ामोश हो गयी।

ताओ-चिङ इस पूरे समय में उस सयानी महिला के साथ चिपकी रही, क्योंकि लू चिआ चुआन की मौत की पिछली रात मिली ख़बर के समय से ही वह अपनी कँपकँपी नहीं रोक पा रही थी। अपनी दोस्त के मुरझाये चेहरे को निहारकर उसने

ंध कण्ठ से पूछा : "तुमने इस सारे समय में कैसे साज-सँभाल की माँ? पिता के मरने के समय से तो अब तक सात वर्ष बीत चुके हैं।"

लिऊ यी-फेङ ने पुनः अपने को संयत कर लिया था। उसने धीमे से जवाब दिया :

"उसकी मौत के बाद मैं गिरफ़्तार हो गयी। तिएन-लिन जेल में पैदा हुआ। मेरे क़ैदी जीवन के तीन वर्ष के दौरान उन्होंने मुझे क्रूर यातनाएँ दीं, और मेरी कई पसलियाँ तोड़ डालीं। जब मैं बाहर आयी तो शारीरिक रूप से टूट चुकी थी। तुम शायद सोचती हो कि मैं पचास से ऊपर हूँ, है न सिऊ-लान? सच्चाई यह है कि मैं सिर्फ़ तैंतीस वर्ष की हूँ।" अचानक वह रहस्यमय ढंग से मुस्कुरायी। "मैं बूढ़ी नहीं हूँ, लेकिन मैं एक खुशहाल घरेलू जीवन के सभी अवसर खो चुकी हूँ। लेकिन मैं चाहती हूँ कि तुम खुश रहो, सिऊ-लान..." और अधिक शालीनता और गम्भीरता से वह आगे बोली। "मैं तुमको वह सलाह देना चाहती हूँ, जो मेरे पति ने मुझे दी थी। स्थिरचित्त और विवेकयुक्त होकर काम करो। जहाँ पार्टी को तुम्हारी सबसे अधिक ज़रूरत हो, वहाँ जाओ। तुम्हें दुश्मन से लड़ने के लिए बन्दूक़ की आवश्यकता नहीं है। तुम अपनी क़लम से, अपने विचारों से लड़ सकती हो – यहाँ तक कि धोने का पटरा भी हमारे हाथों में एक हथियार हो सकता है।"

"तुम चिन्ता मत करो माँ!" ताओ-चिङ भी शान्त और गम्भीर हो चली थी। "पिता के पत्र ने मुझे समझने में मदद की है, मैं तुमसे सीखने का वादा करती हूँ, और तुम जैसे अनुभवी लोगों से सीखना कभी बन्द नहीं करूँगी।"

——:o:——

अध्याय 26

लिऊ यी-फेङ ताओ-चिङ को घर पर खाना बनाने, धुलाई करने और ग्राहकों से निपटने के लिए छोड़कर अक्सर बाहर चली जाती थी।

एक दिन दोपहर के बाद जब सयानी महिला बाहर थी, तो ताओ-चिङ ने एक दस्तावेज़ की नक़ल उतार चुकने के बाद छह या सात बन बनाने के लिए एक प्याला मक्के का आटा निपुणतापूर्वक गूँधकर उसकी लोई बनायी, जिसको उसने भाप में पकने के लिए अँगीठी पर रख दिया। अपने हाथों को धोते हुए उसने एक आवाज़ सुनी और दीवार की तरफ़ अपना सिर घुमाकर ध्यानपूर्वक सुनने लगी।

"भाड़ में जायें वे! भाड़ में जायें रेलवे के हाकिम!"

गालियों से युक्त एक मन्द चीख़ ने ताओ-चिङ को ऐसे विचलित कर दिया मानो वह किसी शिशु की चीख़ हो, तौलिये को नीचे फेंककर वह अपने पड़ोसी के मकान की तरफ़ दौड़ पड़ी।

धुँधले, घुटनभरे उस छोटे कमरे में काङ पर एक मरियल, पाण्डुर वर्ण का नौजवान पड़ा हुआ था, उसके बाल उलझे हुए थे, उसकी बड़ी-बड़ी आँखें थकी हुईं और ऊँची उभरी कपोल-अस्थियों के ऊपर बेरौनक थीं। जैसे कोई बच्चा अपनी माँ को देखकर चहक उठता है, वैसे ही उसने ताओ-चिङ के पहुँचते ही अपनी खुशी प्रकट की।

"बड़ी दीदी तुम फिर आ गयीं!' उसने तकिये पर से अपना सिर उठाकर उसका स्वागत किया और अपने रक्तहीन होंठों को एक भद्र, भोली मुस्कान में मरोड़ने लगा।

"कृपया हिलो-डुलो नहीं।" ताओ-चिङ ने उसे उठने से रोकने के लिए आगे की ओर झुकते हुए निवेदन किया। "क्या तुम पानी पीना चाहोगे, भाई? क्या आज तुम कुछ बेहतर महसूस कर रहे हो?" उसने उसे एक चिटका हुआ प्याला देते हुए, जिसको उसने केतली से भरा था, स्नेहिल भाव से आगे कहा, "मैं कुछ मक्के की रोटियाँ पका रही हूँ। जब तैयार हो जायेंगी, तो मैं तुम्हारे गरम-गरम खाने के लिए उनमें से कुछ ला दूँगी। मैं समझती हूँ, चाचा फिर बाहर चले गये हैं? बस धीरज रखो, तुम जल्द ही ठीक हो जाओगे।"

वह नौजवान, जो इतने तीखे ढंग से कराह और गालियाँ बक रहा था, आश्चर्यजनक रूप से उसकी उपस्थिति में शान्त और विनीत हो गया। जैसे ही फिर उस नौजवान ने उसकी ओर अपनी बड़ी-बड़ी तेजहीन आँखों से देखा, उसके मैले-कुचैले तकिये पर आभार के आँसू ढुलक पड़े।

"मैं तुम्हारी सहृदयता को कभी नहीं भूलूँगा, बड़ी दीदी चाङ।"

ताओ-चिङ उसके बिस्तर की बग़ल में खड़ी होकर इस नौजवान के लहज़े से उलझन में पड़ी हुई थी, जो बीस वर्ष से ऊपर की उम्र का था और उसे हमेशा "बड़ी दीदी" कहा करता था। अपनी पीड़ा और तनहाई में वह उससे और उसकी "माँ" से जुड़ गया था, उसी 'माँ' भी उससे बहुत लगाव रखती थी। उनके साहचर्य से उसे जो आनन्द मिलता था, उसकी ख़ातिर वह कभी-कभी कराहने लगता या उनके कमरों के बीच की दीवार को ठक-ठक करता या चिल्ला भी पड़ता, "बड़ी दीदी चाङ!" ताओ-चिङ दरअसल बहुत व्यस्त थी, नक़ल उतारने और दस्तावेज़ वितरित करने के साथ-साथ खाना पकाने और धुलाई करने के अलावा, उसे तरह-तरह के कामों से बाहर जाना होता था। लेकिन इसके बावजूद यह उसके लिए स्वाभाविक था कि वह अपने बिस्तर पकड़े पड़ोसी के प्रति एक माँ, बहन और नर्स – जैसा व्यवहार करे।

वह और लिऊ यी-फेङ मज़दूर वर्गीय परिवारों द्वारा किराये पर लिये गये एक कम्पाउण्ड के पिछवाड़े में रहती थीं। उसमें तीन कमरे थे, जिनके साथ दक्षिण की ओर एक खुली जगह थी, और इनमें से दो में वे रहती थीं, तीसरे में एक बूढ़ा विधुर

और उसका कुँआरा बेटा, जो एक बरख़ास्त रेलवे मज़दूर था, रहते थे। बाप भी एक समय रेल कर्मचारी रह चुका था, लेकिन अब वह तरह-तरह के काम करते हुए या फेरी लगाते हुए एक कठिन जीवन जी रहा था। यद्यपि वह सुबह से लेकर रात तक काम करता था, फिर भी वे दोनों अक्सर भूखे रह जाते थे।

बेटा, जेन यू-कुएई, पेइपिङ-हानकाऊ रेलवे में तब तक कोयला झोंकने का काम करता रहा, जब तक कि किसी गिरते हुए कोयल से उसकी टाँग ज़ख़्मी नहीं हो गयी और उसे बरख़ास्त कर दिया गया, क्योंकि वह कई महीने तक काम करने लायक़ ठीक नहीं हो पाया। उसका घाव मवाद से भर गया था और ठीक होने का नाम नहीं ले रहा था। लिहाज़ा वह कोई काम न पा सका, और उसे सारा दिन पीड़ा से छटपटाते हुए काङ पर पड़े रहना पड़ता था। जब लिङ यी-फेङ और ताओ-चिङ उस मकान में जाने के बाद पहली बार उसके यहाँ पहुँची, तो उसकी हालत बीमारी, पोषणहीनता और उपेक्षा के कारण अत्यन्त ख़राब थी। लेकिन अब उनके यहाँ आने के तक़रीबन एक माह के बाद, उनकी देखरेख के चलते वह चंगा होने लगा था। ताओ-चिङ या लिङ यी-फेङ को प्रत्येक दिन बाहर जाना पड़ता था, लेकिन जो भी घर पर रहती, वह इस नौजवान पर नज़र रखा करती, जिसका बाप सारा दिन बाहर रहता था। वे, अगर ज़रूरत होती तो, उसकी अँगीठी जला देतीं, और उसके लिए पीने का पानी ला देतीं। वे बूढ़े जेन द्वारा रखे गये खाने को गरम कर देती और उस विकलांग को परोस देती। इसके पहले तो अगर खाने को कुछ नहीं रखा होता था, तो इस नौजवान को तब तक भूखों रहना पड़ता था जब तक कि उसका बाप शाम को वापस न आ जाता। लेकिन अब उसकी नयी पड़ोसिनें देख लेतीं कि उसके पास खाने को है या नहीं, हालाँकि कई बार वे उसे खाना देकर स्वयं भूखी रह जाती थी। चूँकि ताओ-चिङ प्रायः घर पर रहती थी और उसकी अधिक देखभाल करती थी, इसलिए जेन यू-कुएई एकदम उसका मुरीद बन गया था।

उसके साथ कुछेक मिनट तक रहकर ताओ-चिङ अपने कमरे में वापस चली आयी। जैसे ही मक्के की रोटी तैयार हुई, उसने दो बन लपेटे और जैसे ही उन्हें ले जाने को तैयार हुई कि लिऊ यी-फेङ अन्दर आ गयी। तुरन्त ताओ-चिङ ने रोटी नीचे रख दी और फुसफुसाकर पूछा :

"आज की कोई ख़बर माँ? क्या तुम कोई साहित्य लायी हो?"

लिऊ यी-फेङ ने अपना नीले कपड़े का गाऊन उतारा और बैठने से पहले पानी पिया, और प्रत्युत्तर में बोली :

"उनका कहना है कि केन्द्रीय कमेटी ने वर्तमान स्थिति के बारे में हाल ही में एक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण विवरण प्रकाशित किया है, लेकिन मैंने अभी तक इसे देखा नहीं है। क्या घर पर कुछ घटित होता रहा है सिऊ-लान?"

"कोई ख़ास बात नहीं। मैं सोच रही हूँ, कब हम उस विवरण को देख पायेंगे?

मेरी यह जानने की बड़ी तमन्ना है कि लाल सेना कैसे आगे बढ़ रही है... तुम ज़रूर भूखी होगी माँ, मैंने अभी-अभी कुछ मक्के की रोटियाँ पकायी हैं। क्या तुम कुछ गरम-गरम नहीं खाओगी?

"अरे, मैं भूखी नहीं हूँ। मेज़ पर क्या है सिऊ-लान?" लिऊ यी-फेङ ने वह छोटा पुलिन्दा देख लिया था। ताओ-चिङ शर्मा गयी, "मक्के की रोटियाँ हैं। मैं कुछ को कल के लिए रख रही थी।"

बड़ी महिला हँसी और हल्के से झिड़की :

"मूर्ख बच्ची, मैं जानती हूँ कि तुम फिर अपनी चालें चलनी लगी हो। तुम उसे जेन यू-कूएई को देने के लिए जा रही थी, और उसके बाद मुझसे कह देती कि तुमने खूब खा लिया है। तुम बाक़ी सब मुझे दे देती और खुद भूखे रह जाती, लेकिन यह नहीं चलेगा, तुम्हें अपनी सेहत का ख़याल रखना ही होगा।"

"तुमने सही अनुमान लगाया माँ," ताओ-चिङ ने एक अपराधी भाव से मुस्कुराते हुए जवाब दिया। "लेकिन और किस तरह मैं तीन को खिला सकती हूँ, जबकि यह दो ही के लिए पर्याप्त है? वह बूढ़ा आदमी दिनभर अपने सामानों की फेरी लगाकर बेचने के बाद भी अक्सर बीस सेण्ट से अधिक नहीं कमा पाता। हम कैसे एक बीमार आदमी को भूखे..."

"हाँ, तुम ठीक कहती हो। उस लिहाज़ से तुम सही हो। अच्छा हो कि तुम तुरन्त उसके पास मक्के की रोटियाँ पहुँचा दो। लेकिन मुझसे और झूठी बातें मत करना। तुम्हें खुद पर्याप्त खाना चाहिए, और दूसरी बात, उससे राजनीति मत बतियाना..."

"ठीक है!" लिऊ यी-फेङ का बोलना खत्म होने से पहले ही ताओ-चिङ अपने पड़ोसियों के कमरे की ओर दौड़ गयी। उस मरियल नौजवान विकलांग के प्रति उसके निःस्वार्थ मातृवत स्नेह के नाते, उसे उसकी मदद करने में या उसके स्वास्थ्य में सुधार का कोई लक्षण देखने में आनन्द आता था।

लेकिन जेन का बाप, उसे एक सनकी बूढ़ा आदमी मालूम होता था। पहले वह इन दो महिलाओं पर कोई ध्यान नहीं देता था, हालाँकि वे पड़ोसी ही थे, और जब कभी वे उसके आसपास होतीं तो वह अपने चेहरे पर एक उदासी का भाव लिये सिर लटकाये रहता। बाद में उसका तौर-तरीक़ा सुधर गया, जब उसे अपने बेटे के प्रति उनकी दया का पता चला। यद्यपि अब भी वह उनसे कुछ नहीं कहता था। कभी-कभी जब ताओ-चिङ ओर जेन यू-कुएई रेलवे या पेइपिङ-हानकाऊ रेल मज़दूरों की सात फ़रवरी वाली हड़ताल के बारे में चर्चा कर रहे होते, तो नौजवान की आँखें चमक उठतीं और उसका चेहरा उत्तेजना में तमतमा उठता, जबकि वह बूढ़ा वहाँ लद्धड़ की भाँति सिर्फ़ बैठा रहता, मानो नींद में हो। इससे ताओ-चिङ के मन में उसके प्रति कुछ-कुछ नफ़रत पैदा होती। इस तथ्य के बावजूद कि लिऊ

यी-फेङ ने सावधान किया था कि वह उससे राजनीतिक मुद्दों पर बात न करे, और इस बात को ज़ाहिर न होने देने की चौकसी बरते कि वे भूमिगत पार्टी कार्यकर्ता थीं, वह कभी-कभी राजनीति की चर्चा कर देने से अपनेआप को नहीं रोक पाती। वह इतनी उत्साही थी कि अपनेआप को रोक न पाती।

आहिस्ता-आहिस्ता जेन यू-कुएई ने बदलना शुरू किया। उसके स्वास्थ्य और मनःस्थिति दोनों में सुधार हुआ। जहाँ वह पहले बिस्तर पर पड़े-पड़े कराहता रहता था या अपनी भड़ास निकालने के लिए गालियाँ बकता रहता था, या पुराने उपन्यास जैसे, 'सात नायक और पाँच बहादुर', 'देवताओं का अभिषेक', 'त्रासद प्यार' और 'एक बेसुरी लड़की' पढ़ा करता था, वहीं अब ताओ-चिङ के प्रभाव में वह 'लोकप्रिय जीवन', 'विश्व संस्कृति' और अन्य प्रगतिशील साहित्य पढ़ने लगा, जिन्हें वह चुपके से उसके पास पहुँचा जाती थी। कभी-कभी तो उसे काम रोक देना पड़ता और उसके दरवाज़े पर जाना पड़ता था, जब दीवार पर हल्की ठकठकाहट का सम्बोधन सुनायी पड़ता और आमतौर पर तब जब लिऊ यी-फेङ और वह बूढ़ा बाहर होते थे।

"क्या तुम विस्तार से एक चीज़ बताना चाहोगी बड़ी दीदी चाङ? क्या तुम कुछ मिनट दे सकती हो? मुझे अफ़सोस है कि मैं सिरदर्द बन गया हूँ। वर्ग संघर्ष का क्या मतलब है? मज़दूर वर्ग विजय कब हासिल करेगा?"

ऐसे अवसरों पर ताओ-चिङ भारी खुशी के साथ लम्बे लम्बे स्पष्टीकरण देने लगती थी।

लेकिन कभी-कभी ऐसा होता था कि वह बूढ़ा आदमी, जो अभी-अभी काम से वापस लौटा होता था, बाहर दहलीज़ की सीढ़ी पर बैठ जाता और चुपचाप उनकी बातें सुनता रहता था। एक बार जैसे ही ताओ-चिङ उसके पास से जाने लगी, उसने उसका रास्ता रोक लिया, और गुस्से और हताशा से चीख़ उठा :

"हम पर रहम करो कुमारी जी! हमें बरबाद मत करो!"

ताओ-चिङ उसके गुस्सैल लहज़े से पूरी तरह से खिन्न हो गयी। यद्यपि वह फिर कभी इस तरह नहीं बोला, फिर भी बूढ़ा जेन कमरे के बाहर छिप-छिपकर सुनने लगा था।

...ाङ हुआ एक ग्राहक के वेष में अक्सर अपने धुले कपड़ों के लिए आ जाता था। एक दिन वह असाधारण रूप से उल्लसित होकर आया और कपड़ों का एक गट्ठर रख दिया, जिसके भीतर गुप्त परचे छिपाकर रखे हुए थे। गट्ठर को खोलकर उसने एक छपा हुआ काग़ज़ निकाला और उसे लिऊ यी-फेङ को दे दिया। लिऊ ने इसे सरसरी तौर पर देखा और ताओ-चिङ की तरफ़ बढ़ा दिया। उसने पढ़कर पाया कि वह केन्द्रीय कमेटी द्वारा प्रकाशित था, और इसका

शीर्षक था : "जापान के विरुद्ध प्रतिरोध और राष्ट्रीय मुक्ति के लिए हमारे देशवासियों से अपील"। यह वही "एक अगस्त घोषणापत्र" था, जिसके द्वारा पूरे देश को प्रेरित किया जाना था, जिसके महत्त्वपूर्ण विवरण की चर्चा लिऊ ने की थी। ताओ-चिङ इसकी एक प्रति दो दिन पहले ही देख चुकी थी। अब जबकि म्युनिसिपल पार्टी-कमेटी ने इसे सार्वजनिक वितरण के लिए छाप दिया था, उसे रोमांच महसूस हुआ, मानो वह पहली बार इसे पढ़ रही हो। च्याङ हुआ पर एक नज़र डालकर वह दबे हुए स्वर में पढ़ने लगी :

मातृभूमिविहीन दास होने से इन्कार करने वाले साथी देशवासियो!

देशभक्त अधिकारियो और लोगो!

जापानी हमलावरों का प्रतिरोध करने और देश को बचाने के पुनीत कार्य में लग जाने को तैयार सभी पार्टियों और संगठनों के कॉमरेडो!

... ...

चीन की सभी उत्पीड़ित राष्ट्रीयताओंवाले (मंगोल, हुई, कोरियाई, तिब्बती, मियाओ, याओ, ली, फान...) भाइयो! आओ हम अपने ऊपर जापानी हमलावरों और ग़द्दार च्याङ काई शेक द्वारा कसी गयी सारी बेड़ियों को तोड़ डालने के लिए एक साथ उठ खड़े हों! आओ हम राष्ट्रीय प्रतिरक्षा के लिए उत्तर-पूर्व में एक अखिल चीनी संयुक्त सरकार गठित करने के लिए चीनी सोवियत सरकार और स्थानीय जापान-विरोधी सरकारों को निर्भीकतापूर्वक सहयोग दें! आओ हम लाल सेना, उत्तरपूर्वी जन-क्रान्तिकारी सेना और विभिन्न जापान-विरोधी स्वयंसेवक बलों को एक अखिल चीनी जापान विरोधी मित्र सेना गठित करने के लिए निर्भीकतापूर्वक सहयोग दें!...

इस बिन्दु पर ताओ-चिङ ने अपना सिर उठाकर देखा कि च्याङ हुआ और लिऊ यी-फेङ सिमटकर उसकी बग़ल में आ गये थे और वे भी अपनी साँस रोके पढ़ रहे थे, उनके होंठ हिल रहे थे और उनकी आँखें चमक रही थीं। यद्यपि वह उनकी आवाज़ें नहीं सुन पा रही थी, फिर भी वह उनके आन्तरिक उल्लास से वाक़िफ़ थी। लिऊ यी-फेङ का हाथ पकड़कर वह असीम उल्लास में चिल्ला उठी :

"यह अद्भुत वक्तव्य है, है ना माँ?"

"हाँ, है ही। एक बार जब हम जापानी हमलावरों को कुचल देंगे, तो हम अपनी विजय के और क़रीब पहुँच जायेंगे।" वह एक दमकभरी मुस्कान के साथ लिऊ यी-फेङ का हाथ कसकर पकड़ लेने के लिए आगे बढ़ी। वह बहुत कम ही इस तरह से उत्तेजित, उत्फुल्ल और तरुणाई से भरी दिखायी देती थी।

वे तीनों ख़ामोशी में एक क्षण तक परचे को निहारते रहे। उसके बाद च्याङ

के एक उच्चस्तरीय विवेक की आवश्यकता है। खुद को जाँचो, और देखो कि तुममें कितनी कमी है..."

ताओ-चिङ ने सिर झुका लिया और लम्बे समय तक ख़ामोश बनी रही, फिर कटु आत्मभर्त्सना से भरकर उसने अपनी आँखें उठायीं और बोली :

"कृपया मुझ पर यक़ीन करो माँ! तुमने मुझे एक अच्छा सबक सिखा दिया है। मैं वादा करती हूँ कि फिर कभी यह ग़लती नहीं दोहराऊँगी।" बड़ी महिला ने स्वीकृति में सिर हिलाया। वह एक या दो मिनट तक सोचने के बाद अचानक आगे बोल पड़ी, "पूरी छानबीन करने के बाद पार्टी ने पाया कि ताई यू, जिसको तुम जानती हो, एक ग़द्दार और जासूस है... क्या अब तुम नहीं समझती कि क्यों हमें कभी भी अपनी चौकसी में ढील नहीं बरतनी चाहिए?"

ताओ-चिङ पूरी तरह हक्का-बक्का थी। "क्या वह सचमुच एक जासूस है?" उसने आधे अविश्वास के साथ पूछा।

"इसके बारे में कोई संशय नहीं हो सकता। च्याङ हुआ को उसके मामले की पूरी छानबीन करने में काफ़ी मेहनत करनी पड़ी है और पार्टी ने विभिन्न स्रोतों से इतनी अधिक सूचना एकत्र कर ली है कि कोई ग़लती नहीं हो सकती।"

ताओ-चिङ अपमानित भाव से अपने होंठ काटती हुई, वहीं की वहीं ख़ामोश खड़ी रही, मानो किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गयी हो।

उस शाम जेन यू-कुएई के बाप ने बिना किसी सूचना के अन्दर दाख़िल होकर अपना सवाल दाग दिया :

"कृपया ईमानदारी से बताओ – क्या तुम लोग कम्युनिस्ट हो?"

दोनों महिलाएँ चौंक गयीं और समझ नहीं पायीं कि क्या जवाब दें।

"तुम मुझसे सच-सच बता सकती हो। मैं तुम्हारा राज़ नहीं खोलूँगा। मुझे तुमसे कुछ कहना है – मुझे पहले ही स्पष्ट कर देना चाहिए था।"

ऐसा कहकर उस बूढ़े आदमी ने अपनी जैकेट के नीचे से एक मैली सफ़ेद कमीज़ निकाली, जिस पर एक बड़ा ख़ून का धब्बा था। उसके हाथ कुछ-कुछ काँप रहे थे।

"अन्ततः इसे देने के लिए मुझे कोई मिल ही गया! यह तुम हो। मैं इस मुसीबत को पूरे दो वर्षों से रखे हुए हूँ!"

"इसका क्या मतलब है चाचा? साफ़-साफ़ बताओ न!" ताओ-चिङ ने विस्मय से भरकर याचना की। "थोड़ा ठहरो। पहले मुझे देख लेने दो कि मैदान साफ़ है या नहीं।"

दो वर्ष पहले, बूढ़ा जेन चिङ फेङतिएन स्टेशन पर स्विचमैन था। पतझड़ की एक अँधेरी, तूफ़ानी रात में वह एक ट्रेन के लिए प्वाइण्ट बदलकर आधी रात को

रेल लाइन के किनारे स्थित अपनी झोपड़ी में वापस आया। वह कपड़े बदलने के पहले उन्हें आग पर सुखा रहा था, तभी उसकी झोपडी का दरवाज़ा चरमराया और खून से लथपथ एक नौजवान लड़खड़ाते हुए अन्दर दाखिल हुआ। बूढ़ा आदमी इस आकस्मिक आगमन पर चौंक उठा। इस तरह की तूफ़ानी रात में कौन आने की हिम्मत कर सकता है? क्या यह कोई भूत है, लेकिन वह बूढ़ा अपना मुँह खोले, इसके पहले ही वह नौजवान अजनबी बोल पड़ा।

"मुझे बचाओ चाचा! वे मेरे पीछे पड़े हैं।"

"क्या तुम कोई डाकू हो?" बूढ़े ने आतंकित होकर पूछा।

उस लड़के ने अपना सिर हिला दिया और उसके पथराये चेहरे पर एक मुस्कान प्रकट हो गयी।

"नहीं।"

"तब तुम क्या हो? मुझे सच-सच बताओ, वरना मैं तुम्हें ठहरने नहीं दूँगा।"

वह नौजवान जो कमज़ोरी से डगमगा रहा था, उसने उसे हाथ से पकड़ा। उसकी उँगलियाँ बर्फ़ की भाँति थी।

"मैं एक स्कूल मास्टर हूँ। हम अपने लिए नहीं लड़ रहे हैं... मैं क्वोमिन्ताङ द्वारा पकड़ लिया गया था और वे मुझे पेइपिङ भेजना चाहते थे। बस मैं भाग चला। लेकिन ज़ख्मी कर दिया गया।"

बूढ़ा चौंक गया, क्योंकि अजनबी की बोली और शकल-सूरत उसके बड़े बेटे, ली यू-पिन से मिलती-जुलती थी, जो रेलवे में ही काम करता था। सात फ़रवरी वाली हड़ताल के बाद उसे चेङ चाओ में युद्ध सरदार यू पेइ-फू के आदेश से शूट कर दिया गया था। वह अपने बाप के एतराज़ के बावजूद कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल हो गया था, और बराबर इस बात पर ज़ोर दिया करता था कि कम्युनिस्ट अपने लिए नहीं लड़ रहे हैं, कि महज़ अपने लिए जीना व्यर्थ है। अब यह अजनबी भी, जो वही बात कह रहा था, ज़रूर एक कम्युनिस्ट होगा। अतः बूढ़ा उसे अन्दर लाया, उसकी कमीज़ उतारने में उसकी मदद की जो खून और बारिश से तरबतर था, और उसने उसकी छाती में हुए गोली के घाव पर पट्टी बाँधी। लेकिन जब बूढ़े ने अपना कोट उतारा, उसे लड़के के ऊपर ओढ़ाया और उससे वहाँ तब तक पीछे रुकने का आग्रह किया जब तक बारिश थम न जाये, तो अजनबी ने अपना सिर हिला दिया।

"इसके लिए धन्यवाद, मैं नहीं रुक सकता चाचा! तुम्हारे उन कपडों में मैं किसी के द्वारा बिना पहचाने खिसक जाने में समर्थ हो जाऊँगा। अभी मुझे ढेर सारे काम करने हैं, तुम्हारा नाम क्या है? मैं तुमको कभी नहीं भूलूँगा।" नौजवान ने खींचकर वैसे ही अचानक दरवाज़ा खोला जिस तरह वह अन्दर आया था और उस तूफ़ान में लड़खड़ाता हुआ बाहर चला गया। बूढ़ा नंगी छाती लिये उसे विदा करने गया,

लेकिन इसके पहले कि वह वापस अन्दर आता, लड़का रेंगते हुए वापस चला आया। उसका चेहरा दर्द से ऐंठ रहा था और उस घनघोर बारिश में उसका स्वर लगभग न सुनायी देने की हालत में था।

"मैं बुरी तरह ज़ख़्मी हूँ। मुझे लगता है कि उन्होंने मुझे मरणासन्न कर दिया है चाचा, लेकिन मैं यहाँ मरकर तुम्हारे लिए कोई मुसीबत खड़ी करना नहीं चाहता। कृपया इस ख़ून-सनी कमीज़ को हिफ़ाज़त से रखना। मैं कम्युनिस्ट नहीं हूँ, लेकिन अगर तुमको मौक़ा लगे तो पार्टी को बताना कि मैंने अपनी आख़िरी बूँद सर्वहारा क्रान्ति के लिए बहायी है। मैं होपेई में पोएह का चाओ यू-चिङ हूँ..."

बूढ़ा उस तूफ़ानी रात के असीम अन्धकार में एकटक घूरता रहा, उसके गालों पर आँसुओं की धार बह रही थी। उसका बेटा, उसका प्यारा बड़ा बेटा, भी अन्तिम समय तक पार्टी के बारे में ही सोचता रहा था।

"चाओ यू-चिङ!" ताओ-चिङ ने अश्रुपूरित हो रुँधे स्वर से दोहराया।

"अगर तुम लोग कम्युनिस्ट हो, तो कृपया इस कमीज़ को ले लो।" बूढ़े की लाल आँखों से आँसू छलछला आये थे। "मैं नहीं चाहता था कि तुम लोग मेरे छोटे बेटे से बात करो क्योंकि..." उसने आगे बोलने से पहले ताओ-चिङ पर एक नज़र डाली। "क्योंकि मेरा बड़ा बेटा चाओ यू-चिङ की ही तरह मर गया था। मैं नहीं चाहता कि मेरा छोटा बेटा भी वही राह पकड़े, लेकिन बाद में मैं समझने लगा – मैं अक्सर बाहर बैठ जाता था और तुम्हारी बातें ध्यानपूर्वक सुनता रहता था, धीरे-धीरे मैं समझने लगा।"

लिऊ यू-फेङ बूढ़े को ख़ामोशी से निहारती रही, जबकि ताओ-चिङ विस्मित होकर बिस्तर पर बैठी रही, ख़ून-सनी कमीज़ उसके हाथों में थी। उसको आश्चर्य में देखकर बूढ़ा बुदबुदाया, "ख़ैर, अब क्या बात है?" एक क्षण तक शून्य भाव से घूरकर उसने अपनी आँखें नीची कर ली और अपने सिर झुकाकर काँपते स्वर में बोला :

"चाची लिऊ और बड़ी दीदी चाङ 'बस एक बात और' अगर मेरे लड़के या मुझसे कुछ हो सकेगा, तो हम तुम्हारे लिए अपनी जान तक दे देंगे। मैं अपने बड़े बेटे और चाओ यू-चिङ का बदला लेना चाहता हूँ..."

अपनी आँखें पोंछकर ताओ-चिङ उसके क़रीब चली गयी, वह चाह रही थी कि उसका हाथ कसकर पकड़ ले, लेकिन शर्म के मारे वैसा न कर सकी। एक विराम के बाद वह मुस्कुरायी उसकी बड़ी-बड़ी आँखों में एक गहरा स्नेह था।

"चाचा, कितना विचित्र है कि मैं आज तक नहीं जानती थी कि तुम कितने अच्छे आदमी हो।"

"हाँ, मैं भी तुम दोनों को वाक़ई आज तक नहीं समझ पाया था।" वह

मुस्कराया और उन्होंने पहली बार उसके झुर्रीदार चेहरे पर एक गहरी प्रसन्नता की झलक देखी।

——:o:——

अध्याय 27

[illegible] छोटे-से किसी हद तक खराब ढंग से रौशन रसोईघर में, सियाओ-येन की माँ [illegible] का खाना तैयार करने के लिए अँगीठी ठीक-ठाक करने में काफ़ी देर से व्यस्त थी। उसके खूबसूरत तीखे नैन-नक्श वाले चेहरे की रेखाएँ आग की दमक में स्पष्ट [illegible] रही थी, लेकिन वे उसके हृदय की खुशी को छिपा नहीं पा रही थीं। वह [illegible] के माँस की एक डिश पका रही थी, और जब उसने कटी लाल मिर्च के साथ [illegible] को कड़ाही में डाला, तो हवा तीखी महक से भर गयी। उस क्षण, मानो कोई [illegible] बात याद करते हुए, उसने अपनी पीठ-पीछे अपनी नौकरानी को आवाज़ [illegible] हौदी में सब्ज़ियाँ धो रही थीं :

"सिस्टर चेन, जानती हो आज शाम को डिनर पर कौन आ रहा है?"

"नहीं," नौकरानी ने जवाब दिया, जिसकी चौड़ी मुस्कान उसके शब्दों को [illegible] थी।

"सियाओ-येन सयानी हो रही है। उसकी जल्दी ही शादी हो जायेगी। तुम्हारे [illegible] और मैंने उसके नौजवान साथी को अपने साथ शाम को भोजन करने का [illegible] दिया है। प्रोफ़ेसर फान और वू भी आ रहे हैं। तुम उस नौजवान के बारे [illegible] जानती हो सिस्टर चेन?... वह बहुत स्थिरचित्त और खूब पढ़ा-लिखा भी है।"

"अच्छा नौजवान है," नौकरानी ने सहमति व्यक्त की। "मैं तो तुरन्त ही भाँप [illegible] वह अच्छा आदमी है। कुमारी सियाओ-येन की शादी का यह एकदम [illegible] वह तेईस वर्ष की हो गयी है, है न? देहात में लड़की पन्द्रह-सोलह [illegible] ही ब्याह दी जाती है, और कुमारी सियाओ-येन की उम्र तक [illegible] तो उसका बच्चा कई वर्ष का हो चुका होता है।"

"[illegible] छात्राओं की बात दूसरी है। सियाओ-येन इतने ऊँचे आदर्शों वाली [illegible] में उसके भविष्य को लेकर चिन्तित हुए बिना नहीं रहती, जबकि [illegible] ही नहीं होती। यह पहला नौजवान है, जिसमें उसने दिलचस्पी [illegible] कुशलतापूर्वक डिशों को तैयार करती हुई श्रीमती वाङ ने नौकरानी को [illegible] अन्तरंगता से बताया कि कौन-सी बात कुछ समय से उसके मन [illegible] "वह अगले वर्ष विश्वविद्यालय की पढ़ाई पूरी कर लेगी। और वह [illegible] जब तक स्नातक नहीं हो जाती तब तक श्री चेङ से शादी नहीं

करेगी। तुम देख सकती हो कि वे बहुत प्रेमासक्त हैं, क्या नहीं देखती?"

सिस्टर चेन देहात की रहने वाली एक चालाक, अधेड़ उम्र की महिला थी। श्रीमती वाङ के दमकते चेहरे पर एक दृष्टि डालकर वह जानबूझकर, फिर मुस्कुरायी और ठण्डेपन से उसे इत्मीनान दिलाया, "आप जल्दी ही अपनी बाँहों में खिलाने के लिए एक पोता पा जायेंगी, मैडम। देहात में तो पोतों का होना एक बूढ़ी महिला के लिए बहुत मायने रखता है। जब कोई बच्चा पैदा होने वाला होता है, तो माँ की ओर से यह दादी ही होती है जो हर चीज़ तैयार रखती है – खाण्ड वाली चीनी, अण्डे, गाँतियाँ, रज़ाइयाँ, बच्चे के सभी कपड़े। यही कारण है कि ग़रीब लोग बच्चियाँ नहीं चाहते। बेटे परिवार के लिए इमदाद साबित होते हैं, लेकिन बेटियों पर तो आपको पैसे ही ख़र्च करने पड़ते हैं।" इस बिन्दु पर अचानक यह याद करके कि उसकी मालकिन की तीन बेटियाँ ही थीं और कोई बेटा न था, उसने तुरन्त लहज़ा बदल दिया। "देहात में तो ऐसे ही होता है, मैडम। बेशक, शहरों में जवान लड़कियों की बात दूसरी है। कुमारी सियाओ–येन इतनी चतुर और योग्य है कि वह बेटे की भाँति आपके बुढ़ापे में मदद करेगी।"

श्रीमती वाङ ने मानो ध्यानपूर्वक सुनने के लिए अपना सिर एक तरफ़ कर लिया था, लेकिन वास्तव में वह नौकरानी की कही हुई बातें सुन नहीं रही थी, क्योंकि उसका ध्यान तो बैठक की ओर था, जहाँ उसका पति और बेटियाँ मेहमानों का स्वागत कर रहे थे। ख़ातिरदारी का आनन्द लेते हुए वहाँ मेज़ के पास उनका होने वाला दामाद चेङ चुन–त्साई, सियाओ–येन और उनके दोस्त प्रोफ़ेसर फान और वू तथा सियाओ येन की बुआ वाङ येन–वेन बैठे हुए थे। उस ठण्डे, स्वच्छ कमरे की बड़ी-बड़ी, चमकदार खिड़कियों पर सफ़ेद पटरेदार परदे लटक रहे थे, वहाँ सबकुछ बहुत ही आरामदायक था।

वे बहुत मज़े से शराब पी रहे थे, जबकि नौकरानी स्वयं मालकिन द्वारा पकायी गयी एक के बाद बेहतरीन डिश लाती जा रही थी। दुबला-पतला, पीले वर्ण का प्रोफ़ेसर फान, प्रोफ़ेसर वाङ और एक ठिगने क़द के मोटे-थुलथुल और बड़े तरबूज़े जैसे सिर वाले प्रोफ़ेसर वू के बीच सम्मानित जगह पर बैठा हुआ था। वाङ येन–पिन अपने भाई की बग़ल में तथा सियाओ–येन और ताई यू प्रोफ़ेसर फान के सामने बैठे हुए थे।

"क्या मैं पूछ सकता हूँ कि तुम कहाँ पढ़ रहे हो, श्री चेङ?" प्रोफ़ेसर वू ने अपना प्याला रखकर और अपनी चमकदार चाँद का पसीना पोंछते हुए एक मुस्कुराहट के साथ सवाल किया।

ताई यू एक गाढ़े नीले रंग के सर्ज के सूट में सजा- धजा था। उसके बाल, जो आमतौर पर कड़े और बेतरतीब रहते थे, पोमेड लगाकर चिकनाये गये थे। अपनी सूजी–सूजी आँखें प्रोफ़ेसर वू पर टिकाकर, वह जवाब देने ही वाला था, तभी

सियाओ-येन ने चोरी से उसका कोट खींचा और ताई यू उस पर कनखी से देखते जवाब में बोला :

"त्सिङहुआ में, प्रोफ़ेसर वू।"

"त्सिङहुआ? बहुत अच्छा! वह सबसे बढ़िया विश्वविद्यालय है, है न?" प्रोफ़ेसर वू ने सियाओ-येन की ओर अँगूठे से इशारा करके अपनी स्वीकृति जतायी, और ... वह उतना ही स्पष्टवादी और मुँहफट था, जितना कि उसका मेज़बान, ... उससे अधिक हँसोड़ और गप्पी था। लाल मिर्च से बघारे गये मुर्गे के माँस ... कौर मुँह में लेकर वह बोल उठा, "तुम्हारी पत्नी कितनी शानदार रसोइया ... पिन। इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता कि उसने कितनी साधारण सामग्री ... की है -- यहाँ तक कि मामूली शलजम या सोया-पनीर ही क्यों न हो – ... सुगन्धित लज़ीज़ डिश तैयार कर देती हैं, एक सुगन्धित डिश।" प्रोफ़ेसर ... की ओर सिर हिलाकर वह आगे बोला, "तुम तो यहाँ अक्सर आते नहीं, बड़े ... फान, लेकिन मैं तो हफ़्ते में कम से कम दो बार यहाँ आ टपकता हूँ – ध्यान ... हमेशा डिनर के समय ही। इसलिए मैं श्री चेङ से पहले भी मिल चुका हूँ।" ... महसूस करते हुए कि वह अनजाने में इस नौजवान के विश्वविद्यालय के मुद्दे ... बहक गया था, उसने हल्के से मेज़ पर ठोका, और आँखें मिचकाते हुए ...

"क्या तुम मुझे बता सकते हो श्री चेङ, कि तुम्हारे 'त्सिङहुआ साप्ताहिक' के ... मण्डल में कौन-कौन हैं। यह सचमुच अव्वल दर्जे का अख़बार है।" ... की प्रतीक्षा किए बग़ैर उसने अँगूठे से एक दूसरा संकेत किया और फिर ... "क्या तुमने इसे पढ़ा है बड़े भाई फान? तुम, बड़े भाई वाङ? हाल ही ... प्रत्येक अंक को जैसे ही यह प्रकाशित होता है, पढ़ना चालू किया ... यह एक छात्र-प्रकाशन है, फिर भी इसके आलेख और तर्क उतने ही ... जितने कि राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त उच्चस्तरीय पत्रिकाओं के। मेरे ख़याल ... आलेख तो 'लाइफ़ इन रीडिंग' के आलेखों से भी बेहतर होते हैं। ... अपनी शिकायत अवश्य प्रकट करनी चाहिए।' आजकल जैसे हालात ... नहीं कि छात्र क्रान्ति और राष्ट्रीय मुक्ति के बारे में नारे लगायें। मैं तो ... और बेकार होता जा रहा हूँ, लेकिन इस भावना का गहरा अहसास ... नहीं रह सकता कि हमारे देश का क्या होगा।" उसने बार-बार अपना ... उसकी छोटी आँखों में चिन्ता झलकने लगी और उसने शराब की एक ...

... श्रीमती वाङ जिसने अपना एप्रन उतार दिया था और एक भूरा ... पहन लिया था, आहिस्ता से अन्दर आयी। प्रोफ़ेसर वू उसके अभिवादन ... खड़ा हुआ और बोला, "तुम्हारे अद्भुत डिनर के लिए धन्यवाद

श्रीमती वाङ! मैं अभी-अभी यही कह रहा था कि तुम जो भी सामग्री इस्तेमाल करती हो, तुम्हारे पकाने का ढंग डिश को एक महक से भर देता है। बढ़िया भोजनऔर शराब का लुत्फ़, निश्चय ही जीवन के आनन्दों में से एक है! ख़ैर, बैठो न और हमारा साथ दो!"

सियाओ-येन एक कुर्सी लायी और श्रीमती वाङ बैठ गयी। उन सब पर एक स्नेहमयी दृष्टि डालती हुई, उसने मुस्कुराकर कहा :

"यह तो बस एक साधारण भोजन है, कृपया तुम लोग खाओ!" ताई यू पर प्यार भरी नज़र डालकर वह उससे फुसफुसाकर बोली, "क्या तुम्हें भूख नहीं है? शर्माओ नहीं!" उस नौजवान ने उलझन में भरकर सिर हिलाया और मुस्कुरा दिया।

"धन्यवाद! आप ज़रूर थक गयी होंगी।"

"तनिक भी नहीं!" श्रीमती वाङ ने आहिस्ता से उसका कन्धा थपथपाया, और अपनी आँखें अपनी बेटी की ओर करके एक दबी हँसी के साथ आगे बोली। "सियाओ-येन खाना पकाना नहीं जानती। क्या मैं आकर कभी-कभी तुम दोनों का खाना पका दिया करूँगी? तुम देख रहे हो, प्रोफ़ेसर वू हमेशा ही मेरे खाना पकाने की प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करते रहते हैं।"

"मेरी प्यारी, थोड़ी शराब लाना!" अपने साथी प्रोफ़ेसर की लनतरानी का फ़ायदा उठाते हुए प्रोफ़ेसर वाङ ने एक प्याला उठाया और इसे अपनी पत्नी की ओर पेश कर दिया। "तुमने चुन-त्साई, बड़े भाई फान येन-वेन और हमारे बातूनी दोस्त, बड़े भाई वे के लिए डिनर तैयार करने में काफ़ी परेशानी उठायी है। हमें ज़रूर तुम्हारी सेहत का जाम पीना चाहिए।"

श्रीमती वाङ ने शराब का प्याला उठाया और चुस्की ली। तुरन्त ही प्रोफ़ेसर वू उसके पास आया, अपना प्याला उठाया और उसकी सेहत का जाम पेश किया, "श्रीमती वेङ तुम्हारी सेहत के लिए। हमारे मेज़बानों तथा श्री चेङ और सियाओ-येन की खुशी के लिए। और, सियाओ-येन तुम्हारी सेहत के लिए!"

सियाओ-येन एक दुल्हन की भाँति शर्मायी दिख रही थी। उसकी माँ उससे आग्रह कर चुकी थी कि वह चुन-त्साई को इन प्रोफ़ेसरों के साथ डिनर पर खाने के लिए कहे। वह एक औपचारिक सगाई की रस्म पूरी करने के लिए उन पर ज़ोर नहीं देना चाहती थी, परन्तु यह ज़रूर चाहती थी कि उनकी सगाई एक उपयुक्त तरीक़े से, उनके रिश्तेदानों को और सबसे अच्छे दोस्तों को विदित हो जाये। उसने एक हफ़्ता पहले से ही, अपनी बेटी के लिए एक चुस्त लेकिन मद्धिम धारी वाले गहरे हरे रेशमी गाऊन के साथ-साथ उस नौजवान के लिए एक जर्सी और ओवरकोट ख़रीदकर तैयारियाँ शुरू कर दी थी। जब सियाओ-येन के पिता के दोस्त घर पर आते, तो सियाओ-येन आम तौर पर उनके साथ बातचीत करने और विचारों का आदान-प्रदान करने का आनन्द उठाती। उसके लिए यह बुद्धिजीवियों के बीच

प्रचार कार्य का एक ज़रिया होता। आज अपने नये गाऊन में सज-धजकर वह वहाँ ... दुल्हन की भाँति शर्मायी हुई बैठी थी, कारण कि यद्यपि उसकी माँ ने उनकी ...गाई की वास्तव में घोषणा नहीं की थी, फिर भी बातचीत का अन्दाज़, उसकी ...आ की आँखों की जानकारी जतलाने वाली झलक, और उसकी शोख, जवान ...ों द्वारा की जाने वाली चुहलबाज़ियाँ...इस सबने मामले को स्पष्ट कर दिया था।

"जीजा जी! जीजा जी!" लिङ-येन मज़ा लेने के लहजे में अपनी बड़ी बहन ... पीछे खड़ी होकर चिल्लायी, और ताई यू की ओर इशारा किया। "बहन! बहन! ...जा जी!"

सियाओ-येन शर्मा गयी। उसने अपनी बुआ की धुँधली आँखों में उमड़ी प्रशंसा ...और अपने प्रेमी की प्यार भरी नज़रों को नज़रअन्दाज़ करने की कोशिश की। एक ... की उलझन के बाद वह उठ खड़ी हुई और उदारतापूर्वक प्रोफ़ेसर फान को और ... का आग्रह करने लगी, जिन्होंने सारे समय कुछ नहीं कहा था।

"खाइये चाचा फान," उसने आग्रह किया। "आज आप इतने ख़ामोश क्यों हैं?"

"हाँ बड़े भाई फान, बात क्या है? कोई गडबड़?" प्रोफ़ेसर वाङ ने आग्रहपूर्वक ...छा।

प्रोफ़ेसर फान, जो साठ से अधिक उम्र का, भूरी मूँछोंवाला और एक पुराना ... रेशमी गाऊन पहने था, जिस पर जगह जगह ग्रीस के धब्बे पड़े थे। ... हरकतें सुस्त और भावशून्य थीं, कुछ देर बाद उसने नज़रें उठाकर, ... से पूछा :

"...पिन, बड़े भाई वू, राष्ट्रीय विश्वविद्यालय में तुम्हारी तनख़्वाह कितने ... बकाया है?"

"...ओह, क्यों उसे शुरू कर रहे हो! उसकी कोई चर्चा..." उसका मेज़बान उत्तर ... पहले ही प्रोफ़ेसर वू बोलने लगा था। जब वह बोलता था, तो उसका बड़ा ... सिर हिलने लगता था। "सदियों के अनुभव ने हमें सिखा दिया है कि ... अधिकारी धनी होते जाते हैं, जबकि अध्यापक कंगाल ही बने रहते हैं। ... की स्थापना के बाद से तो स्थिति बद से बदतर होती गयी है। कितनी बार ... ने अपने वेतन भुगतान के लिए आन्दोलन किया है? मैं बताऊँ एक वर्ष, ... तीन वर्ष। सियाओ-येन गिनने में मेरी मदद करो! हुँह। 1917 से या गणतन्त्र ... से, जब मैंने पढ़ाना शुरू किया, तब से मैंने अड़तालिस से कम ... में भाग नहीं लिया होगा, बल्कि अठारह वर्षों में पचास से अधिक ही। ... है कि विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर राज्य के स्तम्भ हैं, और प्रतिमाह अपनी ... और भत्तों को मिलाकर कुल दो या तीन हज़ार युआन पाते हैं। यह सुनने ... लगता है पर वास्तव में हम सभी जो कुछ पाते हैं, वह कोरे आश्वासन ... तो हमें छह-छह माह तक तनख़्वाह नहीं मिलती। बेशक, तुम

किसी आदमी से बेगार ले सकते हो, लेकिन तुम्हारा पेट बेगार नहीं कर सकता। यह एक दिन भी बना खाना खाये नहीं चल सकता। लिहाज़ा तुम्हें गिरवी की दूकानों पर जाना पड़ता है, या मदद के लिए अपने रिश्तेदारों या दोस्तों का मुँह देखना पड़ता है। अक्सर तुम नहीं जानते कि तुम्हारे लिए दूसरी जून का खाना कहाँ से आयेगा। फिर भी रिवाज़ का तकाजा है कि प्रोफ़ेसर अपना रूप-रंग बनाये रखे। कितना अटपटा लगता है, जब तुम्हें अपने निजी रिक्शा वाले को या अपनी नौकरानी को बरख़ास्त करना पड़ता है। तुम अपनी बाँह में एक आकर्षणहीन ब्रीफ़केस दबाये ले जाते हो, मानो तुम कोई धनी-मानी और महत्त्वपूर्ण व्यक्ति हो, जबकि वास्तव में उस ब्रीफ़केस में कुल मिलाकर व्याख्यान नोटों के कुछ मैले-कुचैले काग़ज़ भरे होते हैं। तुम जो पुराना सूट पहने होते हो, उसके अलावा तुम्हारे पास दूसरा नहीं होता। यह हास्यास्पद है।" वह हँसा। "तब भी मैंने इन सारे वर्षों में अपने शरीर और आत्मा को बनाये रखा है। क्या तुम फिर ग़मगीन हो गये, बड़े भाई फान? चिन्ता करने से कोई फ़ायदा नहीं। मैं तुमको थोड़ा और यथार्थवादी होने की सलाह दूँगा।" अन्ततः वह अपने ललाट पर छलछला आयी पसीने की बड़ी बूँदों को पोंछने के लिए रुका और फिर बोलने ही वाला था कि उसके मेज़बान ने बीच ही में टोक दिया :

"शानदार! बड़े भाई वू ने प्रोफ़ेसरों के जीवन की एक सच्ची तस्वीर पेश की है।" एक हँसी के साथ उसने विषय बदल दिया! "अतीत में मैं हमेशा ही इस तरह के चिन्ताजनक मामलों पर सोच-सोचकर अपने को बड़ी कठिनाई में पाता था। मैं सोचा करता था कि अच्छे आदमियों द्वारा चलायी जाने वाली सरकार हर चीज़ को ठीक कर देगी। लेकिन अब...अब।" उसने अपनी चॉपस्टिकें रख दीं, एक सिगरेट जलायी तथा सियाओ-येन और ताई यू पर मुस्कुराते हुए स्वीकृति में सिर हिलाकर पीछे खिसककर बैठ गया। "अच्छा हो कि हम नौजवान लोगों को एक अवसर दें। जहाँ तक ऐसी समस्याओं के विश्लेषण की बात है, इसमें चुन-त्साई और सियाओ-सेन हमारी पीढ़ी से अधिक तर्कसंगत और दूरदृष्टिवाले हैं। चुन-त्साई, क्या तुम बताना चाहोगे कि गतिविधियाँ क्या रुख लेने जा रही हैं? उत्तरी चीन में स्थिति दिन-ब-दिन अधिक तनावपूर्ण होती जा रही है। जापानी हवाई जहाज़ रात-दिन पेइपिङ के ऊपर उड़ान भर रहे हैं। लोग घबराने लगे हैं।"

अचानक एक हवाई जहाज़ की कर्कश भन्नाहट ने निरभ्र आकाश की ख़ामोशी को चीरकर चिंघाड़ते हुए प्रोफ़ेसर वाङ की टिप्पणियों को अचानक बीच में ही व्यवधानित कर दिया।

"करो शैतान की बात!" प्रोफ़ेसर वू बालसुलभ उत्सुकता से उछल पड़ा और दौड़कर अहाते में चला गया। उसके पीछे-पीछे सियाओ-येन, ताई यू और प्रोफ़ेसर वाङ भी चले गये।

एक हवाई जहाज़ धीरे-धीरे चक्कर काटता हुआ, मकान की छतों और पेड़ों के शीर्षों के ऊपर निचाई पर उड़ रहा था, ऐसा लगता था, जैसे शहर में कोई भी प्राणी न हो। जापानी राजचिह्न, एक चमकता लाल सूरज – जो इसके पंखों पर बना हुआ था, ऐसा प्रतीत होता था, मानो इस दुखी धरती की ओर घूर रहा हो। प्रोफ़ेसर वाङ ने बेहतर ढंग से देखने के लिए अपनी गरदन टेढ़ी कर ली। प्रोफ़ेसर वाङ एक बार [illegible]कर दूसरी ओर फिर गया, जबकि सियाओ-येन ने वेदनापूर्वक फुसफुसाकर ताई [illegible] कहा :

"उसे मत देखो। अन्दर वापस चलो।"

वे अवसादग्रस्त मनःस्थिति में वापस अन्दर चले गये।

प्रोफ़ेसर फान और वाङ येन-वेन वहाँ मेज़ पर बात करते रहे जबकि श्रीमती [illegible] और नौकरानी सफ़ाई कर रही थी।

एक बार अन्दर आकर, प्रोफ़ेसर वू ने फिर से बोलना चालू कर दिया। जब तक [illegible] वहाँ नहीं था, तो प्रोफ़ेसर वाङ प्रसन्नतापूर्वक बातें करता और हँसता रहा था, [illegible] कण्ठ से अपना नज़रिया बयान करता रहा था, लेकिन प्रोफ़ेसर वू की [illegible]थति ने, जिसका बोलना रुकता ही न था, बरबस उसकी वक्तृता शैली को [illegible] कर दिया। जहाँ तक दूसरों का सवाल था, उन्हें तो कोई शब्द बोलने का और [illegible] मौक़ा मिल पाया।

"किसने कभी ऐसी चीज़ सुनी है!" अपने तरबूज़े जैसे सिर को हिलाते हुए मेज़ [illegible]काते हुए प्रोफ़ेसर वू रोष में एलान करते हुए बोला, "मेरे दोस्तो, यह देश [illegible] हवाले होने जा रहा है"। अगर इस समय में बीस से तीस के बीच की उम्र [illegible], तो मैं राष्ट्र के इस अपमान का बदला चुकाने के लिए तुरन्त शिरकत करने [illegible] उठ खड़ा हो जाता।"

"[illegible] हवाई गोले हैं बड़े भाई वू!" प्रोफ़ेसर फान ने बीच ही में प्रतिवाद कर [illegible]। [illegible]सकी छोटी मूँछ खीझ में फड़फड़ा रही थी, "तुम एक बच्चे की तरह हो, [illegible] जिस किसी घटना पर चिल्ला उठते हो। नानकिङ जाने वाले पेइपिङ [illegible]लय के प्रदर्शनकारियों की मदद के लिए क्या तुमने एक भी युआन दिया [illegible] आनी चाहिए, श्री वू! मुझे खोखली बातों के अलावा और कोई बात इतनी [illegible]। याद करो कन्फ़्यूशियस के शब्दों को – चालीस की उम्र से मैंने चुहल [illegible] दिया, पचास पर मैंने ईश्वर की मर्ज़ी जान ली।" हम सभी पचास के [illegible] हैं तब फिर बच्चे की तरह चुलबुलाना क्यों?

[illegible] क्षण के लिए प्रोफ़ेसर वू लजा और तमतमा गया लेकिन अगले ही क्षण [illegible] फिर हँसने लगा।

"[illegible] कन्फ़्यूशियस और मुझमें एक फ़र्क़ है। मैं कोई सन्त नहीं पैदा हुआ [illegible] पहले ही कैसे जान सकता था कि क्या होगा? ख़ैर बड़े भाई फान, तुम

इतने अड़ियल हो कि मैं तुमसे बहस नहीं करता। लेकिन देखो तो, हू-पिन को क्या हो गया है। एक बार उसने हू शिह को ऊँचे आसन पर प्रतिष्ठित किया था, लेकिन आज वह उसके व्यवहारवाद से अध्ययन के द्वारा देश बचाने के उसके आह्वान से साम्राज्यवाद के प्रति उसकी चापलूसी से नफ़रत करता है। तो फिर क्यों न मैं भी अपना विवेक धारण करूँ? मेरे प्यारे साथी, हम बुद्धिजीवी काम करने के बजाय बात करने में ज़्यादा दक्ष होते हैं, लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि तुम यह भी नहीं जानते कि कैसे बात की जाती है।"

जहाँ दो बड़े प्रोफ़ेसर वाद-विवाद करने में लगे हुए थे, सियाओ-येन ने ताई यू का आस्तीन खींचा और फुसफुसाकर कहा :

"तुम कोई बात क्यों नहीं करते? हमें इस बातचीत में शरीक होना चाहिए।"

अपनी आँखें प्रोफ़ेसर यू पर टिकाये हुए ताई यू ने अपना सिर हिलाया।

"यह हमारे किसी काम का नहीं, सियाओ-येन! मैं अब चलूँगा। मैं बाद में फिर आऊँगा। कृपया मेरा इन्तज़ार करना, मुझे तुमसे कुछ बात करनी है।"

"मुझे कहना पड़ रहा है कि तुम बहुत बेतुका व्यवहार कर रहे हो।" प्रोफ़ेसर वू को अपनी कनखी से देखकर सियाओ-येन ने नर्मी से आगे कहा, "वह इतना बुरा आदमी नहीं है। भागना क्यों चाहते हो?"

बिना कोई जवाब दिये ताई यू ने अलविदा कही और चल दिया। उसके बाद वाङ येन-वेन ने जो मेज़ के पास बैठी हुई थी, अपनी भतीजी की बाँह पकड़ी और उससे धीरे-धीरे बतियाने लगी। उसके लहजे से यह बताना मुश्किल था कि वह खुश थी या चिन्तित।

"सियाओ-येन मुझे खुशी है कि तुम्हें अपना जीवनसाथी मिल गया। वह एक खुशमिज़ाज नौजवान लगता है, लेकिन उसके बारे में कोई चीज़ मेरे मन में खटका पैदा करती है। मुझे बताओ, क्या वह एक दूसरा ख़तरनाक पात्र तो नहीं? तुम्हारे पिता भी बदल गये हैं। सचमुच इससे मुझे और खटका हो रहा है। मैं सोचती हूँ कि एक या दो दिन में तिङसिएन वापस लौट जाऊँ। मुझे यहाँ चैन नहीं महसूस होता।"

"चिन्ता मत करो, बुआ!" सियाओ-येन ने उस प्रौढ़ महिला के पीले चेहरे को स्नेहिल भाव से निहारा। "हम जानते हैं कि हम क्या कर रहे हैं। मैं कुछ समय से तुमसे पूछना चाह रही थी कि क्या तुम अब भी लिन ताओ-चिङ पर नाराज़ हो? तुम्हें उस से घृणा नहीं करनी चाहिए, वह एक शरीफ़ महिला है।" उसकी भोली, सौम्य आँखें मानो क्षमायाचना कर रही थी।

"हाँ, परमेश्वर कहता है कि अपने दुश्मनों को माफ़ कर दो।" वाङ येन-वेन का मन्द स्वर उसकी वेदना और कटु घृणा को छिपा न सका।

"नहीं बुआ, मेरा आशय उस तरह की माफ़ी से नहीं था।"

"क्या? तुम कहना क्या चाहते हो?" सियाओ-येन ने अधीर होकर पूछा, उसका चेहरा तमतमा गया। "साफ़-साफ़ बताओ न, चुन-त्साई! मुझे बताओ कि क्या बात है?"

ताई यू ने उसे अपनी बाँहों में भर लिया और एक मन्द स्वर में कहने से पहले, उसे चूम लिया, मानो उसकी भावनाओं को शान्त कर रहा हो।

"सियाओ-येन, मेरी प्यारी कॉमरेड, तुम मुझ पर यक़ीन तो करो। लिन ताओ-चिङ एक निर्लज्ज ग़द्दार है – उसने तुमको धोखा दिया।"

"असम्भव! तुम कैसे इस बेहूदा बात पर विश्वास कर सकते हो?" उसने शून्य नज़रों से उसे घूरते हुए बौखलाहट के स्वर में पूछा।

"विश्वास करो या न करो, यह तुम्हारी मर्ज़ी। लेकिन, इसके बारे में मुझे बाक़ायदा शहर-कमेटी द्वारा सूचित किया गया था।" ताई यू ने बेरुखी से अपनी सिगरेट का कश खींचा।

"तुमको याद नहीं कि जब वह यहाँ पर थी, तो उसने खुल्लम-खुल्ला एलान किया था कि क्रान्ति में उसने दिलचस्पी लेना छोड़ दिया है?"

सियाओ-येन अवाक रह गयी! तुरन्त वह मेज़ पर झुककर चीख़ पड़ी और इतने ज़ोर से सिसकने लगी, मानो उसकी दोस्त मर गयी हो।

"नहीं, चुन-त्साई। मैं इस पर यक़ीन करने मे इन्कार करती हूँ!" रोने का दौरा ख़त्म होने के बाद उसने ऊपर की ओर देखा, और अपने आँसू पोंछ डालने के लिए अपना चश्मा उतार लिया। उसने ज़ोर से अपना सिर हिलाया। "मुझे लगता है कि तुमने कोई गढ़ी हुई कहानी सुन ली है। ताओ-चिङ जैसी लड़की कभी ऐसा काम नहीं करेगी। कभी नहीं! तुम बकवास कर रहे हो! बकवास!"

ताई यू उसकी प्रतिक्रिया से सन्न रह गया। उसका सूजा हुआ, मोम जैसा चेहरा स्याह पड़ गया, और उसकी कान्तिहीन आँखें धुँधला गयीं।

"अब छोड़ो, सियाओ-येन, शान्त हो जाओ। मन को स्थिर बनाओ!" उसका कन्धा सहलाते हुए वह उस मासूम लड़की को फँसाने के लिए दुश्चक्रों का मकड़जाल बुनने लगा। "सियाओ-येन, मेरी प्यारी, क्या दुनिया में कोई आदमी ऐसा है, जो हममें से किसी के लिए भी उतना ही प्यारा हो, जितना कि हम एक-दूसरे के प्रति हैं?" मैं समूचे हृदय से तुमको प्यार करता हूँ। लिन ताओ-चिङ तुम्हारी सर्वोत्तम दोस्त थी। कैसे मैं उस पर कीचड़ उछाल सकता हूँ या कैसे उसका नुक़सान कर सकता हूँ? सच यह है कि तुमको क्रान्तिकारी काम का बहुत ही थोड़ा अनुभव है और क्रान्तिकारी सिद्धान्त की बहुत ही कम जानकारी है। तुम नहीं महसूस करती कि पार्टी के उच्च-स्तरीय नेतृत्वकारी सदस्य भी दुश्मन से प्रताड़ित होकर, भयाक्रान्त होकर या रिश्वत पाकर अक्सर ग़द्दार बन जाते हैं। यह बिल्कुल स्वाभाविक है कि लिन ताओ-चिङ जो एक ज़मींदार परिवार से आयी है, दुश्मन

न स्थान में आकर पार्टी के साथ विश्वासघात कर जाये।"

"क्या तुम भी एक बड़े ज़मींदार परिवार से नहीं आये हो?" सियाओ-येन ने [illegible] अपनी अश्रुपूरित आँखों को विस्फारित करते हुए प्रतिवाद किया। अपनी [illegible] में वह भभक उठे बिना न रह सकी। ऐसा लगता था, मानो ताई यू ने [illegible] सबसे प्यारी दोस्त को बरबाद कर दिया हो।

ताई यू उसे मान-मनुहार करके बिस्तर पर ले गया और लिटा दिया। एक क्षण [illegible] उसकी बन्द आँखों और पीले मुखड़े को निहारने के बाद, उसने एक दूसरा सुर [illegible] बिस्तर पर झुककर वह एक पश्चातापी स्वर में आहिस्ता से बोला :

"मेरी सुहृदय प्रिये, मुझे माफ़ कर दो! हो सकता है कि ख़बर ग़लत ही हो। वैसे [illegible] उसकी वजह से तो क्रान्ति में शामिल नहीं हुए। मैं पेइपिङ के नेतृत्वकारी [illegible] सदस्यों में एक हूँ। अगर तुम्हें लिन ताओ-चिङ को खोना पड़े, तो निश्चय ही [illegible] मतलब यह नहीं है कि तुम क्रान्तिकारी क़तारों को छोड़ दोगी, है न?"

"आह, चुन-त्साई!" सियाओ-येन ने उसकी बाँह कसकर जकड़ ली और फिर [illegible] फूटकर रोने लगी। "मैं उसे भूल जाऊँगी! मैं भूल जाऊँगी उस घृणित ग़द्दार को! [illegible], चुन-त्साई तुम्हें-हमें कभी उसकी मिसाल का अनुकरण नहीं करना [illegible]!"

ताई यू सफ़ेद काग़ज़ की तरह फक पड़ गया। उसके भीतर जो कुछ नीचता और [illegible] थी, वह सब सियाओ-येन की निश्छलता और सत्यनिष्ठता के आगे [illegible] हुई प्रतीत होने लगी। वह बौखलाहट में जल्दी-जल्दी सिगरेट का कश लेने [illegible] [illegible] उसके माथे का ठण्डा पसीना सियाओ-येन के नर्म काले बालों पर [illegible] चू रहा था।

——:o:——

अध्याय 28

[illegible] आख़िर में, एक शाम, जब गलियों में कोलाहल क्रमशः शान्त हो रहा [illegible] काली कार जिसकी हेडलाइट मद्धिम कर दी गयी थी तेज़ी से पेइपिङ के [illegible] हिस्से होकर गुज़री। ड्राइवर एक कद्दावर नौजवान था, जिसके सिर पर [illegible] ओर खींची हुई नोकदार टोपी थी। पिछली सीटों पर, लगभग तीस वर्ष के [illegible] ऐसे लिबास पहने थे, गोया वे छोटे सरकारी कर्मचारी हों। एक च्याङ [illegible], जिसका सौम्य, प्रतिभावान चेहरा बग़ल में बैठे ताई यू के तनावग्रस्त भावों [illegible] विपरीत था। ताई यू आत्मसंयत दिखायी देने की कोशिश करता हुआ बैठा [illegible] उभड़ी हुई आँखें खोयी- खोयी-सी च्याङ हुआ पर टिकी हुई थीं, वह [illegible] एकमात्र ताज़ा पार्टी-सम्पर्क था, जो आमतौर पर उसे एक ख़ास ट्राम स्टाप

पर मिल जाता था और उसके साथ बात करते हुए सड़क पर कुछ समय तक चलते-चलते अचानक अन्यत्र चल देता था। चूँकि च्याङ हुआ के ज़रिये ताई यू पार्टी का विश्वास प्राप्त कर लेने की उम्मीद लगाये हुआ था, इसलिए उसने उसे गिरफ़्तार नहीं कराया था। उसके सामने वह विश्वासपात्र और प्रगतिशील होने का स्वांग करता, तथा क्रान्ति के लिए और काम करने की उत्सुकता प्रकट करता था।

आज, रिवाज़ के ख़िलाफ़ च्याङ हुआ ने ताई यू को अपनी कार में लिफ़्ट दी थी। पहले तो ताई यू यह सोचकर खुश हो उठा था कि उसने पार्टी का विश्वास जीत लिया और उसे कोई महत्त्वपूर्ण दायित्व प्राप्त हो जायेगा। लेकिन जब वह कार में बैठ गया और कार तेज़ी से चल पड़ी, तो वह डर के मारे पीला पड़ गया।

"आज मैं यहाँ पार्टी की ओर से तुम्हारे मामले की जाँच-पड़ताल करूँगा, नीच गद्दार!" च्याङ हुआ का स्वर धीमा और गम्भीर परन्तु सपाट और दृढ़ था। कार के धुँधले भीतरी भाग में उसकी आँखों से चिनगारियाँ छूटने लगीं। "अब साफ़-साफ़ बोलो!" उसने सवाल किया। "जब से तुम बिक गये हो, तब से तुमने दुश्मन के लिए क्या-क्या गन्दा काम किया है? अब हम इस पर पूरी बात करेंगे!"

"मैं समझा नहीं – कुछ ग़लती हुई है।"

ताई यू आरोपों के ख़िलाफ़ ज़ोरदार ढंग से प्रतिवाद करना चाहता था, लेकिन उसकी ज़ुबान न चल सकी। उसने खिड़की पर पड़े परदे से होकर झाँका, वह अपने अवचेतन मन में सबसे बुरे अंजाम के लिए तैयार हो रहा था।

"तुम बिल्कुल ठीक समझते हो!" जब च्याङ हुआ ने ताई यू की खिड़की से बाहर झाँकती चोर-निगाहों को देखा, तो उसने आहिस्ता से अपना हाथ उसके घुटनों पर रख दिये और मुस्कुराया।

"चिन्ता मत करो। हम तुम्हारी हत्या करने नहीं जा रहे हैं। मैं बस तुमको बता देना चाहता हूँ, पार्टी ने तुम्हें निष्कासित करने का फ़ैसला करके अच्छा ही किया है। अब फिर कभी, तुम कम्युनिस्ट के शानदार नाम पर बट्टा नहीं लगा सकते।"

"मुझे निष्कासित करने का फ़ैसला?" ताई यू के चेहरे की नसें तन गयी थीं। शाम के धुँधलके में दौड़ रही कार ने एक ओर झुककर हिचकोला लिया, और वह खिड़की का सहारा लेकर आर्तनाद कर उठा, "मुझे निष्कासित करने का फ़ैसला?" मैं 1925 में पार्टी में शामिल हुआ, तब से मैंने इसके लिए ढेरों काम किये हैं। तुम मुझे निष्कासित नहीं कर सकते?" वह धाड़ मारकर रो पड़ा, मानो इस अन्याय से मर्म तक बिंध गया हो।

च्याङ हुआ गद्दीदार सीट पर पीछे की ओर झुक गया और तिरस्कारभरी नज़रों से आँखें झपकाकर ठण्डेपन से बोला, "तब तुम अपनी ग़लती मानने से इन्कार करते हो? ठीक है, मैं तुम्हारे विरुद्ध जो आरोप हैं, उन्हें बता दे रहा हूँ।" उसने अपनी जेब से एक काग़ज़ निकाला, लेकिन कार में इतना अँधेरा था कि इसकी लिखावट पढ़ी

नहीं जा सकती थी। आरोपपत्र को अपने हाथ में पकड़े हुए उसने सख़्ती से कहा, “1933 में अपनी गिरफ़्तारी के बाद, तुम ग़द्दार हो गये। उसके बाद तुम दुश्मन की ख़ातिर अपने ख़ूनी कारनामे करने के लिए पार्टी में कीड़े की तरह वापस घुस आये। लो इसे! तुम्हारे सारे अपराध इसमें दर्ज़ हैं।” उसने काग़ज़ को ताई यू की तरफ़ फेंक दिया और आगे कहा, “और मैं तुमको बता दूँ कि तुम्हें सिर्फ़ पार्टी से निकाला ही नहीं गया है, बल्कि चीनी जनता ने तुम्हारे अपराधों के लिए तुमको प्राणदण्ड देने का भी फ़ैसला किया है।”

“प्राणदण्ड!” ताई यू ने यन्त्रवत दोहरा दिया, और च्याङ हुआ की ओर घूरते हुए बुरी तरह काँपने लगा।

“हाँ, प्राणदण्ड!” च्याङ हुआ ने पूरी गम्भीरता से कहा। “चीनी जनता ने तुम्हारे लिए प्राणदण्ड का फ़ैसला किया है, लेकिन हम अभी तुमको प्राणदण्ड देने नहीं जा रहे हैं। अगर तुम नये सिरे से जीवन शुरू करोगे और अपनी प्रतिक्रान्तिकारी हरक़तें छोड़ दोगे तो तुम्हें माफ़ किया जा सकता है, लेकिन अगर तुम अपने अपराध करते जाने की जुर्रत करते रहे, तो जब लोग विजय हासिल कर लेंगे, तब निश्चय ही तुम्हारा सिर उड़ा दिया जायेगा। अब दफ़ा हो जाओ!” कार उस स्थान पर धीमी हो गयी, जहाँ सड़क चौड़ी परन्तु वीरान थी। जैसी ही कार एक कोने पर मुड़ी, च्याङ हुआ ने दरवाज़ा खोल दिया और ताई यू को ज़ोर से धक्का दिया। वह ग़द्दार हाथ पाँव छितराये, भद्द से सड़क पर जा गिरा, जबकि कार तेज़ रफ़्तार से भाग गयी, और पलक मारते ही आँख से ओझल हो गयी।

उस सर्द, सख़्त सड़क पर पड़े-पड़े ताई यू भय और चोट से गश खाकर बेहोश हो गया। लेकिन कुछ ही देर में, उसे फिर होश आ गया। वहाँ पर कुछेक ही राहगीर आ जा रहे थे और किसी ने उसे देखा नहीं था। वह लड़खड़ाते हुए उठ खड़ा हुआ और भौचक्का होकर, चारों ओर देखते हुए यह जानने की कोशिश करने लगा कि वह कहाँ था। एक क्षण के बाद, फिर अपनी ठीक-ठाक मनःस्थिति में लौट आया।

“घृणित बोल्शेविक!” जैसे ही उसकी पीठ में दर्द महसूस हुआ उसने गाली दी, और मन ही मन खिल्ली उड़ाने के अन्दाज़ में मुस्कुराया। “प्राणदण्ड!” उसकी पीली आँखें निराशा से ऐसे झलक रही थी, मानो किसी पछाड़ खाये जानवर की आँखें हों। “जब लोग विजय हासिल कर लेंगे। मेरे अच्छे बोल्शेविक कॉमरेडो, तुमने ग़लत हिसाब लगाया है!”

उस शाम उसने अपनी रखैल की खोज-ख़बर नहीं ली। दरअसल वह रोज़-रोज़ उसके यहाँ तब तक जाने की हिम्मत न करता था, जब तक कि वह उसे बुलाती नहीं। वह एक उच्च श्रेणी के होटल में अपने लम्बे-चौड़े कमरे में लौट आया, और बत्ती जलाकर जल्दी-जल्दी च्याङ हुआ द्वारा दिये गये काग़ज़ की जाँच-पड़ताल करने लगा।

आरोपपत्र में लिखा था :

ताई यू उर्फ़ ली तिएन-मिन, अब चेङ चुन-त्साई नाम से जाना जाने वाला, उम्र तीस वर्ष, निङपी, चेकिमाङ का मूल निवासी। एक बड़े परिवार से आया हुआ, शंघाई के अरोरा विश्वविद्यालय में पढ़ा हुआ, 1925 में शंघाई में कम्युनिस्ट पार्टी में भरती हुआ। 1927 की महान क्रान्ति की विफलता के बाद भागकर पेइपिङ चला गया, और पार्टी से उसका सम्पर्क टूट गया। उसके थोड़े समय बाद ही उसने पुनः पार्टी से सम्पर्क स्थापित कर लिया, और बढ़ते-बढ़ते तिएनत्सिन साम्राज्यवाद विरोधी लीग की ज़िला कमेटी का सदस्य, समाजवादी लीग के प्रचार-विभाग का निदेशक और पेइपिङ में कम्युनिस्ट पार्टी की पूर्वी शहरी ज़िला कमेटी का सेक्रेटरी बन गया। जून 1933 में गिरफ़्तार हुआ, ग़द्दार बना, उसके थोड़े ही समय बाद, रिहा कर दिया गया, और तोड़-फोड़ की कार्रवाइयाँ करने के लिए पुनः पार्टी में घुसपैठ कर गया।

उसे चक्कर-सा महसूस होने लगा, और उसने आगे पढ़ने का साहस खो दिया। ये ब्योरेवार आरोप उसके कुरूप चेहरे के सामने रखे एक दर्पण की भाँति थे। एक दमघोंटू अहसास के साथ उसने अपनी आँखें बन्द कर लीं, और हफर-हफर तब तक हाँफता रहा, जब तक कि उसने अपनेआप को पुनः आगे पढ़ने के लिए संयत न कर लिया। लगभग उसके सारे आरम्भिक आरोप सूचीबद्ध कर दिये गये थे, लेकिन तिङसिएन में उसकी तोड़-फोड़ की कार्रवाई, वाङ सियाओ-येन के साथ सम्बन्धों या पेइपिङ में उसकी ताज़ा हरक़तों की कोई चर्चा नहीं थी। इससे वह एक क्षण के लिए उलझन में पड़ गया। तब फिर उसके कुपित चेहरे पर एक मुस्कान फैल गयी, जब उसने सोचा, "चिन्ता की कोई आवश्यकता नहीं। वे हरेक घटित हो रही बात का उद्‌घाटन नहीं कर सके।" वह उठा, एक कप कड़वी चाय पी और एक नये आदमी जैसा महसूस करने लगा। उस आरोपपत्र को, जिसको उसने अपने बिस्तर पर फेंक दिया था, एक नज़र देखकर, वह खिल्ली उड़ाने के अन्दाज़ में बोला, "मरने से पहले चींटी के पर निकल आते हैं, मेरे प्यारे बोल्शेविक कॉमरेडो!"

वह धम्म-से अपने ठाठदार बिस्तर पर पड़ गया, जिससे तम्बाकू की बदबू आ रही थी, और आँखें बन्द करके सोचने लगा। उसने एक महँगी सिगरेट सुलगायी और सँवलाये होंठों से धुआँ छोड़ने लगा।

पार्टी के प्रति ताई यू की ग़द्दारी से निपटना एक जटिल काम रहा था। पेइपिङ शहर-कमेटी और होपेई प्रान्तीय कमेटी ने च्याङ हुआ द्वारा दी गयी सूचनाओं और दूसरों द्वारा दिये गये साक्ष्यों की पूरी छानबीन की थी, और अन्ततः सभी आरोप सही सिद्ध हुए थे। इस समस्या को इतना महत्त्वपूर्ण इस तथ्य ने बना दिया था कि वह

[illegible] मामूली गद्दार नहीं था बल्कि एक ऐसा गद्दार था जो कीड़े की तरह पार्टी में [illegible] में घुसपैठ कर गया था, और उसने अन्दरूनी जानकारी तक अपनी पहुँच बना [illegible] थी, तथा सच्चे क्रान्तिकारियों के ख़िलाफ़ ढेर सारी तोड़-फोड़ की कार्रवाइयाँ [illegible] चुका था। क्वोमिन्ताङ द्वारा अपनी रिहाई के बाद उसे उम्मीद थी कि पार्टी उसे [illegible] में ही बनाये रखेगी, ताकि वह होपेई प्रान्तीय कमेटी और पेइपिङ [illegible] कमेटी के नेतृत्वकारी सदस्यों की सुरागरशी करता रहे। लेकिन इसकी जगह [illegible] पाओतिङ भेज दिया गया था, जहाँ उसकी तोड़-फोड़ की पहली कोशिश [illegible] रही, क्योंकि अभी वह नेतृत्वकारी व्यक्ति का अता-पता जानने की योजना [illegible] रहा था कि पाओतिङ स्पेशल कमेटी ने उसका ट्रांसफ़र तिङसिएन कर [illegible]। वहाँ स्थानीय सुरक्षा सेना के विद्रोह के इरादे को भाँपकर वह उसमें सारे [illegible] करने वालों के साथ विश्वासघात कर चुका था, और ली युङ-कुआङ की [illegible] और तिङसिएन में पार्टी संगठन के एक अंश को हुए नुक़सान के लिए [illegible] था। लेकिन इस आख़िरी करतब ने उसकी कलई खोल दी और च्याङ [illegible] शंशयों को उभाड़ दिया, जिसने बिना वक़्त गँवाये, इस मामले की रपट [illegible] स्पेशल कमेटी और पेइपिङ शहर-कमेटी को दे दी। उस समय से लेकर [illegible] पार्टी ने उसकी सख़्ती से निगरानी की और उसकी सारी गतिविधियों की [illegible] की। अन्ततः गद्दार का असली चरित्र उजागर हो गया।

[illegible] यू के भण्डाफोड़ से कई सवाल खड़े हो गये थे, जिनका समाधान अभी [illegible] था। पार्टी के अनुमान से सबसे गम्भीर सवाल इस अन्देशा को लेकर [illegible] आईन्दा वह और अन्धाधुन्ध आक्रमण कर सकता था; फिर दुश्मन उसके [illegible] करने के लम्बे अनुभव का इस्तेमाल क्रान्तिकारी कार्य को तहस-नहस [illegible] भाले नौजवान लोगों को गुमराह करने के लिए विभिन्न तरीक़ों से [illegible] था। पेइपिङ शहर-कमेटी द्वारा हाल ही में प्राप्त सूचना के अनुसार वह [illegible] विश्वविद्यालयों में कम्युनिस्ट पार्टी के नाम से कुछ गुप्त गतिविधियाँ भी [illegible] रहा था। वह पेइपिङ विश्वविद्यालय पर धावा बोलने के लिए वाङ [illegible] पर अपनी गिरफ़्त का इस्तेमाल कर सकता था। इसको मद्देनज़र [illegible] ने विश्वविद्यालयों और सम्बन्धित इकाइयों में कई प्रतिकारात्मक उपाय [illegible] उपायों में से सिर्फ़ दो का ब्योरा यह था कि च्याङ हुआ को निर्देश दिया [illegible] ताई यू को उसके निष्कासन की सूचना दे, और उसे सख़्त चेतावनी [illegible] में किया जा चुका था। दूसरा उपाय कि लिन ताओ-चिङ को काम [illegible] पेइपिङ विश्वविद्यालय भेज दिया जाये। उसको वहाँ भेजने का एक [illegible] काम को मज़बूत बनाना, छात्रों को एकबद्ध करना, और जापान का [illegible] और चीन को बचाने के लिए, अभियान तेज़ करना था, दूसरा कारण [illegible] को ताई यू के चंगुल से छुड़ाकर अपने विश्वास में लेना और ताई

यू के असली चरित्र को सियाओ-येन द्वारा देख लिये जाने में मदद करना था, ताकि अब और अधिक छात्र गुमराह न किये जा सकें। ताओ-चिङ के बारे में या ताई यू की ताज़ा गतिविधियों के बारे में, उसको दिये गये आरोपपत्र में कोई ज़िक्र न था, कारण कि पार्टी इस जासूस के संशयों को कम करके, उसे इस ओर से गाफ़िल कर देना चाहती थी।

——:o:——

अध्याय 29

ताओ-चिङ अक्टूबर के आरम्भ में लिऊ यी-फेङ के पास से चली गयी और लू फाङ के नाम से पेइपिङ विश्वविद्यालय में पार्टी के काम को मज़बूत करने लगी। पहला काम, जो उसने किया वह था होउ-जुई के पास पहुँचना, जो वहाँ पार्टी ब्रांच का नेता था।

होउ-जुई, चौबीस साल का एक दुबला-पतला इतिहास का चौथे वर्ष का छात्र था, जो वाङ सियाओ-येन का सहपाठी था। पार्टी की ओर से एक मुलाक़ाती चिट्‌ठी के साथ ताओ-चिङ उसी के प्रान्त की युवती के रूप में, एक दिन दोपहर के बाद उससे मिली। एक भूरी बिल्डिंग की पहली मंज़िल पर होउ-जुई का छोटा-सा निजी कमरा था। वहाँ वे बेतकल्लुफ़ी से मिले, और जैसे ही दरवाज़ा बन्द हुआ, वे काम में मशगूल हो गये।

"मुझे बड़ी खुशी है कि तुम आ गयी।" होउ-जुई, जिसकी दोनों आँखों के बीच की दूरी थोड़ी ज़्यादा थी, बातें करते हुए मुस्कुराता जाता था। "यहाँ पार्टी की ताक़त पिछले दो वर्षों में लगातार गिरफ़्तारियों और दमन के कारण बुरी तरह कमज़ोर होती गयी है। अब तक हम अपने नुक़सान को पूरा नहीं कर पाये हैं।"

"तुम और सू हुई यहाँ ठहरने का कैसे इन्तज़ाम करते हो? तुम मुझे कुछ सलाह दो।"

होउ-जुई मुस्कुराया और खिड़की से बाहर देखने के बाद, फिर मुड़कर फुसफुसाया, "हम रक्षात्मक रवैया अपनाये हुए हैं। ज़्यादातर छात्रों के लिए मैं बस एक सुस्त, मेहनती और अच्छे व्यवहार वाला, महज़ एक किताबी कीड़ा हूँ। मैं जिस व्यक्ति से बात कर रहा होता हूँ, उस व्यक्ति के बारे में जब तक पूरी तरह निश्चित रहता हूँ, तब तक मैं जो सोचता हूँ, उससे कभी नहीं डिगता। सू हुई ने और भी बढ़िया काम किया है। एक समय तो वह पिछड़े विचारों वाले छात्रों और यहाँ तक कि हठधर्मियों तक से धड़ल्ले से घुलने-मिलने लगी थी। बेशक, इस कार्य ने उसे दुश्मन की निगाह में अहानिकर बना दिया!"

"लेकिन।" ताओ-चिङ की ज़ुबान पर यह सवाल आया : "अगर तुम एक

घोंघे की तरह अपनी खोल में ही सिमटे रहे, तो तुम आगे कैसे बढ़ सकोगे?" इसके अतिरिक्त उसने वाङ सियाओ-येन के बारे में पूछा।

होउ-जुई फिर मुस्कुराकर बोला, "हमारे यहाँ त्रॉत्स्कीपन्थ का एक लम्बा इतिहास रहा है। पहला गुट, जो 'प्रेरक शक्ति' के नाम से जाना जाता है, ताओ शि शेङ* के 'नवजीवन' ग्रुप की शक्तियों के साथ जा मिला है। वे नौजवान भोले भाले छात्रों को बेवकूफ़ बनाने हेतु प्रगतिशील होने का स्वांग रचते हैं, और एकता को विघटित करने के लिए हर सम्भव प्रयास करते हैं। क्वोमिन्ताङ के सी. सी. गुट के छात्रों के साथ छिपे हुए काम करते हुए, वे दूसरे छात्रों की जासूसी करते हैं और नक़दी पुरस्कार पाने के लिए, उनके ख़िलाफ़ सूचनाएँ देते हैं। यही सब तको चल रहा है।" वह हिचकिचाया, मानो कोई बात भूल गया हो, और एक दूसरी मुस्कुराकर ताओ-चिङ की ओर देखकर आगे कहा, "तुम वाङ सियाओ-येन के बारे में पूछ रही थी। वह अब निश्चय ही ठीक नहीं है। वह उन त्रॉत्स्कीपन्थियों से गहरे जुड़ी हुई है, जिनका नेता वाङ चुन है जो तीसरे वर्ष का इतिहास का एक छात्र है।" वह यहाँ के सामान्य दशाओं का एक चित्रण करने के लिए आगे कहता गया।

अपनी आँखें होउ-जुई के दुबले-पतले, मुस्कुराते चेहरे पर टिकाये, ताओ-चिङ काफ़ी देर तक ख़ामोश रही। वह अपनी दोस्त के बारे में यह समाचार सुनकर दुखी हो गयी, और सोचने लगी कि क्या करना चाहिए। तुरन्त, मानो अपनी अप्रसन्नता को झटककर दूर कर देने के लिए वह अपनी कुर्सी से उठी और बोली :

"कॉमरेड होउ-जुई, आओ हम विचार-विमर्श करें कि यहाँ अपने काम को कैसे अंजाम दें। ज़िला कमेटी का कहना है कि हमें इस विश्वविद्यालय को, जिसकी इतनी शानदार परम्परा रही है, रसातल में नहीं जाने देना चाहिए। पेइपिङ के दूसरे विश्वविद्यालय और कॉलेज उत्तरी चीन की नाज़ुक गतिविधियों से प्रेरित होकर, आन्दोलनी कार्रवाई में उठ खड़े हो गये हैं। हम यहाँ के छात्रसंघ पर नियन्त्रण तक स्थापित करने में समर्थ नहीं हो पाये हैं और इस तरह हमारे पास जन-संघर्ष को मार्गदर्शन देने का कोई उपाय नहीं है। क्यों न हम छात्रसंघ पर क़ब्ज़ा करने के लिए प्रगतिशील छात्रों को लामबद्ध करें?"

होउ जुई मुस्कुराया और प्रत्युत्तर में बोला, "यही काम तो हम एक अरसे से करने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन...लेकिन हमारे ऊपर इतना कड़ा प्रहार हो रहा है कि यह मुश्किल ही है..."

ताओ चिङ ने इस मामले को तूल नहीं दिया। सियाओ-येन से मिलने के अपने इरादे को बताकर, वह वहाँ से चली गयी।

---

* एक क्वोमिन्ताङ राजनेता, जो प्रतिरोध युद्ध शुरू होने पर जापानी साम्राज्यवादियों से जा मिला था और बाद में च्याङ काई-शेक का सूचना उपमन्त्री बन गया था।

ताओ-चिङ ने तुरन्त काम शुरू करने देने का निश्चय किया। पहले उसे ताई यू की कलई खोलने के लिए सियाओ-येन को ढूँढ़ना होगा, और उससे सम्बन्ध-विच्छेद कर लेने के लिए कहना होगा। उसने जब लिऊ यी-फेङ के साथ काम करने के लिए उसका साथ छोड़ा, तब से वह अपनी दोस्त को नहीं देख पायी थी। यद्यपि सियाओ-येन की ताई यू के साथ निकटता उसे बेचैन करती थी, फिर भी उनकी लम्बे समय से चली आ रही दोस्ती और सियाओ-येन के प्रति उसके विश्वास ने उसके प्रति उसके मन में एक गहरा लगाव और उससे मिलने की चिन्ता पैदा कर दी थी। वह एक ऐसी मज़ेदार बातचीत की उमंगभरी आशा में सियाओ-येन के कमरे की सीढ़ियों पर चढ़ रही थी, जो दोनों को उद्दीप्त करती, और उनकी दोस्ती को और दृढ़ बनाती, लेकिन सबकुछ उम्मीद के मुताबिक़ नहीं हुआ। जैसे ही उसने सियाओ-येन को देखा, उसे ज्ञात हो गया कि कुछ भारी गड़बड़ है।

सियाओ-येन अपने डेस्क पर लिखने में व्यस्त थी। जब ताओ-चिङ अन्दर आयी, तो उसने नज़र उठाकर ऐसे देखा, मानो वह कोई भूत देख रही हो, और तमतमाकर लाल हो गयी। फिर अपनी आँखें दूसरी ओर पलटकर उसने ठण्डेपन से कहा, मानो किसी अजनबी से कह रही हो :

"तो तुम हो। क्या चाहिए?"

अपने आश्चर्य और अरुचि को दबाकर ताओ-चिङ चुपचाप उसके पास गयी, और उसका हाथ थाम लिया।

"क्या बात है सियाओ-येन? मैंने तुमको तीन माह से भी अधिक समय से नहीं देखा है...मैं तुमसे कितनी दूर हो गयी थी!" उसे ताज्जुब हुआ, जब सियाओ-येन ने अपना हाथ खींच लिया और अपना सिर दूसरी ओर घुमा लिया। ताओ-चिङ गुस्से से पीली हो गयी और काँपते स्वर में पूछा, "बताओ, वाङ सियाओ-येन, किस तरह से मैंने तुमको ठेस पहुँचायी है?"

सियाओ-येन बस लिखती रही, और कोई जवाब नहीं दिया। ताओ-चिङ उस उत्पीड़नकारी ख़ामोशी में किंकर्त्तव्यविमूढ़-सी खड़ी रही।

"ऐसे काम नहीं चलेगा।" उसने सोचा। "मुझे इसे स्पष्ट कर लेना होगा।" उसने अपनी दोस्त से पूछा :

"सियाओ-येन, क्या कोई तुमको मेरे ख़िलाफ़ भड़काता रहा है? इसके पीछे क्या है? क्या तुम बदल गयी हो?"

जब सियाओ-येन ने धीरे-धीरे अपना सिर उठाकर, अपना चेहरा उसके सामने किया, तो ताओ-चिङ ने उसकी गोल काली आँखों की ख़स्ताहाली से जान लिया कि वह यन्त्रणा और भय के जाल में गिरफ़्तार हो चुकी थी। बड़े-बड़े आँसू उसके गालों से होकर ढुलकने लगे, और डेस्क के सहारे अपने को टिकाकर उसने रोते हुए, अपनी आँखें ढँक लीं।

ताओ-चिङ कातर दृष्टि से देखती रही। घटनाओं के इस अप्रत्याशित मोड़ और सियाओ येन द्वारा अपनी शंका बयान करने से इन्कार करने के चलते उसका मन दुविधा में पड़ गया कि वह जाये या रुके।

"सियाओ-येन," उसने साहस करके पूछा, "क्या तुम अब मुझ पर विश्वास नहीं करती? क्या यही बात है?" अब सतर्क होकर, उसने इस दूसरी लड़की पर एक पैनी दृष्टि बनाये रखी, जो अब भी चुप्पी साधे हुए थी। "अब मैं जा रही हूँ। हम बातचीत के और मौके निकालेंगे। मैं पेइपिङ विश्वविद्यालय में कुछ कक्षाएँ पढ़ने जा रही हूँ, ताकि पहले की पढ़ाई की कमी को पूरी कर सकूँ। हम एक-दूसरे से अक्सर मिलेंगी।"

अब भी सियाओ-येन ने कुछ नहीं कहा, और ताओ-चिङ को देखने के लिए अपना सिर उठा लिया, मानो उसे डर हो कि वह जाते-जाते कोई चीज़ चुरा न ले जाये।

दो दिन बाद एक दोपहर प्राचीन इतिहास पर दो व्याख्यान सुनने के बाद, ताओ चिङ लाल इमारत से बाहर अपनी तरफ़ आ रही सियाओ-येन से मिली। सियाओ येन उससे कतरा कर निकल जाना चाहती थी, लेकिन ताओ- चिङ सीधे उसके पास चली आयी।

"क्या तुम व्याख्यान सुनने जा रही हो?" ताओ- चिङ मुस्कुरायी, मानो कुछ भी गलत नहीं थी। "चाचा वाङ ठीक-ठाक हैं? और तुम्हारी माँ और बहनें?"

सियाओ- येन को एक ठण्डा जवाब देना पड़ा, जो उसके आन्तरिक अन्तर्द्वन्द्व को प्रकट करता था।

"वे सभी ठीक-ठाक हैं, धन्यवाद," वह बुदबुदायी। "क्या तुम व्याख्यान सुनने जाती हो?"

ताओ चिङ ने यह मौक़ा पाकर उसका हाथ पकड़ लिया और बोली :

"सियाओ येन, मैं जानती हूँ कि कोई चिन्ता तुमको खाये जा रही है, लेकिन मैं तुमको मजबूर नहीं करूँगी कि मुझे बताओ कि वह क्या है!" कुछ विराम के बाद वह फिर बोली, "मैं परेशान हूँ कि तुम हाल में बदल गयी हो। अगर तुम अब भी मुझ पर यक़ीन करती हो, तो मैं तुमको सलाह दूँगी कि तुम चीज़ों के बारे में सावधानी से सोचो।" उसने आसपास नज़र दौड़ायी, फिर सियाओ-येन की आँखों में डर और अविश्वास देखकर आगे कुछ न कहा।

उसकी दोस्त ने प्रत्युत्तर में उसे घूरकर देखा, अपना मुँह खोला, मानो बोलने जा रही हो, फिर इस पर सोचा और झट चल दी।

सियाओ येन के इस अप्रत्याशित हृदय-परिवर्तन ने ताओ-चिङ की योजना को गड़बड़ा दिया था, और नयी दिक़्क़तें पैदा कर दी थीं। उसने यक़ीनन महसूस किया कि किसी ने उसकी दोस्त को गुमराह कर दिया था और उनके बीच एक व्यवधान

बनकर आ गया था। ऐसी स्थिति में उस ग़द्दार ने उससे क्या कहा होगा, और कैसे उसने उस पर अपना रुतबा जमाया होगा? वह जानती थी कि सियाओ-येन की छात्रों के बीच एक ख़ास इज़्ज़त थी और छात्रसंघ में वह अच्छी-ख़ासी स्थिति ग्रहण किये हुएअ थी। ताओ-चिङ ने सोचा कि अगर वह उसे अपने पक्ष में क़ायल नहीं कर पायाी, तो वह दुश्मन द्वारा इस्तेमाल कर ली जायेगी। इस ख़याल ने ताओ-चिङ के दिल को बहुत बोझिल बना दिया। उस रात देर तक वह अपने किराये के कमरे में बिना सोये चहलक़दमी करती रही।

आज व्याख्यान के बाद लाल इमारत की पहली मंज़िल पर ताओ-चिङ तमाम दूसरे छात्रों के साथ सीढ़ियाँ उतर रही थी, तभी दो नौजवान दौड़कर उसके पास आ गये। एक ने उसकी बाँह पकड़ ली, जबकि दूसरा, जो एक बन्दर जैसे चेहरे वाला दुबला-पतला नौजवान था, उसके दोनों गालों पर ज़ोर-ज़ोर से तमाचे मारने लगा। यह करने के बाद वह अपनी मुट्ठी भाँजते हुए चिल्लाया :

"ग़द्दार! जासूस! निर्लज्ज कुतिया! तुम्हारी यहाँ व्याख्यान सुनने आने की हिम्मत कैसे हुई? दफ़ा हो जाओ!"

जैसे ही बन्दर जैसे चेहरे वाले ने उसे छोड़ा, दूसरे ने अपनी मुट्ठी लहरायी और धमकाया :

"अगली बार अगर तुमने छात्र होने का ढोंग रचाकर घुसने की कोशिश की तो हम तुम्हारी अच्छी पिटाई करेंगे और उठाकर बाहर फेंक देंगे।"

ताओ-चिङ ने क्रुद्ध होकर प्रतिवाद किया, उस छात्र को धक्का दिया, जिसने उसे पीटा था, लेकिन चार मोटे हाथों ने उसे पकड़कर लाचार कर दिया, और उसे इस तरह धकेला कि वह सीढ़ियों पर लुढ़कती चली गयी। दो अन्य छात्र उसे अपने पैरों पर खड़ा होने की कोशिश में मदद कर रहे थे, तभी उसने सियाओ-येन के पीले चेहरे को देखा जो सीढ़ी पर जमा छात्रों के एक समूह के बीच में खड़ी होकर उसे ऐसे देख रही थी मानो कोई कलाबाज़ी का प्रदर्शन चल रहा हो। उसके साथ निर्लज्जतापूर्वक ठी-ठी करते और बात करता हुआ वही बन्दर जैसे चेहरे वाला छात्र था।

ताओ-चिङ को चेहरे पर पड़े तमाचों से अधिक कष्टदायक, एक चकराहट की लहर महसूस हो रही थी। वाङ सियाओ-येन ही, जो उसकी अब तक सबसे अच्छी दोस्त थी, यहाँ पर एकमात्र व्यक्ति थी जिससे वह परिचित थी। उस हालत में, तब क्या सियाओ-येन ने उसके साथ दग़ाबाज़ी की थी? क्या उसके साथ उसकी सर्वोत्तम दोस्त द्वारा दग़ा किया गया था? बलात इस भयानक निष्कर्ष पर पहुँचकर उसने क्रुद्ध भाव से सियाओ-येन को खा जाने वाली नज़रों से देखा, उसके हाथ उसके मुँह से बह रहे ख़ून से सन गये थे।

उस शाम ताओ-चिङ और पेइपिङ विश्वविद्यालय के तीन अन्य पार्टी सदस्यों

होउ-जुई, वू यू-पिङ और लिऊ ली ने लिऊ ली के घर पर एक साफ़-सुथरे सादगी से सजे कमरे में एक आपातकालीन बैठक की। बाइस वर्षीया ठिगने क़द की बुद्धिजीवी लिऊ ली, जो अंग्रेज़ी में विशेष योग्यता प्राप्त किये हुए थी, मुश्किल से ही अठारह वर्ष से अधिक की लगती थी। ताओ-चिङ पर हुए हमले से बौखलाये हुए वे एक तनावपूर्ण रोष के माहौल में बैठक कर रहे थे।

ताओ-चिङ ने पहले बोलना शुरू किया।

"नेतृत्व की और यहाँ की स्थिति की मेरी समझदारी के अनुसार, हमारा सर्वाधिक फ़ौरी काम अब जनजागरण है।" अपने सूजे हुए चेहरे को छिपाने के लिए वह जो सर्जन मास्क पहने हुए थी, उसे बोलने में दिक़्क़त पैदा कर रहा था, और उसने आगे बोलने से पहले इसे उतार दिया। "हमें अवश्य उन छात्रों को उत्साहित करना चाहिए, जिन्होंने चीन बचाओ आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया था, और जो थोड़ी-बहुत राजनीतिक जागरूकता रखते हैं। उन्हें प्रगतिशील ताक़तों का ऐसा नाभिक बनने के लिए अवश्य जागृत किया जाना चाहिए जो अपने इर्दगिर्द सभी मध्यमार्गियों को गोलबन्द करेगा। यहाँ पर हमारे पार्टी सदस्य इतने कम हैं कि जब तक हम प्रगतिशील छात्रों को अमली कार्रवाई के लिए जागृत नहीं कर लेते, तब तक हम इस विश्वविद्यालय में छायी भयानक जड़ता को नहीं तोड़ सकते।"

इसके बाद, लिऊ ली ने बोलना चालू किया, "कॉमरेड लू-फाङ बिल्कुल ठीक कहती है। समय को देखते हुए हमें निश्चय ही सिर्फ़ पार्टी-सदस्य ही नहीं रहना चाहिए, क्योंकि हमारे सामने कठिनाइयाँ हैं। सू सुई के ट्रांसफ़र के बाद से ही हममें से कुछ जो बचे हुए थे, बेहद संकीर्णतावादी रहे हैं, और हम अपनेआप के ज़ाहिर हो जाने या गिरफ़्तार कर लिये जाने से डरते रहे हैं। देखो तो त्सिङहुआ और येनचिङ में क्या-क्या हो रहा है।" उसने अपना हाथ उठाया और सख़्ती से, होउ जुई की ओर देखा। "वे चीन बचाओ आन्दोलन में सभी तरह की गतिविधियाँ चलाते हुए आगे बढ़ रहे हैं। निस्सन्देह यह वहाँ के पार्टी सदस्यों के कामों के कारण है, और उनके पार्टी-संगठनों के संघर्षशील उत्साह के कारण है। मैं समझती हूँ कि हमें वही तरीक़ा अपनाना चाहिए।" उसकी तेज़-तर्रार और सटीक दमदार वक्तृता उसकी लड़की जैसी शक्ल-सूरत से बिल्कुल भिन्न प्रतीत हो रही थी।

"यह उतना आसान नहीं है।" वू यू-पिङ ने जो क़रीब बाइस वर्ष का एक दुबला छात्र था, ताओ-चिङ और होउ-जुई की ओर से निगाह हटाकर लिऊ ली की ओर देखते हुए धीमे और उदास स्वर में कहा। "अलग-अलग स्कूलों में अलग-अलग हालात हैं, सपाट सामान्यीकरणों से कोई फ़ायदा नहीं। पिछले वर्ष यहाँ वामपन्थी लीग एक भारी आक्रमण के चलते गम्भीर रूप से कमज़ोर हो गया। यह सच है कि ढेर सारे छात्र देशभक्ति से भरे हुए हैं, लेकिन मैं नहीं समझता कि उनको अमली कार्रवाई में उतार देने का अभी समय आ गया है।"

"अभी नहीं आया!" लिऊ ली ज़ोरदार ढंग से बरस पड़ी। होउ-जुई ने उसे शान्त होने का संकेत किया और अपनी सामान्य मुस्कान के साथ बिना किसी जल्दबाज़ी के बोला :

"छोटी लिऊ, स्थिति कुछ अधिक नाजुक है। अधैर्य से फ़ायदा क्या होगा? 1934 में, जोकि पूरे देश के साथ-साथ पेइपिङ के लिए भी अन्धकारपूर्ण वर्ष था, सभी तरह के गुट राजनीतिक मंच पर उमड़ आये थे। यहाँ सिर्फ़ पेइपिङ विश्वविद्यालय में ही हमारे समक्ष सौ-सौ गुट, त्रॉत्स्कीपन्थी, यथास्थितिवादी और अराजकतावादी थे। हम उन्हें दूर भगा देंगे, इसका मुझे विश्वास है। लेकिन..।"

"लेकिन क्या?" ताओ-चिङ जो उसे ग़ौर से देख रही थी, बीच में टोके बिना न रह सकी।

"लेकिन हड़बड़ाने से काम नहीं बनेगा," होउ-जुई ने एक मन्द मुस्कान के साथ जवाब दिया। "पार्टी ने यहाँ भारी नुक़सान उठाया है, और हमारी जो भी ताक़त बची हुई है, उसे हमें बनाये रखना है, क्योंकि यह क्रान्ति के लिए एक अच्छी बात है।"

इसके पहले कि ताओ-चिङ अपना मुँह खोले, लिऊ ली ने एक दूसरी भावमुद्रा प्रकट की, मानो वह किसी बाधा को दूर कर रही हो। फिर उसने स्वर मन्द करके कहा :

"बड़े भाई होऊ, तुम्हारे कहने के अनुसार तो हमें चुपचाप बैठ जाना चाहिए और कुछ नहीं करना चाहिए। मैं इस पूरे समय में इन्तज़ार करती रही हूँ, और ऐसे ही दूसरे तमाम छात्र भी इन्तज़ार करते रहे हैं, लेकिन तुम चाहते हो कि हम ऐसे ही इन्तज़ार करते रहें। कब तक? क्या तुम आशा करते हो कि प्रतिक्रान्ति अपनी मर्ज़ी से राजनीतिक परिदृश्य से हट जायेगी?"

होउ-जुई का कृश मरियल चेहरा तमतमा गया। ताओ-चिङ और वू यू-पिङ पर चपल दृष्टि डालकर, हकलाते हुए उसने कहा :

"म-म-मत कहो ऐसा, छोटी लिऊ। मानो म-मैं क्रान्ति छोड़ देना चाहता हूँ। नहीं, मैं दृढ़ हूँ। मैं तो सिर्फ़ और अधिक नुक़सान से बचना चाहता हूँ।"

"नुक़सान-नुक़सान – यही सब तुम सोचते रहते हो!" लिऊ ली चीख़ी, फिर अपने दोनों हाथों से अपनी आँखें ढँक लीं।

ताओ-चिङ पूरी तरह से बेचैन महसूस कर रही थी। यद्यपि उसने होउ-जुई और वू यू-पिङ की कही बातों पर सोच-विचार किया था, फिर भी इस क्षण वह इस मामले को साफ़ न कर सकी, और तब उसने एक नया रुख़ अपनाया, क्योंकि वह नवागन्तुका थी और वस्तुस्थिति से पूरी तरह वाक़िफ़ न थी। "हमें क्या करना चाहिए?" उसने अन्य तीनों को देखते हुए उलझन में पड़कर, स्वयं से सवाल किया।

चारों ख़ामोश बने हुए थे, उनके सिर सोच में झुके हुए थे। अन्ततः ताओ चिङ

ने होउ-जुई से सवाल करके चुप्पी तोड़ दी, "तुम्हारे विचार से अब हम कैसे काम आगे बढ़ायें?"

होउ-जुई ने फिर मुस्कुराकर, शान्तिपूर्वक जवाब दिया, "पेइचिङ में एक संयुक्त छात्र फ़ेडरेशन गठित किया जाने वाला है। हमारे विश्वविद्यालय में छात्र-संगठन अब भी अलग-अलग और बिखरे हुए हैं। मैं समझता हूँ कि हमें उन्हें एकजुट करने के लिए धीरे-धीरे क़दम उठाने चाहिए।"

"धीरे-धीरे नहीं बल्कि जितना सम्भव हो सके तेज़ी से!" लिऊ ली ने बिदककर तल्ख़ी से कहा। "हमें अवश्य अपने साथी छात्रों के उठ खड़े होने का और संघर्ष करने का आह्वान करना चाहिए! न कि चुपचाप पिटने का इन्तज़ार करना चाहिए।"

"हाँ, हमें तुरन्त कार्रवाई करनी चाहिए," ताओ-चिङ ने सहमति व्यक्त की। "मैं समझती हूँ कि अगर पेइपिङ विश्वविद्यालय के छात्रों को फ़ेडरेशन में शामिल करना है, तो पहले हमें प्रगतिशील ताक़तों को संगठित करना होगा, और फिर जहाँ तक हो सके, अधिक से अधिक उन छात्रों को अपने पक्ष में करना होगा, जो तटस्थ हैं, ताकि प्रतिक्रियावादियों को अलगाव में डाला जा सके।"

"हाँ, बिल्कुल ठीक।" वू यु-पिन कुछ समय से ख़ामोश ही रहा था। उसके यान्त्रिक आग्रही लहज़े से ताओ-चिङ ने जान लिया कि उसके मन में बात बैठी नहीं थी, लेकिन ताओ-चिङ अब इसके फेर में पड़कर समय नष्ट करना नहीं चाहती थी। शान्त बने रहने की पूरी-पूरी कोशिश करती हुई, उसे जो कुछ कहना था, उसे पूरा कह डालने के लिए उसने अपना सम्पूर्ण साहस बटोरा :

"बेशक, मैं पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के 'एक अगस्त घोषणापत्र' की आम भावना के अनुसार सामान्य सिद्धान्तों की बातें करती रही हूँ। लेकिन जब ख़ास उपायों का सवाल आता है, तो मैं मानती हूँ कि मैं बाक़ी तुम लोगों से काफ़ी कम जानती हूँ, और कम अनुभव रखती हूँ। जैसे भी हो हमें प्रगतिशीलों को एकजुट करने, मध्यमार्गियों को अपने पक्ष में करने और प्रतिक्रियावादियों को अलगाव में डालने की नीति पर दृढ़तापूर्वक अमल करना चाहिए।"

वू यू-पिङ कुछ बोला नहीं, लेकिन अपनी नज़रें नीचे मेज़ पर झुका लीं और अपनी क़लम से खेलता रहा। लिऊ ली ने अपनी गोल, चमकदार आँखें ताओ-चिङ के सूजे हुए चेहरे पर टिका दी, उसने भी कोई टिप्पणी नहीं की। लेकिन होउ-जुई मुस्कुराया और बोला :

"हाँ, तो हम युवा लीग वालों और सक्रिय कार्यकर्ताओं को हरक़त में लायें। बेशक, हमें अपने छात्रसंघ का पुन: चुनाव कराने और छात्र फ़ेडरेशन से जुड़ने के उपाय करने चाहिए।" उसने अचानक बात आयी बात के अन्दाज़ में ताओ-चिङ से पूछा, "लू फाङ, तुम वाङ सियाओ-येन के बारे में क्या करने जा रही हो?"

"उससे कुछ लेना-देना नहीं है!" लिऊ ली ने फटकारते हुए बेख़ौफ़ कह दिया।

होउ-जुई ने आँखें सिकोड़कर उसकी ओर देखा और अपना सिर हिलाया। "अगर हम इस सलाह को जल्दबाज़ी में मान लें, तो हम हर चीज़ चौपट कर डालेंगे। चूँकि वाङ सियाओ-येन एक त्रॉत्स्कीपन्थी द्वारा गुमराह कर दी गयी है, इसलिए हमें उसे पुनः अपने पक्ष में लाने की कोशिश करनी चाहिए।"

"क्या वह अब भी एक मध्यमार्गी समझी जा सकती है?" ताओ-चिङ ने चिन्तित भाव से कहा। "फ़िलहाल तो, मैं लिऊ ली से सहमत हूँ। हम उससे कोई सरोकार न रखें। "उस जैसों के साथ निकटता बनाने का कोई तुक नहीं है।" वू ने कहा।

होउ-जुई ने प्रतिवाद करते हुए अपना सिर हिलाया, "वह मेरी सहपाठिन है, इसलिए मैं उसे तुमसे बेहतर जानता हूँ। भले ही तुम्हारे ऊपर उस हमले में उसका कुछ हाथ रहा हो।" वह ताओ-चिङ की ओर देखकर अटक गया और उसके नीले, पिटे हुए चेहरे की झलक ने उसके गुस्से को भड़का दिया। वह आगे बोला, "अगर हम ताक़तवर रहे होते। अगर हमारा काम बेहतर रहा होता, तो यह कभी नहीं हुआ होता। एक कॉमरेड, जो अभी-अभी हमारे पास आयी है।" उसकी संवेदना ने लिऊ ली और वू यु-पिङ को अभिभूत कर दिया, और वे दोनों ताओ-चिङ को ऐसे देखने लगे, मानो हतबुद्धि हो गये हों। उनकी उद्विग्नता और बढ़ गयी, जब उन्होंने देखा कि वह गहरी सोच में डूबी हुई थी, मानो वह अपने साथ हुए दुर्व्यवहार को पूरी तरह भूल गयी हो। अचानक ही वह छोटा कमरा बहुत ख़ामोश हो गया।

"वाङ सियाओ-येन ज़िद्दी है, आत्माभिमानी है और निकटता स्थापित करने के लिहाज़ से अड़ियल है।" जब कोई कुछ नहीं बोला, तो होउ-जुई ने कहना चालू किया। "हालाँकि वह ईमानदार है। मैं समझता हूँ कि उसकी आँखें खोलने का एक ही तरीक़ा है कि त्रॉत्स्कीपन्थियों की कलई खोली जाये।"

"होउ-जुई बिल्कुल ठीक कहता है," ताओ-चिङ ने कहा। "मैं उसके बहुत अच्छी तरह जानती हूँ। वह ठीक वैसी ही है, लेकिन अब मैं उसके पास नहीं जाऊँगी। जहाँ तक मध्यमार्गियों का सवाल है, मैं समझती हूँ कि मेरा ली शुआई-यिङ पर कोशिश करना बेहतर रहेगा।"

"निश्चित ही नहीं!" दो नौजवानों ने लगभग एक ही साथ प्रतिवाद किया। हम विश्वविद्यालय की चहेतियों को कैसे प्रभावित कर सकते हैं?"

"हम एक बार दोस्त थीं। मैं कोशिश करूँगी," ताओ-चिङ ने ज़ोर देकर कहा।

उसके बाद मीटिंग ख़त्म हो गयी। जब वे जाने के लिए उठ खड़े हुए तो ताओ-चिङ ने अपना मास्क फिर लगा लिया। लिऊ ली अलग खड़ी होकर उसे देख रही थी और जैसे ही वे नौजवान गये, उसने झपटकर ताओ-चिङ का हाथ अपनी गर्म उँगलियों में थाम लिया।

"क्या यह दुख रहा है?" उसने पूछा। "क्या बहुत दर्द हो रहा है? तुम क्यों नहीं एक या दो दिन ठीक से आराम करने के लिए यहीं रुक जाती? मेरे माँ-बाप बुरा नहीं मानेंगे।"

इस लड़की के स्नेहिल भाव से स्पर्शित होकर, ताओ-चिङ ने जिसने एक-दो पहले ही पीटे जाने और अपमानित किये जाने पर एक भी आँसू नहीं बहाया था, अचानक महसूस किया कि उसकी आँखें भर आयी हैं। यद्यपि वे उस दिन पहली बार मिली थीं। फिर भी लिऊ ली ताओ-चिङ को नज़दीकी और प्यारी लगी, उसने दिल की गहराई से कहा :

"धन्यवाद लिऊ ली! अब मैं बिल्कुल ठीक हूँ। मुझे कोई कष्ट नहीं है, बस अपने काम के बारे में चिन्तित हूँ।" वह अटककर रुक गयी, उसने घबराहट में उस लड़की का हाथ कसकर पकड़ लिया।

——:o:——

अध्याय 30

ली हुआई-यिङ का कमरा, जो अध्ययनकक्ष और ज़नानेख़ाने के बीचोबीच पड़ता था, सभी प्रकार की किताबों, कलाकृतियों और नुमाइशी चीज़ों से भरा हुआ था। खूबसूरत जिल्दवाली अंग्रेज़ी किताबें सामने काँच का पल्ला-लगे कैबिनेट में रखी हुई थी, जिसके ऊपर सुरुचिसम्पन्न पन्ने जैसे पत्तियों वाला शतावरी फ़र्न रखा हुआ था। दीवारों पर सुपरिचित पश्चिमी शैली के रंग-चित्र टँगे हुए थे, जिनमें आख़िरी सान्ध्य भोज द लास्ट सप्पर भी था, जो एक हल्के हरे फ़्रेम में लगा हुआ छोटी-सी लोहे की चारपाई के ठीक ऊपर लटक रहा था।

उस शाम छह बजे के क़रीब जब ताओ-चिङ ने प्रवेश किया तो एक हरी रेशमी छाया के तले प्रकाश एक हल्की आभा बिखेर रहा था। उसने वहाँ तीन अन्य छात्रों को पाया, जिनमें एक होउ-जुई था।

दूसरा नौजवान और लड़की उसके लिए अजनबी थे, और उसने होउ-जुई को भी न जानने का स्वांग किया। हुआई-यिङ का अभिवादन करने के बाद, वह स्वयं एक साफ़ सफ़ेद चादर-बिछी चारपाई पर बैठ गयी।

"मैं तुम्हारा परिचय करा दूँ।" हुआई-यिङ ने एक मुस्कान के साथ कमरे में टहलते हुए कहा। "यह लू फाङ है, मेरी एक पुरानी दोस्त। और ये..." उसने अपना हाथ लहराया, "साथी छात्र हैं : वू चिएन-चुङ, चाङ लियेन-जुई, और होउ-जुई।"

ताओ-चिङ ने बारी-बारी से सबसे हाथ मिलाया, और मुस्कुराती हुई बैठ गयी।

"मेरी वजह से अपनी बातचीत मत बन्द होने दो," उसने यह देखकर कहा कि उन्होंने बातचीत को बीच ही में रोक दिया था।

हुआई-यिङ ने हँसते हुए कहा, "लू फाङ, तुम एकदम ठीक समय पर आयी हो। इन लोग ने तो मुझे लगभग हरा ही दिया था। वे सभी मेरे शेक्सपियर पढ़ने के खिलाफ़ हैं। एक कहता है, 'देश तबाही के कगार पर है।' दूसरा कहता है, 'स्थिति नाजुक है।' लेकिन क्या फ़ायदा है इन चीज़ों को कहने से? अच्छा हो कि हम कोई और बात करें।"

"बहुत हो चुका, प्यारी! तुम अपनेआप को पूरी तरह से मध्य ग्रीष्म की रात के स्वप्न में मत तिरोहित करो।" चाङ लियेन-जुई, जो एक गुलाबी गालों वाली, गदरायी लड़की थी, ठहाकों के बीच ही में बोल पड़ी। "मैं जानती हूँ कि मैंने हाल की गतिविधियों पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया है, लेकिन मैं देखती हूँ कि तुम उनके बारे में मुझसे भी कम ध्यान देती हो। क्या तुम जानती नहीं कि पैलेस म्युज़ियम की मूल्यवान कलाकृतियाँ जहाज़ से दक्षिण ले जायी जा रही हैं? क्या तुम नहीं देखती कि जापानी हवाई जहाज़ रोज़ाना हमारे सिर के ऊपर चक्कर काट रहे हैं? यहाँ तक कि हमारे प्रेसिडेण्ट च्याङ मेन-लिन तक को जापानी बैरकों में बुलाया गया, तीन घण्टे तक रोका गया और लेक्चर पिलाया गया। इन सब चीज़ों का क्या मतलब है, क्या ये इस बात के लक्षण नहीं है कि हमारा देश तबाही की ओर बढ़ रहा है?"

"यह तो होगा ही, लियेन-जुई।" हुआई-यिङ अपना कान बन्द करते हुए चीखी। "क्या इस तरह की बातों से तुम्हारा इरादा वक्त जाया करने का है? अगर तुम ऐसे ही बोलती रही मोटी, तो मैं तुम्हें बाहर निकाल दूँगी। देश बचाओ! देश बचाओ! अगर मैं इसे सौ बार दोहराती रहूँ तो क्या तुमको तसल्ली होगी?" दोनों हँस पड़ीं। लेकिन जैसे एक लहर के तिरोहित होते ही दूसरी लहर उठ जाती है, वैसे ही, हुआई-यिङ ने लिएन-जुई को अभी चुप नहीं कराया था कि वू चिएन-चुङ और [illegible] जुई अपने कोने में बात करने लगे। वू जो कुछ चुप्पा था, एक मन्द, नपे-तुले [illegible] में होउ से बोला :

"इन दिनों लोग ख़तरा महसूस कर रहे हैं। सुङ चेह-युआन, समझा जा रहा है कि किसी तरह की 'स्वायत्तता' के मसले पर जापानियों से साँठ-गाँठ कर रहा है। क्या तुम नहीं सोचते कि स्थिति नाजुक होती जा रही है, बड़े भाई होउ?"

"हाँ, बहुत ही नाजुक।" होउ ने एक बेतुकी मुस्कान के साथ उत्तर दिया।"

"स्थिति सचमुच बहुत नाजुक है," ताओ-चिङ बोल पड़ी, जब उसने देखा कि [illegible] का आगे बोलने का इरादा न था। "तुमने ज़रूर सुना होगा कि कुछ ही दिन [illegible] चेङ ने, जो तिएनत्सिन का मेयर है, च्याङ काई-शेक को टेलीग्राम करके पाँच [illegible] प्रान्तों के लिए 'कम्युनिस्ट विरोधी स्वायत्तशासी सरकारों, की खुली माँग की [illegible]। [illegible] जापानी फ़ौजी टुकड़ियों के साथ-साथ बड़े पैमाने पर कार्रवाइयाँ शुरू कर [illegible]। उनका कल्पित लक्ष्य पेइपिङ पर क़ब्ज़ा करना है। त्सिङहुआ के अधिकारी [illegible] भयाक्रान्त हो गये हैं कि वे विश्वविद्यालय को चाङशा ले जाने की सोचने लगे

हैं। कहा जा रहा है कि उत्तर पूर्व का विश्वविद्यालय ताइयुआन जा रहा है। दरअसल अधिकतर कॉलेज अपना स्थान ख़ाली कर देने की तैयारी कर रहे हैं।"

"क्या? क्या त्सिङहुआ स्थानान्तरित होने जा रहा है?" हुआई-यिङ आँखें फाड़कर बीच ही में बोल पड़ी।

"आह, तुम दहल गयी। इसलिए कि 'वह' त्सिङहुआ में है।" लियेन-जुई ने एक मज़ाकिया मुस्कुराहट के साथ चिल्लाकर कहा। "अबीसीनिया जैसा एक छोटा देश, जिसकी आबादी पचपन लाख से अधिक नहीं है, इटली जैसी एक मज़बूत सत्ता का प्रतिरोध करने की हिम्मत करता है, और विजय हासिल कर लेता है। लेकिन यहाँ चीन में – उत्तर पूर्व तो पहले से जा चुका है, और उत्तरी चीन भी जाने वाला है – यह देखकर मेरा ख़ून खौल उठता है कि जापानी, यह सबकुछ अपने ढंग से करते हुए पेइपिङ की ओर बढ़ते जा रहे हैं।"

इस पर होउ-जुई ने उनको अन्वेषणभरी दृष्टि से देखा और तीखेपन से कहा :

"कल पूर्वी चांआन स्ट्रीट में, मैंने खुद अपनी आँखों से दो जापानी सैनिकों को एक लड़की को पकड़ते और एक कार में ठूँसते हुए देखा। लड़की सुबक रही थी और चीख़-पुकार कर रही थी और अगल-बग़ल के सभी राहगीर ग़ुस्से में थे, लेकिन चीनी पुलिस बस इसे ऐसे देख रही थी, मानो कुछ हुआ ही नहीं।"

"अब आगे मत कहो।" हुआई-यिङ ने अपना ख़ूबसूरत नन्हा मुँह सिकोड़ते हुए कहा। "तुम हर जगह एक तनावपूर्ण वातावरण पैदा करने के लिए हमेशा बतंगड़ खड़ा करते रहते हो। भला कैसे इस तरह की बात दिन-दहाड़े हो सकती है? अच्छा अब हम विषय बदल दें, क्यों? मृदु बनो और मुझे एक क्षण सुस्ता लेने दो। लिऊ ली तो काफ़ी लम्बे समय से यहाँ बोलती ही रही थी। अब फिर तुम यहाँ मुझे उपदेश देने लगे।"

"क्या तुम त्सिङ हुआ के स्थानान्तरण के बारे में सुनना तक नहीं चाहते?" लियेन-जुई ने कड़ा प्रतिवाद किया।

"तुम कितनी संगदिल हो, मोटी। क्या त्सिङ हुआ सचमुच स्थानान्तरित होने जा रहा है? यह कैसे हुआ कि मैंने कुछ भी इसके बारे में नहीं सुना? स्थानान्तरण क्यों? भले ही जापानी पेइपिङ पर क़ब्ज़ा कर लें, वे एक विश्वविख्यात विश्वविद्यालय को छूने का साहस शायद ही करें।" बिस्तर पर झुककर हुआई-यिङ ने जम्हाई ली।

"शर्म आनी चाहिए। विश्वविद्यालय की 'रानी' होना तुम्हारे दिमाग़ में घर कर गया है, और इसने देश के प्रति तुम्हारी सारी संवेदनाओं को नष्ट कर दिया है।" लियेन-जुई ने हुआई-यिङ की विवेकहीन दलील को मुँहतोड़ ढंग से ख़ारिज करते हुए, उसकी ओर इस तरह आरोपभरी नज़रों से देखा कि उनकी मेज़बान खिन्न होने लगी। अपने बालों की नर्म लटों को पीछे झटकते हुए, उन सबकी उपेक्षा कर उसने अंग्रेज़ी की एक किताब उठा ली और पढ़ने के लिए पलंग के

पाये के सहारे टिक गयी।

वातावरण तनावपूर्ण हो गया था। चूँकि होउ-जुई और वू चिएन-चुङ हुआई-यिङ के उतने क़रीबी नहीं थे जितनी कि लियेन-जुई, इसलिए वे इस पचड़े में नहीं पड़ना चाहते थे। लेकिन ताओ-चिङ ने इस चुप्पी का फ़ायदा एक मज़ाक़ सुनाने में उठाया। धीरे से और शान्तिपूर्वक उसने कहा :

"शिक्षा मन्त्रालय द्वारा इस वर्ष प्राचीन अध्ययन के पुनःप्रवर्तन के आदेश के बाद, क्लासिकीय साहित्य का पढ़ना और कनफ़्यूशियस को आदर देना ही कुल मिलाकर एक समय तक पेइपिङ में ज़ोरों पर था। एक ख़ास विश्वविद्यालय ने तो इस आह्वान का इतने उत्साह से अनुपालन किया कि उसने इस गर्मी में शाही परीक्षाओं जैसे, एक टेस्ट के रूप में, छात्रों को पूरी तरह से विस्मय में डाल दिया। चीनी लेखन के दो विषय थे। एक था 'छात्र साहित्य लेने के पहले कला को अवश्य जानें', और दूसरा था, 'नानीयुएह के राजकुमार चाओ तो की शैली में हानवंश के सम्राट देन ती के एक पत्र का जवाब।' सभी छात्र जबकि अपना-अपना उत्तर लिख रहे थे, एक छात्र ने अपने परचे पर घसीट दिया – "

"क्या?" अपनी खिन्नता भूलकर हुआई-यिङ ने पुस्तक नीचे रख दी और उत्सुकतावश ताओ-चिङ की ओर मुड़ गयी।

"उनमें से एक ने लिखा, 'हानवंश का सम्राट वेन तो परिचित मालूम पड़ता है, लेकिन मैं नहीं जानता कि सम्राट काओ त्सु का पोता या पड़पोता था या नहीं जहाँ तक नानीयुएह के राजकुमार चाओ ता का सवाल है – कृपया नोट करें कि इस छात्र ने चाओ तो के बजाय, चाओ ता लिखा था – मैंने उसके बारे में कभी नहीं सुना और इसलिए लिखने की स्थिति में नहीं हूँ। मुझे अवश्य वापस जाना चाहिए और अध्ययन करना चाहिए, ताकि मैं अगले वर्ष परीक्षा के लिए बेहतर रूप में तैयार हो सकूँ।' जैसे ही परीक्षक ने यह परचा देखा, उसने अपनी क़लम उठायी, और लाल स्याही में निम्नलिखित टिप्पणी लिख दी :

> काओ त्सु था वेन ती का पापा,
> यह है चाओ तो, न कि ता।
> ज़ाहिर है कि फेल हो गये तुम इस परीक्षा में
> लेकिन बैठना फिर आने वाले वर्ष में।"

जिस तन्मयता से ताओ-चिङ ने इस कविता को पढ़ा उससे कमरे में हर कोई हँस पड़ा। ख़ासतौर से लियेन-जुई और हुआई-यिङ तो हँसती-हँसती दोहरी हो गयीं। सिर्फ़ ताओ चिङ ने अपना चेहरा सपाट बनाये रखा, और जैसे ही यह हास-परिहास ख़त्म हुआ, वह आगे बोली। "एक-दूसरे छात्र ने पहले विषय का और भी मज़ेदार जवाब दिया था, क्योंकि उसने लिखा था :

ख़ूबसूरती के आगे जो घुटने टेक देते हैं।
उन्हें तरीक़े सुधार लेने चाहिए, जब उनके पाप उजागर हो जायें

"यह लिखकर उसने अपनी क़लम फेंक दी थी और बिना एक शब्द कहे, अचानक हाल छोड़कर चल दिया था। परीक्षक इस परचे से इतना क्रुद्ध था कि अपनी लाल स्याही वाली क़लम से चटखदार लिख दिया : 'निकाल बाहर किये जाने से पहले बाँस से चालीस बार पीटे जाने का अधिकारी है।' क्वामिङताङ के प्राचीन अध्ययन के पुनःप्रवर्तन का क्या यह मज़ेदार नतीजा नहीं था।"

"लिन ताओ-चिङ, लिन ताओ-चिङ! तुम तो इतने अच्छे ढंग से नहीं बोला करती थी।" हुआई-यिङ ने अब भी हँसी से लोट-पोट होते हुए, ताओ-चिङ का कन्धा थपथपाया, और उसे उसके असली नाम से पुकारा। इस पर कमरे का वह खुशी का माहौल बदल गया।

"लिन ताओ-चिङ?" लियेन-जुई ने, अर्थभरी नज़रों से वू चिएन-चुङ को देखते हुए और उसके कानों में फुसफुसाते हुए बुदबुदाया। अपनी चिंहुक को छिपाने में असमर्थ दोनों ही मुड़कर ताओ-चिङ को घूरने लगे, मानो वह कोई अजनबी हो।

"तुम दोनों के साथ मामला क्या है?" हुआई-यिङ ने आश्चर्य से पूछा। लेकिन लियेन-जुई ने वू की बाँह पकड़ ली थी, जो उसके साथ दरवाज़े से निकलकर भाग रहा था, मानो प्लेग से बच निकलना चाहता हो।

कमरे में बचे तीन तरुण लोग क्षणभर ख़ामोश बने रहे।

होउ-जुई ताओ-चिङ से कुछ कहना चाह रहा था, लेकिन उसका संकेत पाकर रुक गया।

हुआई-यिङ ने ताओ-चिङ की ओर एक अर्थभरी मुस्कान के साथ देखा, आहिस्ते से उसका हाथ पकड़ा और जानकारी जताते हुए कहा :

"मैं समझती हूँ। वे ज़रूर तुमको समझते हैं...मैं क्या ठीक कहती हूँ।"

अपनी बड़ी-बड़ी सजीव आँखों को फिराती हुई, और अपनी पतली कमर को तानती हुई वह आगे बोली, "ख़ैर, मैं हमेशा कहा करती थी कि कोई भला आदमी किसी पार्टी में शामिल नहीं होगा। पार्टियाँ जिस तरह से एक को दूसरे के ख़िलाफ़ दुरभिसन्धि में डालती हैं, वह सिर्फ़ अपमानजनक ही है। राजनीति यश और लाभ कमाने का एक गन्दा खेल है।"

"तुम बिल्कुल ग़लत हो हुआई-यिङ," ताओ-चिङ ने अपने ऊपर लगे अप्रत्याशित झटके से किसी उद्विग्नता का कोई संकेत न दिखाते हुए कड़ा प्रतिवाद किया। उसने अपनी बड़ी, आकर्षक आँखें हुआई-यिङ पर स्थिर कर दीं। "तुम राजनीति की विरोधी हो, लेकिन कोई भी सचेत या अचेत रूप से राजनीति से निजात नहीं पा सकता। भले ही तुम स्वयं इससे वाक़िफ़ न हो, लेकिन वर्षों पहले जब तुमने

मुझे शरण दी थी, और मुझे बच निकलने में मदद की थी, जब तुमने हू मेङ-एन से घृणा की थी, तब तुमने अपनेआप को राजनीतिक संघर्ष में ही डाला था। क्या तुम इसे नहीं देखती हुआई-यिङ?"

"बहुत हो गया, बहुत!" दूसरी लड़की ने मुँह बनाते हुए कड़ा प्रतिवाद किया। "तुम राजनीतिक लोग हमेशा ही सनसनी पैदा करने के चक्कर में रहते हो। मैं ऐसी चीज़ों के बारे में बात नहीं करना चाहती। तुमने क्या कर दिया है ताओ-चिङ कि लिएन-जुई जैसे लोग तुमसे इतने डरे हुए हैं? मैंने सुना है कि वाङ चुङ ने तुमको पीटा था। किसलिए? तुम तो बस मुसीबत मोल लेती रहती हो।"

उत्तर देने के बजाय ताओ-चिङ ने एक नज़र किताबों की आलमारियों पर डाली, जहाँ उसने पाया कि वहाँ सिर्फ़ ख़ूबसूरत जिल्दवाली किताबें ही नहीं थीं, बल्कि तमाम अमेरिकी और फ़्रेंच फ़ैशन मैगज़ीन भी थीं। एक मैगज़ीन के पन्नों को पलटते हुए, उसने आधुनिकतम पेरिस-शैली में सजी सुनहरी बालों वाली महिला का एक रंगीन फ़ोटोग्राफ़ देखा। उसने अपना सिर उठाया और मुस्कुराती हुई हुआई-यिङ से बोली :

"मैं सुनती हूँ कि तुम पेइपिङ विश्वविद्यालय की रानी चुनी गयी हो। तुम सचमुच ख़ूबसूरत हो। अच्छा दिखना सुखदायक है लेकिन और भी बेहतर होगा कि इसके साथ एक ख़ूबसूरत आत्मा भी हो।"

हुआई-यिङ का गोरा चेहरा तमतमाकर गुलाबी हो गया, लेकिन उसने बुरा नहीं माना। ताओ-चिङ का कन्धा थपथपाकर उसने कहा :

"लिन ताओ-चिङ, नहीं लू फाङ! मैं तुम्हारे नये नाम की आदी नहीं हो सकती, [illegible] तो मुसीबत हो गयी। अगर यह सच है, तब तो तुमको अवश्य एक परिपूर्ण [illegible] होना चाहिए, शरीर और आत्मा दोनों ही में। क्या तुम बस एक मिनट उपदेश [illegible] बन्द नहीं कर सकती? यह मेरे लिए कैसा दिन रहा है। पूरे तीन घण्टे से लिऊ [illegible] लियेन जुई और तुम बारी-बारी से मुझे इतना लेक्चर पिलाते रहे हो कि मेरा [illegible] जा रहा है।" उसने उनको एक मज़ाकिया गुस्से से देखा, फिर मुस्कुरायी [illegible] आश्वस्त किया, "लेकिन सबकुछ के बावजूद मैं तुमको वैसे ही चाहती [illegible] आवश्यकता से अधिक नर्म-दिल हूँ, यही तो मेरी मुसीबत है। तुम जानती हो, [illegible] कि उन्होंने मुझे सिर्फ़ पेइपिङ विश्वविद्यालय की रानी ही नहीं बना डाला [illegible] मुझे 'करुणा का कुसुम' पदवी भी दे डाली है। ऐसा इसलिए कि मैं हर [illegible] प्रति एक ही जैसा बरताव करती हूँ। बिना कोई फ़र्क़ किये कि कौन किस [illegible] है।" उसने पुनः एक भोली, आकर्षक हँसी हँस दी। कोई भी उसकी [illegible] पर सवाल नहीं उठा सकता था।

"[illegible] और करुणा का कुसुम – हाँ, तुम वही हो।" होउ-जुई ने ताईद की। [illegible] ज़िन्दादिली से भरी बातचीत में शामिल होने में असमर्थ उसने एक

उपन्यास उठा लिया था और इसे देखने लगा था। अब इस टिप्पणी के साथ मुस्कुराते हुए वह रुख़सत होने के लिए उठा। अभी वह बहुत दूर नहीं गया था कि ताओ-चिङ ने उसका साथ पकड़ लिया।

उसके साथ-साथ अँधेरी सुनसान गली में चलते हुए, होउ-जुई ने कुछ अधीर होकर कहा :

"मैं समझ नहीं पाता कि तुम विश्वविद्यालय की रानी जैसी किसी को अपने पक्ष में करने की इतनी मुसीबत क्यों मोल ले रही हो। मैं तो इसे इसलिए झेलता रहा कि मैं तुमसे मिलना चाहता था – लेकिन कितना कठिन झेलना पड़ा।"

एक क्षण की ख़ामोशी के बाद, ताओ-चिङ होउ-जुई को ग़ौर से देखने के लिए मुड़ी, उसकी आँखें अन्धकार में चमक उठीं।

"होउ-जुई, क्या तुम एक अगस्त घोषणापत्र के आशय को नहीं समझते? हमें उस तरह की बन्द दरवाज़े की नीति नहीं अख़्तियार करनी चाहिए, जैसीकि हमने अतीत में अपना रखी थी। हुआई-यिङ एक नेकहृदया है और उसमें न्याय का एक जीवन्त अहसास है। बेशक, जब राजनीति का मुद्दा आता है, तो उसका दिमाग़ गड़बड़ा जाता है। कारण कि उसकी पारिवारिक पृष्ठभूमि और उसकी दोस्त, कैथोलिक विश्वविद्यालय की कवयित्री हुआङ मेई-शुआङ का उस पर पूँजीवादी प्रभाव है। लेकिन तुम्हें इस मसले पर दूसरे कोण से भी देखना चाहिए। वह दूसरे छात्रों को प्रभावित कर सकती है – वह उनकी रानी है, और एक मेहनती लड़की है, जो दूसरों की मदद करके ख़ुश होती है। वह सिर्फ़ अंग्रेज़ी विभाग में ही नहीं, बल्कि पूरे विश्वविद्यालय में एक ख़ास प्रतिष्ठा प्राप्त किए हुए है। क्या हमें ऐसी छात्रा को अपने पक्ष में लाने का भरसक कोशिश नहीं करनी चाहिए? क्या तुम्हीं मध्यमार्गियों को पक्ष में लाने के हामी नहीं हो?"

"हाँ, हाँ, तुम मुझसे बेहतर जानती हो। मैं सिर्फ़ इसलिए डरता हूँ कि हमारी कोशिशें बेकार न चली जायें। होउ-जुई ने कटुतापूर्वक मुस्कुराकर कहा। वे सामने से आ रही बेधती हवा में उस अन्धकार में साथ-साथ चल रहे थे। अब होउ-जुई ने कुछ गम्भीर होकर बोलना चालू किया, "लू फाङ गतिविधियाँ बहुत ही अच्छी नहीं जा रही हैं। छात्र संघ का पुनर्गठित करने और छात्र फ़ेडरेशन में शामिल होने की हमारी योजना..."

"हाँ, क्या है, इसके बारे में?" ताओ-चिङ झट पूछ पड़ी।

"हाँ," होउ-जुई ने धीमे से जवाब दिया। "हमने एक मीटिंग की थी। हमने छात्रों को अपने पक्ष में लाने की पूरी-पूरी कोशिश की, लेकिन अब तक कुछ ही शामिल होने के लिए सहमत हुए हैं।"

"मुझे विस्तार से बताओ।" ताओ-चिङ उसकी ओर देखने के लिए मुड़ पड़ी। "क्या हुआ, हम क्यों असफल रहे?"

होउ जुई ने उदासी भरे अन्दाज़ में सिर हिलाया। अब उसकी मुस्कुराते बुद्ध वाली मुद्रा नहीं थी, क्योंकि उसका स्वर मन्द और उदास था। "पहले हमने चाङ लियान जुई और यु त्से-ली जैसे प्रगतिशीलों को एकजुट किया, और यद्यपि वे अल्पसंख्यक थे, फिर भी वे बहुत सक्रिय थे और महसूस कर रहे थे कि स्थिति बहुत गम्भीर है। लेकिन सी.सी. गुट और त्रॉत्स्कीपन्थियों से सम्बन्धित मुट्ठीभर लोगों ने दायें-बायें प्रहार के ज़रिये संघर्ष को कठिन बना दिया। त्रॉत्स्कीपन्थी अति 'वाम' होने का स्वांग करते, जबकि सी.सी. और यथास्थितिवादी गुट फ़ेडरेशन में शामिल होने का पक्ष लेने वालों पर कम्युनिस्टों के हाथ में खेलने का आरोप मढ़कर दक्षिणपन्थी ख़तरे उत्पन्न कर देते। प्रगतिशील छात्रों ने उन सभी प्रतिक्रियावादी झूठों का [illegible] करने की गर्मागर्म दलीलें दीं – यह एक तूफ़ानी मीटिंग थी। अन्त में [illegible] चिएन-चुङ जैसी मध्यमार्गी छात्र जिनसे तुम अभी मिल चुकी हो, हमारे पक्ष [illegible] आये, लेकिन बहुसंख्या ने चीज़ों को अपने लिए बहुत तल्ख़ पाया और वे [illegible] चले गये। इससे भी बुरी बात यह हुई कि प्रतिक्रियावादियों ने कुछ लफंगों को तैयार कर रखा था, जिसे कि जब मीटिंग अपने पूरे रंग में थी, खिड़कियों से [illegible] पत्थर फेंके गये। लुब्बेलुआब बात यह कि सबकुछ पूरी तरह गड्डमड्ड हो गया।"

"क्या तुम सोचते हो कि इस असफलता के लिए हम दोषी हैं?" [illegible] चिङ [illegible] पूछा। अगल-बग़ल होकर वे धीरे-धीरे लाल भवन को पार करके उत्तर की ओर [illegible] थे।

[illegible] क्षण सोचने के बाद होउ-जुई बोला, "हम मीटिंग के लिए ठीक से तैयार [illegible] थे. हमने पर्याप्त प्रचार या अपनी ताक़त को ठीक से संगठित नहीं किया था। [illegible] उम्मीद की थी कि पूरा छात्र-समुदाय छात्र संघ के दोबारा चुनाव के लिए [illegible] आयेगा, और फिर फ़ेडरेशन में शामिल होने के प्रस्ताव पारित कर देगा। [illegible] हालत यह हुई कि एक-तिहाई से कम ही छात्र तीसरे हॉस्टल के सभागार [illegible] के लिए आये। चूँकि दोबारा चुनाव का सवाल ही दरकिनार हो गया, [illegible] सिर्फ़ यही प्रस्ताव पारित कर सके कि पुराना छात्र-संघ ही फ़ेडरेशन [illegible] होगा। अन्त में कुछ कक्षाओं ने, जो पक्ष में थी, शामिल होने का निर्णय [illegible] जो विरोध में थी, वे इन्कार कर गयीं। इसी दुर्भाग्यपूर्ण ढंग से यह [illegible] हो गयी।"

[illegible] चिङ ने कुछ नहीं कहा और होउ-जुई भी ख़ामोश ही रहा। वे एक [illegible] गली से होकर गुज़र रहे थे कि वह यकायक रुक गयी और यह [illegible] कि आसपास और कोई न था, उसने धीरे से उसका हाथ थामा और [illegible] विश्वास के साथ कहा :

"[illegible] उम्मीद मत छोड़ो! हमारी विजय होकर रहेगी। तुम्हारा यह कहना

ठीक था कि हम अच्छी तरह तैयारी नहीं कर पाये थे और बहुत हड़बड़ी में भी थे।

यह ताज्जुब की बात नहीं है जब हमने छात्रों को पर्याप्त रूप से उकसाने के पहले ही बुला लिया, तो मीटिंग को तो वैसे ख़त्म होना ही था, जैसे हुई।" ताओ-चिङ एक बड़ी बहन की तरह बात कर रही थी, हालाँकि वह और होउ-जुई लगभग समान उम्र के ही थे। असहमति का कोई शब्द उच्चारित किये बग़ैर ताओ-चिङ उसे उत्साहित करने की पूरी-पूरी कोशिश करती हुई बोली, "मेरा विश्वास है कि यहाँ के छात्र प्रगतिशील और राजनीतिक रूप से सचेत हैं, लेकिन हमने ही उनको जागृत और संगठित करने की पूरी-पूरी कोशिश नहीं की है, इसलिए कुछ अपनेआप को, पलायन के तौर पर किताबों में दफ़न कर लेते हैं। लेकिन होउ-जुई एक बार जब हम उनको अमली कार्रवाई के लिए उकसा देंगे, तो हमें मुट्ठीभर प्रतिक्रियावादियों से क्या डर रहेगा?" ताओ-चिङ पूरे विश्वास के साथ मन्द-मन्द हँसने लगी। होउ-जुई भी उसके मूड से अभिभूत होकर हँसने लगा।

"धन्यवाद लू फाङ! जब कोई मुसीबत में होता है तो उसे सहयोग और उत्साहवर्द्धन की आवश्यकता होती है। मुझे विश्वास है कि निकट भविष्य में यहाँ की स्थिति पूरी तरह बदल जायेगी।" उसका लहज़ा अचानक बदल गया था और अब जो बात उसके दिमाग़ में थी, उसको कहने में उसे हिचकिचाहट हो रही थी। कुछ समय बीतने के बाद वह बोल पड़ा, "लू फाङ, मैं तुमसे कुछ कहना चाहता हूँ, लेकिन..."

"कह डालो। होउ-जुई। बोलो तो!"

एक क्षणिक विराम के बाद, वह बोला, "लू फाङ, यह बहुत बेढब हो जायेगा, अगर तुम पेइपिङ विश्वविद्यालय में खुल्लमखुल्ला प्रकट होती रही। क्या तुम्हारा चले जाना अच्छा नहीं होगा? देखो तो, एक अफ़वाह उड़ चली है कि एक स्पेशल एजेण्ट, एक महिला ग़द्दार, एक छात्र के रूप में यहाँ गतिविधियाँ चला रही है। इसी कारण चाङ लियेन-जुई डर गया और जब ली हुआई-यिङ ने तुम्हारा नाम पुकार दिया तो वह भाग चला। लू फाङ क्या तुम नहीं सोचती कि कुछ समय के लिए तुम्हारा रास्ते से हट जाना बेहतर रहेगा?"

एक लम्बी चुप्पी छायी रही।

"नहीं, होउ-जुई, मैं पेइपिङ विश्वविद्यालय नहीं छोड़ सकती।" अन्ततः ताओ-चिङ ने जवाब दे दिया और उसका स्वर दृढ़ था। "यह काम पार्टी ने मुझे दिया है और चाहे जो कुछ हो, मैं इसे करूँगी ही। बेशक मुझे पहले से अधिक सावधान रहना होगा -- मैं व्याख्यान सुनने और कुछ सार्वजनिक मीटिंगों में जाना बन्द कर सकती हूँ। लेकिन मुझे छात्रों के बीच अपना काम तो करना ही है।" वह एक क्षण सोचने के लिए रुकी और फिर आगे बोली, "यह हमारे लिए सर्वाधिक कठिन समय है, यह निर्णायक महत्त्व का मोड़ बिन्दु भी है, इसलिए अब मैं तुमको

छोड़ सकती। मैं जितनी मदद कर सकती हूँ, ज़रूर करूँगी। विश्वविद्यालय में तीन पार्टी-सदस्य बचे हुए हैं, और हमारा काम बहुत कठिन और उलझा हुआ ।" वह बोलते-बोलते अचानक रुक गयी।

"ठीक है, लेकिन मैं तुमको और सावधान रहने की सलाह दूँगा।" उसने आँखें कायी और एक शरारतभरी झलक उसकी आँखों में भर आयी। "मुझे बताओ, , आज तुम जिस क़िस्म का व्यक्ति बन गयी हो, वैसा कैसे बनी?"

"क्या मतलब?" मैं समझी नहीं।

"तुम कुछ भावुक और एकान्तप्रिय हुआ करती थी, थी न? अब किस चीज़ तुमको इतना भिन्न बना दिया है?"

कुछ-कुछ चौंकती हुई ताओ-चिङ ने उसकी स्नेहभरी नज़रों से नज़र मिलायी।

"तुम कैसे जानते हो कि मैं क्या हुआ करती थी? हम तो थोड़े ही समय से साथ काम कर रहे हैं।"

"जब तुम इस पर सोचोगी तो दिलचस्प मालूम होगा। मैं लिन ताओ-चिङ का बहुत पहले से जानता था। जब मैं हाईस्कूल में था, तो मैं अक्सर अपनी मौसी जाया करता था, और मेरी मौसेरी बहन उस समय तुम्हारी अच्छी दोस्त थी। अक्सर तुम्हारे बारे में और तुम कैसी हो, बताया करती, और उसकी बातें, मेरे गहरी छाप छोड़तीं। उसके लिए तुम तक़रीबन एक मिथकीय चरित्र थी, चित्ताकर्षक। जब तुम पेइपिङ विश्वविद्यालय आयी, तो मैंने सपना भी नहीं था कि तुम्हीं लिन ताओ-चिङ हो। यह तो इस शाम को पता चला जब गिङ ने तुम्हारा असली नाम पुकार दिया, तो मैंने महसूस किया कि तुम ज़रूर मौसेरी बहन की भूतपूर्व स्कूली दोस्त हो।"

"तुम्हारी मौसेरी बहन कौन है?"

"न वेई-जू। क्या वह तुम्हें याद है?"

"बिल्कुल। अब वह कैसी है?"

"मर चुकी है।"

"मर चुकी! कैसे मरी वह?"

"उसने आत्महत्या कर ली।"

ताओ चिङ का हृदय मसोस उठा, जब उसने सुन्दर भौंहों और प्यारी-प्यारी वाली उस लड़की को याद किया, जो उसके इतने निकट थी। वह आहिस्ता जुई से पूछने के लिए मुड़ी, "उसने आत्महत्या क्यों की? क्या वह शादी के धनी महिला नहीं बन गयी थी?"

सिपाहियों के भारी बूटों के चलने की मनहूस ध्वनि निकट आती जा रही थी, जुई ने उसकी बाँहों में अपनी बाँहें डालते हुए आगे कहा, "उसके पति दूसरी औरत की ख़ातिर उसे उपेक्षित कर दिया था। गुस्से के एक दौरे में

उसने नींद वाली गोलियों की ज़्यादा मात्रा खा ली। यह सोचना कितना त्रासद है कि उसने अपने पीछे छोटे-छोटे बच्चों को छोड़ दिया। यह सब पिछले वर्ष हुआ।"

एक लम्बे क्षण तक दोनों में से कोई न बोला, मानो वे चुपचाप उस दुर्बल इच्छाशक्ति वाली चेन वेई-जू के दुर्भाग्य पर विलाप कर रहे हों।

"होउ-जुई, तुम्हारी मौसेरी बहन सही थी जब उसने कहा कि मैं भावुक, एकान्तप्रिय और आत्मकेन्द्रित थी। यहाँ तक कि अब भी मैं समझती हूँ, बहुत नहीं बदली हूँ। अब भी मुझमें कई कमियाँ हैं। इस शाम चाङ लियेन-जुई के व्यवहार ने मुझे इतना उद्विग्न कर दिया कि किसी तरह मैं अपने आँसू रोक पायी, और अपनेआप को संयत रख सकी। लेकिन होउ-जुई, मेरे प्यारे कॉमरेड।" उसने उसका हाथ कसकर पकड़ लिया। "यह कठिन समय है। पार्टी नेतृत्व ने यहाँ किसी को हमसे सम्पर्क करने के लिए नहीं भेजा है, और मेरे बारे में ग़लतफ़हमी फैल गयी है तथा कई छात्र मुझसे नफ़रत करते हैं। यद्यपि यह सब मुझको हमारे काम में गतिरोध की अपेक्षा कम ही कचोटता है, परन्तु हमारे पार्टी-कॉमरेडों का रूबरू न देख पाना। हमें अपने काम में पूरी ताक़त लगा देनी होगी, होउ-जुई। मैं आशा करती हूँ कि तुम ज़रूर मेरी मदद करोगे।"

फिर ख़ामोशी छा गयी। होउ-जुई बिना बोले, एक क्षण तक उसकी ओर देखता रहा, और ताओ-चिङ ने उसकी ओर खोजभरी और पीड़ित नज़रों से देखा। बिना और कुछ कहे, वे अलग-अलग हो गये।

——:o:——

अध्याय 31

उस रात जब ताओ-चिङ अपने डेरे पर वापस लौटी, तो उसने दरवाज़ा खोला, कमरे के अन्दर प्रवेश किया और पैराफ़िन लैम्प जलाये बग़ैर ही बिस्तर पर जाकर पड़ गयी। कठिनाइयाँ और विफलताएँ जो उसके मन में उमड़-घुमड़ रही थीं, उसे सोने नहीं दे रही थीं। वह अपने को एक ऐसे अनाड़ी डॉक्टर के रूप में महसूस कर रही थी, जो यह निदान नहीं कर पा रहा था कि पेइपिङ विश्वविद्यालय में क्या गड़बड़ है, इलाज की बात तो दीगर थी। यह सच था कि जुई और दूसरे पार्टी-सदस्य काफ़ी सशक्त नहीं थे, फिर भी वे कड़ी मशक्कत कर रहे थे। और फिर अठारह मार्च वाली घटना का महत्त्व दिखाने के लिए दो वर्ष पूर्व आयोजित किये गये प्रदर्शन के अनुभव की रोशनी में उनका सतर्कता बरतना शायद ठीक ही था, क्योंकि कई नौजवान उस अवसर पर पीटे गये थे, गिरफ़्तार हो गये थे या मार डाले गये थे। चिन्तित और अवसन्न होकर ताओ-चिङ ने इस विषय को अपने दिमाग़ में बैठा लिया। यह पहला महत्त्वपूर्ण कार्यभार पार्टी ने उसे अपने ही बलबूते करने को सौंपा

था, और उसे विश्वविद्यालय में आये एक पखवारा गुज़र चुका था, फिर भी काम में कोई प्रगति नहीं हुई थी। "मैं क्या करूँ?" उस अँधेरे कमरे में अकेले उसने स्वयं से सवाल किया। उसे लिऊ यी फाङ की विदा होते समय दी गयी सलाह याद हो आयी, 'सिऊ-लान तुम अपने बलबूते काम करने जा रही हो। यह यहाँ पर मेरे साथ काम करने जैसा नहीं होगा। प्रतिक्रियावादी कुछ कारणवश ही कहते हैं कि छात्रों का सामना करना सैनिकों का सामना करने से भी अधिक कठिन है। मैं वहाँ की स्थिति नहीं जानती, इसलिए मैं तुम्हारे लिए अधिक सहायक नहीं हो सकती। लेकिन दो बातें हमेशा याद रखना – सबसे पहले, एक अगस्त घोषणापत्र के मद्देनज़र अधिक से अधिक जितना सम्भव हो सके, छात्रों को एकजुट करना – उनके लिए दरवाज़े मत बन्द करना, दूसरे जनगण पर भरोसा करना, पार्टी पर भरोसा करना और विश्वविद्यालय में पार्टी-सदस्यों के दृष्टिकोणों पर ध्यान देना।"

लिऊ यी-फाङ की सलाह अब भी ताओ-चिङ के कानों में गूँज रही थी, क्योंकि इसे उसने अपने क्रियाकलापों का आधार बना लिया था। एक सावधानीपूर्वक किये गये आत्मनिरीक्षण ने उसे विश्वास दिलाया कि वह इन निर्देशों से कभी विचलित नहीं हुई थी। इसके बावजूद वह अपने काम के गतिरोध से किंकर्तव्यविमूढ़ बनी हुई थी। वह लिऊ यी-फाङ या च्याङ हुआ को एक विस्तृत रिपोर्ट देना चाह रही थी, जिससे कि उनकी मदद से सारी कठिनाइयों को जल्दी से सुलझाया जा सके। लेकिन दोबारा सोचने पर उसने महसूस किया कि पार्टी के गोपनीय काम के नियमों के अनुसार, उसे उनके पास नहीं जाना चाहिए, क्योंकि कोई भी उनके सम्पर्क में नहीं आया था। कठिनाइयाँ उसके ऊपर लहराते काले बादलों की भाँति बोझिल होती जा रही थीं। कोढ़ में खाज यह थी कि अब नवम्बर आ गया था और मौसम सर्द होने लगा था। वह बेरोज़गार थी, आमदनी का कोई ज़रिया न था और अब सियाओ-येन से मदद की अपेक्षा भी नहीं कर सकती थी। जहाँ तक हो सकती थी, थोड़ा-थोड़ा खाना खाकर काम चलाने लगी। कभी-कभी वह दिन भर में कुछ पकाये हुए शकरकन्द ही खाकर रह जाती। "मैं क्या करूँ?" यह चिन्ता उसके चिन्तातुर मस्तिष्क पर गहरा जाती, जब वह ठिठुरनभरी सर्द रातों और अपने सपनों में एकाकी होती।

एक सुबह, उसने पेइपिङ विश्वविद्यालय के दो छात्रों से बातचीत की, जिनको वह जानती थी। नतीजा बहुत सन्तोषजनक नहीं निकला। दोपहर में वह अपनेआप को और न रोक सकी, और उसने तय किया कि जाकर लिऊ यी-फेङ से बात करेगी। वह उस गली के छोर की ओर झटपट चल पड़ी, जहाँ वह और वह सयानी महिला रह चुकी थीं और साथ-साथ काम कर चुकी थी। फिर वह द्वन्द्वरत भावनाओं के कशमकश में धीमे चलने लगी। "नहीं, मुझे उसके पास नहीं जाना चाहिए। क्या होगा अगर..." कैसे वह उस भूमिगत मुख्यालय पर पहुँचने का औचित्य सिद्ध कर

सकेगी, जिस पर दुश्मन द्वारा किसी भी समय छापा मारा जा सकता था? उसने पुन: अन्यत्र जाने के लिए अपना जी कड़ा किया, लेकिन अपने डेरे पर वापस लौटने के बजाय, वह पूर्वी चाङआन स्ट्रीट में चलते-चलते युङशान पार्क के सामने पहुँच गयी। गलियाँ तक़रीबन वीरान हो चुकी थी तथा पैदल चलने वलो थोड़े और यत्र-तत्र ही थे, कारण कि जाड़े का मौसम था। पार्टी से सम्पर्क स्थापित करने और वरिष्ठ पार्टी-सदस्यों से राय लेने की अपनी चिन्ता में ताओ-चिङ ने इस पर ग़ौर ही नहीं किया। बिना जाने ही, कि वह क्या कर रही थी, वह सुआन वू मेन की तरफ़ चल पड़ी, जिसके दक्षिण में च्याङ हुआ का कार्यालय – नया चिहली (होपेई प्रान्त का पुराना नाम) प्रान्तीय शिल्पसंघ था। इस समय तक, वह चुङ नान हाई पार्क पहुँच गयी थी, लेकिन उसने अपनेआप को संयत बनाये रखा था, और वह जानती थी कि वह च्याङ हुआ तक भी नहीं पहुँच सकती थी। अत: वह पार्क में प्रवेश कर गयी और झील के निर्जन किनारे पर इस आवेगमय इच्छा के साथ टहलने लगी कि उसकी संयोग से मुलाक़ात उससे या लिऊ यी-फाङ से हो जायेगी।

पार्क में ऊँचे राजमहल के भवन ख़ामोश थे, मानो सो रहे हो, आधी जमी झील की पतली बर्फ़ धूप में दमक रही थी एक सर्द हवा गिरी हुई पत्तियों को अपने वातचक्र में उड़ा रही थी, और वह शानदार पार्क नीरस और सुनसान था। टहलते-टहलते थककर ताओ-चिङ एक ऊँचे चीड़ से टिककर ठहर गयी। अचानक एक गोल चेहरे वाला ख़ूबसूरत नौजवान क़रीब आया, और एक आह्लादपूर्ण आश्चर्य से उसे घूरकर देखा। एक क्षण की हिचकिचाहट के बाद, वह उसके पास पहुँच गया और पूछा :

"तुम छोटी लिन तो नहीं हो?"

"सू निङ! क्या वाक़ई तुम हो?" अति प्रसन्न और आश्चर्यचकित होकर ताओ-चिङ ने अपना हाथ बढ़ा दिया। "तुमसे यहाँ अजीब मुलाक़ात हो गयी!"

"मैंने सोच लिया था कि तुम्हीं होगी, सू निङ ने कहा, "लेकिन इत्मीनान नहीं कर पाया था। तुम बहुत दुबली हो गयी हो ताओ-चिङ। क्या हो गया है तुमको?" उसके पौरुषयुक्त चेहरे की मुस्कान ने उसके आह्लाद और स्नेह को प्रकट कर दिया, जब उसने ताओ-चिङ का हाथ थाम लिया।

वह उस पल खिल उठी।

"मैंने तुमको देखा था, जब मैं झील के किनारे-किनारे टहल रही थी, लेकिन यह नहीं सोचा था कि तुम्हीं होगे। सबकुछ कैसा चल रहा है? तुम कब रिहा हुए? तुम्हारी माँ कैसी है?"

सू निङ ने उसके सवालों का तुरन्त उत्तर नहीं दिया, बल्कि उसे पगडण्डी के किनारे एक बेंच तक ले गया, जहाँ वे एक साथ बैठ गये। अपनी चमकभरी आँखों से, उत्सुकतापूर्वक उसे निहारते हुए सू निङ ने कहा :

"मैं महीनों से तुम्हारा समाचार पाने की कोशिश कर रहा हूँ ताओ-चिङ, लेकिन कोई नहीं मुझको बता सका कि तुम कहाँ हो। और इस तरह अचानक मिल जाना ज़रा सोचो तो, कितना अच्छा है।

लौह उपानह घिस जाते हैं फिर भी व्यर्थ खोजते रहते
अनजाने ही मिल जाते हैं जिनकी हम इच्छा करते।

"हम लोगों का पुराना ग्रुप पूरी तरह टूट चुका है, है न? कैसे अलग-अलग रास्ते हमने पकड़ लिये। कुछ मार डाले गये हैं या गिरफ़्तार हो चुके हैं, बाक़ी ग़द्दार बन गये हैं या संघर्ष छोड़ चुके हैं, कुछ तो अब भी ग़ायब हैं। तुम्हारा क्या हाल है? अब तुम क्या कर रहे हो? तुम भी तो गिरफ़्तार हुई थी न?"

"क्या तुम मेरी छानबीन करने से पहले मेरे सवालों का जवाब नहीं दे सकते? ताओ-चिङ मुस्कुरायी और अपना हाथ खींच लिया। "मैं एक वर्ष जेल में रहने के बाद जुलाई में बाहर आयी। तुम कब से बाहर हो?"

"सिर्फ़ एक माह से। मैं तो दो वर्ष से ज़्यादा भीतर रहा। क्या तुम जानती हो कि उन दो वर्षों ने मुझे क्या बना दिया ताओ-चिङ? उन्होंने मुझे इतना अधिक सिखा दिया कि उतना तो मैं बाहर रहकर नहीं सीख सकता था। दरअसल मुझे महासेनानायक च्याङ को मुझे फौलाद बनाने के लिए धन्यवाद देना चाहिए।" वह खिलखिलाकर हँसा, उसकी सजीव आँखें खुशी और विश्वास बिखेर रही थी। ताओ-चिङ ने महसूस किया कि वह वास्तव में बदल गया था – उसने याद किया कि अब वह पहले जैसा बेफ़िक्र, दुर्बल इच्छाशक्ति वाला लड़का नहीं था, और अब उसकी बग़ल में एक दृढ़ क्रान्तिकारी बैठा हुआ था।

ताओ-चिङ ने अपनी निजी अनुभवों का एक संक्षिप्त, सीधा-सादा लेखा-जोखा प्रस्तुत किया, जिससे वह क्रान्ति के एक हमदर्द से अधिक कुछ न लगी। फिर वह पूछ पड़ी, "तुम्हारी क्या योजनाएँ हैं?"

सू निङ ने एक क्षण सोचा और मुस्कुराया। "मैं उत्तरी शेन्सी जा रहा हूँ। मैंने सुना है कि लाल सेना अपने लांग मार्च के बाद वहाँ पहुँच चुकी है। चेयरमैन माओ त्से तुङ पहले से वहाँ पर हैं। तुमसे सच कहूँ ताओ-चिङ, मैं तुम्हें खोज रहा था कि तुमको अपने साथ चलने के लिए कहूँ। क्या तुम हमारी क्रान्ति के मक्का चलोगी?"

ताओ-चिङ का मन हुआ कि सहमति दे दे। वर्षों से वह चाह रही थी कि सशस्त्र संघर्ष में शामिल हो जाये, और अपने महान नेता का दर्शन करे। सू निङ के शब्दों ने उसके दिल में गहरे दबी इच्छा को आलोड़ित कर दिया। अगर वह चेयरमैन माओ त्से तुङ का दर्शन कर लेती, और लांग मार्च के वीर नायकों और लाल सेना के अदम्य सैनिकों से मुलाक़ात कर लेती, तो बहुत खुश होती। यह प्रत्याशा उसे और

भी उत्कण्ठित कर देती, जब वह अपनी वर्तमान स्थिति पर विचार करती।

"क्या ही चमत्कारी करतब है!" ताओ-चिङ ने शान्तिपूर्वक, लेकिन आवेशयुक्त अनुराग के साथ कहा। "लाल सेना को उन क्वोमिन्ताङ सशस्त्र सेनाओं की घेरेबन्दी, नाकेबन्दी और पीछा करने की कोशिश को नाकाम करना था, जिन्होंने इस पर, स्थल और नभ, दोनों से हमला किया था और फिर सफलतापूर्वक उत्तरी शेन्सी पहुँच जाने से पहले पच्चीस हज़ार ली का सफ़र तय करना था। इसने चेयरमैन माओ के कुशल नेतृत्व में इन संघर्षों में विजय हासिल कर ली। सू निङ क्या तुम वहाँ जल्दी ही जा रहे हो? तुम नहीं सोचते कि मैं बदल गयी हूँ, है न? नहीं तो तुम यह सब मुझको न कहते।" वह अपनी बात ख़त्म करते हुए मुस्कुरायी।

"निस्सन्देह, मैं तुम पर विश्वास करता हूँ। तुम बदल गयी हो, बेहतरी के लिए ही बदली हो, बदतरी के लिए नहीं। क्या तुम मुझ पर यक़ीन नहीं करती, ताओ-चिङ?"

उसने स्वीकृति में सिर हिलाया और कहा, "कुछ लोग उस क्रूर परीक्षण पर खरे नहीं उतर सके, लेकिन मैं जेल के तुम्हारे जीवन व्यवहार के बारे में कुछ-कुछ जानती हूँ। यही कारण है कि मैं तुमसे मिलकर खुश हूँ। तुम कहाँ जा रहे हो? मैं तुमको अलविदा कहना चाहूँगी।"

"तब तुम साथ नहीं चल रही?" सू निङ ने निराशा के भाव प्रकट किये। "क्यों नहीं? मैंने सोचा था कि तुम जाना चाहोगी। जहाँ तक मेरा सवाल है बस, अब मैं पेइपिङ में और नहीं टिक सकता। तुम जानती हो कि मेरी माँ किस तरह मेरी टाँग पीछे खींचती रहती है। तुम अपना मन बनाओ और हमारे साथ चलो ताओ-चिङ। यह तुम्हारे और हमारे मक़सद के लिए अच्छा रहेगा।"

ताओ-चिङ ने ख़ामोशी से अपना सिर लटका लिया, और अपना रूमाल मरोड़ने लगी। ऐसा लग रहा था, जैसे वह कड़े मानसिक संघर्ष से गुज़र रही है। उसने रात-दिन उत्तरी शेन्सी जाने का सपना देखा था। उसने अपनी मौजूदा समस्याओं के बारे में सोचा, वाङ चुङ के बन्दर जैसे चेहरे के बारे में सोचा, चाङ लियेन-जुई की घृणा भरी आँखों के बारे में सोचा, वाङ सियाओ-येन के बारे में सोचा, बिना नेता के काम करने की कठिनाइयों के बारे में सोचा और पेइपिङ विश्वविद्यालय की असन्तोषजनक स्थिति के बारे में सोचा। उसने निर्णय पर पहुँचने में अपनेआप को पूरी तरह असमर्थ महसूस किया।

"क्या तुम अपना मन नहीं बना सकती ताओ-चिङ?" सू निङ ने गम्भीर होकर पूछा। "उत्तर में जापानी आक्रमण का प्रतिरोध करने के लिए लांग मार्च और लाल सेना के आगमन के बाद से उत्तरी शेन्सी अत्यधिक महत्त्वपूर्ण हो गया था। वहाँ कैडरों को बेइन्तिहा ज़रूरत है। अगर तुम जाने का फ़ैसला करो, तो जो कोई भी कठिनाई आयेगी, मैं उसे दूर करने में तुम्हारी मदद करूँगा। क्या तुम हमारे साथ

चलने के लिए राज़ी हो।"

ताओ-चिङ ने अपना सिर उठाया। वह अपने विचारों में इतना खोयी हुई थी कि उसने उसकी चिन्ता पर ध्यान नहीं दिया। फिर वह एक निर्णय पर पहुँची, पहले से राहत महसूस की, और दृढ़तापूर्वक बोली :

"सू निङ, मुझे अफ़सोस है कि मैं नहीं जा सकती। मुझे पेइपिङ में काम करना है। लेकिन मैं आशा करती हूँ कि हम किसी दिन येनान में मिलेंगे।"

सू निङ ने ज़ोर नहीं दिया। यह तो स्पष्ट ही था कि ताओ-चिङ पिछले दो वर्षों के दौरान काफ़ी बदल चुकी थी। बेशक, वह अब भी अपनी रौनक और अपनी स्नेहिल नज़र बरकरार रखे हुए थी, लेकिन उसका दृढ़ क़दम, उसका शान्त स्वर, उसकी आँखों में झलक रही चरित्र की दृढ़ता ने उसे बता दिया कि वह अपनी [illegible]खड़मिज़ाजी और उतावलेपन को छोड़ चुकी थी। वह अब उसे अपनी शिष्या नहीं समझ सकता, या उसे सामान्य सिद्धान्तों का लेक्चर नहीं पिला सकता था, बल्कि उसे बराबरी का सम्मान देना होगा। वह एक क्षण तक विचारमग्न होकर देखता रहा, फिर उसका दिमाग़ साफ़ हो गया और वह बोला, "ठीक है, ताओ-चिङ अभी तुम पेइपिङ में ही रहो। हम लोग क़रीब दस दिनों में कूच करेंगे। मैं आगे उस समय का इन्तज़ार करूँगा, जब हम फिर येनान में मिलेंगे।"

एक काले बूटों वाला पुलिसमैन भारी बूटों के साथ अकड़ती चाल से बजरी के रास्ते पर चलता हुआ उनकी ओर आ रहा था। ताओ-चिङ ने सू निङ का हाथ लपककर पकड़ लिया और उसकी ओर मुग्धकारी ढंग से मुस्कुरायी। उसने संकेत समझा और उठ खड़ा हो गया। बाँहों में बाँहें डाले वे पुलिसमैन की तरफ़ मटरगश्ती करते चल पड़े।

वे बिना कुछ बोले अगल-बग़ल होकर तब तक चलते रहे, जब तक कि वे [illegible]करी तक नहीं पहुँच गये, उसके बाद, सू निङ रुक गया और ताओ-चिङ की [illegible] छोड़ दीं।

"आओ बैठें और बातें करें। तुम भी बहुत व्यस्त नहीं हो, है न?"

ताओ-चिङ ने अपना सिर हिलाया और वे एक-दूसरे की ओर मुख़ातिब होकर बैठ गये। कुछ दूर बाद सू निङ बोला, "ताओ-चिङ, तुमने एक बार अपनेआप को [illegible] छोटी बहन माना था। मैं दूर जा रहा हूँ, लेकिन वस्तुत: मैं अपनी माँ को नहीं [illegible] सकता – मैं उसकी कोई मदद भी तो नहीं कर सकता। क्या तुम मेरी सचमुच [illegible] छोटी बहन की भाँति, उस पर नज़र रखोगी? तुम उसे खुश करके शंघाई जाने के लिए मनाओ, जहाँ वह मुझे भेजने की कोशिश कर रही थी। एक बार जब मैं [illegible] चला जाऊँगा, तो वह शायद जाना नहीं चाहेगी, लेकिन अकेलापन उसके [illegible] बड़ा कठिन बीतेगा।" सू निङ धीमे बोल रहा था, और अपना सिर लटका [illegible] था। यद्यपि उसने क्रान्ति के लिए अपना सबकुछ न्योछावर कर देने का मन

बना लिया था और वह एक से अधिक बार जाँचा-परखा भी जा चुका था, फिर भी जब उसे अपनी बूढ़ी माँ को छोड़ने की नौबत आती -- शायद हमेशा के लिए ही – तो उसकी माँ, जो अपनी सारी आस उस पर लगाये हुए थी, दुखी महसूस किये बिना न रहती।

सू निङ अक्टूबर 1935 में "प्रथम मॉडल जेल" से रिहा किया गया था। जब उसकी माँ उसे घर ले गयी, तो उसे ऐसा लगा था जैसे वह उसे पहली बार देख रही हो। वह बारी-बारी से हँसती और चीख़ती हुई, उसको आलिंगन में लेकर बुदबुदाने लगी थी, "बदमाश लड़के, आख़िर मैंने तुमको घर वापस ला ही दिया। नटखट लड़के, अब से आगे तुम्हें सऊर से रहना होगा।" सू निङ मुस्कुरा दिया था, और अपनी माँ के चेहरे की गहरी लकीरों और उसकी कनपटी पर सफ़ेद हो आये बालों पर नज़र डालते हुए टिप्पणी की थी, "माँ, तुम काफ़ी बूढ़ी हो चुकी हो।"

बूढ़ी महिला ने अपने बेटे के चेहरे पर नज़र डाली थी जो अब बहुत दुबला हो गया था, और अपने आँसू पोंछते हुए जवाब दिया था, "यह सब तेरे कारण हुआ है, मेरे प्यारे। अब फिर तुम कभी मुझे छोड़कर नहीं जाओगे।" उसके बाद एक मुस्कुराहट के साथ उसकी माँ ने उसे बताया था कि उसके चाचा ने उसके लिए शंघाई बैंक में एक अच्छी तनख़्वाह वाली नौकरी ढूँढ़ दी थी, जिससे दोनों ही एक साथ बिल्कुल मज़े से जी सकते थे।

सू निङ हँस दिया था, परन्तु कोई जवाब नहीं दिया था। विषय बदलने की ख़ातिर, उसने कहा था, "माँ, उन्होंने मुझे बताया कि तुमने मेरी रिहाई के लिए हमारे प्रान्तीय अधीक्षक हू मेङ-एन से उसके प्रभाव का इस्तेमाल करने की याचना की थी – तुमने उसके पास उपहार भेजे थे, क्या नहीं किया था ऐसा? अब तुम्हें उसके पास जाना चाहिए और उसका शुक्रिया अदा करना चाहिए कि मैं रिहा हो गया हूँ।"

उसकी माँ ने उसे घूरकर देखा था, मानो वही हू मेङ-एन हो, और तिरस्कारपूर्वक थूक दिया था। "उसकी बात मत करो। वह एक ऐसा आदमी है जिसका दिल तो भेड़िये का है, जबकि हिम्मत लोमड़ी की।" फिर नरम पड़कर वह आगे बोली थी, "चलो शंघाई चलें बेटे। जो हुआ सो हुआ भगवान बुद्ध कृपा करें। उस पर मत सोचो, जो बीत चुका। मैं रात-दिन सबकुछ यही तो मनाती रहती हूँ कि मेरे जो कुछ थोड़े वर्ष बचे हैं, उन्हें शान्ति से जी लूँ।"

इसको नज़रअन्दाज़ करके वह नौजवान भभक उठा था, "मैं शंघाई नहीं जाने वाला। माँ, मुझे यही पेइपिङ में रहकर काम करना है।" जैसे ही उसने यह कहा था, वह मूर्छित हो गयी थी।

इसे याद करते हुए सू निङ वहाँ ख़ामोश बैठा रहा। उस घटना के बाद यद्यपि उसने उत्तरी शेन्सी जाने का अपना मन बना लिया था, फिर भी उसने अपनी माँ से वादा किया था कि वह उसके साथ शंघाई जायेगा।

"ताओ-चिङ," वह पुन: पहले से और गम्भीर होकर कहने लगा। "तुम मुझसे पहले दो बा जेल में मिलने गयी, उसके बाद उन्होंने तुमको एक अलग जेल में डाल दिया, और हमारा एक-दूसरे से सम्पर्क टूट गया। लेकिन उस समय के बाद से मुझे तुम जैसी छोटी बहन को पाकर बड़ी खुशी महसूस होती थी। क्या तुम जानती हो, उन दो मुलाक़ातों के बाद से ही मेरी तुम्हारे प्रति धारणा पूरी तरह बदल गयी? मैं अक्सर तुम्हारे बारे में सोचता और चिन्तित रहता था। जैसे ही मैं बाहर आया, मैंने तुम्हारी हर जगह तलाश की। आख़िरकार हम फिर एक साथ हो ही गये।" वह भावुक होकर बोल रहा था। उसका ख़ूबसूरत चेहरा, हालाँकि अब पहले से दुबला हो गया था, फिर भी यौवन के ओज से परिपूर्ण था।

ताओ-चिङ ने उसकी बातें तन्मय होकर सुनी, और फिर मृदुता से बोली :

"चिन्ता मत करो। जब तक मैं पेइपिङ में हूँ, तुम्हारी माँ के लिए कुछ भी कसर उठा नहीं रखूँगी। मैं पूरे हृदय से उसके प्रति दयार्द्र हूँ।"

सू निङ ने उसकी सजीव, सुस्थिरतर आँखों में गहरी कृतज्ञता से देखा, और अचानक पूछ पड़ा :

"ताओ-चिङ क्या तुम शादीशुदा हो?"

"नहीं," उसने स्पष्टता से उत्तर दिया।

"तब हमारे साथ क्यों नहीं चलती? कृपया चलो न।"

डूबता हुआ सूरज घास और चट्टानों पर चमक रहा था। ताओ चिङ उठ खड़ी हुई और अपने चारों ओर देखा। पार्क अब लगभग ख़ाली हो चुका था। उसने एक फीकी मुस्कान के साथ अपना सिर घुमाया।

"जाने का समय हो गया है। आओ हम चलते हुए बातें करें, क्यों?"

जैसे ही वे बाहर होने के लिए चले, वह बोली :

"सू निङ, तुम मुझे अपने उत्तरी शेन्सी ले जाना चाहते हो। दरअसल, बात यह है कि वहाँ कुछ भी ऐसा नहीं है जिसको मैं बेहतर समझूँ। वैसे मैं अक्सर वहाँ जाने का सपना देखती रहती थी, लेकिन निश्चय ही मुझे इस आवेग को छूट नहीं देनी चाहिए। तुम अच्छी तरह जानते हो कि उत्तरी चीन की स्थिति कितनी तनावपूर्ण हो चुकी है – जो कुछ उत्तर पूर्व में हो चुका है, उसके फिर होने का ख़तरा मँडरा रहा है, और पेइपिङ ही सबसे पहले चपेट में आयेगा। यही कारण है कि मैं नहीं जा सकती।" उसने लगभग क्षमाप्रार्थी भाव से सू निङ की ओर देखा, और वे विषण्ण ख़ामोशी में चलते गये।

जब ताओ-चिङ अपने डेरे पर वापस लौटी, तो अँधेरा हो चुका था। उसने दरवाज़ा खोला, अन्दर प्रवेश किया, और पैराफ़िन लैम्प उठाया, जिसकी रोशनी हल्की, उदास छाया दीवार पर पड़ने लगी। उसे मन हुआ कि लेट जाये और आराम करे, लेकिन उसका बिना गर्म किया हुआ कमरा बेहद सर्द था, ख़ासतौर से

उस हालत में जबकि वह सिर्फ़ एक बुना हुआ जैकेट पहने हुए थी और सारा दिन कुछ नहीं खाया था। पड़ोसी के यहाँ मुलाक़ात करने जाने के बहाने, वह मकानमालकिन के कमरे में गरमाहट लेने के लिए गयी, और उबलते पानी का एक पात्र लेकर वापस लौट आयी। दो कप पी लेने के बाद उसे कुछ बेहतर महसूस हुआ।

यह उसके रोज़मर्रा की पढ़ाई की घड़ी थी, और वह एक किताब लेकर डेस्क के पास बैठ गयी, लेकिन अपना चित्त एकाग्र न कर सकी, और वही बुझी-बुझी सी, बुरी तरह क्षुधातुर बैठी रही। उसने लिऊ यी-फेङ या च्याङ हुआ से कुछ पैसे पा लेने की उम्मीद की थी, लेकिन दोनों में से कोई नहीं दिखायी दिया था। और वह मदद के लिए सू निङ से कहने में अपने को समर्थ न महसूस कर सकी थी। उसने अपनी जेबें टटोल डालीं, लेकिन एक कौड़ी न मिली। फिर गिरवी रखने की दूकान पर? लेकिन गिरवी रखने को था क्या? उसके गद्देदार सूती गाऊन तो बहुत पहले ही गिरवी रखे जा चुके थे। जो कुछ उसके पास बचा था, उसमें एक बुना हुआ जैकेट और सूती गाऊन ही तो था। ख़ाली कमरे में चारों तरफ़ नज़र दौड़ाते हुए उसने एक तड़पभरी मुस्कान के साथ अपनेआप से कहा, "चार नंगी दीवारों के सिवाय कुछ भी नहीं।" एक हाथ अपने पेट पर दाबकर उसने अपना सिर डेस्क पर टिका दिया, और सू निङ की प्रखर मुस्कान को अपनी कल्पना में देखने लगी। "हमारे साथ चलो। अगर कोई कठिनाई होगी, तो मैं तुम्हारी मदद करूँगा।" उसने मुस्कुराकर अपना सिर हिला दिया, और एक खपच्चीदार टोकरी खोली, जो उसकी चारपाई की बग़ल में रखी हुई थी।

टोकरी लगभग ख़ाली थी। इसमें कुछ पुरानी पत्रिकाएँ और फटे-पुराने मोजे रखे हुए थे, उनमें से कुछ भी गिरवी रखा या बेचा नहीं जा सकता था। एक कोने में एक छोटा-सा पैकेट, एक चटख गुलाबी जार्जट के रूमाल में एहतियात के साथ लपेटकर रखा हुआ था। उस पर नज़र पड़ते ही उसका दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा, और वह उसे खोलने और उस कार्डिगन को बाहर निकालने से अपनेआप को न रोक सकी, जिसे लिन हुङ ने अपनी अन्तिम घड़ी में उसे दिया था।

ताओ-चिङ इस बहुमूल्य उपहार को पूरे सालभर पहन चुकी थी, जब वह जेल में थी, कारण कि उसे डर लगा रहता था कि यह खो जायेगा या वार्डरों में से किसी के द्वारा झटक लिया जायेगा। जैसे ही वह रिहा हुई थी, उसने इसे उतार दिया था, और यह बरबाद न हो, इस एहतियात के नाते उसने इसे एक ख़ूबसूरत रूमाल में एहतियात से लपेट दिया था, और अपनी टोकरी में सबसे नीचे रख दिया था। चाहे मौसम कितना भी सर्द क्यों न हो, चाहे उसके पास पैसे की कितनी भी किल्लत क्यों न हो, उसे इस ख़ज़ाने को नहीं ही छूना था।

अब इस देर रात में, ताओ-चिङ ने कार्डिगन को अपनी छाती से चिपटा लिया। उसकी आँखें ख़ून की मुहर लगे इस उपहार पर टिकी हुई थी।

क़ैदी ओ मुद्दत के क़ैदी,
हम क़ैदी नहीं हैं बन्दी...

एक मन्द स्वर में उसने यह गीत गाया, जिसे लिन हुङ ने सिखाया था।

एक सर्द बयार काग़ज़-लगी-खिड़की को थपेड़ रही थी। उसके लैम्प की दुर्बल लौ चारों नंगी दीवारों पर एक फीकी रोशनी बिखेर रही थी। उसके हृदय में खुशी, पारस्परिक समझदारी और दोस्ती की भावनाओं के साथ, दुख और रोष घुले-मिले थे। लिन हुङ के ख़याल ने उसे लू चिआ-चुआन की याद दिला दी। इस तरह बिना सोये भूखे और सर्दी से ठिठुरते उसने ये पंक्तियाँ लिखीं :

बहादुर योद्धा,
तुम कभी नहीं मरते,
तुम्हारे साफ़ प्रेरणादायी स्वर
पाँवों तक रौंदी इस समूची धरती पर झंकृत होते हैं।
बरसाती फूलवाली पहाड़ी पर दागी गयी गोली ने
तुमको विनष्ट नहीं किया,
बल्कि, वे तो अपनी ही क़ब्र खोद रहे हैं।
ग्रीष्म की रात, साफ़ सुगन्धित रात,
तुम्हारी खिड़की से बाहर अनाम बनफूल खिले हैं
एक चमकीला चाँद तुम्हारे शान्त सोते चेहरे पर चमकता है
कोकिल तुम्हारी खिड़की के सामने कूक रहा है
मन्द और मधुर स्वर में वह गा रहा है।
चिर विश्रान्त, वीरगति प्राप्त योद्धा।
जिस लड़की को तुम प्यार करते हो, उसने उठा लिये हैं
वे हथियार
जिनको तुमने रख छोड़ा था,
तुमने उसके हृदय में प्रतिशोध की आग जला दी है
वह अपने आँसू पोंछ चुकी है और आगे मार्च कर रही है,
ताकि प्रेमी फिर बेरहमी से कभी बिछुड़ न पाये,
ताकि बच्चे अपनी माँ-बाप की बाँहों में लेट सकें,
और तुम्हारी तरुणाई के सारे सपने साकार हो सकें!
बहादुर योद्धा,
उसने उठा लिये हैं वे हथियार जिनको तुमने रख छोड़ा था।

——:o:——

अध्याय 32

ताओ-चिङ की आदत थी कि वह हर सुबह, सबसे पहले, दो घण्टों तक, मार्क्सवादी क्लासिकीय साहित्य का अध्ययन करती थी। वह 'वामपन्थी कम्युनिज़्म, एक बचकाना मर्ज़' पढ़ रही थी, तभी बाहर अहाते में से कोई पुकार उठा, "क्या कोई कुमारी लू यहाँ रहती हैं?"

वह झपटती हुई अहाते में चली गयी। यह च्याङ हुआ था, और जैसे ही उन्होंने कसकर हाथ मिलाये, उसका हृदय उछलने लगा।

च्याङ हुआ एक जीर्ण-शीर्ण ओवरकोट पहने हुआ था, उसके मौसम की मार सहे सँवलाये चेहरे पर लकीरें पड़ गयी थीं। और उसने कुछ दिनों से दाढ़ी भी नहीं बनायी थी। उसके कमरे के बीच में खड़े होकर और गर्माहट के लिए अपने हाथों को रगड़ते हुए उसने खोजभरी नज़र से ताओ-चिङ को देखा, फिर उन सर्द, नंगी दीवारों को देखा, और हँसा।

"आजकल तुम एक कठिन समय बिता रही हो, है न?" उसने पूछा।

ताओ-चिङ ने उसकी परिचित भाव-भंगिमा को एक भोली, असहाय मुस्कान के साथ ग़ौर से देखा।

"और कोई बात नहीं है, लेकिन जब मुझे नेतृत्व देने के लिए कोई नहीं आता, तो मुझे परेशानी होती है।"

एक शरारतभरी नज़र से देखते हुए उसने कहा, "ख़ैर, सबकुछ कैसे चल रहा है? चिन्ता के मारे रो रही थी, क्या यह मानूँ?" उसके दृष्टिकोण ने ताओ-चिङ को चौंका दिया, ताओ-चिङ ने उसे मज़ाक़ करते हुए पहले कभी नहीं पाया था। उसके मन पर तो च्याङ हुआ की अत्यधिक गम्भीर और शान्त व्यक्तित्व के रूप में ही छाप पड़ी थी।

उसने उसे सबकुछ बता दिया, जो उसके विश्वविद्यालय आने के समय से घटित हुआ था और निष्कर्ष रूप में यह कहा, "यद्यपि मैं यहाँ एक माह से कुछ ही अधिक समय से रह रही हूँ, फिर भी मुझे इतनी बड़ी-बड़ी कठिनाइयाँ और विफलताएँ झेलनी पड़ी हैं जितनी की मैंने अपने जीवन में कभी नहीं झेली थी। मैंने तो इसका हिसाब ही लगाना छोड़ दिया है कि कितनी बार त्रॉत्स्कीपन्थियों ने मेरे मुँह पर तमाचे लगाये हैं। जब मैं जेल में थी उस समय को छोड़कर, बचपन से लेकर अब तक मैंने उस तरह-तरह के तमाचे नहीं खाये थे। फिर भी मैं इसे झेल सकती हूँ, परन्तु दो चीज़ें तो बरदाश्त के बाहर हैं। पहली तो यह कि किस तरह वाङ सियाओ-येन, वह मेरी सबसे अच्छी दोस्त हुआ करती थी, तुम जानते हो – मेरे ख़िलाफ़ हो गयी है, और यहाँ पर मेरी कुछ मुसीबतों का कारण बन गयी है, दूसरी बात यह है कि मैं यहाँ अधिक उपयोगी नहीं बन पायी हूँ। हमने अपने काम में कोई

प्रगति नहीं की है। मैंने पार्टी की हेठी कर दी है।" उसने अपना सिर उठाया और अपनी आँखों में उमड़ आये आँसू पोंछ डाले। "मैं बहुत चिन्तित रही हूँ क्योंकि कोई भी मेरे सम्पर्क में नहीं आया।"

कमरा इतना सर्द था कि च्याङ हुआ अपने हाथों को गर्म रखने के लिए अब भी उन्हें रगड़ रहा था। जब ताओ-चिङ बोलना ख़त्म कर चुकी, तो वह आगे-पीछे चहलक़दमी करने लगा।

"परेशान मत हो, कॉमरेड! अब तो कोई आ गया है।"

"तो तुम मेरे सम्पर्की हो। मैं बहुत खुश हूँ।" वह ख़ुशी के मारे हँस पड़ी।

"स्थिति काफ़ी बदल गयी है ताओ-चिङ," च्याङ हुआ ने बिना किसी हड़बड़ी के कहा। "सब बहुत गड्डमड्ड है। यही कारण है कि मैं और पहले न आ सका। क्या तुम जानती हो कि अक्टूबर के अन्त में जापानियों ने पेइपिङ और तिएनत्सिन के प्रशासकों पर दबाव डाला कि वे जापान-विरोधी गतिविधियों के लिए सन्देहास्पद सभी व्यक्तियों को फिर धरपकड़ करे? लेकिन इस तस्वीर का एक उज्ज्वल पक्ष भी है।" उसने अपना स्वर धीमा कर लिया, और उसकी ओर गम्भीर [illegible] देखा। "अक्टूबर में लाल सेना ने लांग मार्च पूरा कर लिया है, और लिऊ [illegible] तान की मातहत सशस्त्र इकाइयों के सैनिक बलों के साथ संयुक्त होने के [illegible] उत्तर शेन्सी पहुँच गयी है। चीनी क्रान्ति ने एक भारी अग्रवर्ती क़दम रखा है। [illegible] मार्च जैसी चीज़ अब तक कभी नहीं रही है और मैं सोचता हूँ कि हमारे [illegible] में तो नहीं ही, और न ही दुनिया के इतिहास में रही है। समूची क्रान्ति पर [illegible] अद्भुत प्रभाव पड़े बिना नहीं रह सकता। दुश्मन हमको हरा देने और कुचल [illegible] की डींगें हाँकता है, जबकि सच्चाई यह है कि लांग मार्च क्रान्ति का एक [illegible] हुआ ज्वार है, हमारी एक ताज़ा जीत है। इस तस्वीर के दूसरे पक्ष में अँधेरा [illegible] जापानी अपने ख़ूनी हाथ उत्तरी चीन में गहरे और गहरे धँसाते जा रहे हैं। इस [illegible] की सियाङ हो घटना एक उदाहरण है। पेइपिङ-लियाओनिङ और [illegible] पुकाओ रेलमार्गों के किनारे तक जापानियों की कवायद के दौरान [illegible] के एक समूह ने सियाङ हो की प्रमण्डलीय सीट पर सशस्त्र क़ब्ज़ा कर [illegible], और जापानियों ने ऐलान कर दिया है कि ये 'किसान' 'स्वायत्तता' चाहते [illegible] एक शुरुआत है 'स्वायत्तता' के मुहिमों के लिए तीव्रगामी सिलसिले की – [illegible] प्रान्तों की स्वायत्ता, होपेई के लिए कम्युनिस्ट विरोधी स्वायत्तता, तथा [illegible] चाहार की 'स्वायत्तता' की माँग अब किसी भी क्षण उठ सकती है। चीनी [illegible] अधीन हर जगह 'स्वायत्तता' स्थापित करने की आड़ में जापानी फ़ौजी [illegible] पेइपिङ और तिएनत्सिन समेत उत्तरी चीन में उमड़ती आ रही हैं। स्थिति [illegible] हो चुकी है ताओ-चिङ।" उसने अपनी भौंहें सिकोड़ीं और स्थिति की [illegible] तल्लीन होकर ताओ-चिङ की ओर घूरकर देखा। ताओ-चिङ जो चाव

से सुनती रही थी, उसकी भावनाओं से जुड़ गयी। चीन को बचाना उनका सर्वोपरि कर्त्तव्य था। लेकिन कैसे? कम्युनिस्ट कैसे उत्पीड़न के घने बादलों को बिखेरने के लिए चीनी जनता का नेतृत्व करें और लोगों को राष्ट्रीय मुक्ति के झण्डे के नीचे गोलबन्द करें?

ताओ-चिङ ने छात्रों के बारे में सोचा। कई तो अपने बीए और एमए की डिग्रियों का ही सपना देख रहे थे या सिर्फ़ अपने व्यक्तिगत आराम और स्वार्थों से ही मतलब रखते थे। इसकी कल्पना में हुआई-यिङ की प्रमुदित लघु मुस्कान और सियाओ-येन की चकित-विस्मित खोयी हुई झलक सरसराती हुई कौंध गयी। वह अपने बिस्तर पर बैठ गयी और गहरी साँस ली।

"मुझे बताओ, बड़े भाई च्याङ," उसने उदास मन से पूछा, "तब क्या मतलब रखता है बुद्धिजीवियों के बीच काम करना, विश्वविद्यालयों और हाईस्कूलों के छात्रों के बीच काम करना? जब सशस्त्र संघर्ष में विजय हासिल कर ली जायेगी, जब मज़दूर और किसान क्रान्ति सम्पन्न कर लेंगे, तब शिक्षित लोग तो स्वाभाविक तौर पर पंक्तिबद्ध हो जायेंगे और क्रान्ति में शामिल हो जायेंगे। अभी से उनके साथ क्यों सिर खपाया जाये?" च्याङ हुआ की आँखों में दिल्लगी भरी झलक देखकर उसे रुक जाना पड़ा। वह कुछ नाराज़-सी हुई और अपना सिर अपने हाथों पर टिका लिया।

"तुमको क्या हो गया है ताओ-चिङ?" वह फटकारभरे स्वर में चिल्लाया। "बेशक, सशस्त्र संघर्ष चीनी क्रान्ति की बुनियादी चीज़ है, और यही कारण है कि हम सभी लाल सेना के संघर्षों और विजयों के बारे में इतने चिन्तित हैं। और बेशक मज़दूर और किसान क्रान्तिकारी संघर्ष व चीनी क्रान्ति के मुख्य स्तम्भ और उसकी मुख्य शक्ति हैं, लेकिन क्या इसका मतलब यह है कि बुद्धिजीवियों के बीच हमारा काम महत्त्वहीन या निरर्थक है? इसे ऐसे देखना एक बेढ़ब तरीक़ा है! साम्राज्यवाद और साम्यवाद के ख़िलाफ़ 4 मई वाला आन्दोलन किसने शुरू किया था, जिसने क्रान्ति को इतना अधिक आगे बढ़ा दिया? क्या वे शिक्षित लोग ही नहीं थे?" वह मुस्कुराया, मेज़ पर से एक कप ठण्डा पानी लिया और गटगट पी गया। फिर उसकी ओर मुख़ातिब होकर, अब उसने पहले से मन्द स्वर में अपनी बात आगे बढ़ायी, "तुम्हारा काम केवल अर्थपूर्ण ही नहीं है ताओ-चिङ, बल्कि यह बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। यह उतना ही महत्त्वपूर्ण है जितना कि मज़दूरों और किसानों के बीच काम करना। किसी दिन तुमको मज़दूरों और किसानों के बीच जाने का अवसर मिल सकता है, लेकिन फ़िलहाल पस्तहिम्मत न हो – बस, तुम सबसे अच्छा जो कुछ यहाँ कर सकती हो, करो।"

ताओ-चिङ हँसी। च्याङ हुआ ने उस पर पहले से भी अधिक विनोदपूर्ण ढंग से प्रहार किया। "कौन पस्तहिम्मत हो रहा है?" ताओ-चिङ ने पूछा। "निस्सन्देह मैं

डटी रहूँगी। लेकिन हम पेइपिङ विश्वविद्यालय में कोई प्रगति नहीं कर पा रहे हैं। छात्र तो बस अपनी किताबों में धँसे रहते हैं, और विद्वान और प्रतिष्ठित बनने का ही सपना देखते रहते हैं।"

च्याङ हुआ बैठ गया, और धीरे से कहा :

"कोई ताज्जुब नहीं कि तुम इतनी चिन्तित हो – तुमने समग्र का सिर्फ़ एक छोटा भाग ही देखा है। कुल मिलाकर अभी तुम पेइपिङ विश्वविद्यालय की असलियत को देखने या बहुसंख्यक छात्रों को समझने में नाकाम रही हो। वाङ सियाओ-येन या ली हुआई-यिङ सरीखे लोगों पर ध्यान केन्द्रित करने से कोई फ़ायदा नहीं है। शीघ्रता करो और जनसाधारण से निकटता बनाओ।"

"क्यों..।" ताओ-चिङ ने विस्मय से उसकी ओर घूरकर देखा। "तुम कैसे कह सकते हो कि मैं उनके निकट सम्पर्क में नहीं हूँ, बड़े भाई च्याङ, जबकि मैं रोज़ाना छात्रों से बातचीत करती और उनसे वाकि़फ़ होती जा रही हूँ।"

च्याङ हुआ हँस दिया, और बात का रुख बदल दिया।

"तुमको मालूम है कि मैं छात्र फ़ेडरेशन में काम कर रहा हूँ?"

"छात्र फ़ेडरेशन में?" वह विस्मय में दोहरा गयी।

"हाँ, वे छात्र जो अठारह सितम्बर वाली घटना और नानकिङ में हमारे प्रदर्शन के समय से चार वर्षों तक ख़ामोश रहे हैं, अब उठ खड़े हो रहे हैं, और अधिकाधिक सक्रिय होते जा रहे हैं। प्रसंगवश पेइपिङ विश्वविद्यालय के कितने छात्र पेइपिङ और तिएनत्सिन के दस स्कूलों के छात्र संघों द्वारा जारी किये गये संयुक्त घोषणापत्र को पढ़ चुके हैं?"

"मेरा ख़याल है, अच्छी ख़ासी संख्या में!" ताओ-चिङ ने जवाब दिया। "बेशक, कुछ छात्र कभी बुलेटिन बोर्ड के पास नहीं फटकते। पर तुम छात्र वाला काम फिर क्यों कर रहे हो? क्या तुम यहाँ हमारे काम का नेतृत्व करने जा रहे हो?"

"मैं ऐसा नहीं सोचता। तुम्हें इसका दायित्व स्वयं सँभालना होगा – हमारी संख्या हर जगह पहुँचने के लिए काफ़ी नहीं है। क्या विश्वविद्यालय में कई जन-संगठन नहीं हैं, ताओ-चिङ? अध्ययन समिति, एस्पैरैण्टो क्लब, नया लातिनीकृत लिखित भाषा संगठन, और जनता का सशस्त्र प्रतिरक्षा संगठन, सभी सक्रिय हैं। तुम अपने संकीर्ण दायरों से बाहर निकलो और इन समूहों की गतिविधियों में भाग लो। इससे तुमको तुम्हारे काम में विश्वास और शक्ति मिलेगी, और तुम जान जाओगी कि होउ-जुई और अन्य को कैसे विश्वास में लिया जाये। व्यस्त हो जाओ। हमें पेइपिङ विश्वविद्यालय के छात्र-संघ को अपने नियन्त्रण में लेना ही होगा, और उसे छात्र फ़ेडरेशन से सम्बद्ध होने के लिए प्रेरित करना ही होगा। चीन को बचाने के अभियान का नेतृत्व करने की तब एक बेहतर स्थिति बनेगी।"

"ताओ-चिङ उसकी बातें ध्यानपूर्वक सुनती रही, उसके शब्द उसके दिमाग़ में

घर करते गये। अपने स्वयं के बचकानेपन और अनाड़ीपन के अहसास ने उसे संकल्पबद्ध बबनाया कि वह और बढ़िया ढंग से काम करना सीखेगी। दिल में ताज़गी भरकर उसने च्याङ हुआ से पूछा, "वाङ सियाओ-येन के बारे में मुझे क्या करना चाहिए?"

च्याङ हुआ ने क्षणभर सोचा और सिर झुकाकर उत्तर दिया, "मेरे ख़याल से, हालात और तुम्हारी पिछली दोस्ती को ध्यान में रखते हुए, बेहतर होगा कि तुम उसे उपेक्षित करने के बजाय, उसे अपने पक्ष में क़ायल करने की कोशिश करो। बेशक यह ताई यू की वजह से एक लम्बा और जोखिमभरा काम होगा। होउ-जुई सही था, जब उसने कहा था कि वाङ सियाओ-येन केवल तभी हमारे पक्ष में आयेगी, जब प्रतिक्रियावादियों को बेनकाब कर दिया जाये।"

ताओ-चिङ हँसी और कहा, "बड़े भाई च्याङ, मैं तुमसे कितनी ईर्ष्या करती हूँ। तुम जानते हो कि छात्रों के बीच में, और उसके साथ ही साथ किसानों के बीच में, कैसे काम किया जाये। यह कोई आश्चर्यजनक नहीं है कि पार्टी ने तुमको छात्र फ़ेडरेशन में भेज दिया। मैं इसे लू चिआ-चुआन की बात की तुलना में, कहीं अधिक शिद्दत से महसूस करने लगी हूँ..." वह बोलते-बोलते गड़बड़ाहट में यकायक चुप हो गयी।

"मैं उसकी बराबरी कैसे कर सकता हूँ!" च्याङ हुआ ने चट जवाब देकर उसे चौंका दिया। "उसकी साहसिकता और निर्भीकता हमारे लिए एक देदीप्यमान उदाहरण है।"

ताओ-चिङ की उत्तेजित आँखों में उभरे सवाल को देखकर उसने आगे कहा, "तुम्हें पता है कि बड़े भाई लू ने पेइपिङ जेल में क्या संघर्ष चलाया था? मैंने इसे हाल ही में एक दोस्त से सुना और गहराई से प्रेरित हो उठा। उन दशाओं में उसका तक़रीबन अविश्वसनीय साहस, मेरे लिए एक भारी प्रेरणास्रोत है।" च्याङ हुआ पुनः आगे बोलने से पहले एक क्षण के लिए ख़यालों में खो गया, "जब दुश्मन को पता लगा कि वह भूख-हड़ताल का नेतृत्व कर रहा है, तो उसे यातना देकर उसकी दोनों टाँगें तोड़ दी गयीं।" च्याङ हुआ ने बताया कि क्या-क्या मानसिक यन्त्रणाएँ लू चिआ-चुआन ने झेली थीं, कैसे वह अपने को अपनी कोठरी में घसीटकर ले गया था, और कैसे अपने साथी क़ैदियों को चेतावनी देने के लिए दीवारों पर ठकठकाकर संकेत किया था।

जब उसने अपनी बात ख़त्म की, तो ताओ-चिङ ने उसे चकित दृष्टि से देखा, और अपना चेहरा छिपाते हुए, अपना सिर मेज़ पर टिका दिया। जब उसने फिर ऊपर नज़र उठाकर देखा तो उसकी मुखाभिव्यक्ति कठोर थी।

"बड़े भाई च्याङ, उस जैसे आदमी का विचार मुझे इस दुनिया को पहले से भी अधिक प्यार करने को प्रेरित करता है। मैं शर्मिन्दा हूँ कि मैं अब भी तमाम

गलत विचारों और स्वार्थपूर्ण हितों से डाँवाँडोल हो जाती हूँ। कुछ दिन पहले, जब हालात बुरे चल रहे थे, तो मैंने सू निङ के साथ उत्तरी शेन्सी चली जाना चाहा था। और आज फिर मैंने दिखा दिया है कि मेरे अन्दर कितने सारे ग़लत दृष्टिकोण हैं।"

उसका जवाब देने के बजाय च्याङ हुआ कमरे में इधर-उधर देखने लगा। ताओ-चिङ ने शर्माते हुए पूछा :

"तुम क्या तलाश रहे हो? पानी? मुझे दुख है कि मैं इतने दुर्दिन में हूँ कि अँगीठी जलाने का ख़र्च नहीं उठा सकती। मैं पका-पकाया नाश्ता ख़रीद लेती हूँ, और जब मुझे पानी की आवश्यकता होती है तो मकान मालकिन के कमरे में चली जाती हूँ। एक क्षण इन्तज़ार करो, मैं थोड़ा-सा ला देती हूँ।"

च्याङ हुआ ने उसे मना करते हुए अपने विशाल हाथ उठाये और कहा, "नहीं, मत जाओ। क्या तुम्हारे पास कोयला है? अगर हो, तो तुम अँगीठी जला सकती हो, तब तक मैं बाहर जाता हूँ और कुछ भाप में सेंकी रोलें और उनके साथ कुछ और चीज़ें लेकर आता हूँ। आओ हम साथ-साथ ही लंच लें, क्यों? हम लोग इतनी देर से बातचीत करते रहे हैं कि तक़रीबन बारह बज गये।"

"अद्‌भुत!" ताओ-चिङ ख़ुशी के मारे चिल्लायी। "यह कैसे हुआ कि आज तुम इतने ख़ाली हो? तुम कब तक ठहर सकते हो?"

च्याङ हुआ ने क्षणभर सोचा।

"मुझे आज दोपहर बाद चार बजे तक कोई काम नहीं है," उसने उत्तर दिया। "और तुम्हें?"

"मैं भी आज ज़्यादा व्यस्त नहीं हूँ। इन दिनों मैंने विश्वविद्यालय में जो कुछ सीखा है, वह यही है कि ख़ामोश रहूँ।"

"तब ठीक है। हाँ, मैं बाज़ार जा रहा हूँ। क्या तुम आग जला दोगी?" इसके साथ ही वह बाहर निकल गया।

जब वह गोश्त, सब्ज़ियाँ और रोलें लेकर लौटा, तब तक ताओ-चिङ आगे को भली प्रकार सुलगा चुकी थी, और अँगीठी को अन्दर कमरे में ले आयी थी। जब उसने पैकेटों को देखा तो आश्चर्य से पूछ पड़ी :

"तुम इतना अधिक क्यों ख़रीद लाये? क्या तुम इसे नव-वर्ष पर खाने के लिए छोड़ रहे हो?"

"नव वर्ष के लिए नहीं, बल्कि कुछ दिनों तक तुम्हारा काम चलाने के लिए। मत सोचना कि मैं देख नहीं सकता कि तुम खुद फाके करती रही हो।"

"ये पैकेट मुझे किसी चीज़ की याद दिला रहे हैं बड़े भाई च्याङ।" उसके दाँत मुस्कुराहट में दमक उठे।

"क्या है वह?"

"क्या तुम्हें याद है, जब तुम पहली बार मुझसे मिलने के लिए तिङगिया[illegible]

आये थे? जब मैंने चौकीदार को तुम्हारे लिए खाद्य-सामग्री ख़रीदने के लिए भेजा था, तो क्या तुमने मुझसे पूछा नहीं था कि मैं इतना क्यों ख़र्च कर रही थी? क्या तुम वही पुराना हिसाब चुकता कर रहे हो?"

च्याङ हुआ हँस पड़ा और ताओ-चिङ भी हँसने लगी। वह ठण्डा और नंगा छोटा कमरा गर्म और आनन्ददायक हो गया। ताओ-चिङ ने कुछ पानी उबाला और रोलें सेंकीं, जबकि च्याङ हुआ ने गोश्त और सब्ज़ियाँ काटीं, कमरे में ख़ुशनुमा माहौल छा गया। च्याङ हुआ के बड़े, कुशल हाथों को ग़ौर से देखते हुए ताओ-चिङ ने सोचा, "क्यों, कोई काम ऐसा नहीं है जिसे यह न कर सकता हो!"

हाँ, वह केवल भोजन तैयार करने में ही नहीं, बल्कि पकाने में भी कुशल था। जब सबकुछ तैयार हो गया, तो ताओ-चिङ ने मेज़ लगा दी, और वे दोनों बढ़िया गर्म-गर्म खाने का साथ-साथ मज़ा लेने के लिए अँगीठी की बग़ल में बैठ गये। च्याङ हुआ ने तश्तरियाँ साफ़ करने और कमरे को ठीक-ठाक करने में उसकी मदद की। अपनी गतिविधियों में चुस्त और दक्ष, वह काम में इतनी सन्तुष्टि पाता हुआ लगा कि ताओ-चिङ ने उसे मना नहीं किया। जल्द ही हरेक चीज़ ठीक-ठाक कर दी गयी। तब च्याङ हुआ को अपने धूल-सने हाथों के साथ खड़े और दायें-बायें देखते हुए कि और क्या करने की ज़रूरत थी, ताओ-चिङ ने मुस्कुराकर कहा :

"बड़े भाई च्याङ, मैं समझने लगी हूँ कि कितनी ख़ूबियाँ तुम्हारे चरित्र में भरी हुई हैं – तुम एक मज़दूर और एक बुद्धिजीवी दोनों हो।"

ताओ-चिङ की झील के पानी जैसी आँखों, उसके पीतवर्णी प्यारे मुखड़े और उसकी प्रखर उत्कण्ठा को ग़ौर से देखते हुए, च्याङ हुआ अचाकन अवाक हो गया। वह क्या कहे? वह तो लम्बे समय से इस स्नेहिल हृदयवाली लड़की पर अनुरक्त था। जैसे-जैसे वह उसे क़दम-ब-क़दम क्रान्ति की सहानुभूति में एक साधारण बुद्धिजीवी से एक कट्टर और विश्वसनीय बोल्शेविक में विकसित होते देखता गया, वैसे-वैसे उसके प्रति उसका प्यार गहरा होता गया। लेकिन इन सारे वर्षों में उसने इसे छिपाये रखा और टालता रहा। सिर्फ़ यदा-कदा जब वह विचलित हो उठता, तभी वह इसका कोई संकेत प्रदर्शित करता। वह और क्या कर सकता था? लेकिन वह तो अपना दिल उसके सहपाठी और घनिष्ठ कॉमरेड लू चिआ-चुआन को दे चुकी थी, जिसे वह प्यार करता था और आदर देता था, और बेशक उनकी बढ़िया जोड़ी रही होती। पहले तो उसने उम्मीद की थी कि एक बार जब लू चिआ-चुआन रिहा हो जायेगा, तो ताओ-चिङ के प्रति उसकी भावना उनकी ख़ुशी में योगदान देगी। फिर, उसे लू चिआ-चुआन की मृत्यु का पता चला, और ताओ-चिङ को लिखे गये उसके पत्र को पढ़ा। तब भी वह उसके प्रति अपने प्यार को ज़ाहिर न कर सका। वह जानता था कि वह किस तरह पीड़ा झेल रही थी, और उसने उसके प्रति एक गहरी संवेदना महसूस की। तभी से वह एक बड़े भाई की भाँति उसकी निगरानी

करता, और अपनी भावनाओं को क़ाबू में रखने के लिए जानबूझकर दूर ठहरा करता था। अब समय बीत चुका था और आज उसने महसूस किया था कि ताओ-चिङ महज़ एक कट्टर कम्युनिस्ट ही नहीं, बल्कि एक नाज़ुक औरत भी थी, जो प्यार की याचक थी। उसकी आँखों की झलक से उसने देख लिया कि वह निपट अकेली थी, लेकिन क्या च्याङ हुआ ने भी इन्तज़ार करके खुद को लम्बी यातना नहीं दी थी?

वह अतीत को याद करते हुए, चुपचाप अपने हाथ अँगीठी पर सेंकता रहा। तरुणाई का गर्म ख़ून उसकी शिराओं में दौड़ रहा था – वह अनिर्णय से पीड़ित था। अन्ततः उसने अपना सिर उठाया, एक खोजभरी नज़र उस पर डाली, फिर अपनी घड़ी देखी और एक शान्त स्वर में बोला :

"साढ़े तीन बज चुके। अब मेरे जाने का वक़्त हो गया है। मैं कल शाम को तुमसे एक बात कहना चाहूँगा। क्या तुम ख़ाली रहोगी?"

ताओ-चिङ भी खुद एक दिवास्वप्न से जाग पड़ी। मानो उसने भापकर कि वह क्या कहना चाहता था, उसने शान्ति से और आहिस्ता से कहा :

"हाँ, कल शाम को आओ। मैं तुम्हारे आने का इन्तज़ार करूँगी। यहाँ से तुम पहले जाओ और मैं भी किसी से मिलने बाहर जा रही हूँ।"

जब वे उस जीर्ण-शीर्ण फाटक पर जुदा हुए तो उनकी आँखें एक क्षण के लिए मिलीं। ताओ-चिङ ने एक मुस्कान के साथ कहा :

"सलाह के लिए तुम्हें धन्यवाद। मेरा मतलब है, मैं विश्वविद्यालय में बढ़िया काम करूँगी। दूसरी बात, क्या मैं वाङ सियाओ-येन को पत्र लिखूँ?"

च्याङ हुआ मुस्कुराया। "यह तुम्हारे ऊपर है। अच्छा, अब अलविदा।" वह दूसरी ओर मुड़ ही रही थी कि उसने उसे रोक दिया। उस ख़ामोश वीरान गली में एक नज़र डालते हुए, उसने अपने पास का सारा पैसा निकाल लिया, और उसकी ओर बढ़ा दिया।

"मैं तो लगभग भूल ही गया था। तुम्हारे पास पहनने के पर्याप्त कपड़े नहीं हैं। लो, जाओ और ख़रीद लो, तुम्हें अपनेआप को गर्म ज़रूर रखना चाहिए।"

उसका मन्द स्वर स्नेहिल, परन्तु सख़्त था। और ताओ-चिङ ने उसकी ओर देखते हुए चुपचाप उन पैसों को ले लिया।

——:o:——

अध्याय 33

सायंकाल बेला में, पछुआ हवा एक ख़ामोश गली में सनसना रही थी और गिरी हुई पत्तियों को अपने वातचक्र में फरफरा रही थी। चरचराहट के साथ एक लाल

लाखरोगन लगा फाटक खुला, तथा ताई यू हड़बड़ाये हुए सिर लटकाये, ठण्ड के मारे कन्धे कुबड़ाये, अपनी भूरी फैल्ट हैट थामे, बाहर निकला। वह कुछ ही क़दम चला होगा कि एक कर्कश स्वर ने उसे रुक जाने का आदेश दिया।

"वापस लौटो। वापस लौटो।" स्वर चीख़ पड़ा, "मेरा मामला अभी तुम्हारे साथ ख़त्म नहीं हुआ है। जल्दी क्या है?"

वह अवज्ञा करने की हिम्मत न करते हुए अनिच्छापूर्वक रुक गया। जैसे ही वह पीछे की ओर घूमा और भीतर की ओर तेज़ी से वापस हुआ, फाटक के पास एक अस्त-व्यस्त महिला का कृत्रिम बालों से सँवारा हुआ सिर दिखायी दिया।

महिला ने दरवाज़ा बन्द कर दिया, जिससे भीतरी रास्ते में और अँधेरा हो गया।

"मूर्ख!" महिला चिल्लायी। "बेहूदा पागल मूर्ख!" उसने एक भरपूर तमाचा ताई यू को जड़ दिया, जिसमें तक़रीबन उसके चश्मे को छिटका ही दिया। यह वाङ फेन-चुआन थी और यद्यपि वह नाराज़ लग रही थी, फिर भी उसने नखरेबाज़ी से उसका हाथ पकड़कर, आगे कहा, "वाङ सियाओ-येन ने सचमुच तुम्हारा सिर फिरा दिया है, है न? तुम उसे एक दिन भी बग़ैर देखे नहीं रह सकते, रह सकते हो? ख़ैर, मैं तुमको बता दूँ कि अगर तुम इसी तरह जाते रहे, तो तुम खुद को ख़त्म ही समझो।"

अपना सिर लटकाये, ताई यू बुदबुदाया, "कुतिया से तौबा करो।" उसका विचार खिसक जाने का था, लेकिन उसके चेहरे पर एक दूसरा तमाचा जड़कर उनसे उसकी बाँह पकड़ ली, और उसे अहाते के भीतर ठेल दिया।

"सूअर कहीं के! मैंने तुम्हें अरसे से परखा है, बुद्धू कहीं के! तुमने फ़र्ज़ी रपटें दी हैं, और हर चीज़ को उलझाकर रख दिया है। अब चूँकि तुम मुझसे भयभीत हो, इसलिए साफ़ बच निकलना चाहते हो। ख़ैर, यह इतनी आसानी से होने वाला नहीं है।" उसने अपना स्वर मद्धिम कर लिया और एक बार घर के भीतर हो जाने पर, पहले से नरम प्रतीत होने लगी। उसकी बेधनेवाली, लम्पट निगाहें अब भी इतने अनिष्टकारी रूप में चमक रही थीं, जैसे कोई तीक्ष्ण तलवार, जिससे ताई यू के शरीर में झुरझुरी पैदा हो गयी। काउच पर अपनी बग़ल में उसे बैठाती हुई वह फिर बोली, "तुम्हें यह सोचने की ज़रूरत नहीं कि चूँकि तुमने लिन ताओ-पिङ और वाङ सियाओ-येन में सम्बन्धविच्छेद करा दिया है और वाङ सियाओ-येन पर अपना फन्दा कस लिया है, इसलिए अब तुम सन्तुष्ट होकर बैठ सकते हो। अभी तमाम काम बाक़ी हैं। चीन में छात्रों से निपटना सैनिकों से निपटने के मुक़ाबले कहीं कठिन है। हमें हर समय चौकसी बरतनी होगी, ख़ासतौर से उनके स्वयं संगठित होने के ख़िलाफ़। अभी मैंने कहना ख़त्म नहीं किया था कि तुम चल दिये। ये रहे तुम्हारे लिए आदेश। अपनी उस मंगेतर पर काम करते रहो, और उसे हमारी 'कम्युनिस्ट पार्टी' में भरती होने के लिए प्रेरित करो। वह फिर से लिन ताओ-चिङ की दोस्त

बने, ताकि पेइपिङ विश्वविद्यालय में लाल क्रान्तिकारियों के बारे में सूचना मिल सके। मत समझो कि शान्ति का राज शुरू हो गया है, कम्युनिस्ट पार्टी, निश्चित ही विश्वविद्यालय में कोई गुल खिलने वाली है। लिन ताओ-चिङ पर भी निगरानी रखने की ज़रूरत है। अगर तुम पेइपिङ के शीर्षस्थ कम्युनिस्टों के नामों की एक सूची प्राप्त कर सको, साथ ही उनके पते भी – यहाँ तक कि एक का भी नाम और पता – तो हमारा चीफ़ तुमको एक बड़ा इनाम देगा। एक बड़ा इनाम, सुनते हो? बहुत अच्छा, अब तुम जा सकते हो।" महिला ने उसे छाती से लगाया और उसे एक जादुई मुस्कान से पुरस्कृत किया। ताई यू उठ खड़ा हुआ, एक लट्ठे की भाँति सख़्त और धीरे-धीरे चला गया।

पुन: बाहर उस अँधेरी गली में आकर अपने चेहरे पर हवा की सरसराहट महसूस करके उसने सहजभाव से अपने कन्धों को सिकोड़ लिया और हाथों को छाती पर बाँध लिया। वह कई बार खाँसा, मानो कोई चीज़ उसके गले में अटक गयी था, और फिर तेज़ी से मुख्य सड़क की ओर बढ़ चला। वह वाङ फेङ चुआन से नफ़रत करता था और भय खाता था, फिर भी वह उसे छोड़ नहीं सकता था। सियाओ-येन का प्रेम उसकी घटिया भ्रष्ट आत्मा में प्रकाश की आख़िरी चिनगारी थी, परन्तु अब यह चिनगारी भी मद्धिम हो गयी थी। वह जिसने अपनेआप को और कई दूसरों को बरबाद किया था, अब उस लड़की को बरबाद कर रहा था जिसे वह प्यार करता था।

सियाओ-येन के साथ वह एक दूसरा आदमी बन गया। उस मनहूस महिला [illegible] की मौजूदगी में एक दीन-हीन दास बन जाने वाले ताई यू ने जब सियाओ-येन को देखा तो वह तुरन्त एक शान्त, प्रतिष्ठित भद्र पुरुष बन गया। इस [illegible] उसकी सूजी आँखों ने सियाओ-येन की सच्ची पीड़ा को लक्षित किया और [illegible] उसने एक याचना भरे स्वर में पूछा :

"मैं समझता हूँ, कि पिछले कुछ दिनों में तुम्हारा वज़न घटा है प्यारी। क्या [illegible] कोई तकलीफ़ है?"

सियाओ-येन लजा गयी और मुस्कुराते हुए बेपरवाही से जवाब दिया :

"नहीं, कुछ नहीं। मैं नहीं जानती कि क्यों, लेकिन अब मैं राजनीति के प्रति [illegible] उत्कण्ठित नहीं महसूस करती, जितनी कि पहले हुआ करती थी। कुछ [illegible] छात्र मुझे सन्देह की नज़रों से देख रहे हैं।"

"ओह, वैसा महसूस करना ग़लत है," ताई यू ने शान्तभाव से प्रत्युत्तर दिया। "[illegible] पूँजीवादी बुद्धिजीवी तो अस्थिरचित्त होने के लिए ही बदनाम हैं, वे हमेशा [illegible] रहते हैं। कुछ क्रान्तिकारी, जिनको तुम आदर दे चुकी हो, अचानक [illegible] से मुँह मोड़ सकते हैं या प्रतिक्रान्तिकारी बन सकते हैं। क्या तुम्हारी पुरानी [illegible] लिन ताओ-चिङ का ही मिसाल नहीं है। लेकिन खुश हो सियाओ-येन कि

पार्टी तुमको एक सदस्य के रूप में स्वीकार करने जा रही है।"

"क्या मतलब?" वह चकित होकर चिल्लायी। "चुन-त्साई इसका क्या मतलब है, जो तुम कह रहे हो?"

ताई यू ने उसका हाथ अपने होंठों पर रख लिया और उसे गर्मजोशी से चूम लिया, उसने अपना मरियल, सूजा चेहरा उसके नाजुक गाल पर सटा दिया था। अपनी आँखें बन्द करके, मानो परमानन्द में होकर वह बुदबुदाया, "प्रियतमे, तुम विश्व-सर्वहारा वर्ग के हिरावल की सदस्या हो। अब हम कन्धे से कन्धा मिलाकर लड़ रहे हैं।"

"कन्धे से कन्धा मिलाकर लड़ रहे हैं।" सियाओ-येन के स्वर में ख़ुशी और पीड़ा दोनों ही थे। वह लम्बे समय तक ख़ामोश रही।

उस रात काफ़ी समय व्यतीत हो जाने पर, जब तक़रीबन जुदा होने का समय हो गया, तो ताई यू ने उसे बाँहों में भर लिया, और बुदबुदाया :

"सियाओ-येन, तुम लिन ताओ-चिङ को भूले जा रही हो – मैं जानता हूँ कि तुम दोनों एक-दूसरे से कितनी अन्तरंग थीं – क्यों नहीं जाकर उसके बारे में पता करती?"

जब सियाओ-येन ने उत्तर नहीं दिया, तो वह आगे बोला, "बेशक, तुम उसकी दोस्त बनी रहो, लेकिन होशियार रहो, और सही समय पर नेतृत्व को सूचित करती हरो कि वह क्या कहती है और क्या करती है, तथा किससे मिलती है। तुम अपने समूह के नेता को सूचित कर सकती हो – तुम पेइपिङ विश्वविद्यालय में पार्टी ब्रांच की एक सदस्य होगी।" वह रुका लेकिन, जब सियाओ-येन नहीं बोली, तो उसने गम्भीर होकर कहा : "हमारे पार्टी सिद्धान्तों में से एक यह है कि एक कम्युनिस्ट की व्यक्तिगत भावनाएँ उसके काम में आड़े निश्चय ही नहीं आनी चाहिए। तुम्हें ज़रूर जाकर उसके बारे में पता करना चाहिए, ताकि उसकी प्रतिक्रान्तिकारी गतिविधियों के बारे में जानकारी प्राप्त हो सके। मैं तुमको बता सकता हूँ कि वह कुछ समय से चुपके-चुपके विशेष जासूस हू मेङ-एन के सम्पर्क में है। तुम जानती हो कि वह उससे प्यार करता था। और उसके पीछे पड़ा हुआ है, क्या नहीं जानती?"

"हू मेङ-एन?" सियाओ-येन उसके नाम का ज़िक्र होते ही नफ़रत से भरकर अचकचा गयी। "लेकिन वह तो उससे घृणा करती है। असम्भव!"

"तनिक भी नहीं। तुम वाक़ई द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद को पूरी तरह जज़्ब नहीं कर पायी हो।" उसने सियाओ-येन का हाथ छोड़ दिया ओर सख़्ती से अपनी भौंहें कुंचित करने लगा। "तुम मार्क्सवाद की पहली ही बात नहीं समझती। तुम्हारा दिमाग़ निम्न-पूँजीवादी विभ्रम और दक्षिणपन्थी अवसरवाद से पूरी तरह भरा हुआ है। नेतृत्व ने तय किया है कि कल तुम जाकर लिन ताओ-चिङ का पता करोगी, जो कहते हैं अब भी पीकिङ विश्वविद्यालय में सक्रिय है। अब से तुम इतिहास विभाग के

कॉमरेड वाङ चुङ से निर्देश प्राप्त करोगी। उसके नेतृत्व में तुम्हें विश्वविद्यालय के संघर्ष में एक गम्भीर, चौकस भूमिका निभानी है।"

जब ताई यू चला गया तो सियाओ-येन पूरी तरह बेचैन और विभ्रमित महसूस करती हुई बैठ गयी।

"हे भगवान, इसका क्या मतलब हो सकता है?" वह बोल पड़ी। "इसका क्या मतलब हो सकता है? यह तो पूरी तरह स्वप्न की भाँति है। कैसे मैं उससे फिर बोल सकूँगी?"

उसकी कल्पना में ताओ-चिङ का चेहरा उभर आया, जो सीढ़ियों से नीचे फेंक दिये जाने के बाद सूजा हुआ लहू-लुहान था। वाङ चुङ द्वारा जो करतूत की गयी थी उससे भी बुरी बात यह थी कि अब उस बन्दर जैसे चेहरे वाले वाङ से ही उसे आदेश प्राप्त करने थे।

"कम्युनिस्ट पार्टी" में भरती होने की बात ने सियाओ-येन को खुशी प्रदान करने के बजाय, एक कड़वाहट के अहसास से भर दिया, जिसको वह कदाचित ही समझ सकती थी। किसी न किसी तरह वह धीरे-धीरे उन लोगों से अलग की जा रही थी, जिनको वह चाहती थी और उन लोगों के सम्बद्ध की जा रही थी जिन पर वह यक़ीन नहीं करती थी। यद्यपि वह अपनी डेस्क पर बैठी हुई थी, फिर भी उसका दिमाग़ इतना विक्षुब्ध था कि वह पढ़ने में ध्यान केन्द्रित न कर सकी। उसने एक दराज़ खोली और एक पत्र निकाला जिसको ताओ-चिङ ने उसे उसी दिन भेजा था, वह इसे दोबारा पढ़े बिना न रह सकी। किसी बात ने उसे इस पत्र को ताई यू को दिखाने से रोक दिया था। कई बार वह इसका ज़िक्र करने-करने को हुई, लेकिन ताओ-चिङ के साथ उसकी गहरे जड़ जमायी दोस्ती ने उसे रोक दिया था। पत्र में लिखा था :

"प्रिय सियाओ-येन,

कोई बात नहीं कि तुम मुझसे कितनी नफ़रत करती हो या भय खाती हो, लेकिन मैं अब भी तुमको प्यार करती हूँ, और तुम पर यक़ीन करती हूँ, कारण कि हम साथ-साथ पले-बढ़े हैं। तुम मेरी सबसे प्यारी दोस्त थी, जिस पर मैंने बेइन्तिहा विश्वास किया। जब कभी मैं मुसीबत में पड़ी, तुम मुझे उबारने के लिए आ गयी। अतः मैं तुमको भूल नहीं सकती, मैं तुमको कभी नहीं भूलूँगी।

प्रिय सियाओ-येन, कृपया विश्वास करो जो मैं कहने जा रही हूँ क्योंकि मैं तुम्हारी क़सम कहती हूँ कि मैं एकदम सच कह रही हूँ, तुम गुमराह कर दी गयी हो। चेङ चुन-त्साई एक पाजी धूर्त है जो तुमको हर-हमेशा ठगता रहा है। वह एक बदमाश है जो शरीफ़ की तरह पेश आता रहा है। फिर भी चूँकि तुम उस पर विश्वास करती हो, इसलिए तुमने मुझसे सम्बन्धविच्छेद कर लिया

है। और अब तुम तेज़ी से एक बेहद ख़तरनाक रास्ते पर जा रही हो। सियाओ-येन यह तुम्हारी बेरुखी नहीं है जो मुझको बेचैन करती है, बल्कि तुम्हारे सभी दोस्त, जो तुम्हारा इतना अधिक ख़याल रखते हैं और तुमसे इतनी अधिक उम्मीदें रखते हैं, वे बेहद दुखी हैं, क्योंकि तुमने अपनी बुरी मण्डली कायम कर ली है। मैं जानती हूँ कि तुम मुझ पर यक़ीन नहीं करोगी, क्योंकि तुमको प्यार ने अन्धा बना दिया है। लेकिन तुम एक समुचित निर्णय लो। – बस चीज़ों को सुस्थिरचित्त होकर आँको। सावधानीपूर्वक ग़ौर करो कि क्या हो रहा है, और चीज़ों पर पूरी तरह विचार करो, तब थोड़ा-थोड़ा करके तुम समझने लगोगी कि तुमने ग़लत राह पकड़ ली है। जब ऐसा हो, कोई बात नहीं कि यह दिन कब आता है, जब तुम मुसीबत में हो और महसूस करो कि तुमने क्या किया है, तब भी मैं तुम्हारी दोस्त रहूँगी, तुम्हारी पक्की दोस्त। तब तुम मेरे पास ज़रूर आना। प्यारी सियाओ-येन ज़रूर आना। और जल्दी आना। मैं हमेशा तुम्हारा इन्तज़ार करूँगी।

इस स्नेहिल, विश्वास भरे पत्र ने सियाओ-येन को ताई यू द्वारा लगाये गये उस आरोप को भूल जाने के लिए विवश कर दिया कि वह एक जासूस थी और उसकी आँखों में आँसू उमड़ आये। लेकिन एक क्षण बाद ही जब वह इस मसले पर गम्भीरतापूर्वक विचार करने के लिए संयत हुई, तो उसने पत्र को पुनः दराज़ में डाल दिया। "धूर्त? कौन धूर्त है?" वह कड़ुवाहट से हँसी। कारण कि वह अब भी ताओ-चिङ की अपेक्षा ताई यू में अधिक आस्था रखे हुए थी। "वह कितनी पतित हो चुकी है, फिर भी वह कहती है कि यह मैं हूँ जिसने ग़लत राह पकड़ ली है।" सियाओ-येन बुदबुदायी, उसका हृदय पीड़ा से कराह उठा। अगर ताओ-चिङ जो कहती है वह सच है, तब तो ताई...नहीं, वह उस सम्भावना पर सोचने का साहस न कर सकी। कोई ताज्जुब नहीं कि जब उसने ताई यू को देखा था तो इतनी चिन्तित और विक्षुब्ध थी कि वह उस समय कोई उत्साह न महसूस कर सकी, जब उसे बताया गया कि वह "पार्टी" में भरती की जाने वाली है।

——:0:——

अध्याय 34

उस शाम च्याङ हुआ से मुलाक़ात के बाद, ताओ-चिङ जिसके पास एक नयी कार्ययोजना थी, होउ-जुई को एस्परान्तो क्लब की एक मीटिंग में ले गयी। लाल भवन के एक औसत आकार के अध्ययनकक्ष में उन्होंने पाया कि क़रीब तीन दर्जन नौजवान वहाँ उपस्थित थे, जिनमें अधिकतर पीकिङ विश्वविद्यालय के छात्र थे। उन

काले नौजवान सिरों के बीच दो खिचड़ी बालों वाले आदमी सुस्पष्ट दिखायी दे रहे थे, जो प्रो॰ ार मालूम होते थे। सिर्फ़ ताओ-चिङ को ही आश्चर्य नहीं हुआ – होउ-जुई की विस्फारित आँखें भी विस्मय में झपक उठीं।

उन्होंने आपस में परिचय किया, इसलिए उनकी उपस्थिति किसी को अजनबी जैसी न लगी। जब हर कोई बैठ गया तो एक छात्र ने दरवाज़ा बन्द कर दिया। मद्धिम रोशनियाँ तनावपूर्ण आशा भरे चेहरों पर चमक रही थीं; और सबकुछ ख़ामोशी में डूबा हुआ था। मीटिंग किसी कक्षा की भाँति नहीं लग रही थी, क्योंकि मंच पर कोई लेक्चरर नहीं था, न ही यह सामाजिक बैठक लग रही थी, क्योंकि हर कोई डेस्क पर ही बैठा हुआ था। एक क्षणिक ख़ामोशी के बाद, एक गोरे रंग का छात्र हान लिन-फू जो चढ़ती बीस वर्षीय उम्र में था, उठ खड़ा हुआ।

"क्या हर कोई नोट्स और पाठ्य-सामग्री लाया है?" उसने पूछा।

एक खरखराहट की आवाज़ हुई थी, कारण कि नोट्स और पाठ्यसामग्री एस्परान्तो में डेस्कों पर रखे गये थे। लेकिन, किसी ने भी उन पर ध्यान नहीं दिया – वे हान लिन-फू को निहार रहे थे, या एक-दूसरे की आँखों में झाँक रहे थे। उनकी गम्भीर और उत्तेजित मुखाभिव्यक्तियाँ ताओ-चिङ को इस तरह की अकादमिक बैठक के लिए असंगत प्रतीत हो रही थीं। उसने प्रश्नवाचक नज़रों से अपनी बग़ल में बैठे होउ-जुई को देखा, लेकिन उसने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया। होउ-जुई की आँखें पूरी तरह से हान लिन-फू पर टिकी हुई थी; जिसने अब बोलना शुरू कर दिया था, ऐसे मानो वह किसी मीटिंग के संचालन का अभ्यस्त हो।

"हमें अपने उन तमाम सदस्यों से अनुरोध प्राप्त हुए हैं, जो ककहरा में सिर खपाना नहीं चाहते हैं, कि एस्परान्तो पढ़ने से पहले कुछ समय वर्तमान घटनाओं और उस संकट पर दिया जाना चाहिए जो हम सभी के दिमाग़ों में उमड़-घुमड़ रहा है। इस आम अनुरोध के मद्देनज़र क्या हमें आज इन्हीं लाइनों पर बातचीत शुरू करनी चाहिए?"

नौजवानों की ओर से सहमति की चीखें फूट पड़ी, वे अपने हाथ उठाकर चिल्लाये :

"हाँ, हाँ!"

"ठीक। आगे चलें!"

भूरी दाढ़ी वाले प्रोफ़ेसर ने चश्मे के भीतर से अपने कम उम्र के साथी से नज़रें मिलायी और दोनों मुस्कुरा दिये।

हान लिन-फू ने आदेशात्मक संकेत किया, और शान्तिपूर्वक बोलने लगा :

"बहुत अच्छा। चूँकि सभी लोग पक्ष में हैं, इसलिए अब हम अपनी बातचीत शुरू करेंगे। मसलों को सुविधाजनक बनाने के लिए हम एक विषय का सुझाव देते हैं जो आज हमारे दिमाग़ में है – 'हम कौन-सी राह पकड़ें? यह कैसे हो?'"

"शानदार!" तालियों की एक ज़ोरदार गड़गड़ाहट को हान लिन-फू ने तुरन्त शान्त करा दिया गया, फिर उसने चश्मे वाले प्रोफ़ेसर पर नज़र डाली और घोषित किया :

"आपको अपने विचारों को सहेजने के लिए समय देने की ख़ातिर क्या हम अर्थशास्त्र विभाग के प्रोफ़ेसर चेन से विषय प्रवर्तन का अनुरोध करें?"

प्रत्याशा और लम्बे समय से दबी निराशा का एक हल्का निःश्वास सुना जा सकता था, लेकिन तब तक प्रोफ़ेसर चेन खड़े हो गये थे, और हल्के स्वर में बोलना शुरू किया, फिर भी सुई गिरने की आवाज़ भी सुनी जा सकती थी।

प्रोफ़ेसर स्वाभाविक ढंग से ठीक-ठाक और सटीक बोले।

"चीन में और साथ-साथ विदेशों में भी पिछला इतिहास और वर्तमान हमें दर्शाता है कि एक महान राष्ट्र हमेशा कोई राह निकाल ही लेता है। लेकिन आज चीनी जनता के पास क्या रास्ता है? उत्तर-पूर्व पर चार वर्षों से क़ब्ज़ा किया जा चुका है, उत्तरी चीन को खोया ही समझें। चाङ चुन का कठपुतली शासन तूर्यनाद कर रहा है और कठपुतलियों की एक नयी व्यवस्था अचानक पड़ोस में ही प्रकट हो गयी है। इसके पहले कि हम सात मई के नरसंहार और राष्ट्रीय अपमान के दूसरे सभी दिनों को भूल सकें, दुश्मन ने हमारी गरदनों के चारों ओर नयी बेड़ियाँ डाल दी हैं। चीन की सामान्य जनता भुखमरी के कगार पर कराह और जूझ रही हैं, पीट-पीटकर निराशा की हालत में ढकेल दी गयी है। हर कोई अपनेआप से यह पूछने को मजबूर है हम कहाँ जा रहे हैं?"

प्रोफ़ेसर चेन, चालीस के आसपास का एक हल्का-फुल्का व्यक्ति और एक सुबोध भाषण देने वाला वक्ता था, जिसने अपने श्रोताओं के ध्यान को पूरी तरह से बाँध लिया था। यद्यपि ताओ-चिङ छात्रों की भावाभिव्यक्तियों पर ग़ौर करने में व्यस्त थी, फिर भी वह उनकी वक्तृता की ओजस्विता पर मुग्ध थी। होउ-जुई और दूसरे नौजवानों पर एक नज़र डालने के बाद, फिर गम्भीरतापूर्वक सुनने की मुद्रा में हो गयी।

"चीन के लिए एकदम दो भिन्न रास्ते खुले हुए हैं। वह रास्ता जो आम जनता चाहती है, और वह रास्ता जो ऊपरी तबके और प्रभावशाली लोग चाहते हैं। ये दो रास्ते सिरे से दूसरे के विरोधी हैं। पहले, बात को आगे बढ़ाने के लिए मुझे विश्लेषित करने दें कि प्रभावशाली लोग क्या चाहते हैं।

"प्रभावशाली लोगों के पास कई रास्ते हैं, और यद्यपि वे सभी एक ही नतीजे पर पहुँचते हैं, फिर भी वे भिन्न-भिन्न सिद्धान्तों पर आधारित हैं। मुझे इनमें से प्रमुख को गिनाने दें।

"एक है निराशावाद – वे कहते हैं, चीन को बचाने का वक़्त बीत चुका है कि शान्ति सम्बन्धी वार्ताओं का मतलब होगा देश की बरबादी, और कि युद्ध का भी

यही हश्र होगा। यदि प्रतिरोध और समर्पण, दोनों का अन्त बरबादी में ही होना है तो प्रतिरो[illegible] करने की जहमत क्यों उठायें?

"दूसर[illegible] है पराजयवाद -- उनकी चीन की विजय में कोई आस्था नहीं है। चूँकि हमारे हवाई जहाज़ और बन्दूकें उतने अच्छे नहीं है जितने दुश्मन के, इसलिए वे निष्कर्ष निकालते हैं कि चीन सम्भवत: नहीं जीत सकता। वे जनता की ताक़त को देखने और यह समझने में असफल हैं कि राष्ट्रीय मुक्ति के युद्ध में हवाई जहाज़ और बन्दूकें नहीं बल्कि लोग अंजाम को तय करते हैं। डॉ. हू शिह इस सिद्धान्त का एक प्रवक्ता है। निराशावादी ऐलान करते हैं कि बरबादी देश का इन्तज़ार कर रही है, लेकिन डॉ. हू शिह लोगों को यह कहकर मूर्ख बनाने की कोशिश करता है कि यद्यपि उत्तरी चीन में एक युद्धविराम उत्तरपूर्व का एक इंच भी दुश्मन से वापस नहीं दिलायेगा, फिर भी यह कम से कम उन्हें और आगे क़ब्ज़ा करने से तो रोक ही देगा। इस लाइन की असलियत घटनाओं द्वारा पूरी तरह खोल दी गयी है, लेकिन वह अब भी अपने सिद्धान्त की – सौदेबाज़ी की क़ीमतों पर यह रट लगाये जा रहा है प्रतिरोध का मतलब है पराजय। अगर हम प्रतिरोध न करें, तो सबकुछ ठीक--ठाक ढंग से समाप्त हो जायेगा।

"तीसरा सिद्धान्त समर्पणवाद है। समर्पणवादी विश्वास करते हैं कि वे साम्राज्यवादियों से अच्छे ताल्लुक़ात बना सकते हैं। और पूर्वी एशिया की जनता के बीच सहकार स्थापित कर सकते हैं, इसलिए वे देश को एकदम बेच देने के लिए तैयार हैं।"

अब तक प्रोफ़ेसर चेन पर टिकी आँखें क्रोध से धधकने लगी थीं, मानो वही देश को बेच देने वाला गद्दार है। जिस क्षण उसने बोलना बन्द किया, दर्ज़नों बाँहें [illegible] उठीं; और छात्रों का कोलाहल सुनायी देने लगा। यह देखकर प्रोफ़ेसर चेन मुस्कुराया और बैठ गया। उसके बाद, एक के बाद एक करके सभी वक्ता अपने [illegible] रोष से लाल या क्रोध से सफ़ेद करके क्वोमिन्ताङ की समर्पण की नीति की [illegible]ना करते गये। जब अन्त में एक बच्चे जैसे चेहरे वाला लड़का बोलने के लिए [illegible] तो कमरे में ख़ामोशी छा गयी। एक मन्द परन्तु सशक्त और उत्तेजनापूर्ण स्वर [illegible] उसने साथियों को ललकारा, "क्या पेइपिङ और तिएनत्सिन अब भी चीनी भूभाग [illegible] या नहीं? देखो दोस्तो, और ध्यान से उन हवाई जहाज़ों को सुनो, जिनके पंखों पर [illegible] धब्बे हैं और जो सारा दिन हमारे सिर के ऊपर भन्नाते रहते हैं। तिएनत्सिन [illegible]कार्स के निकट एक हज़ार माऊ से अधिक ज़मीन जापानियों द्वारा एक हवाई क्षेत्र [illegible] परिवर्तित की जा चुकी है। तिङसिएन ही एकमात्र स्थान नहीं है, जहाँ एक [illegible]पुतली कम्युनिस्ट--विरोधी 'स्वायत्तशासी' सरकार हाल ही में कायम की गयी है, [illegible] होपेई मुठभेड़ की तैयारी से लैस जापानी फ़ौजी टुकड़ियों से भरता जा रहा [illegible] समूचे प्रान्त पर धावा बोल रही हैं। हमें क्या करना होगा? हमारे लिए क्या

रास्ता है? क्या हम इन्तज़ार करें कि दुश्मन आये और हमें कसाई की तरह वध कर दे? बस इन्तज़ार करें, गुलाम बन जाने के लिए?"

लड़के ने श्रोताओं को इतनी गहराई से झकझोर दिया कि भूरे बालोंवाले प्रोफ़ेसर, जो ग़ौर से सुनता रहा था लेकिन बोला नहीं था, उसकी आँखों में भी आँसू भर आये। ताओ-चिङ ने चोरी से एक नज़र होउ-जुई पर डाली, और पाया कि वह भावशून्य तरुण भी आवेश में तमतमाकर गुलाबी हो गया था।

"नहीं, हमें अवश्य उठ खड़े होना चाहिए और मुँहतोड़ युद्ध करना चाहिए।" वह लड़का, अपनी मुट्ठी लहराते हुए चिल्लाया। "हमें निश्चय ही मालिक बनना है, गुलाम नहीं।" मीटिंग की भावना को उबाल-बिन्दु तक लाकर वह बैठ गया।

वह कमरा जो एस्परान्तो पर बातचीत के लिए आरक्षित था, प्रतिक्रियावाद और जापानी साम्राज्यवाद पर युद्ध का ऐलान करने वाली रणस्थली में बदल गया। जब ताओ-चिङ ओर होउ-जुई वहाँ से उठे और सर्द सड़क पर चलने लगे, तो उनके हृदय अब भी दहक रहे थे। पहले उन्होंने चुपचाप निगाहों का आदान-प्रदान किया। फिर ताओ-चिङ ने अकस्मात पूछा :

"आख़िरी वक्ता कौन था, वह जो एक बच्चे जैसे चेहरे वाला था?"

"इतिहास का तृतीय वर्ष का छात्र था। ली शाओ-तुङ, मैं समझता हूँ यही उसका नाम है। बढ़िया बोला, है न?"

"काफ़ी आग के साथ – उसने वही कहा जो हर व्यक्ति के दिल में था।"

"बिल्कुल सही," होउ-जुई ने ठण्ड की वजह से अपने कन्धों को अपनी बाँहों में जकड़ लिया, और कुछ और कहना चाहता था परन्तु इतना ही बेहतर समझा।

जैसे-जैसे वे चलते गये, वह सड़क इतनी अँधेरी होती गयी कि दोनों में से कोई भी दूसरे का चेहरा साफ़ नहीं देख सकता था।

किसने वह मीटिंग आयोजित की थी?" ताओ-चिङ ने पूछा। "क्या कुछ पार्टी सदस्य थे?"

होउ-जुई ने कुछ क़दम आगे बढ़ने के बाद उत्तर दिया :

"नहीं, वहाँ कोई पार्टी सदस्य नहीं था। हान लिन-फू बहुत प्रगतिशील है। वह एस्परान्तो क्लब में पहलक़दमी करता है, और अक्सर आज जैसी ही बहसें आयोजित करता है।"

"होउ-जुई।" ताओ-चिङ अपने चेहरे पर गिरे बालों को पीछे करने के लिए रुकी, फिर उससे धीमे स्वर में पूछा, "क्या तुमने आज की इस बैठक में कोई खामी देखी?"

वह चौंककर रुक गया। "ख़ामी? मेरी समझ से सभी ने काफ़ी अच्छा कहा।"

"बात यह नहीं है। क्या उन्होंने इस सवाल का जवाब दिया, हम कौन-सी राह पकड़ें? ठीक है कि वे गुस्से और कड़वाहट से भरे थे, लेकिन उनके पास समस्या

का कोई हल नहीं था। उनकी पूरी बातचीत भर्त्सना से आगे नहीं गयी। उनके पास अब भी कोई धारणा नहीं है कि कौन-सी राह पकड़ें।"

होउ-जुई ख़ामोश पड़ गया, मानो उसने उसकी बात सुनी ही नहीं? या इस मसले पर मन ही मन सोचने की पीड़ा झेलने लगा। अचानक उसने अपना क़दम तेज़ कर दिया और मुस्कुराते हुए मुड़कर बोला, "चलो कल नयी लातिनीकृत लिखित भाषा संघ में चलें। अच्छा, अलविदा!" वह एक गली में मुड़ा और ओझल हो गया।

ताओ-चिङ उसको जाते देखते हुए खड़ी रही, और स्वयं झटपट चल देने से पहले एक निःश्वास छोड़ा।

अगली शाम वाली बैठक बहुत कुछ एस्परान्तो की मीटिंग की पुनरावृत्ति ही थी। नया लातिनीकृत लिखित भाषा संघ भी, दुश्मन का छिछोरापन दिखाने का आईनाभर था। उत्तरी चीन में जैसे ही स्थिति बिगड़ी, छात्र जापानी हमलावरों और क्वोमिन्ताङ के अपराधों की भर्त्सना करने और अपनी कुण्ठा की भड़ास निकालने के लिए एक मंच के रूप में इस तरह के क्लबों का इस्तेमाल करने लगे। लेकिन इस दूसरी मीटिंग में भी उन्होंने दुश्मन को शिकस्त देने का कोई विशिष्ट प्रस्ताव नहीं रखा, सिर्फ़ प्रतिरोध का आह्वानभर किया। इसके मद्देनज़र ताओ-चिङ ने उस शाम एक लम्बी, गम्भीर बातचीत के लिए होउ-जुई को अपने डेरे पर बुलाया। च्याङ हुआ की सलाह की बदौलत और अब तक जो कुछ छात्रों की ताक़त उसने देखी थी, उससे वह एक दृढ़तर स्टैण्ड लेने में समर्थ हो गयी।

"कल शाम की उस बैठक के बारे में होउ-जुई," वह बोली। "ऐसे उत्कण्ठित देशभक्त इस सवाल का कोई विशिष्ट उत्तर क्यों नहीं प्रस्तुत करते : हम कौन-सी राह पकड़ें?"

ताओ-चिङ एक गर्मागर्म बहस के लिए तैयार थी, लेकिन उसे ताज्जुब हुआ कि होउ-जुई अपने जवाब के साथ तैयार था, और उसने शान्त स्वर में कहा :

"मैं तुमको धन्यवाद देना चाहता हूँ, लू फाङ। तुम्हें अब और कुछ कहने की ज़रूरत नहीं। मैं संकीर्णतावाद या अनुभववाद का दोषी रहा हूँ। इस सारे समय में मैं ऐसे व्यवहार करता रहा हूँ, मानो यह अब भी पिछला ही साल या उसके पहले वाला ही साल हो, जब श्वेत आतंक सबसे बुरा था और जनता का हौसला बहुत नीचे था।"

उसमें इस परिवर्तन से अतिप्रसन्न होकर ताओ-चिङ ने उसकी बाँह कसकर पकड़ ली, और चिल्ला उठी :

"सही कहते हो, होउ-जुई। अब मुझे विश्वास हो गया कि विश्वविद्यालय में गतिविधियाँ सरगर्म होंगी।"

होउ-जुई मुस्कुराया और उसी सुस्थिर भाव से प्रत्युत्तर दिया :

"तुमको धन्यवाद लू फाङ। पार्टी और जनता को धन्यवाद। मैंने सोचा ही नहीं था कि इस विश्वविद्यालय में जहाँ प्रतिक्रियावाद इतना उग्र प्रतीत होता था, इतने अधिक एकाकी लड़ने वाले होंगे। मैं जानता था कि छात्र संकट से विक्षुब्ध थे, और कि कुछ सक्रिय कार्यकर्ता जो कर सकते थे, कर रहे थे, लेकिन मैंने इसे पूरी स्थिति से जोड़कर नहीं देखा था। मैंने उनकी ताक़त को कम करके आँका था और यही कारण है कि हमारे काम में कोई प्रगति नहीं हुई।" उसने निःश्वास छोड़ी और आगे कुछ न बोला।

ताओ-चिङ का चेहरा गम्भीर था, और उसने होउ-जुई को विचारमग्न भाव से देखा।

"मैं समझती हूँ कि पार्टी का काम अगर जनगण से न जुड़ा हो तो वह बिना जड़ों की घास के समान है – जो न ज़िन्दा रह सकती है और न फूल-फल सकती है, लेकिन पार्टी नेतृत्व के बिना तो जनान्दोलन एक बिना सिर की चिड़िया के समान है, जो कभी और कहीं नहीं पहुँच सकता। मैं इसे एस्परान्तो की उस मीटिंग के समय तक नहीं समझ पायी थी। क्या तुम इससे सहमत हो होउ-जुई?"

होउ-जुई ने एक निर्विकार भाव से उसको घूरकर देखा, और फिर ठठाकर हँस पड़ा :

"मैं जानता हूँ क्या करना है, लू फाङ। हमें निश्चय ही उन सभी एकाकी लड़ने वालों और सक्रिय कार्यकर्ताओं को अपने इर्द-गिर्द एकजुट करना होगा, और उन्हें काम देना होगा। उनके ज़रिये हम प्रत्येक कक्षा से छात्रों की एक भारी संख्या को संगठित कर लेंगे। एक बार जब इस तरह से पार्टी जनगण की ताक़त के साथ जुड़ जाती है, तो वे फ़ासिस्ट एक क्षण भी नहीं टिकेंगे। छात्र-संघ के आगामी चुनाव में हम प्रत्येक कक्षा को अपने हाथ में ले लेंगे, तब विश्वविद्यालय-संघ की बाबत कोई समस्या नहीं रहेगी।"

"वह कोई मूर्ख नहीं है – वह पहले पहलक़दमी ही नहीं करता होगा," ताओ-चिङ ने होउ-जुई की आँखों में चमक रही प्रतिभा और उत्सुकता पर ग़ौर करके सोचा। फिर वह उत्साहित होकर उससे बोली, "होउ-जुई तुम यहाँ की दशाओं से, और उठाये जाने वाले सर्वोत्तम क़दम से वाक़िफ़ हो। अगर तुम एक के बाद एक कक्षा को जागृत और अपने पक्ष में क़ायल करते जाओ, तो इस बार भिन्न परिणाम आकर रहेगा। हम सबको बस यही करने की आवश्यकता है कि छात्रों को झकझोरें, यह पता करें कि उनके दिमाग़ में क्या है, और उनको उत्साहित करें और मार्गदर्शन दें। एक बार जब सभी छात्र उठ खड़े हो जाते हैं, तो फ़ासिस्टों का कोई डर नहीं रहेगा।"

होउ-जुई ने सहमति से सिर हिलाया और हँस दिया। यह पहली बार हुआ है कि वे काम के बारे में पूर्णतः एकमत हुए थे। साथ ही यह पहली रात थी, जब

।।।।। चिङ पीकिङ विश्वविद्यालय आने के बाद से गहरी नींद सोने में समर्थ हो ।।।।। थी।

——:o:——

अध्याय 35

।।। हुआई-यिङ एक सुबह उठी ही थी और लाइब्रेरी जाने ही वाली थी, कारण कि ।।। दिन उसकी कक्षाएँ न थीं – तभी एक शालीन, सुवेषित, बड़ी-बड़ी आँखें और ।।।। कपोल-अस्थियों वाली एक लड़की ऊँची एड़ी की जूतियाँ पहने, दौड़ते हुए ।।।। में आयी।

"तो तुम तैयार हो गयी।" वह हुआई-यिङ का हाथ थामकर चिल्लायी। "मेरे ।।।। स्टेशन चलो। जल्दी करो।"

"क्यों, मेई-शुआङ, क्या बात है?" हुआई-यिङ ने मुस्कुराहट के साथ मन्द ।।। में प्रतिप्रश्न किया।

हुआङ मेई-शुआङ ने अपने गुलाबी रंग के हैंडबैग से एक टेलीग्राम निकाला। "।।नी कठोर मत बनो, मेरी बेताज रानी।" वह चिल्लायी। "ज़रा इसे देखो तो।" वह ।।। चंचल दृढ़ इच्छाशक्ति और शोख आँखों वाली हाज़िरजवाब लड़की थी।

हुआई-यिङ ने टेलीग्राम पढ़ा और अपनी दोस्त पर खिल उठी।

"आखिरकार, मेई-शुआङ, जिसकी तुम दिन और रात राह देखा करती थी, वह ।।।। रहा है। हाँ, हाँ उसके स्वागत में मैं खुशी-खुशी तुम्हारे साथ स्टेशन चलूँगी।" ।।। के एक फौव्वारे के साथ उसने अपनी एक उँगली मेई-शुआङ के नर्म सफ़ेद ।।। में गड़ा दी, और वह लड़की भी खी-खी करके हँस दी। इस तरह दोनों ।।।कियाँ, खूबसूरत फर-कोट पहने रिक्शा लेकर चिएनमेन स्टेशन चल दी। रास्ते ।।।। शुआङ ने हुआई-यिङ को बताने के लिए अपना सिर घुमाया :

"तोक्यो में इम्पीरियल युनिवर्सिटी से स्नातक पढ़ाई पूरी करने के बाद लिऊ ।।।ई ने लिखा था कि वह जल्द ही वापस आ जायेगा। किसी कारणवश उसकी ।।।।। बार-बार स्थगित होती रही। मैं सचमुच नहीं जानती कि कौन-सी चीज़ उसे ।।।। व्यस्त रखे हुए है। पिछली रात ग्यारह बजे मुझे यह टेलीग्राम मिला। जिसमें ।।।।। था कि उसकी नौका चिनवाङताओ आ पहुँची है, और कि वह ट्रेन द्वारा आज ।।।। 10.15 पर पहुँच जायेगा। क्यों, अब दस के क़रीब तो हो ही रहा होगा।" उसने ।।।।। घड़ी देखी। "ट्रेन आने में सिर्फ़ अड़तीस मिनट रह गये हैं। इस सुबह मेरी ।।।क्षाएँ थीं; लेकिन मैंने उन्हें छोड़ दिया। सच कहूँ, अब जबकि वह यहाँ रहेगा, ।।। और किसी चीज़ से कोई मतलब नहीं रहेगा।" वह मुड़कर हुआई-यिङ पर ।।।।गयी, फिर अचानक अपनी ऊँची एड़ी वाली जूतियों से फुटबोर्ड पर थपथपाया

और एक शुष्क स्वर में रिक्शावाले से अनुरोध किया, "जल्दी करो! जल्दी! ट्रेन जल्दी ही आने वाली है।"

अभी दोनों लड़कियाँ स्टेशन से कुछ दूर ही थीं कि उन्होंने देखा कि मुसीबत खड़ी हो गयी थी। जैसे ही वे आगे बढ़ीं, उन्होंने महसूस किया कि काली वर्दी वाले पुलिसमैन शोरगुल करती भीड़ के ऊपर गहरे भूरे सर्पों की भाँति, शरारतपूर्ण ढंग से कोड़े चटका और सटकार रहे थे। लोग रास्ते से अलग हटने के लिए इधर-उधर ठेलमठेल कर रहे थे। स्त्रियाँ और बच्चे रो रहे थे और हर कोई चीख़ रहा था। और पुलिस शोरगुल के ऊपर गला फाड़कर चीख़ रही थी : "रास्ता छोड़ो! प्रतीक्षालय में जाओ! इस क्षेत्र में अब मार्शल लॉ लागू है।"

मुसाफ़िर जितनी फुर्ती दिखा सकते थे, दिखा रहे थे, और सैकड़ों ज़रूरतमन्द यात्री अपनी बोरिया-बिस्तर के साथ मुसाफ़िर खाने में ठूँस दिए गये थे। रोती हुई औरतें और बच्चे कोई कोना ढूँढ़कर दुबक गये थे। मज़दूर, किसान, क्लर्क, मामूली कर्मचारी और तोंदियल सौदागर सभी समान रूप से चकराये और डरे हुए थे। "क्या हो रहा है? वे चकित होकर सोच रहे थे। क्या कोई महत्त्वपूर्ण व्यक्ति आ रहा है?" वे एक-दूसरे की ओर डरी हुई और खोजभरी निगाहों से देख रहे थे। दोनों लड़कियों ने भीड़ को धकियाते हुए स्टेशन पर आयीं, और मेई-शुआङ मानो कोई बात ही न हो, इत्मीनान के साथ क़दम आगे बढ़ाती हुई अपनी दोस्त को टिकट घर तक खींच ले गयी। लेकिन तभी एक प्रचण्ड झटका लगा। एक सोटा उनके सिरों के ऊपर मँडराते हुए, उसके कन्धे पर लगभग पड़ ही गया। अपनी बड़ी-बड़ी काली आँखों से एक नौजवान पुलिसवाले को गुस्से से घूरती हुई उसने पूछा :

"समझ रहे हो तुम क्या कर रहे हो?"

उस पुलिसवाले ने त्योरियाँ चढ़ाकर अपना सोटा फिर फटकारने के लिए ऊँचा उठाया, तभी उसने देखा कि ये ग्रामीण या फेरीवाली नहीं, बल्कि अच्छे परिवार की अच्छे कपड़े पहनी युवतियाँ थीं, और उसका उठा हाथ नीचे आ गया।

"माफ़ करना।" उसने एक शर्मिन्दगी भरी मुस्कान के साथ कहा। "मार्शल लॉ लागू है। कृपया प्रतीक्षालय में जायें।"

मेई-शुआङ और हुआई-यिङ ने प्रतीक्षालय की ओर देखा जो सामान्यत: ख़ाली रहता था, लेकिन अब ऐसे लोगों से ठसाठस भरा था जो दरवाज़े से अलग हटने के लिए एक-दूसरे को ठेलठाल रहे थे, जबकि नयी भीड़ को पुलिसवाले सोंटों से हाँक रहे थे।

मेई-शुआङ ने अपनी कमानीदार भौंहें चढ़ाकर, तिरस्कारपूर्ण ढंग से टिप्पणी की :

"अन्दर गन्दगी है। यहाँ बदबू भरी है। आओ, अन्दर न चलें, हुआई-यिङ, बल्कि निकास-द्वार पर ही रुके रहें। ये पुलिसवाले बड़े ज़ालिम होते हैं, लेकिन वे

उसको छूने की हिम्मत नहीं करेंगे। कौन महामहिम आ रहा है?" उसने गुस्से से सोटा लिये दूसरे पुलिस को गुस्से से देखा।

कुछ क्षण बाद पूरी तरह ख़ामोशी छा गयी, इतनी ख़ामोशी, जैसे एक ठिठुरनभरी जाड़े की गहन रात। सोटे ग़ायब हो चुके थे, और पुलिस अब सफ़ेद डण्डे लिये हुए थी। वह अपने को प्लेटफ़ॉर्म से लेकर बाहरी चौराहे तक 'गार्ड ऑफ़ ऑनर' देने के लिए दो क़तारों में व्यवस्थित कर चुकी थी।

एक रेलगाड़ी की सीटी कई बार बजी, और एक ट्रेन स्टेशन के अन्दर आयी।

पुलिस आदरसूचक ख़ामोशी में खड़ी हो गयी, अब उनके साथ भूरी वर्दी वाले सशस्त्र सैनिकों का एक समूह आ गया था। स्टेशन पर सर्वत्र ख़ामोशी थी, लगभग वैसी ही जैसे किसी सम्राट के आने की उम्मीद में होती है।

जब ट्रेन आकर रुकी, तो चिन्तित भीड़ जानवरों की तरह परस्पर भिड़े हुए उत्सुकतापूर्वक बुदबुदा उठी।

"आओ देखें, कौन बड़ा तोप आ रहा है?"

"यहाँ तक कि हो यिङ-चिन (क्वोमिन्ताङ के मातहत राष्ट्रीय मिलिटरी परिषद की पेइपिङ शाखा का चेयरमैन) भी जब पेइपिङ आया तो ऐसी अगवानी नहीं हुई थी।"

"न तो महासेनानायक की ही हुई होगी।"

तीखे कटाक्ष उस ठसाठस भरे, दुर्गन्ध देते कमरे के इर्द गिर्द चल रहे थे, जो खिड़की के पल्ले पर एक कर्कश ठकठकाहट द्वारा व्यवधानित कर दिये गये। एक अधेड़ उम्र का अफ़सर अपनी पिस्तौल लहराते हुए भीतर के लोगों पर दहाड़ा :

"मित्र सेना आ रही है। बातचीत बन्द करो। कोई भी जो बात करने की जुर्रत करेगा, उसे घसीटकर बाहर कर दिया जायेगा, और गोली मार दी जायेगी।"

"मित्र सेना?"

"कैसी मित्र सेना?"

लोगों ने अपनी नज़रें झुका लीं। बीमार पौधों की भाँति, सभी ने अपने-अपने सिर कड़ुवाहट में नीचे लटका लिये।

तब, एक निराला दृश्य चीनी धरती पर मंचित हुआ।

ठिगने, गठीले, जैक-बूट पहने जापानी सैनिकों के झुण्ड के झुण्ड लाल बिल्ले लगाये ट्रेन से उतरने लगे, और इठलाते हुए पीछे की ओर जाने लगे। झुण्ड के झुण्ड जो जा रहे थे, वे सभी के सभी पूरी तरह से शस्त्र-सज्जित मशीनगनों से लैस, अपने कन्धों पर रायफ़लें धरे, अपने हाथों में चमचमाती कटारें लिये हुए थे। उनके हथियार उन चीनी सशस्त्र सैनिकों और पुलिस के हथियारों से बहुत भिन्न थे, जो उनकी 'रक्षा' करने के लिए थे। काली वर्दीधारी पुलिस सिर्फ़ सफ़ेद डण्डे लिये हुए थी, भूरी वर्दी वाले सशस्त्र सैनिक सिर्फ़ पिस्तौलें लिये हुए थे, जो उनकी बेल्टों से लटक

रही थीं। जैसे ही जापानी फ़ौजी टुकड़ियाँ सिमटते चीनी गार्डों को पार कर विजेताओं की भाँति आगे बढ़ीं, प्रतीक्षालय के 'क़ैदियों' ने अपनी साँसें रोक लीं, बेचैनी से उन लाल बिल्लों और उस जापानी झण्डे को घूरने लगे जिसके मध्य में एक गोलाकार लाल धब्बा बना हुआ था। अपनी आँखों में रोष और विस्मय लिये, वे स्वयं से पूछ रहे थे 'अब आगे क्या होगा? बिना एक भी फ़ायर किये, जापानियों ने हमारे उत्तरपूर्व पर क़ब्ज़ा कर लिया है, और अब क्या पेइपिङ भी, वह पुरानी राजधानी भी, जिसके पीछे सभ्यता की शताब्दियाँ गुज़री हैं, बिना किसी प्रतिवाद के पतन के कगार पर है?'"

हुआई-यिङ और मेई-शुआङ अन्ततः प्रतीक्षालय के दरवाज़े की ओर बलात ठेल दी गयी थीं। जब जापानी मार्च करते हुए गुज़रे तो वे भी चिंहुक गयीं, और अनजाने ही पीछे दुबक गयीं। मेई-शुआङ को अब उस ठसाठस भरे कमरे से कम परहेज़ रह गया था, लेकिन अब भी वह अपना मुँह और नाक अपनी रूमाल से ढँके हुए थी, और अपने हैण्डबैग को पंखे की तरह झल रही थीं। हुआई-यिङ भी बदबूदार हवा से मुँह बिचकाये हुए थी, लेकिन अपनी दोस्त के विपरीत वह इन दम्भी जापानियों पर झल्लायी हुई थी और अपने हृदय में एक असह्य पीड़ा अनुभव कर रही थी। उन्हें क्यों यहाँ हाँककर किनारे कर दिया गया था, अब स्पष्ट हो गया, "मित्र सेना" के लिए रास्ता बनाने के लिए। प्रतिवाद के गुलगपाड़े में एक मन्द भुनभुनाहट फैल गयी।

"क्या हो रहा है? क्या होने वाला है? इतने सारे जापानी सैनिक आ रहे हैं, इसको देखते हुए क्या पेइपिङ के लिए कोई उम्मीद है?"

"क्या तुम नहीं जानते कि उत्तरी चीन 'स्वायत्तता' पाने जा रहा है? हो यिङ चिङ यहाँ पेइपिङ को नीलाम करने के लिए आया था।"

"भाड़ में जाये वह। वह चीनी लोगों को धूल समझता है, और जापानियों को इज़्ज़त देता है, मानो वे उसके पूर्वज हों।"

"क्या तुम नहीं जानते, सुअर कहीं के कि यह चीनी भूभाग है, तुम्हारा दो कौड़ी का टापू नहीं है? मैं समझता हूँ, अगली बात यह होगी कि चाङआन स्ट्रीट में चाँदमारी होगी।"

"तुम शैतान क्या चिल्ला रहे हो? मरना चाहते हो?"

भीड़ में ऐसे लोग थे, जो वास्तव में रुष्ट थे और बाक़ी जो उदासीन थे, महज़ बाहर निकलने के इन्तज़ार में थे, लेकिन बहुसंख्या फुत्कार कर रही थी, और बुरा-भला कह रही थी। एक सशस्त्र सैनिक खिड़की के पास आया। इस समय, चूँकि जापानी गुज़र रहे थे, इसलिए उसने भीड़ को ज़ोर से गालियाँ नहीं दीं, लेकिन उनकी जलती आँखों से देखा और फटकारा, "ख़ामोश रहो!"

लेकिन प्रतीक्षालय में कोई ख़ामोशी नहीं थी। उस आम गुलगपाड़े में कई जो

एक-दूसरे को जानते तक न थे, फुसर-फुसर आपस में करने लगे। हुआई-यिङ जापानी सैनिकों के अन्तहीन दस्तों को गुज़रते हुए निहार रही थी, तभी उसने अपने कन्धे पर एक थपकी महसूस की। अपना सिर घुमाकर देखा कि यह क्याङसी का रहने वाला, चीनी साहित्य विभाग का एक दूसरा छात्र, तेङ युन-सुआन था। वह अपना पसीने भरा सिर हिला रहा था, और बार-बार कह रहा था, "इस तरह की बात कभी नहीं सुनी। अनर्गल – तुम यहाँ क्यों आयी हो। हुआई-यिङ?"

मेई-शुआङ की ओर इशारा करके हुआई-यिङ ने जवाब दिया, "उसका साथ देने के लिए वह किसी का इन्तज़ार कर रही है। तुम यहाँ क्यों आये हो तेङ?"

"उत्तरपूर्व से आ रही एक मौसी से मुलाक़ात करने के लिए।" अपने चश्मे को अपनी नाक पर दबाते हुए वह फुसफुसाया, "मैं जानता हूँ कि तुमको भलीभाँति ख़बर है, रूप की रानी। इन जापानी सैनिकों के आगमन का क्या मतलब है?"

हुआई-यिङ ने अपना सिर हिलाया और अनमनस्कता से मुस्कुरायी। "मुझे कैसे मालूम हो? लेकिन मैंने सुना है कि उत्तरी चीन एक दूसरा उत्तरपूर्व बनेगा। क्या तुम अख़बार नहीं पढ़ते?"

"नहीं," तेङ ने उलझनभरी मुस्कान के साथ जवाब दिया। वह उन छात्रों में से था जो अपनेआप को किताबों में धँसाये रखते थे। "अख़बार पढ़ने से क्या फ़ायदा? यह सिर्फ़ तुमको हताश करता है।"

मेई-शुआङ लिऊ वेन-वेई के न दिखायी देने पर बेचैन होकर, शून्यभाव से उन लाल बिल्लों और चमकदार लौह टोपों को घूर रही थी। वह बिल्कुल नहीं सोच रही थी कि क्या हो रहा है। उसका मंगेतर जो एक धनीमानी दलाल पूँजीपति का बेटा था, उसके साथ शंघाई के फुतान विश्वविद्यालय में पढ़ चुका था। जब वह आगे की पढ़ाई के लिए जापान चला गया, तो वह पेइपिङ आ गयी और कैथोलिक विश्वविद्यालय में प्रवेश ले लिया। तीन वर्षों से वह इस बड़े पूँजीपति के बेटे से शादी करने का बेसब्री से इन्तज़ार कर रही थी। उसने जापान में राजनीतिविज्ञान का अध्ययन किया था, वह आश्वस्त थी कि वह अपनी वापसी के बाद, राजनीतिक हल्कों में सक्रिय रहेगा और उनकी एक ख़ुशहाल, आरामदायक गृहस्थी होगी। वह घर जापानी शैली में नहीं, बल्कि पश्चिमी शैली में सजायेगी – लेकिन वह आया नहीं। मेई-शुआङ जापानियों पर, उस ट्रेन के भर जाने का आरोप मढ़ रही थी, जिसे वह पकड़ने वाला था। तभी उसे फ़ौजी टुकड़ियों के अन्तहीन प्रवाह के बीच चलती हुई एक परिचित आकृति दिखायी दी। उसकी झलक मिलते ही उसकी आँखें अपने कोटरों से बाहर निकल आयीं।

"हुआई-यिङ।" वह बिना मुड़े हाँफते हुए बोली। "वह आ गया है।" और वह इतनी तेज़ी से उसकी ओर झपटी कि सशस्त्र सैनिक उसे रोक न सके।

लिऊ वेन-वेई चुस्त-दुरुस्त, पश्चिमी कपड़ों में सुसज्जित, लगभग दर्ज़नभर

पश्चिमी शैली के सिविलियन पोशाक पहने ऊँचे अफ़सरों से घिरा हुआ था। मेई-शुआङ ने एकाएक फुर्ती की और फुर्र से उसकी बग़ल में पहुँचकर उसका कोट पकड़ लिया।

"वेन-वेई। वेन-वेई। आख़िरकार..." वह बेहद जादुई मुस्कान के साथ हाँफ रही थी। लिऊ वेन-वेई चौंककर ठिठक गया, यहाँ तक कि उसके साथ के जापानी भी रुक कर इस आकर्षक चीनी लड़की को एकटक देखने लगे जो उनके मार्ग में खड़ी थी। "वेन-वेई, मैं बहुत देर से इन्तज़ार कर रही हूँ। तुम-तुम..." लड़की ने उसके साथ के जापानियों को देखा और कुछ-कुछ घबराहट महसूस करने लगी। लिऊ वेन-वेई का सफाचट अण्डाकार चेहरा, इस तरह से सम्बोधित किये जाने पर कुछ-कुछ उलझन का भाव दर्शा रहा था। उसने सहजभाव से मेई-शुआङ का अभिवादन किया और सिविलियन कपड़े पहने एक जापानी से जल्दी-जल्दी कुछ शब्द कहे। वह जापानी मुस्कुराया, अपने सुनहरे दाँत निपोरे और लड़की का अभिवादन किया। लिऊ राहत महसूस करता दिखायी दिया। वह मेई-शुआङ के साथ पीछे चला गया। वे जापानियों के पीछे-पीछे स्टेशन छोड़ते हुए, मन्द स्वर में बतियाते रहे।

हुआई-यिङ जो अब भी प्रतीक्षालय में ही थी, पूरी तरह भुला दी गयी। उसे मेई-शुआङ को जापानियों के एक झुण्ड के साथ बाहर जाते देखकर चिन्ता हुई, लेकिन जब उसने खिसकने की कोशिश की, तो पुलिसवालों ने रास्ता रोक दिया। वह जहाँ थी, वहीं अन्य चीनियों के साथ रुक जाने को विवश हो गयी। इन्तज़ार के इस चिन्ता भरे समय में तेङ युन सुआन धाराप्रवाह बातें करता रहा।

"क्या तुमने लिन ताओ-चिङ को हाल में देखा है?" उसने शालीनता से पूछा। "पिछले कुछ दिनों में वह मुझसे कई बार मिली और वह कितनी बातें करती थी। मैं उसके लिए अफ़सोस महसूस किये बिना नहीं रह सकता, जानो कि वह इस सर्दी में भी इतने झीने कपड़े पहने हुए थी। कुछ साल पहले जब वह पाजी उसके पीछे पड़ा हुआ था, तब भी मैं उसके लिए दुखी था। तब तुमने उसकी मदद नहीं की थी?" उसने सहानुभूतिपूर्वक अपना सिर हिलाया।

"तुम तो बस किताबी कीड़ा हो," हुआई-यिङ एक फीकी मुस्कान के साथ उसकी ओर मुड़ी। "वह उतनी अकेली और अनाथ नहीं है, जितना तुम समझते हो। उसका अपना मक़सद है, अपनी सोच है। वे विरोध कर रहे हैं।" उसने स्टेशन छोड़ रहे जापानी सिपाहियों के आख़िरी बैच की दिशा में अपना सिर झटक दिया। "तुम्हारे जैसा गोबरगणेश बस यही कर सकता है कि क्लासिकों से उद्धरण देता रहे। तुम मुझसे भी अधिक मिट्टी के माधो हो।"

तेङ बार-बार सहमति में सिर हिलाता रहा, मानो अचानक उसकी समझ में आ गया था कि उसके कहने का क्या मतलब था। "तुम ठीक कहती हो, तुम ठीक

कहती हो। तुमने मेरी चेतना को जगा दिया है।" फिर वह फुसफुसाया, "वह एक लाल क्रान्तिकारी है, क्या नहीं है? हे भगवान! उसने अपनी आँखें मूँद लीं, अपना सिर हिलाया तथा ख़ुशी और ख़तरे के मिले-जुले भाव के साथ मुस्कुराया, जबकि हुआई-यिङ ने उसे रोकने के लिए आँख मारी।

बारह बजते-बजते सभी जापानी फ़ौजी टुकड़ियाँ, जो पेइपिङ में तैनात होने के लिए आयी थीं, स्टेशन छोड़ चुकी थीं। सिर्फ़ असहाय चीनी मुसाफ़िर बच गये थे, जो प्रतीक्षालय, मालख़ाने और घेरेबन्दी की जगहों से रिहा होने के बाद, अपनी-अपनी राह जा रहे थे।

"आओ चलें। हम अपनी 'सज़ा' काट चुके हैं।" हुआई-यिङ ने तेङ के कन्धे को थपथपाया और, उसे भीड़ से बाहर निकलने के लिए संघर्ष कर रहे लोगों के बीच खींच ले गयी। "जब मैं मेई शुआङ को पा जाऊँगी तो उससे हिसाब चुकता करूँगी।" वह भुनभुनायी।

यद्यपि मेई-शुआङ जिस तरह से हुआई-यिङ को छोड़कर जापानियों के साथ चली गयी थी, उससे वह नाराज़ थी, फिर भी उसी शाम वह अपनी इसी दोस्त के साथ एक विचित्र दोस्त मण्डली में चली गयी, एक ऐसी मण्डली में जो उसके लिए बिल्कुल नयी थी।

वह ठाठदार हॉल रंगीन बत्तियों, क़ीमती कारपेटों, दुर्लभ कलाकृतियों और क़ीमती प्राचीन वस्तुओं से भरा हुआ था। जो लोग वहाँ एकत्र हुए थे, वे हुआई-यिङ को बहुत विचित्र मालूम पड़े। उनके फर लगे हुए साटन के लबादे और जैकेटें फूलों की डिजाइनों से ढँकी हुई थीं, कुछ प्रतिष्ठित चीनी टोपियाँ पहने हुए थे जिन पर लाल गाँठें थीं, जो ठीक ऐसे लग रही थीं जैसे वे चीनी राजवंश के प्रभावशाली लोग हों। एक दर्ज़न से अधिक आदमियों ने इस फ़ैशन में सजे हुए प्रवेश किया और उनके पीछे-पीछे ठाठदार कपड़े पहनी विलासप्रिय महिलाएँ थीं, जिनके पहुँचते ही महक का एक भारी झोंका आ गया। उसके बाद "सम्मानित अतिथि," जापानी आये, जिनके आगमन पर कमरे में भरे हुए बूढ़े भद्र पुरुष और महिलाएँ सम्मानपूर्ण ख़ामोशी में एकबारगी उठ खड़े हो गये।

ये वे ही उद्धत जापानी अफ़सर थे जो उस सुबह चिएनमेन स्टेशन से इठलाते हुए बाहर आये थे। वे अब भी अपने लाल बिल्ले और चमकदार कटारें धारण किये हुए थे। पश्चिमी शैली में सजे-धजे लिऊ वेन-वेई जैसे दुभाषिये को साथ लेकर वे अपना सिर ऊँचा किये, क़तारबद्ध होकर मार्च करते हुए उस शानदार हॉल में दाख़िल हुए। हुआई-यिङ और मेई-शुआङ जो एक बैंगनी रंग के रेशमी परदे से आधे ढँके एक कोने में बैठी हुई थीं, उठ खड़ी होने को विवश हो गयीं, जब सभी इन नवागन्तुकों की स्वागत में चुपचाप खड़े हो गये। हुआई-यिङ अपनी दोस्त के

मख़मली गाऊन के आस्तीन से सट गयी, और मुँह फुलाते हुए फुसफुसायी :

"अगर मैंने यह जाना होता, तो नहीं आयी होती। यह सब तुम्हारा दोष है।"

"मैं नहीं जानती थी कि ये यहाँ होंगे," मेई-शुआङ ने उन जापानियों पर निगाह डालकर और अपनी भौंहें चढ़ाते हुए प्रतिवाद किया, जो अब भी क़तार में खड़े थे। "वेन-वेई ने मुझे बताया नहीं।" उसने हुआई-यिङ की स्कर्ट खींची और आगे बोली। "बुरा मत मानना। सारा संसार एक रंगमंच है। आओ हम महिलाओं में शामिल हो जायें और उनके साथ-साथ गपशप करें।"

"मैं नहीं।" हुआई-यिङ अपनी पोशाक सीधी करती हुई बोली। वह उभरे जरीकाम की डिजाइनों वाला एक हल्का हरा कार्डिगन और एक गहरे हरे सर्ज की स्कर्ट पहने हुए थी। अपने गोरे रंग, सुगठित देहयष्टि और हल्के-हल्के कुंचित काले केश के साथ, वह इन अति पोशाक-लदी महिलाओं की समूची भीड़ से कहीं अधिक लुभावनी लग रही थी।

"वह दाढ़ीवाला बूढ़ा कौन है? वह जो मेज़बान मालूम पड़ता है। उसका नाम क्या है?" उसने अधीर होकर पूछा। "मेरी समझ से वाङ-वाङ यी ताङ है। वह मोटा आदमी लिङ वेई है। दूसरा मोटा आदमी जो काला चश्मा पहने हैं, वान फूलिन है। बाक़ी को मैं नहीं जानती। वेन-वेई क्यों नहीं आता और हम लोगों की ख़ैर-ख़बर लेता?" जैसे ही उसने यह कहा, लिऊ वेन-वेई जो एकदम तरोताज़ा, सजा-सँवरा था, उनके पास आ गया। उसने काफ़ी झुककर जापानी शैली में हुआई-यिङ का अभिवादन किया।

"माफ़ करना कुमारी ली। क्या तुम हमारे सम्मानित अतिथियों में शामिल होगी?" वह अभिवादन में फिर झुका, उसके चिकने बालों से चमक आ रही भी।

हुआई-यिङ के उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना ही मेई-शुआङ ने उसकी बाँह पकड़ी और शालीनतापूर्वक अपने मंगेतर के पीछे-पीछे उस भीड़ में शामिल होने के लिए चल दी।

हॉल में एक दर्ज़न से अधिक बड़ी गोल मेजें थीं, प्रत्येक पर एक बर्फ़ जैसी सफ़ेद मेज़पोश बिछी हुई थी, जिसके मध्य में गरम कक्षीय गुलाबों का एक गुलदस्ता रखा था। महिलाएँ और सफ़ेद साटन के लबादेवाले उच्चाधिकारी, जापानियों और उनके दुभाषियों में घुलमिल गये, जो विभिन्न मेज़ों पर अपनी जगह लिये थे। लिऊ वेन-वेई ने हुआई-यिङ और मेई-शुआङ को दो अलग मेज़ों पर बिठाया। प्रीतिभोज के आरम्भ में मेहमान और मेज़बान दोनों ही कुछ-कुछ औपचारिक लग रहे थे। वाङ यी-ताङ कुओ-लिङ वेई और अन्य मेज़बान अपने मेहमानों के प्याले भरने और विनम्रतापूर्वक उनसे पीने का अनुरोध करने में अपनेआप को धन्य कर रहे थे। ऊँचे ओहदेवाले जापानी अफ़सर कृपालुभाव से और गम्भीरतापूर्वक बैठकर खा रहे थे यद्यपि कुछ लुभावनी चीनी महिलाएँ उनकी ओर निहार लेतीं, और अपने बर्फ़ जैसे

सफ़ेद हाथों से उनके लिए शराब डाल देतीं, फिर भी अपनी शैली के "पूर्वी एशिया के ये स्वामी" निगाहें सामने किये और सीना ताने चुपचाप बैठे हुए थे, मानो वे नारी आकर्षण से एकदम अभेद्य हो।

"वे काफ़ी भद्र व्यवहार करते हैं," हुआई-यिङ ने अपनी कुर्सी के सिरे पर बैठते और बेचैनी से अपने इर्द-गिर्द के लोगों पर नज़र डालते हुए सोचा। वह बुरी तरह बेचैन थी, वह इस बात को भूल नहीं पा रही थी कि वह एक चीनी है। जापानियों ने जिस हेकड़ी के साथ अपनेआप को पेश किया था, उससे वह स्वाभाविक तौर पर रुष्ट और झेंप महसूस कर रही थी। फिर भी, जब उसने मेई-शुआङ के इन शब्दों को याद किया, कि "सारा संसार एक रंगमंच है," तो वह मुस्कुरा दी। इसको गम्भीरता से लेने की कोई आवश्यकता न थी। एक क्षण ठहर जाने से कोई नुक़सान नहीं हो सकता था। अतः वह अपनी बेचैनी के बावजूद रुकी रही।

"हम आपके अत्यन्त आभारी हैं कि आप लोग इतनी दूर चीन की मदद के लिए आये।" आदर के साथ सिर झुकाते हुए उसकी मेज़ पर बैठे एक बूढ़े आदमी ने जापानी अफ़सरों को एक सलामती जाम पेश किया, जिसने हुआई-यिङ को अपने विचारों की उलझन से जगा दिया। बेशुमार और फटाफट आभार अभिव्यक्तियाँ हर तरफ़ से उठ रही थीं। मानो कोई भूत बवण्डर पूरे हाल में उठ खड़ा हुआ हो। वह सिहर बिना न रह सकी।

क़रीब पचास वर्ष का एक गठीला जापानी मेजर-जनरल, धीरे-धीरे बीच वाली मेज़ के पास वाली अपनी जगह से उठकर, अपनी झुकी मूँछ को सँवारने लगा। उसने अपना गिलास उठाया, शाही अन्दाज़ में कृपालु नज़रें कमरे में दौड़ायीं और भद्रतापूर्वक प्रत्युत्तर में कुछ शब्द कहे। लिऊ वेन-वेई ने जो उसकी बग़ल में बैठा हुआ था, उसके उत्तर को एक स्पष्ट मध्यम स्वर में चीनी में अनुवाद करके सुनाया।

"हमारे विदेशमन्त्री हिरोता द्वारा प्रतिपादित किये गये तीन मूलभूत सिद्धान्तों के अनुसार," उसने कहा, "हम आप लोगों के साथ सहकार करने चीन आये हैं। तीन सिद्धान्त संक्षेप में ये हैं – पहला, चीन में सभी जापान-विरोधी गतिविधियों को निषिद्ध करना; दूसरा जापान, चीन और मान्चूकुओ के बीच एक सहकार-प्रणाली स्थापित करना, और तीसरा एक सामान्य कम्युनिस्ट-विरोधी नीति लागू करना। आप सज्जनों की चीन में एक अच्छी प्रतिष्ठा है, और आप लोग अपनी सामर्थ्य और सत्यनिष्ठा के लिए जाने जाते हैं। हम विश्वासपूर्वक आशा करते हैं कि आप हमारी सेना से हमदर्दी का हाथ मिलायेंगे, जिससे कि हम साथ-साथ आगे बढ़ सकें।"

तालियों की गड़गड़ाहट ने जो न तो उत्साहयुक्त थी और न ही ठण्डी, उस शाम की औपचारिकताओं को ख़त्म कर दिया। जैसे ही तनाव ख़त्म हुआ, हॉल पहले से अधिक जीवन्त हो उठा, लेकिन हुआई-यिङ अपनी कुर्सी के कोर पर अधिकाधिक

तनावग्रस्त होती गयी और उसे माहौल अधिकाधिक दमघोंटू मालूम होने लगा।

वह जापानी अफ़सर, जो उसकी बग़ल में उस पर बिना एक भी नज़र डाले, गम्भीर होकर बैठा था, कई दौर शराब पी लेने के बाद तरंग में आ गया। वह मेज़ पर बैठी महिलाओं का नज़ाकत से अभिवादन करने लगा, वह उन पर शराब और सुस्वादु व्यंजन लेने का दबाव डालता और यदा-कदा हुआई-यिङ को देखने के लिए मुड़ पड़ता। वह जितना ही अधिक पीता गया, उतना ही अधिक उसका व्यवहार बदलता गया। अन्य जापानी अफ़सर भी ऐसे ही थे। जैसे-जैसे वातावरण गर्म और उमसदार होता गया और कमरा शराब की गन्ध से भरता गया, अफ़सर अपनी टोपियाँ और कटारें उतारते गये और अपनी-अपनी बग़ल में बैठी महिलाओं पर ग़ौर करना शुरू कर दिया। बूढ़े मेज़बान पूरी तरह उपेक्षित कर दिये गये और भुला दिये गये।

हुआई के बग़ल वाले अफ़सर ने तुरन्त किसी और महिला पर दृष्टिपात नहीं किया। गिलास पर गिलास ब्राण्डी पीते हुए, वह अपने सभी सोने के दाँत दिखाते हुए अर्द्धगर्भित ढंग से मुस्कुराया। उसने एक सेब छीला और उसकी ओर मन्द स्वर में टूटी-फूटी चीनी भाषा में पेश करते हुए बोला :

"सेब खाओ कुमारी जी। तुम्हारा शुभ नाम? शुक्रिया।"

हुआई-यिङ घबराहट में तमतमा गयी और समझ नहीं पायी कि स्वीकार करें या इन्कार। एक क्षण की हिचकिचाहट के बाद उसने सेब ले लिया, और मेज़ पर रख दिया, फिर मेई शुआङ को खोजने चल दी। उसकी दोस्त मेजर जनरल की मेज़ के पास बैठी थी, और वह उससे जापानी में बातें कर रहा था, जिसको लिऊ वेन-वेई अनुवाद करके समझा रहा था। हुआई-यिङ ने अधीर होकर मेई-शुआङ के कन्धे को थपथपाया। दूसरी लड़की मुड़ी और उसका हाथ पकड़कर ख़ुशी से बोली :

"क्या यह मज़ेदार नहीं है, हुआई-यिङ। सुना तुमने कि कितने धाराप्रवाह ढंग से वेन-वेई उन्हें अनुवाद करके बता रहा था?" और इसके पहले कि हुआई-यिङ बोल पाती, वह मेजर-जनरल और अन्य को बताने के लिए मुड़ गयी, "यह पेइपिङ विश्वविद्यालय की रानी है। इसे देखो तो। क्या यह ख़ूबसूरत नहीं है?"

"क्या मतलब है तुम्हारा?" हुआई-यिङ ने गुस्से से कहा। इसके पहले कि वह कुछ कहे ओर आगे कह पाती, वह जापानी अफ़सर जिसने सेब छीला था, आ पहुँचा। दोनों लड़कियों के बीच में खड़े हाकर, उसने अपना अँगूठा उठाते हुए, हुआई-यिङ की ओर इशारा किया और चिल्लाया :

"कुमारी, ख़ूबसूरत रानी हो।"

हुआई-यिङ इसे और बरदाश्त न कर सकी। वह अपना कोट लेने अमानती मालख़ाने गयी, और मेई-शुआङ को बिना बताये ही कि वह जा रही है, वहाँ से

बाहर निकल गयी। वह सूनसान गली में अभी दूर नहीं गयी थी कि एक कार उसके आगे निकली। यह किर्र से करके रुकी और एक आदमी कूदकर बाहर आ गया -- वही जापानी अफ़सर। नशे में धुत्त और शराब की गन्ध छोड़ते हुए वह एक असभ्य हँसी हँसा और बिना एक शब्द बोले, उस सहमती-सिकुड़ती लड़की को कार में खींच लिया, कार सरपट दौड़ चली। रात घिर आयी,और एक बार फिर वह सुनसान गली ख़ामोश हो गयी।

——:o:——

अध्याय 36

एक पूरा सप्ताह बीत गया।

होउ-जुई एक सुबह इतने सबेरे ताओ-चिङ के यहाँ पहुँचा कि जब वह वहाँ दाख़िल हुआ तो वह अभी बिस्तर से उठी ही थी। ज्योंही उसने प्रवेश किया, उसने उसका हाथ पकड़ लिया और चिल्लाया :

"मेरे पास तुम्हारे लिए बढ़िया ख़बर है। कई विभागों ने छात्रों का एक स्वयंशासी संघ गठित कर लिया है।" वह अपनी उत्तेजना में लगभग हकला सा रहा था।

"सच? कितने विभागों ने?" ताओ-चिङ ने कुछ कुछ अविश्वास के लहजे में पूछा।

"चीनी, भूगोल, अर्थशास्त्र और अंग्रेज़ी विभाग ने। ये सभी संघ प्रगतिशीलों के हाथ में हैं।" एक मुस्कान के साथ होउ-जुई ताओ-चिङ के बिस्तर पर बैठ गया, और अपने गालों को मलने लगा, जो ठण्ड से लाल हो गये थे। "जनगण को जागृत करो, उन्हें दर्शाओं कि वे इतने लस्त-पस्त क्यों हैं, और उन्हें आगे का रास्ता सुझाओ यही अनुभव है जिसे हमने पिछले कुछ दिनों के काम से प्राप्त किया है। तुमने हमें जो सलाह दी, वह बहुत मूल्यवान थी।"

"लेकिन विज्ञान और इंजीनियरी के छात्रों के बारे में?" ताओ-चिङ ने, उसकी आँखों में देखते हुए सवाल किया। "और इतिहास विभाग जो फ़तह के लिए सबसे कठोर क़िला है?"

होउ-जुई के चेहरे पर से मुस्कान ग़ायब हो गयी, और कुछ मिनट तक उसने कोई जवाब नहीं दिया।

"विज्ञान और इंजीनियरी के छात्र अपनी प्रयोगशाला के कामों और फ़ार्मूलों में बेहद मशगूल है। उनको राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेने के लिए उनकी किताबों और प्रयोगों से अलग करना इतना आसान नहीं हैं। तब भी मुझे यह कहने में खुशी हो रही है कि रसायन विज्ञान, भौतिकी और जीव विज्ञान विभागों के कई एक छात्र

आन्दोलित हो रहे हैं और हमारे निकट आ रहे हैं। मैं नहीं समझता कि स्वयंशासी साँचे को गठित करने के लिए उनको लेने में कोई अधिक कठिनाई होगी।"

"लेकिन होउ-जुई, हमें निश्चय ही वही पहले वाली ग़लती नहीं करनी चाहिए," ताओ-चिङ ने एक स्टूल पर बैठते हुए मन्द स्वर में चेतावनी दी। "छात्र संघ यानी समूचे विश्वविद्यालय के लिए छात्रों के एक नये संयुक्त स्वयंशासी संघ का संगठन यहाँ समूचे छात्र आन्दोलन के आगामी विकास को बहुत नज़दीकी तौर पर प्रभावित करेगा और यह तय करेगा कि पार्टी जापान का प्रतिरोध करने और राष्ट्र को बचाने के लिए छात्रों का नेतृत्व करने या आन्दोलन में शामिल होने में समर्थ हो सकेगी या नहीं। इसलिए यह अब भी हमारे आगे एक कठिन कार्यभार है।" जैसे-जैसे वह बोलती गयी, उसकी आवाज़ पहले से भी अधिक डूबती गयी। यह स्पष्ट था कि भविष्य की चिन्ता ने इस आरम्भिक सफलता की उसकी ख़ुशी को अभिभूत कर दिया था। होउ-जुई, इसको अच्छी तरह समझते हुए, आगे बोला :

"नहीं, लू फाङ, मेरे यह कहने का एक कारण है कि वह बहुत कठिन नहीं होगा। सबसे पहले तो, हमारी पिछली बातचीत के बाद एक नाभिक बन ही गया है – हमारे सभी तीनों पार्टी-सदस्य अब सक्रिय हैं। दूसरी बात यह कि प्रगतिशील यानी वे छात्र जो क्रान्ति से हमदर्दी रखते हैं और वे, जो देशभक्तिपूर्ण हैं और इस देश के भविष्य के प्रति चिन्तित हैं, सक्रिय हो रहे हैं। तीसरे, सामान्य छात्र अन्य प्रभाव से, और नयी स्थिति की रोशनी में पीछे-पीछे आने को तैयार हैं। प्रसंगवश मैंने तुमको बताया नहीं कि।" वह दबी हुई हँसी हँसा, और उसकी बड़ी-बड़ी आँखें ख़ुशी से चमक उठीं। "ली हुआई-यिङ अचानक बदल गयी है। उसने लिऊ ली से मुलाक़ात की और अश्रुपूरित हो उससे बताया कि उसने अपना नज़रिया बदल डालने का फ़ैसला कर लिया है, तथा गम्भीरता से उससे मदद की याचना की। वह जापानियों से इतनी कटु घृणा करने लगी है कि वह जब भी उनके बारे में बोलती है तो अपने दाँत पीसने लगती है। उसमें आये बदलाव की वजह से ही ऐसा हुआ कि अंग्रेज़ी विभाग में कल दोबारा चुनाव इतनी सुगमता से सम्पन्न हो गया। उस किताबी तेङ युन-सुआन ने भी अख़बार पढ़ना शुरू कर दिया है। चीनी साहित्य विभाग की मीटिंग में उसने पहली बार दोबारा चुनाव के पक्ष में अपना हाथ उठाया था।

"किस चीज़ ने हुआई-यिङ को अचानक इतना बदल दिया?" ताओ-चिङ आश्चर्य से पूछा। "क्या किसी ने उसे उकसाया है – या क्या बात है?"

"मैं स्वयं उससे यही प्रश्न पूछता रहा, लेकिन उसने स्पष्ट नहीं किया। तुम जाकर उससे बात कर सकती हो।"

"वाङ सियाओ-येन का क्या हालचाल है?" ताओ-चिङ ने बरबस पूछ लिया।

"दिन-ब-दिन अधिक उदास होती जा रही है। हम सबसे वह कतरा रही है।"

"बस इन्तज़ार करो, इतिहास विभाग में दोबारा चुनाव तक इन्तज़ार करो, तब वह देखेगी कि कौन पक्ष सही है।" बोलने के दौरान ही ताओ-चिङ ने महसूस किया कि उसके पैर सर्द हो गये थे, और नीचे की तरफ़ देखकर उसने पाया कि वह सारा समय नंगे पाँव रही थी। हँसते हुए उसने अपनी जुराबें चढ़ा लीं और आगे बोली :

"तुमको शुक्रिया, होउ-जुई आख़िरकार हम आगे बढ़ रहे हैं। लेकिन उत्तरी चीन में स्थिति और नाज़ुक हो गयी है और हमें ज़रूर आज शाम को इस विचार-विमर्श के लिए एक पार्टी मीटिंग करनी होगी कि आगे काम कैसे किया जाये। सू हुई हमारी मदद में आ रही है। वह आज रात में उपस्थित भी हो सकती है। क्या हम लिऊ ली के घर पर मीटिंग करें?"

"क्या सू हुई आ रही है। बहुत अच्छा।" होउ-जुई ने खींसे निपोर लीं। "हाँ, हम लिऊ ली के घर पर ही मीटिंग करें। यही ठीक रहेगा।"

जब होउ-जुई चला गया, तो ताओ-चिङ झटपट तैयार हो गयी, और उसने उस दिन अपने लिए जो जटिल कार्यभार तय किया था, उसे शुरू करने जाने से पहले कुछ पढ़ाई कर ली। वह सिर्फ़ पेइपिङ विश्वविद्यालय के ही कामों की इंचार्ज नहीं थी, बल्कि चीनी-फ्रेंच विश्वविद्यालय के भी कामों की इंचार्ज थी। वह इन दो विश्वविद्यालयों से बाहर कुछ लोगों के लिए पार्टी का सम्पर्क-माध्यम भी थी। उस दोपहर वह लिऊ हुआई-यिङ और तेङ युन-सुआन के यहाँ गयी। दरअसल उसने पूरी दोपहर उनके साथ बातचीत में बिता दी।

रात हो गयी।

पाँच पार्टी सदस्य लिऊ ली के छोटे कमरे में एकत्र हुए, जिनमें से हान लिन-फू और मेई हुई दोनों ही पार्टी के साथ सम्पर्क खो चुके थे, लेकिन एक उच्चतर पार्टी संगठन की संस्तुति पर फिर दाख़िल कर लिये गये थे। मीटिंग शुरू होने से पहले हान लिन-फू ने एक आलेख पढ़ा :

> जब से नानकिङ को राजधानी बनाया गया है, तब से अख़बारों में तीन लाख नौजवानों की मौत की ख़बरें छप चुकी हैं, जबकि लापता या गिरफ़्तारों की संख्या अनगिनत है। हत्या कर डालना ही काफ़ी नहीं, पकड़े गये लोग ज़िन्दा दफ़ना दिये जाते हैं, और कारावास में हमेशा ही क्रूर यातनाएँ दी जाती हैं। वे धरती पर एक नरक का निर्माण कर रहे हैं। अतीत में 'लाल क्रान्तिकारी' होना एक अपराध था। अब 'अच्छे पड़ोसी' की नीति का उल्लंघन भी अपराध है।

हान लिन-फू का स्वर बहुत ऊँचा नहीं था, लेकिन भावपूर्ण था, जो उसकी [illegible] आँखों के साथ कमरे में उपस्थित बाक़ी सभी का ध्यान खींचे हुए था। [illegible] आँखें मटकाते हुए, यह उद्‌गार व्यक्त करने के लिए रुक गया, "बहुत

बढ़िया लिखा गया है, यह क्वोमिन्ताङ केन्द्रीय कार्य समिति के छठे पूर्ण अधिवेशन का खुला पत्र। मैं नहीं जानता कि किसने इसे लिखा, लेकिन यह ज़ोरदार ढंग से क्वोमिन्ताङ के झूठे जनतन्त्र को बेनकाब करता है।"

"मैं वैसा नहीं समझती," लिऊ ली ने गम्भीरतापूर्वक प्रतिवाद किया। मैं नहीं समझ पाती कि हम क्यों दुश्मन से जनतन्त्र की माँग करें। क्वोमिन्ताङ के आका तो हम ग़रीब छात्र जो वक्तव्य या अपील देते हैं, उस पर कोई ध्यान ही नहीं देते। वे तो अब भी अपना सारा ख़ाली समय अपनी रखैलों का आलिंगन करने में ही ख़र्च करते हैं।"

"तुमने एक अगस्त वाले घोषणापत्र की मूलभावना को आत्मसात नहीं किया है लिऊ ली," होउ-जुई ने अपनी आँखों को सिकोड़ते हुए कहा। "लू फाङ ने मुझे यह समझने में मदद की कि दुश्मन से जनतन्त्र की माँग करना ग़लत नहीं है, जिसका सीधा कारण है कि राज्यसत्ता अब भी उन्हीं के हाथों में है। यही तो नयी बात है पार्टी की नयी नीति में। क्वोमिन्ताङ के पास एक आडम्बरी संविधान है – हमें दिखा देना होगा कि यह एक धोखाधड़ी है। अगर वे हमको जनतन्त्र प्रदान नहीं करते, तो वे अपने ही मुँह पर थप्पड़ मार लेंगे। पेइपिङ और तिएनत्सिन के दस कॉलेजों का घोषणापत्र पूरी तरह ठीक और बहुत ही दमदार है।"

"तुम दोनों जब भी मिलते हो, बहस करने लगते हो," वू यु-पिङ बोल पड़ा, जो बहुत ख़ामोश था। "तुम्हारी समझ से किसने यह खुला पत्र लिखा था? मेरा अनुमान सिङ हुआ विश्वविद्यालय के हुआङ चेन पर है। वह अब पेइपिङ के छात्र फ़ेडरेशन का नेता है। कहते हैं, वह योग्य है कृतसंकल्प और बहुत कड़ी मेहनत करने वाला आदमी है। वह उस विहान पत्रिका का सम्पादक है, जो द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद का परिचय देती है और काफ़ी सराही जा रही है। एक दिन एक छात्र ने मुझे अपनी एक कविता दिखायी। वह इतनी अच्छी है कि मैंने उसे अपने दिल में बैठा लिया है। क्या मैं इसे सुनाऊँ?"

"हाँ सुनाओ," लिऊ ली ने कहा। कमरा गर्म होता जा रहा था, इसलिए उसने अपना जीर्ण-शीर्ण नीला गद्देदार कोट उतार लिया, जिसके नीचे वह एक लाल रंग का कार्डिगन पहने हुए थी।

वू यु-पिङ ने एक क़लम और नोटबुक निकाली और निम्नलिखित पंक्तियाँ सुनाते हुए नोट करता गया।

> रात है लम्बी, आगे का पथ है अनजाना,
> तारे उदास लटके हैं, चिर-प्रतीक्षित विहान में देरी,
> लज्जित हूँ मैं सोच रहा एकाकी, कार्यभार है अभी अधूरे,
> फिर भी प्रबल आस्था है, इच्छा नहीं ओर बेहतर नसीब की।

अब नहीं फ़िक्र हे अपनी, अब नहीं सोचता अपनी रक्षा,
अब तो मेरा सारा रक्त बहेगा, लड़ते-लड़ते-लड़ते ही;
मत बोलो कि पथ लम्बा है, विहान आ रहा धीरे-धीरे;
चिड़ियाँ चहचहाती हैं, सूरज निकल रहा है ठीक सामने ही तो!

होउ-जुई, मेई हुई और हान लिन-फू इस मन्द स्वर किन्तु भावप्रवण कविता-पाठ को सुनने के लिए वू यु-पिङ के चारों ओर जमा हो गये थे। लिऊ ली ने ग़ौर से सुनने के दौरान ही उन्हें कुछ पानी पिलाया। कविता ने उन सभी को ज़ोरदार ढंग से आकर्षित किया, कारण कि इसने उनकी अपनी भावनाओं को शब्दों में व्यक्त कर दिया था।

"चिड़ियाँ चहचहाती हैं, सूरज निकल रहा है ठीक सामने ही तो! यह एक अच्छी पंक्ति है। यह उस बात को बयान कर देती है जो हर व्यक्ति के दिमाग़ में है, लेकिन किसी ने शब्दों में प्रकट नहीं किया है," लिऊ ली ने प्याला हाथ में लिये उद्‌गार व्यक्त किया, तभी ताओ-चिङ और सू हुई अन्दर आ गयी।

बिना किसी औपचारिक सलाम-बन्दगी या अनावश्यक आरम्भिक भूमिका के पार्टी ब्रांच की मीटिंग शुरू हो गयी।

होउ-जुई ने कुछेक शब्द कहे और उसके बाद ताओ चिङ से बोलने का प्रस्ताव किया, जिसने एक मन्द, सुविचारित स्वर में बोलना शुरू किया।

"कॉमरेड, वर्तमान स्थिति इस तरह है : पूर्वी होपेई कम्युनिस्ट विरोधी स्वायत्तशासी सरकार की स्थापना के बाद से वे ग़द्दार होपेई चाहार राजनीतिक परिषद गठित करने की योजना बना रहे हैं। देश के लिए ख़तरा रोज़-ब-रोज़ बढ़ता जा रहा है। यह हमारी पार्टी और चीनी जनता के क्रान्तिकारी संघर्ष के लिए एक नयी समस्या उपस्थित करता है। एक अगस्तवाला घोषणापत्र बताता है कि हमें जापान से लड़ने के लिए और हमलावरों को मार भगाने के लिए, गृह युद्ध बन्द करने हेतु, जहाँ तक हो सके सभी लोगों को एकजुट करना होगा। यही कारण है कि हमें उन लोगों को जागृत करने में देरी नहीं करनी है, जो हमारी राष्ट्रीय प्रतिरक्षा के हिरावल हैं। अब पीकिङ विश्वविद्यालय पर आया जाये – यह विश्वविद्यालय जिसे चार मई आन्दोलन की शानदार परम्परा का गर्व है – हम देखते हैं कि पिछले दो वर्षों के दौरान पिछड़ गया है। यहाँ त्रॉत्स्कीपन्थी, सी.सी गुट के सदस्य और अन्य प्रतिक्रियावादी सक्रिय हो रहे हैं। हालाँकि अब हालात सुधरने लगे हैं, लेकिन अभी सन्तोषजनक होने से काफ़ी दूर है। परिस्थितियों की माँग है कि हम जल्दी से इस स्थिति को पलटने के तरीक़े और उपाय ढूँढ़ निकालें। निर्णायक कार्रवाई का समय आ गया है और इसी मसले पर विचार-विमर्श करने के लिए आज हम यहाँ एकत्र हुए हैं।"

सू हुई दीवार के एक कोने के सहारे टिककर बैठी हुई थी। उसके छोटे, कृश चेहरे पर सन्तोष की एक फीकी मुस्कान थी। वह सोच रही थी, "कुछ ही महीने तो हुए हैं तबसे, जब मैंने पिछली बार ताओ-चिङ को देखा था, और इतने ही समय में वह बिल्कुल एक भिन्न व्यक्ति बन गयी है। कितना विरोधाभास है आज के उसके बातचीत करने के ढंग और कुछ वर्ष पहले अठारह मार्च स्मृति बैठक में उसकी घबराहट के बीच, जब वह भीड़ के कगार पर खड़ी थी और नारे बोलने का भी साहस नहीं कर पा रही थी।" इसी बीच ताओ-चिङ फिर बोलने लगी :

"तुम्हारे लिए कुछ ख़बरें हैं कॉमरेड। ली हुआई-यिङ, हमारी रूप की रानी हाल ही में काफ़ी बेहतर रूप से बदल गयी हैं। कारण कुछ अपकीर्तिकर ही हैं – पेइपिङ के प्रमुख ग़द्दारों की गुपचुप सहमति से, जापानी साम्राज्यवादी सेना के एक अफ़सर द्वारा उसके साथ बलात्कार किया गया। हम उसकी असहाय बेचैनी और कटुता की भलीभाँति कल्पना कर सकते हैं। लिऊ ली और मैं उसे देखने गयी और उससे कहा कि जब तक हमारा पूरा समाज बदल नहीं जाता, तब तक कोई भी एक इज़्ज़तदार ज़िन्दगी जीने की उम्मीद नहीं कर सकता। तभी से वह हम लोगों के क़रीब खिंचती आ रही है। उसका मामला एक सबूत है कि अगर हम जानते हैं कि बहुसंख्यक छात्रों को कैसे मार्गदर्शन दिया जाये, तो वे राष्ट्र को बचाने के लिए अन्तत: क्रान्ति में शामिल हो जायेंगे।"

सू हुई ने उस समूह पर एक सरसरी नज़र डालते हुए ताओ-चिङ के बाद कहा :

"कॉमरेड, घरेलू और अन्तरराष्ट्रीय दोनों ही स्थितियाँ हमारे क्रान्तिकारी संघर्ष के अनुकूल है। दुनिया के उत्पीड़ित राष्ट्रों के मेहनतकश जनगण राष्ट्रीय मुक्ति के शौर्यपूर्ण संघर्ष में उठ खड़े हो रहे हैं। इटली के विरुद्ध अबीसीनिया के निवासियों के संघर्ष और ब्रिटेन के विरुद्ध मिस्रवासियों के संघर्ष ने हमारी जनता को बहुत प्रोत्साहित किया है। जहाँ तक आन्तरिक स्थिति का सम्बन्ध है, कॉमरेड माओ त्से-तुङ विजय हासिल करते हुए उत्तर शेन्सी पहुँच गये हैं, लाल सेना की कई यूनिटें संयुक्त सैन्य शक्ति बन गयी हैं। और पार्टी ने अपना एक अगस्त वाला घोषणापत्र जारी किया है – इन सभी बातों ने चीन में क्रान्ति की प्रगति में प्रचण्ड योगदान दिया है। इसके अतिरिक्त, पार्टी ने उत्तरी चीन की जनता के लिए एक खुला पत्र प्रकाशित किया है, जिसमें उन्हें आक्रमण के विरुद्ध संगठित कर्रवाई में उठ खड़े होने के लिए आह्वान किया गया है। जहाँ तक छात्रों का सम्बन्ध है, पेइपिङ में छात्र आन्दोलन चार वर्षों की चुप्पी के बाद आगे की ओर एक बड़ा डग भर रहा है। पेइपिङ और तिएनत्सिन के दस कॉलेजों के घोषणापत्र ने हमारी गतिविधियों के भविष्य को विस्तृत कर दिया है, और पेइपिङ और तिएनत्सिन के छात्र फ़ेडरेशन के निर्माण की गति को तेज़ कर दिया है। कई विश्वविद्यालयों और हाईस्कूलों में पार्टी

अपने प्रभाव का अहसास करा रही है। हम छात्रों के व्यापक तबकों को एकबद्ध कर रहे हैं, क़दम-ब-क़दम उनको उनके अध्ययन के संकीर्ण दायरे से बाहर खींचकर, जापान का प्रतिरोध करने और चीन को बचाने के महान आन्दोलन में ला रहे हैं। जहाँ तक पीकिङ विश्वविद्यालय की बात है, मैं स्वयं वहाँ एक छात्रा थी और जानती हूँ कि वहाँ कितना उत्पीड़न होता रहा है। इस उत्पीड़न के फलस्वरूप छात्रों की एक बड़ी संख्या निष्क्रिय बन गयी, और उन्होंने अपने सिर अपनी किताबों में दफ़ना लिये, वे इस बात पर कोई ध्यान नहीं देते कि उनके इर्दगिर्द क्या हो रहा है, लेकिन आज कटु सच्चाइयाँ धीरे-धीरे उनकी आँखें खोल रही हैं। यही कारण है कि हमें उनको मार्गदर्शन देने के लिए अपनी सामर्थ्यभर कोशिश करनी चाहिए, उन्हें एकजुट करना चाहिए और उनको उनके सीमित घेरे से निकालकर राष्ट्रीय मुक्ति के पवित्र रास्ते पर लाकर, उनका नेतृत्व करना चाहिए। इस दिशा में पहला क़दम मेरी समझ से, छात्रों के एक स्वयंशासी संघ का निर्माण है। और हमें अवश्य इस संघ का नेतृत्व सँभालना चाहिए, ताकि हम इसे पूरे शहर के छात्र-आन्दोलन के साथ संयुक्त कर सकें।"

सू हुई की चमकदार, शोख आँखें बारी-बारी से हरेक के चेहरे पर दौड़ती गयीं, और एक क्षणिक विराम के बाद वह फिर बोलने लगी, "लेकिन हमें अवश्य समझना चाहिए कि हमारा वर्तमान नारा है : राष्ट्रीय मुक्ति के लिए संघर्ष। हमें निश्चय ही अति वामपन्थी नारों के इस्तेमाल की ग़लती फिर नहीं करनी चाहिए, जो उन लोगों को दूर छिटका देगी जिनकी वर्ग-चेतना अल्प है। ग़लत नेतृत्व के कारण अतीत में हमें अपने काम में भारी नुक़सान उठाने पड़े। अब चेयरमैन माओ के सही मार्ग में चीज़ें स्वभावतः एकदम भिन्न होंगी।"

बाक़ी ने अपने-अपने दृष्टिकोण प्रस्तुत किये कि कैसे विभिन्न कक्षाओं में प्रतिक्रियावादियों के छोटे-छोटे समूहों को चकनाचूर किया जाये, शक्तियों की पाँतबन्दी का कैसे अनुमान किया जाये और प्रगतिशीलों को कैसे दृढ़ बनाया जाये। जब अन्त में बहस इतिहास विभाग के दोबारा चुनाव के मुद्दे पर आयी, तो वू यु-पिङ ने काग़ज़ का एक टुकड़ा निकाला और मुस्कुराकर कहा :

"इससे वाङ चुङ और दूसरे प्रतिक्रियावादी बेनकाब कर दिये जायेंगे।"

"यह रहस्यमय काग़ज़ क्या है? लिऊ ली ने उससे उसे लेने की कोशिश करते हुए पूछा। लेकिन वू यु-पिङ ने अपना हाथ पीछे खींचा और बोला :

"यह चरम गोपनीय है। मुझे भारी मुसीबत झेलनी पड़ी थी इसे प्राप्त करने में। मैं इसे होउ जुई को दे देता हूँ, जो इसे दुश्मन से लड़ने में एक हथियार के रूप में इस्तेमाल करेगा।"

"यह वाङ चुङ द्वारा हस्ताक्षर की गयी एक रसीद है जिसमें उसने क्वोमिन्ताङ से आर्थिक सहायता प्राप्त करना स्वीकार किया है।" होउ-जुई इस टुकड़े को लेता

हुए मुस्कुराया। "एक बढ़िया हथियार है, बिल्कुल सही। लेकिन यह खुद में ही पर्याप्त नहीं है, हमें एक उग्र संघर्ष के लिए तैयार होना होगा।"

"देखें तो कैसे वह कम्बख़्त वाङ सियाओ-येन इस पर अपनी प्रतिक्रिया करती है।" लिऊ ली यह कहे बिना न रह सकी।

आगामी संघर्ष में अपनाये जाने वाले विशिष्ट उपायों पर आगे विचार-विमर्श करने के बाद पार्टी सदस्य उत्तेजना और विश्वास से भरकर चले गये।

ताओ-चिङ सू हुई के साथ हो ली। रात सर्द थी और बर्फ़ पड़नी शुरू हो गयी थी।

"तुम एक ऐसी शिष्या हो, जो अपने उस्ताद से भी बढ़-चढ़कर है," सू हुई ने कहा। "मैं नहीं जान पा रही कि क्यों बड़े भाई च्याङ ने मुझे तुम्हारी मदद के लिए यहाँ भेजा। मैं देख रही हूँ कि तुमने मुझसे काफ़ी तेज़ गति से प्रगति की है।"

एक उलझनभरी मुस्कान के साथ ताओ-चिङ ने उत्तर दिया :

"ऐसा मत कहो, सू हुई। मैं तुमसे बहुत पीछे हूँ। मेरे अनुभव की कमी और अनाड़ीपन के चलते ही तो अभी हाल तक पीकिङ विश्वविद्यालय में हमारा काम तनिक भी आगे नहीं बढ़ पा रहा था।"

सू हुई ने एक मुस्कान के साथ ताओ-चिङ का हाथ कसकर पकड़ लिया और एक क्षण की ख़ामोशी के बाद कहा :

"एक कम्युनिस्ट कभी अपनी सफलताओं पर ही नहीं रुका रहता। हौसला बढ़ाती रहो, ताओ-चिङ और बहुत जल्दी ही पेइपिङ एक ज्वालामुखी की भाँति, दुश्मन-कैम्प की ठीक छाती में से ही फूट निकलेगा। हमें इस भाग को प्रज्वलित करने के लिए प्राण-प्रण से लग जाना चाहिए।

कृतज्ञता भरी आँखों से सू हुई को एकटक देखती हुई, ताओ-चिङ कॉमरेड भावना के अवर्णनीय अहसास से प्रसन्न हो उठी।

——:o:——

अध्याय 37

एक शुरुआती जाड़े की दोपहर की मद्धिम होती जा रही रोशनी में वाङ सियाओ-येन, अपनी बाँह के नीचे कुछ किताबें दबाये खोयी-खोयी-सी अपने हॉस्टल की तरफ़ जा रही थी। अचानक वह ताई यू द्वारा रोक दी गयी, जो चश्मा लगाये और भूरे सर्ज का रूईभरा गाऊन पहने हुए था।

"कहाँ जा रही हो, सियाओ-येन?" उसके पीले चेहरे पर एक फीकी मुस्कान थी।

"अरे, तुम! मैं क्यों तुमको एक पूरे सप्ताह तक नहीं देख पायी?" सियाओ-येन

की आँखें चौड़ी फैल गयीं, उसका चेहरा आसक्त हो उठा और हृदय धक-धक करने लगा।

ताई यू क़रीब खिंच आया और उसके हाथ को स्पर्श करते हुए पूछा, "क्या तुम्हारे पास अभी ख़ाली समय है? मैं तुमसे बातचीत करना चाहूँगा।"

"क्या हम अपने कमरे पर चलें?" सियाओ-येन ने अपने चश्मे को ठीक किया, और उत्सुकतापूर्वक उसकी ओर देखा।

"नहीं, आओ पेइहाई पार्क की ओर चलें। हम वहाँ लम्बे समय से नहीं गये।"

सियाओ-येन ने सहमति में सिर हिलाया, तभी ताई यू ने उसकी किताबें थाम लीं, और वे अगल-बग़ल होकर चल दिये।

चूँकि जाड़ा था, इसलिए पार्क वीरान ओर मनहूस पड़ा था। जब वे एक मण्डप के पास पहुँच गये, तो वे एक जंगले की बग़ल में एक बेंच पर बैठ गये।

पहले यह देखकर कि आसपास कोई न था, ताई यू ने सियाओ-येन का हाथ थामा और उसे चूम लिया। उसकी उभरी हुई तेजहीन आँखों में सियाओ येन के उदास चिन्तित चेहरे का मुआइना किया।

"क्या बात है, सियाओ-येन? तुम दिन-ब-दिन अधिक उदास दिखती हो। हम क्यों न तुरन्त शादी कर लें। तब तुम बेहतर महसूस करोगी। लेकिन तुम इतनी ज़िद्दी हो, तुम अपने कौमार्य से चिपके रहने के अन्दाज़ में इतनी सामन्ती हो कि सचमुच मैं नहीं जान पाता कि तुम्हारे साथ क्या करूँ।"

"मूर्खतापूर्ण बातें मत करो।" सियाओ-येन ने प्रतिवाद किया। "मैं अभी कोई [illegible] बूढ़ी कुमारी नहीं हूँ, तब फिर ऐसी बात क्यों करते हो, जैसेकि मैं वही [illegible]" उसने धीरे से उसका हाथ हटाते हुए मुस्कुरा दिया और नर्मी से कहा, "मैं नहीं जानती कि क्यों मैं इतनी बुझी-बुझी-सी महसूस करती हूँ, चुन-त्साई। क्या तुम वाङ के बारे में कुछ ग़लतफहमी के शिकार हो गये हो? मैं महसूस करती हूँ कि वह अच्छा आदमी नहीं है। वह लड़कियों के पीछे दौड़ता रहता है, लोगों को [illegible] धमकाता रहता है और उन्हें पीट भी देता है। कैसे उस जैसा कोई व्यक्ति एक [illegible] हो सकता है? वाक़ई मैं उसके मातहत काम नहीं कर सकती।"

[illegible] हुए घास में अपने पैरों को रगड़ते हुए ताई यू ने बड़े अल्हड़ अन्दाज़ में कहा, "वाङ चुङ की आलोचना होनी चाहिए, लेकिन भूमिगत काम ऐसे ही [illegible] है सियाओ-येन। नेतृत्व बहुत सख़्त निगरानी नहीं रख सकता है। प्रसंगवश, [illegible] ताओ-चिङ से मिली हो? तुम्हारा उसके साथ अब कैसा चल रहा है?"

"[illegible] बात मत करो।" सियाओ-येन ने चिढ़कर कहा। "वह अब [illegible] में नहीं है, तब मैं उससे कैसे देख सकती हूँ?" वह स्पष्ट नहीं कर [illegible] क्यों इस तरह से बोली। दरअसल, उसने ताओ-चिङ को देखा था,

वे दोनों एक-दूसरे से कतरा गयी थीं। "चुन-त्साई, अब आगे उसकी चर्चा मत करना... मैं तुम पर विश्वास करती हूँ..." वह उस बड़ी झील की ओर मुड़कर शून्यभाव से घूरने लगी, जो हाल ही में जम गयी थी।

"तुम ग़लती पर हो सियाओ-येन। कैसे एक कम्युनिस्ट अपनी व्यक्तिगत भावनाओं को काम में अड़ंगेबाज़ी करने दे सकता है? बेशक, लिन ताओ-चिङ विश्वविद्यालय में ही है। तुम मुझे झाँसा नहीं दे सकती। वह विश्वविद्यालय में सिर्फ़ है ही नहीं, बल्कि बहुत सक्रिय भी है। कुछ अपने ढंग के प्रगतिशील, सिर्फ़ पिछड़े छात्रों को ही नहीं, बल्कि ली हुआई-यिङ जैसी लड़कियों को भी अपने पक्ष में कर लेने के लिए वे सबकुछ कर रहे हैं, जो वे कर सकते हैं। कुछ लोग उनके मिथ्याडम्बरी नारों के झाँसे में आ गये हैं और जापान का प्रतिरोध करने और चीन को बचाने के लिए एक संयुक्त मोर्चे का आह्वान कर रहे हैं। क्या तुम्हें दिखायी नहीं देता कि वे क्या नुक़सान कर रहे हैं? क्या तुम इतनी ग़ैरज़िम्मेदार हो सकती हो कि उन्हें निर्दोष नौजवानों को धोखा देने दोगी?"

"मैं नहीं देखती कि वे क्या नुक़सान कर रहे हैं," सियाओ-येन बुदबुदायी। "चुन-त्साई क्या तुम ग़लती पर नहीं हो? मैं महसूस करती हूँ कि तुम्हीं अधिक से अधिक भ्रमित होते जा रहे हो। मैं कितना चाहती हूँ कि तुम्हारे साथ रहूँ, फिर भी मैं बेहद डरती हूँ। यह एक प्रकार की मानसिक यातना है।" वह अपनी जैकेट की किनारी को ठीक करने के बहाने नीचे झुक गयी और एक बूँद आँसू ताई यू की निकोटिन की दाग लगी उँगलियों पर टपक पड़ा।

दोनों ख़ामोश बने रहे। ताई यू ने एक सिगरेट जलायी, और अल्हड़ अन्दाज़ से कश लेते हुए, एक खम्भे से अपनी पीठ टिका दी। जब उसने देखा कि डूबते हुए सूरज का नारंगी गोला कुहराच्छन्न पश्चिमी पहाड़ी के पीछे आधा लुप्त हो चुका है, तो उसने अपनी सिगरेट की ठूँठ फेंक दी और मुड़कर सियाओ-येन की ओर देखते हुए, उदासी से भरकर बोला :

"मैं तुमको गम्भीर चेतावनी दे दूँ सियाओ-येन, कि तुम एक बहुत ही ख़तरनाक मनःस्थिति में हो। तुम्हारे अन्दर कोई राजनीतिक सतर्कता नहीं है – तुम सही को ग़लत से अलग नहीं कर सकती – और तुम पार्टी अनुशासन की अवहेलना करती हो। अगर तुम ऐसे ही करती रही, तो तुम अपनेआप को बरबाद कर डालोगी। तुम्हें अवश्य जानना चाहिए कि मैंने अपनी शक्तिभर तुम्हारी मदद की है और तुम्हारी रक्षा की है, फिर भी तुम मुझ पर शक करने लगी हो। यह शेखचिल्लीपन है। ठीक है, अगर तुम मुझ पर विश्वास नहीं करती तो जाओ उस ग़द्दार लिन ताओ-चिङ के पास और मेरे ख़िलाफ़ मुख़बिरी करो। आख़िर संयुक्त मोर्चा है क्या? एक पूरी तरह से ग़लत, समर्पणवादी नीति। यह दुश्मन से सन्धि-प्रस्ताव करना है, युद्ध-सरदारों, नौकरशाहों और पूँजीपतियों के माथे पर सेहरा बाँधना। ये ही तो वे आदर्श हैं जिनकी

फेरी लिन ताओ-चिङ ओर उसके गिरोह वाले लगा रहे हैं। कैसे तुम भी ऐसी मूर्खता में विश्वास कर सकती हो, सियाओ-येन? यही कारण है कि मैं कहता हूँ, तुम एक ख़तरनाक स्थिति में हो।"

सियाओ-येन सुनते-सुनते गम्भीर हो उठी थी, और अब वह पूरी तरह से अपने वाक्पटु प्रेमी और राजनीतिक नेता की डाँट-फटकार से आश्वस्त हो गयी। सिर झुकाये तन्मय होकर उसकी बातें सुन लेने के बाद उसने उत्तर देने के लिए अपनी नज़रें उठायीं :

"तुम जानते हो कि मैं कितनी अनुभवहीन हूँ चुन-त्साई। अभी हाल ही में तो मैं क्रान्ति में शामिल हुई हूँ, इसलिए तमाम समस्याएँ हैं, जिनको मैं पूरी तरह नहीं समझ पाती। ख़ैर, चिन्ता मत करो। अब से मैं पूरी-पूरी कोशिश करूँगी।"

"यह अच्छा है।" ताई यू ने उसका हाथ थाम लिया और उसकी कान्तिहीन आँखें चालाकी और आत्मतुष्टि के भाव से चमक उठीं। एक बार फिर उसने उस दब्बू, ईमानदार लड़की को अपनी इच्छा के वशीभूत कर लिया। "आओ चलते-चलते बातें करें," उसने उसकी बाँह थामते हुए सुझाव दिया।

"सियाओ-येन, तुम्हें अवश्य अपने को ग़लत विचारों से बचाना होगा; वे जैसे ही पार्क के पिछले फाटक की ओर तटवर्ती रास्ते से होकर चलने लगे, उसने उसे चेतावनी दी। "हमें निश्चय ही उन्हें राष्ट्रीय जापान-विरोधी संयुक्त मोर्चे के नाम पर भोले-भाले छात्रों को धोखा देने और अपने पक्ष में क़ायल कर लेने नहीं देना चाहिए। हर विभाग में छात्रों की स्वयंशासी संस्थाएँ बनाने की वह योजना अपने लिए सत्ता हथियारे की प्रतिक्रियावादियों की साज़िश के अलावा और कुछ नहीं है। मुझे यक़ीन है कि तुम यह सबकुछ जानती हो। अत: हमें एक दृढ़ सर्वहारा स्टैण्ड लेना चाहिए और सभी बुर्जुआ विचारों से निमर्म संघर्ष करना चाहिए।"

सियाओ-येन ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह पूरी तरह से अपने ही विचारों में खोयी हुई थी। लेकिन वे अभी फाटक पर पहुँचने ही वाले थे कि वह उससे आगे निकल गयी, और अलग हटकर एक पेड़ के नीचे चली गयी।

"एक मिनट यहाँ आओ।" वह पुकारी।

ताई यू वहाँ आया, और उसकी बग़ल में खड़ा हो गया।

"मुझे ईमानदारी से बताओ, चुन-त्साई क्या तुम सचमुच...वास्तव में मुझसे प्यार करते हो?"

उसकी सूजी हुई आँखें विस्मय में उसको घूरने लगीं।

"क्या! क्या तुमको मुझ पर भरोसा नहीं है?"

सियाओ-येन ने अपना सिर झुका लिया और उससे नज़रें बचाती हुई घबराहट में अपना रूमाल ऐंठने लगी।

"मैं जानती हूँ कि तुम काफ़ी-कुछ मुझसे छिपाते रहते हो।"

"क्या?"

"तुम मुझे कभी नहीं बताओगे कि तुम कहाँ रहते हो, यह एक बात है। तुम कहते हो कि तुम पीते नहीं हो, फिर भी मैं तुम्हारी साँस में शराब की गन्ध पाती हूँ। और..."

"और क्या?"

"एकाधिक बार तुमसे पाउडर और इत्र की गन्ध भी मिली है...चुन-त्साई, अगर तुम किसी और को प्यार करते हो, तो सीधे मुझको बता दो, मैं कोई एतराज़ नहीं करूँगी।" उसका चेहरा जमी हुई झील की भाँति पीला था।

ताई यू सदा की भाँति शान्त बना हुआ, सिर्फ़ मुस्कुराकर रह गया। उसके कन्धे को थपथपाकर वह फुसफुसाया :

"मूर्ख मत बनो, क्षुद्र किताबी कीड़े। तुम पूरी तरह भूल गयी हो कि हम किस तरह के लोग हैं – श्वेत क्षेत्रों में भूमिगत कार्यकर्ता। मेरे ऊपर इतनी भारी ज़िम्मेदारियाँ हैं कि मेरे लिए किसी को बताना असम्भव है कि मैं कहाँ रहता हूँ? इसके अलावा मैं एक जगह लम्बे समय तक नहीं रहता। यह अनुशासन का मामला है, सख़्त अनुशासन, जिसे कोई भी नहीं तोड़ सकता। यही कारण है कि मैं तुमसे भी नहीं बता सकता कि मैं कहाँ रहता हूँ। तुम्हें इसको समझना चाहिए। और जहाँ तक शराब और सौन्दर्य-प्रसाधनों का सवाल है – सचमुच सियाओ-येन, तुम बेहद बुद्धू हो। मुझे तुम्हारे सिवा दूसरी महिला कॉमरेडों के साथ काम करना पड़ता है प्यारी! कभी-कभी छद्म वेष धरके हम प्रेमी-प्रेमिका का स्वांग करते हैं और अगल-बग़ल होकर चलते हैं। जहाँ तक शराब की गन्ध का सवाल है, हमें दुश्मन को बेवक़ूफ़ बनाने के लिए कभी-कभी पियक्कड़ होने का स्वांग भी करना पड़ता है। क्या तुम इसे नहीं समझ सकती प्यारी?"

सियाओ-येन कुछ ज़बरदस्ती अप्रसन्नता से मुस्कुरायी।

जब वे जुदा हुए तो वह घर गयी और अपने पिता को अहाते में टहलते हुए पाया। उसने उनकी ओर उदास भाव से देखा और झटपट अपने कमरे की ओर चल दी। प्रोफ़ेसर वाङ चकित होकर पीछे से पुकार उठें :

"सियाओ-येन, सियाओ-येन! क्या बात है?"

वह रुक गयी और एक हल्की-सी मुस्कुराहट के साथ मुख़ातिब हुई :

"कुछ नहीं डैडी। क्या तुमने आज का अख़बार पढ़ा है? क्या तुमने क्वोमिन्ताङ केन्द्रीय कार्य समिति के पाँचवें पूर्ण अधिवेशन में च्याङ काई शेक का उद्घाटन भाषण पढ़ा?"

"हाँ पढ़ा। वे पाजी, जो देश को बेच रहे हैं और फिर खोखली बातों से जनता को भरमा रहे हैं। वे कहते हैं, जब तक शान्ति की सारी उम्मीद ख़त्म न हो जाये। तब तक हम शान्ति-प्रयास नहीं छोड़ेंगे, जब तक कि स्थिति निराशाजनक न हो

जाये, हम हल्केपन से बलिदान करने की बात नहीं करेंगे? क्या अब भी स्थिति निराशाजनक नहीं हुई है?" अपनी वाक्पटुता की रौ में प्रोफ़ेसर ने अपनी गम्भीर आँखें अपनी बेटी पर टिका दीं, लेकिन वह पहले ही से इतनी चिन्ताग्रस्त थी कि किसी बहस में कोई उपक्रम नहीं कर सकती थी। अपने पिता को यह बताते हुए कि वह कुछ अस्वस्थ महसूस कर रही है। वह सीधे अपने कमरे में चली गयी।

अन्दर प्रवेश करने पर उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि यू शू-सिऊ ड्रेसिंग टेबल के पास बैठकर आईने के सामने अपने बालों में कन्धी कर रही थी। सियाओ-येन पर दृष्टि पड़ते ही उस लड़की ने कन्धी रख दी, और उससे गले मिलने के लिए उछल पड़ी।

"सियाओ-येन, आख़िर तुम वापस आ ही गयी। मैं तो लगभग मान बैठी थी कि तुमको देख नहीं पाऊँगी। तुम्हें मालूम है कि आज रात मैं दूर जा रही हूँ? मैं पेइपिङ छोड़ रही हूँ।"

"तुम कहाँ जा रही हो?" सियाओ-येन ने उसका हाथ थाम लिया। "इस पूरे समय में तुम मुझसे मिली क्यों नहीं?"

शू-सिऊ ने सियाओ-येन की बाँह थाम ली और उसके साथ बिस्तर के कोर पर बैठ गयी।

"मैं स्कूल के काम में इतनी व्यस्त थी और इतने दूसरे सारे काम करने थे कि मुझे दोस्तों के यहाँ जाने का समय ही नहीं मिला। मैंने ताओ चिङ को भी लम्बे समय से नहीं देखा है। क्या तुमने उसे इधर हाल में देखा है? तुम जानना चाहती होगी कि मैं कहाँ जा रही हूँ? तुम कभी अनुमान नहीं कर सकोगी। पार्टी ने मेरे अनुरोध को मान लिया है – मैं पढ़ाई बन्द कर देने वाली हूँ और फ़ैक्टरी मज़दूरों के साथ काम करने एक फ़ैक्टरी में जाने वाली हूँ। क्या तुम इस पर विश्वास कर सकती हो? मैं मज़दूरों के बीच एक मज़दूर बनने जा रही हूँ।" उत्तेजना ने उसे लगभग पागल बना दिया था।

"तुम किस फ़ैक्टरी में जा रही हो? वह कहाँ है?" सियाओ-येन ने एक मन्द मुस्कान के साथ पूछा। शू-सिऊ के आगमन ने उसे प्रसन्न कर दिया था, उसने उसकी अपनी मुसीबतों को कुछ देर के लिए भूल जाने में मदद की थी।

शू-सिऊ ने अपना सिर हिलाते हुए आँखें मटकायीं और मुँह बना लिया।

"मैं तुमको या और किसी का भी नहीं बता सकती," वह चिल्लायी। "बात यही है कि मैं मज़दूरों की क़तार में शामिल होने जा रही हूँ। मैं बहुत खुश हूँ।"

सियाओ-येन ने उसका कन्धा थपथपाया और फिर मुस्कुराकर पूछा : "क्या तुम्हारे माँ-बाप एक मज़दूर बनने और सभी प्रकार की कठिनाइयाँ झेलने के लिए तुम्हें अपनी पढ़ाई और घर पर तुम्हारी आरामदायक ज़िन्दगी को छोड़ने के लिए राज़ी हो गये हैं?"

"मैं उनको बताकर नहीं जा रही हूँ। मैं आज रात को भाग जाने वाली हूँ और वे मुझको पा नहीं सकेंगे। जब मैं अलविदा कहने के लिए आयी और तुम अन्दर नहीं थी, तो मैं तुरन्त तुमको फ़ोन करने वाली थी और कहने वाली थी कि तुम वापस आओ, तभी तुमने वापस आकर मुझे इस परेशानी से बचा लिया। सियाओ-येन, कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता कि पार्टी कौन-सा काम मुझको देती है, मैं इसे खुशी-खुशी स्वीकार करूँगी। मैं बहुत, बहुत खुश हूँ।"

शू-सिऊ के दमकते चेहरे के दृढ़निश्चय और उसकी तरुणोचित उत्सुकता से सियाओ-येन का हृदय प्रफुल्लित हो उठा और वह उन सभी समस्याओं को भूल गयी जो कई दिनों से उसके मन पर बोझ बनी हुई थीं। उस आकर्षक लड़की के क़रीब झुककर वह एक स्नेहभरी मुस्कुराहट से बोली :

"तुम एक बढ़िया क्रान्तिकारी बनने जा रही हो मेरी प्यारी। मुझे अवश्य तुम्हारे उदाहरण का अनुसरण करना चाहिए।"

अचानक शू-सिऊ उछलकर खड़ी हो गयी, और ड्रेसिंग टेबल से ख़ूबसूरत लाल कंघी उठा ली। फिर सियाओ-येन के बग़ल में आकर खड़ी हो गयी और बोली :

"तुमको मुझसे कुछ नहीं सीखना है, सियाओ-येन। तुम उस दोस्त से सीख सकती हो जिसने यह कंघी मुझे दी है। जानती हो कि वह कौन थी? लिन हुङ! अत्यन्त बहादुरी के साथ मौत पर परवान चढ़ने जाने से पहले, उसने यह कंघी मुझे दी थी, और तभी से मैं जब भी इसे देखती हूँ, मैं उसके बारे में सोचती हूँ, और मैं महसूस करती हूँ कि जैसे मेरे पंख उग आये हों, जैसे अचानक मुझमें प्रचण्ड सामर्थ्य आ गयी हो। अतः जब कभी मुझ पर कठिनाई आती है, जब कोई चीज़ मेरे प्रतिकूल पड़ती है, तो मैं इस कंघी को उठा लेती हूँ और इससे अपने बाल सँवारने लगती हूँ। तब मैं महसूस करती हूँ, मानो मैं ही लिन हुङ थी, जो किसी चीज़ से नहीं डरती थी और किसी बात से नहीं घबराती थी। अब, जबकि मैं घर छोड़ रही हूँ। मैं उदासी महसूस किये बिना नहीं रह सकती – मैं अपनी माँ की इकलौती बेटी हूँ, तुम जानती हो। जब मैं चली जाऊँगी, तो मेरा अभाव उसे इतना अखरेगा कि वह मुझे सारा समय चीख़ती-चिल्लाती हुई हर जगह खोजती फिरेगी। यही कारण है कि मैं अब इतनी सख़्ती से अपने बालों में कंघी कर रही हूँ।"

अब तक वह मुस्कुराती रही थी, लेकिन अब रोने लगी।

सियाओ-येन ने लिन हुङ की कंघी ले ली, और इसको तब तक घूरती रही जब तक कि उसकी भी आँखें नम नहीं हो आयीं। तनाव को ढीला करने के लिए उसने अपनी आँखें पोंछते हुए पूछा :

"क्या तुम आज रात ट्रेन से जा रही हो, शू-सिऊ? क्या कोई तुमको विदा करने जायेगा? मुझे बताओ, क्या तुम्हारा कोई ब्यावफ़्रेंड है? मुझे विश्वास है कि वह एक

ज़िन्दादिल शरारती व्यक्ति होगा।"

"नहीं, मेरा कोई नहीं है।" शू-सिऊ ने ज़ोर से अपना सिर हिलाया। "मुझे तरुणों के लिए फ़ुरसत नहीं है। लेकिन मैंने वह सब तो तुमको बताया ही नहीं, जो मेरे दिमाग़ में था। मुझे अफ़सोस है कि जाने से पहले मैं ताओ-चिङ को नहीं देख पाऊँगी। तुम जानती हो कि मुझे उससे न मिलना कितना अखर रहा है। वह पिछले कुछ महीनों से अपना अता-पता गोपनीय रख रही है, और मेरे पास उसके बारे में कोई सुराग ढूँढ़ने का समय नहीं है। मुझे बताओ, क्या तुम अक्सर उसे देखती हो? वह कैसी है? वह क्या कर रही है? क्या वह तुम्हारे यहाँ आ चुकी है?"

शू सिऊ लगातार बोलती रही, बिना यह ध्यान दिये ही कि कैसे-कैसे रंग सियाओ-येन के गालों पर चढ़-उतर रहे थे। लेकिन सियाओ-येन की लम्बी ख़ामोशी से उसे चिन्ता होने लगी।

"क्या उसे कुछ हो गया है सियाओ-येन?" उसका चेहरा यह सोचकर पीला हो गया कि ताओ-चिङ ज़रूर फिर मुसीबत में है।

"वह बिल्कुल ठीक है," सियाओ-येन ने ठण्डेपन से कहा। "अब वह एक ऑडिटर के रूप में पीकिङ विश्वविद्यालय में कक्षाएँ कर रही है।"

"तब तो तुम बहुत बार उससे मिलती होगी," शू-सिऊ ख़ुशी से चिल्लायी। "तुम ज़रूर उसके साथ काम कर रही होगी।"

सियाओ ने अपनेआप को परस्पर विरोधी दिशाओं में तनी हुई महसूस किया, और नहीं जान पायी कि क्या करें। वह शू सिऊ से ताओ चिङ की विच्युति के बारे में बता देना चाहती थी कि उसकी दोस्ती ख़त्म हो गयी है। लेकिन उसे इत्मीनान कैसे हो सकता था कि शू-सिऊ, ताओ-चिङ की ही भाँति एक गद्दार नहीं है? और कि वह यहाँ सिर्फ़ अपने प्रस्थान की ख़बर देने ही नहीं आयी थी? उसने तय किया कि चुप रहना ही सबसे अच्छा होगा।

सियाओ-येन की परेशानी को तुरन्त भाँपकर शू-सिऊ ने चालाकी से सवाल किया :

"क्या तुम्हारे और ताओ-चिङ के बीच कुछ गड़बड़ है, बहन? बात क्या है? वह एक बढ़िया इन्सान है और तुम उसकी एक अच्छी हमजोली कॉमरेड हो। तुम्हारे बीच क्या हुआ? निश्चय ही, कुछ नहीं। नहीं, यह तो अचिन्तनीय ही है। मुझे ज़रूर बताओ कि ताओ-चिङ को क्या हुआ है।"

उसकी सहज निश्छलता ने सियाओ-येन के सन्देहों को कम कर दिया। उसने गम्भीरतापूर्वक बताने के लिए साहस बटोरा :

"मैं सोचती हूँ कि तुम्हें ज़रूर बता दूँ, शू-सिऊ कि ताओ-चिङ ने हमें धोखा दिया है – मैं कभी इस चीज़ की कल्पना भी नहीं कर सकती थी – वह बहुत पहले ही गद्दार हो चुकी है और एक जासूस भी..."

उसने सोचा था कि शू-सिऊ चीख़ उठेगी या ताओ-चिङ को गाली देना शुरू कर देगी। लेकिन वह चकित रह गयी कि ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। एक झटके में शू-सिऊ का बचकानापन ख़त्म हो गया और वह बहुत शान्त और गम्भीर हो गयी। अपनी जीवन्त बड़ी-बड़ी आँखें सियाओ-येन के उदास चेहरे पर स्थिर करके, वह मन्द, नपे-तुले स्वर में बोली :

"क्या तुम्हें विश्वास है कि तुम ग़लती नहीं कर रही हो सियाओ-येन? क्या तुम्हें विश्वास है कि किसी और ने तुमको धोखा नहीं दिया है? मैं उसी कोठरी में थी जिसमें ताओ-चिङ थी और हम लगभग एक ही समय रिहा की गयीं। मैं उसे जानती हूँ। मैं इससे जल्दी यह विश्वास कर लेती कि आसमान मेरे सिर पर गिर सकता है, बजाय यह विश्वास करने के कि ताओ-चिङ ग़द्दार हो सकती है। दुश्मन को ढेर सारी गन्दी चालें मालूम हैं – कहीं तुम किसी के चक्कर में तो नहीं आ गयी? कट्टर विरोधी इससे अच्छा कुछ नहीं चाहते कि वे हमें आपस में ही लड़ते हुए देखें, हमारे बीच दुर्भावनाएँ फैला दें।"

"अब आगे कुछ मत कहो।" सियाओ-येन ने टोक दिया, उसका चेहरा पीला और स्वर क्षीण था। "ये दिन मुझे एक लम्बा दुःस्वप्न प्रतीत होते हैं, मेरा दिमाग़ बुरी तरह गड्डमड्ड है। मैं तूफ़ान उठे समुद्र पर एक छोटी नौका की भाँति महसूस करती हूँ, जो इधर से उधर थपेड़े खा रही है। मैं इसे और नहीं झेल सकती।" जैसे ही वह बिस्तर पर जाकर धम से गिर पड़ी तो फूट-फूटकर रोनी लगी, गर्म आँसू उसके सफ़ेद गालों से नीचे ढुलकने लगे।

तथ्य अब बेहद स्पष्ट थे, इतने स्पष्ट, जितना कि धूप में एक पहाड़। अगर ताओ-चिङ ग़द्दार नहीं थी, बल्कि अब भी निष्ठापूर्वक अपने देश और अपनी जनता के लिए संघर्ष करने के लिए अपनी जान जोखिम में डाल रही थी, तब ताई यू, चेङ चुन-त्साई, सियाओ-येन का पहला प्यार, ज़रूर एक बेशर्म ग़द्दार, एक दुष्ट पाखण्डी था, उससे भी बुरा होगा। और वह स्वयं? वह कितने गहरे डूब चुकी थी? ताओ-चिङ के पत्र के साथ-साथ तमाम तथ्यों ने पहले ही इस विचार को उसके दिमाग़ में डाल दिया था। लेकिन कभी उसने इस पर गम्भीरता से सोचने का साहस नहीं किया। उसने ऐसी सम्भावना पर अपने दिमाग़ को बन्द ही कर लिया था, क्योंकि यह इतना भयानक था कि इस पर सोचा नहीं जा सकता था। इसका मतलब होता कि उसका सारा जीवन बरबाद हो गया था कि वह फिर कभी उन लोगों को मुँह न दिखा सकती, जिनको वह सर्वाधिक आदर देती थी, न तो उन लोगों को ही, जो उससे इतनी उम्मीद रखे हुए थे।

शू-सिऊ को कुछ-कुछ आभास हो गया था कि किस बात से उसकी दोस्त पीड़ित हो रही थी। वह उसकी बग़ल में खड़ी हो गयी और धीरे से उसका सिर ऊपर उठाया, उसकी निर्दोष आँखें सियाओ-येन के प्रति प्यार और लगाव से भर उठीं।

"अपने को संयत करो बहन! अगर तुम सचमुच कम्युनिज़्म में विश्वास करती हो, और मार्क्स और लेनिन के बताये रास्ते पर आगे बढ़ती रहोगी, बिना इसको भूले कि हमारी मातृभूमि और हमारी जनता तुमसे क्या आशा करती है, तो ये काले बादल छँट जायेंगे। एक नदी मुड़ सकती है और बल खा सकती है, लेकिन अन्ततः यह सागर में ही प्रवाहित होती है। एक बार जाड़ा ख़त्म हो गया, तो वसन्त बहुत दूर नहीं हो सकता। अपनेआप को संयत करो, सियाओ-येन! अतीत पर ही चिन्ता मत करती रहो! मुझे बताओ कि तुम्हारे दिमाग़ पर क्या बोझ है।

"प्यारी शू-सिऊ!" सियाओ-येन ने अपनी आँखें पोंछी और स्थिर भाव से उस लड़की की ओर देखा। "मैं तुमसे यही कहूँगी, मैंने अपने मंगेतर पर अत्यधिक विश्वास किया, और सिर्फ़ उसी पर। और मैं ज़रूरत से ज़्यादा आत्मविश्वासी रही हूँ।"

——:o:——

अध्याय 38

देशभक्ति की आग में धधक उठे, पीकिङ विश्वविद्यालय के छात्र नये स्वयंशासी संघों का चुनाव कर रहे थे। संघर्ष यद्यपि उग्र था, फिर भी ठीक ठाक चला। यहाँ तक कि इतिहास विभाग में भी वे कट्टरपन्थियों के एक समूह के हाथों से नेतृत्व छीन लेने में कामयाब रहे।

सभी इतिहास के छात्रों ने सौ से अधिक संख्या में, एक दोपहर एक बड़े व्याख्यान कक्ष में बैठक की। होउ-जुई और दूसरों की आरम्भिक कोशिशों के चलते, वे अपने विभाग के लिए एक स्वयंशासी संस्था का चुनाव करने पर सहमत हो गये थे। होउ-जुई, जो चौथे वर्ष के छात्रों द्वारा उनका प्रवक्ता चुना गया था, पहला वक्ता था।

"दोस्त छात्रो, यह एक महान अवसर है," वह बोला। "यह एक महान अवसर है – तीन वर्षों में पहली बार ऐसा हुआ है कि हमारे नये तीसरे, दूसरे और चौथे वर्ष के छात्रों ने एक संयुक्त बैठक की है।" उसने हमेशा की भाँति कुछ रुक-रुककर बोलना शुरू किया था, लेकिन बोलने के रौ में वह जोश पकड़ता गया। "इसका क्या मतलब है? इसका मतलब है कि इतिहास विभाग के सभी छात्र, इस राष्ट्रीय संकट के सामने आ पड़ने पर, जागृत हो उठे हैं। हम अपने देश को बरबाद होते देखने से इन्कार करते हैं। हम सामूहिक कार्रवाई करने के लिए संयुक्त होना चाहते हैं। हमारा अपना कोई संगठन नहीं हुआ करता था। कक्षाओं की एक नाममात्र की छात्र-समिति होती थी, कुछ की वह भी नहीं थी। हम बिखरे बालू के ढेर की भाँति थे। हम इस वस्तुस्थिति को चलते रहने नहीं दे सकते। दोस्तो, हम अपना

स्वयंशासी संघ चुनने जा रहे हैं, एक ऐसा संघ, जो बहुमत की इच्छाओं का प्रतिनिधित्व करेगा, जो हमें एक श्रेष्ठ उद्देश्य के लिए नेतृत्व प्रदान करेगा जापान का प्रतिरोध करने और देश को बचाने के लिए..."

तालियों की एक गड़गड़ाहट में उसके, आख़िरी शब्द डूब गये और जबकि तालियाँ अब भी बज रही थीं, वाङ चुङ, जो तीसरे वर्ष का प्रतिनिधि था, मंच की ओर उछला। वह साफ़-सुथरे परन्तु सादे कपड़े पहने हुए था और उसका पतला, बन्दर जैसा चेहरा सफ़ाचट था। ख़ामोश होने का संकेत करते हुए, उसने अपना सोच-समझकर तैयार किया हुआ भाषण चालू कर दिया :

"दोस्तो, आज मैं इस मंच पर खड़ा होते हुए आभारी और प्रसन्न हूँ तथा देशभक्तिपूर्ण भावना के इस प्रदर्शन से अपने दिल की गहराइयों तक आलोड़ित हूँ।" हर जीने वाले आदमी का अपने देश के प्रति एक कर्त्तव्य होता है। हम कैसे, विश्वविद्यालय के छात्र होकर, कुछ नहीं कर सकते, जबकि हमारी धरती ख़तरे में है? लेकिन..." उसकी छोटी, दुबली-पतली आकृति अब भी ध्यानाकर्षण का केन्द्र बनी हुई थी कि उसने अचानक पैंतरा बदल दिया और बोला, "लेकिन भले ही हम अपने देश को प्यार करते हैं और इसे बचाना चाहते हैं, हमें वैसा करने के लिए सही रास्ता ढूँढ़ना होगा। हमारा जोश एक शुद्ध लपट की भाँति दहकता है, जबकि हमारा समय क़ीमती है। हमें ज़रूर अपने क्रियाकलापों या संगठनों को उन मुट्ठीभर कट्टरपन्थियों और अवसरवादियों द्वारा नियन्त्रित नहीं होने देना चाहिए, जिनका तकियाकलाम है 'मटन', लेकिन बेचते हैं कुत्ते का मांस! हम जानते हैं कि क्वोमिन्ताङ के तनखाशुदा जासूस निर्भीकतापूर्वक इस विश्वविद्यालय में हरक़त कर रहे हैं। वे एक राष्ट्रीय जापान-विरोधी संयुक्त मोर्चे का आह्वान करते हैं और उन सभी को, जो प्रतिरोध के इच्छुक हैं, संयुक्त करने की बात करते हैं। शर्म की बात है – इसका मतलब है समर्पण। ये लोग प्रतिक्रियावादी शासकों के लिए अपनी आत्मा के साथ वेश्यावृत्ति कर रहे हैं। अगर हम एक स्वयंशासी संघ का गठन करने जा रहे हैं, तो हमें अवश्य ही इन भाड़े के टट्टुओं के झाँसे में नहीं आना होगा, या उनके कर्णप्रिय नारों के जाल में नहीं फँसना होगा। सभी तीसरे वर्ष के छात्रों की ओर से, मैं अपनी स्थिति स्पष्ट कर देना चाहता हूँ, हम एक प्रतिक्रियावादी छात्र संघ में शामिल नहीं होने जा रहे हैं। हम कभी ऐसे संघ को मान्यता नहीं देंगे।"

जैसे ही वाङ चुङ ने अपनी बात ख़त्म की, उसके समर्थक ज़ोर-ज़ोर से तालियाँ बजाने लगे। लेकिन अधिकतर छात्र अवाक रह गये थे और एक-दूसरे की तरफ़ सन्देहास्पद नज़रों से देखने लगे थे। यह ऐसा था, मानो एक सर्द बयार ग्रीष्म के एक गर्म दिन के ऊपर बह गयी हो, और अचानक उमड़ आये बादलों से आसमान को भर दिया हो। होउ-जुई के भाषण से पैदा हुआ उत्साह पलक मारते ग़ायब हो गया और यहाँ एक अल्पकालिक परन्तु सर्वाधिक पीड़ादायी ख़ामोशी छा

गयी। तब मंच की ओर से ली शाओ-तुङ लपका, यह वही नौजवान था जिसका चेहरा बच्चे जैसा था। उसने तेजोदीप्त, निडर आँखों से एक विचित्र मुग्धकारी निगाह डालते हुए छात्रों के चेहरों को देखा। मानो सम्मोहित होकर, वे बिना आँखें झपकाये उसे घूर-घूरकर देखने लगे। यहाँ तक कि दम्भी वाङ चुङ और उसके पीछे चिन्तित बैठी सियाओ-येन ने भी पाया कि उनकी आँखें अप्रतिरोध्य रूप से इस विस्मयकारी तरुण की ओर खिंच गयी थी। जब पूरा ध्यान खींच चुका, तो ली शाओ-तुङ ने एक गम्भीर, ओजपूर्ण ढंग से बोलना शुरू किया, जो उसके बच्चे जैसी आकृति से अद्‌भुत रूप से भिन्न था।

"दोस्तो, चीज़ें हमेशा वे ही नहीं होती हैं, जैसीकि वे दिखती हैं। यहाँ तक कि पुरातत्ववेत्ताओं को भी यह निर्णय करने में मशक्कत करनी पड़ी थी कि ज़मीन से खोदे गये अवशेषों में से कौन असली है और कौन नक़ली। आज बिल्कुल स्पष्ट रूप से जापान का प्रतिरोध करने की वकालत करने वाले दो तरह के लोग हैं – एक खेमा असली है, दूसरा दग़ाबाज़। हम कैसे अन्तर बता सकते हैं? असली देशभक्त अपनेआप को दिलो-दिमाग़ से जनता और देश की सेवा में लगाते हैं। दग़ाबाज़ ऊँचे पदों पर आसीन हैं, लोगों को पीस रहे हैं और टुकड़े टुकड़े में हमारी उस धरती को बेच रहे हैं, जहाँ हमारे पूर्वज पीढ़ी दर पीढ़ी जीते रहे थे। मैं विस्तार में नहीं जाना चाहता। पिछले कुछ वर्षों का इतिहास ही पर्याप्त सबूत दे देता है। किसने 18 सितम्बर 1931 को दुश्मन के किसी भी प्रतिरोध की मनाही करते हुए, इस प्यारी पुरातन धरती के एक सुन्दर हिस्से को दूर फेंक दिया? किसने शंघाई के संग्राम के दौरान शौर्यपूर्ण 19वीं प्रयाण सेना के साथ ग़द्दारी की, और कायरतापूर्वक युद्ध-विराम समझौता पर हस्ताक्षर किया? कौन जापानियों और ग़द्दारों को जैसा वे करना चाहते हैं वैसा – उत्तरी चीन में करने दे रहा है, कौन इस भाग के ऊपर एक ज़हरीले साँप की भाँति 'स्वायत्तता' आन्दोलन को कुण्डली मारकर बैठने दे रहा है, जबकि वे हमारे पड़ोसियों के साथ दोस्ताना सम्बन्धों की बात करते हैं? वे प्रभुत्वशाली लोग जो देश को बेच रहे हैं, मछली की आँखों को मोतियों के रूप में पेश करने की कोशिश करते हुए, ऐसे बहादुर देशभक्तों का स्वांग कर रहे हैं, मानो वे जनता से दिली लगाव रखते हों। अब हम घर की ओर – इतिहास विभाग – की ओर मुड़ें। इस तरह के दग़ाबाज़ हमारे बीच भी हैं।" ली शाओ-तुङ की बात अपनी रौ में बहुत दूर निकल गयी थी, लेकिन अब हाल के पीछे से सिसकारियों और छी-छी की आवाज़ें आने लगी थीं :

"शर्म! शर्म।"

"बन्द करो!"

बिल्कुल ही विक्षुब्ध न होते हुए, उसने अपनी देदीप्यमान आँखें उन टीका-टिप्पणी करने वालों की तरफ़ मोड़ दीं, जिन पर बाक़ी सभी घूर रहे थे। फिर

अपने हाथ को ज़ोरदार ढंग से लहराकर वह आगे बोला :

"ऐसा लगता है, मानो मैंने जिन दगाबाज़ों का ज़िक्र किया, वे ही ये लोग हैं जो हुआँ-हुआँ कर उठे। वे देशभक्ति और राष्ट्रीय मुक्ति के बारे में, छात्रों के सामने तो देश के प्रति इन्साफ़ और वास्तविक लगाव का भाव दिखाते हुए लम्बा थोबड़ा काढ़ लेते हैं और रोष में भरकर चीख़ते-चिल्लाते हैं। लेकिन हमारे पीछे-पीछे वे खुफ़िया सेवा और क्वोमिन्ताङ-ग़द्दारों का काम करते हुए अपने दोस्तों के साथ ग़द्दारी करते हैं, और चीन के साथ भी ग़द्दारी करते हैं।"

"यह एक गन्दी गाली है!"

"हमें कुछ सबूत दो! यह गाली है!"

पूरा कमरा उत्तेजना से गूँज उठा, जब क्वोमिन्ताङ के एजेण्ट रोष में भरकर चिल्ल-पों मचाने लगे और अधिकतर अन्य छात्र भी इस चिल्ल-पों में शामिल हो गये। ऐसा लगता था, मानो मीटिंग इसी तरह ख़त्म हो जायेगी। लेकिन ली शाओ-तुङ ने इसी क्षण अपनी जेब से काग़ज़ का एक टुकड़ा निकाल लेने के लिए उपयुक्त समझा। मंच के बीच में खड़े होकर उसने उन सभी के सामने इसे लहराया और चिल्लाकर कहा :

"मुझसे सबूत माँगा गया है। यह रहा, दोस्तो! खुफ़िया सेवा से आर्थिक सहायता प्राप्त करने की एक रसीद! तीसरे वर्ष के इतिहास के छात्र, वाङ चुङ द्वारा अपने गिरोह की तरफ़ से हस्ताक्षर की हुई।"

अचानक पूरी निस्तब्धता छा गयी। फिर उस स्तब्धकारी विस्मय के अगले ही क्षण एक पत्थर हवा में लहराते हुए ली शाओ-तुङ के सिर की ओर उछला। वह कुछ इस तरह की घटना के प्रति सतर्क था और निशाना चूक जाने के कारण, पत्थर सामने की खिड़की को तोड़ता हुआ निकल गया। काँच के टुकड़े सभी दिशाओं में उड़ चले और चिल्लाहट फिर फूट पड़ी :

"बेशर्म कायर! आओ और इसे दलील से काटो! इस तरह की गन्दी चालों पर मत उतरो!"

"उन पर ध्यान मत दो – रसीद पढ़कर सुनाओ!"

कुछ संक्षिप्त, क्रुद्ध प्रतिवादों के बाद छात्र शान्त हो गये। उनके बीच के क्वोमिन्ताङ एजेण्ट भी चुप्पी साध गये, उनमें से कुछ सरककर, प्रकटतः अमानती मालखाने की ओर चले गये, जबकि बाक़ी दरवाज़े के और क़रीब सरक आये, ताकि ज़रूरत पड़ने पर पलायन कर सकें।

ली शाओ-तुङ ने रसीद पकड़ी और पढ़ना शुरू किया :

"अक्टूबर में 300 युआन की आर्थिक सहायता, निम्नलिखित के बीच बाँटने के लिए प्राप्त की गयी।

इसके पहले कि नाम पढ़े जाते हो-हल्ला फूट पड़ा।

"गन्दा जासूस वाङ चुङ मुर्दाबाद!"

"इस मुखबिर को उठाकर बाहर फेंक दो!"

"एक क्वोमिन्ताङ-एजेण्ट जो दूसरों पर कलंक लगाता है – शर्म-शर्म!"

गुस्से से बाँहें तन गयीं, और मुट्ठियाँ लहराने लगीं। सभी की आँखें वाङ चुङ की सीट की ओर मुड़ गयी, जो पहले से ही ख़ाली हो चुकी थी। उसने निकल भागने के लिए आम हो-हल्ले से फ़ायदा उठा लिया था! लेकिन, उसकी पिछली सीट पर बैठी वाङ सियाओ-येन नहीं गयी थी। उसके गालों की सारी रंगत हिरन हो चुकी थी, और उसकी आँखें अपलक रूप से ब्लैकबोर्ड पर टिकी हुई थीं। मानो अपने चारों ओर के प्रचण्ड संघर्ष से अविचल वह किसी अलग-थलग जगह पर चिन्ताग्रस्त प्रतीत हो रही थी, और अपने आसपास के माहौल से बहरी और अन्धी बनी हुई थी।

उसके बाद जो चुनाव शुरू हुआ, वह ठीक-ठीक ढंग से सम्पन्न हो गया। ली शाओ-तुङ जो बच्चे जैसे चेहरे वाला परन्तु प्रत्युत्पन्नमति था, इतिहास विभाग का प्रतिनिधि और छात्रों के स्वयंशासी संघ का अध्यक्ष चुना गया। होउ-जुई और दूसरे प्रगतिशील छात्र भी चुन लिये गये।

उस शाम उल्लसित होउ-जुई ने ताओ-चिङ के पास पहुँच कर, जो कुछ हुआ था उसकी रिपोर्ट दी और खुफ़िया-एजेण्टों की जो दुर्गति हुई थी, उस पर वे हँसे बिना न रह सके। जब ताओ-चिङ ने पूछा कि उन्होंने कैसे वह रसीद हासिल कर ली, तो होउ-जुई ने उसे निम्नलिखित कहानी बतायी :

वू यु-पिङ और वाङ चुङ दोनों ही शेन्सी से आये थे और दोनों हॉस्टल में अगल-बग़ल ही कमरे लिये थे। चीनी विश्वविद्यालय में शेन्सी से ही आयी एक लड़की थी जो अक्सर वू यु-पिङ के यहाँ जाती रहती थी। वाङ चुङ इस लड़की पर रीझ गया और उसने वू से उनके बीच परिचय कराने का अनुरोध किया – इस मक़सद से उसने वू को कई बार दावत खाने के लिए निमन्त्रित किया। वू ने होउ-जुई से राय माँगी। होउ-जुई ने उससे कहा कि वह वाङ चुङ से और निकटता कायम करे, उसके प्रेमरोग को और बढ़ाये और हो सकते तो कोई उपयोगी सूचना हासिल करे। इस तरह, एक दिन वू शेन्सी की उस लड़की को वाङ चुङ के साथ एक दावत खाने पर ले गया। वाङ चुङ इतना खुश था कि उसने खूब छककर पी थी। जब उसने बिल का भुगतान करने के लिए अपना बटुआ बाहर खींचा तो वह यह गौर करने में चूक गया कि यह रसीद बाहर गिर पड़ी थी, और बिना उसकी जानकारी के, वू यु-पिङ ने इसे उठा लिया। इसे होउ-जुई के पास पहुँचा दिया गया, जिसने इसे ली शाओ-तुङ को दे दिया, और यह उपयोगी ढंग से वाङ चुङ को [illegible] करने और शिकस्त देने के काम आ गया। वास्तव में, इसने विश्वविद्यालय

के सभी क्वोमिन्ताङ एजेण्टों पर एक कहर बरपा करने वाला प्रहार कर दिया था। ताओ-चिङ इस विवरण के आख़िर में एक बार फिर हँसी। तक़रीबन एक मिनट के बाद वह बोली :

"मेरे मन में एक नायाब भावना है, होउ-जुई।"

"वह क्या?" होउ-जुई ने चकित होकर देखा।

"मैं महसूस करती हूँ कि जैसे मैं एक ख़ज़ाने की गुफा में प्रवेश कर गयी हूँ, जहाँ हर तरफ़ अद्‌भुत जवाहरात भरे हैं। शुक्र हो पार्टी की शिक्षा का! पार्टी की सामर्थ्य का और पार्टी के प्रभाव का। जब मैं पहली बार विश्वविद्यालय में आयी, तो मुझे यह सब ख़ज़ाना नहीं दिखायी दिया। फिर भी, यह यहाँ हमेशा से ही था।"

होउ-जुई ने सहमति में सिर हिलाया और ही-ही करके हँसा।

"यह सही है। और जैसे-जैसे संघर्ष उभरता जायेगा, हमें अधिकाधिक जवाहरात मिलते जायेंगे। मैंने भी यह कल्पना कभी नहीं की थी कि पीकिङ विश्वविद्यालय में ऐसा ख़ज़ाना छिपा हुआ है।"

"एक बार जब हमें निष्ठावान समर्थक मिल जायें, तो हमें अवश्य उनकी रक्षा करनी चाहिए, उनकी मदद करनी चाहिए और उनको प्रशिक्षित करना चाहिए, क्या हमें नहीं करना चाहिए?" ताओ-चिङ ने मुस्कुराते हुए उत्तर में कहा। "ली शाओ-तुङ एक बढ़िया, योग्य किशोर है। हमें जितना हो सके, उसकी ज़रूर मदद करनी चाहिए। मुझे उम्मीद है कि वह किसी दिन हमारी पार्टी में शामिल हो जायेगा।"

होउ-जुई और ताओ-चिङ जब चलने लगे तो अब वे पूर्णतः एकमत थे। अपने काम के अगले चरण पर विचार-विमर्श के बाद वे भारी उत्साह में एक-दूसरे से जुदा हुए।

——:o:——

अध्याय 39

नवम्बर के अन्त की एक काली रात में, जब सर्द हवा गली-कूचों में बर्फ़ उड़ा रही थी, तो च्याङ हुआ ने ताओ-चिङ के दरवाज़े पर दस्तक दी।

वह एक अँगीठी के नज़दीक, जो एक आरामदायक गर्मी दे रही थी, रोशनी के नीचे लिख रही थी। जब च्याङ हुआ अन्दर आ गया, तो उसने उसके कपड़ों से बर्फ़ झाड़ने में उसकी मदद की और फिर आग तेज़ कर दी।

"क्या बाहर बहुत ठण्डक है?" उसको गर्म पानी का एक प्याला देते हुए वह ख़ुशी से मुस्कुरायी। "तुम जानते हो, बड़े भाई च्याङ कि आज पीकिङ विश्वविद्यालय में छात्रों का एक संघ गठित किया गया। और उन्होंने पीकिङ और

तिएनत्सिन के छात्र फ़ेडरेशन में शामिल होने का फ़ैसला लिया है।"

अँगीठी से अपने को गरमाते हुए, च्याङ हुआ कोई टिप्पणी किये बग़ैर मुस्कुराया, मानो यह उसके लिए कोई नयी ख़बर न थी। ताओ-चिङ उत्सुकता में बोलती गयी, "शुक्र है तुम्हारी मदद का कि पेइपिङ विश्वविद्यालय में काम शानदार ढंग से आगे बढ़ रहा है। वे छात्र, जो वर्षों से निष्क्रिय पड़े हुए थे, अब सक्रिय हो उठे हैं। मैं नहीं जानती कि अन्य कॉलेजों में क्या हाल है, लेकिन मैं ज़रूर कहती हूँ कि पेइपिङ विश्वविद्यालय में जापानी आक्रमण के विरुद्ध एक राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चे की अपनी वर्तमान नीति को लागू करना आसान नहीं था। यहाँ तक कि हमारे कुछ पार्टी कॉमरेड तक भी इस बात को नहीं देख सके थे – वे कहते थे कि इसका मतलब होगा समर्पण। पिछले दिनों प्रगतिशील छात्र सिर्फ़ यही बहस करते थे कि उन दोस्तों के साथ मिलकर, जो उनके दृष्टिकोणों से सहमत थे, देश को कैसे बचाया जाये। वे पिछड़े हुए छात्रों की ग़द्दार के रूप में भर्त्सना करते, या महज़ उनकी उपेक्षा कर देते थे। अब यह सबकुछ बदल गया है। मध्यमार्गी छात्रों को पक्ष में कर लिया गया है। और वे हमारे इर्द-गिर्द एकजुट हो रहे हैं, जबकि प्रतिक्रियावादी अलगाव में पड़ते जा रहे हैं। जहाँ तक इतिहास विभाग में छात्र संघ के दोबारा चुनाव की मीटिंग का सवाल था, वाङ सियाओ येन वहाँ मूर्खतापूर्ण दिखती हुई बैठी थी, वह अपना सिर लटकाये हुए थी और किसी से भी आँखें मिलाने का साहस नहीं कर पा रही थी। एक सौ से भी अधिक छात्रों के समक्ष, ली शाओ-तुङ ने उस बन्दर चेहरे वाले वाङ चुङ को झूठा और क्वोमिन्ताङ के एक गन्दे जासूस के रूप में बेनकाब कर दिया। हमारे क़ब्ज़े में, क्वोमिन्ताङ से आर्थिक सहायता प्राप्त करने के लिए उसके द्वारा हस्ताक्षरित एक रसीद आ गयी थी और जब ली शाओ-तुङ ने इसे पढ़कर सुनाया, तो छात्र पूरी तरह नाराज़ हो गये। उसके बाद, चुनाव हम लोगों के लिए निर्विघ्न सम्पन्न हो गया। क्या यह आश्चर्यजनक नहीं है, बड़े भाई च्याङ?"

ताओ-चिङ साँस लेने के लिए रुकी, वह महसूस कर रही थी कि वह रौ में दूर तक बहक गयी थी। यह अजीब था कि किस तरह वह बचकाने ढंग से इस लम्बे स्नेहिल, अल्पभाषी साथी के साथ हमेशा ही उत्तेजित महसूस करती थी। क्यों उसकी उसके साथ बातचीत दूसरों के साथ की बातचीत से भिन्न होती थी? वह स्वयं सचेत हो गयी और अपने को संयत करते हुए पूछा :

"बड़े भाई च्याङ, क्या तुमने कहा नहीं था कि तुमको मुझसे कुछ कहना था? मुझे अफ़सोस है कि मैं इतने अधिक इन दिनों तक बाहर रही, लेकिन अब जबकि तुम यहाँ हो, तो बताओ।"

च्याङ हुआ असमंजस में था, नहीं जान पा रहा था कि विषय को सबसे अच्छे ढंग से कैसे छेड़े। उसका साँवला चेहरा आरक्त हो उठा। अपने बलिष्ठ हाथों को

अँगीठी पर गरमाते हुए, उसने अपने आवेग को छिपाने की कोशिश की। वह उन्तीस वर्ष का था, लेकिन हाईस्कूल में एक किशोर-किशोरी प्रेम सम्बन्ध को छोड़कर, वह कभी प्रेम में नहीं पड़ा था। उसने धैयपूर्वक इन्तज़ार किया था, जिससे कई-एक खुशी के क्षण निकल गये थे, लेकिन वह इस तरह से नहीं जी सकता था – दरअसल कोई कारण नहीं था, क्यों वह और अपनेआप को यातना दे या उस लड़की को ठेस पहुँचाये जिसे वह प्यार करता था। उसने अपना हाथ ऊपर उठाया और ताओ-चिङ का हाथ थाम लिया।

"आज मैं काम के बारे में विचार-विमर्श करने यहाँ नहीं आया हूँ" उसने अपनेआप को दृढ़ बनाते हुए स्पष्टता से कहा, "मुझे बताओ ताओ-चिङ, क्या हम एक-दूसरे के प्रति दोस्त से अधिक भी कुछ हो सकते हैं?"

च्याङ हुआ के चेहरे पर एक प्यासी ललक थी, जिसकी ताओ-चिङ ने पहले कभी नहीं देखा था। उसकी आँखों में प्यार और वेदना शब्दों की अपेक्षा कहीं अधिक सहजता से अभिव्यक्त हो रहे थे, जो उस बात की पुष्टि कर रही थी, जिसे वह कुछ समय पहले ही भाँप चुकी थी। उसका दिल ज़ोर से धड़कने लगा, उसका सिर चकराया और उसे बेहोशी महसूस हुई। उसकी आँखें आँसुओं से भर आयीं, लेकिन खुशी से या वेदना से – वह नहीं कर सकती थी। क्या वह इस पक्के क्रान्तिकारी को प्यार कर सकती थी, जिसको वह इतने अधिक समय से सम्मान देती आयी थी? उसका दिल तो इन सारे वर्षों में दूसरे को दिया जा चुका था।

ताओ-चिङ ने अपनी हिचकिचाहट को दूर कर दिया। च्याङ हुआ जैसा एक बोल्शेविक हर तरह से उसके प्यार के क़ाबिल है। उसके पास उस व्यक्ति को इन्कार करने का क्या कारण हो सकता था, जो उसे इतनी गहराई से प्यार करता था?

वह उसकी ओर ख़ामोशी से एक क्षण देखने के बाद आहिस्ता से और मीठे आवाज़ में बोली :

"हाँ, बडे भाई च्याङ, मैं ज़रूर तुम्हारा ख़याल करती हूँ।"

एक खोजभरी नज़र डालने के बाद उसने अपनी बलिष्ठ भुजाओं में उसे लपेट लिया।

देर हो गयी थी, लेकिन च्याङ हुआ ने जाने का कोई इरादा नहीं ज़ाहिर किया। उसके पार्श्व में सटी हुई ताओ-चिङ ने पूछा :

"तुम्हें जाना नहीं है क्या? एक बज गया। तुम फिर कल आ सकते हो।"

च्याङ हुआ ने उसकी ओर ग़ौर से देखा, उसका चेहरा खुशी से खिला हुआ था। उसको अपने समीप पकड़े हुए उसने एक काँपते स्वर में आग्रह किया :

"मुझे दूर मत भगाओ! मैं नहीं जाने वाला।"

ताओ-चिङ उठी और बाहर चली गयी। उसके अनुरोध ने उसे असमंजस में डाल दिया था और घबरा गया था। अहाते में सबकुछ सफ़ेद-सफ़ेद था। कड़ी

बर्फ़बारी हो रही थी और सर्द हवा चल रही थी। छत, फ़र्श, पेड़ों का ऊपरी सिरा बर्फ़ की सफ़ेदी से भरा हुआ था। घुटनों तक बर्फ़ में धँसकर वह अकेले चुपचप खड़ी रही, उसका दिमाग़ उमड़-घुमड़ रहा था। उसकी ख़ुशी को अजीब वेदना ने बेध दिया, चिआ चुआन का चेहरा अब तक विस्मृत हो चला था, उसके सामने प्रखरता से कौंध उठा। वह उसे कभी नहीं भूल सकती थी, कभी नहीं। लेकिन, क्यों उसे अभिभूत करने के लिए उसे इसी क्षण प्रकट होना था? उसका नाम बुदबुदाते हुए, उसने अपनी कल्पना में उसकी प्रखर आँखों और उसके उस हठपूर्ण साहस को देखा, जिसके साथ उसने अपनी टूटी टाँगों सहित अपनेआप को उस मनहूस जेल की कोठरी के पार घसीटा था। आँसुओं की धार उसके गालों पर से प्रवाहित हो चली, बयार और बर्फ़ उसके चेहरे पर कशाघात कर रही थीं उसका हृदय द्वन्द्वरत था। उसने व्यर्थ में उम्मीद की थी कि सर्द हवा उसके परेशान दिमाग़ को हल्का कर देगी। उसे निश्चय ही च्याङ हुआ से बहुत अधिक इन्तज़ार नहीं करवाना चाहिए, यह सोचकर वह झटपट अन्दर आ गयी।

कमरे में वापस आकर, वह उसके पास गयी और भावप्रवण होकर उसकी ओर देखा।

"तो तुम्हारा मतलब था – तुम जा नहीं रहे हो?" वह मुस्कराकर बोली, "सब ठीक है, मत जाओ!" उसने शर्माते हुए अपना सिर उसके चौड़े कन्धों पर टिका दिया और उसके गले में अपनी बाँहें डाल दीं।

पौ फटने पर भी वे अभी सुखद स्वप्न में ही थे कि किसी ने दरवाज़ा पीटकर उन्हें जगा दिया। हल्की परन्तु फ़ौरी दस्तक मुसीबत का संकेत दे रही थी। वे बिस्तर से कूदकर बाहर आ गये और सवालिया नज़रों से एक-दूसरे को देखने लगे।

"क्या तुम्हारे पास कोई महत्त्वपूर्ण काग़ज़ात है? लाओ उन्हें मुझे सौंप दो।" ताओ-चिङ तकिये के नीचे टटोलती हुई फुसफुसायी।

"शान्ति बनाये रखो!" च्याङ हुआ ने राय दी। अपना कोट पहनते हुए, वह खिड़की के पास गया और एक दरार में से झाँका।

दस्तक के बाद एक लड़की का मन्द स्वर सुनायी दिया :

"ताओ-चिङ! दरवाज़ा खोलो! मैं हूँ सियाओ-येन!"

"सियाओ-येन?"

च्याङ हुआ खिड़की छोड़ चुका था और जल्दी-जल्दी कपड़े पहन रहा था। ताओ-चिङ ने एक शाल अपने कन्धों पर डाली और दरवाज़ा खोलते ही बाल-बिखराये सियाओ-येन अन्दर आ गयी, वह इतनी बौखलायी हुई थी कि वह अपना चश्मा तक भूल गयी थी, वह कमरे में एक आदमी को देखकर ठिठक गयी, लेकिन उनका अभिवादन करने के लिए रुके बग़ैर उसने अपनी बाँहें ताओ-चिङ के

गले में डाल दी और फूट-फूटकर रो पड़ी। दरअसल, वह अपनी सामान्य सौम्य मन:स्थिति से इतनी बदली हुई थी कि एक शब्द भी नहीं बोल पा रही थी, ऐसा लगता था, जैसे उसका हृदय फट जायेगा।

"शान्त हो सियाओ-येन, क्या हुआ है?" – ताओ-चिङ का स्वर इतना स्नेहभरा था जैसे उनके बीच कभी कोई अनबन थी ही नहीं।

सियाओ-येन के आँसू अपनी दोस्त के कन्धे को भिगो रहे थे, लेकिन अब भी वह नहीं बोली।

ताओ-चिङ भी ख़ामोश रही, वह उसे अपने आगोश में पकड़े हुए थी, और उसे प्यार से सहला रही थी।

"मैं बहुत शर्मिन्दा हूँ, ताओ-चिङ मुझे तुमसे कहना था।" सियाओ-येन ने अपनेआप को नियन्त्रित करने के लिए काफ़ी कोशिश की, लेकिन वह फिर फूट-फूटकर रो पड़ी, और कुछ मिनट बाद ही रुँधे गले से बोली, "चेङ...चेङ चुन-त्साई एक गद्दार है। मैंने अभी-अभी जाना है – वह दुश्मन के हाथों बिका हुआ है।"

इस सदमे से वह कुछ समय तक स्तब्ध रही, और काफ़ी आँसू बहाने के बाद, उसने वह सब बता दिया जो उसे मालूम हुआ था।

ताई यू ने उसके समक्ष अपनेआप को कम्युनिस्ट पार्टी की पेइपिङ सिटी-कमेटी के सेक्रेटरी के रूप में प्रस्तुत किया था। वह उसे इतना प्यार करती थी और उसकी इतनी तारीफ़ करती थी कि उसके ताओ-चिङ से मनमुटाव के दौरान उसने अपनी दोस्त की गद्दारी के बारे में उसके गढ़े झूठ पर विश्वास कर लिया था। लेकिन धीरे-धीरे उसके प्रति उसकी भावना बदलती गयी, क्योंकि जैसे ही समय बीतता गया, वह अधिकाधिक विचित्र आचरण करने लगा। सामान्यत: वह एक कमीनी नज़र बनाये रखता था, फिर भी जब तब तमक उठता, और एक शाही अन्दाज़ ग्रहण कर लेता, फिर हकलाता और अपना ही प्रतिवाद करने लगता, उसे उसकी साँस से शराब की गन्ध आती, उसके कपड़ों से पाउडर की गन्ध आती और उसे शक होता कि वह उसके प्रति बेवफ़ा है। उसके व्यक्तिगत व्यवहार के प्रति सन्देह ने उसकी राजनीतिक निष्ठा पर भी शक पैदा कर दिया। क्या वह सचमुच पार्टी की पेइपिङ सिटी-कमेटी का सेक्रेटरी था? क्या वह सचमुच पार्टी में ले ली गयी थी, जैसाकि उसने दावा किया था? क्या वाङ चुङ जैसे आदमियों में कोई भी अच्छाई हो सकती थी जो पीकिङ विश्वविद्यालय के ईमानदार छात्रों पर हमले करते और उन्हें ज़ख़्मी करते थे? और अगर ये बातें थीं, तो किस तरह ताओ-चिङ ग़लत थी? सियाओ-येन ताई यू पर एक गुप्त नज़र रखने लगी थी।

उसने उसके बारे में सच्चाई का पता लगाने के लिए कई उपाय आज़माये, लेकिन वह न तो यह जान सकी कि वह कहाँ रहता था और न ही यह कि उसके

कौन दोस्त या सम्बन्धी थे, और वाङ चुङ की तो बात ही दीगर थी। उसकी बेचैनी बढ़ गयी। फिर भी प्यार और वह भी प्रथम प्यार, तथा तरुणाई के जोशीले सपनों ने उससे सम्बन्ध तोड़ लेने में उसे शक्तिहीन बना रखा था। उसकी यह जान लेने की बड़ी इच्छा होती थी कि उसके शक झूठे निकल जाये, वह सोचती थी कि ये उसकी अपनी ही दिमाग़ी संकीर्णता से उपजे होंगे, कि वह ईमानदार आदमी था, जैसाकि होने का वह दावा करता था, और कि वह दिलोजान से पार्टी के प्रति समर्पित था। लेकिन उस पर उसके कटु मोहभंग और उसकी सम्पूर्ण ख़ुशी के विनाश का वज्रपात हो गया। एक दिन वह अपने घर से उसके पीछे-पीछे लगकर सुआन वू मेन के बाहर गली तक गयी। वहाँ उसने एक लाल लाखरोगन लगे फाटक पर दस्तक दी, जो एक मरियल, अधेड़ उम्र की, एक रंगी-चुपड़ी, फर का कोट पहनी हुई महिला ने दरवाज़ा खोला। जब ताई यू ने इस महिला का हाथ पकड़ने की कोशिश की, तो उसने उसे एक तरफ़ झटका दिया और चुहलबाज़ी में, उसके गाल में कोंचती हुई बोली, "अन्दर चलो, और मेरा इन्तज़ार करो!" फिर वह बाहर चली गयी, जबकि वह एक भिखारी की भाँति अन्दर चला गया।

सियाओ-येन आगबबूला थी। यह महिला ज़रूर उसकी पत्नी या रखैल थी, फिर भी क्यों वह बार-बार क़समें खाता रहता था कि वह सिर्फ़ उसे ही प्यार करता था और आदर देता था, और कैसे वह उस निष्कपट निष्ठा की व्याख्या करती, जिसको वह उसकी आँखों में परख चुकी थी?

इस रहस्योद्घाटन के बाद सियाओ येन कई दिनों तक ताई यू के साथ इतना ठण्डा व्यवहार करती रही कि वह परेशान होकर आँसू बहाने लगा। जब उसने पूछा कि वह दूसरी महिला कौन थी, तो उसने बताया कि वह एक दूसरी पार्टी-सदस्य थी, जिसे चुस्त-दुरुस्त कपड़े पहनने पड़ते थे, ताकि शक न हो। वे साथी थे, इससे आगे कुछ नहीं। अपने बेहतर तजवीज़ के विरुद्ध उस पर विश्वास करते हुए सियाओ-येन ने व्यथित भाव से उसके "निर्देशों" को स्वीकार किया, और अधिकाधिक भोले-भाले छात्रों को धोखा देती चली गयी। इतिहास विभाग की मीटिंग में ली शाओ तुङ द्वारा वाङ चुङ के परदाफ़ाश के बाद, उसने महसूस किया कि कुछ भारी गड़बड़ है, और उसे लगा कि वह कभी फिर अपना सिर नहीं उठा सकेगी। उस शाम – वह पिछले दिन की बात है – ताई यू डगमग चाल से उसके कमरे में अस्पष्ट बुदबुदाते हुए दाख़िल हुआ, और नशे की तन्द्रा में उसके बिस्तर में जाकर घुस गया। सियाओ-येन ने झट उसकी जेबों की तलाशी ली। उसे एक पत्र मिला, जो एक अजीब परिचय-पत्र था, जिस पर एक नम्बर के अलावा और कुछ नहीं था, तथा विभिन्न कॉलेजों के छात्रों की एक सूची मिली। पत्र को जल्दी-जल्दी पढ़ते हुए वह भयभीत हो गयी।

हू मेङ-एन की तरफ़ से "भाई यू" को लिखे गये इस पत्र में उसे धैर्यपूर्वक

पेइपिङ में काम करने और सारे निर्देशों को अमल में लाने को कहा गया था। अगर वह इसे करता, तो निश्चित था कि उसे एक बड़ा ईनाम मिलता। उसकी नानचाङ जाने की दरख़्वास्त मंजूर नहीं हो सकती थी, क्योंकि हू को उसका ट्रांसफ़र करने का कोई अधिकार न था। अब हर चीज़ भयानक रूप से सियाओ येन के सामने स्पष्ट थी। यह सूची उन कम्युनिस्ट छात्रों और दूसरे प्रगतिशीलों की एक काली सूची थी, जो गिरफ़्तार किये जाने वाले थे। वह पत्र ज़रूर क्वोमिन्ताङ के एक गुप्तचर सेवा-एजेण्ट के रूप में उसका परिचयपत्र था। यह पाजी जो दूसरों की गद्दारों और जासूसों के रूप में बदनामी किया करता था, स्वयं ही सर्वाधिक बेशर्म गद्दार और जासूस था। गुस्से से काँपती हुई, वह उसे तब तक मारती रही, जब तक कि उसका हाथ नहीं झनझनाने लगा, लेकिन वह उसे जगाने में नाकाम रही। तब वह उन कागज़ात के साथ अहाते में निकल भागी और अपनेआप को स्थिरचित्त करने के लिए एक वृक्ष के सहारे टिक गयी। वह वहाँ उस कड़ाके की सर्द हवा में तब तक पड़ी रही जब तक कि आधी रात नहीं बीत गयी।

भोर में दो और तीन के बीच ताई यू होश में आया, और उसे खोजने के लिए बाहर दौड़ पड़ा। वह उसे लगभग जड़ीभूत अवस्था में वापस लाया, फिर घुटने टेक और रो पड़ा। उसने स्वीकार किया कि वह उसके और पार्टी के प्रति झूठा बना रहा, अपनी स्वयं की निर्लज्ज कमज़ोरी को कोसा, और क़सम खाकर अपने अपराधों का पश्चाताप किया। लेकिन सियाओ-येन ने बिस्तर पर औंधे मुँह लेटी हुई, उसकी भूली बातों पर कान तक नहीं दिया। उसका हृदय मानो पत्थर का बन गया था। वह बोल न सकी। उसकी पूरी दुनिया उसके सामने ही भरभराकर ढह चुकी थी। लेकिन ताई यू उसे छोड़ने वाला नहीं था। वह घड़ियाली आँसू बहाता रहा, और क़समें खाता रहा कि वह उसे सचमुच प्यार करता था, कि इस प्रेम और उसके स्नेह की पवित्रता के कारण ही उसकी आत्मा में अब भी कुछ इन्सानियत प्रकाश की कुछ झिलमिलाहट – उसके अच्छे भद्र स्वभाव की छवि बनी हुई थी।

ये क़समे-वादे सियाओ-येन को तनिक भी विचलित न कर सके। वह उठी, और ताई यू से कतराती हुई, कमरे में चहलक़दमी करने लगी, वह उसके पीछे-पीछे पियक्कड़ की भाँति बड़बड़ाते हुए दौड़ता रहा, मानो पागल हो गया हो। कायरता उसकी कमज़ोरी थी, उसने सफ़ाई दी कि यही वह चीज़ थी जिसने उसे पार्टी के साथ विश्वासघात करने पर मजबूर किया था। दुश्मन ने उसकी इस कमज़ोरी का फ़ायदा उठाकर, उसे इतना नीचे गिर जाने को विवश कर दिया था कि वह पीछे मुड़कर नहीं देख सकता था या अपनेआप को मुक्त नहीं कर सकता था। यह सच था कि उसने कुछ कॉमरेडों के साथ दग़ा की थी, लेकिन सिर्फ़ दबाव में आकर ही। जिस महिला को सियाओ येन ने देखा था, वह एक जासूस थी, जो उससे अपना काम करवाती और अपनी काम-लिप्सा तुष्ट करती थी। उस महिला के प्रति अवज्ञा

से ताई यू को अपने जीवन से हाथ धोना पड़ता। उसने सफ़ाई दी कि जब वह सियाओ-येन के प्रेम में पड़ गया, तो वह इस दुवृत्ति से निजात पाना चाहता था, वह शान्ति से अपनी प्रेयसी के साथ सभी चिन्ताओं और ख़तरों से मुक्त होकर जीना चाहता था। यही कारण था कि उसने हू मेङ-एन से ट्रांसफ़र का अनुरोध किया था। उसने वादा किया कि जैसे ही वह अपने को उस दूसरी महिला की जकड़ से मुक्त कर लेगा, सियाओ-येन से शादी करेगा। वह उसे प्यार करेगा, एक बढ़िया पति बनेगा, उसे कभी नहीं छोड़ेगा। लेकिन इन सबका सियाओ-येन पर कोई प्रभाव न पड़ा। वह सख़्ती से सोच रही थी और एक निर्णय पर आ रही थी। उसे अब और कुछ लेना-देना नहीं था इस कमीने आदमी से। सियाओ-येन ने उस पर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया और मेज़ के पास सोने का बहाना कर लिया, आख़िरकार वह नशे में धुत्त लड़खड़ाते हुए बाहर चला गया। उसके बाद वह सीधे ताओ-चिङ के पास चली आयी।

कहानी ख़त्म हुई और सियाओ-येन फिर फफक-फफककर रो पड़ी।

"ताओ-चिङ! ताओ-चिङ! मैं बरबाद हो गयी। क्या तुम मुझे बचा सकती हो?"

"तुम बरबाद नहीं हुई हो सियाओ-येन! तुम एक नयी शुरुआत कर सकती हो।" ताओ-चिङ का स्वर धीमा और स्नेहसिक्त था। अपनी दोस्त के आँसुओं को पोंछते हुई उसने पूछा, "तुम्हें कैसे मालूम हुआ कि मैं कहाँ रहती हूँ?"

सियाओ-येन ने उसका हाथ कसकर पकड़ लिया और एक दयनीय मुस्कान के साथ बोली, "एक बार मैंने तुम्हारा भी पीछा किया था, लेकिन ताई यू को कभी नहीं बताया। बताओ, मैं क्या करूँ ताओ-चिङ। मैं आगे कैसे जी सकती हूँ? और मैं उससे कैसे निपटूँगी?" उसने ताओ-चिङ की ओर से नज़र हठाकर, अपनी सूजी आँखों को पोंछती हुई, च्याङ हुआ की ओर देखा।

"हम पहले मिल चुके हैं, सियाओ-येन क्या नहीं मिले हैं?" च्याङ हुआ ने अभिवादन करते हुए बीच में ही टोक दिया। "मुझे बताओ, कहाँ है वे काग़ज़ात, जो तुमने ताई यू से लिया था।"

"उसने उन्हें फिर से छीन लिया।"

"मैं समझ गया।" कुछ सोचने के बाद च्याङ हुआ ने आगे कहा, "मैं तुम्हें ज़रूरत याद दिला दूँ सियाओ-येन कि तुम अकेली नहीं हो जो इस पचड़े में पड़ी हो, और महज़ अफ़सोस से ही स्थिति नहीं ठीक हो पायेगी। समझी?"

"क्या मतलब है तुम्हारा?" उसने आँसू भरकर उसकी ओर घूरकर देखा। "मैं बस ताओ-चिङ को बताने और उसके प्रति अपनी ग़लतफहमी के लिए माफ़ी माँगने आयी थी। मेरे दिमाग़ में और कोई बात नहीं थी।"

"अपनेआप को मत कोसो!" ताओ-चिङ ने सियाओ-येन का हाथ थाम लिया।

"तुम ज़रूर थक गयी होगी, एक क्षण लेट लो।"

वह और च्याङ हुआ ने उस काँपती लड़की को बिस्तर पर पहुँचाया।

"अब यह हो सकता है," च्याङ हुआ ने आहिस्ता से मन्तव्य प्रकट किया। "जब ताई यू होश में आयेगा और महसूस करेगा कि उसने अपनेआप को तुमसे दूर कर लिया है, तो वह उद्विग्न हो जायेगा। और तो और, तुमने उसके कुछ गुप्त कागज़ात भी देख लिये हैं। यह निष्कर्ष निकालना एकदम वाजिब है कि अगर तुम उसका मोहरा बनने से इन्कार कर दोगी, तो वह तुमसे डर जायेगा। यह चीज़ तुमको उसका एक कट्टर दुश्मन बना देगी। क्या यह तुम्हारी समझ में आया?"

"नहीं!" सियाओ-येन ने अपनी आँखें बन्द कर लीं और डर के मारे पीली पड़ गयी। "निश्चय ही नहीं असम्भव। वह मुझे प्यार करता है।"

ताओ-चिङ तकिये के सहारे टिककर उसको टोके बिना न रह सकी, "सियाओ-येन, तुम कैसे अब भी उसे इस भाँति देखती हो? क्या तुम आशा करती हो कि वह तुमसे प्यार करे और तुम्हारे ऊपर दया करे? मैं बता देती हूँ, तुम भारी ख़तरे में हो।"

सियाओ-येन अपनी आँखें बन्द किये रही और ख़ामोश रोती रही।

कुछ क्षण बाद च्याङ हुआ उठकर बिस्तर के पास गया और मनुहार करने वाले लहजे में कहा :

"यह हमेशा सबसे अच्छा रहता है कि सुरक्षित पक्ष में हुआ जाये, सियाओ-येन। सिर्फ़ तुम ही नहीं, बल्कि हर कॉलेज में सभी प्रगतिशीलों को अपनी सुरक्षा के लिए सतर्क रहना होगा। ऐसा लगता है कि चूँकि इस जासूस ने एक काली सूची तैयार कर ली है, इसलिए वह गन्दी से गन्दी हरक़तों पर उतरेगा ही। बेहतर हो कि तुम और ताओ-चिङ कुछ दिनों के लिए दूर चली जाओ। अपने लोगों को भी दूर चले जाने को कह दो। प्रसंगवश सियाओ-येन क्या तुम्हें उस काली सूची के नाम याद हैं?"

"बहुत अच्छी तरह से नहीं। केवल पीकिङ विश्वविद्यालय के ली शाओ-तुङ, होउ-जुई और ली हुआई-यिङ, और उसका..." उसने ताओ-चिङ की ओर संकेत किया।

ताओ-चिङ और क़रीब झुक आयी और बोली, "तुम देखो सियाओ-येन, ली हुआई तक भी उसकी काली सूची में है। जो यह दर्शाता है कि ताई यू क्या कर सकने में समर्थ है। क्या तुम्हें विश्वास हुआ? चलो, च्याङ हुआ की राय मानें, और कुछ समय के लिए छिप जाओ।" यह देखकर कि वह ख़ामोश बनी हुई थी, ताओ-चिङ ने आत्मीयता से उसके आँसू पोंछे और आगे बोली, "सियाओ-येन, तुम नहीं जानती मैं कितनी दुखी थी, जब हमारा मनमुटाव हआ। अब मैं बहुत खुश हूँ कि हममें फिर से दोस्ती हो गयी। ख़ैर, अब इस पर और बातें न करें। अब योजना

बनायें कि आगे क्या करना है। मेरा सुझाव है कि तुम मेरे साथ कुछ दिनों के लिए दूर चली चलो। तुम्हारा क्या कहना है?"

"मैं उसे एक आख़िरी बात करना चाहूँगी," सियाओ-येन ने आग्रह किया। "मुझ पर विश्वास करो, मैं अब और उस पर विश्वास नहीं करती। मैं वापस आ जाऊँगी।"

"हम तुमको ऐसा नहीं करने दे सकते," ताओ-चिङ ने दृढ़तापूर्वक एलानिया स्वर में उसे उठने में सहारा देते हुए कहा। "आओ, तुरन्त कूच कर दें। अगर वह जान जायेगा कि मैं कहाँ रहती हूँ और तुमको नहीं पा सकेगा, तो शायर वह यहाँ आ जायेगा। च्याङ हुआ, तुम पहले चले जाओ। सियाओ-येन और मैं अभी कूच कर देंगी। हम लोग कुछ दिनों के लिए एक दोस्त के यहाँ रहेंगे।"

ताओ-चिङ पर एक स्नेहभरी नज़र डालकर च्याङ हुआ ने कुछेक शब्द फुसफुसाकर उससे कहा। फिर सियाओ-येन से हाथ मिलाकर, वह कमरे से चला गया।

"मैं तुम दोनों के बीच में आ गयी," सियाओ-येन ने जाते हुए च्याङ हुआ को अन्यमनस्क भाव से देखते हुए कहा। "आओ चलें, ताओ-चिङ। मैं दोबारा उसे देखना नहीं चाहती।"

——:o:——

अध्याय 40

सियाओ-येन के यहाँ से वापस अपने कमरे में आने के बाद, ताई यू ने सोकर अपने नशे की खुमारी दूर की, और जब जागकर उसने सियाओ-येन के साथ हुए अपने झगड़े को याद किया, तो विस्मय से भर गया। हालात उसके लिए बद से बदतर हो रहे थे। पिछले कुछ दिनों के दौरान पेइपिङ में छात्र आन्दोलन तेज़ी से आगे बढ़ रहा था, तमाम छात्रों के संघ और लोग देश को बचाने की ख़ातिर संगठित हो चुके थे, और इनमें से कई तो छात्र फ़ेडरेशन में शामिल भी हो गये थे। स्कूलों में उसका मामूली समर्थन, छात्रों की व्यापक बहुसंख्या द्वारा, जो अब अपनी ज़िम्मेदारियों के प्रति जागरूक हो गये थे, खण्डित किया जा चुका था। इसके लिए वह अपने क्वोमिन्ताङ-स्वामियों द्वारा निन्दित भी किया जा चुका था, और वह शराब में अपना गम ग़लत करने की कोशिश करता रहा था। और सर्वोपरि बात यह थी कि सियाओ-येन ने उसके छद्म-आवरण को बेध दिया था। यह सर्वाधिक बुरा सदमाथा, क्योंकि वह उसकी सर्वाधिक निष्ठावान विश्वासपात्र लेफ़्टिनण्ट रह चुकी थी, जिसने उसके ख़ाली जीवन में खुशी की एक चिनगारी ला दी थी। क्या किया जाये? क्या वह स्थिति को बचा सकता था, और फिर उस पर अपना क़ब्ज़ा बना

सकता था? अपने उदास, भारी-भरकम परदा लगे कमरे में पड़े-पड़े वह एक के बाद एक सिगरेट फूँकता हुआ काफ़ी परेशान होकर तब तक सोचता रहा, जब तक कि पूरी हवा धुएँ से घनीभूत नहीं हो गयी।

दोपहर में दो बजे वह उठा, परदों को हटाया, और खिड़की खोल दी। कमरा तुरन्त रोशनी से भर उठा। और सर्द हवा का एक झोंका उसके पीले, मनहूस चेहरे पर आ गया। उसने अपनी उँगलियाँ अपने गन्दलाये बालों में फिरायीं और कई बार छींका, फिर झटपट खिड़की बन्द कर दी।

खाने के लिए रुके बग़ैर वह बाहर जाने के लिए तैयार हो गया। नहाने के बाद, उसने अपने बालों में कंघी की, एक झकाझक साफ़ कमीज पहनी, और अपने ऊपर यूडीकोलोन छिड़का। उसके बाद, उसने एक भूरा ट्वीड का सूट, एक गाढ़ा नीला ऊनी ओवरकोट पहना, और एक अंग्रेज़ी ट्रिल्बी हैट अपने नरम काले बालों के ऊपर लगा लिया। विचित्र बात थी कि ताई यू ने, पहले कभी सियाओ-येन के यहाँ जाने के मुक़ाबले आज कहीं अधिक चुस्त-दुरुस्त ढंग से अपनेआप को सुसज्जित किया। बाहर से वह बिल्कुल ठीक-ठाक ऐसे छैल-छबीले की तरह जिसे मानो दुनिया में कोई चिन्ता न हो, बन-ठनकर सियाओ-येन के घर की ओर चल दिया।

उसने सोचा था कि सियाओ-येन द्वारा उसके गुप्त काग़ज़ात का पता पा जाने पर उसकी पहली प्रतिक्रिया ज़रूर एक सदमाभरी मुसीबत के रूप में रही होगी। उसने अपनेआप को इस ख़याल से सान्त्वना दी कि वह उससे प्रेम करती है और उसी राह पर सफ़र कर रही है जिस पर कि वह कर रहा है, और कि अब उसे पीछे लौटने के लिए बहुत देर हो चुकी है। उसे एक युक्तिसंगत स्पष्टीकरण देना होगा। फिर अगर वह प्रेम के पुष्पों को और अधिक आँसुओं से खींच देगा, तो वह सहृदय, सरल सियाओ-येन, निश्चय ही उसकी बात मान जायेगी।

सियाओ-येन घर पर नहीं थी। वह भोर ही में निकल गयी थी और वापस नहीं आयी थी। वह विश्वविद्यालय दौड़ गया, लेकिन वह न तो हॉस्टल में थी, और न ही किसी कक्षा में। जब वह अपने किसी भी दोस्त के यहाँ उसे नहीं मिली, तो वह सचमुच घबराने लगा। वह उसका इन्तज़ार करने के लिए वापस उसके घर चला गया, ताकि वे अच्छी-ख़ासी बातें कर सकें।

जब तक वह इन्तज़ार करता रहा तब तक सियाओ-येन के माँ-बाप उसका साथ देते रहे। श्रीमती वाङ ने उसे चाय पेश की, जबकि प्रोफ़ेसर ने एक बच्चे जैसी उत्कण्ठा के साथ बातचीत करना शुरू कर दिया।

"तुमको पता है कि विश्वविद्यालय में गतिविधियाँ किस तरह बदल चुकी हैं, चुन-त्साई? सभी नौजवान सक्रिय हो उठे हैं, और हर कोई देश को बचाने की बात कर रहा है। यहाँ तक कि बूढ़े प्रोफ़ेसर भी, स्वयं मुझ जैसे बूढ़े दकियानूस भी, हरक़त में आ गये हैं, और इस समस्या पर विचार-विमर्श करने के लिए मीटिंगें

कर रहे हैं। इसी को कहते हैं कि 'मनुष्य का हृदय अभी मुर्दा बना हुआ है।' क्या तुम नहीं मानते?" हँसी के साथ उठ खड़े होते हुए, उसने मेज़ पर एक घूँसा जमाया, जिससे ताई यू चौंक गया। वह जासूस पीला पड़ गया और सिहरन न रोक सका, लेकिन उसने तुरन्त अपनेआप को संयत कर लिया, और शिष्टाचार से बोला :

"आपकी उम्र के एक आदमी का राष्ट्र की दशा पर इतना चिन्तित होना एक बढ़िया बात है, श्रीमान! आप हमें और उन सभी को प्रेरणा देंगे जो भारी प्रयासों के लिए अभी नादान हैं।"

प्रोफ़ेसर वाङ ने प्रतिवाद में एक हाथ लहराया।

"तनिक भी नहीं। एक व्यक्ति क्या मायने रखता है? मार्क्स के अनुसार, ये तो जनगण है जो इतिहास के सच्चे नायक और निर्माता हैं। एक व्यक्ति तो बिल्कुल नगण्य है। मैं तुमको यक़ीन दिला दूँ, चुन-त्साई कि शिक्षाशास्त्र के क्षेत्र में तो हम बूढ़े प्रोफ़ेसर तुमको कुछ पढ़ा सकते हैं, लेकिन जब देशभक्ति और क्रान्ति की बात आ जाती है, तो अवश्य तुम नौजवान लोगों को ही नेतृत्व करना चाहिए। मेरे कोई छात्र, मैं जानता हूँ, इस उद्देश्य के लिए बिना खाये और बिना सोये काम कर रहे हैं। जिस जोश-खरोश के साथ वे लोगों को दुश्मन का प्रतिरोध करने और हमारे देश को बचाने के लिए जागृत कर रहे हैं, वह मुझ जैसे बूढ़ों को, अश्रुविह्वल बना देता है।" उसने अपना चश्मा उतार लिया और झेपते हुए अपनी आँखें पोंछ लीं।

"अब, इतना उत्तेजित मत हो, प्रिय।" कुछ घबराकर श्रीमती वाङ ने विषय बदल दिया। "क्या तुम रात के खाने के लिए रुकोगे, चुन-त्साई? सियाओ-येन सुबह से बाहर निकली है तब से वापस नहीं आयी। क्या तुम पिछली रात उससे झगड़े थे?"

ताई यू ने अपना सिर हिला दिया, और हँसते हुए जवाब दिया :

"नहीं, महज़ काम के बारे में विचार-विभिन्नता थी। हालात कसते जा रहे हैं। जापानी हमें दिन-ब-दिन दबाते जा रहे हैं। सियाओ-येन मिज़ाज से मन्थर और सुस्त है। जब मैंने उसे और अधिक सक्रिय होने का अनुरोध किया तो वह बौखला गयी, इसलिए आज मैं उससे माफ़ी माँगने आया हूँ।"

"यह तो एक छोटी बात है," प्रोफ़ेसर वाङ चिल्लाया। किस बात ने सियाओ-येन को इतना निम्न बुद्धिवाला बना दिया? लेकिन फ़िक्र मत करो, चुन-त्साई, मैं उससे बात करूँगा।"

"तुम अपने काम की चिन्ता करो," श्रीमती वाङ ने एक मुस्कान के साथ टोक दिया। "हम क्यों उनके मामले में टाँग अड़ायें?" बस उन्हें ही अकेले निपटने दो। ख़ैर, जब तक तुम दोनों बातें करो, मैं जाकर रात का खाना तैयार करती हूँ। सियाओ-येन के घर आने का समय हो चुका है।" उसके कमरे में से चले जाने के

बाद उसका पति राष्ट्रीय संकट के मुद्दे पर लौट आया, और ताई यू को बोलने का अवसर मिल गया :

"आपने एक क्षण पहले बताया श्रीमान कि प्रोफ़ेसर भी मीटिंग कर रहे हैं। कौन-कौन प्रोफ़ेसर? मैं उनमें से कुछ को जानना चाहूँगा।"

"अरे बहुतेरे," गोल-मटोल उत्तर था। मीटिंग में यह बात तय की गयी है कि उन प्रोफ़ेसरों के नाम नहीं खोले जायेंगे और यद्यपि चेङ चुन-त्साई प्रोफ़ेसर वाङ का होने वाला दामाद था, फिर भी देखने से सीधा लगने वाला परन्तु वह सतर्क बूढ़ा विद्वान, सवाल को भुलाकर बोला, "मुझे बताओ, चुन-त्साई अभी तक तुम कैसे काम करते रहे हो। क्या तुम्हारा काम ठीक-ठीक जा रहा है?"

"बस जैसे-तैसे। यह एकदम से मेरी लाइन नहीं है।" ताई यू बुदबुदाया, उसकी आँखें उमड़ आयीं। "मुझे पट्टी पढ़ाना चाहता है, अरे? कमीना लाल क्रान्तिकारी!" ताई यू ने उसे अपने मन में गाली दिया। उसके दिमाग़ में एक विचार कौंध गया, "मैं इसे भी सूची में शामिल करूँगा।"

जब सियाओ-येन नहीं लौटी, तो उसके माँ-बाप चिन्तित होने लगे, और विश्वविद्यालय में तथा उसके दोस्तों के यहाँ टेलीफ़ोन किया। लेकिन किसी ने उसे नहीं देखा था। ताई यू बूढ़े दम्पति से कहीं अधिक चिन्तित था, कारण कि इसका मतलब था उसकी स्कीम का असफल हो जाना। कुछ ज़रूर सियाओ येन के साथ हुआ होगा। क्या उसने आत्महत्या कर ली या कम्युनिस्टों के पास चली गयी? दोनों में से कोई सम्भावना उसे खुश करने वाली नहीं थी, लेकिन दूसरी तो दोनों सम्भावनाओं में से सबसे अधिक आतंकित करने वाली थी। वह उसके गुप्तभेदों को जान चुकी थी और प्रगतिशील छात्रों की काली सूची भी देख चुकी थी।

उसने दस बजे वहाँ से प्रस्थान किया। ये नयी हरकतें फ़ौरी उपाय की माँग कर रही थीं। एक काली अँधेरी गली में चलते हुए उसने जल्दी-जल्दी कुछ सोचते हुए उस सर्द हवा में अपने हाथों को कैंची करके अपने कन्धों को पकड़ लिया।

"उसे मरना ही होगा – उसे नहीं तो, मुझे।" अचानक, उसने अपनी कल्पना में देखा कि सियाओ-येन की सौम्य, निश्चल आँखें उसकी ओर आग की तरह दहक रही थीं। वह लड़खड़ाया और लगभग गिर ही पड़ा। अपनेआप को सहेजते हुए उसने निश्चय किया, "मुझे अवश्य उसके बाप को गिरफ़्तार कर लेना चाहिए, और उससे यह उगलवाना चाहिए कि कौन-कौन से प्रोफ़ेसर उन बैठकों में उपस्थित हुए थे। इससे मेरी साख बढ़ जायेगी और कुछ पिछली ग़लतियों की भरपाई भी हो जायेगी।" अपना हाथ उस काली सूची को उँगली से छुआ तो पेश की जाने के लिए तैयार थी, और एक कुटिल मुस्कान से उसका मुँह विकृत हो गया।

सर्द हवा सुनसान गलियों में सन-सन कर रही थी, जब वह दो मोड़ों को पार करते हुए, एक लम्बी सँकरी गली में महुँचा। दूसरे ही क्षण दो बलिष्ठ हाथों ने

उसका गला पकड़ लिया। डर से उसकी घुटनभरी चीख़ निकल गयी।

इसके पहले कि वह यह जान सके कि क्या हुआ, इसके पहले ही उसे घसीटकर एक काली कार में डाल दिया गया। उस पर मौत का डर व्याप्त हो गया। "बस यही मेरा अन्त है," उसने अपनी आँखें बन्द करते हुए खुद से कहा। "मैं तो गया। च्याङ हुआ और उसके गिरोह वाले अब मुझे मार डालेंगे।" लकिन अपने दिल में वह आशा के विपरीत यह उम्मीद भी कर रहा था, "हो सकता है, वे मुझे छोड़ दें। मैं फिर कभी यह काम नहीं करूँगा।"

"अरे वाहियात मूर्ख, चेङ चुन-त्साई!"

इस स्वर की आवाज़ पर, ताई यू ने आँखें खोल दीं और मुस्कुराया। यह कम्युनिस्ट च्याङ हुआ नहीं था, बल्कि उसकी रखैल और उसकी बड़ी अधिकारी वाङ फेङ-चुआन थी। यह अवश्य उसकी उपेक्षा करने के एवज़ में उसे दण्डित करने का एक व्यावहारिक मज़ाक़ होगा। ताई यू ने अँधेरे में उसके हाथों को पा लेने के लिए टटोला, लेकिन उसके गले में पड़ा मज़बूत रस्सी का फन्दा क्रमशः कसता जा रहा था। कोई आवाज़ निकालने में असमर्थ उसने वाङ फेङ-चुआन को यह कहते सुना :

"अरे मूर्ख! तुम वाङ सियाओ-येन तक को नहीं सँभाल सके। तुम वाङ चुङ तक की अगुवाई नहीं कर सके। तुमने पेइपिङ स्कूलों को बुरी तरह गड्डमड्ड कर डाला है।" यकायक उसने अपना स्वर ऊँचा किया, "इसे दूर ले जाओ! और ध्यान रखना, वह बिना क्षत-विक्षत हुए साबुत पड़ा पाया जाये।"

कार शहर के बाहरी छोर की ओर दौड़ पड़ी, और ताई यू वीरान धरती के गहन विस्तार में बाहर की ओर झुला दिया गया। ऊपर से छिटपुट तारे इस मुख़बिर और ग़द्दार की अकड़ी हुई लाश पर उपहासभरी आँखें मटका रहे थे।

अपने हाथ पीछे बाँधे प्रोफ़ेसर वाङ पूरी तरह से व्यग्र होकर एक दोस्त के कमरे में चहलक़दमी कर रहा था।

सियाओ-येन चुपचाप मेज़ के पास बैठी हुई थी। उसका सिर झुका हुआ था, और वह दुबली और शिथिल दिख रही थी, मानो उसकी उम्र में दस वर्ष और जुड़ गये हों।

"सियाओ-येन, तुम अपने पिता को इस तरह दुविधा में मत रखो। बस मुझे साफ़-साफ़ बता दो कि तुम क्यों इतनी अस्त-व्यस्त हो बेटी। पुलिस ने क्यों हमारे घर पर छापा मारा? यह तो सौभाग्य था कि हममें से कोई घर पर नहीं था। लेकिन अब हम फ़रार हैं। कोई कारण तो अवश्य होगा।"

"डैडी वादा करो कि तुम माँ से नहीं बताओगे!" सियाओ-येन ने याचनाभरी आँखों से अपने पिता के चिन्ताग्रस्त चेहरे की ओर देखा। आँसुओं के मारे उसका

गला रुँध गया, और अपने हाथों से अपना चेहरा ढाँपकर वह बुरी तरह सिसकने लगी। "डैडी, मैंने तुम्हारी हेठी कर दी है और उन आशाओं के अनुरूप नहीं जी सकी, जो तुम और माँ मुझसे करते थे।"

प्रोफ़ेसर वाङ का लाल चेहरा फक पड़ गया। उसको अब भी अहसास नहीं हो पाया था कि किस बात ने उसकी बेटी को इतना हताश कर दिया था। उसके ऊपर चिन्तातुर भाव से झुककर उसने उसके बालों को सहलाया और फ़ौरन कहा :

"मत रोओ बच्ची! क्या चुन-त्साई की वजह से? क्या तुम लोगों के बीच कुछ हो गया है? मैं जानता हूँ कि तुम लोग हाल ही में खूब झगड़े हो।"

"डैडी!" सियाओ-येन उठ खड़ी हो गयी, उसकी उदास आँखें दहक रही थीं। "वह शैतान था! एक जासूस था! गद्दार था! उसने मुझे बरबाद कर दिया – मेरा सारा जीवन चौपट कर दिया!" वह फूट-फूटकर रोती हुई बिस्तर पर जा पड़ी।

उसका भयाक्रान्त बाप इतना हड़बड़ा गया कि उसका चश्मा गिरने-गिरने को हो गया। उसने उसे उतारा और फिर पहन लिया। अपनी बेटी की बग़ल में उद्‌भ्रान्त-सा खड़ा होकर, उसने उसका सिर ऊपर की ओर उठाया, और तरस खाते हुए बोला :

"बेचारी बच्ची! प्यारी सियाओ-येन! इसका क्या मतलब है? क्या वह इतना कमीना है कि हमें गिरफ़्तार कर लेना चाहता है? तुम अपने बूढ़े बाप को सबकुछ बता दो। नहीं, तुमको कुछ कहने की ज़रूरत नहीं, मैं समझता हूँ।" उसने अपना सिर पीछे की ओर झटका, सामने की ओर घूरकर देखा, और घृणा से भरकर थूक दिया, मानो ताई यू वहाँ पर खड़ा हो। "अब मैं समझ गया। वह एक जासूस है, गद्दार है, पाखण्डी और बेशर्म पिट्ठू है। क्या मैं ठीक कह रहा हूँ सियाओ-येन? लेकिन हम उससे क्यों चिन्तित हो? वह पिट्ठू बना रहे, जबकि हम अपना काम करते रहें, वह हमारा क्या कर सकता है? बस देखती चलो कि अन्त में कौन जीतता है।"

"नहीं, नहीं!" सियाओ-येन दाँत भींचकर चिल्लायी। "वह मर चुका है – उसे मार डाला गया है।"

प्रोफ़ेसर की आँखें फटी-फटी-सी होंगी। "मुझे विश्वास नहीं हो रहा! यह तो किसी उपन्यास-कहानी-सा मालूम पड़ता है। क्या तुम मुझसे सच कह रही हो, सियाओ-येन?"

बिस्तर पर लेटी हुई वह न तो चीख़ी, और न ही बोली। उसके चेहरे का फीकापन और उसके अपने होंठ चबाने का अन्दाज़ एक उत्कट अन्दरूनी द्वन्द्व का परिचय दे रहे थे। वह अपने ख़यालों से ताई यू को हमेशा-हमेशा के लिए निकाल देना चाहती थी। क्यों वह एक घृणित मुख़बिर के लिए अपना हृदय जलाये? काश, वह चैतन्य हो सकती और जान पाती कि यह सब एक बुरा स्वप्न था!

"तुम्हें चिन्ता नहीं करनी चाहिए सियाओ-येन," उसके पिता ने और सुस्थिर भाव से बैठकर उसे स्नेहपूर्वक देखते हुए, नरमी से आग्रह किया। "गतिविधियाँ बहुत तेज़ चल रही हैं। यही तो समय है जब तुम नौजवान लोग अपनी कोशिशें दोगुनी कर दो। पिछली बातों को भूल जाओ और सबकुछ फिर नये सिरे से शुरू करो। प्रसंगवश, क्या कम्युनिस्ट तुम पर शक करते हैं? या कि वे अब भी तुम पर विश्वास करते हैं?" उसने अपने चेहरे पर एक तमतमाहट का भाव लाकर, इस सवाल को गम्भीरता से रखा :

"ताओ-चिङ और मैंने दोस्ती कर ली है, डैडी।" एक फीकी मुस्कान, उसकी वेदना के बावजूद फूट निकली। "यह सब ताई यू का दोष था कि हम अलग-थलग पड़ गयी थीं। क्या कम्युनिस्ट अब भी मुझ पर विश्वास करते हैं? हाँ, वे करते हैं, पूरी तरह से। अगर पार्टी मेरे बचाव के लिए नहीं आयी होती, तो मैं सचमुच ख़त्म ही हो चुकी होती।"

सियाओ-येन अभी रुलाई का दूसरा दौर रोकने की कोशिश कर रही थी कि उसकी माँ ने दौड़ते हुए आकर उसे अपनी बाँहों में भर लिया। उस शाम ताई के चले जाने के बाद, सियाओ-येन ने अपने माँ-बाप को एक सन्देश भेजा था कि वे छिप जायें, और उन्होंने एक दोस्त के यहाँ शरण ले ली थी। श्रीमती वाङ खिड़की के बाहर से बाप-बेटी के बीच की बातचीत को सुन चुकी थी। उसका हृदय सियाओ-येन के लिए टीस उठा और वह उसकी मुसीबत के लिए स्वयं अंशतः दोषी महसूस करती हुई, उसके प्रेम-सम्बन्ध की इस विडम्बना पर कड़ुवाहट से भरकर पछता रही थी अपनी बेटी को अपने आलिंगन में लेने के लिए अन्दर आकर वह आँसुओं से भरकर बोली :

"मैं ही इसके लिए दोषी हूँ, बच्ची! तुम तो अभी इतनी अनाड़ी हो। यह सब उस बदमाश की मक्कारी थी।"

सियाओ-येन अब पहले से अधिक सुस्थिरचित्त होकर, उसे सान्त्वना देने की कोशिश करने लगी।

"कोई फ़िक्र मत करो, माँ! मैं इससे निजात पा चुकी हूँ। और जनभावना का आतंक उन ठगों को हमारा कुछ भी बिगाड़ पाने से रोक देगा। मैं सोचती हूँ कि तुम और डैडी अब घर चले जाओ। ताओ-चिङ मेरा इन्तज़ार कर रही है। हमें बहुत काम करने हैं! पेइपिङ छात्र फ़ेडरेशन एक विशाल प्रदर्शन आयोजित करने जा रहा है। क्या तुमने इसके बारे में सुना है डैडी?"

बूढ़े-बूढ़ी, ख़ास तौर से प्रोफ़ेसर वाङ, अपनी बेटी के चेहरे की विश्वासपूर्ण निश्चयात्मकता पर खुशी से चकित थे। सियाओ-येन अपने गालों पर से आँसू के धब्बों को जल्दी से धोकर झटपट कमरे से बाहर निकल गयी, उसकी निगाह में कोई झेप-झिझक नहीं थी, मानो सारा अपयश, अन्धकार और दुख अतीत की चीज़ बन

चुके थे। प्रोफ़ेसर ने राहत की एक साँस और कुछ-कुछ स्वयं से और कुछ-कुछ अपनी पत्नी से कहा :

"एक दूसरा तूफ़ान जन्म ले रहा है। लेकिन ये नन्हे गरुण पूरी तरह निडर हैं।"

——:o:——

अध्याय 41

सन् 1935 के अद्भुत नौ दिसम्बर आन्दोलन की पूर्वसन्ध्या थी।

ताओ-चिङ साज-सज्जाविहीन आवास में, जिसमें वह हाल ही में आयी थी, सर्दी के मारे तेज़ बुख़ार से पीड़ित चारपाई पर पड़ी थी। साँझ होते-होते सू हुई, सियाओ-येन और होउ-जुई वहाँ जमा हो गये और अँगीठी के इर्द-गिर्द बैठकर धीरे स्वर में बातें करने लगे। "यह कब से बीमार है?" सू हुई ने सियाओ-येन से पूछा। "क्या तुमने डॉक्टर को बुलाया है?"

"हाँ, डॉक्टर आया था," सियाओ-येन ने फुसफुसाकर जवाब दिया। वह कहता है इन्फ़्लुएंज़ा है। मेरे ख़याल से यह पिछले कुछ दिनों से ज़रूरत से ज़्यादा काम करती रही है। यह रात-दिन भाग-दौड़ करती रही है, लोगों से बातचीत करती रही है और प्रतिक्रियावादियों से कैसे लड़ा जाये, इसकी योजना बनाती रही है। इसकी रोगरोधी क्षमता भोजन के अभाव में भी घट गयी है।"

होउ-जुई ने सिर हिलाते हुए कहा, "इसने अपनेआप को थका डाला है।"

"तुम्हें इसकी बेहतर देखभाल करनी चाहिए थी। सू हुई बोली, वह चिन्तित हो गयी, क्योंकि ताओ-चिङ मूर्च्छित मालूम पड़ रही थी।

ठीक तभी होश में आते हुए और उन तीनों को देखते हुए ताओ-चिङ ने मुस्कुराते हुए कहा, "तुम लोग कब आये?" मैंने जाना ही नहीं कि तुम लोग आ गये। मुझे बताओ सू हुई, क्या कल वाली हमारी योजना तय हो चुकी है? उसमें कोई परिवर्तन तो नहीं होगा, या होगा?"

"ऐसा लगता तो नहीं है।" सू हुई मुस्कुराती हुई उस पर झुक गयी। "तुम चिन्ता मत करो। बस ठीक से आराम करो।" वह उसकी बग़ल में बैठे होउ-जुई से पूछने के लिए मुड़ी। "तुम्हारे ख़याल से पीकिङ विश्वविद्यालय के कितने छात्र प्रदर्शन में भाग लेंगे?"

"निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता," होउ-जुई ने उत्तर दिया। 'आज रात में हम उनके बीच कुछ और काम करेंगे और कल सुबह के लिए आख़िरी अपील करेंगे। मुझे विश्वास है कि कम से कम तीन या चार सौ तो हो ही जायेंगे।"

ताओ-चिङ अचानक उठ बैठी और सू हुई को घूरते हुए बोली, "जैसे ही हम कल हरकत में आने लगेंगे सू हुई, वैसे ही लम्बे समय से सुप्त ज्वालामुखी भड़क

उठेगा। मुझे यक़ीन है कि भारी तादाद में छात्र इसमें शामिल होंगे।"

"क्या सू हुई ने तुमसे कहा नहीं कि चिन्ता मत करो? तब भी तुम फिर अपने-आप को उत्तेजित कर रही हो," सियाओ-येन ने ताओ-चिङ को लिटाते हुए प्रतिवाद किया।

"उत्तरी चीन जैसे विशाल क्षेत्र में शायद ही पढ़ाई के लिए कोई शान्त जगह बची हो।" सू हुई बारी-बारी से सबकी ओर देखकर मुस्कुरायी। "यह हमारे घोषणापत्र का एक उपयुक्त उद्धरण है, जो कल जारी होगा। यह हमारे अधिकतर लोगों की जापानी हमले का प्रतिरोध करने की उत्सुकता को प्रतिबिम्बित करता है। इस बार कार्यवाही के लिए पार्टी का आह्वान जनगण की इच्छाओं और राजनीतिक चेतना पर आधारित है।

मैं सोचती हूँ कि मुझे झटपट चल देना चाहिए। क्या तुम कुछ दूर तक मेरे साथ चलना चाहोगी सियाओ-येन? फिर ताओ-चिङ की देखभाल के लिए तुरन्त वापस आ जाना। चलने से ठीक पहले वह ताओ-चिङ से अनुरोध करने के लिए पीछे मुड़ी। "अब ठीक से आराम करो, और उठना नहीं। मैं फिर कल आऊँगी। अरे हाँ, मैं तो भूल ही गयी थी, च्याङ हुआ ने तुमसे यह बताने के लिए कहा था कि वह कल प्रदर्शन के बाद तुमको देखने आयेगा। बैठकर चुपचाप उसका इन्तज़ार करो।"

जब सियाओ-येन और होउ-जुई ने बिस्तर पर रखे कप को भर दिया, और अँगीठी तेज़ कर दी तो उसके बाद वे चले गये।

"कल! ज्वालामुखी कल फूटेगा।" ताओ-चिङ आसन्न संघर्ष पर खुश होकर मन ही मन सोचती हुई पड़ी थी, और बुख़ार में बड़बड़ा रही थी। "ज्वालामुखी, ज्वालामुखी।"

सियाओ-येन काफ़ी पहले लौट आयी थी, और यह इत्मीनान करके कि ताओ-चिङ को किसी चीज़ की कोई कमी न हो, वह रातभर उसके बग़ल में पड़ी रही। अगली सुबह दिन निकलने से पहले ही वह चुपचाप इतने धीरे से उठी कि उसकी दोस्त को कोई ख़लल न हो, लेकिन अभी वह अँधेरे में कपड़े पहनकर तैयार ही हो रही थी कि ताओ-चिङ जाग गयी। वह उठ बैठी और काँपती उँगलियों से बत्ती का स्विच ऑन कर दिया। सियाओ-येन ने उसे झटपट रोकते हुए प्रतिवाद किया :

"ताओ-चिङ, मूर्ख मत बनो, मैंने अभी एक क्षण तुमको छूकर देखा था, और तुमको अब भी बुख़ार है। तुमको आज बाहर नहीं निकलना है।" ताओ-चिङ हँसते हुए अपने कपड़े पहनने लगी। "बुख़ार उतर चुका है। मैं फिर एकदम ठीक-ठाक हूँ। दूसरों के साथ मार्च करना मेरे लिए बहुत फ़ायदेमन्द रहेगा।"

सियाओ-येन चिन्तातुर हो उठी, ताओ-चिङ को हाथ का सहारा दिया और गम्भीर होकर बोली :

"सू हुई ने तुम्हें मुझे सौंपा है – मुझे उसको जवाब देना पड़ेगा। तुम बाहर मत जाओ।"

"तुमको सू-हुई को जवाब देना है, लेकिन मुझे? बढ़िया दोस्त बनो और मुझे रोकने की कोशिश मत करो।"

जल्दी-जल्दी अपना मुँह धोकर और अपने बालों में कंघी करके ताओ-चिङ ने एक बच्चे की भाँति याचना की, "सहृदय बनो, सियाओ-येन हो-हल्ला मचाना बन्द करो और मुझे जाने दो, बहुत काम करने हैं, मुझे जाना ही होगा। सहृदय बनो और इस महान कार्य में साथ-साथ शरीक़ होने दो।" इसके साथ ही वह बेहद अनमनी बनी सियाओ-येन को बिना हाथ-मुँह धोये और बिना कंघी किये ही बाहर अहाते में खींच ले गयी। ताओ-चिङ ने बुख़ार के बाद की अपनी दुर्बलता को छिपाने की कोशिश की थी, लेकिन जैसे ही उसने अहाते का फाटक खोला और एक बेधती हवा का झोका उनके चेहरों पर लगा, वैसे ही उसका सिर भन्ना गया, और वह गिर पड़ी होती कि उसकी दोस्त ने उसे थाम लिया।

हवा के थपेड़े में, सियाओ-येन को उसे सँभाले रखना कठिन हो रहा था, कारण कि वह अपनी मूर्छित हुई दोस्त को पकड़े हुए थी। उसका दिल ज़ोर ज़ोर से धड़क रहा था? उसकी सामर्थ्य ख़त्म होती जा रही थी, और वह नहीं समझ पा रही थी कि क्य करे। सौभाग्य से ताओ-चिङ को फिर होश आ गया, लेकिन जब सियाओ-येन ने उसे कमरे के भीतर ले जाने की कोशिश की, तो उसने टस से मस होने से दृढ़तापूर्वक इन्कार कर दिया। सियाओ-येन ने अपनी आँखों में आँसू भरकर उससे आरज़ू की।

"अन्दर जाकर लेटी रहो, ताओ-चिङ! मैं जानती हूँ कि तुम प्रदर्शन छोड़ना नहीं चाहती, लेकिन मुझसे तुम्हारी एवज़ में जितना बन पड़ेगा, करूँगी। अगर मेरा ख़ून बहा, तो उसका एक हिस्सा तुम्हारा होगा।" आँसू उसके गालों से होकर ढुलक रहे थे।

इसके पहले कि ताओ-चिङ, जो उसकी बाँहों पर झुकी हुई थी, जवाब दे पाती, शान्त हवा गीत के स्वरारोहों से प्रकम्पित हो उठी। यह संघर्ष से उपजा हुआ, एक आवेशपूर्ण, आलोड़नकारी गीत था, और लोगों में जोश भर रहा था। दोनों लड़कियों ने ध्यानपूर्वक सुनने के लिए अपने सिर घुमा दिये, और एक भव्य अभिव्यक्ति उनके चेहरो पर उभर आयी।

> मज़दूर, किसान, सैनिक, छात्र, व्यापारीजन
> अपने देश की रक्षा में एकजुट हो!
> हथियार उठाओ और छोड़ चलो
> अपनी फ़ैक्टरियों, खेतों और कक्षाओं को

मोर्चे पर झटपट डट जाने को
राष्ट्रीय मुक्ति के रणक्षेत्र में।

यह कोई नया गीत नहीं था। वे इसे पहले भी कई बार सुन चुकी थीं, फिर भी उन्हें ऐसा लग रहा था कि संघर्ष के ठीक पहले उस घुप्प अँधेरे में वे इसे पहले-पहल सुन रही हों, और उनके हृदय गहराई तक आलोड़ित हो उठे। यह आगे बढ़ने के लिए एक कोलाहलभरा आह्वान, एक युद्ध-नाद था। ताओ-चिङ का हृदय इतने ज़ोर से धड़क रहा था कि वह बोल नहीं पा रही थी। फिर अपनेआप को संयत करके उसने सियाओ-येन की बाँह छोड़ दी और उसे धीरे से धकेल कर बोली :

"जल्दी जाओ और उनमें शामिल हो! मैं यहाँ शुभ-समाचार का इन्तज़ार करूँगी।"

जब सियाओ-येन चली गयी, तो ताओ-चिङ सारा दिन चारपाई पर पड़ी रही, लेकिन सो न सकी। समय-समय पर वह गलियों में कोलाहल सुनती – नारों की चीख़ हवा की सरसराहट में घुली-मिली होती जो उसके कमरे में प्रतिध्वनित होती, उसके हृदय में जोश भरती और ऐसी लगती, मानो वह चीख़ दुनिया के दूसरे छोर पर पहुँच जायेगी। एक क्षण उसे महसूस होता कि वह एक स्वप्नलोक में है, दूसरे ही क्षण उसे लगता कि वह क्रान्तिकारी तूफ़ानों के बीच है।

शाम का धुँधलका घिर आया, तब भी विजड़ित कर देने वाली बयार उसकी खिड़की से बाहर चल रही थी। अपनी रज़ाई में सिकुड़ी-सिमटी हुई और इन्तज़ार करते-करते थकी हुई ताओ-चिङ सो गयी। एक बर्फ़ की भाँति सर्द स्पर्श ने उसे जगा दिया और अपनी आँखें खोलकर उसने बत्ती का स्विच आन करके देखा कि ली हुआई-यिङ और सियाओ-येन उसकी बग़ल में ठण्ड से काँप रही थीं।

"आख़िर तुम आ ही गयीं। कैसा रहा?" उसने उन दोनों के हाथ पकड़ लिये, और उठ बैठने की कोशिश करने लगी।

"मत उठो, हम लोग बर्फ़ से ठिठुर गयी हैं!" दोनों लड़कियाँ काँप रही थीं और ठण्ड के मारे बमुश्किल ही बोल पा रही थीं। उनके चेहरे नील-लोहित हो गये थे, और बर्फ़ की नन्ही-नन्ही बूँदें उनके बालों पर टँगी थीं। सियाओ-येन का सूती-गद्देदार गाऊन और हुआई-यिङ का फर कोट दोनों ही बर्फ़ के चादरों की भाँति प्रतीत हो रहे थे, लेकिन वे खुशी से भरी हुई और उत्तेजना में थी, ख़ासतौर से हुआई-यिङ अर्द्धनिमीलित आँखों से मुस्कुरा रही थी और उसके होंठ भी कुछ कहते हुए बुदबुदा रहे थे।

"तुम लोग बर्फ़ से घिरी हुई क्यों हो? सबकुछ कैसा रहा? मैं इतना अधीर होकर इन्तज़ार करती रही हूँ, सुनूं कि क्या हुआ!" ताओ-चिङ ने अपनी रज़ाई पर पड़ा हुआ गाऊन उठाकर हुआई-यिङ को देते हुए कहा, "देखो तो! तुम्हारे फर कोट

पर बर्फ़ की तह जम गयी है। इसे जल्दी बदल लो।"

हुआई-यिङ मुस्कुरा रही थी, अचानक अपनी बाँहें ताओ-चिङ के गले में डाल दी और रो पड़ी।

"ताओ-चिङ मैं इन सारे वर्षों में ख्वाब में जी रही थी। आज अन्ततः मुझे मालूम हो गया कि हमें कैसे जीना चाहिए।" वह एक ही साथ हँस और रो रही थी; आँसू उसके ख़ूबसूरत गालों पर से होकर उमड़ रहे थे।

सियाओ-येन ने उसकी बाँह थामते हुए कहा, "इतना उत्तेजित मत हो! इसके लिए एक समारोह आवश्यक होगा।" जैसे ही वह बोली, उसकी स्वयं की आँखें नम हो उठीं।

अपनी बीमारी को भूलकर ताओ-चिङ एक झीना कार्डिगन पहने बिस्तर पर से उठ गयी। उस बर्फ़ीले कमरे में खड़े होकर और अपनी दोस्तों के हाथ थामकर उसने हर्षातिरेक में चिल्लाकर कहा :

"सचमुच! तुम दोनों इतनी उद्विग्न क्यों हों? तुम लोग भावुक हो रही हो। देखो, आज सर्दी है। तुम लोग अपने कपड़े बदलने के लिए अपने कमरे में जाओ, और उसके बाद, फिर आ जाना!"

दोनों लड़कियों के बालों की बर्फ़ पिघलने लगी थी और पानी उनके चेहरों पर से होता हुआ चूने लगा था। उनके कपड़ों पर पड़ी बर्फ़ भी पिघलने लगी थी, जिससे उन्हें और भी जाड़ा महसूस हो रहा था। सियाओ येन ने अपने दाँत किटकिटाते हुए ताओ-चिङ को झिड़की दी :

"वापस बिस्तर पर जाओ? हम लोगों के साथ कोई गड़बड़ी नहीं हुई है। यह तो पुलिस की करतूत है – गन्दे कुत्ते! जिन्होंने वाङ फूचिङ स्ट्रीट में हमारी तरफ़ होज का रुख़ कर दिया था। कुछ मिनट इन्तज़ार करो, हम तुमको इसके बारे में सबकुछ बताने के लिए वापस आयेंगी।"

"क्या तुम लोगों ने सू हुई को देखा? वह क्यों नहीं आयी है?" ताओ-चिङ ने पूछा।

"वह वापस आ चुकी है। यहाँ जल्दी ही आ जायेगी। हाँ, तुम च्याङ हुआ के बारे में क्यों नहीं पूछती? क्या उसमें कोई दिलचस्पी नहीं?" सियाओ-येन फिर चुहलबाज़ी कर उठी।

"चुप हो, और जाकर कपड़े बदल लो। मैं तुमसे पूरी रपट की उम्मीद करूँगी, जब तुम लोग वापस आ जाओगी।"

अकेली बच जाने पर ताओ-चिङ के विचार वास्तव में च्याङ हुआ की ओर मुड़ गये। उस पहली रात के बाद से, उन्हें साथ-साथ रहने या एक-दूसरे को देखने का, कोई अवसर नहीं मिला था। अलग-अलग रहते हुए, प्रत्येक दूसरे के बारे में चिन्तित रहता था। पिछले दो सप्ताह के दौरान वह उसके पास कई सन्देश भेज चुका।

के लिए भेज चुका था कि वह ठीक है और उसे जैसे ही समय मिलेगा, आ जायेगा। दिन सरकते गये और एक पूरा पखवारा बीत गया। वह ठीक रहे, तो इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता था कि वह नहीं आता था। ताओ-चिङ पूरे दिल से उसका इन्तज़ार कर रही थी। काश, अगर वह उसे अभी अपने सामने भला-चंगा देख लेती, तो कितनी खुश होती! लेकिन वह नहीं आया।

कुछ समय बाद, सियाओ-येन सूखे कपड़े पहनकर वापस आयी। हुआई-यिङ पीछे ही रुक गयी, क्योंकि वह अपने क्रियाकलापों को अपनी उन दोस्तों से बताने के लिए आतुर थी जिन्होंने परेड में भाग नहीं लिया था।

सियाओ-येन ने, जो कुछ हुआ था, उसका विस्तृत विवरण ताओ-चिङ को बता दिया।

उस सुबह पीकिङ विश्वविद्यालय के छात्रों का एक जत्था पूर्वी हॉस्टल के सामने जमा हुआ था। उनके स्कार्फ़ों पर पहले ही से बर्फ़ के कण पड़े हुए थे, क्योंकि कड़ाके की सर्दी थी, लेकिन उनके उत्साह ने उस बर्फ़ीले जाड़े के मौसम को विजित कर लिया। फर कोट और ऊँची एड़ी के जूते पहनी हुई ली हुआई-यिङ की उपस्थिति ने तमाम छात्रों को आश्चर्य में डाल दिया। फिर उसकी साफ़ ऊँची आवाज़ भीड़ के बीच में झंकृत हो उठी, "साथी छात्रो! अपनी हाथी दाँत की मीनारों से बाहर निकलो! अपनी कक्षाओं से बाहर आओ। राष्ट्र को बचाने के लिए लड़ो!" बहुत से ढुलमुल छात्र इस आह्वान पर हरकत में आकर पंक्तिबद्ध हो गये। वे सिन हुआ मेन तक बिना रोक-टोक मार्च करते गये, जहाँ एक जन-समूह एकत्र हो गया था – वहाँ विभिन्न कॉलेजों और हाईस्कूलों के दसियों हज़ार छात्रों का जमावड़ा था। "जापानी साम्राज्यवाद मुर्दाबाद!" "चीन के टुकड़े करना बन्द करो – स्वायत्तता आन्दोलन मुर्दाबाद!" "हम लोग संघर्ष की राह पर चलते हुए अपना ख़ून देंगे!" उस पुरातन राजधानी के ऊपर का आकाश इन गगनभेदी नारों से बार-बार प्रकम्पित हो रहा था।

छात्र-प्रतिनिधियों ने अपने छह सूत्रीय माँगों का ज्ञापन अधिकारियों के सामने पेश किया (1) कोई गुप्त कूटनीति नहीं; (2) चीन का कोई बँटवारा नहीं; (3) बोलने, सभा करने और देशभक्तिपूर्ण आन्दोलनों की आज़ादी (4) पूरी गृह-युद्ध को फ़ौरन बन्द किया जाये; (5) कोई ग़ैर-क़ानूनी गिरफ़्तारी न हो (6) देशभक्तिपूर्ण गतिविधियों की वजह से गिरफ़्तार सभी छात्रों को तुरन्त रिहा किया जाये।

सशस्त्र रक्षा सेनानायक के प्रवक्ता ने उनकी आँखों में धूल झोंकने की कोशिश की, और इन न्यायोचित और युक्तिसंगत माँगों को ठुकरा दिया। तब प्रदर्शनकारियों ने एक विशाल प्रतिरोध-मार्च चालू कर दिया।

सैकड़ों छात्र चार-चार की क़तारों में होकर पश्चिमी चाङआन स्ट्रीट में मार्च

कर गये। वे नारे लगाते और पर्चियाँ बाँटते जाते। बढ़ती हुई संख्या में मज़दूर, सरकारी कर्मचारी, फेरीवाले, रिक्शावाले और यहाँ तक कि घरेलू स्त्रियाँ भी अपनेआप आकर जुलूस में शामिल होती गयीं। रोष भरे मार्चकर्ता नारे लगाते थे, और बहुत जल्द ही यातायात ठप्प हो गया। प्रदर्शनकारियों के पीछे-पीछे चल रही पुलिस और सैनिकों की संख्या, और उनकी बढ़त को रोकने की कोशिशें भी बढ़ती गयीं। खून-ख़राबे पर उतारू अपनी संगीनें बाहर निकालकर साधे हुए वे, मार्चकर्ताओं के रास्ते में कुछ ही फ़ीट के अन्तरों पर तैनात थे। जब परेड सितान पहुँचा, तो तलवारों, कोड़ों और संगीनों के एक अचानक हमले से क़तारें तोड़ दी गयीं। लेकिन सुनियोजित सम्पर्क कार्य के चलते छात्र बग़ल की गलियों से सरकते हुए पुनः सितान बाज़ार के उत्तर, मुख्य गली वाले रास्ते पर आकर क़तार में जुट गये। वे तब तक उत्तर की ओर बढ़ते रहे, जब तक कि वे कैथोलिक विश्वविद्यालय नहीं पहुँच गये, वहाँ रुककर उन्होंने अत्यन्त तेज़ स्वर में नारे लगाये। यह एक मिशन की संस्था थी, जो साम्राज्यवादियों द्वारा चलायी जाती थी, लेकिन जब भीतर के छात्रों ने नारेबाज़ी के इस तूफ़ानी कलरव को सुना, तो वे अपनी कक्षाओं में न रह सके, और प्रदर्शन में भाग लेने के लिए बाहर दौड़ पड़े। जुलूस फिर आगे बढ़ा, नारों की चीख़ से वातावरण भर उठा, और रास्ते में पर्चियाँ बँटती रहीं। अधिक से अधिक सामान्य नागरिक, मज़दूर, गृहणियाँ और छोटे व्यापारी शामिल होते गये। जब बढ़ती हुई क़तारें लिगेशन क्वार्टर के पास वाङ फूचिङ स्ट्रीट के दक्षिणी छोर तक पहुँच गयी, तो साम्राज्यवाद के दुमछल्लों ने पुलिस और सैनिकों की एक ठोस नाकेबन्दी कर दी गयी जो हथियार बन्द और शूट कर देने को तैयार थे। क्षणमात्र में फ़ायर बिग्रेड की होज पाइपें प्रदर्शनकारियों के सिरों पर बर्फ़युक्त पानी के फौव्वारे छोड़ने लगी, और चमकती हुई नंगी तलवारें उनके शरीरों को कोंचने लगे। प्रतिक्रियावादी सोचते थे कि वे इस बेहूदे व्यवहार से देशभक्तिपूर्ण जुलूस को तितर-बितर कर देंगे। लोग निडर थे। ऊपर विस्तृत आकाश मार्च करते जाते छात्रों के नारों से गुंजायमान था, उनके सिर ऊपर की ओर उठे हुए थे। तलवारों, कोड़ों, मुगदरों और संगीनों, ठिठुरनभरी हवा, फ़ायर-बिग्रेड के होज पाइपों के मुँह से फेंके जा रहे बर्फ़ीले पानी, नौजवान और बूढ़ों, औरतों और मर्दों के छलछला रहे ख़ून – इन सबके बावजूद प्रदर्शनकारी संघर्ष करते हुए आगे बढ़ते गये। जब आगे वाले प्रदर्शनकारी रक्त कीचड़ में गिर पड़ते, तो पीछे वाले ज़ोर से आगे बढ़कर उनकी जगह ले लेते। "आगे बढ़ो!" वे चिल्ला उठते! "गद्दारों पर टूट पड़ो!" रोषभरी उनकी चीखें ऊँची से ऊँची होती गयी।

बर्फ़ और खून से लथपथ वे संघर्ष करते हुए अपने रास्ते पर बढ़ते रहे। जब एक लड़की निढाल होकर गिर पड़ी, तो पुलिस अपने कोड़ों से नृशंसतापूर्वक उसे तब तक पीटती रही जब तक कि उसके चेहरे और सिर से ख़ून नहीं बहने लगा, लेकिन तब भी वह सीत्कार भरे स्वर में चिल्ला पड़ी। "नागरिको, एकजुट हो!

अपनेआप को हथियारबन्द करो। हमें चीन की रक्षा में उठ खड़े होना है।"

संघर्ष शाम तक चलता रहा, अन्त में प्रदर्शन के नेताओं ने अनावश्यक दुर्घटनाओं से बचने के लिए क़तारों को तितर-बितर हो जाने के आदेश दिये। तब, धीरे-धीरे गुस्साई भीड़ तितर-बितर हुई। सियाओ-येन के कन्धे पर डण्डा लगा था लेकिन चोट गम्भीर नहीं थी। ज़िन्दादिल हुआई-यिङ उस उत्तेजित, कोलाहल करती भीड़ के बीच से, एक स्वयं-नियुक्त सम्पर्क अधिकारी की भाँति यहाँ से वहाँ तक दौड़ती रही। जब कोई तलवार बायें बाज़ू की तरफ़ उठती, तो वह चेतावनी में चिल्ला पड़ती। जब दायीं तरफ़ कोई ठोकर खाकर गिर पड़ता, तो वह उसे उसके पैरों पर उठ खड़े होने में मदद करने के लिए दौड़कर उसके पास पहुँच जाती। हथियारों से लैस पुलिस द्वारा धमकाये जाने पर वह शान्तिपूर्वक अर्ज कर देती, "मुझे मत मारो। मैं तो सिर्फ़ एक राहगीर हूँ। उसका क़ीमती फर-कोट और बेपरवाह हावभाव उन्हें उसे तंग करने में अचकचा देता। जब वह और सियाओ-येन सू हुई की मदद कर रही थी, जो चोट खा गयी थी, तो उसने अपने ऊँची एड़ी वाले जूते के साथ भचक-भचककर चलते हुए एक दबी हँसी के साथ यह उद्‌गार व्यक्त किया, "लड़ाई में साहस और रणकौशल दोनों ज़रूरी होते हैं।"

"अन्ततः हमारे विश्वविद्यालय में मेरी आस्था फिर बन गयी।" सियाओ-येन ने अपना विवरण सुनाते हुए अन्त में ऐलान किया। एक क्षण बाद वह पुनः बोली, "पहले मैं सोचती थी कि चार मई आन्दोलन और अठारह सितम्बर वाली घटना का लड़ाकू जोश फिर कभी नहीं जगाया जा सकेगा, लेकिन आज मुझे मत बदलना पड़ा। ताओ-चिङ, मैं तुमको बताना भूल गयी कि जब हमारा परेड शैतान के बग़ल से होकर गुज़रा, तो पीकिङ विश्वविद्यालय के छात्रों का एक दूसरा जत्था हमारे साथ शामिल हो गया। यह अद्‌भुत था!" वहाँ जो कुछ घटित हुआ था, वह उसे सिलसिलेवार बताने लगी।

नौ दिसम्बर की सुबह, पीकिङ विश्वविद्यालय के तमाम छात्र प्रदर्शन में शरीक़ हुए, लेकिन अब भी एक बड़ी संख्या अपनी कक्षाओं में, लाइब्रेरी में या खेल के मैदान पर ही थी। जुलूस के मुख्य हिस्से के विश्वविद्यालय पहुँचने से पहले, सम्पर्क अधिकारी, संगठनकर्ताओं के निर्देश के अनुसार काम करते हुए, वापस विश्वविद्यालय आये और नारे लगाये, "जागो, साथी छात्रो! 4 मई आन्दोलन को याद करो!" इस आह्वान पर त्वरित और ज़ोरदार प्रतिक्रिया हुई। पूरे विश्वविद्यालय से, हॉस्टलों से, कक्षाओं से, प्रयोगशालाओं से, भूगर्भ विज्ञान भवन से, लाइब्रेरी से और खेल के मैदान से छात्र उमड़ते हुए चले आये। वे लाल-भवन में जमा हुए और जब प्रदर्शन आ पहुँचा, तो उन्होंने फाटक खोल दिया और उसमें शामिल होने के लिए बाहर दौड़ पड़े। नये नारे सुनायी दिये :

"पीकिङ विश्वविद्यालय के छात्र अपनी परेड का स्वागत करो।" "जागृत हो,

पीकिङ विश्वविद्यालय! अपनी शानदार परम्परा को ज़िन्दा करो। 4 मई को याद करो।" होउ-जुई ने इस अवसर का लाभ उठाकर बड़ा घड़ियाल बजा दिया, जिसने कक्षाएँ ख़त्म होने की सूचना दे दी, मानो अभी तक यह इस नीतिवाक्य का घण्टानाद करता रहा हो कि "पढ़ाई के द्वारा अपने देश को बचाओ" जिसमें तमाम छात्रों का विश्वास बना हुआ था।

सियाओ-येन द्वारा वह विवरण सुनाये जाने के इस बिन्दु पर सू हुई तेज़ी से अन्दर आयी। उसने एक सूखा गद्देदार गाऊन पहन लिया था, लेकिन उसके ललाट पर लगी चोट से ख़ून अब भी रिस रहा था। इसके पहले कि ताओ-चिङ बोल पाती, वह उसकी बग़ल में बैठ गयी और पूछ पड़ी :

"क्या तुम पहले से बेहतर महसूस कर रही हो? क्या तुम्हारा बुख़ार उतरा?"

ताओ-चिङ ने सू हुई का हाथ थाम लिया, और उसके सवाल पर ध्यान न देते हुए बोली :

"सू हुई, तुम क्यों नहीं अस्पताल जाकर घावों पर पट्टी बँधवा लेती? उन्हें खुला रखना ख़तरनाक है।"

"बातें मत बनाओ!" वह हँसती हुई ताओ-चिङ की रज़ाई को दक्षतापूर्वक ठीक करने लगी। "ये वाक़ई खरोंचों के अलावा कुछ नहीं हैं। मेरे पास उनके बारे में चिन्ता करने का समय नहीं है। मुझे बताओ, क्या तुम पहले से ठीक हो?"

"हाँ, धन्यवाद! सबकुछ कैसे गुज़रा? क्या हमारी ओर ज़्यादा हताहत हुए हैं? क्या कुछ गिरफ़्तार भी हुए हैं?"

"हाँ, नॉर्मल विश्वविद्यालय की दो लड़कियों को बुरी तरह संगीनों से भोंक दिया गया। पीकिङ विश्वविद्यालय के कई छात्र भी घायल हुए। एक की तलवार से नाक और होंठ कट गये और जहाँ तक हमें मालूम है, दस से अधिक गिरफ़्तारियाँ भी हुई हैं।"

"हमारी अगली कार्रवाई क्या होगी?" ताओ-चिङ ने चिन्तित होकर पूछा।

"यही तो मैं भी जानना चाहूँगी" सियाओ-येन ने भी कहा।

सू हुई पानी पीने के लिए उठते हुए, लेकिन केतली ख़ाली देखकर उसने अपना सिर हिलाया, और टिप्पणी की :

"क्या तुम्हारी मकान मालकिन भी प्रदर्शन में गयी थी? क्या वह तुम्हारे पीने के लिए थोड़ा-सा पानी भी छोड़कर नहीं गयी थी? ओह, तुमने हमारी अगली कार्रवाई के बारे में पूछा था।" वह एक क्षण तक सोचती रही, फिर उनको मुस्कुराकर बताया, "हमें और विधिवत काम करना होगा, तथा और अधिक लोगों को उद्वेलित करना होगा, ताकि छात्र-आन्दोलन को मज़दूरों और किसानों के व्यापकतर संघर्ष के साथ एकीकृत किया जा सके। ज्वालामुखी ने फूटना शुरू कर दिया – इसे जो कुछ भी कालिमा और बुराई है उसे जला लेने दो!"

सू हुई ने इन आख़िरी शब्दों को ऐसे कहा, मानो कोई कविता पढ़ रही हो, या कोई कठोर शपथ ले रही हो। उसके बाद तीनों लड़कियों ने अपने हथ उठाकर खिड़की से बाहर उस अँधेरी रात में आसमान की ओर देखा।

——:o:——

अध्याय 42

नौ दिसम्बर वाले आन्दोलन के बाद, पीकिङ विश्वविद्यालय के छात्रों ने हड़ताल कर दी, पेइपिङ में अन्य कॉलेजों और हाईस्कूलों के छात्रों ने भी वैसा ही किया।

"ग्यारह दिसम्बर को ताओ-चिङ की हालत पहले से बेहतर हो गयी, लेकिन अब भी वह इतनी कमज़ोर थी कि सू हुई ने उसे अपना कमरा छोड़ने से मना कर दिया, और आग्रह किया कि उसे आराम करना चाहिए। तथा कुछ समय तक उसे शान्त पड़े रहना चाहिए। बाहर चल रही हलचल भरी घटनाओं से अलग-थलग पड़कर, वह बिस्तर पर पड़ी रही और पढ़ती रही। च्याङ हुआ उसे देखने के लिए न तो नौ तारीख़ को आया, और न दस को ही। वह ग्याहर को शाम के वक़्त आया।

जब वह आया तो बहुत खुश दिखायी दे रहा था। अपने ठण्डे हाथों को रगड़ते हुए उसने स्नेहपूर्वक उसे बताया :

"आज मुझे कहीं नहीं जाना है ताओ-चिङ। आख़िरकार हम कुछ दिन साथ-साथ तो बिता ही सकते हैं। पिछले दो सप्ताहों में मेरे पास समय ही नहीं था कि आ सकूँ और तुम्हें देखूँ। हम तो ऐसे हो गये हैं कि लोग 'एक रात के पति-पत्नी' कहा करते हैं।"

"क्या तुम सचमुच रुक सकते हो?" ताओ-चिङ ने ख़ुशी से लाल होती हुई पूछा। उसने च्याङ हुआ के विशाल हाथों को थाम लिया, मानो उसे इस पर विश्वास नहीं हुआ। "क्या यह सच है? लेकिन तुम इतने पीले क्यों दिखायी दे रहे हो? क्या तुम बीमार थे?" ताओ-चिङ ने उसकी ओर चकित आँखों से देखा, उसका दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था।

"मुझे कोई गड़बड़ी नहीं है। क्या अब तुम बेहतर हो?" उसने बिस्तर में धँसते हुए पूछा।

वह उसे स्नेहपूर्वक निरखती रही।

"मैं तुम पर विश्वास नहीं करती। अगर तुम बीमार नहीं पड़े थे, तो इतने पीले क्यों दिखायी दे रहे हो? क्या उन्होंने तुम्हारी पिटाई की थी?"

च्याङ हुआ ने अपना सिर तकिये पर रख दिया और क्षणभर के लिए अपनी थकी आँखें मूँद लीं। उन्हें पुनः खोलते हुए, चारपाई के बग़ल में खड़ा होकर ताओ-चिङ से बोला : "नहीं। प्रदर्शन के दिन हममें से जिन पर ज़िम्मेदारी थे वे

यापेई कैफ़े में ठहर गये, जो एकदम सुरक्षित था, लेकिन पिछली रात उत्तर-पूर्व विश्वविद्यालय क़रीब दो सौ सशस्त्र सैनिकों द्वारा घेर लिया गया। वे प्रदर्शन के नेताओं को गिरफ़्तार करने आये थे। मैं वहीं पर था।" उसने ताओ-चिङ की ओर देखा, उसके रक्तहीन होंठ मुस्कुराहट में टेढ़े हो उठे। "हम ठीक उसकी समय दीवार फाँदकर बच निकले। घनघोर बर्फ़ पड़ रही थी और मैं नंगे पाँव था। मैं फिसल गया और ऊँची दीवार पर से अगले अहाते में रखे काठ के ढेर पर गिर पड़ा। मैं समझता हूँ कि मेरी पीठ में थोड़ी चोट लगी है।" वह जितना ही कम बोलता था, उतना ही अधिक उसके बारे में, ताओ-चिङ चिन्तित हो रही थी।

"मैं देखूँ कि तुम्हें कहाँ चोट लगी है।" उसने उसकी कोट के बटन खोलने चाहे, लेकिन उसने ऐसा करने से मना कर दिया।

"इस पर पट्टी बाँधी जा चुकी है, छोड़ो इसे।" च्याङ हुआ ने उसके हाथ थाम लिये। "ताओ-चिङ, क्या तुमने प्रदर्शन के प्रभावों के बारे में सुना है? पेइपिङ के सारे स्कूलों ने हड़ताल कर दी है और पूरे देश के छात्र यही करने जा रहे हैं। जापान का प्रतिरोध करने और देश को बचाने का आन्दोलन एक प्रकाशदीप है जिसे हमारी पार्टी ने असंख्य कठिनाइयों को पार करके प्रज्वलित किया है, लेकिन अब यह अच्छी तरह प्रज्वलित हो गया है!"

"हाँ, मैंने ऐसा सुना है।" ताओ-चिङ मुस्कुरायी और अपना गाल उसके गाल पर रखती हुई, विषय बदलने की कोशिश की। "तुम ज़रूर थक गये होगे। मैं तुमको बता दूँ कि मेरे दिल में क्या है। मैं एक लम्बे अरसे से तुमको देख नहीं पायी थी – जानते हो, तुम्हारी कमी मुझे कितनी खटक रही थी? ओह, हम कब हमेशा साथ-साथ रहने लायक़ होंगे?"

च्याङ हुआ ने स्वीकृति में सिर हिलाया और खुशी की एक मुस्कुराहट उसके साँवले चेहरे पर खिल उठा। उसने धीरे-धीरे अपनी थकी आँखें खोलीं और उसके हाथ कसकर पकड़ते हुए बोला।

"ताओ-चिङ, मेरे जीवन में, इन सारे 29 वर्षों में, पहली बार ऐसा हुआ है कि मैं प्रेम को जान पाया हूँ। तुम्हारी तरह से सिर्फ़ मेरी माँ ही, जब मैं बच्चा था, मुझसे प्यार किया करती थी। यही कारण है कि मैं पूरे दिल से तुम्हें खुश रखना चाहता हूँ। लेकिन मेरे पास तुमको देने के लिए बहुत थोड़ा है।"

ताओ-चिङ का कमरा आज गर्म और शान्तिपूर्ण था। उसकी अँगीठी में कोयले की गोलियों से प्रखर लाल लपटें उठ रही थीं। हुआई-यिङ ने उसे जो फ़र्न का पौधा दिया था, उसकी पंखदार हरी डण्डियाँ मेज़ के एक कोने में जलप्रपात की भाँति लटकी हुई थीं।

जब वह बोल चुका, तो ताओ-चिङ ने अपना सिर भारी घबराहट में हिलाते हुए प्रतिवाद के स्वर में कहा :

"ऐसी बात नहीं करते! क्या हम एक ही तरह के दुख-सुख साथ-साथ नहीं झेलते? क्या तुम सोचते हो कि मैं इससे ज़्यादा कुछ चाहती हूँ? नहीं, मैं बहुत ख़ुश हूँ, पहले से कहीं अधिक।" फिर उसने एक गहरी साँस खींची, उसका पीला चेहरा शान्त और सौम्य था। "मैं अक्सर सोचती हूँ कि यह सब तुम्हारी वजह से है – इसका श्रेय तुमको है, पार्टी को है, कि मेरा सपना आज सच हो गया है, और कि मैं कम्युनिज़्म के शानदार लक्ष्य के लिए लड़ने वाली योद्धा हूँ। अगर हम अपने मक़सद में आगे बढ़ सकें, पार्टी के लिए कुछ सार्थक काम कर सकें, तो हम दोनों का क्या होगा, यह बहुत कम मायने रखता है!"

च्याङ हुआ ने कोई उत्तर नहीं दिया, और दोनों तब तक ख़ामोश रहे, जब तक कि ताओ-चिङ ने उसे अपनी बाँहों में नहीं ले लिया और फुसफुसाकर बोली, "कितना प्यारा है कि तुम इस बार कुछ दिनों तक ठहर सकोगे! सोचो तो, हम कितना कम साथ रहे हैं।" वह शर्माते हुए उसकी ओर दुबक गयी और मुस्कुरायी, लेकिन तुरन्त अपना सिर उठाकर पूछ पड़ी। "मुझे बताओ प्यारे, क्या तुम बुरी तरह से घायल हो? अब मुझे सच-सच बता दो! तुम तो हमेशा ही एक उदाहरण कायम करने की कोशिश करते रहते हो? बिना इसकी परवाह किये कि तुम कहाँ हो।"

"यह कोई ख़ास नहीं है," उसने धीमे से बोलते हुए अपनी आँखें बन्द कर लीं। "यही सच है। अगर यह गम्भीर होता, तो अभी मैं तुमसे बात कैसे कर पाता?" उसने अचानक अपनी आँखें खोल दीं और हँस दिया। "कुछ मामलों में, तुम अब भी मुझे नहीं समझती प्यारी। तुम समझती हो कि मेरे दिमाग़ में सिर्फ़ राजनीति भरी है और कुछ भी नहीं, है न? वैसे, मैं थोड़ा मज़ाक़ भी पसन्द करता हूँ, और मेरे सपने भी हैं। तुमने उसे नहीं जाना!"

"नहीं, मैंने नहीं जाना। तुम किसके बारे में सपना देखते हो?"

"तुम्हारे बारे में! क्या तुम इस पर विश्वास करती हो?" च्याङ हुआ ने उसे अपनी बाँहों में ले लिया और उसके गाल पर इतने बालसुलभ ढंग से चूम लिया कि ताओ-चिङ हँसे बिना न रह सकी। ताओ-चिङ ने उसका सिर तकिये पर रख दिया और उसके बालों को सहलाते हुए, जैसेकि वह कोई शरारती बच्चा हो, बोली :

"मैं जानती हूँ प्यारे। मैं तुम पर विश्वास करती हूँ।"

च्याङ हुआ बिना कुछ बोले मुस्कुराया, वह उसका हाथ कसकर पकड़े हुए था, जैसे वह कहीं भाग जाती। थोड़ी देर बाद वह अचानक पूछ पड़ा :

"तुम कविता लिखना पसन्द करती हो, है न? क्या तुमने हाल में कोई कविता लिखी है?"

"तुम कैसे जानते हो कि मैं कविता लिखना पसन्द करती हूँ?" वह आश्चर्य से पूछी।

"मैं जानता हूँ, क्योंकि मैं तुम्हारी कविताओं में से एक पढ़ चुका हूँ।"

ताओ-चिङ के दिमाग़ में कौंध गया कि उसने ज़रूर लू चिआ-चुआन की स्मृति में लिखी कविता पढ़ी होगी। उसे उस दिन का स्मरण हो आया जब वह आया था, और तब ताओ-चिङ ने इसे अपनी डेस्क पर रखी एक किताब में खोंस दिया था। इस ख़याल पर शर्माती हुई, उसने हाथ अपने गाल पर दबा दिया और फुसफुसाकर कहा, "तुम बुरा मत मानना, क्या मानोगे? मैं कविता नहीं लिख सकती। यह तो सिर्फ़ उसके लिए, तुम्हारे दोस्त के लिए थी, जिसे लिखने की मैंने कोशिश की थी। मुझे विश्वास है कि तुम इसे समझ सकते हो प्यारे, और बुरा नहीं मानोगे।"

च्याङ हुआ ख़ामोश था, उसकी मुखमुद्रा गम्भीर थी। सिर्फ़ एक मँजा हुआ क्रान्तिकारी ही इस तरह की स्थिति को इतने सुस्थिर चित्त और सहजता से झेल सकता था।

"प्यारी, क्या तुमने अभी-अभी नहीं कहा था कि हमने एक ही तरह का दुख-सुख साथ साथ झेले हैं? यह बात हर चीज़ पर लागू होती है। मुझे खुशी है कि तुम कविता लिखती हो, यही कारण है कि मैंने इसे छेड़ दिया – मुझे ग़लत मत समझना। ख़ैर, आओ कोई और बात करें। हमको बहुत कम अवसर मिलता है। तुमने अक्सर मेरे जीवन के बारे में पूछा है, लेकिन मेरे पास कभी समय नहीं था कि तुमको कुछ भी बता पाता। क्या तुम अब इसके बारे में कुछ सुनना पसन्द करोगी?" वह साँस लेने के लिए रुका, पानी पिया जिसे ताओ चिङ ने दिया था, और फिर पीछे की ओर टिककर उसने आँखें मूँद लीं। "मेरा बाप एक मुद्रक था, जिसे मेरी माँ और छह बच्चों का भरण-पोषण करना पड़ता था। सामान्यत: वह इन्तज़ाम कर लेता था, लेकिन अगर उसकी नौकरी छूट जाती या उसका प्रेस मज़दूरी देने में विलम्ब कर देता, तो पूरा परिवार भूखा रह जाता। जब मैं बारह वर्ष का था, तो मैंने कुछ बहुत ही ग़लत कर डाला, जो मेरी माँ के लिए बहुत निर्दयतापूर्ण था। तुम मुझे एक सुस्थिर बुद्धि वाला व्यक्ति समझती हो, है न? लेकिन मैं एक छोटा शैतान हुआ करता था, हमेशा ही कोई न कोई झगड़ा करता रहता था। स्कूल के बाद मैं अपनी चौकड़ी को साथ लेकर शंघाई की गलियों में हड़कम्प मचाने की तलाश में भटकता-फिरता। जब मैं बारह वर्ष का था, मुझे याद है, माँ ने एक नन्ही बहन को जन्म दिया, और पिता जिनका काम छूट गया था नौकरी की तलाश में भाग-दौड़ कर रहे थे। माँ बिना किसी की देखभाल के पड़ी रहती। चूँकि मैं सबसे बड़ा था, अत: उसने मुझे एक पड़ोसी के यहाँ से थोड़ा चावल उधार लाने और उसके लिए थोड़ा दलिया बनाने को कहा, लेकिन यह करने के बजाय मैं अपने दोस्तों के साथ खेलने निकल गया। हम नौघाटों में घूमते रहे और जो कुछ खाने लायक़ होता उसे उठा लेते, लेकिन मैं भूल गया था कि माँ और बच्चे घर पर भूखे थे। जब मैं खेलते-खेलते थक गया, तो अँधेरा होने के बाद घर वापस गया। पिता अभी घर नहीं

लौटे थे, और माँ पड़ी-पड़ी रो रही थी। मद्धिम रोशनी में वह एक लाश की भाँति पीली दिखायी पड़ रही थी। मेरे भाई और बहनें, फ़र्श पर हाथ-पाँव छितराये सो गये थे। माँ ने मुझे फटकार का एक शब्द भी नहीं कहा, लेकिन उसके चेहरे की वेदना ने मुझ पर ऐसी छाप छोड़ी कि उसे मैं कभी नहीं भूल सकूँगा। मैं फूट-फूटकर रो पड़ा क्योंकि मैं जान गया कि मैंने ग़लती की थी। उसके बाद तो जब मैं सयाना होने लगा..." उसने अपनी आँखें खोल दीं, वह इतना थक गया था कि आगे न बोल सका।

ताओ-चिङ ने उसके माथे का पसीना पोंछते हुए धीरे से कहा :

"तुम बहुत ज़्यादा बोल रहे हो प्यारे। बेहद थके हुए लग रहे हो, अच्छा हो कि तुम ख़ामोश रहो और आराम करो।"

"मैं थका नहीं हूँ। हमें इस तरह की और बातें करनी चाहिए।" उसकी ओर देखकर मुस्कुराते हुए वह आगे बोला :

"अगर पार्टी न रही होती, तो मैं नहीं जानता कि मेरा क्या हुआ होता। जिस तरह का मैं बेढंगा था, उससे पार्टी ने ही मेरा उद्धार किया। जैसे ही मैं एक अप्रेण्टिस बना, पार्टी ने मुझे प्रशिक्षण देना और शिक्षित करना शुरू कर दिया। बाद में, मैं पार्टी द्वारा स्थापित एक हाईस्कूल में भरती हुआ और आगे की पढ़ाई की। जब कभी मुझे अपनी माँ का वह पीला, आँसुओं से भरा हुआ चेहरा याद आता, जब वह मेरी छोटी बहन के जन्म के बाद बिस्तर पर पड़ी हुई थी, तो मैं महसूस करता कि वह सड़ा हुआ समाज अवश्य बदला जाना चाहिए।"

"क्या तुम्हारी माँ अब भी ज़िन्दा हैं?" ताओ-चिङ ने शालीनता से पूछा।

"मुझे चार वर्षों से उसकी कोई ख़बर नहीं मिली है," उसने एक क्षण रुककर, अपनी आँखें खोलते हुए जवाब दिया। "मैं क्या कह रहा था? मेरा दिमाग़ चकरा रहा है कुछ बात मैं तुमसे बताना चाहता था : सू निङ फिर गिरफ़्तार हो गया है।"

"नहीं, उसने मुझे बताया था कि वह उत्तरी शेन्सी जा रहा है। कैसे वह फिर गिरफ़्तार हो गया?"

"वह नहीं गया। पार्टी ने उसे काम में मदद करने के लिए उत्तरपूर्व विश्वविद्यालय भेज दिया था। वह और मैं दोनों आज सुबह उस दीवार को फाँद कर भागे थे, और वह एक लड़की की रज़ाई में छिप गया – लेकिन अन्त में वे उसे पा ही गये।"

जो कुछ हुआ, वह इस प्रकार था :

उत्तरपूर्व पर जापानियों द्वारा क़ब्ज़ा कर लिये जाने के बाद, उत्तरपूर्व विश्वविद्यालय के छात्र अपने घरों से कट गये। खाने की किल्लत के साथ वे शरणार्थियों की भाँति, अन्य छात्रों से अधिक दुर्दिन भोगने लगे। विश्वविद्यालय द्वारा मुहैया की गयी शिक्षा और दिन में दो बार मामूली खाने के लिए, उन्हें कड़ुवाहट

का घूँट पीना पड़ा और चार वर्षों तक गुलामों की ज़िन्दगी गुज़ारनी पड़ी। अधिकारियों की धौंस-धमकियों के प्रति उनकी बेपरवाही और नौ दिसम्बर वाले प्रदर्शन में उनकी भागीदारी का परिणाम क्रूर प्रतिशोधात्मक कार्रवाइयों के रूप में सामने आया।

प्रदर्शन से लौटने के बाद डीन ने उनको एक साथ बुलाकर भाषण पिलाया, उसने कहा, "मैं तुम लोगों को बता दूँ कि अभी-अभी यहाँ दो जापानी यह पूछने के लिए आये थे कि क्या हम अपने छात्रों को नियन्त्रण में रखेंगे। अगर नहीं, तो वे बोले कि हमारे लिए व्यवस्था करेंगे। मैंने उन्हें झटपट आश्वस्त कर दिया, 'हाँ, बेशक हम नियन्त्रण में रख सकते हैं।'" अपने जी हुज़ूरिया व्यवहार का वर्णन करने के बाद डीन छात्रों को गालियाँ देने लगा। "उद्धत बेवक़ूफ़ो!" वह फुफकार उठा। "अगर सचमुच तुममें कोई दमखम है, अगर तुम लोग अपनेआप को मर्द समझते हो, तो हथियार उठाओ और सीधे जापानियों से लड़ो। अपनेआप को यहाँ क्यों छिपाये हुए हो और परेशानी पैदा करते हो?"

उसके बाद, सशस्त्र पुलिस और सशस्त्र सैनिकों ने नाकेबन्दी कर दी, वे विश्वविद्यालय के फाटक पर कड़ी चौकसी बनाये हुए थे। छात्र वस्तुत: क़ैदी बन गये, उन्हें अपनी मर्ज़ी से कहीं आने-जाने की अनुमति न थी। तब भी वे अन्दर ही अन्दर देशभक्तिपूर्ण गतिविधियाँ निर्भीकतापूर्वक जारी रखे हुए थे। दो दिन बाद, ग्यारह दिसम्बर की रात में, जब घनघोर बर्फ़ पड़ रही थी, सशस्त्र सैनिकों की एक बड़ी टुकड़ी ने उस जगह को घेर लिया। इस नाजुक संघर्ष के दौरान च्याङ हुआ, सू निङ और उत्तरपूर्व विश्वविद्यालय के अन्य पार्टी-सदस्यों ने एक क्षण के लिए भी स्कूल नहीं छोड़ा। गश्ती छात्रों ने इस नयी गतिविधि की रपट दी, लेकिन रात अँधेरी थी और घनघोर बर्फ़ पड़ रही थी – वे घेरेबन्दी तोड़कर कैसे निकल सकते थे? च्याङ हुआ और अन्य तुरन्त छोड़ चलने में असमर्थ होकर अस्थायी तौर पर छिपने की जगहें तलाशने को मजबूर हुए। पौ फटने से ठीक पहले ही जेल की गाड़ियाँ आनी शुरू हो गयीं, जिनके साथ भरी हुई रायफ़लें लिये और भी सशस्त्र सैनिक आते जा रहे थे। विश्वविद्यालय के अधिकारियों के निर्देशन में जिन्होंने तीस से अधिक नामों की एक काली सूची दे दी थी, उन्होंने हॉस्टलों की ख़ानातलाशी और इमारत का कोना-कोना छान मारा, जिसके बाद परिसर में मार्शल लॉ लागू कर दिया गया। डीन ओर सैनिक प्रशिक्षकों ने भीतर का कार्यभार सँभाल लिया, जबकि सशस्त्र सैनिक ने फाटक की पहरेदारी, ताकि किसी को भी निकलने से रोका जा सके, जिन छात्र नेताओं के नाम काली सूची में थे, उनकी स्थिति अब इतनी निराशाजनक हो गयी कि बाहर निकलने के अलावा और कोई चारा न था। च्याङ हुआ दीवार पर चढ़ते हुए गिर पड़ा, और एक खूँटे पर अटक गया, लेकिन साफ़ बच गया। सू निङ फुर्ती से निचली पश्चिमी दीवार को फाँद गया, और पास के एक

अहाते में कूद पड़ा? लेकिन इसके पहले कि वह फाटक खोल पाता और बाहर निकल जाता, वह सशस्त्र सैनिकों द्वारा देख लिया गया, जो उसका पीछा करने के लिए अपनी रायफ़लों से फ़ायर करते हुए दौड़ पड़े थे। एक बूढ़ा और उसकी बेटी ने, जो उस घर में रहते थे, अपने अहाते में सू निङ के उतरने की धमक को सुनते ही दरवाज़ा खोल दिया, और डरकर इधर-उधर देखने लगे। यह देखकर कि उसके पीछे हटने का मार्ग अवरुद्ध हो चुका था, उसने उससे गुहार लगायी, "मुझे बचा लो चाचा! मैं एक छात्र हूँ।" बूढ़ा आदमी और उसकी बेटी ने जोखिम के बावजूद उसे झट अन्दर जाने दिया; लेकिन लड़की अभी सू निङ को एक रज़ाई से किसी तरह ढँक पायी थी, और बिस्तर के पास ही खड़ी थी कि सशस्त्र सैनिक भरभराकर कमरे में घुस पड़े। उन्होंने घुड़कते हुए बूढ़े से कहा, "वह कहाँ हैं? उसे सौंप दो!" बूढ़ा और उसकी बेटी ने इन्कार किया कि वहाँ पर कोई था।। "कमीने झूठे!" सशस्त्र सैनिकों ने गालियाँ दीं। "हमने उसे अन्दर आते हुए देखा है। उसके पैरों के निशान पूरे कमरे में हैं। क्या तुम लाल लुटेरों को मदद करना चाहते हो? अगर तुम नहीं बताते कुत्ते, तो तुमको भी वही सजा मिलेगी।" वे बार-बार इन्कार करते रहे कि वहाँ कोई था, यद्यपि चारपाई के पास खड़ी लड़की डरके मारे काँप रही थी। तब सू निङ छिपा न रह सका, अत: वह निर्भीकतापूर्वक उछलकर बाहर आ गया और गिरफ़्तार कर लिया गया।

च्याङ हुआ ने, जो सो गया प्रतीत होता था, अब अपनी आँखें खोलकर ताओ-चिङ की ओर देखा, और गम्भीर होकर बोला :

"अब जबकि शहर के अधिकतर छात्रों ने कक्षाओं में जाना बन्द कर दिया है, प्रतिक्रियावादी तत्त्व तोड़-फोड़ तो ज़रूर ही करेंगे। संघर्ष और अधिक उलझाव होने जा रहा है। तुमको अभी बहुत अनुभव नहीं है ताओ-चिङ, इसलिए तुमको पहले से भी अधिक मेहनत करनी होगी। तुमने पीकिङ विश्वविद्यालय में जो सफलता हासिल की है, उतने ही से सन्तुष्ट मत महसूस करो।" इस बिन्दु पर वह गहरी नींद में सो गया।

चारपाई के पास चुपचाप खड़े होकर, ताओ-चिङ ने च्याङ हुआ के कृश चेहरे को निहारा, जिस पर पीलेपन के बावजूद दृढ़ता की रेखाएँ खिंची हुई थीं। यद्यपि वह बुरी तरह से घायल हो था, फिर भी उसने अपने दर्द के बारे में कुछ नहीं कहा। इस सुखद मिलन के दौरान भी यद्यपि कि वह थकान से लगभग अचेत हो रहा था, च्याङ हुआ आसान काम और संघर्ष को नहीं भूल सकता था, न ही वह अभी और प्रगति करने के लिए अपनी पत्नी को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता को भूल सकता था। जहाँ तक उस कविता का सवाल है, जिसे उसने एक दूसरे व्यक्ति के स्मृति में लिखा था, यद्यपि च्याङ हुआ पूरी तरह से जानता था कि वह अपना हृदय उससे कहीं अधिक पूर्णता और गहराई से लू चिआ-चुआन को दे चुकी थी, फिर

भी उसने कोई शिकवा-शिकायत नहीं की थी। उसके पास जितना सीमित समय और शक्ति थी, उससे वह उसे प्रसन्न रखने के लिए सबकुछ कर रहा था। उसे निहारते हुए चुपचाप खड़े-खड़े ताओ-चिङ के मन में अपनी कमज़ोरी का अहसास उभर आया।

यह देखकर कि च्याङ का सूती गद्देदार गाऊन कई जगहों से फट गया था, वह इसकी मरम्मत करने के लिए सुई-धागा ले आयी। एक जेब में उसे च्याङ हुआ के हाथ की सहज लिखावट वाला एक मुड़े-तुड़े काग़ज़ का टुकड़ा मिल गया। उसने इसे सीधा किया और पढ़ा, "मुझे अफ़सोस है, ताओ-चिङ, लेकिन तीसरी बार भी मैं अपना वादा नहीं निभा सकता," उस मामूली काग़ज़ के टुकड़े को देखते ही उसकी आँखों में बेशुमार आँसू उमड़ आये। "क्या कुमारी लू अन्दर है?"

"कौन है?" ताओ-चिङ ने काग़ज़ के टुकड़े को नीचे रख दिया, और धीरे से दरवाज़ा खोला। यह जेन-यु कुएई का पिता था, जो पहले इसी अहाते में उसके साथ ही रहा करता था, और अब पार्टी की शहर-कमेटी का एक सन्देशवाहक बन गया था। खुश और आश्चर्यचकित होकर दोनों ने उस बूढ़े का हाथ पकड़ा, और उसे अन्दर कमरे में खींच लायी। "क्या है चाचा?" वह च्याङ हुआ की ओर इशारा करती हुई फुसफुसायी, "उसे चोट लगी है।" वह जानती थी कि शहर कमेटी ने किसी महत्त्वपूर्ण काम के लिए सन्देशवाहक भेजा होगा।

बूढ़े आदमी ने स्वीकृति में सिर हिलाया और चारपाई के समीप जाकर चिन्तित भाव से च्याङ हुआ की सोयी हुई आकृति को देखा। फिर उसकी ओर मुड़ते हुए उसने पूछा, "उसे कब चोट लगी? कॉमरेड इसके बारे में नहीं जानते। इस शाम एक महत्त्वपूर्ण बैठक होने वाली है। क्या मैं उन्हें बता दूँगा कि वह नहीं जा सकता? क्या घाव गम्भीर है?"

च्याङ हुआ के फीके चेहरे को देखते हुए, ताओ-चिङ ने व्यथित होकर कहा :

"वह कहता है कि कोई गम्भीर बात नहीं है, लेकिन इसने इसे देखने नहीं दिया। उसके अनुसार, एक कील उसकी पीठ में गड़ गयी थी। मैं समझती हूँ कि खून निकल जाने से वह कमज़ोर पड़ गया है। क्या तुम सोचते हो कि हमें उसे जगा देना चाहिए?"

"मैं नहीं चाहता," बूढ़े आदमी ने सहानुभूतिपूर्वक अपना सिर हिलाते हुए कहा। "मैं जाकर उन्हें बता दूँगा, ताकि वह यहाँ ठहर सके, और कुछ दिनों तक आराम कर सके।" यह कहकर वह चला गया।

"रुको चाचा, हम साथ-साथ चलें! च्याङ हुआ जाग गया था, और धीरे-धीरे अपना गद्देदार गाऊन पहनने के लिए उठने लगा था। वह क्षमायाचना भरे स्वर में ताओ-चिङ से फुसफुसाकर बोला, "फिर एक वादा तोड़ने के लिए मुझे अफ़सोस

है। अच्छा है कि तुम जाकर सो जाओ। मेरे लिए बैठी मत रहो, अगर बहुत देर हो गयी, तो मैं नहीं आऊँगा।"

चुपचाप वह उसे जाते देखती रही उसकी लम्बा-तगड़ा शरीर उस दुबले-पतले बूढ़े आदमी के लड़खड़ाते क़दमों की पीछे-पीछे चलती हुई गली के मोड़ पर विलीन हो गयी। ताओ-चिङ ने चुपचाप अपने मन में सोचा, "लू चिआ-चुआन, लिन हुङ और च्याङ हुआ, ये कितने एक समान हैं।"

——:o:——

अध्याय 43

तेङ युआन-सुआन के साथ उसके डेरे पर बैठी, ताओ-चिङ छात्रों की हड़ताल की ख़ूबियों और ख़ामियों पर विचार-विमर्श कर रही थी, तभी दरवाज़े पर ठक-ठक हुई और एक लड़की का साफ़ स्वर सुनायी दिया :

"क्या मैं अन्दर आ सकती हूँ, श्री तेङ?"

जल्दी से दरवाज़े को थोड़ा-सा खोलकर तेङ ने ली हुआई-यिङ को एक हरे कार्डिगन और हरे कोट में अपनी चौखट पर खड़े मुस्कुराते हुए देखा। दरवाज़े को चौड़ा खोलते हुए, उसने कमर तक झुककर अदब के साथ अभिवादन किया और चिल्लाया :

"यह अत्प्रयाशित कृपा है, महामहिम!"

हुआई-यिङ उछलकर कमरे में घुस आयी और अपनी छोटी सफ़ेद मुट्ठी उसके मुँह के सामने लहराते हुए हँसती हुई ऐलानिया स्वर में बोली :

"अगर तुम सचमुच भद्र व्यवहार वाले व्यक्ति न हुआ करते, तो मैं मारकर तुम्हारा चश्मा तोड़ देती। अरे!" ताओ-चिङ पर नज़र पड़ते ही उसने कसकर उसका हाथ पकड़ लिया और तेङ की ओर इशारा करके बोली, "कौन-सी जादुई दवा देकर तुमने इस फीके खरबूज़े को एक ढीठ किशोर में बदल डाला है, वह तो अपना सारा समय पुरानी पुस्तकों में गड़ाये ही बिता देता था? वह तो एकदम मर्यादा का पुतला हुआ करता था!"

अपने चश्मे और नाक को ढाँपते हुए मानो हुआई-यिङ ने सचमुच उसे ठोंक दिया हो, तेङ ने झटपट क्षमायाचना की :

"मैं तुमसे माफ़ी माँगता हूँ, हू आई-यिङ बुरा मत मानना!"

उसकी शर्मसार, उलझन-भरी निगाह पर दोनों लड़कियाँ ठठाकर हँस पड़ीं। इससे वह और उलझन में पड़ गया। वह नहीं समझ पा रहा था कि कैसे देखें, और सिर्फ़ यही कहता रहा :

"मत हँसो देवियो, मत हँसो!"

हुआई-यिङ गम्भीर हो गयी और तेङ की बाँह थाम ली।

"मैं तुमको एक मीटिंग में ले जाने आयी हूँ, श्रीमान विद्याडम्बरी जी। तुमको चलकर बहुत-बहुत ख़ुशी होगी। वह बहुत-बहुत महत्त्वपूर्ण है।"

"क्या है वह महत्त्वपूर्ण मीटिंग? मैंने पहले इसके बारे में क्यों नहीं सुना? वह फिर घबराकर अपना चश्मा उलटते-पुलटते हुए हकलाकर बोला।

हुआई-यिङ ने एक बार फिर अपनी मुट्ठी हिलायी।

"बेशक, श्री फीके खरबूज़े, अगर तुमने कभी नहीं सुना कि बाहर क्या हो रहा है, बल्कि तुम अपना सारा दिमाग़ पुरानी पुस्तकों में ही लगाते रहे, तो तुम राज्य के महत्त्वपूर्ण मामलों के बारे में नहीं ही सुनोगे। चूँकि हम लोगों ने दस तारीख़ को ही कक्षाएँ करना बन्द कर दिया, इसलिए सरकार बौखला गयी है। आज अध्यक्ष च्याङ ने एक महत्त्वपूर्ण घोषणा करने के लिए एक बड़ी मीटिंग बुलायी है। जल्दी करो और चलो, श्रीमान विद्याडम्बरी जी!"

"नहीं, मैं जाने की नहीं सोचता।" उसने अपना सिर हिलाया, और धस्स से एक स्टूल पर बैठकर इतना बुझा-बुझा-सा दीखने लगा, मानो वह अभी-अभी सौ मीटर दौड़ में भाग लेकर आया हो।

अब ताओ-चिङ की बारी थी और वह मुस्कुराकर बोली :

"क्या तुम हड़ताल के ख़िलाफ़ इसीलिए तो नहीं हो कि इससे तुम्हारी पढ़ाई में बाधा पहुँचती है, बड़े भाई तेङ? मुझे विश्वास है कि अध्यक्ष च्याङ ने मीटिंग इसीलिए बुलायी है कि वह तुम्हारे दृष्टिकोण से सहमत है। चूँकि तुम उससे पूर्णतः सहमत हो, तो फिर चलते क्यों नहीं?"

"चलो, जल्दी करो! अगर मैं जा रही हूँ, तो तुमको तो निश्चित ही वहाँ जाना चाहिए।" हुआई-यिङ ने उसे घसीट ले चलने के लिए पकड़ लिया।

तेङ ने परेशान होकर अपनी असहमति जतायी। उसकी आँखें भय से विस्फारित थीं। ताओ-चिङ ने उसे हल्का धक्का देते हुए कहा :

"जाओ, और देख लो। मैं यहाँ छात्र नहीं हूँ लेकिन जानना चाहती हूँ कि च्याङ [illegible] लिन क्या कहने वाला है। तुम्हारे पास तो जाने के लिए और अधिक कारण हैं।"

एक लड़की द्वारा धकेले जाने, और दूसरी बार फिर जांने के लिए कहने पर तेङ ना-नुकुर करते हुए बाहर गया :

"मैं हड़ताल को ठीक नहीं समझता, लेकिन उन कारणों से नहीं जिन कारणों [illegible] अधिकारी समझते हैं। मुझे ग़लत मत समझना। बेशक, हम छात्रों को वह सबकुछ करना चाहिए जो देश बचाने की घड़ी में आवश्यक हो, लेकिन, लेकिन..."

"लेकिन क्या? छोड़ो इसे। नौ तारीख़ को जब बाक़ी हम सबने जान हथेली पर ले ली थी, तो क्या तुमने बुरा नहीं माना, श्रीमान विद्याडम्बरी जी, जो अपने अध्ययनकक्ष में बैठे रहे?" हुआई-यिङ के व्यंग्य से तेङ शर्म के मारे कनपटी तक

लाल हो गया। जैसे ही वह हड़बड़ाकर चला, उसने हाँफते हुए, तेज स्वर में प्रतिवाद किया।

"यह सही नहीं है। मैं कैसे जानता कि..." ताओ-चिङ ने उसे कोहनी मारी और फुसफुसाकर कहा : "चुप। यह जगह सशस्त्र सैनिकों से भरी हुई है।"

हुआई-यिङ और उस नौजवान ने एक-दूसरे को खा जाने वाली नज़रों से देखा और ख़ामोश हो गये।

वे तक़रीबन तीसरे कोर्ट के फाटक तक पहुँचे थे, तभी ताओ-चिङ ने दोनों के बीच में आकर उन्हें शान्त किया।

"तुम दोनों कुढ़ना बन्द करो। देखो कि सभागार कितना भर गया है। मीटिंग काफ़ी भरी-पूरी होगी।" तीनों एक-एक करके घुस गये।

पीकिङ विश्वविद्यालय के छात्र लगभग एक सप्ताह से हड़ताल पर थे, और उन्होंने कक्षाओं में लौटने का कोई इरादा नहीं ज़ाहिर किया था अध्यक्ष च्याङ येङ-लिन परदे के पीछे सक्रिय होकर, इस बड़ी मीटिंग की योजना बनाता रहा था, ताकि वह उन्हें कक्षाओं में वापस जाने का आग्रह कर सके, और उसकी कोशिश फलीभूत हुई। तीन-चार सौ छात्र एकत्र हुए। कुछ छात्र-संख्या के एक तिहाई से अधिक। वे अध्यक्ष का भाषण सुनने के लिए उस गन्दे सभागार में एकदम ख़ामोश बेंचों पर बैठे हुए थे। उसने अपने निजी विचारों को प्रकट करने वाले एक जीवन्त व्यक्ति की तरह कम, बल्कि एक मनहूस, मुश्किल से सभा में आ सकने लायक़ बजने वाले एक ग्रामोफ़ोन रिकॉर्ड की भाँति बोलना शुरू किया। उसने ऐलान किया :

"मुझे इतने सारे तुम लोगों को देखकर बहुत ख़ुशी हुई है। यह ऐसा मुसीबत भरा समय है जब अफ़वाहों का बाज़ार गर्म है, लेकिन आज मैं तुम लोगों से तुम्हारे ही हितों की ख़ातिर विश्वविद्यालय के भलाई की ख़ातिर, बातें करना चाहता हूँ, और चूँकि मुझे ऊपर से कई निर्देश प्राप्त हुए हैं..."

"असली मुद्दे पर आओ।" किसी ने हॉल से चीख़कर कहा। "फ़िज़ूल बातें मत करो।"

अध्यक्ष ने जल्दी से अपने ब्रीफ़केस से कागज़ात का एक पुलिन्दा निकाला, और एक नज़र चीनी विभाग के अध्यक्ष हू शिह पर डालते हुए, जो मंच पर उसकी बग़ल में बैठा हुआ था, उसमें से एक कागज़ बाहर खींचा। फिर ध्यानपूर्वक उस कागज़ को देखते हुए, वह तेज़ स्वर में बोला।

"मुझे अभी-अभी शिक्षा में मन्त्रालय से एक आदेश प्राप्त हुआ है, मैं इसे तुम लोगों को पढ़कर सुनाऊँगा। अपना गला साफ़ करते हुए, वह लयपूर्वक पढ़ने लगा, "राष्ट्रीय संकट ने गम्भीर रूप ले लिया है, और पेइपिङ के छात्र बार-बार अपनी देशभक्ति प्रदर्शित कर चुके हैं जिससे सरकार और राष्ट्र वाक़िफ़ हैं। लेकिन

देशभक्त नौजवानों को ज़रूर समझना चाहिए कि वे उद्देश्यों और कार्रवाइयों को गड़बड़ाये नहीं। भविष्य में अध्यापकों को निश्चित तौर पर हड़तालों, प्रदर्शनों, बाहरी गतिविधियों और इस तरह के सभी निन्दनीय क्रियाकलापों को रोकने के लिए क़दम उठाने होंगे।"

"एक क्षण रुको!" एक स्पष्ट, उत्तेजित स्वर ने अध्यक्ष के भाषण के बीच ही में टोक दिया, और थुलथुल लियेन-जुई उछलकर अपने पैरों पर खड़ी हो गयी। अपने पट्टी बँधे सिर की ओर संकेत करती हुई, वह अध्यक्ष से बोल पड़ी :

"तुम न्यायोचित काम की बात करते हो, अध्यक्ष च्याङ। तब फिर, क्यों इस आदेश को पढ़ रहे हो, जो काले को सफ़ेद करने की कोशिश करता है? क्या निःशस्त्र छात्रों का अपनी देशभक्ति का इज़हार करना और ग़द्दारों द्वारा उत्तर चीन की नीलामी करने के विरुद्ध प्रतिवाद करना निन्दनीय है? शिक्षा मन्त्रालय उन ग़द्दारों की निन्दा क्यों नहीं करता, जिन्होंने मेरे जैसे तमाम छात्रों को बेवजह ज़ख़्मी बना दिया है? हमारी देशभक्तिपूर्ण कार्रवाई को निन्दनीय कहने के बजाय, वह अपने छात्रों की रक्षा क्यों नहीं करता और उनका बदला क्यों नहीं लेता?

"कृपया मुझे जवाब दो, अध्यक्ष च्याङ।"

"जवाब दो! जवाब दो!" पूरे हॉल से आवाज़ें उठने लगीं।

उस हॉल की मद्धिम रोशनी में, जो छात्र उपस्थित थे, उन्होंने देखा कि अध्यक्ष का कृश चेहरा पीला पड़ने लगा। उसका आदेश थामा हुआ हाथ थर थर काँप रहा था जबकि वह अपने होंठ चबाते हुए, दहकती आँखों से एकत्र छात्रों को घूर रहा था। इसके पहले कि वह बोल पाने के लिए अपने गुस्से को क़ाबू में कर सके, हॉल के सभी ओर से और उग्र आवाज़ें आने लगीं :

"अध्यक्ष च्याङ! क्या तुम नाराज़ नहीं हुए थे जब जापानियों ने तुमको एक शानदार पुराने विश्वविद्यालय के अध्यक्ष को – तीन घण्टे तक नज़रबन्द कर रखा था?"

"अध्यक्ष च्याङ लोगों से जनमत की माँग करो! तुम्हें छात्रों की न्यायोचित कार्रवाई में मदद करनी चाहिए, और अपनी ही भात की थाली की ख़ातिर अधिकारियों से साँठ-गाँठ नहीं करनी चाहिए!"

"... ... ..."

हॉल में हो हल्ला मच गया। यद्यपि कुछ खुफ़िया एजेण्टों ने जो वहाँ तैनात थे, शान्ति कायम करने की कोशिश की, परन्तु नाराज़ छात्र फूटते ज्वालामुखी की भाँति सब तरफ़ से आग उगल रहे थे। हॉल के सब तरफ़ से अधिकाधिक सवाल च्याङ पाऊ लिन के ऊपर दग़ते जा रहे थे।

अध्यक्ष और विश्वविद्यालय के अन्य विभागों के अध्यक्ष लकड़ी के कुन्दों की भाँति मंच पर खड़े होकर, चुपचाप रोषभरे छात्रों की ओर शून्य नज़रों से घूर रहे थे।

जब कोलाहल थोड़ा शान्त हुआ, तो डॉ. हू शिह ने अपने परिष्कृत अन्दाज़ में, अपने सोने की रिमवाला चश्मा पहने, और चुस्त ऊनी स्काफ़ लगाये, अध्यक्ष च्याङ को एक तरफ़ धकेला और उसकी जगह लेकर ऊँची आवाज़ में बोला :

"सज्जनो! अध्यक्ष च्याङ को ग़लत मत समझो – उसका पूरा-पूरा लगाव हमारे देश और हमारी जनता के प्रति है। तुम लोगों ने क़रीब एक हफ़्ते से कक्षाएँ छोड़ रखी हैं – यह और नहीं चल सकता। तुम लोग छात्र हो या राजनीतिज्ञ? देश बचाने के लिए असली योग्यता दरकार है। मुट्ठियाँ भाँजने, पर्चियाँ बाँटने और नारे लगाने के इस सब हुड़दंग के बाद आख़िर किनको चोटें पहुँची? कौन पीटा गया? कौन जेल में ठूँसा गया? तुम अनुभवहीन छात्रों के अलावा और कौन? हमारी केन्द्रीय सरकार के पास जापानियों से निपटने की अपनी नीति और रणनीति है। दुःसाहसी बनने से कोई फ़ायदा नहीं। इसलिए मेरी राय मानो, और अपनी देशभक्ति दिखाने के बेहतर तरीक़े निकालो।"

इस चालबाज़ी भरे भाषण के बीच-बीच में "शर्म-शर्म" और "कूड़ा-कबाड़ा" की चीख़ें उठती रहीं। लेकिन जब "अपनी देशभक्ति दिखाने के बेहतर तरीक़े" की बात आयी, तो छात्र एकबारगी उठ खड़े हो गये और गरज उठे :

"निकल जाओ!"

"हम नहीं सुनेंगे!"

"दफ़ा हो!"

डॉ. हू शिह कोई मामूली आदमी नहीं था। गाली खाकर च्याङ मेन-लिन की तरह पीला पड़ने के बजाय उसने झल्लाकर अपना स्कार्फ़ पीछे फेंका, एक मंचीय खलनायक की भाँति अपने हाथ कूल्हे पर रखा और दहाड़ा :

"मैं एक राज्य-नियुक्त प्रोफ़ेसर हूँ – मैं क्यों निकल जाऊँ? ज़रा मुझे निकालने की कोशिश तो करो।"

"पीटो इसे!"

"गन्दा कुत्ता!"

"तुम कितने पतित हो सकते हो!"

नीचे से आ रही क्रोध के इन गर्जनों-तर्जनों से हू शिह अब भी नहीं चौकन्ना हुआ, लेकिन जब छात्रों ने मंच की ओर धावा बोल दिया, तो उस चालाक डॉक्टर ने च्याङ मेन-लिन को पकड़ लिया, और बाक़ी को कहा, "जल्दी करो! चले चलो!"

वह भयभीत अध्यक्ष को अपनी बग़ल में आश्वस्त करते हुए जल्दी-जल्दी सीढ़ियों पर ऊपर चढ़ गया :

"बेकार में मगज ख़राब करना है – जैसे सूअर के आगे मोती फेंक दिये जायें...जल्दी करो मेन-लिन!"

जैसे ही हू शिह ने अपनी उद्धत चुनौती दी, ठीक उसी समय तेङ युन-सुआन ने ली हुआई-यिङ की ओर खिसककर अपनी बग़ल में बैठी ताओ-चिङ से पश्चाताप भरे स्वर में फुसफुसा दिया :

"तुम जीत गयी। हमारा हड़ताल करना पूरी तरह सही है। अरे, ये विद्वान कितने मूर्ख हो सकते हैं।"

जब ताओ-चिङ हर्षोन्मत्त भीड़ के साथ तीसरे कोर्ट से बाहर आयी, तो सियाओ-येन भीड़ से रास्ता बनाती हुई उसके पास पहुँच गयी, और उसकी बाँह पकड़ ली। उत्तेजना में चेहरा लाल किये धीमे से बोली :

"तुम सही थी! मीटिंग में आने का विचार बढ़िया था। अन्यथा हू शिह इतने बेबाक ढंग से बेनकाब नहीं हुआ होता!"

ठीक तभी होउ-जुई, वू यू-पिङ और लिऊ आ जुटे। उन्होंने ताओ-चिङ से कुछ नहीं कहा, लेकिन उनकी निगाहों की ख़ुशी और सहमति ने उसे बता दिया :

"वह तुम्हारा एक शानदार विचार था। अब कोई पीकिङ विश्वविद्यालय को पिछड़ा हुआ नहीं कह सकता!"

ताओ-चिङ ने भी उनकी ओर नज़र की, लेकिन कुछ नहीं कहा। लेकिन, उसकी आँखें बोल रही थीं :

"एक बार जब लोग जागृत हो जाते हैं, तो तुम देख लेना वे इन सभी कट्टरपन्थियों का सफ़ाया कर देंगे।

——:o:——

अध्याय 44

अभी पौ नहीं फटी थी, तभी प्रोफ़ेसर वाङ हुङ-पिन जाग उठा, बत्ती जलायी, और कपड़े पहनने लगा। दरअसल, वह बमुश्किल ही सो पाया था, कारण कि यह कोई साधारण दिन नहीं होने वाला था। काफ़ी ग़ौरतलब है कि वह विद्वान जो अब अपने पचास के दशक में था, जो सारी ज़िन्दगी किताबों में धँसा रहा, सोलह दिसम्बर को नौजवानों के प्रदर्शन में भाग लेने का फ़ैसला कर चुका था, चीनी जनता द्वारा चलाये जाने वाले एक ऐसे नये संघर्ष में, जो उनके देश को विनाश से बचाने और राष्ट्रीय आज़ादी हासिल करने के लिए आयोजित था।

स्वभावत: उसके लिए यह फ़ैसला लेना आसान बात न थी। वह अच्छी तरह से वाक़िफ़ था कि प्रतिक्रियावादी शासक नृशंस व्यवहार करते हैं, असंख्य देशभक्त कारावास भोग रहे थे, और महज़ न्यूनतम जनवादी अधिकारों के संघर्ष के लिए मार डाले गये थे, और यह भी सम्भव था कि वह विश्वविद्यालय से बरख़ास्त कर दिया जाये, या गिरफ़्तार करके जेल में डाल दिया जाये। अगर ऐसा हुआ तो उसकी प्यारी

पत्नी और बेटियाँ एक पति और पिता खो देगीं, जबकि उसे ऐसी यातनाएँ झेलनी पड़ेगी जिनसे वह अब तक वाक़िफ़ नहीं था। ये चिन्ताएँ और आशंकाएँ उसके हृदय में धधक रहे उस न्यायोचित रोष से पराभूत कर दी गयी थीं, जिसने उसे सक्रिय हो उठने के लिए अन्ततः उद्वेलित कर दिया था। वह हमेशा ही एक ईमानदार, आत्मसम्मानी, अपने देश के प्रति निष्ठावान और लोकतन्त्र का पक्षधर रहा था। उसने कभी शक्ति या हिंसा के आगे घुटने नहीं टेके थे। यद्यपि उसके हू शिह के साथ मेलमिलाप ने उसे कई सवालों पर भ्रमित भी किया था, फिर भी उसके प्रगतिशील सहकर्मियों की मदद ने, और सियाओ-येन तथा उसके छात्रों के उत्साहवर्द्धन ने उसे अन्ततः एक अपेक्षाकृत साफ़ समझदारी तक पहुँचने में सक्षम बना दिया था, और उसके दिमाग़ को द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद और मार्क्सवाद-लेनिनवाद के वैज्ञानिक सिद्धान्तों से लैस कर दिया था।

अब वह स्पष्ट देख रहा था कि इतिहास अपना अपरिहार्य मार्ग तय कर रहा था, और कि मानवता कम्युनिज़्म की ओर गति कर रही थी, जो अन्त में सारी दुनिया में विजयी होकर रहेगी। और भी जनता के हितों और मातृभूमि की रक्षा के लिए अपने संघर्ष में कम्युनिस्टों का दृढ़ स्टैण्ड और साथ ही साथ, मौत के प्रति उनकी अदम्य बेपरवाही ने उसे और भी भारी ताक़त के साथ उनके क़रीब कर दिया था। वह अपनी स्वयं की कायरता और अहंवादिता को हेय समझने लगा था। उसे विश्वास हो गया था कि एक आदमी जो सिर्फ़ अपनी ही तुच्छ आवश्यकता के लिए मरता-खपता है, वह एक अर्थहीन जीवन जीता है, भले ही वह सौ वर्षों तक जी ले। ऐसे जीवन में कोई सच्चा सुख नहीं हो सकता। इसी सोच के मुताबिक़ उसने नौ दिसम्बर वाले आन्दोलन में आर्थिक सहायता की थी, और अपने दोस्तों से भी ऐसा करने का अनुरोध किया था। और अब वह सोलह दिसम्बर वाले प्रदर्शन में स्वयं भाग लेने का फ़ैसला कर चुका था, साथ ही अपने दोस्त वू फान-चू और दूसरे प्रगतिशील प्रोफ़ेसरों से भी शामिल होने का अनुरोध किया था। यद्यपि कुछ ने विभिन्न कारणों से इन्कार कर दिया था, फिर भी वह उस रात उत्सुकतापूर्वक सवेरा होने के इन्तज़ार में जागता रहा। प्रकाश होने से पहले ही वह कपड़े पहनकर पूरी तरह तैयार हो चुका था। उसकी पत्नी, जो स्वयं भी जाग चुकी थी, अपने कपड़े पहनकर तैयार होते हुए हिचकिचाते हुए बोल पड़ी :

"हुङ-पिन क्या तुम अपना मन नहीं बदलोगे? तुम कोई नौजवान तो हो नहीं – तुम 59 साल के हो।"

"जानता हूँ, जानता हूँ।" उसने जल्दी-जल्दी अपना मुँह धोने के लिए गर्म पानी उड़ेलते हुए जवाब दिया। "तुम इसे नहीं जान सकती, मेरी प्यारी, लेकिन कुछ लोग नब्बे की उम्र में जवान रहते हैं। जबकि दूसरे बीस वर्ष में ही बूढ़े हो जाते हैं। मैं दिमाग़ी तौर पर तैयार हो चुका हूँ, इसलिए कृपाकर और कुछ मत कहो।" उसने मेज़

पर से अपना चश्मा उठाया, और लेंसों को पालिश करने लगा। तुरन्त एक विचार उसके मन में कौंध गया। जिसके चलते वह अपनी पत्नी से बोल पड़ा, "यह चश्मा काफ़ी मज़बूत नहीं है। नौ दिसम्बर को जो कुछ हुआ, उसको ध्यान में रखते हुए, आज हमारे साथ कुछ बदसलूकी भी हो सकती है। क्या तुम मेरे लिए कछुए की खोल की रिम वाला चश्मा ला दोगी? वह कुछ अधिक टिकाऊ है। अगर मेरा चश्मा टूट गया, तो मैं अपनी निकट दृष्टिदोष के कारण बहुत दूर तक नहीं चल सकता।"

श्रीमती वाङ हिली-डुली नहीं, बल्कि उसकी ओर चिन्तित भाव से देखती खड़ी रही।

"हुङ-पिन, तुम अधिकाधिक बच्चे होते जा रहे हो। क्या यह कोई मज़ाक़ वाली बात है? हमने सियाओ-येन को तो क्रान्ति में शामिल हो ही जाने दिया, लेकिन ज़रा सोचो तो कि मैं इस वर्ष क़रीब पचास की हो गयी हूँ, और सियाओ-येन की बहनें अभी छोटी हैं। अगर तुम अपनी इस उम्र में इस सर्दी में बाहर गये, और कुछ हो गया तो!" वह ममतामयी पत्नी और माँ आगे न बोल सकी, बल्कि अपनी आँखें पोंछने लगी। उसे काफ़ी ताज्जुब हुआ कि प्रोफ़ेसर सिर्फ़ मुस्कुराकर रह गया। उसका कन्धा थपथपाते हुए, वह मुस्कानपूर्वक बोला :

"तुम सभी औरतें एक ही तरह की होती हो। चूजों के झुण्ड समेत, एक मुर्ग़ी की तरह! अगर किसी ने भी कभी थोड़ी जोखिम उठाने की हिम्मत न की होती, तो यह दुनिया कभी की ख़त्म हो गयी होती! कृपया जाओ और मेरे लिए कुछ खाने को लाओ। मैं अच्छा-ख़ासा नाश्ता कर लेना चाहता हूँ ताकि आज उन नौजवान साथियों से पीछे न रह जाऊँ।"

श्रीमती वाङ ने उसके लिए अण्डायुक्त नूडल्स की एक बड़ी प्लेट तथा साथ ही साथ कुछ तले हुए केक भी तैयार किये। वह उसे चिन्तित भाव से निहारती रही, जबकि वह लज़ीज़ खाना खाता रहा। उसका बूढ़ा पति फिर एक लड़का बन गया प्रतीत हो रहा था। वह एक ऐसे चंचल किशोर की भाँति हरकत कर रहा था जो मानो नृत्य करने जाने के लिए अधीर हो रहा हो। अपना नाश्ता ख़त्म करके उसने खिड़की से बाहर झाँका, और देखा कि अब भी अँधेरा था। फिर, उस रोशनी से जगमगाते कमरे में वह कोई चीज़ तलाशने लगा, पहले अपनी जेबों को टटोला, और फिर अपनी डेस्क की दराज़ों में टटोला। अन्त में उसने अपनी प्रिय क़लम, नामों और पतों की कुछ सूचियों, नोटबुकों का एक मोटा पुलिन्दा और कई चाबियाँ एकत्र कर लीं। इन सबको उसने सम्मानपूर्वक अपनी पत्नी को सौंपते हुए मुस्कुराकर कहा :

"मैं तुम्हें इन चीज़ों को दे रहा हूँ जिन्हें मैंने बहुत जतन से सँजोये रखा था। ऐसी अप्रत्याशित घटना हो जाये कि मैं वापस न लौटूँ तो तुम ज़रूर मेरी ख़ातिर इन्हें जतन से रखना। ये मेरे कई वर्षों की कड़ी मेहनत और अध्ययन के प्रतीक हैं।"

श्रीमती वाङ ने जो उसे स्थिरभाव से निहार रही थी, अचानक अपना सिर नीचे

कर लिया और फूट-फूटकर रोने लगी। अपनी वेदना को भरसक छिपाने की कोशिश करती हुई, उसने इन चीज़ों को एक कपड़े में लपेटा। फिर उसने ऊपर नज़र की, और ऐसे दृढ़ ऐलानिया स्वर में बोली कि वैसा तो प्रोफ़ेसर ने उसे पहले कभी बोलते नहीं सुना था।

"हुङ-पिन मैं भी तुम्हारे साथ चल रही हूँ।"

"लेकिन...तुम कैसे चल सकती हो?" वह पूछकर, चकित हो गया कि उसकी दब्बू डरपोक पत्नी इस ख़तरनाक संघर्ष में भाग लेने की सोच रही है।

"अगर तुम जा सकते हो, तो मैं क्यों नहीं जा सकती?" उसका स्वर इतना दृढ़ और निश्चयात्मक था कि वह आगे कुछ न कह सका। कुछ सेकेण्ड की ख़ामोशी के बाद उसने दोनों हाथ फैला दिये और उत्कण्ठित होकर प्रत्युत्तर में बोला :

"बहुत अच्छा! हम साथ-साथ चलेंगे। इसका मतलब है कि हमारी क़तारें एक प्रौढ़ वीरांगना द्वारा मज़बूत होने वाली है, लेकिन कौन इन चीज़ों की मेरे स्थान पर देखभाल करेगा?"

"मैं इन्हें लिङ-येन को सौंप दूँगी," वह निश्चयपूर्वक बोली। इसके साथ ही, मानो किसी एक लम्बी यात्रा पर जा रही हो, वह अपने लिए खाना और कपड़ा लेने और घर की देखभाल का ज़िम्मा अपनी दूसरी बेटी को सौंपने चली गयी। यह कर चुकने के बाद वह अपने पति के साथ उस चमकती भोर में बाहर चल पड़ी।

अपने चेहरों पर सर्द हवा खाते हुए बूढ़े दम्पति सियाओ-येन की खोज में जल्दी-जल्दी लड़कियों के छात्रावास की तरफ़ बढ़ चले। वे उसे वहाँ नहीं पा सके, लेकिन यह जानकारी मिली कि वह पूर्वी हॉस्टल चली गयी थी। जब वे उसके सामने के परिसर में पहुँचे, तो सैकड़ों छात्र को बातें करते हुए देखकर प्रोफ़ेसर वाङ चकित रह गये। बहस, वाद-विवाद और नारेबाज़ी के स्वरों का कर्कश शोरगुल मचा हुआ था। ठीक तभी उसके छात्र वाङ चुङ ने एक झुण्ड के बीच से अपनी दुबली-पतली बाँहों से हावभाव दिखाते हुए, बोलना चालू कर दिया। सुबह की धूप उसके कृश, पीले चेहरे पर चमक रही थी।

"साथी छात्रो!" बन्दर जैसे चेहरे वाले वाङ चिङ ने सम्बोधित किया। "छात्र संघ की तरफ़ से अभी-अभी बोलने वाला वक्ता कुछ मामूली हद तक ही ठीक था। पीकिङ विश्वविद्यालय के हम छात्रों को सही हालात के प्रति जागरूक होना चाहिए, और संघर्ष में अपने प्राणों की आहुति देने से नहीं डरना चाहिए। लेकिन, हम किससे लड़ रहे हैं? हमारे दुश्मन कौन हैं? मैं तुम सबको चेतावनी देना चाहता हूँ कि कुछ समर्पणवादी गुटों के शिकार या औज़ार न बनो। हम अपने गर्म ख़ून को दोबारा मलकुण्ड में न बहने दें! जो कुछ हो रहा है उसके प्रति जागो। कुछ लोग जापान के विरुद्ध एक संयुक्त मोर्चा बनाने की बात गला फाड़-फाड़कर चिल्ला रहे हैं, जबकि दरअसल वे जो चाहते हैं, वह समर्पण का एक संयुक्त मोर्चा है। कहने के लिए ही

वे क्वोमिन्ताङ के साथ सहयोग कर रहे हैं, लेकिन वास्तव में वे उन ग़द्दारों के साथ साँठ-गाँठ कर रहे हैं जो देश को बेच रहे हैं।

"नौ दिसम्बर को हममें से कई को बुरी तरह धोखा दिया गया है। हमें बताया गया है कि यह उत्तरी चीन की सौदेबाज़ी के विरुद्ध एक विरोध-प्रदर्शन था। लेकिन वास्तव में हम उनके हाथों में खेल गये, उन्हें अपने लिए ओहदे प्राप्त करने और अपनेआप को समृद्ध करने के लिए हमने अपनी राजनीतिक हत्या हो जाने दी। हमें फिर से उसी चंगुल में नहीं फँसना है। हम नौजवान लोग, जो सचमुच में देशभक्ति से भरे हुए हैं, सिर्फ़ जापानी साम्राज्यवाद को ही नहीं बल्कि समूचे साम्राज्यवाद को उखाड़ फेंकना चाहते हैं। हमें अपनेआप को झाँसापट्टी का शिकार नहीं होने देना है। क्रान्ति का मतलब होता है पूरी तरह से सफ़ाई। सिर्फ़ गलियों में कुछेक नारे चिल्ला देने से कोई फ़ायदा नहीं।"

बन्दर जैसे चेहरे वाले का लम्बा-चौड़ा भाषण क्रुद्ध छात्रों द्वारा रोक दिया गया, जो फुफकारने और चीख़ने लगे, "फालतू बकवास मत करो!" लेकिन, कुछ ने सन्देहास्पद ढंग से अपने सिर हिला दिये जबकि कई तो चले गये।

जब प्रोफ़ेसर वाङ ने यह देखा, तो उसने चिन्तित भाव से अपनी पत्नी की ओर नज़र घुमायी, और धीरे से बोला :

"क्या किया जाये? गन्दा कुत्ता!" हालाँकि जब वह बोल रहा था, तभी, वास्तव में उसने यह भी देखा कि कुछ छात्रों ने जो अपने झण्डे उठाये हुए थे, उन्हें फेंक दिया और वे वापस जाने लगे। बूढ़े दम्पति की आँखें भीड़ में एक लड़की पर नज़र पड़ते ही अचानक ख़ुशी से चमक उठी, जो एक ऐसे ढंग से बोल रही थी जो ध्यानाकर्षक था। उसका सिर ऊँचा उठा हुआ था, उसके हाथ ज़ोरदार ढंग से हावभाव प्रदर्शित कर रहे थे। वह उनकी अपनी सियाओ-येन थी, जो आमतौर पर बहुत गम्भीर और शान्त रहा करती थी। वाङ चुङ की तरफ़ आरोप लगाने के अन्दाज़ में उँगली उठाते हुए, वह एक रोमांचकारी स्वर में बोल पड़ी :

"साथी छात्रो! मैं अपने निजी कड़वाहट भरे, शर्मनाक अनुभव के बारे में कुछ शब्द कहने की इजाज़त चाहूँगी। इतिहास विभाग का वाङ चुङ एक निर्लज्ज त्रॉत्स्कीपन्थी है, और क्वोमिन्ताङ और सी.सी. गुट के लिए काम करने वाला एक जासूस है। मैं उनके द्वारा बुरी तरह से ठगी गयी, जैसाकि आप में से कुछ को मालूम है। वे लोगों को अपने चंगुल में लेने के लिए हर तरह के तरीक़े अपनाते हैं, अपरिपक्व और अनुभवहीन छात्रों को छलते और धोखा देते हुए वे उन्हें एक भयानक और बेहूदे रास्ते पर घसीट ले जाते हैं। उनकी असली भूमिका को महसूस किये बग़ैर मैंने उनके द्वारा पथ-भ्रष्ट होकर कई भयानक काम कर डाले, लेकिन अब मैं उनकी असलियत जान चुकी हूँ। वे दोबारा मुझे बेवक़ूफ़ नहीं बना सकते।

"साथी छात्रो, आप लोग उन्हें किसी को भी बेवक़ूफ़ मत बनाने दें! आज छह

दिन की हड़ताल के बाद, पेइपिङ के हम सभी छात्र एक बड़ा प्रदर्शन करने जा रहे हैं, जो इन ग़द्दारों के दिलों में ख़ौफ़ पैदा कर देगा, और ढुलमुलयक़ीनी करने वालों में नयी स्फूर्ति भर देगा। गर्म ख़ून वाला छात्र, जिसमें तनिक भी चेतना है, क्या अपनी ख़ूबसूरत मातृभूमि को दुश्मन के हाथों पड़ जाते हुए देखना पसन्द करेगा? हममें से कौन यह देखना गवारा करेगा, कि हमारे दुश्मन वे साम्राज्यवादी और ग़द्दार, हमारी इस महान धरती पर उच्छृंखल आचरण करें, जहाँ हमारे पूर्वजों ने असंख्य पीढ़ियों तक जीवन बिताया है? केवल वाङ चुङ जैसा पतित ही तो!"

अपनेआप को अब और संयत रख पाने में असमर्थ पाकर, सियाओ-येन नाराज़ होकर वाङ चुङ की तरफ़ दौड़ पड़ी, जो उसकी बात का खण्डन करने के लिए मौक़े का इन्तज़ार करते हुए उसकी ओर मुँह बनाकर ताक रहा था, और उसके दुबले-पतले चेहरे पर चटाक-चटाक तमाच मारकर प्रचण्ड स्वर में चिल्लायी, "यह लो, जासूस कहीं के!" उस क्षण यह तय कर पाना मुश्किल था कि वह वही विनम्र परिष्कृत वाङ सियाओ-येन थी, जो हमेशा किताबों में अपनेआप को धँसाये रखती थी।

"उसे जहन्नुम रसीद करो। पीट डालो, सुअर को!" भीड़ से उत्कण्ठित स्वर गूँज उठे, जबकि वे छात्र जो चले जाने को तैयार थे, फिर वापस आ गये। वाङ चुङ और उसके साथी गुस्साई भीड़ द्वारा घेर लिये गये, और चारों तरफ़ हड़कम्प मच गया। "पीटो उन्हें! पीट-पीटकर मार डालो। गन्दे कुत्ते!" उन मुट्ठीभर खुफ़िया एजेण्टों को अच्छा सबक मिला। जब प्रोफ़ेसर वाङ ने यह देखा, तो वह चिल्लाये बिना न रह सके :

"बधाई हो सियाओ-येन! तुमने ठीक किया। वे पिटाई के ही क़ाबिल थे। उनकी ठीक ख़ातिर हुई।"

जैसे ही क्वोमिन्ताङ एजेण्टों ने देखा कि हालात उनके ख़िलाफ़ जा रहे हैं, तो उन्होंने अपने कन्धे सिकोड़े, और भीड़ से खिसक लिये। प्रोफ़ेसर वाङ अपनी पत्नी को अपने साथ खींचते हुए उन उत्तेजित छात्रों के बीच से झपटकर अपनी बेटी के पास पहुँच गया, जो अब क़तारबद्ध होने में व्यस्त हो गये थे। उसने उसे जाँचा-परखा, जैसेकि वह उसे पहचान न पा रहा हो। अन्ततः उसने एक अँगूठा उठाया, और एक चौड़ी मुस्कान के साथ टिप्पणी की :

"बहुत अच्छा, सियाओ-येन तुमने वह परीक्षा शानदार ढंग से पास कर ली। तुमने उनको इतने प्रभावी ढंग से बेनकाब किया कि उनकी प्रतिवाद करने का समय तक नहीं मिला – वे किसी तरह सिर पर पाँव रखकर भाग निकले। वह दुखती आँखों के लिए देखने लायक़ नज़ारा था।"

"डैडी-मम्मी!" सियाओ-येन बमुश्किल सुने जा सकने लायक़ स्वर में बुदबुदायी, उन्हें देखकर उसका पूरा चेहरा आवेश से तमतमा उठा। "इतने ज़ोर से

मत बोलो डैडी! तुम मुझे शर्मिन्दा किये दे रहे हो। मैं बहुत ही बेवक़ूफ़ हूँ।" उसे जिस हानिकर भूमिका में छलपूर्वक फँसा दिया गया था उसका ख़याल आते ही वह शर्म से लगभग रोने को हो आयी, लेकिन अपने माँ-बाप के उत्सुक, आशा भरे दृष्टिकोण को देखकर वह मुस्कुरा पड़ी। अपनी माँ का हाथ पकड़कर उसने स्नेहपूर्वक पूछा, "तुम यहाँ क्या कर रही हो, माँ?"

बिना अपनी पत्नी के उत्तर की प्रतीक्षा किये ही, प्रोफ़ेसर वाङ ने स्पष्टीकरण दिया, "तुम्हारी माँ भी बदल गयी। स्वाभाविक रूप से हमारी मिसाल के साथ। यही कारण है कि वह भी आ गयी है। ख़ैर, हम कब कूच करने वाले हैं?"

"हम पश्चिमी हॉस्टल के बाहर अभी एकत्र होने और दूसरों के साथ शामिल होने के लिए जा रहे हैं।" सियाओ-येन झटपट चल देने वाली ही थी कि तभी तेज़ी से क़तारबद्ध हो रही भीड़ से उत्साहभरे स्वर गूँज उठे :

"प्रोफ़ेसर वाङ हुङ-मिन के लिए थ्री चीयर्स! और श्रीमती वाङ के लिए हुर्रा! प्रोफ़ेसर वाङ हमारे प्रदर्शन में भाग लेने आ गये हैं!" तालियों की गड़गड़ाहट जहाँ वह खड़ा था, वहाँ तक पहुँच गयी।

अपने जीवन में पहली बार प्रोफ़ेसर वाङ एक लड़की की भाँति शर्माया। जब उसने इन छात्रों के चेहरे पर चमक रही निष्कपटता को सरसरी तौर पर देखा, तो वह बड़ी मुश्किल से अपने आँसू रोक पाया। उसके स्वागत की स्वीकृति में अपना एक हाथ लहराते हुए, उसने दूसरे हाथ से अपनी पत्नी का हाथ पकड़ लिया, और धीरे-धीरे एक स्कूली बच्चे की भाँति शर्माते हुए अब उनकी व्यवस्थित क़तारों में शामिल होने के लिए चल दिया।

——:0:——

अध्याय 45

नौ दिसम्बर के बाद एक सप्ताह के भीतर पार्टी ने अपने इर्द-गिर्द हज़ारों प्रगतिशील छात्रों और राष्ट्रीय मुक्ति के काम में उत्सुक नौजवान देशभक्तों को लामबन्द कर लिया था। पार्टी और जनता की ताक़त तेज़ी से बढ़ रही थी। "होपेई चाहार राजनीतिक परिषद" के निर्माण का, जिसका मतलब होता उत्तर चीन को बेच देना, अधिकाधिक विरोध जागृत करते हुए आन्दोलन की सफलता को नतीजे तक पहुँचने के लिए, उन पार्टी सदस्यों ने जो छात्र फ़ेडरेशन का नेतृत्व कर रहे थे, एक विशेष बैठक आयोजित की थी। उन्होंने पन्द्रह दिसम्बर की शाम को चाङआन होटल में एक कमरा किराये पर लिया था, और माहजोङ खेलने की मेज़ पर कार्रवाई की योजना तैयार की थी। बोगस "होपेई-चाहार राजनीतिक परिषद" अगले दिन सोलह दिसम्बर को स्थापित की जाने वाली थी, और उन्होंने तय किया

कि उसी दिन और भी बड़ा प्रदर्शन करने के लिए पेइपिङ के छात्रों को गोलबन्द किया जाये।

सू हुई ने उस रात देर में ताओ-चिङ को नींद से जगाया, उसे अगले दिन की योजना के बारे में विस्तार से बताया, और उसे पेइपिङ विश्वविद्यालय का कार्यभार सौंपकर झटपट सूचना प्रसारित करने एक दूसरे स्कूल में चली गयी।

ताओ-चिङ सारी रात व्यस्त रही। शुक्र को होउ-जुई और दूसरे पार्टी-सदस्यों तथा सक्रिय कार्यकर्ताओं का, जिनकी बदौलत, चार घण्टे से कम ही समय में छात्रों का एक जत्था प्रदर्शन के लिए गोलबन्द कर लिया गया। उसी समय प्रचार कार्य गश्त और सम्पर्ककर्ता-समूहों का भी प्रावधान कर लिया गया।

अन्त तक, अन्तिम ब्योरे की तैयारियाँ पूरी कर ली गयीं। पौ फटने से ठीक पूर्व ताओ-चिङ जो उस समय महिला छात्रावास में थी, चाङ लियेन-जुई के बिस्तर पर लेट गयी, और उस पर खाँसी के दौरे पड़ने लगे। उसका हृदय ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा, और उसे चक्कर आने लगा। लेकिन थोड़ा आराम कर लेने के बाद, उसने कुछ बेहतर महसूस किया। उसके बाद गलियों में गाने और नारे लगाने की आवाज़ उठने लगीं और वह उछल पड़ी, ठण्डा पानी पिया और झटपट बाहर निकल गयी।

यह उसके लिए कड़ी मेहनत वाला दिन था। यद्यपि मुख्य योजना तैयार कर ली गयी थी, फिर भी उसके दिमाग़ में पूरी तरह चैन तक नहीं महसूस हुआ जब तक कि वह भागते-दौड़ते पूर्वी हॉस्टल नहीं पहुँच गयी, और होउ-जुई ने अन्तिम प्रबन्ध व्यवस्था की पुष्टि नहीं कर दी। उसके बाद वह पश्चिमी हॉस्टल की बग़ल में जमा होने के लिए जा रही भीड़ में शामिल हो गयी।

विश्वविद्यालय और पेइपिङ के हाईस्कूल के छात्र चार इकाइयों में व्यवस्थित थे, तीन शहर में और एक शहर के बाहरी भाग में। पहली इकाई उत्तर पूर्व विश्वविद्यालय के नेतृत्व में थी, दूसरी चीनी विश्वविद्यालय के और तीसरी पीकिङ विश्वविद्यालय के और शहर के बाहरी भाग की इकाई त्सिङहुआ विश्वविद्यालय के नेतृत्व में थी। उन्हें सुबह सात बजे कूच कर देना था और स्वर्ग के पुल के पास एकत्र होना था, उसके बाद उन्हें चिएनमेन से होकर शहर में प्रवेश करना था। तिएनमेन को पार करना था, और वेइचिया ओयु स्ट्रीट के पूर्वी मेहराब को पार करते हुए, तब तक बढ़ते जाना था जब तक कि विदेश-विभाग के ब्यूरो तक न पहुँच जाये, जहाँ "होपेई-चाहार राजनीतिक परिषद" का उद्घाटन होना था, और जहाँ उन्हें अपना सार्वजनिक विरोध प्रदर्शित करना था।

यद्यपि सूरज अभी नहीं उगा था, फिर भी लोग दो-दो और तीन-तीन के झुण्डों में तेज़ी से बढ़ते चले आ रहे थे, और आन्दोलनकारी गीतों के स्वरोत्कर्ष उस सर्द, जाड़े की हवा को चीरते हुए साफ़ ध्वनित हो रहे थे।

ताओ-चिङ ने क़दम बढ़ाये और वह ली हुआई-यिङ के घर दौड़ गयी, जो सादा लिबास पहने हुए थी, अपनी ऊँची एड़ी वाले जूते या फर-कोट नहीं। एक साधारण नीला सूती गाऊन पहनकर, जो उसके गुलाबी और सफ़ेद रूपरंग से एकदम अलग-थलग झलकता था, वह हमेशा से भी कहीं अधिक आकर्षक दिखायी दे रही थी। उसने ताओ-चिङ का हाथ पकड़ लिया और खुशी-खुशी विश्वास दिखाया :

"ताओ-चिङ! आज मैं सर्वसाधारण बनने जा रही हूँ। मैं अब और निकम्मी बनकर नहीं रह सकती। सियाओ-येन क्यों नहीं दिखायी दे रही है? क्या तुमने उसे देखा है? तुम इतनी पीली क्यों हो?

"सर्वसाधारण में से एक? बधाई हो तुमको!" ताओ-चिङ ने मुस्कुराते हुए सहमति में सिर हिलाया, उसने हुआई-यिङ के अन्तिम सवाल को उपेक्षित कर दिया। "सियाओ-येन पूर्वी हॉस्टल चली गयी है। क्या तुम पश्चिमी हॉस्टल जा रही हो? आओ साथ ही चलें।" गीतों के स्वरोत्कर्ष उस ठिठुरनभरी भोर की हवा में तरंगायित हो रहे थे।

हमारी रायफ़लें दुश्मन की ओर,
हम मार्च करते क़तारबद्ध होकर।
हमारी क़तारें दृढ़ हैं लोहे की तरह
हमारे हृदय दृढ़ हैं फौलाद की तरह,
हम बचायेंगे अपने राष्ट्र को
और हासिल करेंगे स्थायी आज़ादी।

पीकिङ विश्वविद्यालय के छात्र पश्चिमी हॉस्टल की ओर जमा होते जा रहे थे। आलोड़नकारी, हालाँकि कुछ-कुछ विषादभरे गीत, हर तरफ़ सुने जा सकते थे।

सोते हुए लोग अपने बिस्तरों से उठकर पूछते, "छात्र क्या करने जा रहे हैं?" फिर दूसरा देशभक्तिपूर्ण प्रदर्शन? बधाई हो उनको!"

सात बजे, पीकिङ विश्वविद्यालय के छात्रों के जत्थे ने पश्चिम हॉस्टल से अपने बडे-बड़े बैनर लहराते हुए मार्च शुरू कर दिया, और भूरे कोट वाले सैनिक और काली कोट वाली पुलिस, जो ताक में थे, उन पर हवा के बवण्डर की भाँति टूट पड़े। "वापस जाओ"। वे दहाड़े, "सभी वापस जाओ"। "दंगा करने की कोशिश कर रहे हो?" घुड़कियाँ देते और अपनी संगीनें चमकाते हुए बदमाशों ने छात्रों को घेर लिया और उनके चमकदार बैनरों को फाड़कर चिन्दी-चिन्दी कर दिया।

"पिल पड़ो उन पर। तोड़कर निकल चलेंगे..." क्रोधित चीख़ें उस सर्द जाड़े की हवा में गुंजायमान हो उठीं।

चुनौतीभरी इन चीख़ों में यह ताओ-चिङ थी, जो नेतृत्व दे रही थी।

"टूट पड़ो उन पर! टूट पड़ो।" सैकड़ों छात्रों ने घेरेबन्दी को तोड़कर निकल चलने के लिए, एक उग्र आवेशमय कोशिश में, बाँह से बाँह जोड़ लिये। संगीनों और चमड़े के तस्मों को टिका करके, सेना ने उनका रास्ता रोक रखा था। छात्र इतने कम थे कि वे उस घेरेबन्दी को नहीं तोड़ सकते थे। वे क्या करते? जल्दी ही स्वर्ग के पुल के पास एकत्र होने का समय हो जाने वाला था।

इसी नाजुक घड़ी में पूर्वी हॉस्टल से छात्रों का एक रेला आ गया और उनकी मदद से घिरे छात्र बलपूर्वक अपना रास्ता बना लेने में समर्थ हो गये। उठती किलकारियों और चीख़ों ने, जो उनकी सफलता का स्वागत कर रही थीं, पुलिस को आश्चर्य से टुकुर-टुकुर ताक़ते रहने को विवश कर दिया। अपनी चमकती संगीनों ओर कौंधती मशीनगनों के बावजूद, वे उमड़ते हुए आगे बढ़ रहे छात्रों को रोक रखने में अशक्त हो गये। इस तरह, उन नौजवानों ने जो ताक़त जुटाने में सफल हो गये थे, झटपट चार क़तारें बना लीं, और मार्च करते हुए आगे बढ़ चले।

पीकिङ विश्वविद्यालय से तमाम दूसरे स्कूलों की भाँति ही पिछले प्रदर्शन के मुक़ाबले सोलह दिसम्बर के इस प्रदर्शन में कहीं अधिक छात्रों ने भाग लिया, पहली परेड के बाद, सशस्त्र रक्षासेना कमाण्डर ने पेइपिङ के अख़बारों को छात्रों के प्रदर्शन की ख़बर छापने से मना कर दिया था, और तमाम स्कूलों की नाकेबन्दी करने के लिए पुलिस और सशस्त्र सेना की भारी तादाद भेज रखी थी। नौ दिसम्बर के रक्तपात और पार्टी के समयोचित प्रभावी प्रचार कार्य ने प्रतिक्रियावादियों की दुष्टतापूर्ण प्रकृति के प्रति, नौजवानों की आँखें खोल दी थीं, और अब वे कार्रवाई करने को उतारू थे – पीकिङ विश्वविद्यालय के लगभग सारे छात्रों को गोलबन्द कर लेने के लिए कुछ ही घण्टे की तैयारी काफ़ी हो गयी थी।

पूर्वी और पश्चिमी हॉस्टलों के छात्रों की ताक़त संयुक्त हो जाने के तुरन्त बाद ताओ-चिङ ने देखा कि तेङ युन-सुआन, जो चीनी साहित्य विभाग के चौथे वर्ष का छात्र था, प्रदर्शनकारियों में शामिल हो गया था। वह अपनी कक्षा का वरिष्ठ और सबसे अध्ययनशील छात्र था, और नौ दिसम्बर वाली परेड में भाग नहीं लिया था, लेकिन आज औरों के साथ बाहर आ गया था। वह एक भूरा गद्देदार गाऊन और काली ऊनी टोपी पहने था, और अपने एक हाथ से मोटे लेंस वाले चश्मे को पकड़े हुए था और दूसरे हाथ से अपने पड़ोसी की बाँह पकड़े था, मानो अपने को गिरने से बचाये रखना चाहता हो। जैसे ही वह तेज़ी से आगे बढ़ा और मुड़ने को हुआ कि उसकी दृष्टि उसके पीछे चल रही ताओ-चिङ पर पड़ी। उसने आश्चर्यमिश्रित ख़ुशी से उसका अभिवादन किया, और पीछे की ओर मुड़कर बोला :

"तो तुम भी आ गयी हो। बहुत अच्छा! मुझे तुम्हारी मदद और सलाह की ज़रूरत है।"

"तुम कैसा महसूस करते हो – घबरा रहे हो?" ताओ-चिङ ने मुस्कुराते हुए पूछा।

"बिल्कुल नहीं!" उसने गम्भीरता से प्रतिवाद किया। "यह तो वैसे ही है जैसा मैंने सोचा था!" यह महसूस करके कि वह पिछड़ता जा रहा था, वह एक स्फूर्त लपक के साथ आगे बढ़ चला।

पूर्वी चिङशान स्ट्रीट के पास छात्र अचानक रुक गये। कारण कि वहाँ सड़क के किनारे अग्निशामक होज-पाइपें लिये पहले ही से उनकी दिशा में निशाना बाँधे सैनिक और पुलिस का एक छोटा-सा दल खड़ा था। होउ-जुई, ताओ-चिङ और दूसरे पार्टी सदस्यों ने एक नारा बोला :

"होज छीन लो!" ताओ-चिङ आगे की ओर टूट पड़ने के लिए तैयार होती हुई चीखी।

तुरन्त दूसरे भी चीख़ पड़े :

"होज पकड़ लो! उन्हें इसे इस्तेमाल मत करने दो!" होउ-जुई भी आगे की ओर टूट पड़ते हुए चिल्लाया।

सर्वाधिक साहसी छात्रों को साथ लेकर पार्टी-सदस्य होज छीनने के लिए दौड़ पड़े। अन्य क्रुद्ध नौजवान भी निर्भीकतापूर्वक टूट पड़े। और शीघ्र ही जैसे उन काले कोट वालों ने अपना पल्ला कमज़ोर पाया, होज गिरा दिये और भाग चले। छात्रों ने एक आसान जीत हासिल कर ली। उसी क्षण उनके आगे वाङ सियाओ येन, ली शाओ-तुङ और वाङ लियेन-जुई आ गये, जो दो नये बैनर लिये हुए थे जिन्हें उन्होंने अभी-अभी तैयार किया था। फिर तो गुस्साये नारों का स्थान खुशी से भरी चीख़ ने ले लिया।

"साथी छात्रो! विजय हमारी हुई!"

ताओ-चिङ को क़तार में खड़े-खड़े ऐसी खुशी महसूस हो रही थी जिसे वह इसके पहले कभी नहीं जानती थी, उसका पीला, दुबलाया चेहरा खुशी से तमतमा गया था। उसके पार्टी द्वारा दिये गये कार्यभार एक-एक करके पूरे हो रहे थे, और एक पार्टी-सदस्य के लिए इससे बड़ी और कोई खुशी नहीं हो सकती थी।

लेकिन सबकुछ इतनी आसानी से नहीं हो गया। यद्यपि पूर्वी चिङशान स्ट्रीट से स्वर्ग का पुल अधिक दूर नहीं रह गया था, जहाँ उन्हें एकत्र होना था, फिर भी हर क़दम के साथ गतिविधि अधिकाधिक कठिन होती जा रही थी। बढ़ती हुई संख्या में सैनिक और पुलिस, छात्रों की बढ़त को रोकने के लिए, पूरे प्रयाण-पथ पर अधिकारियों द्वारा तैनात कर दिये गये थे। होज-पाइप और आग बुझाने के हर तरह के उपकरण सड़कों पर भरे हुए थे। ताओ-चिङ और अन्य पार्टी-सदस्यों के साथ शामिल शरीक़ होकर जब भी सम्भव होता, होज-पाइपें पकड़ने और आग बुझाने वाले उपकरणों को नष्ट करने में उनकी मदद करते। ख़ाली मुट्ठियों के सहारे वे

उस बर्बर पुलिस से लोहा ले रहे थे, जो उनकी बढ़त को रोक रहे थे। ताओ-चिङ, सियाओ-येन और हुआई-यिङ को कई बार ठोकर मारकर गिराया गया, उनके बाल बिखर गये, उनके चेहरे सूज गये और लहुलूहान हो गये, लेकिन अन्य की भाँति वे भी तुरन्त अपने पैरों पर उठ खड़ी होतीं और बिना डर के अपने रास्ते पर आगे बढ़ती रहतीं।

प्रोफ़ेसर वाङ अपनी पत्नी को अपनी बाँह का सहारा देकर चल रहा था और दूसरे मार्चकर्ताओं के साथ आगे बढ़ चुका था। वह तब तक नारे बोलता रहा जब तक कि उसकी आवाज़ फट नहीं गयी। उसके बाद आवेश में काँपते हुए वह इतना निढाल हो गया कि बाकी के साथ चल पाने में असमर्थ हो गया, और श्रीमती वाङ को उसे सहारा देना पड़ा। यह उग्रतम मुठभेड़ों में एक नौजवान की भाँति उत्तेजित होकर आगे-आगे दौड़ पड़ा था, लेकिन उसके छात्रों ने उसे अपने झुण्ड के बीच में सुरक्षित बनाये रखा था। अपने बूढ़े प्रोफ़ेसर के प्रति आदर की भावना से भरकर उन्होंने उसके चारों ओर एक रक्षा का घेरा बना लिया था, और उस कड़ाके की सर्दी में क़दम-ब-क़दम आगे बढ़ने में उसकी मदद कर रहे थे।

वह इसी तरह आगे बढ़ता हुआ चल रहा था कि कोई चिल्लाया :

"बूढ़े वाङ! प्रोफ़ेसर वाङ!"

स्वर परिचित लगा। प्रोफ़ेसर ने अपना सिर घुमाया, लेकिन नहीं पहचान सका कि किसने पुकारा था। आख़िरकार वह श्रीमती वाङ थी जो अब भी उसकी बग़ल में चल रही थी, जिसने किसी की तरफ़ इशारा किया और कहा :

"देखो, वह बूढ़ा वू तो नहीं है?"

प्रोफ़ेसर वाङ भीड़ में पंजों के बल खड़ा हो गया, और चारों तरफ़ निहारा, अन्ततः उसने अपने आगेवाली क़तार में प्रोफ़ेसर वू फान-चू को देख लिया। वू का खल्वाट, गोल सिर, जो एक तरबूज़ की तरह था, उसके आसपास के नौजवान काले सिरों के बीच एकदम स्पष्ट झलक रहा था। प्रोफ़ेसर वाङ ने कुछ दूसरे-सफ़ेद बालों वाले प्रोफ़ेसरों को भी देखा, जो अब उस सनसनाती हवा में नंगे सिर हो गये थे; उनके हैट पुलिस द्वारा मारकर गिरा दिये गये थे।

अपने इतने सारे सहकर्मियों की उपस्थिति की खुशी में उसने मुड़कर भावोदीप्त आँखों से अपनी पत्नी को देखा और कहा :

"वहाँ देखो!" लेकिन इसके पहले कि वह सफ़ेद सिरों की ओर इशार कर पाता, उसका ध्यान आगे कुछ दूरी पर कुछ प्रदर्शनकारियों और पुलिस के बीच चल रही एक मुठभेड़ की ओर बँट गया। चौंककर वह चिल्ला उठा, "क्यों, वे भी तो मज़दूर हैं। वे भी तो परेड में शामिल हुए हैं!" वह एक बाँह लहरा रहा था, और आवेश में चिल्ला रहा था, तभी एक लम्बा कोड़ा सटाक से उस पर पड़ा, और उसका सिर फट गया, प्रोफ़ेसर गुस्से से बौखला गया। इसको देखने की फ़िक्र

न करते हुए कि किसने यह प्रहार किया था, जिसने सचमुच ख़ून छलछला दिया था, वह अपना घूँसा उठाया और चीख़ा,

"मज़दूर भाइयो! स्वागत है! हमारे सभी देशवासी एक हो!"

"मज़दूर भाइयो, एक हो!" प्रोफ़ेसर वाङ की कर्कश चीख़ को असंख्य तरुण कण्ठों ने दोहराया। प्रोफ़ेसर के चेहरे पर प्रचण्ड गुस्सा एक बालसुलभ ख़ुशी में परिणत हो गया, जब उसने देखा कि मज़दूर और छात्र हाथ से हाथ मिलाने और एक दूसरे के गले में बाँहें डालने के लिए तलवारों और कोड़ों के जंगल को चीरते हुए निकल पड़े। उसकी आँखें नम हो आयीं। अपनी पत्नी का हाथ खींचते हुए जैसे ही वह घिसटते हुए आगे बढ़े, वह एक साँस में उससे बोल गया :

"हम एक हो गये हैं! पूरा चीन दुश्मन से लड़ने के लिए इसी तरह एक हो जायेगा।" कूच करने के समय जुलूस में लगभग पूरी तरह से छात्र ही थे – दसियों हज़ार मार्चकर्ताओं में से नब्बे प्रतिशत से अधिक पेइपिङ के विश्वविद्यालयों, कॉलेजों और हाईस्कूलों के छात्र थे, बाक़ी में उनके कर्मचारी थे। लेकिन प्रदर्शनकारियों के आलोड़ित कर देने वाले नारों, हिमलवों की भाँति फड़फड़ाती-गिरती पर्चियों, और पुलिस की बर्बरता ने उन क़तारों में परिवर्तन ला दिया था, जो अब बेशुमार तौर पर मज़दूरों, फेरीवालों, सरकारी कर्मचारियों, रिक्शावालों, अख़बार-रिपोर्टरों, घरेलू युवतियों और यहाँ तक कि सेवामुक्त लोगों तक के शामिल हो जाने से भारी-भरकम हो गयी थी। उन्होंने छात्रों से झण्डियाँ ले लीं और मोर्चे पर जाते हुए सैनिकों की भाँति, अपने निजी ख़तरे से बेपरवाह, संकल्पबद्ध हो प्रदर्शन में शामिल हो गये।

ताओ-चिङ पीकिङ विश्वविद्यालय के जत्थे के साथ-साथ बने रहने की भरसक कोशिश करती रही, वह अपने दुबले-पतले शरीर से शक्ति का एक-एक क़तरा निचोड़ देने की कोशिश कर रही थी। क़तारें लगातार तितर-बितर कर दी जा रही थीं, जिसके कारण कुछ मार्चकर्ताओं का अपनी इकाई से सम्पर्क टूट गया था, जैसे सियाओ-येन और हुआई-यिङ खो गयी थी। सम्पर्क समूह तालमेल बनाये रखने में लगा हुआ था, जबकि गश्ती दस्ता व्यवस्था बनाये रखने की पूरी-पूरी कोशिश कर रहा था। शुक्र था इन कोशिशों का कि बिखरे हुए मार्चकर्ता जल्दी ही फिर क़तारबद्ध ढंग से चलने लगे। धीरे-धीरे परन्तु सुस्थिर रूप से वे आगे बढ़ने में समर्थ थे।

जब वे चिएनमेन के भीतर जनरल पोस्टऑफ़िस पहुँचे, तो ताओ-चिङ क्रोध से पीली हो गयी और अपने होंठ काट लिये। वह एक तरफ़ डगमगाती हुई लगी।

"क्या बात है?" उसकी बग़ल के एक छात्र ने उसे पीछे खींचते हुए पूछा।

"कुछ नहीं। चलते रहो!" अपने मुँह के कोनों पर एक विचित्र मुस्कान लिये, ताओ-चिङ फिर शान्तिपूर्वक मार्च करने लगी।

जो कुछ हुआ था, वह यह था :

ताओ-चिङ जनरल पोस्टऑफ़िस पार करके सड़क की बायीं तरफ़ मार्च कर रही थी, तभी पोस्टऑफ़िस की सबसे ऊपरी सीढ़ी पर एक व्यक्ति पर निगाह पड़ते ही वह भौचक्का हो गयी थी। यह यू युङ-त्से था – उसको पहचानने में कोई ग़लती नहीं हुई थी। वह वहाँ पर खड़ा था और पश्चिमी शैली के कपड़े पहने एक धनी-मानी दिखने वाले आदमी से बातें और इशारे कर रहा था। जब ताओ-चिङ की तीक्ष्ण निगाहें उसकी छोटी-छोटी चमकती आँखों से मिली, तो उसने देखा कि वह मार्चकर्ताओं के और स्वयं उसके अस्तव्यस्त नीलाभ चेहरों और लहूलुहान गालों के हुलिये का मज़ा ले रहा था। आगे उछल पड़ने और उसको अपशब्द कहने की उत्तेजना को रोकते हुए, उसने तुरन्त अपनेआप को शान्त किया, और नफ़रत और घिन से दूसरी ओर मुँह घुमा लिया।

चिएनमेन से बाहर उनके साथ एक दर्जन से अधिक अन्य स्कूलों के हर्षोल्लास से प्रदर्शनकारी आ मिले, जिनमें उत्तरपूर्व विश्वविद्यालय, पीकिङ विश्वविद्यालय नॉर्मल विश्वविद्यालय और हुङता हाईस्कूल शामिल थे। उनकी वर्द्धित क़तारें दक्षिण की ओर बढ़ती गयीं, और बहुत पहले ही त्सिङहुआ और येनचिङ के जत्थों से जा मिलीं, जो ख़ास शहर में प्रवेश करने के लिए पश्चिमी शहर-दीवार को पार कर चुके थे। आनन्दविभोर हर्षध्वनियाँ से, जो इन ताक़तों के सम्मिश्रण से उठी थीं, विचलित होकर कुछ सैनिक टुकड़ियों को हथियार डाल देना पड़ा। एक नौजवान सैनिक चुपचाप प्रोफ़ेसर वाङ के पास आया, और उसे सैल्यूट किया, तथा नरमी से कहा :

"हम भी चीनी हैं, लेकिन आदेश आदेश होते हैं। हम कुछ नहीं कर सकते।" उसने अपनी आँखों को अपनी आस्तीन से पोंछा, और अनमने भाव से अपनी तैनाती की जगह पर वापस चला गया।

स्वर्ग के पुल के पास जो जमा होने के लिए चुनी गयी जगह थी, बीस हज़ार प्रदर्शनकारी एकत्र हो गये। सुव्यवस्थित क़तारें बनाते हुए, उन्होंने वहाँ के उन बाशिन्दों के साथ पहली रैली की, जो सड़कों पर फैले हुए थे, जो बाद में जुलूस में शामिल भी हो गये। उसके बाद बढ़ती क़तारें चिएन मेन की ओर वापस मार्च करने लगी। लेकिन जब भीड़ शहर के लौह-फाटकों तक उमड़ती चली गयी, तो पाया गया कि फाटक कसकर बन्द कर दिये गये थे। कर्कश गनफ़ायर ने बर्फ़ीली हवा को चीर दिया, गोलियाँ प्रदर्शनकारियों के सिरों के ऊपर से सनसनाने लगीं।

"शान्ति बनाये रखो! बौखलाओ नहीं!" संगठनकर्ताओं की ओर से होउ-जुई, ताओ-चिङ और तमाम अन्य ग्रुप-नेताओं को तुरन्त आदेश मिला। तब उस जाड़े की धूप की तिरछी पड़ रही किरणों में प्रदर्शनकारी, दसियों हज़ार की ताक़त के साथ,

गोलीबारी के तले एक पहाड़ की भाँति सुस्थिर खड़े हो गये। कोई हिला नहीं, किसी ने क़तार नहीं तोड़ी। अपनी मुट्ठियाँ भींचे किये, वे जलती आँखों से सिर के ऊपर उड़ रही गोलियों को घूरते रहे, उनके दिलों में डर नहीं, बल्कि उफनता हुआ आक्रोश था।

गोली चलने के अतिरिक्त और कोई आवाज़ नहीं आ रही थी। मुर्दा ख़ामोशी के उस क्षण में, ताओ-चिङ ने कुछ ऐसा देखा कि उसकी अपनी ही आँखों पर विश्वास नहीं हुआ। मानो अदृश्य में से प्रकट होकर, ग्रेनाइट जैसा चेहरा लिये एक लम्बा-तगड़ा नौजवान फाटक के बाहर खड़ी एक ट्राम की छत पर कूदा। यह च्याङ हुआ था। ताओ-चिङ ने कई दिनों से उसके बारे में कुछ न सुना था, फिर भी, वह अपने ज़ख़्म के बावजूद यहाँ आ गया था। उस पर नज़र पड़ते ही ताओ-चिङ की ख़ुशी दोगुना हो गयी। ट्राम की छत पर खड़े होकर अपना सिर ऊँचा किये, समूचे ख़तरे से बेपरवाह उसने छात्रों और आसपास के बाक़ी लोगों को सम्बोधित किया, जो गोलीबारी के तले चुप्पी साधे हुए थे :

"अपनी मातृभूमि से प्यार करने वाले साथी छात्रो! दास बनने से इन्कार करने वाले देशवासियो!" उसकी गहरी आवाज़ अच्छी तरह से उस तुषार भरी हवा को चीरती हुई निकल रही थी।

अधिकांश प्रदर्शनकारी सारे दिन कुछ भी खाये-पिये नहीं थे, लेकिन भूख, सर्दी और अपने विरुद्ध क़तारबद्ध सेना की आतंककारी ताक़त को भुलाकर वे पंजों के बल खड़े होकर छात्र फ़ेडरेशन के इस प्रवक्ता को सुनने के लिए कान खड़े किये हुए थे।

"आज हम सिर्फ़ एक उद्देश्य के लिए प्रदर्शन कर रहे हैं – जनता की असली इच्छा का इज़हार करने के लिए। वे जो यह दावा करते हैं कि उत्तर चीन में स्वायत्तता की मुहिम जनता की इच्छा है, वे जापानियों, साँठ-गाँठ करने वालों और गद्दारों द्वारा गढ़े गये झूठी अफ़वाहें फैला रहे हैं। यह धोखा है। एक निकृष्ट गन्दी चाल!"

गोलियों की गड़गड़ाहट में रायफ़लों से गोलियाँ दगने की कर्कश आवाज़ें विलीन हो गयीं। पेइपिङ के नागरिक, जो छात्र प्रदर्शनकारियों से कहीं अधिक संख्या में थे, गला फाड़-फाड़कर तूफ़ानी नारे चिल्ला उठे,

"जापानी साम्राज्यवाद मुर्दाबाद!"

"साँठ गाँठकर्ता और ग़द्दार मुर्दाबाद!"

इन नारों के बाद ही गोलियों की बौछार होने लगी। ठीक उसी क्षण, च्याङ हुआ एकाएक से ग़ायब हो गया। ताओ-चिङ भय से चौंक गयी, "क्या हो गया? क्या वह गिरफ़्तार हो गया? घायल हो गया?" लेकिन संघर्ष की उस तनावपूर्ण घड़ी में व्यक्तिगत बातें इतनी कम मायने रखती थीं कि उसकी यह भावविह्वलता केवल

क्षणिक ही रही। आवेशपूर्ण ढंग से अपनेआप को विशाल भड़ में शुमार करती हुई, वह बाक़ी सबके साथ पूरे चीनी राष्ट्र के प्रति चीख़ उठी :

"जापानी साम्राज्यवाद मुर्दाबाद!"

"चीन के लोगो, देश बचाने के लिए उठ खड़े हो!"

"स्वायत्तता मुहिम का विरोध करो! अपने भूभाग का बँटवारा बन्द करो!"

"गृहयुद्ध बन्द करो! विदेशी हमले के विरुद्ध एक हो जाओ!"

"दास बनने से इन्कार करने वाले सभी उठ खड़े हो, और लड़ो!"

ताओ-चिङ की आवाज़ फट गयी थी। दसियों हज़ार की आवाज़ें नारे लगाते-लगाते फट गयी थीं। उनके धूलभरे चेहरों पर ख़ून और आँसुओं की लकीरें थीं, सामने बहुत क़रीब ही उसने प्रोफ़ेसर वाङ और उसकी पत्नी को देखा। यद्यपि प्रोफ़ेसर का चश्मा टूट गया था, उसका ढीला-ढाला सूती काउन बुरी तरह फट गया था और उसके मैलाये चेहरे पर ख़ून जम गया था, फिर भी वह अपनी पत्नी की बाँह दृढ़तापूर्वक थामे हुए, पूरे आत्मविश्वास के साथ अगली क़तार में खड़ा था।

"कुछ लोग एक पवित्र उद्देश्य के लिए काम कर रहे हैं, जबकि दूसरे विलासिता का एक निर्लज्ज जीवन जी रहे हैं।" जैसे ही ये शब्द ताओ-चिङ के दिमाग़ में आये, उसे उस विशाल पूरी तरह से उत्तेजित भीड़ में लू चिआ-चुआन, लिन हुङ, लिउ यी-फेङ, चाओ वु-चिङ और उसका अपना च्याङ हुआ जो अपने ज़ख़्मों के बावजूद बोलने के लिए खड़ा हो गया था – वे सारे चेहरे दिखायी देते प्रतीत हुए। फिर उसे हू मेङ ऐन की दृष्टताभरी तस्वीर, ताई यू का मनहूस, सूजा हुआ चेहरा, यु युङ त्से की चमकदार, बिज्जू जैसी आँखें उसकी कल्पना में तैर गयी।... वह प्रचण्ड भीड़, अन्धाधुन्ध फ़ायर, कई एक चेहरों पर ख़ून के धब्बों और आलोड़नकारी गीतों से उसका सिर चकराने लगा। क्षीण, अति उत्तेजित और निढाल होकर उसने यकायक बेहोशी महसूस की, और वह गिर ही गयी होती, अगर उसके आगे वाली लड़की ने ठीक समय पर उसे पकड़ नहीं लिया होता, और अपनी बलिष्ठ बाँहों का सहारा नहीं दिया होता। यद्यपि वे पहले आपस में कभी नहीं मिली थी, फिर भी वे कसकर एक-दूसरे से लिपट गयी।

शहर का बन्द फाटक इन निडर नौजवानों को बाहर नहीं रोक पाया। एक मज़बूती से दुर्गरहित बिन्दु पर हमला करती योद्धाओं की भाँति झुण्ड पर झुण्ड उस दाँत किटकिटाती हवा में फाटक पर उमड़ता जा रहा था। अन्ततः दुश्मन को फाटक खोल देना पड़ा, और उस उत्तेजित भीड़ को अन्दर आने देना पड़ा, जो शहर में ज्वार-तरंगों की भाँति उमड़ आयी। शक्तिशाली क़तारें फिर आगे बढ़ने लगीं।

"जापानी साम्राज्यवाद मुर्दाबाद!"

"देशवासी दोस्तो! अपनेआप को संगठित और हथियारबन्द करो! चीन के लोगो, देश बचाने के लिए उठ खड़े हो!"

उस पुरातन राजधानी की गलियों के ऊपर चमकते बैनर लहरा उठे, साथ ही, अपनी ऊँची आवाज़ों में दिल दहला देने वाले नारे लगाते हुए, प्रदर्शनकारियों की अन्तहीन क़तारें सुस्थिर गति से आगे, आगे और आगे बढ़ती रहीं।

'तरुणाई का तराना' पर बनी फ़िल्म का दृश्य

• • •

'तरुणाई का तराना' चीन की क्रान्तिकारी लेखिका याङ मो का उपन्यास है जो अर्द्ध-सामन्ती अर्द्ध-औपनिवेशिक चीनी समाज की मुक्ति के लिए संघर्ष कर रहे नौजवान छात्र-छात्राओं की शौर्यगाथा का अत्यन्त सजीव, प्रेरणादायी और रोचक वर्णन करता है। इस सदी का चौथा दशक चीन के लिए एक भयानक अन्धकार-काल था। एक तरफ, जापानी आक्रमणकारी चीन के उत्तर-पूर्वी प्रान्तों पर क़ब्ज़ा करके तेजी से भीतर की ओर घुसते चले आ रहे थे, और दूसरी तरफ सत्तारूढ़ कुओमिन्ताङ ने विभिन्न अपमानजनक समझौतों पर इस्ताक्षर करके चीन के कई प्रान्तों पर जापान की संप्रभुता स्वीकार कर ली थी तथा जापानी साम्राज्यवाद का प्रतिरोध कर रही लाल सेना और कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में संघर्ष कर रहे क्रान्तिकारी कार्यकर्त्ताओं और देशभक्त नौजवानों का दमन और क़त्लेआम शुरू कर दिया था। 1935 की सर्दियों में जब जापानी साम्राज्यवादियों ने चीन के होपेई और चहार प्रान्तों में अपनी कठपुतली सरकारें गठित कर दीं और इस तरह पूरे उत्तरी चीन को खतरा उत्पन्न हो गया, तो पेइपिंग के छात्र-छात्राओं ने प्रतिरोध के लिए देश की जनता का आह्वान किया। "चीन के लोगो, देश की रक्षा के लिए उठ खड़े हो!" इस नारे के साथ शुरू हुआ 9 दिसम्बर 1935 का आन्दोलन चीनी जनता द्वारा जापानी आक्रमण व कुओमिन्ताङ सरकार की अप्रतिरोध की नीति के विरोध का आरम्भ था।

यही घटनाएँ 'तरुणाई के तराना' की पृष्ठभूमि है, जब असंख्य बहादुर युवक-युवतियाँ मशीनगनों, संगीनों, क्रूर यातनाओं, लम्बे कारावासों और यहाँ तक कि प्राणदण्ड की परवाह किये बिना दुश्मन के ख़िलाफ़ विकट संघर्ष में कूद पड़े थे। उपन्यास सिर्फ संघर्षों का विवरण ही नहीं है, बल्कि क्रान्तिकारी संघर्ष की राजनीति, क्रान्ति की दिशा, सही रणनीति और रणकौशल की सैद्धान्तिक विवेचना और उनके व्यावहारिक प्रयोग का एक अमूल्य दस्तावेज़ भी है।

परिकल्पना प्रकाशन